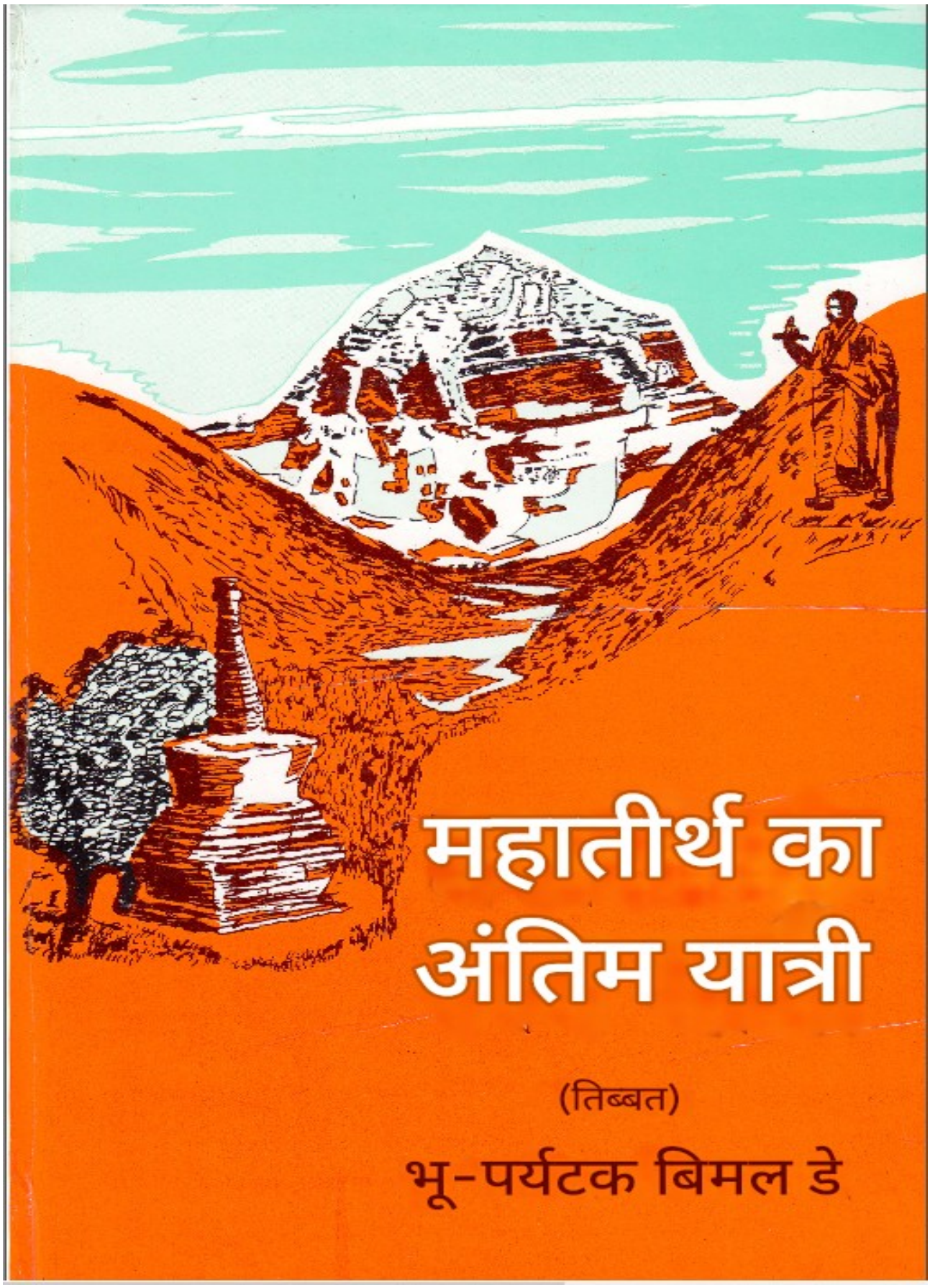

महातीर्थ का अंतिम यात्री

(तिब्बत)

भू-पर्यटक बिमल डे

तिब्बती-मण्डलाय "ओम्"

तिब्बती मंडल में "ॐ"

डाकिनी: स्त्री शक्ति जो दीक्षा के माध्यम से ज्ञान देती है।

- तिब्बत.. 17 वीं सदी..

महातीर्थ का अंतिम यात्री

(ल्हासा-कैलासनाथ-मानसरोवर)

भू-पर्यटन

बिमल डे

प्रमुख वितरक
पुस्तक भंडार
13 बंकिम चटर्जी स्ट्रीट कलकत्ता-73

पहली प्रकाशन श्री पंचमी 13 जनवरी 1982

दूसरा प्रकाशन श्री पंचमी 1391 फरवरी 1984

तीसरा प्रकाश श्री पंचमी 1394 जनवरी 1988

चौथा प्रकाशन जनवरी 1992

पांचवां प्रकाशन श्री पंचमी 1408 फरवरी 2002

षष्ठी प्रकाश श्री पंचमी 14-16 जनवरी 2010

प्रकाशक
इटिनेरेंट पब्लिशिंग हाउस एंड्रयूज विलेज, शांतिनिकेतन बीरभूम © श्रीमती देवी डे

कवर -- श्रीमती देवी डे

मुद्रक
नवप्रेस प्राइवेट लिमिटेड
66 ग्रे स्ट्रीट
कोलकाता-700 006

कीमत: 230.00 टका

Mahatirathar Shesh yatri

(Lahasa - ailashnath – Manas Sarobar)

Globe Trotter - -- Bimal Dey

भूमिका / परिचय

'महातीर्थ का आखिरी तीर्थयात्री' किताब का इंट्रोडक्शन लिखते समय मेरी कलम रुक जाती है, और अपनी फकीरी वाली ज़िंदगी के उन दिनों के बारे में सोचना भी अजीब लगता है। उस समय की डायरी को डायरी कहना गलत होगा। मैंने कुछ मुड़े हुए, खुरदुरे सफेद कागज़ों से शुरुआत की, फिर समय-समय पर नोटबुक ली, लेकिन ज़्यादातर समय मैं बस इधर-उधर मिले कागज़ के टुकड़ों पर छोटे-छोटे नोट्स लिखता था। उन्हें इकट्ठा करते और लिखते समय मुझे खुद पर हंसी आती थी। यही मेरी मुख्य समस्या थी। इसके बावजूद, मैं आज इसे ऑर्गनाइज़ कर पाया हूँ। जिन लोगों ने मेरी कोशिश को सफल बनाया, उनके आशीर्वाद से यह कामयाबी उन्हीं की है।

सन 1956. तिब्बत विदेशियों के लिए लगभग बंद था; बेशक, भारतीयों के लिए नहीं। नेपाली सरकार ने उस साल किसी तरह काठमांडू में चीनी दूतावास से तीर्थयात्रियों के लिए परमिट हासिल कर लिए। मैंने बाद में सुना कि यह महान तीर्थयात्रा के लिए तीर्थयात्रियों का आखिरी ग्रुप था। 23 मई, 1951 को, चीन की सेंट्रल पीपुल्स गवर्नमेंट के साथ एक समझौते के अनुसार, पीकिंग सरकार की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी धीरे- धीरे तिब्बत के अलग-अलग हिस्सों में फैल गई। वह घटना आज किसी के लिए

अनजान नहीं है। राजनीतिक संबंध खत्म होने के बाद भी, तीर्थयात्रियों के लिए कुछ रास्ते खुले थे। यही वजह थी कि मेरी तिब्बत यात्रा मुमकिन हो पाई।

तब से कई साल बीत चुके हैं। मौनी बाबा, यानी भिखारी लड़के की ज़िंदगी में कई बदलाव आए। घर में पला-बढ़ा वह लड़का फिर किसी अनजान आकर्षण के साथ भारत की ओर भटक गया। तिब्बत की पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, वह फिर दुनिया देखने निकल पड़ा।

1967 में, मैं एक पुरानी साइकिल और जेब में सिर्फ़ अठारह रुपये लेकर खोज के सफ़र पर निकला। कैलाश से मिली वह प्रेरणा मेरी पूंजी थी। मैंने एशिया, अफ़्रीका, यूरोप, अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया का सफ़र किया और 1972 में घर लौटा। मुझे रिश्तेदारों, दोस्तों, रेडियो और प्रेस से तारीफ़ मिली। कुछ लोगों को लगा कि मैं एक बढ़िया टूरिस्ट हूँ, कुछ को लगा कि मैं एक एक्सप्लोरर हूँ, कुछ को लगा कि मैं एक अजीब एडवेंचरर हूँ, और कुछ को लगा कि मैं अपने अनुभव के बारे में बात कर रहा हूँ। लेकिन उनमें से कितनों ने पूछा - आपको क्या मिला?

मैंने पहले ही बहुत कुछ देखा है - हिमालय, आल्प्स, रॉकी पर्वत, कॉर्डिलेरा, लेकिन सबसे अच्छा हमारा हिमालय है। मैंने जिनेवा झील से लेकर टिटिकाका तक कई झीलें देखी हैं - लेकिन सबसे अच्छा मानस सरोवर है। मैंने बार-बार खूबसूरत नज़ारे देखे हैं - मैंने भौगोलिक कारणों से अलग-अलग जगहों के साथ कई समानताएँ भी देखी हैं। मानस सरोवर की तुलना जिनेवा झील से की जा सकती है। इटली से, यह कैलाश पर्वत जैसा दिखता है। हालाँकि वे देखने में एक जैसे हैं, लेकिन उनकी तुलना दिव्य हिमालय से नहीं की जा सकती। यूरोप के पहाड़ों पर 'बार' बनाए गए हैं जहाँ से खूबसूरत नज़ारे देखे जा सकते हैं। मैंने अमेरिका में 'सुनियर स्टॉल' देखे हैं, लेकिन भारत अलग है। प्राचीन

काल से, भारत जानता है कि जहाँ सुंदरता है, वहाँ ईश्वर है। इसीलिए हिमालय के हर खूबसूरत इलाके में मंदिर, गुफाएँ और चैत्य बनाए गए हैं। जो सारी सुंदरता का स्रोत है, वही ईश्वर है, वही हमारा आराध्य है। सत्यम शिवम सुंदरम।

मैंने हिमालय में हर इंसान में भगवान की आत्मा को देखा है। मैंने ल्हासा और कैलाश के रास्ते में बहुत गरीब गांववालों में शिव की आत्मा देखी है। वे शब्द लगभग चौबीस साल पहले की मेरी फटी हुई डायरी में छिपे थे। क्या मैं उस एहसास को बता पाया? मैंने खोए हुए दिनों के उन पन्नों को इकट्ठा किया है और बार-बार याद किया है, लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह एक दिन किताब के रूप में पब्लिश होगा।

महामहोपाध्याय परमाराध्य पंडित गोपीनाथ कविराज महाशय ने मेरी सांसारिक यात्रा के दौरान मुझे आशीर्वाद दिया और कहा, 'अगर हो सके तो तिब्बत से अपने वो शब्द लिख लेना...' अफ़सोस! आज वो हमारे बीच नहीं हैं, फिर भी उनकी कृपा मेरी लेखनी पर बरस रही है।

1975 में, कामाख्या उमाचल आश्रम के फाउंडर, आज के धन्वंतरि, पूज्य स्वामी शिवानंदजी महाराज ने भी मुझे अपने तिब्बत ट्रैवलॉग को एक किताब में पब्लिश करने के लिए हिम्मत दी। वे भी आज हमारे भ्रम छोड़कर ऊंचे लोकों में चले गए हैं। लेकिन आज उनकी हिम्मत से मुझे हिम्मत मिलती है। मैं उन्हें अपनी श्रद्धा से भेंट करता हूं।

फिर एक के बाद एक कई घटनाएं हुईं, मैं धर्मशाला में परम पावन दलाई लामा से मिला। उसी साल मुझे सोनाडा में कालू रिच के दर्शन हुए। अगले साल मैं पेलब्लाट में गेशे रेस्टेन से मिला - फिर मैं रुमटेक में लामा करमापा से मिला। अभी वे सभी तिब्बती शरणार्थी हैं।

हालांकि यह बहुत पहले की घटना थी, लेकिन यह भूली हुई यादों को जगाने के लिए काफी थी। लेकिन हमारे आस-पास चल रहे इतने सारे कामों की वजह से समय निकलता जा रहा था। फिर एक और चमत्कार हुआ।

ऐसा हुआ। गंगटोक में, मैं अचानक डोंगलदादा से मिला, जो मानस और कैलाश के गाइड हैं। क्या कमाल का कनेक्शन था!

1979 में, मेरे खास दोस्त (शांतिनिकेतन के) श्रीगोरा सरजाश्यारी मुझे एक परम योगी के पास ले गए। पहले तो उन्हें देखकर मेरा मन खुशी से उछल पड़ा - मुझे लगा कि वे मेरे खोए हुए साधु बाबा हैं। वे दिखने और बोलने में काफी हद तक उनके जैसे थे और उनका स्वभाव भी वैसा ही था। अचानक, मैं एक बूढ़े आदमी के वेश में एक नाबालिग जैसा लगने लगा। उनका नाम भी साधु बाबा था। मैंने उनसे अपने साधु बाबा के बारे में कोई सवाल नहीं पूछा, लेकिन दिल से मैं उन्हें अपनी ज़िंदगी का पहला ज्ञानी गुरु मानता था। मैंने यह किताब उन्हें ध्यान में रखकर शुरू की। उनका आशीर्वाद और कृपा ही मेरे लिए ज़रिया है। किताब लिखने के लिए मुझे साधु बाबा की ज़रूरत थी, वरना मुझे नहीं पता कि उन पुराने दिनों को वापस लाना मुमकिन होता या नहीं। मैंने उन्हें इस बारे में कुछ नहीं बताया; मुझे पता है कि वे अंतर्यामी हैं।

मार्केट में ट्रैवलॉग बुक्स की कोई कमी नहीं है। वैसे तो यह उस लेवल की है, लेकिन यह किताब थोड़ी अलग है। मेरा तिब्बत जाने का कोई प्लान नहीं था, मुझे उस समय तिब्बत के बारे में कोई आइडिया नहीं था। शॉर्ट में, जैसा किस्मत में लिखा था वैसा ही हुआ। मेरा मेन मकसद घर से भागना था; बाकी सब रहमदिल की असीम दया से हुआ। मैं कोई राइटर नहीं हूँ, मैं इसे ट्रैवलर का सफ़र नहीं कहूँगा, यह कोई एक्सपीडिशन बिल्कुल नहीं है। यह बस एक भिखारी की डायरी है। यह एक लोअर-मिडिल

क्लास फैमिली के लड़के की घर से भागने की एक और कहानी है। हमारे देश में ऐसी कहानियाँ कम नहीं हैं। फिर भी, मैंने इसे इसलिए लिखा क्योंकि जब इंस्पिरेशन आएगी, तो वह खुद ही सामने आ जाएगी।

1958 के बाद तिब्बत का दरवाज़ा पूरी तरह से बंद हो गया। मैं इस भूमिका के कारणों और नतीजों के बारे में ज़्यादा नहीं बताऊँगा। मुझमें इतनी हिम्मत नहीं है कि मैं यह जज कर सकूँ कि चीनियों ने तिब्बत आकर क्या किया या कर रहे हैं। फिर भी, एक आम तीर्थयात्री के तौर पर मैं बार-बार भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि यह दरवाज़ा खुल जाए। स्वर्ग का दरवाज़ा बिल्कुल बंद न हो - कैलाश तीर्थ पर सिर्फ़ इंसानों का हक़ है। स्वयंभू किसी की पर्सनल प्रॉपर्टी नहीं है। यह कैलाश खंड पूरी इंसानियत का पवित्र तीर्थस्थल है।

इस किताब को लिखते समय, मैंने अपनी अभी की ज़िंदगी के सभी अनुभवों और प्रेरणाओं को ध्यान से एक तरफ रखकर पंद्रह साल के खामोश तीर्थयात्री को दिखाने की कोशिश की है। इसलिए, इसमें तिब्बत के बारे में कोई राजनीतिक और ऐतिहासिक जानकारी नहीं है। रास्ते में किसी तीर्थयात्री की नज़र जिस पर पड़ी, उसे यहाँ खास जगह मिली है।

आखिर में, मुझे शिवानंद योगाश्रम के एडिटर स्वामी योगेश्वरानंद सरस्वती महाराज का ज़िक्र करना चाहिए। हालांकि वे मेरे पर्सनल दोस्त हैं, फिर भी मैं उनका शुक्रगुजार हूं। उन्होंने 'महातीर्थ का आखिरी तीर्थयात्री' के पब्लिकेशन में मेरी मदद की और मुझे खतरे से बचाया। शिवानंद योगाश्रम संघ के प्रेसिडेंट, श्रीमत् स्वामी देवानंद सरस्वती महाराज जी भी ।

मैं भी इसी वजह से उनके प्रति आभार के बंधन में बंधा हुआ हूँ। वे दोनों निस्वार्थ कर्मयोगी हैं; उन्हें मेरा आभार नहीं चाहिए - इसलिए मैं उन्हें अपना सच्चा सम्मान देता हूँ।

किताब बहुत आसान है, लेकिन इसमें कैलाश की एक दिलचस्प आत्मा है।
मैंने वहां जो शिव-प्रकाश महसूस किया, उसका थोड़ा सा हिस्सा प्रसाद के तौर पर सबके साथ बांटने के लिए लाया हूं। यह मेरी याद-अंजलि है।
हरि ओम तत् सत्।

आल्प्स-एट-सावोई, फ्रांस

कार्तिक 3, मंगलवार, 1388 बिमल दे

दूसरे संस्करण का परिचय

महातीर्थ के आखिरी यात्री का दूसरा एडिशन पब्लिश हो गया है। पहला एडिशन बिक जाने के बाद दूसरा एडिशन पब्लिश करने में हुई देरी के लिए मैं दिल से माफी मांगता हूं।

जानकारों के कहने पर, मैं तिब्बत के महान गुरु, महान कवि मिलारेपा के बारे में कुछ लिखने के लिए मजबूर हुआ। किताब के आखिर में तिब्बत की आत्मा, 'मिलारेपा' को जोड़ा गया। महान कवि मिलारेपा गुरु परंपरा में भारतीय दर्शन और व्यवहार के वाहक थे, जिनके मुख्य डिस्ट्रीब्यूटर और प्रचारक बंगाली संत आतिश दीपांकर थे। आखिर में, मैंने उस महान गुरु को अपना आदरपूर्वक प्रणाम जोड़ा।

मुझे इस बात का अफ़सोस है कि मौजूदा एडिशन के वॉल्यूम और सामान की कीमत में बहुत ज़्यादा बढ़ोतरी की वजह से दूसरे एडिशन की कीमत बढ़ गई है। मुझे उम्मीद है कि यह किताब पढ़ने में दिलचस्पी रखने वाले लोगों को ज़्यादा पसंद आएगी।

श्री पंचमी 1391 लेखक

तीसरे संस्करण का परिचय

'महातीर्थेश जात्री' का तीसरा एडिशन अनगिनत रीडर्स की दुआओं और आशीर्वाद से पब्लिश हुआ है। मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि किताब को रीडर्स से अच्छा रिस्पॉन्स मिला है। मैं उन सभी का शुक्रगुजार हूं जिन्होंने हजारों लेटर्स के ज़रिए मुझे हिम्मत दी है।

डिमांड पूरी करने और समय के साथ चलने के लिए, मुझे इस एडिशन को ऑफ-सेट में छापना पड़ा। लेकिन मैंने कीमत पर ध्यान रखा है और कीमत को जितना हो सके कम रखा है। अगर आप में से जो लोग इसे पढ़ेंगे या पढ़ रहे हैं, उनसे मुझे सलाह मिली, तो मुझे भविष्य में फायदा होगा। मेरी कोशिशों के बावजूद अगर कोई गलती या भूल हुई हो, तो मैं माफी मांगता हूं। इस संदर्भ में, मैं दोहराता हूं कि इस किताब की हर घटना और किरदार सच है, इस किताब का तिब्बत के आध्यात्मिक नेता दलाई लामा ने अंग्रेजी में अनुवाद किया है, और उन्होंने इस किताब को अपनी रेफरेंस बुक के रूप में स्वीकार किया है। तिब्बत की कई घटनाओं और कई चीजों का अलग-अलग लेखकों ने गलत मतलब निकाला है, इसलिए मेरी इस किताब के कुछ सिद्धांतों ने सच्चाई को सामने लाया है। मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो घर बैठकर यात्रा की कहानियां लिखते हैं - इसीलिए मैं फिर से दोहराता हूं कि - मैं कोई लेखक नहीं हूं, मैं बस एक आम टूरिस्ट हूं। मैं आप सभी के सामने प्यार और सम्मान के साथ तीसरा एडिशन पेश करता हूं।

शांतिनिकेतन-
मार्च 1988
बिमल डे

छठे संस्करण की प्रस्तावना

महातीर्थेश जात्री' का छठा एडिशन अनगिनत पढ़ने वालों की दुआओं और आशीर्वाद से पब्लिश हुआ है। मेरा लिखना काम का है। सबसे बड़े तीर्थ, कैलाशनाथ और मानस सरोवर, कई सालों तक बंद रहने के बाद फिर से खुल गए हैं, और अब तीर्थयात्री रेगुलर तौर पर वहां आते हैं। कैलाशनाथ और मानस सरोवर सिर्फ हिंदू तीर्थ नहीं हैं, यह इलाका यूनिवर्सल है। जापान, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप और यूनाइटेड स्टेट्स से खोज करने वालों और उत्सुक टूरिस्ट के अनगिनत ग्रुप आते हैं। कैलाश परिक्रमा के बाद, वे सभी एक बात पर सहमत होते हैं, "मुझे कुछ मिला, मैंने उसे महसूस किया।" इससे ज़्यादा कुछ नहीं, यहीं पर भाषा रुक जाती है। सच खुद को सामने लाता है। सदियों का आकर्षण अभी भी मौजूद है।

मैं उन सभी का दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ जो हर साल अनगिनत चिट्ठियों और बातचीत से मेरी हिम्मत बढ़ाते रहे हैं। कई आम सवाल बार-बार सामने आए हैं। इलाहाबाद और नासिक में कुंभ मेले के लिए ज्ञान महल और पंडितसभा का न्योता पाने की कोशिश करते हुए मैंने

उन्हें निराश किया है, लेकिन मैं उनके आशीर्वाद से दूर नहीं रहा। उन्होंने मुझे किसी संत या साधु के रूप में नहीं लिया।

महातीर्थ के आखिरी तीर्थयात्री, भागे हुए लड़के के चुप रहने वाले पिता अब सत्तर साल के हैं। किताब पढ़ते हुए कई लोगों ने उस पुरानी घटना को आज के समय में ला दिया है, यह पढ़ने वालों की खूबी है। कई लोगों ने सोचा है कि चुप रहने वाले पिता आज एक महान योगी हैं। उनकी शारीरिक हालत और कपड़ों को देखकर उन्होंने भी अपनी गलती मान ली है।

मैं एक गृहस्थ हूँ, एक आम आदमी हूँ, एक दुनिया घूमने वाला हूँ। मैं अपना ज़्यादातर समय भारत के बाहर बिताता हूँ। मैं श्री शंकराचार्य की बातों को दिल से मानता हूँ - "वन्दभ: शिव भक्तश्च स्वदेशो भुवन त्रयम्।" यानी, जो बनाने वाले की पूजा करते हैं वे मेरे दोस्त हैं और ये तीनों लोक मेरा देश हैं। सभी धर्मों में लिखा है कि बनाने वाला एक ही है। वह हमेशा सच है, सबको माना जाता है, सबको पूजा जाता है।

1956 में, मैं गुरुजी के साथ गंगटोक और ल्हासा होते हुए कैलाशनाथ और मानसरोवर गया था। वह एक भटके हुए यात्री का रास्ता था। वह भारत से कैलाश जाने का रास्ता नहीं है। कैलाशनाथ और मानसरोवर से लौटने का रास्ता एक ही है।

मौजूदा रास्ते के लिए कुछ संभावनाएं यहां दी गई हैं:

कैलाशनाथ और मानसरोवर रूट को भारत और चीन की सरकारों ने मंज़ूरी दी है: दिल्ली से हल्द्वानी-नैनीताल होते हुए आप भी ग्रुप में शामिल हो सकते हैं। हल्द्वानी-कौसानी, -बागेश्वर-धारचूला-पंगू-बूढ़ी-गुर्जी- लिपुलेथ पास-तकलाकोट। वहां से, मानसरोवर और राक्षसताल होते हुए आगे बढ़ें और फिर परखा जाएं।

परखा से आगे उत्तर में तारचेन है। आजकल तकलाकोट से तारचेन के लिए जीप सर्विस है। तारचेन से कैलाशनाथ परिक्रमा होती है। पुरानी परंपरा के अनुसार पैदल। धार्मिक तिब्बती लोग खंभे को काटकर पहाड़ की परिक्रमा करते हैं। परखा से ल्हासा तक अच्छी सड़क है। कैलाशनाथ और मानसरोवर जाने वाले तीर्थयात्रियों को उसी रास्ते से वापस आना पड़ता है।

नीचे दिया गया रास्ता भारतीयों के लिए सबसे कम मुश्किल है, खासकर काठमांडू से निकलते समय:

काठमांडू से आपको बॉर्डर पार करके कोडारी जाना होगा, फिर 'फ्रेंडशिप ब्रिज' पार करना होगा, फिर जीप लेकर झंगसू चेक पोस्ट जाना होगा। झंगसू से आप कार से न्यालम-सागा परियांग-तारचेन जा सकते हैं। फिर आपको परिक्रमा, पूजा, स्नान और मन की प्रार्थना, सब एक ही दिन में पूरी करनी होगी, फिर उसी रास्ते से वापस आना होगा।

कैलाशनाथ और मानसरोवर ट्रेकिंग पर जाने वाले विदेशियों के लिए कई रास्ते और इंतज़ाम हैं। आजकल ज़्यादातर लोग काठमांडू से ल्हासा के लिए फ़्लाइट लेते हैं, लेकिन ल्हासा एयरपोर्ट कैलाश के रास्ते में ल्हासा से बहुत दूर है। फिर ल्हासा से वे ब्रह्मपुत्र के किनारे, यानी सीधे हाईवे से कैलाश तक ड्राइव करते हैं। चीन या तिब्बत से एवरेस्ट एक्सपीडिशन के लिए कई अच्छे इंतज़ाम हैं, सभी को ल्हासा या काठमांडू से परमिट लेना पड़ता है।

वैसे तो महातीर्थ का आखिरी यात्री मेरे पुराने अनुभवों का पिटारा है, लेकिन यह सवाल बार-बार उठता रहा है - "तिब्बत के बारे में आपकी क्या राय है?" मुझे मानना पड़ेगा कि जब कैलाशनाथ की बात आती है, तो

तिब्बत का सवाल भी उठता है। तिब्बत भारत के बाहर मेरी ज़िंदगी का पहला अनुभव था, भविष्य की रोशनी की एक झलक। उस समय से, तिब्बत और तिब्बती मेरे मन को घेरे हुए हैं। तिब्बत मेरा तीर्थ है। तिब्बत का रहस्य मेरा रहस्य है, तिब्बत का भविष्य मेरा भविष्य है। भगवान भक्त के अधीन हैं। वह प्रार्थना सुनते हैं, लेकिन उनके जवाब के लिए सब्र रखना पड़ता है।

जब चीनी अधिकारियों ने तीर्थयात्रियों के लिए नाथू ला और कैलाश के दूसरे रास्ते बंद कर दिए, तो भारतीय तीर्थयात्रियों और पवित्र साधुओं ने कैलाशनाथ को बचाने के लिए बार-बार प्रार्थना की। कई ध्यान, पूजा और बलिदान के ज़रिए, संतों, योगियों, ज्ञानियों और नेक लोगों ने अपने विचार भगवान शिव के चरणों तक पहुँचाए। आज, लाखों तीर्थयात्री फिर से कैलाशनाथ और मानसरोवर के रास्ते पर चल रहे हैं।
भगवान ने भक्तों की प्रार्थना सुन ली है।

आज तिब्बत का एक नया रूप है। मैं हाल ही में कई बार तिब्बत गया हूँ।
मैंने आपको इस किताब के आखिरी चैप्टर में इसके बारे में बताया था।
1956 के बाद, हर टूरिस्ट तिब्बत में ज़बरदस्त बदलाव देखेगा।
कैलाशनाथ और मानसरोवर पहले जैसे ही हैं, लेकिन आने-जाने का इंतज़ाम आसान हो गया है। ट्रांसपोर्टेशन सिस्टम भी बहुत बेहतर हुआ है।

पोटाला पैलेस अभी भी है, लेकिन यह बिना राजा का महल है। पहले, पोटाला से जोखांग मंदिर आसानी से देखा जा सकता था, लेकिन आजकल, बहुत सारे नए घर बन गए हैं, इसलिए जोखांग मंदिर को दूर से देखना लगभग नामुमकिन है। हर साल 1 अक्टूबर को, चीन के 'नेशनल फेस्टिवल' के मौके पर, जब आप पोटाला पैलेस के सामने चीनी सैनिकों की परेड और झंडा फहराने की रस्म देखेंगे, तो आपको लगेगा ही नहीं कि यह तिब्बत की राजधानी ल्हासा है। ल्हासा एक नज़र में चीनी शहर जैसा लगता है। चीनी बिजनेसमैन की

दुकानों, होटलों में चीनी खाने, नाइट क्लब, महिलाओं के बिजनेस और चीनी भाषा में बातचीत के साथ, एक सवाल बार-बार मन में आता है, और वह है 'तिब्बत कहाँ है?'

2006 में इसने सबको हैरान कर दिया। गोलमुड-ल्हासा रेलवे ने यूरोप और यूनाइटेड स्टेट्स को पीछे छोड़ दिया। दुनिया की सबसे ऊंची रेलवे। गोलमुड से ल्हासा के रास्ते में, यह विशाल, अत्याधुनिक हाई-स्पीड एक्सप्रेस कभी 4,450 मीटर (वांकुम 4485 मीटर), 4,547 मीटर (तुओतुओ 4547 मीटर), 4,823 मीटर (क्वेकिआओ 4823 मीटर) और अधिकतम 5,300 मीटर (शिउडोंगु 5030 मीटर) तक पहुंचती है। हम दार्जिलिंग और शिमला में टॉय ट्रेन देखकर हैरान हो जाते हैं और जब हम यहां इस विशाल, अकल्पनीय ट्रेन के बारे में सोचते हैं, तो हमारे शब्द रुक जाते हैं। बर्फ से ढके देश में यह कैसे संभव है! आजकल, मुख्य भूमि चीन से रोजाना आठ ट्रेनें ल्हासा में प्रवेश करती हैं, जो आपूर्ति, सैन्य बल और चीनी नागरिकों को लाती हैं पूरे ट्रेन प्रोजेक्ट की लागत (33.9 बिलियन युआन), चार बिलियन यूरो (4 बिलियन यूरो) है।

यह बड़ी रकम निश्चित रूप से तिब्बत को बचाने के लिए नहीं है, न ही तिब्बत की धार्मिक और सांस्कृतिक विशेषताओं के लिए है, बल्कि असल में इसके पीछे एक बहुत बड़ा भविष्य, राजनीतिक, आर्थिक और मिलिट्री प्लान है। चीनी सरकार कहती है, 'तिब्बत की तरक्की का मतलब चीन की तरक्की है।'

महान तीर्थयात्रा के आखिरी यात्री की आँखों में तैरते ल्हासा, कैलाशनाथ और मानसरोवर के नज़ारे आज एक अविश्वसनीय सपने जैसे लगते हैं। मैं एक आज़ाद तिब्बत के बारे में नहीं सोचता, परम पावन दलाई लामा ने भी वह उम्मीद छोड़ दी है। मैं एक टूरिस्ट हूँ। फिलॉसफी मेरा धर्म है। मैं बस यही सोचता हूँ कि क्या तिब्बत की सांस्कृतिक

खासियतों को बचाया जा सकता है? कुछ साल पहले, मेकांग के स्रोत से संगम तक एक यात्रा अभियान के दौरान, मैंने एक हौसला बढ़ाने वाला उदाहरण देखा, यानी गांसु, सिचुआन और युन्नान प्रांतों के कई कबीले आज भी अपने धर्म और परंपराओं को बनाए हुए हैं। उनके अनुसार

17
सरकार ने उन्हें अपनी भाषा, डांस, कपड़े, खाना, धर्म वगैरह की आज़ादी दे दी है - यह खुशी की बात है, लेकिन गार्ड की नज़र हमेशा रहती है।

खुशकिस्मती से और कर्म से, एक यात्री के तौर पर मेरा नाम चीनी एम्बेसी को पता है। उनकी फ़ाइल में लिखा है कि मैंने सिंधु और त्सांगपो (ब्रह्मपुत्र) देखी हैं। मुझे मेकांग नदी का सोर्स भी पता है। अब, चीन की बाकी तीन बड़ी नदियों का सोर्स तिब्बत में है। मेकांग नदी के सोर्स से नदियों के संगम तक का सफ़र पूरा करने के बाद, मैंने एक एप्लीकेशन दी जिसमें मैंने लिखा, "मेरा अगला सफ़र एंडो और खाम इलाकों में तीन नदियों के सोर्स तक है। पीली नदी, यांग्त्ज़ी नदी और सालवीन नदी। अक्टूबर 2007 में, हमें हमारा कंसेंट लेटर और वीज़ा मिला। मैं द लास्ट पिलग्रिम ऑफ़ द ग्रेट पिलग्रिमेज के छठे एडिशन के इंट्रोडक्शन में इन तीन नदियों के सोर्स तक के सफ़र के बारे में नहीं लिखना चाहता, और न ही मेरा ऐसा कोई इरादा है। असल में, तिब्बत का एक और नया पहलू मेरे ध्यान में आया। तिब्बत के मौजूदा धर्म को बचाने का एक और पहलू, अविश्वसनीय लेकिन सच। मैंने तिब्बत में बौद्ध धर्म और पुरानी परंपराओं के खत्म होने की कई कहानियाँ सुनी थीं - इसलिए मैं हैरान था। मैंने खुद को तसल्ली दी कि सब कुछ बुरा नहीं होता।

खाम इलाका बहुत पहाड़ी इलाका है, जो अक्सर नदी घाटी जैसा होता है। चेंगदू से, पश्चिम में बटांग तक बस से दो दिन का सफ़र है, फिर बटांग

से उत्तर में गंजी शहर तक जीप से बीस घंटे और लगते हैं। गंजी और कांसी एक ही शहर के दो नाम हैं, एक तिब्बती में और दूसरा चीनी में। गंजी से, जीप से, पाँच हज़ार मीटर की ऊँचाई पर चोल पहाड़ों की बर्फ़ जैसी सफ़ेद चोल चोटी तक। चोल दर्रा लगभग चार हज़ार मीटर ऊँचा है। जैसे ही मैं पहाड़ के इस हिस्से में पहुँचा, मैंने एक बहुत ही खूबसूरत नज़ारा देखा। पहाड़ की घाटी में एक खूबसूरत नदी, और दूर बर्फ़ से ढके पहाड़, ग्यात्स के पास ब्रह्मपुत्र जैसे थे, चोल पहाड़ों का यह हिस्सा। अचानक, यह एक खड़ी दीवार बन गई और लगभग पच्चीस मीटर नीचे गिर गई। मेरे गाइड ने मेरा ध्यान आगे नदी की ओर खींचा। मोटी लाल चीज़ें सैकड़ों चींटियों की तरह आगे बढ़ रही थीं। मैंने हैरानी से पूछा, "क्या बात है, ये कौन हैं?" गाइड ने जवाब दिया, "दोपहर में, नन घर वापस जा रही हैं।" यह बात मुझे सच में बहुत इमोशनल कर गई, ये लोग कौन हैं? पहाड़ पर इस अनजान जगह पर कौन रह रहे हैं? जब मैं पहाड़ के किनारे पहुँचा, तो मैंने एक और सीन देखा। दूर, दो पगोडा जैसे घर थे और उनके सामने, सैकड़ों नहीं, बल्कि हज़ारों छोटी लकड़ी की झोपड़ियाँ थीं। मठ में, महान तुकू रिम्पोछे रहते हैं। और नन लकड़ी के घरों में रहती हैं। सुबह प्रार्थना करने के बाद, वे खाते- पीते हैं, फिर सब लोग पहाड़ के जंगल में चले जाते हैं। वहाँ वे पूरे दिन अकेले में ध्यान करते हैं, फिर सूरज डूबने से पहले आश्रम लौट आते हैं।

नीचे, नदी पर सिर्फ़ एक पुल है जिसे सभी को पार करना है। पुल के दूसरी तरफ़, बाईं ओर, हज़ारों डेरा घर हैं, और दूर एक मठ दिख रहा है। नीचे की नदी शायद यांग्त्ज़ी के सोर्स में से एक है। उस रात, हम एक गांव की झोपड़ी में रुके, और अगली सुबह, हम पहाड़ से नीचे उतरे, पुल पार किया, और परम पावन तुकु रिम्पोछे के मंदिर में गए।

सुबह की प्रार्थना और ध्यान के बाद, टुकू रिम्पोछे ने हमें बुलाया। जैसे ही मैंने झुककर अपना परिचय दिया, वे बहुत खुश हुए और मुझे अपने पास बिठा लिया। हमारी बातचीत इंटरप्रेटर के ज़रिए शुरू हुई। मैं एक भारतीय था, यही पहला परिचय था। फिर जब उन्होंने सुना कि मैं कोलकाता से हूँ, तो वे और भी खुश हुए, और फिर उनकी खुशी बढ़ती गई - जब उन्होंने सुना कि मैं कैलाशनाथ और मानसरोवर गया हूँ और तिब्बत पर एक किताब भी लिखी है, तो वे अपनी खुशी को और रोक नहीं पाए। उन्होंने अपनी गंभीरता को एक तरफ रखकर मुझे एक बच्चे की तरह गले लगा लिया, जैसे उन्होंने खुद बोधिसत्व को देखा हो। हमारी बातचीत धीरे-धीरे गहरी होती गई। दस बजे, मैं सम्पा के लिए अगले कमरे में आया और बैठ गया। कमरे में उनके पाँच बहुत प्यारे शिष्य थे। उन्होंने मुझे प्रणाम किया और मैंने उन्हें प्रणाम किया।

हमारी बातचीत करीब दो घंटे तक चली। फिर वह अचानक उठ गए। हम उनके पीछे-पीछे चले गए। हम बगल वाले एक और घर में घुस गए, जहाँ एक बहुत बड़ी लाइब्रेरी थी जिसमें छोटे-छोटे आलों की लाइनें थीं, हर कोना किताबों से भरा था। उन्होंने एक सीढ़ी खींची और ऊपर चढ़ गए, बहुत ध्यान से कपड़े में लिपटी एक किताब ली और फिर नीचे जाकर एक छोटी सी हाथ की टेबल पर बैठ गए, बार-बार बड़ी श्रद्धा से झुके और एक के बाद एक कपड़े की तहें खोलीं, मैं बंगाली अक्षरों में लिखा 'धम्मपद' देखकर हैरान रह गया। मेरे मुँह से धम्मपद शब्द सुनते ही उन्होंने तारीफ़ भरी नज़रों से मेरी तरफ देखा - 'क्या तुम पाली भाषा जानते हो?' मैंने कहा, 'पाली और बंगाली में एक जैसे अक्षर हैं और बहुत मिलते-जुलते हैं, इसलिए समझने या पढ़ने में कोई मुश्किल नहीं है।' अब परम पावन तुकु रिम्पोछे उठे और एक किताब लाए, तिब्बती अक्षरों में धम्मपद। जैसे हम भगवद गीता पढ़ते हैं, वैसे ही बंगाली अक्षरों में संस्कृत के शब्द। हम दोनों ने मिलकर धम्मपद का एक श्लोक पढ़ा। मैंने अपना एग्जाम पास कर लिया और मुझे अपना सर्टिफिकेट मिल गया।

इस बार उन्होंने आह भरते हुए कहा, 'यह किताब मेरे गुरुजी ने पढ़ी है, यह अनमोल चीज़ अब मेरे हाथ में है। इस किताब की हिफ़ाज़त करना मेरी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है।' दोपहर में, मैंने महान तुकू रिम्पोछे के मुँह से डिटेल में सुना। तिब्बत में पुराने गुफा आश्रमों या मठों में, सही गुरु की कमी की वजह से, शिष्यों या भक्तों की संख्या दिन-ब-दिन कम होती जा रही है, वे बेमतलब होते जा रहे हैं। चीनी अधिकारियों की नज़र और नियम तिब्बतियों को उनके धर्म से दूर कर रहे हैं। कई गुफाएँ छोड़ दी गई हैं और खंडहर में बदल गई हैं। मैंने जो कई घटनाएँ देखी हैं, उनसे मुझे लगा कि उनका फोकस बिज़नेस ट्रेड बढ़ाने,

19
इकोनॉमिक डेवलपमेंट, रोड और ट्रांसपोर्टेशन डेवलपमेंट प्लान और खासकर चीनी सरकार के विस्तार और राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के अलावा और कुछ नहीं है, लेकिन इस मिनिस्ट्री को देखने के बाद मेरी सोच बदल गई, और मुझे एहसास हुआ कि अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है।

मेरे गाइड ने बताया कि इस महान याचेन मठ के प्रमुख महान तुकू रिनपोछे हैं। आज के तिब्बत में, खासकर चोल पहाड़ों में, याचेन गुफाएं पर्दे के पीछे बनाई गई हैं, जो लोगों की नज़रों से छिपी हुई हैं। यहां चीनी, तिब्बती और स्थानीय पहाड़ी भाषाओं का शानदार मिक्स है। तुकू शब्द का मतलब है पुनर्जन्म। तुकू रिनपोछे का मतलब है गुरुजी का पुनर्जन्म। तुकू रिनपोछे का असली नाम अचुक है। चीनी ऑफिशियल रिकॉर्ड में, यह अचुक रिनपोछे है। उनका पूरा नाम जामयांग लुंगडोक ग्यालत्सेन अचुक रिनपोछे है। चालीस साल अकेले साधना करने के बाद, उन्होंने यहां एक छोटी सी झोपड़ी बनाई और अपना अखाड़ा स्थापित किया।

तिब्बत के इस सुनसान, अनजान और कठोर माहौल में एक सच्चे संत के अलावा कोई नहीं रह सकता, इसलिए यहां अनजान लोगों और जिज्ञासु भक्तों की बेवजह भीड़ नहीं होगी। ध्यान और साधना से मुक्ति और निर्वाण पाने के लिए एक सही जगह। तपस्या के लिए एक अनजान जगह।

अचुक रिनपोछे या अचुक लामा 17 वीं सदी के मशहूर गुरु लोंगसेल निंगपो के अवतार हैं। गुरु लोंगसेल निंगपो के असली गुरु भारतीय गुरु रिनपोछे थे, जो शायद 8 वीं सदी के तांत्रिक गुरु आतिश दीपांकर के शिष्य थे। यह वंश तिब्बत के सबसे पुराने निंगमा संप्रदायों में से एक से जुड़ा है। याचेन गुम्पा एक नया बना संगठन है।

उन्हें खुद नहीं पता कि 1980 में इस खूबसूरत पहाड़ और नदी की गोद में अपना आश्रम बनाने के बाद यहां भक्तों को कैसे खींचा, वे बस इसे गुरु की कृपा बताते हैं। वे किसी से एक पैसा नहीं लेते, बल्कि खाने में आटा, चावल, दाल, आलू, गाजर लेते हैं। भक्त खुद अपनी पीठ पर स्थानीय पत्थर और लकड़ी, सीमेंट और लोहा लाए हैं। कभी-कभी तो दस से पंद्रह दिन का पैदल सफर करना पड़ता है। क्योंकि यहां पहुंचने के लिए सड़क नहीं है। आश्रम तक पहुंचने के लिए पुल भी भक्तों का ही दान है। नदी पार करने का यही एकमात्र रास्ता है। सर्दियों में जब नदी का पानी जम जाता है, तो सफर करना आसान होता है, लेकिन ठंड बहुत ज़्यादा होती है। दस साल (1990) के अंदर अचुक रिम्पोछे के भक्तों की संख्या पांच हज़ार तक पहुंच गई। भक्त अचुक रिम्पोछे से सलाह लेते हैं और फिर दीक्षा लेते हैं। दीक्षा के बाद वे घर वापस नहीं लौटते बल्कि वहीं रहकर सीधे ध्यान के अलग-अलग तरीके सीखते हैं। उन्होंने ही लकड़ी और प्लास्टिक के छोटे-छोटे घर बनाए हैं। हज़ारों झुग्गी- झोपड़ियाँ सिर्फ़ रहने के लिए बनाई गई हैं। दिन में सिर्फ़ एक बार खाना मिलता है खिचुरी या छातू या सम्पा मठ।

सबसे हैरानी की बात यह है कि जो औरतें एक-दो दिन के लिए आती हैं, वे एक महीना, दो महीना, तीन महीना, एक साल, साल दर साल यहीं रहती हैं। औरतों की संख्या ज़्यादा है - लगभग आठ हज़ार औरतें, वे जब तक चाहें इस टेम्पररी गांव में रह सकती हैं। मर्दों को सिर्फ़ एक महीने तक रहने की इजाज़त है। मर्दों को जाना होता है, अपने परिवार की नौकरी करनी होती है, और भगवान बुद्ध का अमर संदेश फैलाना होता है। यहां रहने या आने वालों में ज़्यादातर चीनी या लोकल कबीले के लोग हैं, तिब्बतियों की संख्या कम है। याचेन इलाका पहले तिब्बत में ही था, लेकिन आजकल चीन और तिब्बत का बॉर्डर इसी इलाके से होकर गुज़रता है।

पुराने धर्मों का नए रूप में उभरना अविश्वसनीय लेकिन सत्य है।

मुझे नहीं पता कि अचुक रिम्पोछे कितने साल के हैं, मैंने अंदाज़ा लगाया कि वे लगभग सौ साल के होंगे। योगियों से उनकी उम्र पूछना पाप है। दोपहर में, उन्होंने हमें मठ में रुकने के लिए कहा। पुल के पास एक पुलिस स्टेशन है, मैं गुरुजी के साथ वहाँ गया था, लेकिन हमें रुकने के लिए चीनी अधिकारियों से इजाज़त लेनी पड़ी। मेरी सिचुएशन सिंपल है, मैं हुआंगहे और यांग्त्ज़ी नदियों के सोर्स की तलाश में एक एक्सप्लोरर हूँ। यहाँ कोई होटल नहीं है, इसलिए मैं रुकने आया था, इसलिए मुझे इजाज़त मिल गई। मैं लकी था कि मुझे अचुक रिम्पोछे के बगल वाले कमरे में ठहराया गया। ऐसा लगता है कि गुरुजी को कई सालों बाद बात करने के लिए कोई मिल गया है। जब मुझे सही समय और मौका मिला, तो मैंने अपने मन की बात कह दी-

- 'क्या सरकार आपके धार्मिक प्रचार और भक्तों के आने-जाने में रुकावट नहीं डाल रही है? मैंने सुना है कि सरकार तिब्बती धर्म के खिलाफ है।'

उन्होंने मुझे रोका - 'मुझसे ये सारे सवाल पूछने का कोई फ़ायदा नहीं है।' उन्होंने यह कहा और इंटरप्रेटर की तरफ़ देखा, मुझे नहीं पता कि इंटरप्रेटर ने क्या कहा। रिम्पोछे मेरी तरफ़ झुके और बहुत अपनेपन से कहा, 'सरकार सरकार का काम कर रही है, मैं अपना काम कर रहा हूँ। भगवान तथागत सबसे ऊपर हैं, दुनिया उनकी मर्ज़ी से चल रही है।'

सोने से पहले उसने फिर से यह विषय उठाया। इंटरप्रेटर बहुत खुश हुआ।

"साल 2000 में, याचेन गुफा में लोगों की भीड़ थी, हर कोई मेरे दर्शन करना चाहता था, जिसका मतलब था आदिगुरु के दर्शन। इस गुफा के बारे में बात चारों ओर फैल गई। सरकार चेक करने आई। सरकार ने हज़ारों गुमनाम लोगों की भीड़ देखी। इस भीड़ को मैनेज करना सरकार का काम था। जिनके नाम पर कोई आइडेंटिटी कार्ड नहीं था, जो इस इलाके में नहीं रहते थे, उन्हें आश्रम से निकाल दिया गया। हज़ारों झोपड़ियाँ तोड़ दी गईं, यह एक दुखद मंज़र था, लेकिन खुशकिस्मती से, उन्हें कोई फिजिकल टॉर्चर या जेल नहीं दी गई। सिर्फ़ अनजान और अनजान लोगों के आने पर रोक लगाने वाले ऐड दिए गए थे। यह सब उनकी मर्ज़ी थी, भगवान तथागत सब कुछ देखने वाले हैं। साल 2001 में भक्तों की संख्या पाँच हज़ार से घटकर तीन सौ रह गई। फिर भक्तों का आना फिर से शुरू हो गया।

21

आज यहां परमानेंट ननों की संख्या दस हज़ार से ज़्यादा हो गई है। इसका एकमात्र कारण यह है कि हम तिब्बत के मूल धर्म न्यिंगमा संप्रदाय से हैं। हम कभी भी राजनीति या सरकारी आंदोलनों में शामिल नहीं रहे हैं। हमारा व्रत है, लोगों को चिंताओं और पापों से मुक्त करके निर्वाण का रास्ता दिखाना है।”

सुप्रीम गुरु अचुक रिम्पोछे की बातें सुनने के बाद मुझे भरोसा हुआ और मैंने तिब्बत का एक और चेहरा देखा।

पाठकों की जानकारी के लिए, मैंने यह अंश अपनी 2007 की डायरी से लिया है।

महातीर्थ के आखिरी यात्री के छठे एडिशन में आज के तिब्बत की एक झलक, तिब्बत और चीन के बॉर्डर पर याचेन गुफाओं के बारे में कुछ जानकारी शामिल है। चीज़ों की कीमतों में बढ़ोतरी की वजह से मुझे किताब की कीमत बढ़ाने पर मजबूर होना पड़ा है, उम्मीद है मेरे चाहने वाले मुझे माफ़ कर देंगे। मैं दोहराता हूं कि मैं कोई लेखक नहीं, बल्कि एक आम टूरिस्ट हूं। किताब को एक ट्रैवलर के नज़रिए से पढ़ें। मैं यह एडिशन आप सभी को अपने सच्चे अभिवादन और सम्मान के साथ समर्पित करता हूं।

शांति निकेतन

श्रीपंचमी 1416

जनवरी 2010 बिमल डे

□□□□-□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□

□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□-230.00

English Translation: The Last time I saw Tibetan Translated by Malobika Chaudhuri Penguin Books, New Delhi Rs. 325.00

□□□□□□ □□□□□□ -- □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□

□□□□□□-□□□□□□□□-□□□□□□□□

□□□□□□□ : □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□: □□ . 275.00
□□□□□□□□□, □□□□□□□□□, □□□□□□□, □□ □□□□□□□

□□□□□-□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□
□□□□□ □□□□□□□-180.00

□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□
□□□□ □□ □□□□□□□ - 500.00

□□□□□□□ □□ □□ □□□□□-□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□
□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□
□□□□□□□ □□□□□□ - □□□□□□□□ □□□□□□-260.00

□□□□□□□□□

□□ □□ □□□□ □□□□□	□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□
□□□□□□□	□□□□□ □□□□□□□
□□ □□□□□□□□ □□□□□□□	□□□□□ □□□□□
□□□□□□□□□□□□□□	□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□
□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□	□□□□□□□ □□ □□□□□□□
□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□	□□□□□□□ □□ □□□□□□□

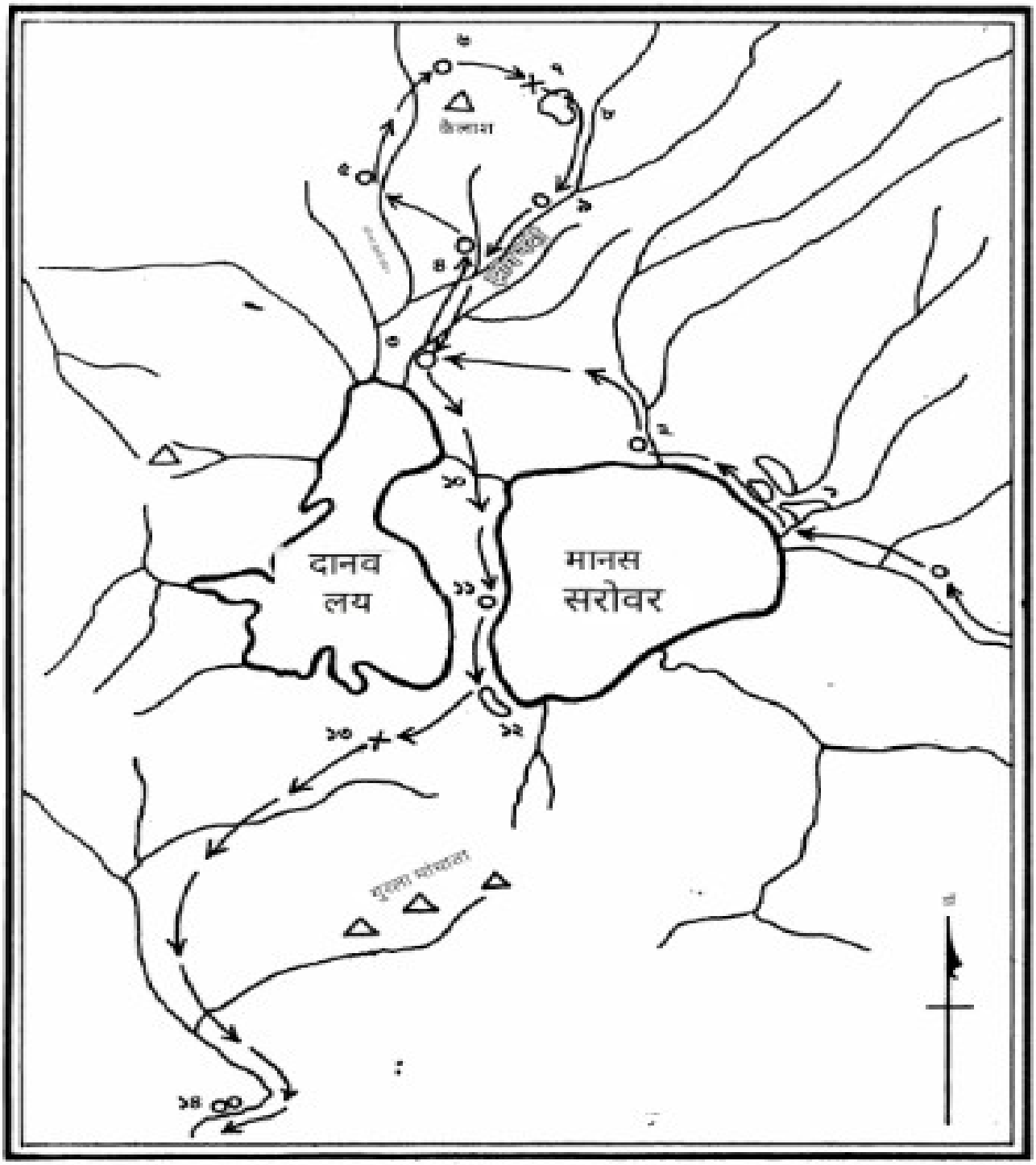

1. डिंग टैसो, 2. लैंग बोना गुफा, 3. परखा, 4. तारचेन, 5. नियांग-री गुफा, 6. दिराफुक गुफा,
7. डोलमा-ला, 8. गौरी कुंड, 1. जुफुलफुक गुफा, 10. गंगा-चू, 11. गुसुल-फुक गुफा,
12. ख्वात तासो, 13. गुरला-ला, 14. शिम्बिलिंग गुफा

□□□□□□□□ □□□□□□□□-103 km. □□ □□□□□ □□□□□□□□-52 km.

इस परिक्रमा के दौरान राक्षसताल परिक्रमा नहीं की जाती है। राक्षसताल और मानसरोवर उत्तर में गंगा-चू नदी से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। हिंदू गंगा-चू के पवित्र संगम पर तर्पण करने के बाद मानस परिक्रमा शुरू करते हैं। लामा आमतौर पर सेरालुंग गुफा से अपनी परिक्रमा शुरू करते हैं।

कैलाशनाथ या मानसरोवर की तुलना बद्रीनाथ, केदारनाथ, काशी वगैरह तीर्थस्थलों से नहीं की जा सकती। कैलाशनाथ बहुत ज़्यादा ठंड और बर्फ़ की जगह है। यहाँ कोई परमानेंट रहने वाला नहीं है, न ही कोई मंदिर है। यहाँ की सबसे बड़ी खासियत इस जगह की महानता है। देखना, छूना, डूब जाना, जप, ध्यान, प्रार्थना और संतों का साथ - यही वो चीज़ें हैं जो मुक्ति का रास्ता दिखाती हैं। इस इलाके में गुफाओं के रूप में छोटे-छोटे तिब्बती मठ फैले हुए हैं।

घर से भाग जाना

मैं गुरु के जाल में नहीं फंसा, ऐसा लगता है कि गुरु मेरे जाल में फंस गए। वह सज्जन सड़क के किनारे बीमार थे, और मैं ही एक भिखारी की तरह उनकी देखभाल कर रहा था। अब वह ठीक हैं, और मुझसे कहते रहते हैं, "वापस घर जाओ।" मैं उनकी बिल्कुल नहीं सुनता, बस मन ही मन मुस्कुराता हूं और कहता हूं, क्या मैं घर वापस जाने के लिए घर से निकला था?

मैं गया घूमने आया था, किसी तरह इच्छापुर से गया पहुंचा, ट्रेन से या बिना टिकट के, और यहां मजे से इधर-उधर घूम रहा हूं। हाथ में जो भी

पैसे थे, ट्रेन में झाल-मुरी खाकर खर्च कर दिए। जब मेरे पास करने को कुछ नहीं था, तभी इस साधु बाबा से मुलाकात हुई।

गया, हालांकि बहुत सुंदर शहर नहीं है, लेकिन इसकी अपनी एक आकर्षक शक्ति है, गया इस दुनिया के पुण्य और परलोक के प्रायश्चित, दोनों के मेल से बना है। स्वर्ग और नर्क का संगम। मुझे इस जगह पर आकर बहुत खुशी होती है। कभी-कभी मैं अपने दिन बौद्ध और हिंदू संतों की संगति में बिताता हूं।

लोग कहते हैं कि आध्यात्मिक संगति से मानसिक विकास होता है, मैं कहूंगा कि न केवल मानसिक बल्कि शारीरिक विकास भी बहुत ज़्यादा होता है। संतों की यह संगति मुझे पोषण दे रही है।

गया में बहुत से आकर्षण हैं। जो लोग अंधेरे में भटक रहे हैं, वे रोशनी की तलाश में आते हैं, और कई आत्मा की मुक्ति की उम्मीद में आते हैं। मैं क्यों आया? मुझे नहीं पता, मुझे रोशनी या मुक्ति नहीं चाहिए। मैं जो देखता हूं और जो पाता हूं, उससे खुश हूं, मुझे यहां की धूल में भी आज़ादी की खुशबू आती है।

गया वाले साधु बाबा, आजकल मुझ पर ज़्यादा ध्यान नहीं देते। उनके हिसाब से, मैं जवान हूँ, अभी सत्रह साल का नहीं हुआ हूँ, मेरा भविष्य बहुत अच्छा है, मुझे पढ़ना है और आदमी बनना है। ढोंग करके आदमी नहीं बन सकते। इसलिए वो रोज़ कहते हैं - घर लौट । लेकिन जो मिला है, उसे कैसे छोड़ दूँ? साधु बाबा मुझे बहुत पसंद हैं, लेकिन मैंने उनसे यह बात खुलकर नहीं कही है। साधु बाबा कोलकाता के मारवाड़ियों की तरह बंगाली बोलते हैं, ऐसा लगता है कि हिंदी उनकी मातृभाषा है, उन्हें नेपाली और भूटिया भाषाएँ भी आती हैं। वो तिब्बती लामा जैसे कपड़े

पहनते हैं, अपनी वाणी में वेद पढ़ते हैं, गौतम का आशीर्वाद उनके दिल में है, उन्हें हिंदू धर्म का बहुत ज्ञान है।

২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

जहां तक मुझे पता है, वे कई सालों तक सारनाथ के एक मठ में रहे। उनका अपना कोई अखाड़ा या डेरा नहीं है, और वे सत्तर साल से कम उम्र के नहीं हैं - यह सिर्फ़ मेरा अंदाज़ा है। मैं उनसे धर्मशाला में मिला था, पहली बार मैं उनसे सड़क पर मिला था। मैंने उन्हें अपने बारे में सब कुछ बताया - यानी, मेरे कोई माता-पिता नहीं हैं, कोई छोटे भाई-बहन नहीं हैं। कोई रिश्ता नहीं, कोई पढ़ाई नहीं, जेब में पैसे नहीं, वगैरह वगैरह।

मैं साधु बाबा को कभी बाबा, कभी साधुबाबा कहता हूँ, और अगर मेरा मूड बहुत अच्छा होता है, तो मैं उन्हें गुरुजी कहता हूँ। हमारी बातचीत बंगाली और हिंदी में होती है। मैं साधु बाबा से ज़्यादा बात नहीं करता। वह धर्मशाला के एक कमरे में रहते हैं, वह सड़क के किनारे तीन ईंटों वाले तंदूर में उबली हुई सब्ज़ियाँ ही खाते हैं, वह लगभग कुछ भी खर्च नहीं करते, मुझे कहना होगा, सिर्फ़ लकड़ियों का बंडल खरीदना पड़ता है। उन्हें मिट्टी के बर्तन और सारा सामान मुफ़्त में मिल जाते थे। मेरा मुख्य काम हर सुबह बाज़ार जाना था।

बिना पैसे के बाज़ार जाना बहुत अजीब काम था, सब्ज़ी बेचने वालों से भीख मांगनी पड़ती थी, आसान शब्दों में इसे भीख मांगना कहते थे। कभी- कभी तो एक करेला लाने के लिए पूरी सुबह घूमना पड़ता था। बाज़ार से आलू और आटा लाना सबसे आसान काम था, मैंने यह ज़िम्मेदारी अपने हाथों

में ले ली। अगर मैं गुरुजी से कहता कि मैं भीख मांगने जा रहा हूँ, तो वे बहुत नाराज़ हो जाते। उनके हिसाब से, यह भीख मांगना नहीं था, बल्कि बस विनम्रता और शील का अभ्यास करना था। मैं खुद से कहता था - जिसका नाम चलभाजा है, उसे मूरी कहते हैं।

बाईस दिन बाद, मैं दोपहर में बाज़ार से थका हुआ घर लौटा। जैसे ही मैं घर में घुसा, मैंने देखा कि साधु बाबा तीन दूसरे लामाओं के साथ किसी ज़रूरी बात पर बात कर रहे थे। उन्हें किसी भी तरह से परेशान किए बिना, मैंने खाना बनाना शुरू कर दिया और घर में इधर-उधर देखता रहा। तीनों लामाओं को देखकर मुझे लगा कि वे सब पहाड़ी लोग हैं, यानी शेरपा या नेपाली। वे काफी हद तक साधु बाबा जैसे दिखते थे।

थोड़ी देर में हमारा खाना तैयार हो गया। पाँच रोटियाँ, चार उबले आलू, एक मक्का और कुछ पालक के पत्ते पक गए थे। इसका मतलब था कि मैं बाज़ार से जो कुछ भी लाया था, सब खत्म हो गया था। साधु बाबा एक ही पत्नी वाले व्यक्ति थे। बाज़ार में जो कुछ भी मिलता था, उसे पकाना पड़ता था। यही उनका ऑर्डर था। अगर ज़रूरत से ज़्यादा होता, तो वे गली में किसी को बुलाकर दे देते, वे कभी भी अगले दिन के लिए कुछ नहीं रखते थे।

तीनों लामाओं ने हमारे साथ खाना खाया, इसलिए यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि उस दिन न तो गुरुजी ने और न ही मैंने कुछ और खाया।

खाने के बाद, गुरुजी तीनों लामाओं के साथ उठे। फिर उन्होंने अपने कंधे से छोटा बैग उतारा और मेरे सिर से लगाते हुए कहा, "तुम ज़िंदा रहो, मेरे बेटे, भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें।"

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩

मैं उनके अचानक आशीर्वाद से हैरान रह गया, मेरा दिल बैठ गया। मैंने उनसे पूछा कि उनका क्या मतलब है? उन्होंने बेपरवाही से जवाब दिया, "इसका मतलब है 'अलविदा'।"

मैं चौंक गया, उसने अचानक 'अलविदा' कहा, दो मिनट पहले तक तो उसने कुछ कहा भी नहीं था। मैं इस खबर के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। मैं कुछ देर तक उसके चेहरे को देखता रहा। उसने मुझे पूरी तरह नज़रअंदाज़ किया और चला गया। मेरी हालत तब बहुत नाज़ुक थी, मेरा गुस्सा गुस्से और घमंड से चरम पर था। मैं अपना गुस्सा कंट्रोल नहीं कर सका, दांत पीसते हुए, मैंने मिट्टी का बर्तन उठाया और सड़क पर साधु बाबा पर फेंक दिया, फिर अपने आस-पास के लोगों को देखकर कहा - यह साधु धोखेबाज़ है। यह पाखंडी है, बेईमान है, इसे दिल की बीमारी थी और मैंने इसकी सेवा करके इसे ठीक किया, अब इसे अपना देशवासी मिल गया है और यह मुझे भूल गया है। इसमें प्यार और स्नेह जैसा कुछ नहीं है। टूटे हुए बर्तन को देखकर मैंने मन ही मन सोचा कि आज मेरी खुशी बिखर गई। पिछले दिन भी मैंने पेट भरकर नहीं खाया था, आज का खाना लामाओं ने खा लिया, और ऊपर से साधु बाबा का जुदाई! मेरा सिर घूम रहा था, पैर सुन्न हो गए थे। मैं टूटे हुए बर्तन के पास अपने छोटे से शरीर के साथ बैठ गया, जैसे श्मशान में बिना पिता का तीर्थयात्री। सेवा करने का यह क्या नतीजा है? खैर, मैंने कुछ ही मिनटों में खुद को कंट्रोल कर लिया, मुझे पता था कि यहां मुझे दिलासा देने वाला कोई नहीं है, इसलिए मैं उस रास्ते की ओर भागा जिस पर साधु बाबा गए थे। एक पल में, मेरी नज़र चार लामाओं पर पड़ी। मैं साधु बाबा के पीछे गया और उनका बैग खींचा। ऐसा लगा कि वे मेरा इंतज़ार कर रहे थे। उनकी मुस्कान बहुत खूबसूरत थी, सादगी और निडरता का एक अद्भुत मेल। उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा, "मुझे पता

है कि तुम्हें दुख होगा, लेकिन इस दुनिया में सब कुछ धोखा है, इसलिए इसमें मत फंसो। मैं बहुत दूर जा रहा हूं, अगर पास जाना होता, तो तुम्हें अपने साथ ले जाता।"

दूर? मैं अपना घमंड भूल गया और उससे पूछा - वे इतने सारे लोग कहाँ से हैं?

उन्होंने जवाब दिया, "गंगटोक।"

मैंने आपको गलत समझा, मुझे माफ़ कर दीजिए। यह कहकर मैंने उनके पैरों पर हाथ रखकर प्रणाम किया, फिर उनके रास्ते की तरफ़ देखा। वह स्टेशन की तरफ़ चले गए और मैंने फल्गु की तरफ़ का रास्ता लिया।

फिर दो दिन और बीत गए।

जब से साधु बाबा गए हैं, एक शब्द दिमाग में आ रहा है: 'गंगटोक'। मैं कई बार सिलीगुड़ी और दार्जिलिंग गया हूँ, इसलिए मुझे पता था कि मुझे सिलीगुड़ी होकर सिक्किम जाना है, और गंगटोक सिक्किम की राजधानी है। सड़क पर चलते हुए अचानक मेरे मन में ख्याल आया,

8

महातीर्थ का अंतिम यात्री

तो जब आप वहां जाते हैं तो क्या होता है? यह वैसा ही है जैसे आप अपनी फीलिंग्स के हिसाब से जा रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे मुझे अचानक अपने दिल में छिपी खुशी मिल गई हो, और मुझे रास्ता मिल गया हो।

तीन दिन बाद, मैं सिलीगुड़ी पहुँचा, फिर वहाँ से ट्रक में सवार होकर भारत के आखिरी बॉर्डर पर पहुँचा, हिमालय की तलहटी में, तीस्ता बाज़ार नाम की जगह। यह एक छोटा, व्यस्त शहर है, जो मिलिट्री और बाज़ार का सामान ले जाने वाले ट्रकों से भरा हुआ है। तीस्ता नदी उसके बगल में ही बहती है। बॉर्डर पार करने में बिल्कुल भी मुश्किल नहीं हुई। मिलिट्री या पुलिस वाले किसी ने कुछ नहीं पूछा। ऐसा लगता है कि उनका ध्यान सामान और विदेशी नागरिकों पर है। उनकी राय में भारतीय विदेशियों की कैटेगरी में नहीं आते। मैं पुल पार करके तीस्ता नदी पार कर गया। जैसे ही मैंने दूसरी तरफ ज़मीन को छुआ, मैं खुशी से उछल पड़ा - मैं अब विदेश में हूँ, जय माँ काली!

तीस्ता के दूसरी तरफ, यानी सिक्किम की तरफ, सड़क के दोनों तरफ बहुत सारे ट्रक, बस, जीप और लगुरूवर हैं; इनमें से कुछ इंडिया की तरफ जा रहे हैं और कुछ ऊपर की तरफ। दोनों तरफ लेप्चा, भूटिया और सिक्किमी लोग भरे हुए हैं। आस-पास देखने पर पता चला कि यह सड़क सीधे ऊपर की तरफ जाती है - यह गंगटोक जाने वाली मेन सड़क है; लेकिन अगर आप चाहें तो पैदल भी जा सकते हैं। कोई कहता है कि पैदल चलने में तीन दिन लगते हैं, कोई कहता है चार दिन लगते हैं, और कोई कहता है इससे ज़्यादा। कोई पक्के तौर पर नहीं कह सकता, आम लोगों को मील का हिसाब समझ नहीं आता।

गया में पिछले कुछ दिनों में मुझे एक होटल में बर्तन धोने और घर-घर जाकर चाय देने का काम मिला, जिससे मुझे करीब तीन रुपये मिले। अभी तक मैंने अपनी गाड़ी का किराया नहीं दिया है, सिर्फ खाने का; मेरे पास अभी भी तेरह आने हैं। मैं एक चाय की दुकान में गया, दो चपाती और एक गिलास गर्म चाय खाई, और गंगटोक के लिए निकल पड़ा।

आह! क्या शानदार रास्ता है, यहाँ पहाड़ी पेड़ों की खुशबू, जंगल और पहाड़ों की खूबसूरती - अगर आप ऐसी सड़क पर हमेशा के लिए भी चलें, तो भी आपका शरीर नहीं थकेगा। बाईं ओर तीस्ता है, पहाड़ के ठीक नीचे। पहाड़ के नीचे उसका क्षितिज दिखता है, जैसे वह पत्थरों और रेत पर खुशी से नीचे की ओर बह रही हो। ऐसा बिल्कुल नहीं लगता कि यह तीस्ता ही है जो भयानक होकर शहरों, गांवों और सैकड़ों जिंदगियों को निगल जाती है। यहाँ, ऐसा लगता है जैसे शिव की शव प्रतिमा है, और नीचे, उन्होंने अपनी तांडव प्रतिमा पकड़ी हुई है।

अप्रैल का महीना है। यहाँ अभी बहुत ठंड है। मेरे कपड़े, शॉर्ट्स, एक टी-शर्ट और एक शर्ट, यहाँ ठंड से बचने के लिए बिल्कुल भी सही नहीं हैं। मैंने इसके बारे में कुछ नहीं सोचा, लेकिन अभी इतनी ठंड नहीं है कि चढ़ाई की जा सके।

जब हम गाड़ी चलाते हैं, तो ड्राइवर अक्सर अपनी लॉरी या ट्रक से बाहर आते हैं और पूछते हैं कि क्या मैं उनके साथ जा रहा हूँ। मैं हमेशा मुस्कुराता हूँ और जवाब देता हूँ नहीं। लॉरी की छत पर

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৫

मैंने सुना है कि अगर आप राइड करते हैं तो किराया बहुत कम होता है, लेकिन मेरे पास इतने कम पैसे भी नहीं हैं, इसलिए मुझे मजबूरन 'नहीं' कहना पड़ रहा है।

हिमालय की अपनी खूबसूरती है और सड़क का अपना चार्म। करीब चार घंटे चलने के बाद मुझे एहसास हुआ कि यह काम उतना आसान नहीं था जितना

मैंने सोचा था। लेकिन किस्मत से, सड़क पर पानी की कोई कमी नहीं है, थोड़ा देखने पर एक झरना फूट पड़ता है, यह पहाड़ की छाती से यात्रियों को बचाने के लिए निकला है। अब मुझे एहसास हुआ कि रास्ता सच में मुश्किल है। मैं चल रहा हूँ, हाँफ रहा हूँ और बैठता हूँ, ऐसे ही आगे बढ़ रहा हूँ; तभी भाग्य लक्ष्मी प्रसन्न हुईं - एक लॉरी आकर रुकी, ड्राइवर बिहारी लग रहा था।
मुझे देखकर उन्होंने पूछा - कहाँ जा रहे हो?
मैंने जवाब दिया - गंगटोक।
उन्होंने तुरंत कहा - बैठो।
मैंने उनसे कहा - मेरी जेब में पैसे नहीं हैं;
उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया - जब देखा तो समझ गया था ।

मैं समझ गया कि वह मेहरबानी करके मुझ पर एहसान करने को तैयार हैं।
उन्होंने समझाया कि मुझे लॉरी के अंदर नहीं बल्कि छत पर चढ़ना होगा। ट्रिपल रोप थोड़ी घिसी हुई थी, उसके कभी भी टूटने का चांस था। मेरा काम उस पर नज़र रखना था। अगर रस्सी टूट गई, तो मुझे लॉरी की छत पर आवाज़ लगाकर उसे बताना होगा। इससे दोनों पार्टियों को फ़ायदा होगा, ड्राइवर मन की शांति से गाड़ी चला पाएगा और मैं बिना किसी खर्चे के गंगटोक जा पाऊँगा। लॉरी में आमतौर पर एक असिस्टेंट होता है। एक खास मौके पर, इस लॉरी का असिस्टेंट तीस्ता नदी में फँस गया, इसलिए उसे मजबूरन मुझे एक असिस्टेंट की ज़रूरत में ले जाना पड़ा।

लॉरी चलने लगी, पहाड़ी रास्ता था, इसलिए लॉरी धीरे-धीरे चलने लगी। लेकिन जहाँ उसे रास्ता सीधा मिला, उसने गियर बदल दिए, और कार की छत पर मेरी हालत बर्दाश्त के बाहर हो गई। ठंडी हवा मेरे कानों के पास से गुज़रने लगी। फिर मैं एक ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ कार धीरे-धीरे चलने के बावजूद, ठंडी हवा मेरे लिए बर्दाश्त के बाहर हो गई। लगभग एक

घंटा बिताने के बाद, मैंने लॉरी की छत पर दस्तक दी और कार को ज़बरदस्ती रुकवा दिया।

जब लॉरी रुकी, तो मैंने ड्राइवर से दुखी आवाज़ में कहा कि मैं अब ऊपर की ठंडी हवा बर्दाश्त नहीं कर सकता, मुझे नीचे उतार दो, मैं पैदल चलूँगा।
ड्राइवर समझ गया, मुस्कुराया और कहा, "ठीक है।"
लेकिन हम आधे से ज़्यादा रास्ता तय कर चुके थे, बाकी रास्ता हम लॉरी के अंदर बैठकर पैदल चल सकते हैं। हम सड़क के किनारे एक भूटिया चाय की दुकान में घुसे और एक गिलास गर्म चाय पीकर फिर से गंगटोक की ओर चल पड़े। हम दोपहर चार बजे गंगटोक पहुँचे। तीस्ता बाज़ार से कार से आमतौर पर तीन घंटे का सफ़र होता है। ड्राइवर को बहुत धन्यवाद देने के बाद, मैं गंगटोक मेन मार्केट के पास उतर गया।

जब मैं एक महीने पहले घर से निकला था, तो मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं गंगटोक आऊंगा। यह बिल्कुल नया माहौल है। दुकानें, बाज़ार, लोग, सब कुछ, ऐसा लगता है जैसे मैं बहुत आगे आ गया हूँ। हिंदी मुझे बहुत अच्छी आती है।

৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

ऐसा लगता है कि यह खत्म हो जाएगा, लेकिन आस-पास के सिक्किमी लोगों को देखकर ऐसा लगता है कि उन्हें ज़्यादा हिंदी नहीं आती।

मेरा पहला काम साधु बाबा को ढूंढना है। मुझे लगा था कि काम आसान होगा, लेकिन असल में इसका उल्टा हुया । गंगटोक शहर में साधु बाबा को

ढूंढना सड़क के कीचड़ में सुई ढूंढने जैसा है। रात हो गई, और पहाड़ पर रोशनी धीरे-धीरे जुगनू की तरह टिमटिमाने लगी। मैं बाज़ार में कम से कम पचास लोगों से साधु बाबा के बारे में पूछ चुका हूँ, लेकिन अभी तक मुझे कोई नहीं मिला। साधु बाबा अब कोई नाम नहीं रहा, मुझे उनका असली नाम जानना है, नहीं तो गंगटोक शहर में रहने वाले सैकड़ों लामाओं में उस साधु बाबा को ढूंढना मुश्किल है।

सिक्किम के बाज़ार दार्जिलिंग के बाज़ारों जैसे ही हैं। सभी पहाड़ी लोग हैं, यहाँ बंगाली मिलना मुश्किल है। उस रात मैंने दिवाली बाज़ार में ड्राइवर शेल्टर में आग के पास रात बिताई। वहाँ एक लेछा आदमी ने मुझे चाय और ब्रेड दी।

अगली सुबह, मैंने फिर से साधु बाबा को ढूंढना शुरू कर दिया। सिक्किम में हिंदू मंदिरों के बारे में कोई नहीं जानता, यह तो ज़ाहिर है कि यहां बौद्ध धर्म ही है। चारों ओर छोटे-बड़े स्तूप और मठ हैं, यानी बौद्ध मंदिर और बौद्ध तीर्थस्थल। साधु बाबा को बताने के बजाय, मैंने यहां सबको बताना शुरू कर दिया कि मैं अपने गुरु-लामा को ढूंढ रहा हूं।

सिक्किम के लोग खुशमिजाज और सीधे-सादे होते हैं। आम सिक्किमी मेरी मदद के लिए हमेशा तैयार रहते हैं, मुझे उनकी भाषा नहीं आती, लेकिन इसके बावजूद मुझे कोई दिक्कत नहीं होती। क्योंकि मार्केट में आपको हमेशा कोई न कोई ऐसा मिल ही जाता है जो हिंदी समझता या बोलता हो। मैं अंचू से मिला, जो मेरी उम्र का बहुत सीधा-सादा और समाजसेवी इंसान है। वह मार्केट में रहता है। वह बसों, लॉरियों और किराने की दुकानों के लिए सामान लोड और अनलोड करता है, और जब उसके पास करने के लिए कुछ नहीं होता, तो वह मार्केट के कोने की रेलिंग पर बैठकर लोगों को देखता है। वह मार्केट में सबको जानता है। जब कोई विदेशी गंगटोक आता

है तो अंचू का ध्यान भटकना मुश्किल होता है। वह कुछ हिंदी शब्दों को लेचा और नेपाली शब्दों के साथ मिलाकर मुझसे बात करता है, उसकी बातें बहुत मीठी लगती हैं। कुछ ही समय में हम दोस्त बन गए। मैं कोलकाता का लड़का हूँ, यही मेरी सबसे बड़ी पहचान है। अंचू ने मुझसे हर तरह से मदद करने का वादा किया। अंचू के साथ चाय और ब्रेड खाने के बाद मैं मार्केट से निकल गया। मैंने मार्केट के ठीक पीछे एक पतली पहाड़ी सड़क ली, फिर ऊपर की ओर चढ़ना शुरू किया।

मार्केट से थोड़ा ऊपर चढ़ने के बाद मुझे गंगटोक और पहाड़ों का खूबसूरत नज़ारा दिखा। यह पहली बार है जब मैं अपनी आँखों से पहाड़ों की खूबसूरती देख रहा हूँ, पहाड़ों का नज़ारा सिर्फ़ आँखों को ही नहीं, दिल को भी भर देता है। दार्जिलिंग के मॉल से हिमालय का एक रूप दिखता है और गंगटोक से हिमालय का दूसरा रूप। गंगटोक कोई पहाड़ी पर बसा शहर नहीं है,

महातीर्थ का अंतिम यात्री

यह शहर एक पहाड़ी की ढलानों पर बना है। यह शहर पहाड़ी की ढलानों के साथ आगे बढ़ा है। यहां कोई भी सड़क समतल नहीं है।

गंगटोक का मेन अट्रैक्शन कंचनजंगा है। कितनी अनोखी खूबसूरती है, ऐसा लगता है जैसे हरी पहाड़ियों पर सफेद कॉटन से बना एक और पहाड़ हो। हरी पहाड़ियों के ठीक पीछे, सफेद कंचनजंगा अपना सिर उठाए खड़ी है। कंचनजंगा की पवित्रता ने सिक्किम के लोगों के दिलों को छू लिया है। निडरता और शांति का एक चरम रूप। निराकार, शांत, बिना दिखे ब्रह्म अचानक अपने प्रकट रूप में हमारे सामने आ गया है। ऐसा लगता है जैसे यह एक नया राज है।

हम धीरे-धीरे ऊपर चढ़ते गए। पहाड़ के ठीक ऊपर, पहाड़ की एक चोटी को काटकर चपटा कर दिया गया है। यहाँ से सिक्किम का नज़ारा और भी खूबसूरत लगता है, यहाँ से आस-पास का पूरा नज़ारा देखा जा सकता है। हम एक खूबसूरती से बने लकड़ी के घर के सामने पहुँचे। अलग-अलग चमकीले रंगों से रंगा हुआ, और लकड़ी की नक्काशी भी ध्यान खींचती है, यह किसी शाही महल जैसा दिखता है। अंचू ने मुझे बताया - यह सिक्किम का महल है। यह लकड़ी का महल पहाड़ पर खूबसूरती से बना है। ऊपर बादलों वाला आसमान, दूर कंचनजंगा, ऐसा लगता है जैसे यही जन्नत है। मैं हैरानी से देखने लगा, मन ही मन सोचने लगा कि मेरा गंगटोक आना कितना अच्छा रहा। अंचू ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे दूर एक और खूबसूरत लकड़ी के घर की ओर ले गया।

अंचू को यहाँ सब जानते है, गेट पर गार्ड ने उसे देखकर कुछ पूछा, अंचू ने मुस्कुरा कर उसकी बातों का जवाब दिया, फिर हम छोटे से मैदान को पार करके सीधे घर के सामने पहुँचे। जैसे ही मैंने दरवाजे से अंदर देखा तो मेरी नज़र एक विशाल बुद्ध मूर्ति पर पड़ी, मैं समझ गया कि यह एक बौद्ध मंदिर है।
अंचू ने मंदिर को प्रणाम किया और कहा - इस मंदिर को सुलखा कहते हैं, यह शाही महल का मंदिर है, राजा यहाँ प्रार्थना करने आते हैं। हम अंदर गए, सीधे बुद्ध की मूर्ति के पास गए और दीपक को छुआ। भगवान बुद्ध के चेहरे से दुनिया की रोशनी चमक रही है। लकड़ी पर सुंदर लाल, पीले और सुनहरे रंग आँखों को भा रहे हैं। मूर्ति के दोनों ओर छोटे- छोटे आलों में कई बौद्ध शिलालेख रखे हैं, दीवारों पर भी टंगे हैं, दीपक की बत्तियाँ टिमटिमा रही हैं, जैसे ही मैंने मंदिर में प्रवेश किया, मुझे लगा - मेरी सारी मेहनत सार्थक हो गई। मुझे ज़रा भी थकान महसूस नहीं हो रही है, तन और मन दोनों बहुत हल्का महसूस कर रहे हैं।

हम मंदिर से निकले और कुछ कदम चलने के बाद एक लकड़ी के थिएटर में पहुँचे। अंचू ने मेरा ध्यान उस ओर खींचा और कहा, "देश-विदेश से बहुत से लामा इस थिएटर में आते-जाते हैं। शायद तुम्हें यहाँ अपने गुरु के दर्शन हो जाएँ।"
मैंने खुशी से अंचू का हाथ पकड़ा और कहा, "तुम मेरे सच्चे दोस्त हो।" मैं अंचू के साथ थिएटर में घुस गया।

৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

थिएटर देखकर,लगा कि यह एक मठ है, कुछ लामाओं ने इस पर ऐसा कब्ज़ा कर लिया है। कुछ बैठकर मंत्र पढ़ रहे हैं, कुछ घंटा बजा रहे हैं, कुछ ज़ोर-ज़ोर से मंत्र पढ़ रहे हैं, कुछ खा रहे हैं, कुछ अपना बैग पैक कर रहे हैं, और कई कोने में बैठकर सिर की जूँ ढूंढ रहे हैं - इसे छोटा लामा मेला कहा जा सकता है। मैंने एक-एक करके हर लामा का चेहरा देखा और अपने प्यारे लामाजी को ढूंढने लगा। एक फ़ायदा यह है कि तिब्बती लामाओं की दाढ़ी-मूँछें लगभग नहीं होतीं। नेपाली, लेप्पा और भूटानी लामाओं की हल्की दाढ़ी-मूँछें होती हैं, और अगर होती भी हैं, तो ग्रुप के हिसाब से मुंडवा दी जाती हैं, और ज़्यादातर पुराने लामाओं के सिर मुंडवा दिए जाते हैं। तो, गया के संतों के उलट, दाढ़ी-मूँछ में कोई चेहरा छिपा नहीं है। यहाँ कम से कम 150 लामा हैं और मेरी तलाश उन्हीं के बीच से शुरू हुई। हालाँकि, मैं पक्के तौर पर कह सकता हूँ कि अगर मेरे गुरु उनमें से होंगे, तो वे मुझे ज़रूर देखेंगे। मैंने अंचू से कहा कि तुम चले जाओ, मैं इस बीच उसे ढूंढूंगा, अगर वह नहीं मिला तो मैं दोपहर में मार्केट स्क्वायर पर उससे मिलूंगा, और अगर वह मिल गया तो मैं उसे बता दूंगा। अंचू ने मुझे रुकने की सलाह दी, क्योंकि दोपहर में राजा लामाओं को सब्ज़ी और रोटी खिलाते हैं,

और गरीब भिखारी भी उसी समय खा सकते हैं। अंचू की सलाह पर मैं मान गया। वह मुझे महल के मंदिर कंपाउंड में छोड़कर चला गया।

मुझे भारतीय तीर्थ स्थलों पर ईंट-सीमेंट और पत्थर के मंदिर देखने की आदत है। राजबाड़ी का यह बौद्ध मंदिर मुझे बहुत अजीब लग रहा है। यह लकड़ी के पगोडा जैसा है। कोलकाता का जैन मंदिर भी काफी मिलता- जुलता है। यहां की बढ़िया लकड़ी की कारीगरी और रंगों की गहराई तारीफ के काबिल है।

मुझे लामाओं में से दो-तीन लोग मिले जो हिंदी जानते थे, और मैंने उन्हें अपनी प्रॉब्लम बताई। वे सब मेरी मदद करने को तैयार थे, लेकिन कैसे? यह बात धीरे-धीरे लामाओं में फैल गई, और कुछ ही समय में सबको पता चल गया कि मैं अपने गुरु को ढूंढ रहा हूं। मुझे लगता है कि आधे घंटे के अंदर, पूरे मंदिर में करीब दो सौ लामा मेरी प्रॉब्लम सॉल्व करने के लिए तैयार हो गए। लामाओं को चुपचाप बैठे और नाम जपते हुए देखकर, मैं सोच भी नहीं सकता था कि वे मेरी प्रॉब्लम को लेकर परेशान होंगे, मैं उनकी ईमानदारी देखकर हैरान था। कई लोग मुझसे पूछने लगे-

आपके गुरुजी का नाम क्या है? आप कहाँ रहते हैं? उनकी उम्र कितनी है? कौन सा धर्म? बौद्ध धर्म की कौन सी ब्रांच? वे किस गुफा में रहते थे? वे किस तरह के ट्रैवलर हैं? क्या वे लेप्पा हैं, या भूटिया हैं, या नेपाली हैं? -

मैं उनके किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे सका। गया में, हम उन्हें साधु बाबा या गुरुजी कहते थे, वे बौद्ध भिक्षु जैसे कपड़े पहनते थे, पहाड़ी जैसे दिखते थे, और जब वे गया से निकले, तो उनके साथ तीन और लामा थे। बस इतना ही! मुझे इससे ज़्यादा कुछ नहीं पता।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৯

मुझे निराश होना पड़ा, लेकिन सबने मुझे भरोसा दिलाया कि यह एक अच्छी इच्छा है, इसलिए यह पूरी होगी। अचानक, तिब्बती शंख बजा, मैं हैरानी से उसे देखने लगा। उसकी गंभीर और भयानक आवाज़ ने सबको कांपने पर मजबूर कर दिया। आवाज़ हिमालय में कंचनजंगा की चोटी पर और हिमालय की सतह पर गूंजने लगी। यह सिर्फ़ एक बार रुकी, लेकिन इसकी गूँज पहाड़ों की सतह पर लहरों की तरह गूंजने लगी। वह आवाज़ सुनकर लामाओं में उत्साह पैदा हुआ, सबने प्लेटें और कटोरे तैयार किए और खेत की तरफ़ दौड़े, मैं समझ गया कि उनका खाना आ गया है।
एक लामा ने मुझसे पूछा, "क्या तुम खाना नहीं खाओगे?"
दूसरे लामा ने मुझे खेत में उनके साथ बैठने को कहा, लेकिन प्लेट को लेकर एक दिक्कत थी। सब खाने के लिए अपनी प्लेट लाते हैं, वे यहाँ से कोई प्याज़ या केले के पत्ते नहीं देते।

एक संत ने मेरा हाथ देखा और कहा, "क्या तुम्हारे पास कुछ नहीं है?"

-नहीं, मेरे पास कुछ भी नहीं है।

-अगर कुछ है ही नहीं तो आप इसे कैसे ले सकते हैं? आपको देना होगा और फिर इसे लेना होगा, अगर आप कुछ नहीं देते हैं तो आप इसे कैसे ले सकते हैं?

ऐसा लगता है कि उनकी बातों में कोई सच्चाई छिपी है, लेकिन अभी मैं उसे वेरिफाई नहीं कर सकता।

मेरी हालत देखकर, उनमें से एक ने मुझे एल्युमिनियम का कटोरा दिया और कहा, "हम काम चला देंगे।"
मैंने कटोरे को देखा और कहा, "हाँ, , लेकिन यह बहुत गंदा है।"
कटोरे में उंगली डालने से ही मेरी पूरी उंगली काली हो गई। आम हालात में, मैं इसे छूता भी नहीं। कूड़े के ढेर में मिले टूटे हुए बर्तन भी इससे ज़्यादा साफ़ लगते हैं। लेकिन इस हालत में, मुझे जज नहीं करना चाहिए, और खासकर जब मेरा पेट भूख से जल रहा था, मैंने लामा को धन्यवाद दिया और उनके साथ खाने बैठ गया।
लामा ने कहा, " कटोरा दो और जी भरकर खाओ।"
लाबरा ग्रुप की करी और उसके साथ आए चावल से सब खुश थे। मुफ़्त के खाने से इससे ज़्यादा की उम्मीद करना गलत था। मैंने सबको खाते और होंठ चाटते देखा। मुझे और भी हैरानी हुई जब मैंने देखा कि उन्होंने खाने के बाद बर्तन धोने की भी ज़हमत नहीं उठाई। खाने के बाद, वे उन्हें वापस अपनी जेब में रख लेते हैं। मैंने सुना है कि तिब्बती बहुत गंदे होते हैं, और अब मैं यह अपनी आँखों से देख रहा हूँ। मेरे सामने बर्फ़ जैसा सफ़ेद, साफ़ हिमालय दिख रहा है, और गंदे, गंदे लामा मेरे ठीक बगल में हैं। मेरे लिए, यह बहुत बड़ी परेशानी है। मैंने खुद को तसल्ली दी और सोचा, यही दुनिया है, यह अच्छाई और बुराई से बनी है! इन गंदे लामाओं का दिल भी इन कंचनजंगा की तरह ही सादा और सुंदर लगता है।

दोपहर होते-होते मेरा मन बहुत हल्का हो गया, मैं ज़्यादा शांत हो गया। मैंने खुद को तसल्ली दी - या यूँ कहें कि मुझे संत पिता मिल गए, इसमें क्या बुराई है?

১০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

कम से कम उनकी वजह से ही मैं गंगटोक गया। गया से गंगटोक आने का शानदार अनुभव कौन छीन सकता है! खूबसूरत हिमालय, रंग-बिरंगे सजे हुए महल, बुद्ध मंदिर की पवित्रता, सब मिलाकर, ऐसा लगता है कि मैंने खोया नहीं बल्कि पाया है। हो सकता है साधु बाबा ने जानबूझकर मुझे गंगटोक के बारे में बताया हो, हो सकता है वह असल में यहाँ से बहुत दूर हों। हो सकता है उन्होंने चालाकी से कहा हो कि वह मुझे यहाँ लाने के लिए गंगटोक आ रहे हैं। हो सकता है वह कभी गंगटोक न आएं।

वजह जो भी हो, यह एक बड़ा फ़ायदा है कि मैं गंगटोक आया। इस बार, घर से भागना दूसरी बार की तुलना में ज़्यादा फ़ायदेमंद रहा है।

घर से भागने का कोई रास्ता नहीं था, हर दिन छह घंटे स्कूल की चारदीवारी में बंद रहना मेरे लिए बर्दाश्त से बाहर था। मैं घर पर अपने दादा-दादी से बार-बार पूछता था कि अगर मैं पढ़ना-लिखना सीख गया तो क्या होगा?
मुझे एक ही जवाब मिला - इंसान होने के नाते ---।
इंसान होने के नाते यह जवाब मुझे सिर्फ बोरियत नहीं, एक बेजान शब्द जैसा लगा। क्या इंसान होने के लिए हमें चार दीवारों की ज़रूरत है? ऐसा लगता था जैसे हमारी पीठ मालिकों की पारिवारिक और मानसिक समस्याओं को सुलझाने के लिए बनी हो। वे हमें हमारी कालीबाड़ी का इतिहास बताने के बजाय इंग्लैंड का इतिहास सुनाते थे। घर और स्कूल के इन सभी सिस्टम के खिलाफ मेरा एक मौन विरोध था। मेरे विरोध के जवाब में मुझे डंडे और कोड़े मिले। जब मेरा विरोध और जिद्दी हो गया और सिर उठाने लगा, तभी मैं घर से भाग गया। घर से भागना मेरे लिए खुशी का खेल है। सिक्किम आकर मन की वह छोटी सी खुशी बड़े आनंद में बदल गई है। लोग अपनी खूबियों का बखान करते हैं, मुझमें कोई खूबी नहीं है, इसलिए घमंड करना मुझे शोभा नहीं देता। फिर भी, सिक्किम की इस बेहिसाब खुशी

और खुले हिमालय के नज़ारे को देखकर मेरा सीना बार-बार फूल जाता है, और मैं चिल्लाकर सबको बताना चाहता हूँ, मैं देखता हूँ - मैं पाता हूँ। मेरा दिल इस देखने और पाने से भर गया है। आपमें से जिन्होंने नहीं देखा है, जो किताबों और चार दीवारों में फंसे हुए हैं, क्या आप एक बार नहीं आ सकते? अगर आप इस महान आनंद का एक छोटा सा हिस्सा भी छू पाते, तो आप देखते कि यह दुनिया कितनी खुशनुमा है! मन का हवा से जुड़ाव ही सबसे बड़ा जुड़ाव है!

मंदिर की बिल्डिंग में बैठकर मैं कई बातों के बारे में सोचने लगा। मेरी किस्मत कितनी अजीब थी! मैं घर पर बैठकर एक अच्छा लड़का बन सकता था और बिना किसी परेशानी के रह सकता था, लेकिन मैं कैसा लड़का बन गया हूँ? सज्जनों के अनुसार, मेरा अभी का माहौल बहुत ही खराब है, सोच से भी परे। मैं अपनी रातें सड़कों पर पड़ा बिताता हूँ, और अपने दिन गरीब कुलियों और भिखारियों के साथ। मैं ठीक से खा नहीं सकता। मेरा पेट भूख से जलता है, पथरी होती है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১১

और भले ही ईंट पर सिर रखकर सोने से मेरा सिर अकड़ गया है, फिर भी मेरी खुशी और उत्साह में ज़रा भी कमी नहीं आई है।

शाम होने के बाद मैं धीरे-धीरे पहाड़ी से नीचे उतरा। अंचू को ढूंढना मुश्किल नहीं था। मुझे देखकर वह समझ गया कि मैंने अपने गुरु के दर्शन नहीं किए हैं। मैंने अंचू को समझाया कि अगर मुझे साधु बाबा नहीं भी मिले, तो भी मुझे कोई दिक्कत नहीं होगी, क्योंकि मुझे सिक्किम बहुत पसंद है। अगर मुझे किसी तरह सिर रखने की जगह मिल जाए,

तो मैं वहीं रह सकता हूँ। अंचू मेरी बातों से हैरान था - गंगटोक एक बड़ा शहर है, इतने सारे घर, बाज़ार, सड़कें; तारों से भरा आसमान देखो, और तुम कहते हो कि इतना सब होने के बाद भी सिर रखने की जगह नहीं है। - यह बात उसे ठीक से समझ नहीं आई। अगर रात में कंबल न हो, तो बस एक ही चीज़ जो बहुत ज़रूरी है, वह है आग, उसके हिसाब से, ज़िंदा रहने के लिए आग और खाना बहुत ज़रूरी हैं। अगर आपके पास ये दो चीज़ें हैं, तो ज़िंदगी में किसी और चीज़ की ज़रूरत नहीं है।

उसने जो कहा वह बिल्कुल सच है, मैंने इस पर ध्यान से सोचा, आग और खाना दो ऐसी चीज़ें हैं जो सच में ज़रूरी हैं। हम खाने के लिए जीते हैं, और आग हमारी सेवा करती है। आज की सभ्यता पूरी तरह से आग के आस-पास बनी है। मेरे पास अंचू को देने के लिए कुछ नहीं है, लेकिन ऐसा लगता है कि अंचू मुझसे सब कुछ छीन रहा है।

मैं धीरे-धीरे गंगटोक शहर को जानने लगा, जहाँ बौद्ध भिक्षु और लामा बिखरे हुए हैं। गंगटोक के अलग-अलग हिस्सों में चैत्य और गुफाएँ या बौद्ध मंदिर बिखरे हुए हैं। मैंने गुफाओं की एक खास बात देखी। वे सिर्फ़ मंदिर में पूजा करने तक ही नहीं रुकते, बल्कि बुद्ध मंदिर के आसपास लामाओं के रहने का इंतज़ाम है, और धर्मशाला या गेस्ट हाउस उसके बगल में है। सिक्किम में ऐसे लगभग साठ से सत्तर बौद्ध मठ हैं और उनमें से ज़्यादातर गंगटोक से चालीस से पचास मील के अंदर हैं। अगर यह समतल ज़मीन है, तो चालीस से पचास मील बहुत लंबी दूरी नहीं है, लेकिन इस पहाड़ी और जंगली रास्ते पर यह बहुत बड़ी दूरी है। नेपाली, भूटिया (स्थानीय लोग इन्हें भोटिया कहते हैं), गोरखा, लेचा और तिब्बती आमतौर पर यह बड़ी दूरी पैदल ही तय करते हैं। गंगटोक को छोड़कर दूसरे शहरों से दूर गाँवों तक पहुँचने का एकमात्र तरीका पैदल चलना है। बौद्ध धर्म सिक्किम का राज्य धर्म है। आम लोगों के लिए कंचनजंगा एक पवित्र चोटी है। कंचनजंगा गरीबों पर राज करने वाली

देवी लगती हैं। गंगटोक में आप जहां भी जाएंगे, आपको कंचनजंगा दिखेगी, जो थके हुए यात्री की एकमात्र उम्मीद हैं, वह सबको रास्ता दिखाने के लिए सबसे ऊंची जगह पर विराजमान हैं।

फिर पाँच दिन और बीत गए। इस दौरान मैं गंगटोक की गलियों को अच्छी तरह जान गया। रास्ते में मुझे कुछ बंगाली मिले, लेकिन मैं उनसे बहुत सावधानी से बचता रहा। मुझे पता था कि अगर मैं उनसे सच में प्यार करता हूँ, तो मुझे घर लौटना होगा। शहर के आस-पास बहुत सारी गुफाएँ और मंदिर हैं।

১২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैंने उन सबको ढूंढा है कि वह अभी भी वहीं है या नहीं। मैंने जो शॉर्ट्स और शर्ट पहनी है, वे अब पहाड़ी कुलियों के कपड़ों की तरह गंदे हो गए हैं। इससे मुझे फायदा हुआ है, लोग सोचते हैं कि मैं उनमें से एक हूँ। मैं अंचू के साथ रहता हूँ, खाता-पीता हूँ। मैं उसका सामान उठाने में मदद करता हूँ, और अपने खाली समय में उसे कुछ इंग्लिश और बंगाली शब्द सिखाता हूँ। गंगटोक की ठंड अब बर्दाश्त से बाहर है। जब कलिम्पोंग, सिलीगुड़ी, दार्जिलिंग से कोई बस आती है, तो अंचू कस्टमर लेने के लिए उसके पीछे भागता है। मुझे बस में चढ़ने या कस्टमर लेने का कोई हक नहीं है क्योंकि मैं वहाँ का नहीं हूँ। मैं उनके ग्रुप का नहीं हूँ।

बस में हूटिंग हो चुकी है, लेकिन अंचू की मदद करने में कोई दिक्कत नहीं है।

जैसे ही तीस्ता बाज़ार में बस आई, हम हमेशा की तरह उसके पीछे भागे। जैसे ही बस गैराज में घुसने से पहले मुड़ने के लिए धीमी हुई, शेरपा टीम उस पर कूद पड़ी। अंचू पीछे की सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गया, और मैंने अंचू का सामान लेने के लिए खिड़की के पास जगह ले ली। जैसे ही बस रुकी, पैसेंजर धीरे-धीरे उतरने लगे, अचानक एक पैसेंजर को देखकर मैं चौंक गया! मैं उसे बेहतर तरीके से देखने के लिए उसकी तरफ बढ़ा। जैसा मैंने सोचा था, मैं खुशी से उछल पड़ा!

'मुझे मिल गया' कहते हुए, मैं आगे बढ़ा और ठीक उसके सामने गिर पड़ा। जब उसने मुझे देखा, तो उसने मुझे गले लगा लिया। क्या खुशी थी! मुझे साधु बाबा मिल गए, मैंने चिल्लाकर अंचू को बुलाया और कहा - देखो, मेरा खोया हुआ गहना। मेरी बात सुनकर अंचू नीचे आया, और अंचू को साधु बाबा से मिलवाया।

थोड़ी देर बाद साधु बाबा के साथ तीन लामा भी नीचे आ गये।

साधु बाबा मुझे देखकर बिल्कुल भी हैरान नहीं हुए—उन्होंने यह भी नहीं पूछा कि मैं वहां कैसे पहुंचा—लेकिन उनके चेहरे से साफ पता चल रहा था कि वे मुझे देखकर बहुत खुश थे।

अंचू ने हेल्पर बनकर साधु बाबा को मेरे बारे में कुछ बातें बताईं, जैसे मैं कहाँ रहता हूँ, क्या खाता हूँ, वगैरह। कहने की ज़रूरत नहीं कि साधु बाबा के साथ जो लोग थे, वे मुझे देखकर बहुत हैरान हुए। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि इतने हज़ारों लोगों के बीच मैं साधु बाबा को कैसे ढूँढ़ पाया। मैंने उन्हें एक बार फिर पुरानी कहावत सुनाई - 'जहाँ चाह होती है, वहाँ राह होती है।'

साधु बाबा को फिर से पाना मेरे लिए एक बड़ी कामयाबी है, उस कामयाबी का कोई मुकाबला नहीं है। उनके होने से गंगटोक की खूबसूरती मुझे दोगुनी खूबसूरत लगने लगी। कंचनजंगा की सफेद और पवित्र चोटी मेरे लिए और भी पवित्र हो गई।

इस बार उनका आना मुझे ज़्यादा मकसद वाला लगा। गंगटोक के इन बौद्ध लामाओं के बीच साधु बाबा का संबोधन ठीक नहीं लगा, इसलिए मैंने उन्हें गुरुजी कहना शुरू कर दिया। गुरुजी के पास कोई सामान नहीं है,

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৩

लेकिन उनके साथी लामा के पास एक बक्सा था। अंचू ने प्यार से कहा कि वह सामान पहुंचा देगा। मैंने अंचू से रिक्वेस्ट की कि अगर वह हांफेगा, तो मैं उसे ले जाऊंगा। मेरे पास सामान पीठ पर ढोने के लिए ज़रूरी रस्सी नहीं थी, इसलिए मुझे अंचू की मदद लेनी पड़ी। गंगटोक से हम ऊपर की ओर चलने लगे। हम मेन रोड के साथ-साथ चढ़ने लगे। सड़क काफी चौड़ी और साफ थी। यह बिल्कुल वैसी ही मेन रोड थी जो दार्जिलिंग के मार्केट से मॉल तक जाती है, अंचू डगमगाते हुए चल रहा था, हम ठीक उसके पीछे चलने लगे। सड़क पर गुरुजी से बात करना नामुमकिन था, यह बात मुझे गया में पहुंचते ही समझ आ गई। वह रास्ते में बात नहीं करना चाहते थे, इसलिए हम धीरे-धीरे, लगभग चुपचाप चलने लगे। ऐसा लगा कि गुरुजी ने अंचू को मंज़िल बता दी थी, क्योंकि वह काफी दूर निकल गए थे। थोड़ी देर बैठने और खड़े रहने के बाद, हम लगभग एक घंटे में पहाड़ी की चोटी पर एक बौद्ध मंदिर पहुंच गए, जिसे वहां के लोग एचे गोम्फा कहते हैं। ऐसा लगता है कि यह गंगटोक की सबसे ऊंची पहाड़ी है। बाकी पहाड़ियाँ गंगटोक शहर के बाहर हैं। यहाँ से पूरा गंगटोक शहर

साफ़-साफ़ देखा जा सकता है, खासकर महल और उसके आस-पास के मंदिर।
कंचनजंगा का नज़ारा और भी सुंदर है।

जैसे ही हम गुफा में पहुँचे, करीब पच्चीस लड़के आए और गुरुजी को घेर लिया, ऐसा लग रहा था कि वे गुरुजी के बहुत करीब थे। पाँच-छह बुज़ुर्ग लामाओं ने भी गुरुजी का स्वागत किया।

अंचू ने अलविदा कहा और कहा कि वह फिर आएगा, गुरुजी ने मुझे अपने साथ रहने को कहा। मुझे कहना होगा कि यह मेरे लिए बहुत बड़ा आशीर्वाद था, गुरुजी के सम्मान से मुझे गर्व महसूस हुआ।

एचे गुफा एक पहाड़ी पर, चीड़ और पहाड़ी चीड़ के पेड़ों के जंगल के बीच एक खूबसूरत जगह पर है। गुफा एक मठ है और एक बौद्ध मंदिर के चारों ओर एक छोटा मठ है। बौद्ध मंदिर का इस्तेमाल पूजा और आराधना के लिए किया जाता है। भिक्षु इसके बगल वाले मठ में रहते हैं और मेहमान मठ में रहते हैं। बौद्ध मंदिर और मठ का फर्श और नींव पत्थर से बनी है और उसके ऊपर एक सुंदर बड़ा लकड़ी का घर है। मठ पूरी तरह से लकड़ी का है, जिसमें ठोस लकड़ी पर छोटे कमरे हैं। मैंने गुरुजी के साथ रहने का इंतज़ाम किया है। पहाड़ी पर एक बगीचा बनाया गया है - गुफा के चारों तरफ मिट्टी जैसी सीढ़ियाँ और उसके बगल में इलायची का जंगल है। गुफा में बच्चों की संख्या छब्बीस है, उनकी उम्र नौ से चौदह से पंद्रह साल के बीच है; और बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स में आठ लोग हैं। आठ में से दो सीनियर लामा हैं, वे लोकल गुरु हैं, और छह आम लामा हैं। छोटे लड़कों को नौसिखिए ब्रह्मचारी कहा जा सकता है, उन्हें शतरंज कहा जाता है।

एक शब्द में, यह कहा जा सकता है कि मठ के सभी शिक्षक और डायरेक्टर लामा हैं।

১৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

कुछ स्टूडेंट्स 1st लेवल पर हैं और कुछ स्टूडेंट्स 2nd लेवल पर हैं। सभी स्टूडेंट्स ने सफेद कपड़े पहने हैं। माहौल बहुत अच्छा है। मुझे पहले ऐसे माहौल में रहने का मौका नहीं मिला। गया के मुकाबले यह सच में जन्नत है, यहां आपको सुबह उठकर भीख नहीं मांगनी पड़ती, बल्कि प्रार्थना करनी पड़ती है। गुरुजी की सेवा करने की ज़रूरत नहीं है, वह अब पूरी तरह से स्वस्थ हैं। मुझे दिन में एक नया काम मिला है, जो यहां मंदिर में मूर्तियों की धूल साफ करना और उन्हें रंगना है। यह काम दो लामा करते हैं, मैं बस उनकी मदद करता हूं। यहीं पर मैं धीरे- धीरे भगवान बुद्ध के अलग-अलग रूपों और उनके साथ-साथ बहुत सारी तांत्रिक मूर्तियों से परिचित होने लगा। यहां बौद्ध धर्म का मतलब तांत्रिक बुद्ध-तत्व है। ये दोनों रास्ते मेरे लिए नए हैं, भाषा की कमी के कारण मुझे सबसे बात करने में ज़्यादा दिक्कत महसूस होती थी ।

कुछ ही दिनों में, मुझे गुरुजी का एक और पहलू पता चला। वे असल में एक जाने-माने बौद्ध साधु हैं। उनका असली घर सिक्किम के पास कहीं है। वे कभी यहाँ एक संघ से जुड़े थे, फिर उन्होंने सब कुछ छोड़ दिया और अब पूरी तरह आज़ाद हैं। हालाँकि वे एक लामा हैं, लेकिन उन्हें हिंदू धर्म ज़्यादा पसंद है। उनके अनुसार, भगवान तथागत सिर्फ़ वेदों के सुधारक हैं, भगवान बुद्ध भारत की धरती पर पैदा हुए थे और बुद्ध की शिक्षाएँ और धर्म महान भारत की उसी पवित्र भूमि पर पैदा हुए और पहचाने गए। इसलिए, गुरुजी के लिए, भारत दुनिया का सबसे बड़ा तीर्थ है। समय-समय पर अवतार खुशी का संदेश लेकर भारत आए हैं। पिछले पंद्रह सालों से, वे ल्हासा, गया और सारनाथ की यात्रा कर रहे हैं। वे

भूटानी, सिक्किमी और नेपाली लामाओं के साथ तिब्बत गए और वापस आते समय, वे तिब्बती संतों को भारत दर्शन कराने ले आए। कहा जा सकता है कि वे सत्संग के मार्गदर्शक हैं। भीख माँगना उनका नशा है, भारत की सड़कों पर भीख माँगने का मतलब है एक बड़ी और महान दुनिया से सीधा संपर्क, संस्कृति से जुड़ाव। यह तो बस अलग-अलग लोगों के स्वभाव से परिचित होने का एक तरीका है। भीख मांगने से इंसान के दिल से सीधा संपर्क होता है। संत दान लेते हैं और दूसरों को मुक्ति दिलाते हैं, वह परमात्मा के दर्शन के लिए इंसान की आत्मा से भीख मांगते हैं। लोगों में छिपा हरि है, उनके दर्शन में ही उनका आनंद है, लेकिन आम भिखारी सिर्फ पेट भरने के लिए भीख मांगते हैं, यह समझदारी का रास्ता नहीं है, बल्कि सिर्फ जीने का रास्ता है।

इस बार गुरुजी गंगटोक से संतों के एक ग्रुप को ल्हासा ले जाने आए हैं। उनके साथ तीन संत कुछ साल पहले तिब्बत की एक गुफा से तीर्थयात्रा और सीखने आए थे, अब वे वापस जा रहे हैं, वे एक महीने में वापस आ जाएंगे। गया, सारनाथ, बनारस, कोलकाता, सिलीगुड़ी और गंगटोक की ये गुफाएं उनके मिलने और तैयारी के सेंटर हैं। भले ही साधु बाबा ने मुझे खुद नहीं बताया, लेकिन यह खबर इकट्ठा करना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं था।

दस दिनों के अंदर अठारह और लामा आ गये।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৫

मार्च के पहले हफ़्ते में सभी को मठ में इकट्ठा होना था (बहुत से लोग इसे मठ के नाम से जानते हैं)। मैंने हिसाब लगाया कि तय समय में अभी

आठ दिन और बाकी थे। यानी, आठ दिन और बाद मैं फिर से गुरुजी से अलग हो जाऊँगा। यह सोचकर मेरा दिल दुखी हो गया। मैंने सोचा कि इस बार मुझे गुरुजी को अचानक नहीं खोना चाहिए - मेरे पास अपना मन तैयार करने का समय था। दोपहर में मठ के मैदान में घूमते हुए मैंने गुरुजी से पूछा,

-क्या आप ल्हासा जा रहे हैं?

-हाँ. गुरुजी ने छोटा सा जवाब दिया.

-मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।

मेरी बातें सुनकर वह थोड़ा प्यार से मुस्कुराया।कहा,

-अगर कोई और होता तो मैं सीधे मना कर देता, लेकिन अगर मैं तुम्हें बताता तो तुम नहीं सुनते, और मुझे पता है कि तुम्हें रोकने वाला कोई नहीं है, इसलिए मैं इस बारे में सोचूंगा और बाद में बताऊंगा।

-समस्या कहाँ है?

-बहुत सारी मुश्किलें हैं। मेरी तरफ देखते हुए उन्होंने कहा, - नंबर एक मुश्किल यह है कि तुम लामा या संत नहीं हो, मैं संत के अलावा किसी और को ग्रुप में लेने को तैयार नहीं हूँ। क्योंकि इन दिनों तिब्बत की सीमा पर चीनी सैनिक पहरा दे रहे हैं, वे संत के अलावा किसी और को अंदर नहीं आने देना चाहते। दूसरी मुश्किल यह है कि तुम्हें भाषा नहीं आती, ये दो मुख्य मुश्किलें हैं। बाकी मुश्किलों से शायद बचा जा सकता है।

-लेकिन गुरुजी, मुझे कोई भी भाषा नहीं आती, चाहे वह नेपाली हो, भोटिया हो, या गोरखा हो, लेकिन उसके बावजूद, मैंने काफी अच्छे से एडजस्ट कर लिया है, मुझे कोई प्रॉब्लम नहीं है।

गुरुजी ने मेरी बातें सुनीं और कहा, "बहस करने का कोई मतलब नहीं है, मुझे थोड़ा सोचने दो।"

मुझे मजबूरन रुकना पड़ा। यह सच है, बहस करने का कोई मतलब नहीं है, इससे सिर्फ़ मुश्किल बढ़ती है, कम नहीं होती। गया के वो भिखारी साधु बाबा, गंगटोक के गुरुजी। उनकी पर्सनैलिटी भी काफ़ी बदली हुई लगती है या शायद ऐसा लगता है कि मेरे मन बदलने की वजह से वो बदल गए हैं। इसलिए, सब्र रखने के अलावा कोई चारा नहीं है।

मैं अंचू की मदद को नहीं भूला हूँ, जब भी मुझे समय मिलता है मैं बाज़ार जाकर उससे मिलता हूँ या वह रात को हमारे पास आता है। वह गुफा में हमारे साथ ज़्यादा देर नहीं रुकता, वह यहाँ के तपोवन के शांत माहौल से ऊब जाता है। उसके हिसाब से यह जगह बेजान है, उसकी जान बाज़ार में है। गुरुजी उससे प्यार करते हैं, इसलिए अंचू कभी-कभी हमारे साथ खाना खाता है।

उस दिन मैंने अंचू को अपनी तिब्बत यात्रा के बारे में बताया। अंचू हैरान रह गया। उसने पूछा, "तिब्बत में क्या है?" गुरुजी ने उसे समझाया कि तिब्बत एक तीर्थस्थल है, और इसके अलावा, यह एक बहुत अच्छा देश है। अंचू ने उनकी बातें सुनीं।

১৬

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

-मैं तुम्हें एक काम दे रहा हूँ, ध्यान से सुनो। आज तुम पूरा दिन यहीं इस चट्टान पर रहोगे, कहीं और नहीं जाओगे। तुम सिर्फ़ लंच के लिए मठ जाओगे, उसके अलावा, तुम्हें बाकी दिन यहीं बिताना होगा। क्या तुम मान गए?

मैंने तुरंत सिर हिलाया और जवाब दिया, "ठीक है।"

-आपके मन में पूरे दिन एक ही ख्याल आएगा, और वो है आपका घर। आज आप पूरे दिन अपने घर के बारे में सोचते रहेंगे, किसी को न छोड़ें, सबके बारे में सोचें, अपनी कल्पना में अपने घर के लोगों से बातचीत करने की कोशिश करें।

मैंने जवाब दिया, "ठीक है।"

उन्होंने प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा, "मैं कल सुबह चाय और नाश्ते के बाद यहाँ वापस आऊँगा, और हम फिर बात करेंगे।"

गुरुजी के कहने पर मैं चाय और नाश्ता करके वापस आ गया। पत्थर पर बैठने के बजाय, मैं इधर-उधर देखने लगा। यह जंगल मुझे तपो जंगल जैसा लग रहा है। यह तपो जंगल का जीता-जागता रूप है जिसे मैंने परियों की कहानियों में देखा है। झाऊ पेड़ों के बीच से, मैं दूर कंचनजंगा और उसके ठीक सामने एक बड़ी घाटी देख सकता हूँ। एक बार जब आप इस घाटी के किनारे उठे पहाड़ को पार कर लेंगे, तो आप तिब्बत में होंगे, दलाई लामा के देश में। मेरा मन तिब्बत की ओर उड़ गया। मुझे तिब्बत के बारे में कुछ नहीं पता, लेकिन मुझे ऐसा लग रहा है कि वह नाम मुझे खींच रहा है।

नहीं! तुम क्या सोच रहे हो? मैंने अपने मन को काबू में कर लिया है, इसलिए गुरुजी की सलाह मानना बेहतर है, इतनी दूर जाने के बजाय, मुझे घर के बारे में सोचना है।
महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৭

मेरा मन तो जैसे तैयार ही था, घर का ख्याल आते ही सबसे पहले दादी माँ का ख्याल आया, फिर एक-एक करके अपनी बहनों, भाइयों और आस-पड़ोस के दोस्तों का। घर पर मेरे बारे में बहुत बातें हुई होंगी कि मैं कहाँ गया था और क्या कर रहा था, वगैरह। मैं अपने आस-पड़ोस और स्कूल के दोस्तों के बारे में सोचने लगा। पर मुझे इन ख्यालों में कुछ खास खास नहीं लगा, मैं बस यही सोचता रहा कि काश मैं उन्हें यहाँ ला पाता, काश वे अपनी सीमाओं से बाहर आकर इस बेइंतहा खूबसूरती को देख पाते, तो यकीनन मुझमें और उनमें कोई फर्क नहीं रहता। बचपन से ही घर से भागना मेरा स्वभाव रहा है, हर बार घर वापस जाकर मैं उन्हें अपनी हमेशा नई कहानी सुनाता हूँ, उन्हें सुनना अच्छा लगता है, वे जानना चाहते हैं, पर किसी अनजानी खुशी की जंजीर तोड़कर बाहर आने को तैयार नहीं होते। उनके हिसाब से मैं मूर्ख हूँ, हारा हुआ हूँ, वगैरह। मैं सोचता रहता हूँ, अगर इस दुनियावी सुख को भोगने के लिए मुझे हारा हुआ ही जन्म लेना है, तो हे भगवान! मुझे यह जन्म हमेशा के लिए दे दो। क्या वह आनंद, जिसमें एक बाउल लाल मिट्टी पर इकतारा बजाते हुए चलता है, किसी स्कूल की चार दीवारों के भीतर मिल सकता है?

गुरुजी ने मुझे दिन भर घर के बारे में सोचने को कहा, लेकिन मैं किसके बारे में सोचूं? घर पर मेरी दादी के अलावा मेरा कोई रिश्ता नहीं है। जब मैं छोटा था, तब मेरे माता-पिता गुज़र गए थे, और मैं अपने दादा- दादी के साथ रह रहा हूँ।

अपने माता-पिता को खोना मेरा दुर्भाग्य नहीं, बल्कि मेरा सौभाग्य है। शायद इसीलिए मैं ज़्यादा खुला हुआ हूँ। इसलिए मैं ऐसा इंसान नहीं हूँ जो पत्थर पर बैठकर गाल पर हाथ रखकर घंटों सोचता रहे। बार-बार कोशिश करने के बाद भी मुझे ऐसा कोई नहीं मिला। मुझे पत्थर पर चुपचाप बैठना भी पसंद नहीं, यह समय की बर्बादी जैसा लगता है। लेकिन मैं गुरुजी की बात नहीं मानना चाहता। मेरे ये गुरु कोई ऊपरी दुनिया के गंभीर गुरु नहीं हैं, वे मेरे दोस्त हैं, उनकी बातों में छिपा स्नेह और प्यार मेरे दिल को छू गया है। गया की धर्मशाला में मुझे उनकी पीठ पर सुलाने के लिए गुदगुदी की गई है, और फिर से मेरी नाक पर डब्बू घास की गुदगुदी से मुझे सुला दिया गया है। कितनी बार मैं उनके कपड़े पहनकर सड़कों पर घूमा हूँ और उनकी बेबाक हिंदी गालियों पर दिल खोलकर हँसा हूँ, जब घर की याद आती है, तो उनकी बातें बार-बार याद आती हैं। साधु बाबा या गुरुजी फुटपाथ पर मेरे साथी हैं, उन्होंने इसी नीम की कोंपल से अपने दांत साफ किए हैं और मैंने उसी कोंपल से अपने दांत साफ किए हैं। यहां गंगटोक में भी हम इसी साड़ी के चावल खाते हैं। यह गुरु मेरे अंदर के गुरु हैं, मेरे दयालु दोस्त हैं।

लेकिन उसने मुझे घर की चिंता करने के लिए क्यों कहा? क्या दादी को कुछ हो गया है? और अगर ऐसा है, तो मैं क्या कर सकता हूँ? उनकी सेवा करने वालों की कोई कमी नहीं है!

১৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उस दिन मैं दिन भर घर के बारे में सोचता रहा और शाम तक घर के बारे में सोचता रहा, लेकिन गुरुजी बार-बार मेरे पास आते रहे। गया में वे

गुरुजी से मेरी हर बात सुनते थे, मैं उनके खाने, ध्यान, नहाने और सोने पर कड़ी नज़र रखता था। वे कई बार धर्मशाला बदलना चाहते थे, लेकिन मैंने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया। वे मेरी बातें एक छोटे बच्चे की तरह सुनते थे, रिश्ता दादा-पोते जैसा था। वह रिश्ता अब भी है, लेकिन माहौल की वजह से वे उसे कम ज़ाहिर करते हैं। इसलिए बातें कम होती हैं। मुझे उन पर पूरा भरोसा है, इसीलिए उन्होंने मुझसे घर के बारे में सोचने को कहा। तो मैं सोच रहा हूँ। दोपहर होते-होते यह सोच मुझे बोर कर रही थी। आखिर में, मैं पत्थर से उठा और खड़ा हो गया। मैंने जंगल में एक पेड़ से कहा - नहीं! अब और नहीं। मैं घर जाकर घर के बारे में सोचूँगा, लेकिन अभी नहीं। गंगटोक में बैठकर घर के बारे में सोचना मतलब यहाँ की खुशी को खत्म करना है। शाम होते-होते, मैं जंगल से निकलकर मठ में वापस आ गया। उस रात गुरुजी से और कोई बात नहीं हुई।

अगले दिन, तय समय पर, मैं गुरु-शिष्य की तरह पत्थर के पास बैठ गया। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "क्या आज भी तुम घर के बारे में सोच रहे हो?"

मैंने कहा नहीं।

उन्होंने कहा, "अगर तुम घर जाना चाहते हो, तो मुझे बताओ, और मैं तुम्हारे लिए टिकट खरीदकर वापस आने का इंतज़ाम कर दूंगा।"

मैंने टिकट खरीदा! मैं हैरान रह गया। जो व्यक्ति भीख मांगकर गुज़ारा करता है, वह गंगटोक से कोलकाता तक मेरे आने-जाने का खर्च उठाएगा!

ऐसा लगा कि गुरुजी समझ गए कि मैं क्या सोच रहा हूँ। उन्होंने पहले वाले लहजे में कहा, "हाँ, मैं टिकट खरीद लूँगा। मैं तुम्हारे जाने का

इंतज़ाम करूँगा, जैसे एक शरीफ़ का बेटा करता है, मेरे पास पैसे हैं, चिंता मत करो।"

-नहीं, मैं घर नहीं जाना चाहता, मैं तुम्हारे साथ तिब्बत जाऊंगा। मेरी चिंता मत करो, मैं तुम्हारे पीछे आऊंगा और वहीं रहूंगा। मैंने उसे भरोसा दिलाने वाले लहजे में कहा।

-मुझे पता है, तैयार हो जाओ बेटा। खुशखबरी! उसकी बातें सुनकर मैंने उसकी कमर पकड़ ली। मैंने भावुक होकर कहा, ठीक है, मुझे तैयार करो।

उसने एक पल सोचा और कहा, "ठीक है, तो मैं जो कह रहा हूँ उसे ध्यान से सुनो।"

मैंने उससे कहा, "आप जो भी कहेंगे, वही मेरी प्रतिज्ञा होगी।"

गुरुजी कहने लगे,

- आज जितनी देर हो सके, इसी पत्थर पर बैठने की प्रैक्टिस करो। अगर तुम्हें अपनी पीठ में चुभन महसूस हो या यह बहुत सख्त लगे, तो बीच-बीच में हिलो-डुलो, फिर वापस आकर यहाँ बैठो। समझे? वह एक पल रुका और फिर बोला।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৯

उन्होंने कहा, "आज की सोच अलग होगी। ध्यान से सुनो, तुम जैसे चाहो चट्टान पर बैठ सकते हो, कोई सख्त नियम नहीं हैं। बैठ जाओ और सीधे सामने देखो, दूर देखो कि पहाड़ और आसमान मिल गए हैं, है ना?"

-ठीक है, मैंने कहा।

-नज़र हमेशा आगे की ओर रहेगी। आसमान को देखो और उसे अच्छे से देखो। अपने मन में सोचो, इस आसमान का मतलब है अनंत, स्पेस; सुख और दुख बीते हुए कल की बात है। और पहाड़ को देखो और सोचो कि यह पहाड़ बहुत बड़ा है, इसका वजूद है, यह सीमाओं में बंधा हुआ है। गुरुजी ने एक बार फिर अपनी बातें मुझे अच्छे से समझाईं और फिर भरोसा दिलाया, अगर तुम्हें बहुत बोरियत महसूस हो या कोई मुश्किल हो, तो मेरे पास मठ में आ जाना।

-ठीक है। आपकी सलाह बहुत ज़रूरी है। मैंने यह कहकर उसे भरोसा दिलाया। गुरुजी वहाँ थोड़ी देर जंगल में टहले और फिर शहर की तरफ़ नीचे चले गए, शायद वहाँ कोई काम हो जाए।

'जय गुरु' कहकर मैं पत्थर पर बैठ गया और अपनी चादर ले ली। कहने की ज़रूरत नहीं कि मठाधीश ने मुझे एक कंबल और चादर दे दी, वरना मुझे यहाँ ठंड में बहुत तकलीफ़ होती। गुरुजी के कहने पर मैंने आसमान की तरफ़ देखा, अनंत नीला आसमान जिसके ऊपर बादल अनंत क्षितिज की ओर तैर रहे थे। अनंत-अनंत, मैं शब्दों के बारे में सोचने लगा और उस शब्द के साथ आसमान का तालमेल खोजने लगा। अनंत आकाश शब्द कुछ हद तक सच हो सकता है, लेकिन सुख और दुख से परे होने का क्या मतलब है? मैंने थोड़ी देर सोचा और तर्क से उसका विश्लेषण करने लगा - असल में, इस अनंत अनंत आकाश में कोई दुख नहीं है, दुख ही असल में शरीर है, इसलिए दुख की सीमा इस शरीर और दुनिया के बीच है। यह शरीर नश्वर है; इस अनंत अनंत आकाश में कोई शारीरिक दुख नहीं होना चाहिए। अनंत और अनंत काल की तुलना

में, इस शरीर का छोटा सा दुख बिल्कुल नगण्य है। यह भी हो सकता है कि अगर मन को ऊपर उठाया जा सके, अगर मन को बहुत ऊपर ले जाया जा सके, तो दुनिया का दुख दुख जैसा नहीं लगेगा। दुख के बारे में तो बहुत कुछ कहा गया है, लेकिन गुरुजी ने सुख और दुख के बारे में कहा है। अगर मन ऊंचा हो तो दुख से पार पाया जा सकता है, लेकिन क्या सुख से पार पाने की कोई ज़रूरत है? सुख तो इंसान ही चाहता है। मैंने एनालिसिस करना शुरू किया; मैंने फिलॉसफी नहीं पढ़ी है। मुझे धर्म का 'धा' भी नहीं पता, फिर भी मुझे गुरुजी के आदेश के अनुसार सोचना पड़ता है।

आज का माहौल काफी अच्छा है, कल जितना बोरिंग नहीं है। कभी जंगल में बैठकर तो कभी टहलते हुए मैं सोचने लगा। सुबह की धूप बहुत अच्छी है, और चीड़ के पेड़ों के बीच से हिमालय का नज़ारा, इन दोनों ने मिलकर मेरे मन को बहुत हल्का कर दिया है।

खुशी को क्यों नज़रअंदाज़ करें? ऐसा लगता है कि खुशी दुख का उल्टा है, या खुशी और दुख

২০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

एक-दूसरे से जुड़े हुए, अगर एक दूसरे को खींचता है, तो दूसरा ज़रूर आएगा। अगर आपको खुशी चाहिए, तो आपको दुख भी चाहिए, वे रोशनी और अंधेरे की तरह एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। शायद इसीलिए गुरुजी ने कहा - आसमान, अनंत, शून्य सुख और दुख से परे है। हमारा मन और दिल यकीनन आसमान की तरह हैं, वहां अलग-अलग चीज़ों की वजह से खुशी और दुख के बादल उठते रहते हैं, मन से ऊपर जो आत्मा है, उसमें खुशी और दुख

जैसी कोई बात तो है ही नहीं। ऐसा लगता है कि अगर हमारे मन को अनंत की ओर ले जाया जा सके, तो वहां न तो खुशी है और न ही दुख।

लॉजिक सही लगा, मैंने खुद को तसल्ली दी। सुबह होते-होते, ऐसे और भी कई विचार मन में आए, और फिर वे भटक गए। मैंने देखा कि ऐसे विचार मन पर बोझ नहीं डालते, बल्कि मुझे और सोचने के लिए हिम्मत देते हैं। दिन बीतता गया, और जल्द ही खाने की तलब लग गई।

खाने के बाद मैं दूसरे ख्याल के लिए तैयार था। यह दूर का पहाड़, इसका रूप कितना बड़ा है, यह दुनिया के एक बड़े हिस्से को अपने साथ लिए खड़ा है। गुरुजी ने कहा - पहाड़ बहुत बड़ा है, यह सीमाओं में बंधा है। यह सच है, पहाड़ कितना भी बड़ा क्यों न हो, यह सीमाओं में बंधा है। लेकिन रूप सीमाओं के अंदर ही मिलता है, रूप को देखने से हमारे अंदर खुशी और दुख पैदा होते हैं, खुशी और दुख हमेशा सीमाओं में बंधे होते हैं। यह दुनिया कितनी अजीब है, इस अनंत-अनंत में भी एक सीमा है। हमारा यह शरीर सीमाओं में बंधा है, लेकिन मन अनंत की ओर ले जाने में सक्षम लगता है। मैं यहां इस पत्थर पर बैठा हूं, मेरा शरीर इसके भारीपन में उलझा हुआ है, मेरी आंखें, कान और दूसरी इंद्रियां मन को तरह-तरह के संदेश दे रही हैं, लेकिन मेरी सोच पूरी तरह से आज़ाद है। यह खुशी-खुशी जहां भी जाती है, वहां अनंत नीले आसमान को भी महसूस कर सकती है। कितनी अजीब बात है! मेरे अंदर आत्मा के रूप में अनंत है और शरीर के रूप में एक सीमा है। क्या गुरुजी ने मुझे यही सोचने और खोजने के लिए कहा था? कौन जाने, शायद उनकी सलाह में कुछ और दिलचस्प छिपा हो। यह भी मुमकिन है, लेकिन अभी के लिए, मैं इससे ज़्यादा यादगार आइडिया या एक्सप्लेनेशन नहीं सोच पा रहा हूँ, लेकिन शायद बाद में सोचूंगा, इसलिए थोड़ी देर जंगल में घूमने के बाद, मैं फिर से पत्थर पर बैठ गया। मैं अपनी आँखों से सफ़ेद और पवित्र कंचनजंगा का खूबसूरत नज़ारा देखने लगा।

तीसरे दिन गुरुजी ने नई बातें बताईं। उन्होंने कहा, "अपने मन को आसमान और मन में विचारों की धारा को बादलों की तरह सोचो। अपने मन में विचारों की धारा को वैसे ही देखो जैसे तुम आसमान में बादलों को देखते हो। बस चुपचाप देखते रहो और ध्यान देने की कोशिश करो कि विचारों की धारा कहाँ से आ रही है और कहाँ जा रही है, ठीक वैसे ही जैसे आसमान में बादलों को देखते हो।"

एक आज्ञाकारी बेटे की तरह, मैंने पहले, दूसरे और तीसरे दिन गुरुजी की सलाह मानना शुरू कर दिया।
महातीर्थ का अंतिम यात्री

चौथे दिन गुरुजी ने मुझसे पूछा, "क्या तुम्हें कोई परेशानी हो रही है?"

- कदापि नहीं।

-क्या इस जंगल में अकेले रहना बहुत बोरिंग लगता है?

-नहीं।

২১

২২

मुश्किल का तो सवाल ही नहीं उठता। घंटी बजते ही मैं सबके साथ हाजिर हो जाता हूँ, और खा-पीकर चला जाता हूँ। पूरा दिन एकदम अकेले में बिताता हूँ, रात को मठ में जाकर प्रार्थना करता हूँ और फिर सो जाता

हूँ। यह लगभग एक रूटीन बन गया है, लेकिन मुझे पता है कि गुरुजी के कहने के पीछे कोई वजह ज़रूर होगी, इसलिए मैंने कुछ नहीं पूछा। यह मेरे लिए एक नई लत बन गई। मैं कभी भी इतने अकेले अकेले में नहीं रहा। ऐसा लगता है कि वह मेरे बर्ताव से खुश हैं। उन्होंने कहा - तुम्हें आज जंगल जाने की ज़रूरत नहीं है। फिर उन्होंने बहुत चुपके से पूछा,

-क्या आप सचमुच तिब्बत जाना चाहते हैं?

मैंने सख्ती से कहा, "ज़रूर। लेकिन अगर आप सच में सहमत नहीं हैं, तो मैं आपके साथ नहीं चलूँगा। अगर आप मुझे रास्ते और कुछ ज़रूरी जानकारी बता दें, तो मैं खुद जा सकता हूँ।"

गुरुजी ने मेरी बात सुनी और एक समझदारी भरा सवाल पूछा - क्या तुम तिब्बत जाना चाहते हो?

क्यों?

मुझे उनसे इस सवाल की उम्मीद नहीं थी, क्योंकि मैं जानता हूँ कि वे खुद भी घुमक्कड़ हैं, उन्हें इसका जवाब पता होगा। मुझे इसका जवाब नहीं पता। लेकिन गुरुजी ने सवाल पूछा और जवाब के लिए मेरी तरफ देखा, तो उन्हें कुछ कहना ही था। जवाब में मैंने कहा,

- दूर कंचनजंगा के ऊपर बादल घूम रहे हैं, क्या आप जानते हैं कि वे इस तरफ क्यों घूम रहे हैं?

मेरा जवाब सुनकर गुरुजी ने बात बदल दी - आज तुम आर्टिस्ट लामा की पेंटिंग में मदद करो, फिर कल सुबह मैं तुम्हें फिर से कुछ करने को दूंगा।

-ठीक है गुरूजी, जो आपकी इच्छा हो।

पांचवें दिन, सुबह-सुबह गुरुजी ने मुझे धक्का देकर ऊपर उठाया।
उन्होंने कहा, "जो भी हो

नाश्ते के बाद वापस आ जाओ।

सूरज निकलने में अभी भी बहुत देर थी, मुझे कंबल उतारने के लिए थोड़ी जल्दी करनी पड़ी, लेकिन आखिर में मैं उससे छुटकारा नहीं पा सका। बगीचे के बाद, मैंने तालाब में ठंडे पानी से अपना चेहरा धोया और गुरुजी के सामने गया। वह मुझे मंदिर ले गए। मंदिर में हमेशा घी का दीपक जलता रहता है, उन्होंने उसे थोड़ा हिलाया फिर पास से एक नया कपड़ा लिया और झुक गए। जब उन्होंने मुझे देखा, तो मैंने भी वैसा ही किया। फिर उन्होंने

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उन्होंने मुझे अपने बगल वाली प्रार्थना की जगह पर बैठने को कहा। लंबी प्रार्थना की जगह पर हमेशा गद्दे होते हैं, इसलिए कोई भी जब चाहे वहाँ आकर बैठ सकता है।

गुरुजी ने कहा, "भगवान तथागत के चेहरे के भाव देखते रहो।" दीये की हल्की रोशनी में वह बड़ी मूर्ति लगभग धुंधली दिख रही थी, और ऊपर से घर भी सालों से दीये की लौ के कालेपन से लगभग काला पड़ गया था। भगवान तथागत की मूर्ति भी बहुत बड़ी थी, इतने पास से मूर्ति का पूरा रूप देखना मुश्किल था। तो मैंने उनके चेहरे की तरफ देखा। दीये की रोशनी सीधे उनकी आँखों पर पड़ रही थी, सफ़ेद आँखों पर नीला बिंदु तेज़ी से

चमक रहा था, और मेरी नज़र उसी पर टिकी हुई थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह मुझे ही देख रहे हों। मैं उस तरफ से नज़रें नहीं हटा पा रहा था। ठीक मेरे सामने, मुझे ध्यान करते हुए, शुद्ध और शांत बुद्ध की एक अद्भुत रोशनी दिख रही थी - मैं बिना पलकें झपकाए उसे देखता रहा। पूरा मंदिर धीरे-धीरे उनकी आँखों की रोशनी में जगमगाने लगा। मैं अब तथागत का चेहरा साफ़ देख सकता था। क्या अद्भुत एहसास था।"

उसी समय, मैंने अपने कान के पास गुरुजी की आवाज़ सुनी - उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा,

अब धीरे-धीरे अपनी आँखें बंद करें, अपने शरीर को बिल्कुल भी न हिलाएँ, चुपचाप बैठें और बस भगवान बुद्ध की अद्भुत रोशनी को महसूस करने की कोशिश करें। उनकी रोशनी धीरे-धीरे आपके शरीर पर पड़ती हुई प्रतीत हो रही है, आपका शरीर रोशन हो रहा है, थोड़ी देर ऐसे ही बैठें, अपने मन में सिर्फ़ तथागत के उज्ज्वल चेहरे के बारे में सोचें। अपनी आँखें बंद रखें; इस बार अपना मुँह खोलें और कहें - 'ॐ मणि पद्मे हम, ॐ मणि पद्मे हम, ॐ मणि पद्मे हम...'; इस मंत्र को मन में जपते रहें। मंत्र को न खोएँ, इसे अपने मुँह से बोलें और अपने कानों से सुनें।

गुरु की सलाह के अनुसार, मैं चुपचाप बैठ गया और मंत्र का जाप करने लगा।

थोड़ी देर बाद मैंने कोशिश की लेकिन मंत्र को पकड़ नहीं पाया, मैं उसे खोता जा रहा था। एक समय ऐसा आया जब विचारों और मंत्र के बीच टकराव होने लगा; मैं मंत्र को पकड़ना चाहता था, लेकिन विचार उसकी जगह लेते जा रहे थे। तरह-तरह के विचार मेरे दिमाग में एक ब्लैक होल बना रहे थे। फिर मुझे गुरुजी की आवाज़ सुनाई दी - अपना मन हल्का रखो। जब कोई विचार तुम्हारे मन में आए, तो उसे आने दो, उससे लड़ने का कोई

फ़ायदा नहीं है। उसे प्यार से जीतना होगा। कोई भी विचार बुरा नहीं होता। अच्छे और बुरे का फ़ैसला मत करो, बस विचार की जगह पर रत्न मंत्र को ज़मीन पर रख दो।

मैंने अपने पैर थोड़े से हिलाए, अपना वज़न थोड़ा सा बदला, और फिर से बैठ गया, मन में जपते हुए, "ओम मणि पद्मे हम, ओम मणि पद्मे हम, ओम मणि पद्मे हम..."

काफी समय ऐसे ही बीत गया, फिर अचानक मेरा मन एक सपने की तरह जाग उठा।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৩

मैं उठा, ऐसा लगता है कि मैं बैठे-बैठे ही सो गया था। मैंने देखा तो गुरुजी वहाँ नहीं थे, बाहर का सूरज दरवाज़े से झाँक रहा था। मेरी हैरानी टूट गई, दरवाज़ा पश्चिम की ओर है, जब सूरज यहाँ से अंदर आता है, तो आमतौर पर दोपहर होती है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि उठूँ या नहीं। मेरा शरीर बहुत हल्का महसूस हो रहा है, मेरा मन एक हल्के बादल से भी हल्का महसूस हो रहा है - कितना अजीब और सुंदर एहसास है! एक चेहरा दरवाज़े से झाँका, और जैसे ही मैंने उसे देखा, वह गायब हो गया। ऐसा लगा कि वह मठ के बच्चों में से कोई है। मैं चुपचाप बैठा रहा और मूर्तियों को फिर से देखने लगा। उसी समय, गुरुजी अंदर आए।

उन्होंने मुस्कुराते हुए पूछा, "आप कैसा महसूस कर रहे हैं?"

"मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। मेरा शरीर और मन बहुत हल्का लग रहा है, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं उड़ सकता हूँ," मैंने जवाब दिया।

गुरुजी मुस्कुराए और बोले, "अब तुम उठ सकते हो। चलो, कुछ खा लो। नौका रसोई में तुम्हारा इंतज़ार कर रही है।"

मैं अपनी सीट से उठा, भगवान को प्रणाम किया और फिर गुरुजी को। उन्होंने मुझे कसकर गले लगा लिया।

मैंने पूछा, "क्या आप मुझे बौद्ध भिक्षु बना रहे हैं?"

उन्होंने कहा, "मुख्य उद्देश्य उसे जानना है। राय और रास्ते बदलकर उस उद्देश्य को खोने का कोई मतलब नहीं है।"

-गुरुजी, मैं जानना चाहता हूँ कि आज मैंने जिस तरह से ध्यान या प्रार्थना की, वह महायान मार्ग है या हीनयान? मैंने सुना है कि तिब्बत में वज्रयान बहुत लोकप्रिय है।

जवाब में उन्होंने कहा, "सभी रास्ते उस महान सत्य की ओर ले जाते हैं।"

उनका जवाब सुनकर मुझे रुकना पड़ा। मैं समझ गया कि वे फिलॉसफी की बहस में महान सत्य का रास्ता नहीं खोना चाहते थे। गुरुजी के अनुसार, भजन, पूजा और ध्यान से आम आदमी के लिए सत्य का रास्ता आसान है। और जो लोग फिलॉसफी की मुश्किल थ्योरी और रहस्यों पर बहस करते हैं, वे मुश्किल रास्ते पर चल रहे हैं।

गुरुजी ने मुझसे कहा, "अब से तुम हमेशा इस रत्न मंत्र का जाप करोगे। जब तक हो सके, इसे अपने मन में जपते रहो, कभी रुको नहीं।"

गुरुजी की बातें दिल को छू लेने वाली हैं। जब मैं बाहर आया तो दोपहर हो चुकी थी। मैं सोच भी नहीं सकता कि समय इतनी जल्दी कैसे बीत गया। ऐसा लगा जैसे मैंने सुबह के चार बजे से दोपहर के चार बजे तक एक ही जगह पर बैठकर समय बिताया हो। यह मेरे लिए एक नया अनुभव था - एक नया स्वाद - एक नई दुनिया। मेरा मन फिर से बैठने के लिए भटकने लगा। यह एहसास आनंद जैसा लग रहा है। इसका श्रेय मुझे नहीं है, यह केवल गुरु की कृपा है। 'गुरु केवल कृपा है।'

अगली सुबह गुरुजी ने सबको बताया कि उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया है।

২৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मुझे उनके बीच मुस्कुराकर अपना लिया गया। दोपहर में, मठ के एक लामा ने मेरा सिर मुंडवा दिया, और तब से, उन्होंने मुझे मठ के बाकी लोगों की तरह पीले कपड़े पहनने का आदेश दिया। मैं भी उनके साथ हो लिया।

पूरी बात बहुत आसान थी। कोई दिखावा नहीं था, कोई दीक्षा समारोह नहीं था, कोई पूजा-पाठ नहीं था, कोई रस्म-रिवाज नहीं था। मुझे बिना किसी औपचारिकता के दीक्षा दी गई। गुरुजी ने कहा, "सत्य का रास्ता बहुत आसान है। दिखावे की कोई ज़रूरत नहीं है, बस भक्ति और दिल की ईमानदारी की ज़रूरत है।"

गुरुजी ने टीचर से कहा कि मुझे तिब्बती अल्फाबेट सिखाएं। मेरे पास बिल्कुल टाइम नहीं है, मुझे जल्द से जल्द इसमें मास्टर होना है। मेरी तिब्बती भाषा की पढ़ाई शुरू हुई। अब मेरा कोई नाम नहीं है,

गुरुजी ने मुझे कोई नाम नहीं दिया, मठ में सब मुझे 'ये' और 'वो' कहकर बुलाते हैं। दिन काफी आराम से गुजरने लगे। लामा या बौद्ध भिक्षु के वेश में ऐसा लगा जैसे मेरी पूरी पर्सनैलिटी बदल गई हो, मुझे कहना होगा कि इस वेश में महानता है। मैंने उनकी प्रार्थनाएं तिब्बती में बंगाली अक्षरों में लिखी हैं, इसलिए मुझे उनके साथ सामूहिक प्रार्थना में शामिल होने में कोई दिक्कत नहीं होती। मैंने प्रार्थनाओं और मंत्रों के अलावा लगभग बात करना बंद कर दिया था। तिब्बती भाषा की क्लास में भी मुझे इसी सिचुएशन में सुनना और लिखना पड़ता है, बात करना मना है। चुपचाप बोलना मेरे लिए नेचुरल हो गया है।

तिब्बत की यात्रा का तय दिन बीत चुका है। सभी यात्रा करने वाले लामा पहले ही वहाँ पहुँचकर इकट्ठा हो चुके हैं। मार्च का मध्य हो गया है, फिर भी मैंने उनसे कोई खबर नहीं सुनी है। गुरुजी ने कहा था कि वे मार्च की शुरुआत में निकलेंगे। मुझे पूछना ही पड़ा।

उन्होंने मुझे समझाया कि तिब्बत जाना नामुमकिन होता जा रहा है। पहले तिब्बत जाने के लिए किसी डॉक्यूमेंट की ज़रूरत नहीं थी, बॉर्डर का कोई सवाल ही नहीं था। लेकिन 1950 से नेपाल, सिक्किम और भूटिया के लोगों के लिए ज़रूरी डॉक्यूमेंट हैं। सरकार से लिखकर परमिशन लेनी पड़ती है। काठमांडू में एम्बेसी से क्लियरेंस मिलता है, और आजकल सिर्फ़ लामा ही तीर्थयात्री के तौर पर तिब्बत जा सकते हैं। वे भारतीयों को कोई परमिशन नहीं देते। उनकी बात सुनकर मैंने पूछा, "मैं एक भारतीय गुरुजी हूँ, इसलिए वे मुझे पक्का नहीं जाने देंगे।"

-हाँ, ठीक है, वे तुम्हें बॉर्डर पर बंद कर देंगे, लेकिन मैं उनसे कहूँगा कि तुम मेरे शिष्य हो, सिक्किम के बेटे हो।

-लेकिन गुरुजी, मुझे यह भाषा नहीं आती, और जब वे मुझे देखेंगे, तो उन्हें पता चल जाएगा कि मैं इस देश से नहीं हूं।

गुरुजी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और मुझे भरोसा दिलाया। उन्होंने कहा, "तुम

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৫

मैंने सोचा नहीं, मैंने तुम्हारे लिए सब कुछ सोच लिया है, मैं तुम्हें अपना प्लान बता रहा हूँ, ध्यान से सुनो; तुम्हें पता है कि मेरा दाहिना पैर कमज़ोर है, तुम्हें अपने सामान के साथ मेरा कंबल भी ले जाना होगा। तुम्हें लगता है कि यह कुछ भी नहीं है, यह बहुत हल्का काम है, लेकिन जब तुम सड़क पर निकलोगे तो समझ जाओगे। इससे मुझे बहुत फ़ायदा होगा। हमारा परमिट बावन लोगों का है, मुझे नहीं लगता कि तीस से ज़्यादा यात्री होंगे। जब से चीनी तिब्बत आए हैं, लामा जाना चाहते भी हैं तो नहीं जाना चाहते; परमिट पेपर पर नाम नहीं है, इसलिए मैं जिसे चाहूँ ले जा सकता हूँ। तुम मेरे शिष्य बनकर जाओगे, और जहाँ भी चीनी सैनिक होंगे, तुम चुप रहोगे, मैं कहूँगा कि तुम एक चुप लामा हो और तुम कुछ नहीं बोलते। इसलिए तुम्हें जो कहना है मैं कहूँगा। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे तुम एक चुप पिता की तरह हमारे साथ जाओगे।

गुरुजी की बातें सुनकर मैं खुशी से उछल पड़ा। मैं अपनी खुशी रोक नहीं पाया। मैंने उन्हें गले लगाया और कहा, "जय साधु बाबा, क्या जीत है!" यह कहकर मैंने उन्हें प्रणाम किया और कहने लगा, "गुरु ही कृपा है, गुरु ही कृपा है।" गुरुजी ने मुझे रोका और कहा,

- उत्साहित मत होइए, बौद्ध विचार, 'ओम मणि पद्मे हुं, ओम मणि पद्मे हुं' को समझने की कोशिश कीजिए। मैंने भी उनकी आवाज़ में शामिल होकर, तथागत के लिए कहना शुरू किया - 'ओम मणि पद्मे हुं, ओम मणि पद्मे हुं, ओम मणि पद्मे हुं...'

यात्रा

लामाओं में अचानक खुशी की लहर दौड़ गयी।

8 अप्रैल, 1956 को काठमांडू से परमिशन लेटर आया। काठमांडू में चीनी एम्बेसी का एक एम्प्लॉई हाथ में परमिशन लेटर लेकर आया। वह गुरुजी को जानता था, गाइड के तौर पर गुरुजी का नाम वहाँ लिखा था। यह पहली बार था जब मुझे उनका नाम पता चला। उनका नाम गुरु गेशे रेप्टेन था। एक तिब्बती टाइटल - बहुत इज्ज़तदार और ऊँचा। लामाओं ने एक साथ चीनी एम्बेसी में गुरुजी के नाम पर परमिशन लेटर के लिए अप्लाई किया था। यह उनका जवाब था। उस आदमी ने गुरुजी को परमिशन लेटर दिया, तीर्थयात्रियों को बार-बार गिना, और फिर उनकी पाँचों उंगलियों के पोरों को पकड़कर अलविदा कहा। वह चीनी एम्बेसी का एक नेपाली एम्प्लॉई था।

लामा बेचैन हो गए, "तैयार हो जाओ, हमें अब जाना होगा।"

तो, धर्मशाला में उनके रहने और खाने का जो भी पैसा था, वह दे दिया गया। यह बहुत सस्ता था, एक दिन के लिए हर व्यक्ति के लिए सिर्फ़ दस आने। उसी दोपहर, सिक्किम के शाही महल से हम सबके लिए नए कंबल और चादरें आ गईं। सिक्किम के महाराजा हमेशा यात्रियों को इन तोहफ़ों के साथ अपनी शुभकामनाएँ और आशीर्वाद भेजते हैं। यह इंतज़ाम कैलाश

या ल्हासा जाने वाले यात्रियों के लिए है। उस रात, गुरुजी ने अपनी आखिरी सलाह दी। गुरुजी को छोड़कर, सभी यात्रियों के लिए यह तिब्बत की पहली यात्रा थी, और खुशी, उत्साह और उत्सुकता का कोई अंत नहीं लग रहा था।

9 अप्रैल.

अगले दिन हम जल्दी उठे और तैयार हो गए। हम सबकी पीठ पर थोड़ा-थोड़ा सामान था। भारी कपड़े, हाथों में मोती और लकड़ियाँ थीं। सामान में ज़्यादातर कंबल, आटा और एक टोपी थी। हम सब के पास कम से कम पाँच या छह किलो नमक था, तिब्बत में नमक बहुत महँगा सामान है, और हम जितना ऊपर जाते गए, उसकी कीमत उतनी ही बढ़ती गई।

सामूहिक प्रार्थना के बाद, हम मठ से निकल गए। जब हम बाहर आए, तो गुरुजी ने दूर पहाड़ की ओर इशारा करते हुए कहा, "देखो, वह चुम्बी घाटी है - हमें उसके बगल में उठे पहाड़ पर चढ़ना है, वह पहाड़ के दूसरी तरफ है।"

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৭

तिब्बत की हमारी रहस्यमयी दुनिया और कैलाशनाथ और मानसरोवर मठों की महान तीर्थस्थलों से कई लोग हमारे साथ रास्ते में आ गए थे। उन्हें विदा करने से पहले, हमने एक बार फिर तथागत से सामूहिक प्रार्थना की:

'बिना ज्ञान वाला व्यक्ति ध्यान में नहीं बैठ सकता। बिना ध्यान वाले व्यक्ति में ज्ञान नहीं होता। हे प्रभु, करुणा के स्रोत, हमें

दुनिया में ज्ञान के मार्ग पर ले चलो, हमें बुद्ध, धर्म और संघ के मार्ग पर ले चलो।'

कहने की ज़रूरत नहीं है कि इस मठ में हर कोई तिब्बती भाषा जानता है। यहाँ पूजा का सिस्टम तिब्बती आधार पर बनाया गया है। गुरुजी ने मुझे सबसे मिलवाया - मेरा नया नाम गेलंग लामा है।

हमारा सफ़र शुरू हुआ, छोटे-बड़े सबको अलविदा कहकर मेन रोड पर निकल पड़े। वहीं मेरी मुलाक़ात अंचू से हुई। उसने मुझे गले लगाया और टूटे-फूटे शब्दों में कहा, "मुझे भूलना मत।" मैंने भी उसकी पीठ थपथपाई और उसे भरोसा दिलाया। उसे पता है कि मुझे बात करने की इजाज़त नहीं है।

यह मठ गंगटोक शहर से थोड़ा बाहर है, यहाँ से हमने नाथुला रोड लिया। यह सड़क पहाड़ से नीचे उतरकर घाटी में जाती है और फिर तिब्बत के रास्ते अगले पहाड़ पर चढ़ती है। मेरे अपने सामान के साथ गुरुजी का कंबल और एक एल्युमिनियम का बैकपैक भी है। मेरे बैकपैक का कुल वज़न दस किलो से ज़्यादा नहीं होगा। मुझे पहाड़ से नीचे उतरने में कोई दिक्कत नहीं हुई। मेरे कपड़े बौद्ध भिक्षुओं जैसे हैं, मुश्किल यह पहनावा है। यह बिल्कुल भारी नहीं है लेकिन मुश्किल लगता है। यह तब होता है जब आप लड़कों की लुंगी और लड़कियों के आधे कपड़े को स्वेटर और चादर के साथ मिलाते हैं। जिन्हें इसकी आदत है, वे कहेंगे कि सर्दियों के देश में इससे ज़्यादा सही पहनावा कोई नहीं है। यह सच है, जो लोग लुंगी पहनकर दौड़ते हैं, उनके लिए यह सही है, असल में यह सब आदत की बात है। मैं अभी तक इस कपड़े को पहनकर मठ के बाहर नहीं गया हूँ, इसलिए यह मुझे बहुत अजीब लगता है, खासकर इस पहाड़ी इलाके में।

करीब चार घंटे चलने के बाद हम मैदान में पहुँचे। हम दाएँ-बाएँ मिलिट्री कैंप से धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। गुरुजी ने हमें तेज़ न चलने और रास्ते में किसी से बात न करने की हिदायत दी थी। पहला दिन था, इसलिए सब लोग सेहतमंद और मज़बूत थे, और मन का जोश और उत्साह हमारे चलने के तरीके में दिख रहा था। हम दोपहर में रुके। हमने सूखी टहनियाँ इकट्ठी कीं और अपने खाने के लिए चूल्हा जलाया। अभी तक हम सिर्फ़ नीचे उतरे थे, इसलिए हममें से कोई थका नहीं था। बड़े मज़े से चावल और उबले आलू खाने के बाद, हमने अपना सारा सामान पैक किया और फिर से निकल पड़े।

২৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

अब ऊपर चढ़ने का समय था। मैं अपने ग्रुप में सबसे छोटा था, और गुरुजी सबसे बूढ़े। ज़्यादातर लामा चालीस से पचास साल के बीच के थे। वे सभी पहाड़ी लोग थे, इसलिए पहाड़ उनके हमेशा के साथी, उनकी जान थे। मैंने उनके साथ कदम से कदम मिलाकर धीरे-धीरे चलना शुरू किया। गंगटोक की तरह, यह इलाका भी खूबसूरत चीड़ और फर्न के जंगलों से भरा है, और सियोला पत्थर की खुशबू इसके साथ मिलती-जुलती है। सिक्किम की मेन रोड छोड़कर, हमने नाथुला का रास्ता लिया। नाथू का मतलब है नाम और ला का मतलब है संकट, दो पहाड़ों के बीच का रास्ता। जिलाप ला एक और ऐसा ही दर्रा है, यहाँ से एक रास्ता उसकी ओर जाता है। जिस बढ़ते हुए गाँव से हम गुज़रे उसका नाम कारपोनांग है।

जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गए, गंगटोक और पूरे हिमालय का नज़ारा बदलता गया, हिमालय का एक अलग ही चेहरा हमारे सामने आया। हम पहाड़ के किनारे जंगल के रास्ते पर चलते रहे। मौसम बहुत सुहावना था, पहाड़ पर

चढ़ने की मेहनत यहाँ की ठंडी हवा से कम हो रही थी। हालाँकि, थकान मिटाना मुश्किल था। चलते-चलते साफ़ पता चल रहा था कि हम सबकी साँस फूल रही थी। शाम होते-होते गुरुजी ने कहा कि हम थोड़ा और आगे जाकर रुकेंगे। जैसा उन्होंने कहा था, एक घंटे में हमें एक छोटा सा गाँव मिला, जिसे गाँव कहने के बजाय चट्टी कहना ज़्यादा अच्छा है। जैसे ही हम एक लकड़ी के घर के पास पहुँचे, कुछ सज्जन हमें देखने के लिए आगे आए। गुरुजी ने हमसे उनकी भाषा में कुछ पूछा, सज्जन ने हमें रास्ता दिखाया और एक दो मंज़िला कमरे में ले गए। दो कमरों में बत्तीस लोग ठूँसे हुए थे। मैं समझ गया कि हमें उस रात वहीं रुकना होगा। गुरुजी ने बताया कि उस जगह का नाम चेंगू है।

हर रात सोने से पहले, गुरुजी भगवान बुद्ध की बातें पढ़ते थे और सब लोग ध्यान से सुनते थे। चेंगू में जिस घर में हम रह रहे थे, उसकी छत इतनी नीची थी कि ठीक से बैठ पाना नामुमकिन था। अगर हमें बैठना होता, तो हमें बरामदे में जाना पड़ता था। इसलिए गुरुजी ने सबसे एक सौ आठ बार माला जपने को कहा और सो गए। रात के खाने में, हमें आस-पास के बगीचे से कच्ची सब्ज़ियाँ खानी पड़ती थीं। मूली और फूलगोभी। जो भी मिलता था, वह हमारी भूख मिटाने के लिए काफी होता था। हमें खाने से ज़्यादा आराम और नींद की ज़रूरत थी।

अगले दिन हम सुबह जल्दी उठे और फिर से निकल पड़े। नाथू ला, चांगू या चेंगू से सिर्फ़ आठ मील दूर है। गंगटोक से यहाँ पहुँचने में आमतौर पर डेढ़ दिन लगता है, लेकिन हम एक मुश्किल शॉर्टकट लेकर एक दिन में ही यहाँ पहुँच गए।

हम सुबह जल्दी उठे और फिर से चल पड़े। इस बार रास्ता सच में मुश्किल था। पतली, घुमावदार सड़क ऊपर की ओर जाती थी, जिसके दोनों तरफ मिलिट्री फोर्स थी। यहाँ से कंचनजंगा का नज़ारा पहले से भी ज़्यादा

खूबसूरत लग रहा था, चलने की थकान कंचनजंगा के नज़ारे से दूर होती दिख रही थी। हमें अचानक रुकना पड़ा।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৯

৩০

हॉल- एक सिपाही हमारे पास आया और बोला, "आगे मत जाओ, सीधे वापस जाओ।" उसकी बात सुनकर हम हैरान रह गए, गुरुजी हिंदी बहुत अच्छी जानते हैं। उन्होंने सिपाही को अच्छे से समझाया कि हम तीर्थयात्री हैं, हम तशीलुम्पा और मानस सरोवर की ओर जा रहे हैं।

सैनिक उसकी बात सुनकर हँसा, "सारे तीर्थयात्री चले गए हैं, आगे बढ़ो।"

गुरुजी ने उसे अनदेखा किया और हमें आगे बढ़ने को कहा। जैसे ही हम चलने लगे, सिपाही ने आगे का रास्ता लिया, फिर कहा, "ठीक है, अगर तुम जाना चाहते हो, तो आगे बॉर्डर गार्ड तुम्हें पकड़ लेंगे, तब तुम्हें मज़ा समझ आएगा।" हमने बिना बहस किए उसे एक तरफ छोड़ दिया और आगे बढ़ गए। आधे घंटे बाद, हमें फिर से बॉर्डर गार्ड की बाड़ मिल गई। सड़क पर एक पेड़ रखकर एक बनावटी बॉर्डर बनाया गया था। हमें देखकर छह जाट सिपाही आगे आए। गुरुजी तैयार थे, उन्होंने उन्हें समझाया कि अगर वे हमें जाने देंगे, तो उनके काम में कोई ढील नहीं मिलेगी। हमारे पास हमारे सारे डॉक्यूमेंट्स थे। गुरुजी की बात सुनकर, वे हमें पास के एक टेंट में ले गए, जहाँ हम ऑफिसर के सामने पेश हुए। ऑफिसर ने ध्यान से हमारे डॉक्यूमेंट्स देखे और हमें जाने दिया। बॉर्डर अभी बहुत

दूर है। कहने की ज़रूरत नहीं है, इस इलाके में इंडियन आर्मी बॉर्डर की रखवाली कर रही है। और तीन घंटे बाद, सड़क धीरे-धीरे पतली होती गई। घने जंगल की गंध भारी हो गई, और हमारे शरीर पहले से ज़्यादा भारी लगने लगे। सड़क पूरी तरह से कच्चे पत्थरों और धूल से ढकी हुई थी। हमारे सामने पहाड़ दीवार की तरह आगे बढ़ता हुआ लग रहा था, और गुरुजी ने हमें रुकने को कहा। हम उनका इंतज़ार कर रहे थे। जैसे ही हमने उनकी आवाज़ सुनी, हम सड़क पर बैठ गए। ओह, यह रास्ता कितना ऊँचा है। और कितना दूर है?

आधे घंटे आराम करने के बाद हम फिर निकल पड़े। जैसे ही हमने अगला मोड़ पार किया, हम एक बड़ी सेना के हाथों में आ गए। नाथुला का नज़ारा अब एक मिलिट्री फोर्स जैसा था। पहाड़ से लगभग साढ़े चार हज़ार मीटर ऊपर, हर कोई कुरुक्षेत्र के लिए तैयार लग रहा था। सैनिकों की संख्या के हिसाब से गोला-बारूद और बंदूकें भी थीं। हर कोई तैयार था, बस तुरही बजने का इंतज़ार कर रहा था। सैकड़ों सैनिक हमारे चारों ओर आ गए, सभी के हाथों में बंदूकें थीं, अचानक ऐसा लगा जैसे वे हमारा ही इंतज़ार कर रहे हों। यह समझना मुश्किल नहीं था कि यह भारत का बॉर्डर था, यानी सिक्किम और तिब्बत।

उनकी नज़र से बचकर एक मक्खी भी बॉर्डर पार नहीं कर सकती। उनकी ताकत और काबिलियत देखकर, कोई भी महान भारतीय सेना की तारीफ़ किए बिना नहीं रह सकता। सड़क के किनारे एक लकड़ी के घर में बॉर्डर पोस्ट थी, जहाँ हमें ले जाया गया। ऑफिसर ने हमें बैठने को कहा। जिस तरह से वह बात कर रहा था और जिस तरह से उसने बात की, उससे मुझे लगा कि वह बंगाली है। हालाँकि मैं बोलना चाहता था, लेकिन कोई रास्ता नहीं था।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

थोड़ी सी लापरवाही से मेरा पूरा सफ़र खराब हो सकता था, लेकिन मिलिट्री वाला होने के बावजूद भी वह बहुत विनम्र लग रहा था। उसने गुरुजी को भरोसा दिलाया कि उसे हमारे जाने के बारे में ऑफिशियली पता चल गया है। कोई दिक्कत नहीं होगी, हमारे सारे डॉक्यूमेंट्स ठीक हैं। उसने गुरुजी से हिंदी में बात की। वह हम सबको मिलिट्री टेंट की कैंटीन में ले गया और वहाँ के क्वार्टरमास्टर से मिलवाया। जब उसने सुना कि हम ल्हासा और कैलाश जा रहे हैं, तो उसने आँखें उठाकर पूछा, हम पागल तो नहीं हैं? सर्दी अभी कम नहीं हुई है और ऊपर से रास्ता भी बहुत आसान नहीं है। हम कैसे जाएँगे? खैर, उस आदमी ने हमारी बहुत तारीफ़ की। थोड़ी ही देर में, उन्होंने हमें रोटी और करी के साथ बड़े मग में चाय सर्व की। यह हमारे लिए अनएक्सपेक्टेड था, उन्होंने हमें पेट भरकर खिलाया, हमने उन्हें दिल से दुआएँ दीं और सबसे बाय कहा।

मुझे अब तक नाथू ला के इस भयानक पहाड़ी संकट को देखने का मौका मिल चुका था। यह हिमालय का एक और शानदार नज़ारा है। यह पहाड़ का सबसे ऊँचा हिस्सा है। यहाँ से पाँच मील दक्षिण में जिलाप ला नाम का एक और रास्ता है। दूर से हमें सिक्किम और कंचनजंगा का खूबसूरत नज़ारा दिखता है और हमारे सामने चुम्बी वैली का रास्ता है। थोड़ा आगे जाने पर, बाईं ओर अचानक एक बहुत बड़ी खाई दिखाई दी, जैसे किसी ने अचानक पहाड़ को यहाँ से हटा दिया हो। उस बड़ी खाई के बाद, एक झरने की भयंकर मूर्ति। हम प्रकृति की नज़र में बहुत मामूली और मामूली कीड़े लग रहे थे। हम सावधानी से नीचे उतरने लगे। किसी भी पल लैंडस्लाइड हो सकता था। सड़क के किनारे छोटे-छोटे पत्थरों का एक बहुत बड़ा ढेर देखा गया। गुरुजी ने समझाया कि जब तीर्थयात्री यहाँ से गुज़रते हैं, तो वे उसमें एक पत्थर जोड़ देते हैं। यह महान हिमालय को श्रद्धांजलि देने का एक और तरीका है। हमने भी एक-एक करके पत्थरों के उस ढेर में

एक पत्थर जोड़ा। मैंने प्रार्थना की, "हे देवी-देवताओं! कृपया हमारी यात्रा को सफल बनाने के लिए आशीर्वाद दें।"

चुम्बी घाटी का बड़ा नज़ारा हमारे सामने था। अगर मिलिट्री ने हमें खाना नहीं खिलाया होता, तो हमें खाना बनाने और खाने में बहुत समय लगता, इस दौरान हम अपनी मातृभूमि भारत को पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाते। ज्योग्राफिकल बाउंड्री के हिसाब से, अब हम तिब्बत की ज़मीन पर हैं।

मैदानों में आठ मील चलना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है, लेकिन पहाड़ियों पर आठ मील चलना बहुत मुश्किल है। पहले तो हम हर आधे घंटे में आराम करने लगे, फिर हम हर पंद्रह से बीस मिनट में खड़े होने लगे। बजरी मिली कच्ची पहाड़ी पर सड़क पहले से ज़्यादा खड़ी लग रही थी। जैसे-जैसे हम ऊपर चढ़ते गए, हिमालय की खूबसूरती बढ़ने लगी। सिक्किम का नज़ारा और भी खूबसूरत लगने लगा, अलग-अलग पहाड़ों की चोटियाँ बड़ी-बड़ी लहरों जैसी लग रही थीं। दूर-दूर तक

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩১

पहाड़ ऐसे लगते हैं जैसे बादलों से सीधे नीचे आ गए हों। हिमालय की कई सीढ़ियाँ पार करके हम यहाँ पहुँचे हैं। शाम हो चुकी थी और हमने यहाँ से सूरज डूबने की लाल रोशनी देखी। अचानक गुरुजी ने हमारा ध्यान खींचा, हमने वापस सिक्किम यानी भारत की तरफ देखा, उसके बाद यह नज़ारा दोबारा नहीं दिखेगा। सिक्किम कोहरे से ढका हुआ है। हमारे ठीक सामने एक स्तूप दिखा। कोई सीमेंट या पत्थर का काम नहीं। कहा जा सकता है कि किसी छोटे लड़के ने आस-पास के पत्थरों को जमा करके स्तूप बनाने की कोशिश की होगी, हमने उसे फिर बताया कि यह हिमालय को एक

श्रद्धांजलि है। यह नाथुला का सबसे ऊँचा हिस्सा है, 14000 फ़ीट। गुरुजी ने समझाया कि पुराने ज़माने से, भारत से तीर्थयात्री तिब्बत जाते समय यहाँ एक पत्थर जमा करते हैं। नाथुला पहुँचने की निशानी के तौर पर, और तिब्बती भी भारत जाते समय यहाँ किनारे से एक पत्थर जमा करते हैं। यहाँ पत्थरों की कोई कमी नहीं है, हममें से हर एक को भी यहाँ एक पत्थर रखना चाहिए। हमने गुरुजी के कहे अनुसार पत्थर जमा किए, और कुछ और पत्थर पत्थरों के ढेर के ऊपर गिर गए।

हम आराम करने के लिए एक बड़ी चट्टान के पीछे इकट्ठा हुए। इंडियन मिलिट्री के बाद से हमने किसी और को नहीं देखा था। बस कुछ कौवे ऊपर से हमारा स्वागत करने के लिए काँव-काँव कर रहे थे। मैंने गुरुजी को लामा कहा और सब उन्हें रेप्टन लामा कहते थे। तिब्बती गाँव में घुसने से पहले उन्होंने हमें अपनी आखिरी सलाह देना शुरू किया,

-बहुत जल्द हमें तिब्बत का पहला गांव मिल जाएगा। शायद गांव में घुसने से पहले हमें हनंदा (तिब्बती लोग चीनी लोगों को हान कहते हैं) का सामना करना पड़ेगा, यह तो ज़ाहिर है कि वे अलग-अलग तरीकों से हमारा टेस्ट लेंगे। वे चेक करेंगे कि हम असली लामा हैं या नहीं। आपके सामने सब्र का टेस्ट आने वाला है, इसके लिए तैयार रहें।

हम फिर से चलने लगे। जैसे ही हम मैदान में पहुँचे, हमें एक चेकपॉइंट मिला। बॉर्डर गार्ड सभी तिब्बती थे, सिर्फ़ दो चीनी सैनिक थे। चीनी सैनिकों ने अपनी पीठ पर वायरलेस रेडियो बाँध रखे थे। उन्होंने हमें खड़े होने को कहा। तिब्बती सैनिक आगे आए और गुरुजी से तिब्बती में कुछ पूछा, गुरुजी ने उन्हें कुछ कागज़ दिखाकर जवाब दिया। दो चीनी गार्डों ने ध्यान से क्लियरेंस पेपर्स चेक किए। क्लियरेंस पेपर्स में काठमांडू में चीनी एम्बेसी से परमिशन स्लिप्स थीं, साथ में सिक्किम सरकार का तारीफ़ और बधाई का लेटर और गुरुजी का पर्सनल

आइडेंटिटी कार्ड भी था। इसका मतलब था कि जब तक गुरु गेशे रेस्टेन की ईमानदारी साबित होती रहेगी, हम सिर्फ़ उनके साथी थे। तिब्बती आदमी ने चीनी आदमी के लिए कागज़ के हर शब्द का चीनी में ट्रांसलेशन करना शुरू कर दिया। चीनी इस बारे में बहुत सावधान थे। उन्होंने ध्यान से सुना और हमारे सामने, उनके सीनियर वायरलेस रेडियो पर बात कर रहे थे।

৩২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

तिब्बती और चीनी भाषा में लिखे शब्द मुझे बहुत अजीब लगे। मैं मन ही मन बहुत खुश था, भारत छोड़कर विदेश आने पर मेरा दिल खुशी से भर गया था, हालांकि मेरा शरीर बहुत थका हुआ था, लेकिन मेरा दिल उत्साह से भरा हुआ था।

हम करीब एक घंटे तक वहीं बैठे रहे, ऊपर वालों से जवाब का इंतज़ार करते रहे, लेकिन कोई जवाब नहीं आया। धीरे-धीरे दोपहर शाम हो गई, लेकिन फिर भी कोई कन्फर्मेशन नहीं आया। गुरुजी ने कहा था - बहुत सावधान रहना! सब्र रखना। तो हमें भी सब्र रखना होगा। शाम की रोशनी भी चली गई! उन्होंने चौकी के लकड़ी के घर में तूफ़ान मचा दिया। हम बत्तीस लामा थे, चार तिब्बती सैनिक, दो चीनी सैनिक, सब चुप थे, किसी ने कोई आवाज़ नहीं की। सिर्फ़ मालाओं की सरसराहट और लामाओं की भारी साँसों ने उस खामोशी को थोड़ा हिलाना शुरू किया। हममें से कई लोग सफ़र से थककर वहीं बैठे-बैठे सो गए थे। एक घंटे बाद, चीनी रेडियो बजने लगा, और हम सब तुरंत चौंक गए। हमने साँस रोककर सुना - हमारा जवाब चीनी में था। चौकीदारों ने बड़े साहब के इंस्ट्रक्शन ध्यान से सुनने शुरू किए। थोड़ी देर बाद, उन्होंने हमें समझाया - ठीक है, तुम जा सकते हो, लेकिन तुम्हारी अच्छी तरह से तलाशी ली जाएगी। यह सच में

अच्छी खबर है। जैसा वादा किया था, उन्होंने हमारे कपड़ों और सामान की अच्छी तरह से तलाशी ली और कुछ भी संदिग्ध न मिलने पर हमें छोड़ने के लिए मजबूर हो गए।

हमें छोड़ दिया गया, हमारी खुशी और कौन देखेगा? हमने उन्हें धन्यवाद दिया और सड़क पर निकल पड़े। हम सड़क पर निकल पड़े, लेकिन जैसे-जैसे हम आगे बढ़े, हमें एक और खतरा दिखाई दिया, रात का अंधेरा करीब आ रहा था, और सड़क देखने के लिए कोई रोशनी नहीं थी। हमें मजबूरन रुकना पड़ा, लेकिन पहरेदारों ने कहा कि इस इलाके में न रुकना बेहतर है, क्योंकि सैनिक गलती से हम पर गोली चला सकते हैं। गुरुजी समस्या का समाधान करने के लिए आगे आए। उन्होंने कहा, "तुम सब मेरे पीछे लाइन में आओ, मैं पहले जाऊंगा।" गुरुजी ने अपनी छड़ी का पिछला हिस्सा मेरी ओर बढ़ाया, मैंने उनकी छड़ी अपने बाएं हाथ में पकड़ी और अपनी छड़ी को अपने दाहिने हाथ से पीछे की ओर बढ़ाया। इस तरह, हम छड़ी की चेन पकड़े हुए चलने लगे। लगभग आधे घंटे में, आसमान में तारों की रोशनी हमारी आँखों पर पड़ी, और हम उस रोशनी से सड़क देख सकते थे।

पहाड़ पर चढ़ने के बाद मेरे पैर अकड़ जाते हैं, और नीचे उतरने के बाद मेरे पैर कांपने लगते हैं। पहाड़ पर चढ़ने वाले लोग यह बात अच्छी तरह जानते हैं। मुझे नहीं पता कि मेरे साथी लामाओं की हालत कैसी है, लेकिन मेरी हालत बहुत खराब है। मुझे लगता है कि अगर वे मुझे यहीं लेटने को कहें, तो मैं लेटते ही सो जाऊंगा, लेकिन मुझे चलते रहना है। हम ऊपर तारों की रोशनी, बगल में कीड़ों की चहचहाहट और अपने कदमों की आवाज़ के साथ चलने लगे। जैसे-जैसे हम चल रहे थे, ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने अचानक हम पर हमला कर दिया हो।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৩

हम धीरे-धीरे चलने की बोरियत में एडजस्ट हो गए थे, तभी अचानक कुछ बड़े-बड़े लोग सो रहे गांववालों पर अचानक कूद पड़े, इससे पहले कि हम समझ पाते कि क्या हो रहा है, हमने देखा कि करीब एक दर्जन कुत्ते हमारे आस-पास कूद रहे थे, ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहे थे, और जैसे ही उन्होंने एक कदम आगे बढ़ाया, ऐसा लगा जैसे वे हमें टुकड़े-टुकड़े कर देंगे। मैं अपना मंत्र भूल गया और बोला, "माँ, हमारी रक्षा करो।" फिर अचानक, मुझे याद आया कि मैंने क्या कहा था, "मौनी बाबा," और मैं रुक गया। ऐसा लगा कि किसी ने कुत्तों की आवाज़ नहीं सुनी। कुत्तों से घिरे हम चोरों की तरह खड़े थे। थोड़ी देर में, दूर से दो-तीन रोशनियाँ धीरे-धीरे दिखाई दीं। मैंने एक गहरी साँस ली और कहा, "चलो खुद को बचाते हैं, यह एक गांव जैसा लग रहा है।" जैसे ही पहले गांववाले आगे बढ़े, गुरुजी ने उनसे कहा, "हम ल्हासा के तीर्थयात्री हैं, हम महागुरु चेक्रेजी के दर्शन करने जा रहे हैं।" धीरे-धीरे, कुत्ते शांत हो गए।

गुरुजी और आस-पास के लोगों में थोड़ी बातचीत हुई, अंधेरे में मुझे किसी का चेहरा साफ़ नहीं दिख रहा था। गुरुजी ने अपना चेहरा मेरे कान के पास किया और कहा - उन्हें लगा कि चीनी सैनिक हैं इसलिए पहले कोई बाहर नहीं आया, अब से बहुत सावधान रहना। मुझे गुरुजी मत कहना, मुझे गेशे रेप्टेन कहना। मैंने भी उनकी बात सुनी और बहुत धीरे से कहा - ठीक है। बेशक मैं एक चुप रहने वाला पिता हूँ, इसलिए शब्दों का सवाल ही नहीं उठता, लेकिन अगर मैं अपनी बात बोलकर बाहर आ गया, तो उन्होंने मुझे पहले ही चेतावनी दे दी थी।

गांववालों के पीछे-पीछे हम एक छोटा पुल पार करके गांव में घुसे। लकड़ी के बड़े शेर जैसे दरवाज़े से गुज़रने के बाद, मुझे लगा जैसे

मैं किसी मठ में घुस गया हूँ। तूफ़ान की हल्की रोशनी में, हमें रास्ता मुश्किल से ही दिख रहा था, और कुछ खास नहीं।

मेरा आइडिया साफ़ हो गया, थोड़ी देर बाद गांव वाले हमें एक बरामदे में ले आए और बैठने को कहा। ठंड से परेशान थे और साथ ही मेरे पेट में भूख मरोड़ मार रही थी। मुझे नहीं पता कि दूसरे लामाओं की हालत कैसी है, लेकिन मेरी हालत को असली दुख के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता। हर लामा का मेरे साथ सब्र बहुत ज़्यादा है, वे मुश्किल से बोलते हैं। गेशे रेटेन कहते हैं - बात करने का मतलब है एनर्जी बर्बाद करना। जब तक हम बोल नहीं सकते, एनर्जी शरीर में जमा रहती है, और ज़रूरत पड़ने पर उसे खर्च करना पड़ता है। अगर मेरे पास इस चुप रहने वाले लामा का रोल न होता, तो मैं अपने मन की बात चिल्लाकर कह देता। मुझे कुछ कहना नहीं पड़ा, गुरुजी सब समझते हैं। आते ही उन्होंने गांव वालों से पूछा कि क्या उन्हें कुछ खाना मिल सकता है। कौन जाने अभी क्या टाइम हुआ है? नहीं, आज रात सारी दुकानें बंद हैं। खाना नहीं मिलेगा, लेकिन तथागत की बड़ी कृपा से, लोकल चाय की दुकान का मालिक संतों की सेवा के लिए चाय बनाने को तैयार है, बेशक फ्री में नहीं।

৩৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

तिब्बती चाय को चांग कहते हैं। इसे बहुत सारे पाउडर वाली चाय में मक्खन और नमक मिलाकर बनाया जाता है। इससे क्या नुकसान हो सकता है? भूख के समय जो भी मिल जाए, वही काफी है। थोड़ी देर में मालिक अपने बेटे और बेटी को हमारे सामने चांग बनाने के लिए ले आए। इसे बत्तीस लोगों के लिए बनाना है, इसलिए यह कोई छोटी बात नहीं है। हमने मठ की बिल्डिंग में अपने कंबल बिछाए और लेट गए, अपने थके हुए शरीर को किसी

भी तरह से संभाल नहीं पा रहे थे। फिर भी, मैंने अपनी मेंटल ताकत वापस पाने और अलर्ट रहने की कोशिश की, क्योंकि यह मौका शायद दोबारा न मिले। गेशे रेस्पेन की हालत सच में तारीफ के काबिल है, वह इतने प्रेशर के बावजूद अलर्ट हैं। उनकी फिजिकल ताकत ही नहीं, बल्कि उनका हौसला भी बेमिसाल है।

गर्म पानी से भरे एक बड़े टिन के बर्तन के ऊपर लकड़ी का एक करछुल रखा था। और उसके पास रखे दो बड़े टिन के बर्तनों में, मालिक की बेटी ने ईंट जैसी कोई चीज़ डाली और उसे एक बड़े मूसल से कूटना शुरू कर दिया। अपनी जिज्ञासा को दबा नहीं पाया, इसलिए मैं वहाँ गया और बर्तन में रखी चीज़ों को सूंघने की कोशिश की। मेरा उत्साह देखकर, लड़की मुस्कुराई और बोली, "चांग।" उस गंध से मुझे चाय की भी याद आ गई। ऐसा लग रहा था जैसे चाय पाउडर को ईंटों में आसानी से रखने के लिए पीसकर बनाया गया हो। चांग या चाय का टुकड़ा एक सख्त ईंट जैसा था। जब लड़की की चाय पीस गई, तो बर्तन में गर्म पानी डाला गया, और फिर उसे एक लंबी छड़ी से फिर से मिलाया गया। इसे लगभग आधे घंटे तक हिलाया गया और फिर से करछुल पर रख दिया गया। फिर, शायद चाय के बर्तन पर आटे या चाट का कटोरा फैलाया गया। फिर, इसे थोड़ी देर और उबाला गया और उसमें मक्खन और दूध मिलाया गया।

यह मेरे लिए नया ही नहीं, बल्कि अजीब भी था। अगर चाय नहीं, तो इसे चाय का सूप कहा जा सकता था। फिर सबको उनके कटोरे में गरम चाय दी गई। कई लामा सो गए थे। और कई, लकड़ी की आग पाकर, उसके पास आए और आग जला दी। यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि यह तिब्बती चाय पीने में बहुत टेस्टी नहीं है, लेकिन यह एक चायदानी भरने के लिए ज़रूर काफ़ी है। ऐसे चांग का एक कटोरा दो आने का था। बेशक, आप सिर्फ़ एक कीमत में जितनी बार चाहें खा सकते हैं। गेशे रेप्टेन ने हमें बताया कि मालिक ने इसे बहुत ज़्यादा कीमत पर बेचा था, असल में, इसकी कीमत चार पैसे से

ज़्यादा नहीं थी। जैसे ही कीमत चुकाई गई, चाय की दुकान के मालिक ने अपना सामान पैक कर लिया, लेकिन चूल्हे में लकड़ी अभी भी जल रही थी, इसलिए उसने इसे लामाओं के इस्तेमाल के लिए छोड़ दिया, साथ में लकड़ी की दो लकड़ियाँ भी। हमने उनोतो को उठाकर बरामदे में ले गए, उसे बीच में बिठाया, और तुरंत उसके बगल में कंबल ओढ़कर लेट गए। तिब्बत में हमारे पहले कदम के बावजूद, अब हममें इधर-उधर देखने की ताकत नहीं थी। हमने अपनी आँखें बंद कर लीं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৫

৩৬

मैं अब और नहीं रोक सकता - कल सुबह देखेंगे। मैं एक कुत्ते में बदल गया और उसके चारों ओर कंबल लपेट दिया।

मुझे नहीं पता कि हम कितनी देर सोए, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि यह बहुत गहरी नींद थी। हम एक तेज़ आवाज़ से जागे। मुझे बहुत मुश्किल से अपनी आँखें खोलनी पड़ीं, ताकि पता चल सके कि कौन चिल्ला रहा है। मैंने देखा कि सुबह होने वाली थी, और कई तिब्बती हमारे आस-पास खड़े थे, और उनके बीच में दो हान या चीनी सैनिक अपनी बंदूकों के धक्कों से सबको जगा रहे थे। मुझे लगता है कि मैं उनमें से सबसे पहले जागा। गुरुजी मेरे बगल में सो रहे थे। बंदूक के धक्कों से बचने के लिए, मुझे उन्हें जगाना पड़ा। दुनिया में एक थके हुए, बूढ़े गुरु को गहरी नींद से जगाने जैसा कोई पाप नहीं लगता; फिर भी, मुझे उन्हें जगाना पड़ा। मैंने बड़ी मुश्किल से उनके पैर पकड़कर उन्हें हिलाया। हमारे लगभग सभी साथी लामा कुछ न कुछ तिब्बती भाषा समझते हैं, लेकिन गेशे

रेस्टेन, या गुरुजी, हमारे गाइड हैं, और उन्हें पहले रखना हमेशा सबसे अच्छा होता है। गुरुजी ने अपनी आँखें खोलीं और एक पल में, उन्हें समझ में आ गया। सुबह की रोशनी में, मैं तिब्बत का पहला गाँव और गाँव वाले देख सकता था।

पहली नज़र में, हमारे आस-पास जो लोग दिखे हैं, वे गरीब लगते हैं। वे सिक्किमी, खासकर भूटानी जैसे दिखते हैं। उनके कपड़े बहुत गंदे हैं लेकिन सब लोग काफी हेल्दी हैं, मर्द और औरतों दोनों के सिर पर लंबे बाल हैं। जवान लड़के-लड़कियों को देखकर ऐसा लगता है कि उन्होंने कभी पानी या सिर पर कंघी नहीं लगाई।

गुरुजी ने हम सबको तैयार होने को कहा। हमें जल्द से जल्द चुम्बी शहर जाना था, जो इंडो-तिब्बत बॉर्डर का हेडक्वार्टर है, बेशक उन लोगों के लिए जो नाथू ला और जिलाप ला से सफ़र करते हैं। जैसे ही हम मठ के बाहर आए, गुरुजी ने बात साफ़-साफ़ समझाई - यानी, जिस पोस्ट को हमने पिछली शाम पार किया था, उन्होंने अपने सीनियर्स को रेडियो से बताया था कि लामा तीर्थयात्रियों का एक ग्रुप बॉर्डर पार कर चुका है और जल्द ही चुम्बी शहर जाएगा। उसके हिसाब से, चुम्बी पुलिस स्टेशन हमारा इंतज़ार कर रहा था, उन्होंने पूरी रात हमारा इंतज़ार किया लेकिन जब उन्होंने देखा कि किसी तीर्थयात्री का कोई जवाब नहीं आया, तो वे सुबह चुम्बी से हमें ढूंढने के लिए आगे आए; अब ये दोनों सिपाही हमें अपने पुलिस स्टेशन ले जाएंगे, जहां असली बातचीत होगी।

जब हम सड़क पर जा रहे थे, गेशे रेप्टेन ने हमारा ध्यान खींचा और कहा, "इस जगह का नाम चुबिटांग है और इस गुफा (मठ) को अच्छे से देखो। यह बहुत पुरानी है, तीर्थयात्री आमतौर पर अपनी पहली रात यहीं बिताते हैं। इन दिनों, ज़ाहिर है, तीर्थयात्री कम हैं; यह अफ़सोस की बात है

कि हमें बॉर्डर गार्ड के साथ शहर जाना पड़ रहा है, नहीं तो हम इस मठ को अच्छे से दिखा पाते।" मठ का नाम

महातीर्थ का अंतिम यात्री

कारगिड गुफा। यह गुफा तिब्बत की दूसरी गुफाओं से अलग है, आमतौर पर गुफा का हेड एक लामा होता है, लेकिन इस गुफा का मालिक कोई लामा नहीं है। सिक्किम महाराजा का एक वंशज इस गुफा का मालिक है। हालांकि, इस गुफा में कई हाई-क्लास लामा भी रहते हैं। इस इलाके में लोअर क्लास या नए लामा को त्रापा कहा जाता है। कारगिड गुफा की लाइब्रेरी भी देखने लायक है। यह बहुत दुख की बात है कि हमें यह गुफा छोड़नी पड़ रही है। कोई रास्ता नहीं है क्योंकि अगर हम उनका साथ नहीं देंगे, तो तिब्बत जाने का हमारा रास्ता बंद हो जाएगा। बाहर से यह कारगिड गुफा बहुत खूबसूरत दिखती है, एक बड़ा लकड़ी का शेर का दरवाज़ा, पत्थर की दीवारें, गांव वालों के पानी पीने के लिए एक फव्वारा, लकड़ी की खूबसूरत नक्काशी, हालांकि यह एक मठ जैसा दिखता है, लेकिन समझा जाता है कि ज़रूरत पड़ने पर इसे किले की तरह भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

बॉर्डर फोर्स से बार-बार होने वाली मुठभेड़ों की वजह से हमारा मन उनकी कुदरती खूबसूरती से ज़्यादा उनकी तरफ खिंचा चला जाता था, हमारे मन में हमेशा एक ही डर रहता था कि वे हमें अंदर जाने देंगे या नहीं। नाथुला का रास्ता अचानक तिब्बत में उतर गया, और जैसे ही हम नीचे उतरे, हमें आगे खुली चुम्बी वैली दिखाई दी; अगले कुछ दिनों तक हमें ल्हासा जाते हुए इसी वैली में चलना था। तिब्बत अचानक संकरा हो गया और दो देशों में बंट गया। हमारे दाईं ओर के पहाड़ भूटान थे और बाईं ओर के पहाड़ सिक्किम और भारत थे। दोनों तरफ के पहाड़ों पर बर्फ गिर रही थी, जिससे वे सफेद हो गए थे। चुम्बी वैली से कंचनजंगा का शानदार

नज़ारा अब दिखाई नहीं दे रहा था। अब हमारे दोनों ओर बड़े-बड़े पहाड़ थे, ऐसा कहा जा सकता था कि हम अब हिमालय के दूसरी तरफ पहुँच गए थे। हम एक छोटी पहाड़ी नदी के बगल वाली सड़क पर आगे बढ़ने लगे। यह सड़क तिब्बत और सिक्किम के बीच मेन रोड है, आपको ऐसा नहीं लगेगा। मठ से लगभग एक घंटे चलने के बाद, हम एक शहर, चुम्बी पहुँचे। वैसे तो यह तिब्बतियों का शहर है, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि मिदनापुर का कोई भी छोटा गाँव इससे बड़ा है। सड़क के दोनों तरफ हमने बहुत सारे सरकारी टेंट देखे, और उनके साथ बहुत सारे चीनी सैनिक भी थे। गेशे रेप्टेन ने हमें पहले ही बता दिया था कि हान कौन हैं और तिब्बती कौन हैं, और अब हम फ़र्क बता सकते हैं। तिब्बतियों के चलने का तरीका दिखाता है कि वे इसी ज़मीन से हैं, और उनके चलने में एक लय है। और चीनी सैनिकों के चलने का तरीका एक विदेशी एहसास देता है, उनमें ज़मीन पर कब्ज़ा करने का घमंड है, और लय की कमी है। बॉर्डर पार करते ही हम समझ गए कि हमें बहुत सावधान रहना है।

चुम्बी एक पुराना, फैला हुआ गाँव है, जिसकी दीवारें सीमेंट और पत्थर की हैं और उन पर लकड़ी के बरामदे लटके हुए हैं, घर ऐसा लगता है जैसे सौ साल पुराना हो। दरवाज़े के सामने दो मिलिट्री जीप और हथियारबंद गार्ड खड़े हैं। गुरुजी ने हमें बाहर बैठने को कहा और चीनी लोगों के साथ हमारे डॉक्यूमेंट्स चेक करने के लिए अंदर चले गए। हम सड़क किनारे बैठ गए। सड़क के दोनों तरफ पहाड़ियाँ अब धीरे-धीरे ऊपर उठ रही थीं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৭

ऐसा लग रहा था कि घाटी पीछे हट रही है। घाटी अब बहुत चौड़ी हो गई थी। यहाँ के सभी घर लोकल पत्थर और लकड़ी के बने थे, और घरों में कोई एडवांस्ड कारीगरी नहीं थी। सामने एक मार्केट था, जो मार्केट जैसा ही था। मैंने कुछ किराने की दुकानों, चाय की दुकानों, और कंबल और कपड़ों की दुकानों के सामने लोकल लोगों को आते-जाते देखा। सुबह की धूप बहुत अच्छी थी। लगभग एक घंटे बाद, गेशे रेस्टोरेंट में वापस आए, उन्होंने कहा कि हमें बहुत सब्र रखना होगा। वे एक-एक करके सबकी जाँच करेंगे, हर चीज़ की तलाशी लेंगे। हमें किसी भी चीज़ में दखल नहीं देना चाहिए, अगर हम दखल देंगे, तो उन्हें लगेगा कि हम कुछ छिपा रहे हैं। असल में, हमें अपने तरीके से यह साफ कर देना चाहिए कि हमारे पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है। हमारा क्लीयरेंस लेटर काठमांडू में चीनी एम्बेसी से आया था। गुरुजी असल में एक तिब्बती लामा हैं, बाकी सब भूटिया और नेपाली हैं। गुरुजी ने मुझे ऐसा महसूस कराया जैसे तुम एक नेपाली लामा हो, मेरे शिष्य। हमने गुरुजी को भरोसा दिलाया कि हम किसी भी तरह से उनकी बात नहीं मानेंगे। पहला लामा अंदर आया और लगभग एक घंटे बाद वापस आ गया। मैंने मन ही मन हिसाब लगाया कि अगर हर लामा के बाद इतना टाइम लगाया गया, तो शक था कि आज हमें छोड़ा जाएगा या कल। धीरे-धीरे दोपहर हो गई। हमने सड़क के किनारे खाने का इंतज़ाम करना शुरू कर दिया। खाना ज़्यादा मुश्किल नहीं था, बस आटा, पानी और नमक का मिक्सचर मिलाकर निगल लिया। ज़िंदा रहने के लिए खा रहे थे। ऐसा लग रहा था कि लामाओं से सैकड़ों सवाल पूछने के बाद भी गार्ड्स को कुछ भी सस्पेक्टिव नहीं मिला, इसलिए आखिर में उन्होंने टाइम कम कर दिया। हर आदमी से आधे घंटे में पूछताछ हुई। अचानक अंदर से चार चीनी ऑफिसर बाहर आए, उन्होंने सबको ऑर्डर दिया कि अपना सारा सामान बैग से निकालकर सड़क पर रख दो, तलाशी लेना आसान होगा। जैसा उन्होंने कहा, हमने एक-एक करके सभी सड़कों पर सामान खोला। कहने की ज़रूरत नहीं कि हमारे बीच कुछ भी सीक्रेट नहीं है, मग, प्लेट, चिथड़े, आटा, नमक, आलू, चावल, दाल, माला, स्वेटर, कंबल, कपड़े, शर्ट, जूते, चादरों में कुछ भी

सस्पेक्टिव नहीं मिला। ऐसा लग रहा है जैसे हम ये सब सड़क के किनारे किसी फ्ली मार्केट में बेच रहे हैं।

चारों अफ़सरों ने सब कुछ चेक किया, हमारी लाठियों की भी। फिर उन्होंने सड़क पर हमारी जेबें (कोई नहीं थी) चेक करना शुरू कर दिया। चीनी अफ़सरों के साथ पाँच तिब्बती सैनिक थे, जिन्होंने हर लामा की तलाशी ली और तरह-तरह के अजीब सवाल पूछे। एक तिब्बती मेरे पास रुका, और जैसे ही उसने मेरी नज़रें मिलाईं, मैंने अपनी आँखें नीचे कर लीं, अपनी माला पकड़ ली और मंत्र पढ़ने लगा। तिब्बती आदमी ठीक मेरे सामने आया, फिर मुझे बहुत शक से देखने लगा।

৩৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उसने मुझे सवालिया नज़रों से देखा। मुझे कुछ समझ नहीं आया, उसने मेरा हाथ पकड़ा और मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा, ऐसा लगा जैसे वह पिछला सवाल दोहरा रहा हो। इस बार मैं उसे टाल नहीं सका, मैंने अपनी उंगली से गेशे रेप्टेन की ओर इशारा किया, मतलब - उससे बात करो, वह तुम्हें बताएगा कि मेरे बारे में क्या कहना है। तिब्बती चौकीदार ने गुरुजी को बुलाया, फिर उन्हें मेरे बारे में विस्तार से बताया। चौकीदार उसकी बातों से बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं लगा। उसने अपने चीनी अधिकारी को बुलाया और अंदर चला गया।

गुरुजी ने बहुत धीमी आवाज़ में मुझसे कहा - तुम एक मौनी लामा के बेटे हो, नेपाल, वे यह मानना नहीं चाहते। बहुत सावधान रहना, वे तुम्हारी परीक्षा लेंगे, तथागत की शरण में मत जाना। कहना आसान है, पर मेरी वह मानसिक स्थिति नहीं है कि मैं उनकी शरण में जाऊँ। मेरी दीक्षा जल्दी

में हुई थी, मुझे मानसिक रूप से तैयार होने से पहले ही बीज मंत्र मिल गया था। इसलिए इस अवस्था में तथागत की शरण में जाना और अपने मन का संतुलन बनाए रखना कठिन है। जो कुछ भी मेरे मन में था, मैंने उसे बाहर व्यक्त नहीं होने दिया। मैंने हाथ में लिए रुद्राक्ष का धीरे-धीरे जाप करना शुरू कर दिया, जैसे कुछ हुआ ही न हो। थोड़ी देर में गेशे रिप्लान को बुलाया गया। वे अंदर गए, लगभग आधे घंटे तक हिसाब दिया और बाहर आ गए। फिर मेरी बारी थी। मैं इष्टनाम का जाप करते हुए ऑफिस में दाखिल हुआ।

एक पुराना घर। घर के पीछे एक पहाड़ी झरना लगता है, उसके टपकते पानी की आवाज़ आ रही है। कमरा भी नम है, एक छोटी खिड़की से थोड़ी रोशनी आती है। एक बोर्डवॉक, उसके चारों ओर टूटी-फूटी कुर्सियाँ और टेबल रखी हैं, जो एक सरकारी ऑफिस की शान बनाए हुए हैं। चार चीनी ऑफिसर और दो लोकल तिब्बती साथी वहाँ मेरा इंतज़ार कर रहे थे। माहौल इससे ज़्यादा गंभीर नहीं हो सकता था।

घर में घुसते ही वे मुझसे कुछ कहने लगे। मैं चुप रहा। उन्होंने दूसरी बार भी उनसे पूछा। मैंने भी चुपचाप जवाब दिया। इस बार तिब्बती सज्जन ने वही सवाल धमकी भरे लहजे में पूछा। मैं चुप रहा। मेरी चुप्पी देखकर वे थोड़ा असहज महसूस करने लगे। मेरी ताकत पहले ही लौट आई थी। मेरे पैर कांप रहे थे, मैंने उन्हें रोका। किस्मत अच्छी थी कि मैंने पैरों तक साधुओं वाले कपड़े पहने हुए थे, वरना मैं उनकी नज़रों से बच नहीं पाता। मैंने मन ही मन सोचा, यह तिब्बत, यह कैलाशनाथ मान्धाता के समय से हमारा तीर्थ रहा है, शिव स्वयंभू हमारे घर के देवता हैं, उनके मंदिर जाना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है - यह तीर्थ हमारा तीर्थ है, हिंदुओं का नहीं, पवित्र भूमि चीनियों के लिए नहीं है, यह पवित्र हिमालय हिंदुओं के लिए है, वे इस पर ज़बरदस्ती कब्ज़ा करने आए हैं, तो डरने की क्या बात है! मैं अपना सब्र बिल्कुल

खत्म नहीं होने दूंगा। मैंने अपने मन को और भी काबू में किया। मैंने मन ही मन कहा - सावधान! हम उनके अस्तित्व हैं, हम उनकी छोटी-छोटी डांट हैं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৯

मैं तुम्हें नहीं दूँगा, देखते हैं कौन जीतता है। अरे, पिताजी! वे मुझे खाएँगे नहीं, वे आपसे कहेंगे कि वापस जाओ। ठीक है, मैं वापस जाऊँगा, क्या फायदा? डर क्या है? यह कहना आसान है कि डर क्या है, इसके बारे में सोचना आसान है, लेकिन जब आपके पैर मैदान में काँप रहे हों और थिरक रहे हों तो इसे रोकना मुश्किल है। अधिकारियों ने मुझसे कोई जवाब न पाकर मेरे बारे में तरह-तरह की सच्ची या झूठी कल्पनाएँ करना शुरू कर दिया। तिब्बती सज्जन (सैनिक) उनके बीच से चले गए। थोड़ी देर बाद, वह एक तिब्बती युवक के साथ लौटे। तिब्बती सज्जन मुझे बहुत ध्यान से देखने लगे, फिर मेरी तरफ देखा और स्पष्ट रूप से पूछा - तुम्हारा नाम क्या है, तुष्का?

उसके बोलने का तरीका और एक्सेंट सुनकर लगा कि वो आदमी कुछ दिनों से सिक्किम के मार्केट में ठेला चला रहा है। उस आदमी के हाव-भाव भी बहुत खराब थे, और जब मुझे उससे कोई जवाब नहीं मिला, तो उसने फिर पूछा
- दार्जिलिंग से आया तुम, नेपाली नहीं। मैंने मन ही मन सोचा कि वो सही कह रहा है। वो मेरे चेहरे से समझ गया कि मैं नेपाली नहीं हूँ। मैंने फिर सोचा कि एक बार शुरू कर दिया तो आखिर तक सब्र रखना है, इसलिए मैं पहले की तरह चुप रहा। वो आदमी इस बार बहुत गुस्सा हो गया, उसने गंदी-गंदी गालियाँ दीं और धमकी भरे लहजे में पूछा - अपना नाम बताओ। चीनी सैनिकों ने उसका एटीट्यूड देखकर किसी तरह का सुझाव दिया,

फिर मुझे और उस आदमी को ऑफिस में छोड़कर सब बाहर चले गए। उस आदमी ने मुझे अकेला पाकर अपना चेहरा मेरे चेहरे के पास किया और कहा - हम जानते तुम नेपाली नहीं, अपना नाम बताओ। मुझे पता है कि अगर मैंने एक बार अपना नाम बता दिया, तो कोई बच नहीं सकता, उसके बाद पुलिस परेशान करने लगेगी और आखिर में वे मुझे जासूस समझकर अरेस्ट कर लेंगे। लेकिन मैं कब तक ऐसे रह सकता हूँ? और मुझे इस आदमी पर भरोसा नहीं है, वह गुस्सा होकर उसमें कील ठोक सकता है, और वह बिल्कुल गुंडे जैसा दिखता है। अचानक मेरे दिमाग में एक आइडिया आया। मैंने अपने हाथ में रुद्राक्ष की माला को अपनी उंगलियों से दो बार बहुत तेज़ी से गिना, जैसे मंत्र पढ़ रहा हूँ, फिर मैंने माला को उस आदमी के सिर से छुआया और लगभग उसे श्राप देने का नाटक करते हुए कहा, 'ॐ भू-भू-स्व तत्सवितुर वरेण्यं...'।

मुझे कहानी पूरी करने की ज़रूरत नहीं पड़ी। वह तुरंत कूदकर दूर चला गया और फिर मुझसे तिब्बती में कुछ कहा, मुझे कुछ समझ नहीं आया। लेकिन उसके एक्सप्रेशन देखकर मुझे लगा कि वह बहुत डरा हुआ है, इसलिए मैंने शांत होने का नाटक करते हुए फिर से मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया। वह आदमी अपने सिर पर धूल लिए सांप की तरह हाथ जोड़कर चला गया। उसकी हालत देखकर मैं ज़ोर से हंसा, मेरा मन किया कि चीखकर ज़ोर से हंस दूं। लेकिन मुझे खुद पर कंट्रोल करना पड़ा। चार ऑफिसर अंदर आए, फिर बिना मन के मुझे बाहर आने को कहा। मेरी हिफ़ाज़त टूट गई थी।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

यह भी गुरुजी की दी हुई एक तरकीब है। गुरुजी ने एक बार बातचीत में कहा था कि तिब्बती लोग कट्टर तंत्र में विश्वास करते हैं। यह देश भूतों, जादूगरों और शैतानों से भरा हुआ है। यहां की परंपरा के अनुसार, लोगों का मानना है कि कोई भी ऊंचे पद का लामा भूतों को काबू

कर सकता है, या ज़रूरत पड़ने पर उन्हें बुला सकता है। लामा लोगों के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हैं, और उनके सिर पर रुद्राक्ष की माला छूकर श्राप देते हैं। लामा श्राप देते ही हैं, खासकर वे जो कट्टर तांत्रिक होते हैं। मुझे खुद इस बात का सबूत मिला है कि गुरुजी की बातें कितनी सच हैं।

वह आदमी चला गया और कभी वापस नहीं आया। अधिकारियों ने गुरुजी को फिर से बुलाया और मुझे दिखाया और उत्साह से बातें करने लगे। ऐसा लग रहा था कि गुरुजी उन्हें यकीन दिलाने की कोशिश कर रहे थे कि मैं असली लामा हूँ। कुछ न मिलने पर, उन्होंने बाकी कुछ लामाओं की तलाशी ली और उनसे पूछताछ की और हमें छोड़ दिया। पूरा दिन ऐसे ही बीत गया।

एक तिब्बती परिवार

दोपहर में हमने फिर से हल्की चाय पी। हल्की चाय का मतलब है कि वे चाय में नमक और मक्खन मिलाकर हल्की चाय बनाते हैं। यह सस्ती भी होती है। सिर्फ़ तीन पैसे में, वे इसे बांस के कप में भरकर बांटते हैं। ऐसा एक कप हमारे देसी कप के लगभग छह या सात कप के बराबर होता है। हमने अपना सामान पीठ पर लादा और फिर से चल पड़े। धीरे-धीरे, गांव के लोग हमारे आस-पास इकट्ठा होने लगे, न सिर्फ़ छोटे बच्चे बल्कि जवान लोग और कुछ बूढ़े लोग भी थे।

जब हम सड़क पर चल रहे थे, तो हमने कुछ अजीब देखा। हमें देखकर कई लोग माँ काली की तरह अपनी जीभ बाहर निकालने लगे, और कई दूसरे लोग सड़क पर लकड़ी की तरह झुकने लगे। गुरुजी ने समझाया कि तिब्बती लोग आमतौर पर झुकते या प्रणाम करते समय अपनी जीभ बाहर निकालते हैं, लेकिन उनमें से कई भारतीय तरीके से भी प्रणाम करते हैं।

हमने यहाँ से कुछ जलाने की लकड़ियाँ खरीदीं। जलाने की लकड़ी का मतलब है लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े, जो चंदन की लकड़ी जैसे दिखते हैं, मैंने असम या नॉर्थ बंगाल में इस तरह की लकड़ी को जलाने की लकड़ी या चूल्हे बनाने के लिए बहुत इस्तेमाल होते देखा है। यहाँ से कुदरती नज़ारा बहुत खूबसूरत है। दोनों तरफ हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियाँ दिख रही हैं, और नीचे भी बहुत दूर तक बर्फ दिख रही है। और पहाड़ पर झाऊ का घना जंगल, और सामने, सड़क एक पहाड़ी नदी के किनारे-किनारे चलती है। इस खूबसूरत नज़ारे में, यहाँ सिर्फ़ लोग गंदे लगते हैं। छोटे बच्चों की नाक ऐसी लगती है जैसे जन्म से ही किसी ने साफ़ नहीं की हो। गाँव के लोगों को कंघी से जान-पहचान नहीं हुई हो। उनके कपड़े देखकर ऐसा लगता है जैसे उन्होंने अभी तक साबुन की खोज के बारे में नहीं सुना हो। मुझे शक है कि वे दाँत ब्रश करते हैं या नहीं। मुझे अभी तक उनके खाने का सैंपल नहीं मिला है। मैंने किसी तिब्बती लड़के या लड़की से बात नहीं की है इसलिए मैं अभी उनके बारे में ज़्यादा नहीं लिख सकता। हालाँकि, आप उन्हें देखकर बता सकते हैं कि वे बहुत मज़ेदार और खुशमिजाज़ हैं। चलते समय, हमें कभी-कभी उनकी ज़ोरदार हँसी सुनाई देती है, जो सादगी और सहजता का प्रतीक है। चुम्बी तिब्बत के सबसे पुराने गाँवों में से एक है। गाँव का मुख्य आकर्षण

৪২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

यह एक बाज़ार है। कुछ लकड़ी के मचान जैसे घर, चार-पांच चाय की दुकानें, छह किराने की दुकानें, एक बड़ी सूखे मीट और चमड़े की दुकान
- ये यहां की पुरानी और पुरानी दुकानें हैं, और सड़क के किनारे कई और छोटी दुकानें हैं। सब्ज़ी बाज़ार बहुत छोटा है। चुम्बी बाज़ार में दुकानों की तीन लाइनें हैं।

लकड़ी की सीढ़ियों से ऊपर चढ़े। घर एक स्कूल जैसा है, यह एक साथ कई लोगों के रहने के लिए बनाया गया है। जैसे ही हम ऊपर की बालकनी पर पहुँचे, मैंने घर के मालिक को देखा। एक बुज़ुर्ग महिला हाथ में तूफ़ान लिए खड़ी हैं, हम सभी को एक-एक करके प्रणाम कर रही हैं। उसके चेहरे की झुर्रियों वाली स्किन में एक पवित्र बड़प्पन छिपा है। हम उसे जान पाते हैं। वह असल में घर की मालकिन है। उस औरत के पति की कई साल पहले मौत हो गई थी, और उसके तीन बेटे और दो बेटियाँ अब

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৪৩

वह सिक्किम में रहता है, वह अपने घर में अकेला है, ज़मीन से चिपका हुआ है। उसके भाई के बच्चे अब घर और मकान की देखभाल कर रहे हैं। घर के अलावा, उनके पास ज़मीन का एक बड़ा हिस्सा है, लेकिन इन दिनों देखभाल के अभाव में सब कुछ जंगल में बदल रहा है। पहले, जब भारत के साथ करीबी संपर्क था, तो लोग अक्सर इस घर में आते थे, इन दिनों बॉर्डर पोस्ट पर हंगामे के कारण कोई नहीं आता है। उसने आह भरते हुए कहा, "यह सब भगवान की इच्छा है, मुझे नहीं पता कि यह कब तक चलेगा।"

वह हम जैसे पवित्र तीर्थयात्रियों को पाकर बहुत खुश थे, उन्होंने हमारे लिए तीन कमरे खोले। दो बड़े कमरे और एक छोटा। दो कमरे अगल-बगल और एक थोड़ा दूर। लड़के का नाम थांगमे था, वह हमें बाज़ार से लाया था। आँगन में, मैंने देखा कि एक हवन कुंड में बहुत बड़ी कोयले की आग जल रही है। लामा धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़े। इस सर्दी में, आग जैसा कोई दोस्त नहीं है, खासकर जब हमारे हाथ और पैर बर्फ़ की तरह हैं। गुरुजी ने सभी को दो कमरों में ठहराया और मुझे उनके साथ रहने को कहा, जिसकी मुझे उम्मीद थी। सभी लोग आग जलाने के लिए हवन कुंड के पास चले गए थे,

लेकिन मैं गुरुजी के पीछे-पीछे घूम रहा था ताकि उन्हें थोड़ी देर के लिए अकेला पा सकूँ। वह यह समझ गए। अब तक, मैं सिर्फ़ उनकी बातें सुन रहा था लेकिन मेरी तरफ़ से उनसे कुछ नहीं कहा गया। मेरे मन में हज़ारों सवाल उठ रहे हैं, अगर गुरुजी ने मुझ पर थोड़ी भी दया नहीं दिखाई, तो मेरी हालत बहुत मुश्किल हो जाएगी। मुझे कम से कम अपना मन हल्का करने के लिए कुछ तो कहना ही होगा। थांगमे और उसका भाई लोहे की कड़ाही में लकड़ी का कोयला भरकर घर-घर ले जाते थे, जिससे घर पहले से ज़्यादा गर्म हो जाते थे।

मैंने गुरुजी को घर में अकेला पाया। उन्होंने मुझसे कहा, "अब तुम बोल सकते हो।" मेरी साँस फूल गई, "तो मैं क्या बोलूँ?" पहले बॉर्डर की बात करते हैं। मुझे याद है तुमने एक बार मुझसे तिब्बतियों को श्राप देने को कहा था। जब बॉर्डर पोस्ट पर वह गुंडा जैसा इंटरप्रेटर मुझे जाने नहीं दे रहा था, तो मैंने उसके सिर पर रुद्राक्ष की माला पहनाई और गायत्री मंत्र पढ़ा, और वह भाग गया। किस्मत से, यह बात मेरे मन में आई, वरना कौन जानता है क्या होता? मेरी बातें सुनकर गुरुजी थोड़ा मुस्कुराए और फिर बोले,

-यह अच्छी बात है कि आपके 'इडम' ने आपसे नहीं पूछा।

- 'इदम', यह फिर क्या है?

- 'इदं' पूर्व मंत्र है।

- 'ओम मणि पद्मे हुम्', क्या यह वही नहीं है?

-सिर्फ तिब्बती लोग ही मंत्र जानते हैं, यह कोई सीक्रेट मंत्र नहीं है। 'इद'स्ता' एक सीक्रेट मंत्र है।

88

महातीर्थ का अंतिम यात्री

गुरु और शिष्य के अलावा कोई नहीं जानता। हिंदू धर्म में, उदाहरण के लिए, 'ओम नारायण, ओम नमः शिवाय, सोहम', इसी तरह के मंत्र तिब्बती बौद्धों में भी पाए जाते हैं।

-तिब्बती लोग महाकाल को देवता मानते हैं। या तारा, भुवनेश्वरी वगैरह सभी तांत्रिक देवताओं के नाम को 'इदं' या मुख्य मंत्र माना जा सकता है?

-आप सही कह रहे हैं। जब आप खतरे में हों तो यही मुख्य मंत्र है।

-गुरुजी, चलो कुछ और बात करते हैं। सब लोग आपको गेशे रेप्टेन कहते हैं, लेकिन मैं आपको गुरुजी कहता हूँ, आपको कोई दिक्कत तो नहीं है?

-ठीक है, जो भी आपको पसंद हो।

-एक और रिक्वेस्ट गुरुजी। आप समझते हैं कि हर किसी को इस तरह की तीर्थ यात्रा दो बार नहीं मिलती, इसलिए जब आप दूसरे लामाओं से बात करेंगे, तो अगर आप हिंदी में नेपाली मिला देंगे, तो मेरे लिए समझना बहुत आसान हो जाएगा। वे सभी नेपाली समझते हैं, उनमें से कई की मातृभाषा नेपाली है, और वे सभी जानते हैं कि मैं असल में भारतीय हूँ; क्योंकि उन्होंने मुझे इतने लंबे समय तक बर्दाश्त किया है, तो निश्चित रूप से उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी।

मेरे कहने पर गुरुजी ने कहा, "मैं तुम्हारी बात रखने की कोशिश करूँगा, लेकिन जब हम एक ही कमरे में होंगे, तभी तुम बोलोगे, नहीं तो तुम हमेशा चुप रहोगे, इससे यात्रा में ही फ़ायदा होगा।"

जब कुछ और ज़रूरी बातचीत चल रही थी, तो सीढ़ियों पर भारी कदमों की आवाज़ सुनकर हम रुक गए। गुरुजी ने हमें भरोसा दिलाया कि अगर चुपचाप शिष्य गुरुजी से बात कर रहे हैं, तो इसमें कोई बुराई नहीं है, और अगर कोई सुन ले तो इसमें कुछ भी गलत नहीं है। दरवाज़ा खुला और बुज़ुर्ग महिला एक लड़की के साथ अंदर आई। उन दोनों ने फिर से हमें प्रणाम किया, फिर दरवाज़े के पास घुटनों के बल बैठकर तिब्बती में कुछ कहा। गुरुजी ने यह सुना और जवाब दिया। मेरी तरफ़ देखते हुए, गुरुजी ने कहा, “यह लड़की थंगम की बहन है, उस महिला की भतीजी है। वह चाहती है कि गुरुजी उसे पूरे दिल से आशीर्वाद दें, ताकि वह खुश रहे। इससे अच्छी कोई लड़की नहीं है, ताकि वह जल्द ही अपने पति के घर में जा सके।” गुरुजी ने उसे आशीर्वाद दिया। वे दोनों फिर से प्रणाम करके चले गए। लड़की देखने में सुंदर थी, उसका चेहरा बहुत आकर्षक था। खासकर उसके गाल लाल और भरे हुए थे। मैंने गुरुजी से पूछा कि उनकी उम्र कितनी है। उन्होंने जवाब दिया, “भगवान जाने, वह चौदह या चौबीस साल के होंगे, मुझे उन्हें ठीक से देखने का मौका नहीं मिला।” गुरुजी ने कहा, "चलो नीचे चलते हैं और देखते हैं कि वे क्या बना रहे हैं। तुम्हें उनके खाने के बारे में कुछ जानना होगा।" मैंने गुरुजी से कहा कि पिछली बार मैंने जो चांग खाया था, वह बहुत अच्छा था। उन्होंने जवाब दिया,

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৪৫

उन्होंने कहा, "तिब्बत में, चांग हर शहर में अलग-अलग तरह से बनता है, लेकिन तुक्खा, मक्खन, चाय और बीयर हर जगह एक जैसे ही होते हैं।"

हमारे साथी लामा बहुत कम बात करते हैं, मुझे लगता है यही उनकी सीख है। जब भी मैं उनसे नज़रें मिलाता हूँ तो वे मुस्कुराते हैं। कोई मुझसे सवाल नहीं करता। और उनके बीच भी ऐसा ही है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि उनके पास पूछने के लिए कुछ नहीं है। गुरुजी के प्रति उनके मन में बहुत इज़्ज़त और विश्वास है। गुरुजी जो भी कहते हैं, वही उनका सवाल लगता है। जब वे हाँफ रहे होते हैं, तब भी कोई बैठना नहीं चाहता, जब उन्हें भूख लगती है, तब भी वे एक शब्द नहीं बोलते, और अगर वे रास्ते में सो भी जाते हैं, तो भी उनके मुँह से "तो" शब्द नहीं निकलता। शायद यही उनका लामा व्रत है। मैं उनके लिए बस एक पैगंबर हूँ। मैं उम्र या अनुभव में उनसे कम हूँ।

गुरुजी और मैं उनोन के पास उनके पास आ गए। गुरुजी ने उन्हें इस जगह की कहानी सुनानी शुरू की।

थांगमे और उसका भाई खाना बना रहे हैं, और कभी-कभी उसकी बहन और बूढ़ी औरत सामान पहुंचा रही हैं। तिब्बत आने के बाद यह हमारा पहला खुशी का दिन है।

यहाँ केरोसीन महंगा है, इसलिए जब तक चूल्हे में लकड़ी जल रही है, आग जलाने का सवाल ही नहीं उठता। खाना बन गया, तिब्बती खाना तैयार है। गुरुजी ने कहा, इसे थुक्का कहते हैं। कुछ आलू गरम पानी में काटे गए, फिर जब आलू लगभग गल गए, तो सेऊ जैसे आटे की लंबी डंडियाँ डाली गईं, और थोड़ी देर बाद, उसमें मटन के सूखे, बहुत छोटे टुकड़े डाले गए। इसे थोड़ी देर उबाला गया, और जब अच्छी खुशबू आने लगी, तो उसमें मक्खन, नमक, थोड़ी हल्दी और कुछ तेज पत्ते डाले गए। अंग्रेजी के हिसाब से,

इसे स्टू कह सकते हैं। इसकी महक से मुझे भूख लग गई, मुझे लगा जैसे मैंने बहुत समय से कुछ नहीं खाया, मेरा जी मिचला रहा था - तो मैंने गुरुजी से, बेशक धीरे से पूछा - अगर इसमें हमें मीट दिया जा रहा है तो हम इसे कैसे खा सकते हैं? गुरुजी ने कहा - तिब्बती लामा शाकाहारी नहीं होते, वे सब कुछ खाते हैं। फिर वह सबको बताने लगे कि तिब्बती धार्मिक या अच्छे लोग मीट खाते हैं, लेकिन वे कभी अपने हाथों से जानवरों को नहीं मारते। तिब्बत में, भारत की तरह, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जैसा कोई जाति सिस्टम नहीं है। किसी भी परिवार का कोई भी व्यक्ति या बच्चा लामा बनने के लायक है। हालांकि, यहां सिर्फ़ लोहार ही निचली जाति के हैं, क्योंकि वे जानवरों को मारने के लिए हथियार बनाते हैं। तिब्बत में मुसलमानों की संख्या बहुत कम है, वे ही आमतौर पर कसाई का काम करते हैं। और उनकी गैर-मौजूदगी में कोई भी व्यक्ति यह काम करता है। अगर कोई बौद्ध धर्म का अनुयायी है, तो उसे साल में एक बार जानवरों को मारने के लिए प्रायश्चित करना पड़ता है। या भगवान के नाम पर एक बकरा या भेड़ छोड़ी जाती है - जो मुक्ति का प्रतीक है। ऐसी भेड़ या बकरी के सींगों पर एक लाल रिबन बांधा जाता है, और कोई उसे नहीं पकड़ता। गुरुजी के भाषण के बीच में, थंगम की बहन आई और उसने सबको बताया।

৪৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उन्होंने हमसे खाने के लिए तैयार होने को कहा। हम घर गए और हममें से हर एक ने अपनी प्लेट और कटोरी ली और खाने के लिए तैयार हो गए। असल में, भारत छोड़ने के बाद यह पहली बार था जब हम ठीक से बैठे थे और हमें खाना मिल रहा था। सामूहिक प्रार्थना के बाद, हमने खाना शुरू किया।

ओह, कितना बढ़िया! इसका नाम थुक्का है, बहुत ही सिंपल तरीके से बनाया जाता है लेकिन इसका टेस्ट अमृत जैसा होता है। आप इसे जितनी बार चाहें, खा सकते हैं। खाने के बाद, हम अपने-अपने कमरों में चले गए। कमरे के बीच में एक कढ़ाई में कोयले की आग जल रही थी। इसलिए कमरा भी काफी गर्म हो गया था। बस कंबल का इंतज़ार था। हमने थंगम की बूढ़ी चाची को उनकी मेहमाननवाज़ी के लिए धन्यवाद दिया और सोने चले गए।

अगले दिन हम काफी देर से उठे, अगर सब लोग अच्छे से आराम कर लें तो सफ़र आसान हो जाएगा, इसलिए गुरुजी ने किसी को नहीं बुलाया। - शायद सुबह नौ बजे तक हमने एक-एक करके अपने कंबल उतार दिए। हम झरने के पानी को छूने की सोच भी नहीं सकते थे, बहुत ठंड थी, बर्फ़ पिघल चुकी थी और बस कुछ सौ मीटर ही नीचे आए थे। मैं अपने साथ कुछ पुराने अख़बार लाया था, और उससे काम चल गया, और लामा आमतौर पर जंगल के पत्ते इस्तेमाल करते हैं। तिब्बतियों की तरह, हमारे लामाओं को भी अपना चेहरा धोने की ज़रूरत महसूस नहीं होती, लेकिन मैं इस मामले में थोड़ा अलग हूँ। मैं कोयला, टूथपिक, राख, जो भी हाथ लगे, उससे अपना चेहरा धोता हूँ। लगभग एक महीना हो गया है जबसे मैंने नहाया नहीं है, तिब्बती साल में एक या दो बार नहाते हैं, इसलिए मुझे कहना होगा कि मैं उनकी तुलना में बहुत साफ़ हूँ।

सुबह 10:30 बजे तक हम फिर से निकलने के लिए तैयार थे। गुरुजी ने थंगम की चाची को चालीस रुपये दिए। बूढ़ी औरत का चेहरा हंसी से भर गया। वह हमसे बार-बार कहती रहीं कि वापस आते समय उनके घर रुकें। गुरुजी ने उन्हें आशीर्वाद दिया। थंगम, उनके भाई और बहन हमारे साथ मेन रोड तक आए। फिर हमें मजबूरन उन्हें अलविदा कहना पड़ा। सड़क वापस आ गई थी।

यातुंग शहर और डुनकर गोम्पा

करीब दस बजे हमने चुम्बी की आखिरी चाय की दुकान से बटर टी पी। पहले दिन तो हमें यह बिल्कुल पसंद नहीं आई, लेकिन अब यह बुरी नहीं लगती। तिब्बती चाय हमारे देश की पाउडर या पत्ती वाली चाय जैसी नहीं होती; चाय की पत्तियों या नई टहनियों को पीसकर सख्त ईंट का आकार दिया जाता है। फिर ज़रूरत के हिसाब से इसे तोड़कर चाय बनाई जाती है, जिसे टी ब्रिक्स कहते हैं। इसे ले जाना आसान होता है, मुझे लगता है कि यह चीनी रिवाज है। चाय सिर्फ कहने से नहीं बनती, वे इसे पहले से बनाते हैं। चाय गर्म पानी में उबल रही होती है, और उस गर्म चाय के पानी में एक लंबे बर्तन में बटर मिलाने में करीब आधा घंटा लगता है। जब गर्म पानी में चाय की पत्तियों का कोई स्वाद नहीं रहता, तो चाय की पत्तियां, यानी चाय का जमा हुआ हिस्सा, बिना बदले उसके ऊपर डाल दिया जाता है। इन पुरानी पत्तियों का पानी हफ्ते में सिर्फ एक बार बदला जाता है। पहले मुझे लगा था कि सम्पा चाय है, लेकिन अब मुझे लगता है कि सम्पा को एक तरह का छट्टू भी कहा जा सकता है।

बहुत दिनों बाद, हमने अच्छे से खाना खाया और सोया है, और अब सब नए जोश के साथ आगे बढ़ रहे हैं। हमारे सामने का नज़ारा बहुत सुंदर है। सामने, हम बर्फ़ से ढके पहाड़ों की चोटियाँ देख सकते हैं, और हमारे पीछे, ऐसा लगता है कि कंचनजंगा हमें कुछ सुरक्षा देने के लिए झाँक रही है। पहाड़ी नदी अब और भी सुंदर दिखने लगी है, उसके दोनों किनारे छोटे-छोटे जंगली फूलों से भरे हैं, छोटे बच्चे वहाँ जंगली फल तोड़ रहे हैं और हमें देखकर रुककर देखने लगते हैं। ऐसा लगता है कि उन्हें एक साथ इतने सारे लामा देखने की आदत नहीं है। सूरज धीरे-धीरे हमारे सिर के ऊपर उग रहा है, और ऐसी हवा में चलना मुश्किल नहीं है। कभी-कभी, हमें पैदल चलने वाले लोग मिलते हैं। जब वे हमारे पास आते हैं, तो वे या तो अपनी जीभ निकालते हैं या सम्मान में सिर झुकाते हैं। हमने आज सुबह से कोई चीनी सैनिक नहीं देखा है। मेरे सामान के ऊपर एक्स्ट्रा

माल छोटी रसीली जलाने की लकड़ियाँ हैं। सिर्फ़ पाँच किलो, ज़्यादा भारी नहीं, हमने बीच-बीच में आराम किया और आगे बढ़ते रहे। सड़क कोई ऊँचा या नीचा पहाड़ी रास्ता नहीं है। हमने लंच नहीं किया, इसलिए यह कोई प्रॉब्लम नहीं है। गुरुजी कहते हैं कि हम जितना आगे बढ़ेंगे, उतना अच्छा होगा, और हम सप्लाई पर जितना कम खर्च करेंगे, हमें भविष्य में उतना ही ज़्यादा फ़ायदा होगा।

৪৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

दोपहर में, हमें यातुंग नाम का एक कस्बा मिला। कस्बे में घुसने से ठीक पहले, हमें एक सुंदर पुल मिला। जैसे ही हमने उसे पार किया, बाईं ओर एक बड़ा मिलिट्री कैंप दिखाई दिया, और हम बता सकते थे कि वे चीनी सैनिक थे। यहाँ एक चेक-पोस्ट भी है, और जब हमने उन्हें अपने कागज़ दिखाए तो उन्होंने कोई हंगामा नहीं किया। यातुंग एक सुंदर कस्बा है। सुंदर से मेरा मतलब है कि अब तक हम जितने भी कस्बों से गुज़रे हैं, उनमें से ऐसा लगता है कि यह अकेला ऐसा कस्बा है जिसे छोटा कस्बा माना जा सकता है। अब तक, हमने कोई कार नहीं देखी है, और सड़क पर किसी कार से टकराने का कोई डर नहीं है।

जैसे चुम्बी बहुत पुराना, गरीब गाँव लगता था, यातुंग में वैसी फीलिंग नहीं थी। यहाँ हर कोई बिज़ी है, ऐसा लगता है कि इस शहर में खरीदना-बेचना बुरा नहीं है। गधे और घोड़े सामान से लदे हुए हैं, दुकानें भी लोगों से भरी हैं, कई लोग हमें देखकर आगे आकर उन्हें सलाम करते हैं, तीर्थयात्रियों के दर्शन और प्रणाम करने का बहुत पुण्य है। हमें मजबूरन रुकना पड़ा; गुरुजी के ठीक सामने एक तिब्बती परिवार ऊनी मोज़े और टोपी बेचने का ऑफर लेकर आया था। हमारे पैरों की

तरफ इशारा करते हुए वे हमें बताते रहे कि यहाँ ऊन बहुत सस्ती है। अगर हमें ठंड से बचना है तो उनसे खरीदना बेहतर है क्योंकि हममें से किसी के पास ठंड के लिए सही मोज़े नहीं हैं।

गुरुजी ने उनसे बचने की पूरी कोशिश की, लेकिन वे हिल नहीं पा रहे थे, इसलिए उन्होंने दूसरे लामाओं से पूछा कि क्या वे मोज़े खरीदने को तैयार होंगे। हालांकि कुछ असहमति थी, आखिर में सब मान गए। यह सच था, यानी, सबको ठंड से बहुत तकलीफ़ हो रही थी। हम सात लामाओं के पैरों में सिर्फ़ कपड़े के जूते थे। तिब्बती परिवार घूम रहा था। उन्होंने पूरी सर्दी मोज़े, कंबल, स्वेटर, टोपी वगैरह बुने और गर्मियों में उन्हें बेचा, शुद्ध ऊन, इसमें कोई शक नहीं। भेड़ के बालों से सीधे धागा काटा जाता है और उससे हाथ से काता हुआ ऊन बनाया जाता है। वह आदमी एक तीर से दो निशाने लगाना चाहता था जब उसे कोई तीर्थयात्री मिल गया। वह उन्हें बहुत कम कीमत पर बेचेगा, जिससे बिज़नेस बढ़ेगा और साथ ही उसे पुण्य भी मिलेगा। वह बहुत विनम्रता से मुस्कुराया और कहा, "अगर मैं अमीर होता, तो मैं तुम्हें ये तोहफ़े में देता।"

मुझे पानी के दाम पर प्योर तिब्बती ऊनी फुल-साइज़ मोज़ों के बत्तीस जोड़े मिले, और उनकी कीमत सिर्फ़ दस टका थी। लामा उन्हें इतने सस्ते में नहीं खरीदना चाहते, कोई भी उन्हें सिंपल लेकर धोखा नहीं देना चाहता। लेकिन खानाबदोश पहले की तरह मुस्कुराया और बोला, "नहीं, मुझे इससे ज़्यादा कुछ नहीं चाहिए। आप सभी तीर्थयात्री हैं, लामा, और आप मेरे मोज़े पहनकर सभी तीर्थ स्थलों पर जाएँगे। यह मेरी बड़ी खुशकिस्मती है! आप जानते हैं कि इन दिनों तीर्थयात्रियों की संख्या बहुत कम है।" हमने उसे दो टका और दिए और दिल से आशीर्वाद दिया और फिर से चलने लगे।

यातुंग में घर, दुकानें, बाज़ार, सब कुछ ऐसा लगता है जैसे बढ़ रहा है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৪৯

शहर में, कई नए लकड़ी के घर भी ध्यान देने लायक हैं। यहाँ की दुकानें भारतीय सामान से सजी हुई हैं। टॉर्च और बैटरी, नोटबुक, पेंसिल, स्लेट, एल्युमीनियम के सामान, तौलिए, कपड़ों के निशान बताते हैं कि वे भारत से आए हैं। गंगटोक या सिलीगुड़ी, यानी भारत, उनका मुख्य बिज़नेस मार्केट है। मैंने यहाँ कई तिब्बतियों को बहुत अच्छे और साफ़ कपड़े पहने देखा। सड़क के किनारे नौजवानों के साथ, मैंने कई जवान लड़कियों को भी देखा, वे भी काफी सभ्य और पढ़ी-लिखी लग रही थीं। तिब्बत में, सारी पढ़ाई गुफाओं या मठों के कंट्रोल में होती है। अगर आप सही पढ़ाई करना चाहते हैं, तो साधु बनना बेहतर है। कई घर अच्छी तरह से सजे हुए हैं, और फूलों के बगीचे भी ध्यान खींचते हैं। ल्हासा के रास्ते में यातुंग, भारत और तिब्बत का पहला बिज़नेस मार्केट लग रहा था। हम लगातार उत्तर की ओर बढ़ रहे थे।

गुरुजी ने हमें एक स्तूप के पास रुकने को कहा और रात में रुकने के लिए जगह देखने चले गए। यातुंग में एक पुलिस स्टेशन और टैक्स ऑफिस भी है। गुरुजी वापस आए और बोले, "यहां रात में रुकने में कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन कोई भी सबके लिए एक जगह रुकने का इंतज़ाम नहीं कर सकता। दो-चार लोगों के लिए कोई दिक्कत नहीं थी, लेकिन यहां बत्तीस लोगों के लिए कोई होटल या सराय नहीं है।" लेकिन कोई भी लामा गुरुजी को जाने देने को तैयार नहीं था। इसलिए हम आगे बढ़ गए। गुरुजी ने कहा,

"थोड़ी दूर एक पुराना मठ है। मैं मठाधीश को जानता हूं। देखते हैं अगर वह वहां रुकते हैं, तो कोई दिक्कत नहीं होगी, और पैसे भी बचेंगे। हम अपने लिए खाना बना सकते हैं।"

हमने सड़क छोड़ी और पहाड़ पर चढ़ना शुरू किया। एक घंटे के अंदर, हम पहाड़ के किनारे एक मठ के पास पहुँचे। गुरुजी ने सबको अपनी ओर खींचा और कहा, "देखो यह कितना सुंदर लग रहा है। इस मठ का नाम डंकर है, जिसका मतलब डंकर गुफा है। अगर भगवान तथागत खुश हुए, तो हम रात वहीं बिताएँगे।" हम आराम करने के लिए एक जगह बैठ गए। फिर गुरुजी ने उस गुफा के बारे में बात करना शुरू किया।

तिब्बत में बौद्ध धर्म की कई ब्रांच हैं, जिनमें से मुख्य गेलुक-पा संप्रदाय है। यह संप्रदाय तिब्बत का मुख्य संप्रदाय है। इस मठ के फाउंडर गोयांग लोबसांग चोडेन थे। इस मठ के मुख्य उपासक एक बिना शरीर वाली आत्मा थी, क्रुलोप इसका लोकल नाम है। यहां, छोटे बच्चों को भविष्य के लामा बनने के लिए एडमिशन दिया जाता है। आइए देखें कि इस मठ में क्या देखने लायक है।

जैसे-जैसे हम पास आए, हमें सबसे पहले एक चैत्य दिखा, जिसका लोकल नाम चोर्टेन है, फिर कुछ और। हमने मणि मंत्र का जाप किया और उनसे आगे बढ़ गए। हमारे सामने एक बहुत बड़ी पत्थर की दीवार थी, वह किसी किले जैसी लग रही थी। हम उसके मेन गेट की तरफ और बढ़े। जैसे ही हम थोड़ा और आगे बढ़े, अचानक हमारा सामना एक बाघ से हुआ, दो कुत्ते भौंकने लगे और हमारा पीछा करने लगे, हम पीछे हटने लगे।

৫০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैंने उनकी बात मान ली। खुशकिस्मती से दोनों कुत्ते बंधे हुए थे, वरना अब तक हमारी हालत बहुत खराब हो जाती। मठ के शेर वाले गेट पर गार्ड की तरह दोनों कुत्तों को लंबी चेन से बांधा गया था। हमें वहाँ ज़्यादा देर तक खड़ा नहीं रहना पड़ा, क्योंकि कुछ ट्रैपस, या नबीश लामा, अंदर से दौड़कर आए और कुत्तों को पकड़ लिया। हमें भी लामा के कपड़े पहने देखकर, उन्होंने आदर से सिर झुकाया और हमारे पास खड़े होकर पूछा - क्या आप अंदर आएंगे?

बिलकुल। हम अंदर गए। यह मठ से ज़्यादा एक किले जैसा था। पहाड़ की ढलानों पर आर्किटेक्चर का एक सुंदर नमूना, इतने लंबे समय के बाद ऐसा लगा जैसे हम किसी असली मठ में पहुँच गए हों। हम अंदर कुछ दूर पहुँच गए थे और खुद को एक आंगन में पाया, जो पैगंबरों के ऑफिस रूम से घिरा हुआ था, जिसके एक कोने में एक ऑफिस था। हमें ऑफिस जाने की ज़रूरत नहीं थी, ऐसा लग रहा था कि किसी मैसेंजर ने पहले ही हमारी खबर वहाँ पहुँचा दी थी। एक बुज़ुर्ग, भारी-भरकम लामा हमारे पास आए, हमें हैरानी से देखा और पूछा - तुम कहाँ से आ रहे हो, कहाँ जा रहे हो?

रूखा सवाल। गुरुजी ने उसे हमारे बारे में संक्षेप में बताया और फिर पूछा - क्या गुरु चू-मिझेन यहाँ हैं? वह मुझे जानते हैं।

-ठीक है, ठीक है, अंदर आ जाओ, गुरुजी गलीगोंग गए हैं। तुम उस तरफ आए हो, उनसे मिले नहीं?

-नहीं, हम उनसे नहीं मिले। गुरुजी उनके साथ काम से आए थे। सच कहूँ तो, क्या आज इन बत्तीस लोगों के साथ यहाँ रहना ठीक रहेगा? वह सज्जन इस सवाल का जवाब नहीं दे पाए, क्योंकि गुरु चू-मिजेन इस जगह के मठाधीश हैं, इसलिए उनकी गैरमौजूदगी में कोई इस मामले पर फैसला नहीं कर

सकता। ठीक है, हम उनके आने तक इंतज़ार कर रहे हैं। हमने अपने कंधे पर रखे बैग ऑफिस में छोड़ दिए और मठ को अच्छी तरह देखने के लिए हल्के- फुल्के अंदाज में घूमे। मैं गुरुजी के साथ रहा। हम एक बहुत बड़े चोर्टेन के पास पहुँचे और खड़े हो गए। गुरुजी ने कहा, -इसका काम ध्यान से देखो। मैंने वाकई बहुत सारी बेहतरीन कला, स्तूप देखे हैं! मैंने पहले कभी इतनी सुंदर रंगीन कारीगरी नहीं देखी। मैंने इसके चारों ओर देखना शुरू किया, इस पर अनगिनत रत्न मंत्र खुदे हुए हैं। छोटे, बड़े और मीडियम साइज़ के अलावा, कलाकार ने हर अक्षर पर अपनी खासियतें भी उकेरी हैं, 'ओ मणि पद्मे हुम्'। मैंने गुरुजी से पूछा, "मैं गंगटोक से यहां तक के रास्ते में कई चोर्टेन (स्तूप या चैत्य) से गुज़रा हूं, खासकर तिब्बत में आने के बाद से, मैंने चोर्टेन की भरमार देखी है। क्या आप मुझे इसका असली मतलब बता सकते हैं?"

मेरी बातें सुनकर उन्होंने थोड़ा सिर हिलाया और फिर कहा, "चोर्टेन का मतलब बड़ा है। अलग-अलग लोग और समुदाय इसका अलग-अलग मतलब निकालते हैं, लेकिन इसका बेसिक मतलब है…

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৫১

वही। चोर्टेन हमारी भौतिक दुनिया का प्रतीक है। इसलिए जब कोई महान या पवित्र व्यक्ति गुज़र जाता है, तो यह चोर्टेन बनाया जाता है और उसे श्रद्धांजलि दी जाती है। आपने भारत में ऐसे स्तूप देखे होंगे। चोर्टेन अक्सर समाधि की वेदी जैसा होता है, जब आपको कोई चोर्टेन मिले, तो उसे बाईं ओर छोड़ दें और आगे बढ़ें, उसका पूरा सम्मान करें। चोर्टेन धर्म का प्रतीक है, संघ का प्रतीक है, बुद्ध का प्रतीक है।
चोर्टेन कैसे भी बनाया जाए, उसे कभी नज़रअंदाज़ न करें। चोर्टेन

खुश हैं। वह हमें किचन में ले गए, बड़े-बड़े बर्तन दिखाए और कहा कि तुम लोग इन्हें खाना पकाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हो, जलाने की लकड़ी पूरी तरह तैयार है। फिर उन्होंने हमें 'जुंगका' से मिलवाया और कहा कि वह तुम्हारी मदद करेंगे। चलो अब चलते हैं *गुम्फा या गोम्पा, एक ही मतलब।

৫২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

चलो मंदिर चलते हैं, आज रात तुम वहाँ ध्यान कर सकते हो। हम घुमावदार तंग गलियों से होते हुए एक और बड़े घर के सामने पहुँचे। तूफ़ानी रोशनी में, मुझे लकड़ी का दरवाज़ा ठीक से काम करता हुआ नहीं दिख रहा था। हम अंदर गए। तिब्बत में किसी भी बौद्ध मंदिर में अंदर जाने के लिए आपको अपने जूते उतारने की ज़रूरत नहीं है, मुझे लगता है ऐसा इसलिए है क्योंकि वहाँ बहुत ठंड होती है। उनके सामने, घी के दीयों की लाइनें जल रही हैं, और उनकी रोशनी में, अवलोकितेश्वर की एक बड़ी, शांत मूर्ति दिखाई दे रही है। यह मूर्ति उनके मुख्य देवता हैं। चार हाथ, जिनमें नीचे के दो हाथ दान दे रहे हैं और ऊपर के दो हाथों में वज्र और कमल है। अवलोकितेश्वर की बाईं और दाईं ओर और भी कई मूर्तियाँ हैं। मैंने उसके बगल में बड़ी शेल्फ़ देखीं। वे सभी बड़ी किताबों से भरी हुई थीं, हर किताब लकड़ी के तख्ते से बनी थी जिसके ऊपर और नीचे एक-एक था और सामने एक रंगीन कपड़े का पर्दा था, शायद दीयों की स्याही से बचाने के लिए। इन किताबों ने मेरा ध्यान खींचा, इसलिए मैं उनकी ओर बढ़ा। जैसे ही मैंने हाथ से किताबों को छूने की कोशिश की, मठाधीश मेरी तरफ आए, वे धीरे से मुस्कुराए और तिब्बती में कुछ पूछा - मैं उन्हें घूरता रहा, समझ नहीं पाया। इस बार उन्होंने मेरी तरफ देखा और साफ हिंदी में पूछा, "तुम्हारी धार का अमी हो?"

किसी और समय होता तो मैं मौनी बाबा होने का नाटक करता, लेकिन यहां के इस पवित्र माहौल में, मैंने वह झूठ नहीं बोला, मैंने यह चीनी सैनिकों के लिए छोड़ दिया। मैंने जवाब दिया - कलकत्ता। वे खुश हुए, मैं गेशे रेप्टेन की तरफ मुड़ा और कहा - उनसे पूछो, वे मेरे बारे में सब कुछ जानते हैं।

मेरी बातें सुनकर गेशे रेप्टेन चू-मिज़ेन ने बहुत धीरे से और फुसफुसाते हुए मेरा परिचय कराया। मठाधीश मुझसे मिलकर बहुत खुश हुए और कहा, "छोटी उम्र में तीर्थ यात्रा करना बेहतर होता है, वह अनुभव बाद की ज़िंदगी में बहुत काम आता है, खासकर गेशे रेप्टेन जैसे बुद्धिमान व्यक्ति का साथ बहुत कम मिलता है।" आप जानते हैं, गेशे रेप्टेन और मैं चार साल तक लद्दाख में साथ थे। मैं अपने पिछले सवाल पर वापस आया। मैंने पूछा, "क्या ये किताबें महायान धर्मग्रंथों पर कमेंट्री हैं?"

चू-मिझेन ने जवाब दिया, "नहीं, रुको, मैं तुम्हें दिखाता हूँ।" यह कहकर उसने अपने बगल वाली शेल्फ से दोनों हाथों से एक बड़ी किताब निकाली। किताब को एक बोर्ड पर रखकर वह मुझे समझाने लगा। किताब का साइज़ बहुत बड़ा था, ढाई फ़ीट लंबा और दो फ़ीट चौड़ा। उसने किताब को आदर से झुकाया और मुझसे कहा, "यह हमारा तिब्बती उपनिषद है, हमारा पवित्र ग्रंथ है। बुद्ध की नैतिकता, यह किताब एक भारतीय संस्कृत किताब, जिसे कांग्यूर कहते हैं, से ट्रांसलेट की गई है। ऐसी किताबें आपको बड़ी गुफाओं के अलावा कहीं नहीं मिलेंगी। जैसा कि आप देख सकते हैं, चारों ओर की दीवारें किताबों से भरी हैं। हर खोप का नंबर लिखा है, ये सौ हैं।"

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৫৩

आठ (108) किताबों से बना एक कांग्युर। यानी, एक कांग्युर के 108 हिस्से, हर हिस्से से एक किताब। भारी, हाथ से छपी किताबों को देखकर मैं हैरान रह गया और पूछा, "इन्हें एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए आप क्या करते हैं?"

जवाब में, वह धीरे से मुस्कुराया और बोला, "यह एक प्रॉब्लम है।" ऐसी चार किताबें एक गधे के दोनों तरफ दो-दो करके लटका दी जाती हैं, और फिर गधे को लामा या ट्रैपा खींचता है। रास्ते में सावधान रहना चाहिए ताकि किताबों पर किसी की बुरी नज़र न पड़े।

-क्या ये किताबें छोटे लामा पढ़ सकते हैं?

-नहीं, इसके लिए हमें सही तैयारी की ज़रूरत है। मठ में पंद्रह से सोलह साल रहने के बाद, हम धीरे-धीरे उन्हें तांगिउर की आसान कमेंट्री समझाते हैं।

-तंगीउर? यह फिर क्या है?

-तांग्युर, कांग्युर का आसान मतलब है, जो तिब्बती में भी लिखा गया है। आओ, मैं तुम्हें अगला कमरा दिखाता हूँ। हम सब उसके पीछे-पीछे अगले कमरे में गए, उसने दो घी के दीये जलाए और हमसे आस-पास देखने को कहा। जैसा उसने कहा, हमने आस-पास देखा, एक बड़ा लकड़ी का कमरा जिसकी दीवारें किताबों से भरी थीं। चू-मिज़ेन ने फिर शुरू किया,

- इस कमरे में जो भी किताबें आप देख रहे हैं, वे सभी तंगीउर की हैं। यह कमरा खास तौर पर इन किताबों को रखने के लिए बनाया गया था। 225

तंगीउर की गिनती करें, तो 225 खोप हैं। छोटे लामा या भिक्षुओं को इन किताबों को छूने की इजाज़त नहीं है। किताबों के ऊपर और नीचे लकड़ी के कवर हैं और हर पेज अलग है, पन्नों के बीच कोई नंबर नहीं दिया गया है। एक के बाद एक रखी हुई, जो लोग इन किताबों को पढ़ने आते हैं, वे इन्हें पूरे सम्मान, ध्यान और देखभाल के साथ इस्तेमाल करते हैं। चू- मिज़ेन ने मेरी तरफ देखा और कहा - यह रामायण और महाभारत से कहीं ज़्यादा मुश्किल है।

दोनों गुरुजी हमें मुख्य मंदिर में छोड़कर बाहर चले गए। शांति और सुरक्षा का भरोसा मिलने के बाद, हम वहीं चटाई पर ध्यान करने बैठ गए।

अगली सुबह, हम उनके साथ हो लिए। गुफा में रहने वाले कोई भी लोग सुबह खाना नहीं खाते। वे दिन में सिर्फ़ दो बार खाते हैं। पहला खाना दोपहर में और दूसरा शाम से पहले।

गुरु चू-मिनझेन हमें दर्शन के लिए दूसरे मंदिर में ले गए, दूसरा मंदिर पहले मंदिर से ज़्यादा शानदार लगा। ऐसा लगता है कि यह मंदिर पहाड़ की दीवार काटकर बनाया गया था। बहुत सारी मूर्तियाँ, धर्मराज, यवजुम और कई तरह की आसुरी मूर्तियाँ। हालाँकि सुबह हो चुकी थी, लेकिन दिन की रोशनी अंदर नहीं आ रही थी, वहाँ सिर्फ़ एक दरवाज़ा था और कोई खिड़कियाँ नहीं थीं। तीसरा मंदिर

৫৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

देवी-देवताओं से भरे हुए, ऐसा लगता है कि उन्हें एक ही जगह इकट्ठा किया गया है, सभी मंदिर कई रंगीन टैंकों से सजाए गए हैं, यानी कपड़े

पर अलग-अलग रंग के यंत्र, मंडल, बुद्ध की मूर्तियां और जन्म, मृत्यु और बुढ़ापे के निशान। इन मंदिरों में सोने के दीयों का काम भी देखने लायक है, मंदिर की बनावट इस तरह से बनाई गई है कि बिना किसी के साथ जाए वहां अकेले जाना मुश्किल है।

उसी समय, डिनर के लिए घंटी बजी। हमारे पास लौटने के अलावा कोई चारा नहीं था। आज हम स्टूडेंट्स के साथ बुलाए गए मेहमान थे, और गुरु चू- मिनझेन को हमसे कुछ नहीं चाहिए था। उन्होंने कहा, "वहाँ आने की इच्छा और कुबेर की कृपा से, उनके भंडार में कोई कमी नहीं है। अगर तीर्थयात्री वहाँ एक बार खाना खा लें, तो गुफा धन्य हो जाएगी।" हालाँकि वह स्वभाव से थोड़े गंभीर थे, लेकिन उनके मन की उदारता ने हमें प्रभावित किया। हम स्टूडेंट्स के साथ बैठकर खाना खाने लगे। सभी को धन्यवाद देने के बाद, गेशे रेप्टन ने घोषणा की कि हमें डिनर के बाद फिर से निकलना होगा।

रोष

৫৬

खाने-पीने के बाद, हम वादे के मुताबिक निकल पड़े। हमें निकलने में बहुत देर हो गई थी, इसलिए गुरुजी ने सबको चेतावनी दी और कहा, "आज हम जितना हो सके उतना आगे जाएंगे, शायद रात में हमें एक जगह रुककर डिनर बनाना होगा, और फिर खाना खाकर हम फिर से चल पड़ेंगे।" हमारा शरीर पूरी तरह से स्वस्थ है, खासकर गुरु चू-मिझेन की मेहमाननवाज़ी से, हमारे शरीर और दिमाग को पूरी तरह से आराम मिल गया है, इसलिए अब चलने में कोई दिक्कत नहीं है।

हिमालय के खूबसूरत नज़ारों और सूर्यास्त के रंग के आसमान से प्रेरित होकर, हम नए जोश के साथ आगे बढ़ने लगे।

रात को मैंने एक झोपड़ी में रोटी बनाई, जी भरकर नमक के साथ खाई और फिर चल पड़ा। इस बार रास्ता लंबा और कुछ बोरिंग था। तीन-चार बार आराम करने के बाद, सुबह होते-होते फारी हमारे सामने आ गया।

जैसे ही हम शहर में घुसे, हमें एक चाय की दुकान मिली। हमने मालिक को आवाज़ दी। मालिक नहीं उठा, लेकिन उसकी पत्नी, जो एक अधेड़ उम्र की महिला थी, ने हमारी आवाज़ उठाई। जैसे ही हमने दरवाज़ा खोला, हमने अपने सामने एक महान लामा तीर्थयात्री को देखा। सिर्फ़ गुड मॉर्निंग ही नहीं, यह एक बड़ी किस्मत थी। हमें झुककर प्रणाम करते हुए उसने कहा, "आपको क्या चाहिए?" "चाय।" कहने की ज़रूरत नहीं, इतनी सुबह-सुबह कोई चाय की दुकान पर सरवत पीने आता है क्या?” उस औरत ने हमें इंतज़ार

करने को कहा और अपने पति को धक्का देकर दूर कर दिया। कोई रास्ता नहीं था, इतने सारे कस्टमर्स की प्रॉब्लम अकेले नहीं संभाली जा सकती थी। हैरानी की बात है, थोड़ी देर में एक-एक करके तीन लोग घर से बाहर निकले। गुरुजी ने अपना चेहरा मेरे कान के पास किया और कहा, “शायद ये तीन भाई हैं, और तीनों भाइयों की पत्नी एक ही है।” मैंने हैरानी से गुरुजी की तरफ देखा, वे मेरे हाव-भाव समझ गए और बोले, “इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है, ऐसे परिवार तिब्बत में अक्सर देखने को मिलते हैं, जैसे महाभारत में पंचपांडवों की सिर्फ़ एक पत्नी थी - द्रौपदी।” सबसे बड़ा भाई पहले शादी करता है, और फिर, अगर भाइयों में कोई पॉसिबिलिटी होती है, तो दूसरे भाई भी उसे अपनी पत्नी मान लेते हैं। हालांकि, सबसे बड़े भाई के दावे और हक़ हमेशा पहले आते हैं।

चाय और गरम पानी के बाद हम चावल के कुछ निवाले के साथ तैयार हुए। हम सब की फिजिकल कंडीशन सबसे खराब थी। नींद और

महातीर्थ का अंतिम यात्री

दोनों के लिए आराम ज़रूरी है। गुरुजी ने हमें भरोसा दिलाया और कहा, "हम उस गुफा में जाएंगे जो अभी दिख रही है। हम सुबह वहीं बिताएंगे और फिर दोपहर में फिर से निकलेंगे।"

हमने गुफाओं से लटके झंडों की लाइनें देखीं, ये बड़े-बड़े बांस या लकड़ी के डंडे थे जिनसे कोई बच नहीं सकता। ये तिब्बत की किसी भी गुफा के गाइड हैं। प्रार्थनाएँ कपड़े के छोटे-छोटे टुकड़ों पर लिखी होती हैं और रस्सियों से बहुत ऊपर लटकाई जाती हैं, बिल्कुल कोलकाता में पूजा के त्योहार की कागज़ की जंजीरों की तरह। इन्हें जितना ऊपर लटकाया जाएगा, भक्त की प्रार्थना उतनी ही ज़्यादा भगवान तक पहुँचेगी। बहुत से लोग सोचते हैं कि हवा प्रार्थना को खुद बुद्ध तक

किसी भी चीनी या सैनिक से दूर रहना बेहतर है।" उनकी बातें सुनकर सब एक-एक करके चले गए। मैं गुरुजी के साथ ही रहा।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৫৭

जब सब चले गए, तो गुरुजी ने गुफा के बूढ़े लामा से फिर सलाह लेना शुरू किया। इन दिनों मैं कुछ तिब्बती शब्द सीखने की कोशिश कर रहा हूँ, और अगर मुझे एक-दो शब्द मिल जाते हैं, तो मैं मंत्र की जगह उनका जाप करने लगता हूँ। मैं उन्हें बहुत ध्यान से सुनने की कोशिश करता हूँ। मेरे अलावा, ग्रुप में सभी को थोड़ी-बहुत तिब्बती आती है। गुरुजी ने बूढ़े लामा से बहुत देर तक सलाह की और तय किया कि हम दो बार के खाने के लिए कुल दस टका देंगे, और हम उन्हें तोहफ़े में थोड़ा नमक भी देंगे। गुफा हमें दो बार झोला साम्पा देगी। बाद में, मैंने गुरुजी से कहा कि बत्तीस लोगों के लिए सिर्फ़ दस टका सच में बहुत सस्ता है। गुरुजी ने मुझे डाँटते हुए रोका और कहा, "बिल्कुल नहीं, दस टका बहुत है।" साम्पा का मतलब है आटा और थोड़ा सूखा मांस यहाँ जौ के पानी में मिला हुआ, इस इलाके में जौ उगाया जाता है, इसलिए यह बहुत सस्ता है।

फिर हम शहर देखने निकले। गुफा से निकलकर, हमने दाईं ओर एक सड़क ली और शहर की ओर चल पड़े। एक नज़र में, आप बता सकते हैं कि यह इस इलाके का सबसे बड़ा शहर है। जैसे-जैसे हम तिब्बत के सेंटर की ओर बढ़ते हैं, गाँव धीरे-धीरे बड़े होते जाते हैं। ऐसा लगता है कि यह शहर बहुत बड़ा है, घर घाटी में और दूर-दूर तक फैले हुए हैं। हम झिझकते हुए घूमने लगे। पहली बार, मैंने कई घरों के सामने साइनबोर्ड देखे। मैं लिखा हुआ नहीं पढ़ सकता, लेकिन वे बहुत ज़रूरी लग रहे थे। किराने की

दुकानें पहले से बहुत बेहतर हैं। एक दर्जन जवान लड़के एक चाय की दुकान के सामने बातें कर रहे थे, और मैंने कुछ याक से खींची जाने वाली गाड़ियाँ भी देखीं। तिब्बत में घुसते ही मैंने सबसे पहले याक देखे, जो गाय और भैंस के बीच का जानवर है, जो सड़कों पर घूम रहे थे। एक मीट की दुकान के सामने, मैंने कुछ लोगों को एक-दूसरे पर सिक्के फेंकते देखा। इसी शहर में मैंने पहली बार कई जवान लड़कियों को देखा। बाल पीछे बंधे हुए और बाकू पहने हुए, जो एक तरह का लंबा सेमी-ड्रेस होता है। बुज़ुर्ग औरतें और आदमी लगभग एक जैसे कपड़े पहनते हैं। शहर में बहुत चहल-पहल रहती है, बहुत ज़्यादा खरीद-बिक्री होती है। तिब्बती लगभग सभी एक जैसे कपड़े पहनते हैं, उन सभी को भूरा रंग पसंद है। स्कूल का मतलब है मठ, यानी धार्मिक। सभी जवान लड़कों को मठ से कपड़े मिलते हैं, और फिर जब तक वे मठ में रहते हैं, उन्हें खाने-पीने की चिंता नहीं करनी पड़ती। मठ के बाहर कोई स्कूल या पाठशाला नहीं है, इसलिए गार्जियन उन्हें किसी गुफा या मठ में भेजने के लिए मजबूर होते हैं। लड़कियों के लिए भी यही सच है, लेकिन जैसे ही वे बड़ी होती हैं, शादी के प्रपोज़ल आ जाते हैं। इसलिए आमतौर पर जवान नन नहीं दिखतीं। ऐसा लगता है कि तिब्बत में लड़कियों की संख्या कम है, इसीलिए सभी भाई समाज की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए एक ही लड़की से शादी कर लेते हैं।

यहां के लोग फारी को फारी जोंग कहते हैं, जोंग का मतलब है किला। यह शहर फारी किले के चारों ओर बसा हुआ है। इसे पहले एक मठ के चारों ओर बनाया गया था।

৫৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

दुर्ग। यह सिक्किम, भूटान और सिलीगुड़ी के साथ तिब्बत का मुख्य ट्रेडिंग सेंटर है। इसलिए, इंडिया-तिब्बत ट्रेड ऑर्गनाइज़ेशन, जिसे अभी ट्रेड सेंटर कहा जाता है, कई सालों से इस शहर में बना हुआ है। इसीलिए भारत का एक ऑफिशियल रिप्रेजेंटेटिव यहाँ है।

मैंने देखा कि बहुत से लोगों के कपड़े साफ़ थे, लेकिन इसके बावजूद, मेरी कहानी अधूरी रह जाएगी अगर मैं इस शहर के कचरे और कूड़े का ज़िक्र न करूँ, इसलिए मुझे ना चाहते हुए भी इसके बारे में बताना पड़ रहा है।

गुरुजी और मैं फारी शहर के बिल्कुल बीच में घूम रहे थे। हम एक बड़े दो-मंज़िला घर के ठीक नीचे रुके। हमारे दाईं ओर एक छोटी पहाड़ी नदी बहती है। यहाँ का पानी, बान नदी के गंगा में मिलने के ठीक बाद के गंदे पानी से कहीं ज़्यादा साफ़ है। यह जानकारी लिखने से पहले मैंने बहुत सोचा है, और मैंने ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कहा है, जो लोग ल्हासा जाते समय इस फारी से गुज़रे हैं, वे ज़रूर मुझसे सहमत होंगे।

शहर गंदा है, यह सच है। अगर कोई कांकुरगाछी से गंगा तक नहर के किनारे-किनारे चले भी जाए, तो उसे फारी की गंदगी का अंदाज़ा नहीं होगा। शहर में न तो सीवरेज है, न ही कोई पब्लिक टॉयलेट। खेतों और घाटों की कोई कमी नहीं है, हालांकि शहर में रहने वालों के लिए हमेशा उस काम के लिए बाहर जाना मुमकिन नहीं होता, खासकर इमरजेंसी के समय में। यहां के घरों का लुक देखकर ही साफ पता चलता है कि वे अपना कचरा जहां फेंकते हैं, वह जगह किचन की खिड़की या दरवाज़े के बाहर है। खिड़कियों से कचरा फेंकने की वजह से कई घरों की खिड़कियों या दरवाज़ों के सामने कचरे के बड़े-बड़े ढेर लग गए हैं। वे अपने घरों से किसी भी तरह का कचरा अपने घरों के सामने सड़क पर फेंक देते हैं, उन्हें इस बात की कोई ज़रूरत नहीं कि कौन नुकसान या परेशानी पहुंचा

रहा है। सुबह-सुबह लोगों को घरों के सामने, सड़क पर ही राख के ढेर पर बैठे देखा जा सकता है। वे दिन में किसी भी समय वहां बैठने में हिचकिचाते नहीं हैं, और यही बात महिलाओं पर भी लागू होती है। फारी में सिर्फ़ एक चौराहा है, और उस चौराहे के पास एक पोस्ट ऑफिस है। वहाँ ल्हासा और भारत-तिब्बत बॉर्डर पर पेमा पोस्ट ऑफिस से डाक आती है। यह इस इलाके का मेन पोस्ट ऑफिस है जो हफ़्ते में एक बार आता है। पोस्ट ऑफिस के बाईं ओर, सड़क के ठीक बगल में, मैंने एक मचान देखा। यह बच्चों के मचान जैसा था, जो छह या सात छोटे लकड़ी के तख्तों से बना था। मचान के ऊपर एक फटी हुई जूट की बाड़ है। मचान लगभग 9/10 फ़ीट ऊँचा है। मचान के ठीक नीचे, किसी राहगीर को ठोस मल का पहाड़ दिखेगा, और अगर कोई लापरवाही से घूमेगा, तो वह उसमें जल जाएगा।

इसके बावजूद, शहर के लोग बच गए हैं, और भले ही हैजा कई बार वसंत की महामारी बन चुका है, लेकिन यह उन्हें खत्म नहीं कर पाया है। शहर के लोग इसके आदी हो गए हैं। चौराहे के बाद, मैं एक और सड़क पर आया, और मैं खुद को उस सड़क पर पाकर हैरान था;

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৫৯

सड़क के दोनों तरफ़ बहुत ज़्यादा गंदगी है। सालों से घरों से कचरा सड़क पर फेंका जा रहा है, और इस वजह से सड़क धीरे-धीरे ऊँची होती जा रही है। मैंने ग्यारह घर गिने जहाँ अंदर जाने के लिए आपको सड़क से चार सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं।

लेकिन हरी मारे को कौन रखता है? तिब्बत की ठंडी हवा में सब कुछ जल्दी जम जाता है, जिससे बदबू उतनी बुरी नहीं होती जितनी होनी चाहिए।

हमारे सामने बर्फ़ जैसा सफ़ेद चोमलहारी है, जो बेमिसाल सुंदरता की निशानी है, और इसके नीचे दुनिया के सबसे घिनौने शहरों में से एक है। और क्या अलग है?

फारी एक तिब्बती शब्द है। अगर आप इसका बंगाली में अनुवाद करेंगे, तो इसका मतलब होगा "सूअर", नाम से अंदाज़ा लगाते हुए, यह कहना होगा कि इससे ज़्यादा सही नाम हो ही नहीं सकता। गुरुजी इन चीज़ों को नहीं देखते, मेरे कम विकसित पापी मन को शायद यह नरक देखने पर मजबूर होना पड़ा है, सच में दुनिया अजीब है, जहाँ स्वर्ग है, वह नरक जैसा लगता है।

'नमस्कार जी'! अचानक, हिंदी शब्द ने मुझे उस तरफ देखने पर मजबूर कर दिया। हमारे पीछे, एक सज्जन खड़े थे, जिन्होंने अपना पूरा शरीर कंबल में लपेटा हुआ था। उनके चेहरे और कपड़ों को देखकर, मुझे पता चल गया कि वे तिब्बती नहीं थे। गुरुजी ने उनकी तरफ देखा और कहा, 'नमस्कार'। मैं भी हल्के से मुस्कुराया और उनकी तरफ देखा। उस सज्जन ने गुरुजी को अनदेखा किया और मेरी तरफ देखा और साफ हिंदी में पूछा, 'आप बहुत जवान दिखते हैं। क्या आप हिंदुस्तान से आ रहे हैं?'

मैं सोच रहा था कि जवाब दूं या नहीं, लेकिन गुरुजी ने मुझे जवाब दिया
- हम नेपाल से आ रहे हैं, यह लड़का मेरा शिष्य है।

-ओह! तो बताओ, मुझे लगा कि वह हिंदुस्तानी है। तो फिर तुम कहाँ जा रहे हो? उस सज्जन ने बातचीत शुरू की।

-हम तीर्थ यात्रा पर जा रहे हैं।

-आप कहां जा रहे हैं?

-भगवान ही जानते हैं, अभी के लिए, ज्ञान के मार्ग पर।

-आप भाग्यशाली हैं, आपको नेपाली होने के कारण अनुमति मिल गयी, आजकल ऐसा लगता है कि भारतीय संतों ने आना बंद कर दिया है।

अब गुरुजी ने उससे वापस पूछना शुरू किया - क्या तुम हिंदुस्तानी हो, यहाँ क्या कर रहे हो?

-हाँ सर। मैं यहाँ ऊन का बिज़नेस करता हूँ। मैं यहाँ से ऊन खरीदकर इंडिया भेजता हूँ और वहाँ से थोड़ा-बहुत माल खरीदकर यहाँ बेचता हूँ। यह मेरा अपना बिज़नेस नहीं है, मैं मालिक के लिए काम करता हूँ, मालिक सिक्किम में रहते हैं।

मिस्टर अलापी, वे समस्तीपुर से हैं, चार साल से यहां हैं, और साल में एक बार देश आते हैं। उन्होंने मुझे बातों ही बातों में बताया कि आजकल बिज़नेस बिल्कुल भी अच्छा नहीं चल रहा है। जहां तक इस इलाके में बिज़नेस की बात है, चीनी धीरे-धीरे कब्ज़ा कर रहे हैं।

□□

85

□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□

□□□□□ □□□□ □□□ - □□□□ □□□ □□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□,

ও-পা-মে বা অমিতাভ বুদ্ধ

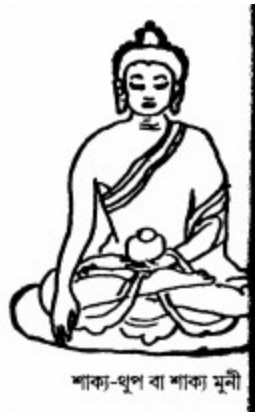
শাক্য-থুপ বা শাক্য মুনী

ओ-पा-मे या अमिताभ बुद्ध शाक्य -थूप या शाक्य मुनि

चेनरेज़ी या अवलोकितेश्वर धन के दाता, महान बुद्धिमान आर्य-तारा

भगवान बुद्ध के ये चार रूप तिब्बत में हर जगह
देखे जाते हैं।

और दुख की जड़ में उसका कारण है। दुख को खत्म करने के लिए, हमें उसके कारण को खत्म करना होगा।

आंदोलन की रणनीति

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৯৩

आज हम हिमालय के दुर्गम रास्ते को पार करके दुनिया की छत तिब्बत पहुँच गए हैं। इसके जैसी पवित्र कोई दूसरी ज़मीन नहीं है, इसके जैसी पवित्र कोई दूसरी ज़मीन नहीं है। भले ही हम कड़ाके की सर्दी में परेशान हैं, लेकिन दुनिया में कहीं और ऐसा सुकून भरा सन्नाटा नहीं है। इस पवित्र ज़मीन पर बैठकर गहराई से सोचिए, क्या मुझे कोई दुख है, दुख का कारण क्या है? क्या दुख मेटाफिजिकल है, मेटाडिवाइन है या मेटास्पिरिचुअल है? सोचिए, सोचिए, अगर आप पूरी सोच और विश्वास के साथ जानना चाहते हैं, तो पद्मसंभव खुद आपकी मदद करने आएंगे।

सभी लामा समझदार हैं, सभी फिलॉसफर हैं। गुरुजी अब तक गाइड रहे हैं, आज सुबह उन्होंने अचानक गुरु का रोल निभाया। उन्होंने सबको नदी के किनारे बिठाया और शॉर्ट में समझाया कि क्या करना है। अब सुबह हो गई है, सूरज भी धीरे-धीरे तेज हो रहा है। हमें नदी के पास एक छोटा सा गर्म पानी का झरना मिला, नदी के पास इस छोटे से कुएं जैसी जगह में पानी जमा होता है, हमने पानी में हाथ डाला और देखा कि यह कितना अजीब है, चारों ओर बर्फ के इस साम्राज्य में, किसी ने हमारे लिए गर्म पानी बना दिया है। पानी का टेम्परेचर शरीर के टेम्परेचर से कुछ डिग्री ज़्यादा लग रहा है। इसके पास बैठकर हम मेडिटेशन में डूब गए।

एक घंटे का ध्यान टूटने के बाद हम सब नंगे ही पानी में कूद पड़े, ओह! क्या मज़ा आया। करीब डेढ़ महीने में यह पहली बार है जब हमारे शरीर पर पानी लग रहा है, चारों तरफ बर्फ है, यह बर्फ की ज़मीन है, और इसके बीच हम नंगे ही नहा रहे हैं, कुदरत का कैसा अजीब खेल है। गुरुजी ने हमें चेतावनी दी कि इसके बाद हम दोबारा नहीं नहा पाएंगे, इसलिए अच्छे से नहा लें। नहाने के बाद हमें ऐसा लगा जैसे हमारी जान में जान आ गई हो। हमने झरने के पास ही खाना बनाना शुरू कर दिया। कल नियांग-चू गुफा से निकलने के बाद हमने एक टूटे-फूटे घर में रात बिताई, रात में हमने कुछ नहीं खाया था, इसलिए हम सब भूखे थे। हमारे पास लकड़ी थी। गुरुजी ने सबको चेतावनी दी कि इस झरने का पानी शरीर के लिए अच्छा है लेकिन खाने के लिए नहीं, यह पानी पीने से बदहज़मी और पेट खराब हो सकता है। इस पानी में सल्फर की मात्रा बहुत ज़्यादा होती है।

पास में ही गियात्से है, कई लोग इसे गियानसेह या गियाचियो कहते हैं। पहाड़ी रास्ते पर चलते हुए गुरुजी ने अचानक सबसे इंतज़ार करने को कहा, फिर पहाड़ की जगह तय की और हमसे कहा - बहुत जल्द हम गियात्से शहर में दाखिल होंगे। वहाँ जाते समय हमें हनांद चेकपॉइंट पार करना होगा, आप सब्र रखें। भगवान से प्रार्थना करें कि हम यह आखिरी चेकपॉइंट सुरक्षित पार कर सकें।

गुरुजी की बातों से हमें बहुत हिम्मत मिली। और थोड़ी ही देर में हम तिब्बत के सबसे पारंपरिक शहरों में से एक पहुँच जाएँगे। तिब्बत के तीन शहर व्यापार और कॉमर्स के सेंटर हैं।

हम तिब्बत के सेंटर की तरफ़, यानी उत्तर की तरफ़ आगे बढ़े। चोमलहारी पहाड़ की चोटी धीरे-धीरे हमारे पास आने लगी। पहाड़ की चोटी से उसका असली रूप नहीं दिखता। पहाड़ का असली रूप दूर से ही दिखता है। अब

चोमलहारी का एक अद्भुत रूप हमारे सामने आ गया है, हम कुछ दिनों से उसे देख रहे हैं - ज़ाहिर है, उसे न देखने का कोई तरीका नहीं है। इस रास्ते पर चलने वाले यात्रियों को लगता है कि यही सबसे मज़ेदार चीज़ है। मैंने हिमालय की कई चोटियाँ देखी हैं, अब मुझे ल्हासा के रास्ते में चोमलहारी दिख रहा है, जो हिमालय का यह रूप नहीं देखता, वह अंधा है, अगर पहाड़ को एक बार देख लिया तो उसका असली रूप नहीं दिखता, उसे बार-बार देखना पड़ता है, सूर्योदय के समय उसकी चोटी रंगीन होती है - वहीं से दिखना शुरू होता है। फिर धीरे-धीरे वह रोशनी फैलती है और उसका पूरा शरीर दिखता है। सूरज की चाल के साथ उसका रूप और स्वभाव बदलता हुआ लगता है। हर पल हम चोमलाहारी का बदलता रूप देखते हैं, कभी भयंकर, कभी शांत, कभी कोमल माँ का रूप, तो अगले ही पल वज्रधारी रुद्र का रूप, मन में थोड़ी कल्पना करने पर ऐसा लगता है कि बुद्ध के जितने भी रूप सोचे जा सकते हैं, वे सब इस चोमलाहारी में मिल जाते हैं। इस भयानक सन्नाटे और ठंड में भी चोमलाहारी यात्रियों को जोश देता है और यात्रियों का समूह इसके रूप के आकर्षण से आगे बढ़ता है। इसीलिए अनंत काल से यात्री बिना थके मेहनत के भी इस रास्ते पर आगे बढ़ते आ रहे हैं। हम भी इसके बुलावे पर सैकड़ों रुकावटों को नज़रअंदाज़ करते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

दोपहर में ठंड बढ़ने लगी - जब चोमलहारी (4700 मीटर) की बर्फ से ढकी चोटी ने डूबते सूरज की सुनहरी चमक में जादुई रूप ले लिया, उसी समय त्रिशरा की ठंडी हवा हमारे पूरे शरीर में घुसने लगी। सूरज डूब गया और उसके साथ ही हमारे शरीर अचानक ठंड से सुन्न हो गए। अचानक हवा तेज़ चलने लगी। हममें से कोई भी इस स्थिति के लिए तैयार नहीं था, इतनी ठंड तो हमें गंगटोक से नाथू ला पार करते समय भी महसूस नहीं हुई थी। हमने अपने कंबल उतारे और एक-दूसरे को लपेट लिया। हमें सड़क पर खरीदे हुए ऊनी मोज़े पहनने पड़े। लेकिन मोज़े पहनने के बाद एक और

समस्या खड़ी हो गई, इतने मोटे मोज़ों वाले जूतों में पैर डालना नामुमकिन था।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৬৩

नहीं, मेरा मतलब है, मुझे ऐसे मोज़ों के लिए तिब्बती जूते चाहिए। हम चार-पांच लोग सर्दियों में कांपने लगे थे। गुरुजी ने सब बातों पर सोचने के बाद हमें आग जलाने की सलाह दी। हम एक बड़ी चट्टान के पीछे जलाऊ लकड़ी लेकर खड़े हो गए। अब मुझे साफ-साफ समझ आ गया था कि यह लकड़ी क्यों खरीदी गई थी। उस हालत में आग से जो फायदा हुआ, उसे मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता।

आग जलाने में हमें थोड़ी देर हो गई, गुरुजी को अफ़सोस हुआ और उन्होंने कहा, "हमें पहले निकल जाना चाहिए था। इस इलाके में किसी इंसान का कोई निशान नहीं है, इसलिए हमें पैदल चलना पड़ रहा है।" हमें सांस लेने में दिक्कत हो रही थी, बैठने पर ठंडी हवा और खड़े होने पर अंदर तक ठंड लग रही थी, हमारे लिए चलना लगभग मुश्किल हो गया था। हमने अपने शरीर को गर्म करने के लिए दो बार और आग जलाई। इस समय, मैं गुरुजी के जोश और हौसले को देखकर हैरान था। अगर हम ऐसे ही चलते रहे, तो लगता है कि सबको इसी रास्ते पर आखिरी सांस लेनी पड़ेगी।

लेकिन हरी घोड़ी को कौन रख रहा है? शाम की हल्की रोशनी में, हमें अचानक सड़क के किनारे एक टेंट दिखा। जैसे लोग डूबने से पहले बचने की उम्मीद में तैरते हुए पत्ते से चिपक जाते हैं, वैसे ही हम भी थोड़ी सी पनाह के लिए टेंट की तरफ बढ़े। टेंट को टेंट नहीं बल्कि सनशेड कहा जा सकता है, यानी चारों तरफ से खुला हुआ। मैंने ध्यान से उसे

बर्फ़ पिघल नहीं जाती। गुरुजी ने कहा कि अब यहाँ का टेम्परेचर फ़्रीज़िंग पॉइंट से बहुत नीचे चला गया है, जिसका मतलब है कि जमने का मतलब है इस कड़ाके की ठंड से बचाव। हमें जो ठंड लग रही है वह हमारे पैरों से आ रही है, और हमारे पैरों से ठंड हमारे सिर तक पहुँच रही है।

इस बीच, जब पानी गर्म हुआ, तो कुछ जड़ें और मक्खन पानी में डाल दिए। जड़ों को कुछ देर तक उबाला गया, फिर हमने पानी को चाय की तरह पीना शुरू किया और साथ ही आग पर अपने पैरों को अच्छी तरह से सेंका। मैं इस चाय की तुलना गर्म अदरक के पानी से करूंगा, जैसे ही हमने चाय पी, शरीर में ताकत आ गई। चाय ने जादू की तरह काम किया।

बाद में मुझे एहसास हुआ कि यह चाय इस परिवार की खासियत है। उनका पेशा यात्रियों को चाय बेचना है। उन्होंने हमारे लिए जड़ों से जो चाय बनाई, वह बेशक बहुत महंगी चाय है, गरीब इसे खरीद नहीं सकते। बत्तीस लोगों के लिए चालीस गिलास पानी, साथ में महंगी खास जड़ें, थोड़ी सी चाय और मक्खन। कीमत सिर्फ़ तीन टका थी। हमारे लिए बहुत सस्ती, लेकिन गुरुजी के अनुसार, उन्होंने इसे बहुत ऊँचे दाम पर बेचा। मुझे नहीं पता कि जड़ में क्या गुण छिपे थे, लेकिन मैं भरोसे के साथ कह सकता हूँ कि यह इसके औषधीय गुण हैं। खून गर्म करने के लिए ऐसी बेकार दवा मेरी सोच से भी परे है। तिब्बती खानाबदोश ऐसी कई टॉनिक दवाएँ जानते हैं।

दोबारा निकलने से पहले, गुरुजी ने हमें रात में घूमने का एक शानदार तरीका बताया। उन्होंने कहा कि हमें सीधे उत्तर की ओर जाना चाहिए। रास्ता अंधेरा था और पत्थरों से भरा था, इसलिए उन्होंने उत्तर में एक चमकता हुआ तारामंडल दिखाया और हमें उसी दिशा में जाने को कहा, किसी दूसरी दिशा में न देखने को कहा। अगर हम एक-दूसरे से अलग भी हो

जाते, तो भी खो जाने का कोई चांस नहीं था। हमें बस उस तारे पर नज़र रखनी थी। वह हमें सही समय पर बताते कि कितनी दूर या कहाँ जाना है। उन्होंने बार-बार हमें चेतावनी दी कि हम मुँह से साँस न लें। हालाँकि, अगर ज़रूरी हो, तो हम अपनी नाक से साँस ले सकते हैं और मुँह से छोड़ सकते हैं। उन्होंने सबको बताया और आगे बढ़ गए, मैं उनके ठीक पीछे, एक परछाई की तरह रहा। हमने कंबल लपेटा और उसे फिर से अपने कंधों पर लटका लिया। ज़रूरत पड़ने पर इसका इस्तेमाल किया जाएगा।

रात काफी हो चुकी है, किसे पता क्या टाइम हुआ है, किसी के पास घड़ी नहीं है। इतनी ठंड है, लेकिन हमारे पास टेम्परेचर नापने का कोई इंस्ट्रूमेंट नहीं है, और हमें नहीं पता कि हम कितने मील दूर हैं। लेकिन रेप्लेंजी कहते हैं कि हम अभी चोमलहारी पहाड़ के ठीक नीचे हैं। यहां से पहाड़ी रास्ता ऊपर की ओर जाता है, हमें एक पहाड़ पार करना है। यह हिमालय का आखिरी स्टेप है, जिसके बाद हम तिब्बत के मैदानों में पहुंचेंगे। यह

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৬৫

सड़क के सबसे ऊंचे पॉइंट पर गिरी कंदर या पास है। हमें रात उसके पास ही बितानी होगी। अभी तक मैंने गुरुजी से हमारी यात्रा का कोई प्लान नहीं पूछा है, यानी हम कहां जाएंगे और कहां-कहां जाएंगे। हमारी यात्रा का अंत कहां होगा, हम इस देश में कब तक रहेंगे - मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता, मैं एक अंधे आदमी की तरह गेशे रेप्टेन का अनुसरण कर रहा हूं।

चारों तरफ सन्नाटा है, इस इलाके में लगभग कोई पेड़ नहीं है। हमारे सामने, हमारे पीछे, दाएं और बाएं, हल्के अंधेरे की एक दीवार है। कभी- कभी बड़े पत्थर दिखाई देते हैं और आगे बढ़ते हुए हम छोटे पत्थरों से टकरा जाते हैं। उस सन्नाटे में, कभी-कभी लामाओं की सांसें सुनाई देती हैं। ठंड है, लेकिन आसमान साफ है, तारों की कोई कमी नहीं है। हम आसमान को देखते रहते हैं, जैसे हमारा रास्ता अनगिनत तारों से रोशन हो गया हो। अब ऐसा लगता है जैसे हमारी सड़क के दोनों ओर हजारों तारे फैले हुए हैं और इसे खूबसूरती से सजाया गया है। तारों को देखते- देखते हमारी आंखों को आदत हो गई है, जैसे हमें सड़क पर भी तारों का मेला दिखाई दे। अंधेरा अब हमारी आंखों के लिए जाना-पहचाना हो गया है। लाखों तारों की रोशनी में छिपे दूसरे तारे भी एक-एक करके हमारी आंखों में कैद होने लगे, ठंड भी अब कम लगती है। सड़क पर चलते हुए मुझे एक बहुत धीमी रिदम मिली, हमारे आसपास का सन्नाटा उस रिदम के साथ ताल मिलाता हुआ लग रहा था। यह एक अजीब एहसास है - मुझे नहीं पता कि यह एहसास सिर्फ़ खुशी का है या सिर्फ़ शांति का। हमारा पूरा शरीर हल्का महसूस होता है, जैसे हम बादलों के ऊपर तैर रहे हों, और हमेशा के लिए पवित्र तीर्थ यात्रा के रास्ते पर चलते हुए स्वर्ग जैसा आनंद महसूस कर रहे हों।

मुझे नहीं पता कि हम कितनी देर से चल रहे थे, लेकिन अचानक मेरे कानों में एक प्यारी सी धुन आई। हम सबने ध्यान से सुना - यह सही थी, गलत नहीं। यह गुरुजी की जानी-पहचानी आवाज़ थी। हम खड़े हो गए, फिर हमने भी गुरुजी की आवाज़ के साथ सुर में सुर मिलाते हुए, शांत रात के निवास, देवी का पाठ करना शुरू कर दिया। गुरुजी ने कहा - हम अब तंगला पहुँच गए हैं। तंगला के बहुत पास चोमलहारी पहाड़ की चोटी है। यह इस रास्ते का सबसे ऊँचा हिस्सा है, अब हम धीरे-धीरे नीचे उतरेंगे। और एक घंटे में हम अगले शहर, तुंगला पहुँच जाएँगे।

थोड़ी देर आराम करने के बाद, हम फिर से निकल पड़े। आसमान में तारे धीरे-धीरे धुंधले होने लगे, और हमें एहसास हुआ कि सुबह होने में ज़्यादा समय नहीं है। हम पूरी रात चले; हमने यह हिस्सा ऐसे पार किया जैसे मंत्रमुग्ध हो गए हों। तारों को देखते हुए, हम अपने शरीर की थकान लगभग भूल ही गए थे। ऐसा चलना सिर्फ़ शांति में ही मुमकिन है। अगर कोई दूर के तारों पर ध्यान लगाकर चल सकता है, तो मन शरीर की थकान को नज़रअंदाज़ करने की क्षमता हासिल कर लेता है। हमारा चलना इसका सबसे अच्छा सबूत है। तिब्बती संत और तीर्थयात्री इस तकनीक से अच्छी तरह वाकिफ हैं।

৬৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

इस ट्रिक को जाने बिना, हमारे लिए चोमलहारी ट्रेल को इतनी तेज़ी से पार करना नामुमकिन होता।

जैसे ही हम सुबह होने वाली पहाड़ी सड़क के आखिरी हिस्से को पार कर रहे थे, हमने अपने सामने एक खूबसूरत नज़ारा देखा। पहाड़ों, बर्फ़ और उन पर सुनहरी चमक का एक शानदार नज़ारा, बिल्कुल दार्जिलिंग के टाइगर हिल से उगते सूरज जैसा।

ल्हासा का रास्ता अब हमारे लिए खुल गया है, मैदान अब हमारे सामने हैं। मैदान सिर्फ़ नाम का होता है, पहाड़ी इलाका मैदान तभी कहलाता है जब उसमें ज़्यादा उतार-चढ़ाव न हों। सच तो यह है कि यहाँ से ल्हासा के रास्ते पर अब कोई बड़ा पहाड़ नहीं होगा। यहाँ से उत्तर में शानदार कुएल लान पहाड़ हैं। अच्छी बात यह है कि हमें उन्हें दोबारा पार नहीं करना पड़ेगा।

तिब्बत अब हमारे लिए इतना आसान हो गया है कि हम धीरे-धीरे यहाँ की ठंडी हवा, लोगों और खाने के आदी हो गए हैं, और रास्ता पहले जितना मुश्किल नहीं रहा। रास्ता आसान लगने से हमें चलते रहने का भी बहुत हौसला मिला। फारी के बाद हमें कुछ और छोटे शहर मिले, और हर जगह एक रात आराम करने के बाद, हम छठे दिन दोपहर के करीब समदा नाम के एक कस्बे में पहुँचे। फारी के बाद हम जिन शहरों से गुज़रे उनके नाम टूना, राम, डोसेन हैं, उनमें से डोसेन को एक शहर कहा जा सकता है। रास्ते में मैंने एक और बात देखी कि यहाँ सड़कों की संख्या बहुत कम है। हमारे देश के उलट, जहाँ आपको अक्सर मुख्य सड़कों के किनारे छोटी सड़कें या पगडंडियाँ दिखती हैं, यहाँ ऐसा कुछ नहीं है, बस कभी-कभी खानाबदोश दिख जाते हैं, और उसके अलावा, यहाँ आबादी बहुत कम है।

समदा, डोसेन जैसा ही एक शहर है, फारी से बहुत छोटा। अभी तक सड़कों पर कोई इलेक्ट्रिक गाड़ी नहीं दिखी है। गाड़ियों में, कुछ मिलिट्री चीनी जीपें याद आई हैं। लॉरी, मोटरबाइक या बसें तो इस इलाके के लोगों ने कभी नहीं देखीं। ट्रेनों का तो सवाल ही नहीं उठता। समदा शहर में जाते समय, हमने एक सफेद दो मंज़िला घर देखा, जिसके चारों ओर रंगीन कागज़ और कपड़े लगे थे। जैसे-जैसे हम पास पहुँचे, हमने देखा कि उसके सामने एक शामियाना लगा हुआ था, ज़ाहिर है किसी तरह का त्योहार मनाया गया था। शामियाने के सामने, सड़क पर कई लोग और भिखारी बैठे थे, और उसके बगल में संगीतकारों का एक ग्रुप था। वाद्य यंत्रों में दो घंटे, एक बड़ा टूटा हुआ डफ और एक मुँह वाला ढोल था। हमें पास आते देख, वे जीभ निकालकर सड़क पर खड़े हो गए और मुस्कुराते हुए हमारा अभिवादन किया और चले गए। हमने भी मुस्कुराते हुए उनका अभिवादन किया और आगे बढ़ गए। जब हम घर से निकलकर थोड़ी दूर आए थे, तो पीछे से कुछ लोग दौड़ते हुए हमारी तरफ आए। उन्हें देखकर हम रुक गए।

93

□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□

□□

□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□,

-□□□□□ □□□□□ □□ □□□, □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□

□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□, "□□□□□, □□□□ □□□ □□? □□□□□□□ □□ □□ □□□□?"

-□□ □□, □□□□ □□□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□

□□□□ □□-□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□

□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□□, □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□

□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□-□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□-□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□

बहुत मुश्किल होता है। इसलिए उन्होंने हम सबको वहीं रुकने को कहा। गुरुजी दोपहर में खाना खाएंगे और बदले में वे उनकी बेटी को खुशहाल और लंबी ज़िंदगी का आशीर्वाद देंगे।

मुझे नहीं पता कि दूसरे लामा इस समय क्या सोच रहे होंगे। लेकिन मेरे लिए यह एक सुनहरा मौका है। तिब्बत में घुसने से पहले तक मैं सिर्फ़ सड़कें और मठ देखकर बोर हो गया था। बेहतर है कि यह मौका न गंवाया जाए। हमारे ये तीर्थयात्री तिब्बत के समाज और लोगों से बिल्कुल बेपरवाह हैं, उनका लक्ष्य कहीं और है। लेकिन मैं उनके जैसा नहीं हूँ, कम से कम मैं अभी उस स्टेज पर नहीं पहुँचा हूँ, इसलिए ऐसा मौका मेरे लिए सच में लुभावना है। गुरुजी का फ़ायदा दोपहर का खाना है। इससे खाने का झंझट और खर्च दोनों बचेंगे। वह जितना हो सके खाने का खर्च और झंझट बचा रहे हैं। उनके अनुसार, शुरुआत में वह जितनी बचत करेंगे, बाद के स्टेज में उन्हें उतना ही फ़ायदा होगा।

यह पहली बार है जब मैंने कोई तिब्बती अमीर परिवार देखा है। मर्द ढीले-ढाले कपड़े पहनते हैं और औरतें सिक्किमी कपड़ों की तरह लंबे बाकू पहनती हैं। हालांकि, मैंने उनके हेयरस्टाइल में कुछ नया देखा। उनके बाल एक छोटे लकड़ी के फ्रेम में बंधे होते हैं, जैसे चोटी। सब बहुत खुश हैं। उनके कपड़े अमीर होने की निशानी हैं। वे सड़क पर रहने वाले लोगों से भी बहुत अलग हैं। ऐसा लगता है कि वे इस तरह के कपड़े सिर्फ़ शादियों या किसी त्योहार पर ही पहनते हैं।

थोड़ी देर बाद घर का मालिक हमारे पास आया। फिर उसने धीमी आवाज़ में कुछ पूछा, गुरुजी ने उसकी बात बहुत ध्यान से सुनी और फिर गंभीरता से सिर हिलाकर हाँ में जवाब दिया। घर के ठीक पीछे एक टेंट लगाया गया और खाना बनाने का इंतज़ाम किया गया।

৬৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

हो गया। शादी की पार्टी के ज़्यादातर लोग वहीं जमा हैं, ऐसा लगता है कि यह शादी की पार्टी का दिल है। जवान लोग हंस रहे हैं, छोटे बच्चे इधर-उधर दौड़ रहे हैं, और बड़े-बुज़ुर्ग सलाह देने और अलग-अलग मामलों में मदद करने में बिज़ी हैं।

तिब्बती लड़कियों के हेयर स्टाइल

हमें बताया गया कि लोगों को चांग लाने के लिए बाज़ार भेजा गया है। चांग असल में चाय नहीं है, इसमें चाय का एक कण भी नहीं होता। यह तिब्बत में बहुत पॉपुलर कोल्ड ड्रिंक है, और त्योहारों और खास दिनों पर इसकी डिमांड और भी ज़्यादा होती है। चांग जौ से बनता है। क्योंकि यह जौ की भूसी से बनता है, इसलिए इसका स्वाद नशीला होता है - ठीक वैसे ही जैसे हमारे देश में ताड़ के रस से इमली का रस बनाया जाता है। चांग या चांग खाने में कोई बुराई नहीं है; बच्चे, माता-पिता, दादा-दादी सभी एक साथ बैठकर चांग खा सकते हैं। गोद में बैठे बच्चों को भी चम्मच में चांग खिलाया जा सकता है, जिससे उन्हें अच्छी नींद आने में मदद मिलती है। हर तरह के लोग इसे पसंद करते हैं, यहाँ तक कि लामा भी। हालाँकि, लामाओं में, दलाई लामा संप्रदाय, यानी गेलुम्पा संप्रदाय के लामा, यह चांग नहीं खाते। लगभग एक घंटे बैठने के बाद, मैंने एक पोर्टर के पीछे एक बड़ा टिन देखा, और मुझे एहसास हुआ कि हमारा ड्रिंक पहले ही आ चुका है।

गुरुजी ने समझाया कि हम तीर्थयात्री हैं, दूर-दूर से आए हैं। तीर्थयात्रियों में संत श्रेष्ठ होते हैं, उनकी सेवा करना महान कर्म है, इसलिए यह उनका कर्तव्य है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৬৯

रुचि को नज़रअंदाज़ करना अच्छा नहीं है, इससे रास्ते में रुकावटें आ सकती हैं। घर के मालिक ने आकर हमें बताया कि नाश्ता तैयार है, और साथ ही उन्होंने बहुत विनम्रता से कहा - हमारे परिवार की सच्ची इच्छा है कि हम आपके पैर पकड़ें। आप भगवान बोधिसत्व की धरती से आ रहे हैं, यह मौका हमें हमेशा नहीं मिलता। मुझे उम्मीद है कि आप यह विनम्र प्रार्थना स्वीकार करेंगे। आप इतने शुभ दिन पर आए हैं, यह सब भगवान चेरेजी की इच्छा है।

हम सबने गुरुजी की तरफ देखा, "पादोदक" शब्द समझ नहीं आया। उन्होंने हमें समझाया - हम बहुत पवित्र महात्मा हैं, भारत से आने वाले पवित्र तीर्थयात्री उनके लिए सच में पवित्र हैं। अब ये सज्जन हमारा पादोदक चाहते हैं, यानी वो हमारे पैर धोने का पानी अपने पास रखेंगे। वो उस पानी का इस्तेमाल गंगाजल की तरह अलग-अलग पवित्र कामों के लिए करेंगे, और अगर ज़रूरत पड़ी तो बीमारी के समय भी पिया जा सकता है। इस तरह का पादोदक तिब्बत में बहुत आम है।

यह बात सुनकर हम मान गए, बेशक, खुश होने का सवाल ही नहीं था। लेकिन मेरा मन पूरी तरह सहमत नहीं था। भगवान और सच्चे गुरु के बिना चरणों का रस देना मुमकिन नहीं है। इन लामाओं में मैं नंबर एक पाखंडी हूँ।

तिब्बत के हज़ारों लड़के साधुओं में से कोई भी मुझसे ज़्यादा पवित्र नहीं है। मेरे शरीर, मन, वाणी या मेरे किसी भी काम में पवित्रता का नामोनिशान नहीं है। इसलिए, मुझ जैसे पापी के पैर धोने का पानी पीने से उनका उद्धार नहीं होगा; बीच में छाले वाले पैर धोने का पानी पीकर वे ज़रूर बीमार पड़ जाएँगे।

थोड़ी देर में पानी का एक बड़ा टिन का बर्तन आया। गुरुजी ने हम सबसे जूते उतारने को कहा, कहना आसान है, लेकिन इतनी ठंड में जूते उतारना सच में एक प्रॉब्लम है। खैर, हमें मजबूरन जूते उतारने पड़े, फिर गुरुजी ने पहले अपने पैर ठंडे पानी में डुबोए और धोए। फिर एक-एक करके दूसरे लामाओं ने भी अपने पैर धोए, अब मेरी बारी थी। जैसे ही मैंने अपना बायां पैर पानी में डुबोया, मुझे ठंडक अपनी नसों से होते हुए सीधे मेरी छाती तक आती हुई महसूस हुई। किसी तरह, उस एहसास को छिपाते हुए, मैंने अपने पैर पानी में डुबोए और उन्हें अच्छी तरह धोया। एक महीने में यह पहली बार था जब मेरे पैरों ने पानी को छुआ था। एक महिला हाथ में तौलिया लिए मेरे बगल में खड़ी थी, उसने उससे मेरे पैर पोंछे, उसके सिर पर हाथ रखकर उसे आशीर्वाद दिया, और बिछी हुई सतरंजी पर बैठ गई। ठंडे पानी से मेरे पैरों को ऐसा लगा जैसे वे जम जाएंगे, लेकिन थोड़ी देर बाद मैं हैरान रह गया। मेरे पैरों में ब्लड सर्कुलेशन पहले से कहीं ज़्यादा बेहतर होने लगा, और मेरे पैर धीरे- धीरे गर्म होने लगे। मुझे लगता है कि यह हमारे लिए भी बहुत ज़रूरी था। फिर एक-एक करके घर के सभी लोग हमें प्रणाम करने लगे। सबसे आखिर में बेटी और उसकी छोटी बहन आईं। लड़की बहुत सुंदर थी। उसने सिल्क के कपड़े पहने थे, कमर पर एक साश बंधा हुआ था, जैसा कि तिब्बत की ज़्यादातर लड़कियाँ करती हैं।

৭০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

इसे कमर पर बांधा जाता है, ठंड से बचने का यह एक बढ़िया तरीका है। यह चीज़ भूटान और सिक्किम में भी देखी जाती है। बहुत से लोग अपने सिर पर साहेब टोपी पहनते हैं। इसके अलावा, पुरुषों और महिलाओं के कपड़े लगभग एक जैसे ही होते हैं। यह एक लंबी आस्तीन वाली शर्ट होती है, बस गर्मियों में वे एक आस्तीन खुली रखते हैं।

लड़की एक-एक करके हम सबको प्रणाम करने लगी और हम भी उसे दिल से आशीर्वाद देने लगे। जब वह मेरे पास आई तो मैंने बड़ी गंभीरता से उसका सिर छुआ और आशीर्वाद देते हुए कहा, 'नारायण! नारायण तुम्हारी रक्षा करें, तुम्हारा जीवन सुखी रहे।' फिर 'बेटी' घर गई और हमारे लिए चांग ले आई। लकड़ी और बांस के गिलासों में चांग (यानी जौ की बीयर) और उसके साथ चतुर लड्डू। खाने से पहले हमने परिवार की खुशहाली के लिए प्रार्थना की। मैंने पहले बीयर नहीं पी थी। यह थोड़ी कड़वी और मीठी थी, जैसे दोपहर में गिरा खजूर का रस। मैंने सिर्फ एक गिलास पिया और हममें से कई लोगों ने तीन गिलास पी लिए। गुरुजी ने बेटी को रुद्राक्ष की माला तोहफे में दी। फिर मैंने सबसे अलविदा कहा और वापस अपने रास्ते पर चल पड़ा। गुरुजी ने मुझसे फुसफुसाते हुए कहा - अगर हमारा इतना बड़ा ग्रुप न होता, तो वह हमें बिना खाए ज़रूर नहीं छोड़ते।

हम समदा शहर में घुसे, शहर बुरा नहीं है, कम से कम फारी से तो ज़्यादा साफ़ है। घर भी काफ़ी अच्छे हैं। ज़्यादातर घर पत्थर और मिट्टी के बने हैं, खिड़कियाँ, दरवाज़े और लटकती हुई बालकनी लकड़ी की हैं। बाईं ओर एक छोटी मिलिट्री पोस्ट है। मैंने सड़क के किनारे कई औरतों को भेड़ों की ऊन धूप में सुखाते और ज़रूरत के हिसाब से बोरियों में भरते देखा। इतने सारे लामाओं को एक साथ जाते देखकर, शहर के सभी लोग

हमें सलाम करने के लिए सड़क के किनारे दौड़े। ऐसा लगा कि आज का यही उनका मेन अट्रैक्शन था। कई बूढ़े आदमी और औरतें लकड़ियों के झुंड की तरह आए और हमारे पैर छूकर आशीर्वाद माँगा, सब खुशी से मुस्कुरा रहे थे। हमने कई टिन और लकड़ी के घर देखे, मुझे लगता है यह बाज़ार है। मैं शहर देखना चाहता था लेकिन गुरुजी नहीं रुके; मिलिट्री वाले हंगामा कर सकते हैं, इसलिए हम आगे बढ़ गए। समदा पार करने के बाद दो घंटे और चलने के बाद हमें एक बड़ी गुफा मिली। गुरुजी ने कहा, "आज हम उस दूर वाली गुफा में रुकेंगे जो तुम्हें दिख रही है, लेकिन अगर वहाँ कोई बस्ती नहीं हुई, तो हमें समदा लौटना होगा।" हालाँकि बहुत ठंड थी, लेकिन हमें ज़्यादा मुश्किल नहीं हुई क्योंकि सूरज हमेशा सिर के ऊपर था। हालाँकि, सूरज के बिना चलना हमारे लिए बहुत मुश्किल था। अब ज़मीन फिर से ऊबड़-खाबड़ हो रही थी - यह गुफा भी थोड़ी ऊँची ज़मीन पर है। जैसे ही हम गुफा के पास पहुँचे, कुछ कुत्ते भौंकते हुए हमारी तरफ़ दौड़े। तिब्बत के लगभग हर गाँव, कस्बे और मठ में उनकी मौजूदगी से बचना मुश्किल है, अब हमें इसकी आदत हो गई है।

क्यांगफू मठ और लामा छेरिंग द्ज़ोंग

कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनकर एक बुज़ुर्ग आदमी बाहर आए। पहले तो उन्होंने गुरुजी को पहचाना नहीं, क्योंकि लामा की नज़र कमज़ोर हो गई थी। पहले वे असिस्टेंट लामा थे, फिर चीफ लामा के दो साल के लिए चले जाने के बाद लामा शेरिंग ज़ोंग ने उनकी जगह ली।

गुफा छोटी है, ऊँची मिट्टी की दीवारें हैं और ऊपर लकड़ी की छोटी सी छत है, ऐसा लगता है कि यह बहुत पुरानी है। हम अंदर गए। एक बड़े हॉल में खड़े होकर हमने अपनी ज़रूरी बातचीत शुरू की। इस गुफा में अब सिर्फ़ तीन लामा रहते हैं। वे गरीब हैं, किसी तरह दिन कटते हैं। पहले समदर के ज़मींदार इसकी देखभाल करते थे, लेकिन इन दिनों वे अपने

परिवार के साथ सिक्किम गए हुए हैं। अब वे अलग इंसान हैं, वे इन बातों पर ध्यान नहीं देते। लामा त्सेरिंग जोंग को बहुत अफ़सोस हुआ और उन्होंने कहा कि वे इतने सारे लोगों को वहाँ नहीं रख सकते। गुरुजी ने उन्हें समझाया कि हम उनके खर्चे पर वहाँ नहीं रहना चाहते, हमारे पास अपना सारा खाना है, हमें थोड़ी छत और आग चाहिए, हम लकड़ी की कीमत देने को तैयार हैं। और हम इज़्ज़त के तौर पर पाँच रुपये देंगे। वे थोड़ा हिचकिचाए लेकिन आखिर में मान गए। लामा त्सेरिंग जोंग को मुस्कुराना नहीं आता था, या किसी वजह से वे फीकी पड़ गई थीं। हम एक हॉल में बैठ गए।

जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया, ठंड का मौसम और खराब होने लगा। यहाँ की ठंड बहुत तकलीफ़देह है। अगर टेम्परेचर ऐसे ही गिरता रहा, तो हमारे लिए रात में रुकना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए गुरुजी ने लामा शेरिंग जोंग से पूछा कि जब तक उनके पास समय है, अगर वे हमें एक कमरा दे दें, तो हमारे लिए बहुत अच्छा होगा। शेरिंग जोंग इसी मौके का इंतज़ार कर रहे थे और वे मान गए - लेकिन उसके लिए हमें तीन टका और देने होंगे। हम मान गए।

हम मठ में एक पुराने मंदिर में पहुँचे। मंदिर का घी का दीया जल रहा था। वहाँ कुछ पुरानी वेदियाँ भी मिलीं। त्सेरिंगजी ने हमें बताया कि यह मंदिर बहुत पवित्र है। तेरह साल पहले यह असली मंदिर था और नया घर बनने के बाद, भगवान बुद्ध की मूर्ति को वहाँ ले जाया गया। इसके अलावा, सब कुछ वैसा ही है जैसा पहले था। हम वहीं रहेंगे और मठ के किचन में खाना बनाएंगे। यही डील है।

৭২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मुझे मंदिर बहुत पसंद आया। दीये की धीमी रोशनी में हर मूर्ति ज़िंदा लग रही थी। दीवारों और खंभों पर अनगिनत टंका, यानी कपड़े पर बनी बेहतरीन कलाकृतियाँ लटकी हुई थीं। अनगिनत मंडलों और देवी-देवताओं से भरी हुई थीं। अगर ज़्यादा रोशनी होती, तो मैं उन्हें ध्यान से देखता। खैर, अभी जो देख रहा हूँ, उससे खुश हूँ। मेरे लिए यह पक्का करना नामुमकिन है कि कमरे का माहौल पवित्र है या नहीं। फिर भी, मुझे कहना होगा कि इसमें एक रहस्य और रोमांच का एहसास है। मेरी नज़र कमरे में रखी बड़ी मूर्ति पर बार-बार जा रही थी, तिब्बती देवता युवायुंग की मूर्ति। हिंदुओं के हिसाब से, इसे इंसान और प्रकृति के मिलन का सीन कहना चाहिए। इंसान की महानता प्रकृति के अहंकार के साथ मिल गई है। इस मूर्ति में शांति मिलना मुश्किल है। शिव, रुद्र के रूप में विनाश का विकराल रूप, प्रकृति के साथ लिंग की स्थिति में खड़ा है। मैंने हिमालय की हर गुफा में यह तस्वीर या मूर्ति देखी है, और चूँकि मैं एक शांत पिता हूँ, इसलिए मैं हर समय पूछ भी नहीं सका। क्योंकि मैं अक्सर रात में या अकेले में बोलता हूं, इसलिए यह मेरा मौका है।

खाने-पीने के बाद सब लोग एक-एक करके सोने चले गए और उसी समय मैंने गुरुजी से पूछा - क्या आप मुझे इस मूर्ति के बारे में थोड़ा समझा सकते हैं? उन्होंने ऐसे सवालों से मुझे कभी निराश नहीं किया, बल्कि हौसला बढ़ाने के साथ आसान जवाब दिए। उन्होंने समझाना शुरू किया -

इस मूर्ति का असली मकसद शिव और शक्ति के मिलन को आम लोगों के सामने पेश करना है। हमारी आत्मा प्रकृति का प्रतीक है और ब्रह्मांड की आत्मा शिव का प्रतीक है। हालांकि, हिंदू धर्म के अनुसार यही मतलब है, तिब्बत बौद्ध तांत्रिकों की धरती है। यहां तंत्र का रहस्य बौद्ध धर्म से बहुत गहराई से जुड़ा हुआ है। उस थ्योरी को समझने के लिए बहुत साधना करनी पड़ती है। ध्यान से देखो, पुरुष मूर्ति और महिला

मूर्ति लिंग से बंधे हुए खड़े हैं, उनकी गर्दनें एक साथ हैं। जब हम इस तरह बीज मंत्र की मदद से उस महान शक्ति के साथ मिल जाएंगे, तभी हम मुक्त होंगे। साधना का आखिरी कदम। यह दुनिया युवाओं या माता-पिता के मिलन से बनी है, इसलिए इस दुनिया को जानने के लिए, हमें पहले परमपिता और परममाता के मिलन का रहस्य, वह गुप्त सूत्र जानना होगा; अवलोकितेश्वर के निर्माण का रहस्य बहुत कठिन रास्ता है। अगर हम इस मूर्ति पर लंबे समय तक ध्यान करें, तो उस रहस्य की रोशनी को जाना जा सकता है। तिब्बती में इसे 'जिग-तेन-बंग-फिउग साग-ग्रैब' कहते हैं - ये शब्द मिलकर एक नाम बनाते हैं, जो बाद में इष्ट मंत्र या बीज मंत्र बन जाता है। इस मूर्ति का डरावना रूप वज्रहुंका मुद्रा है। इस मुद्रा पर ध्यान करने से प्रज्ञा देवी के दर्शन होते हैं। कमल पर स्थापित इस मूर्ति पर ध्यान करने से दुनियावी डर पूरी तरह से दूर हो जाते हैं।

गुरुजी एक पल के लिए रुके, यह सोचकर कि अगर उन्होंने इसे और समझाया तो मैं इसे समझ नहीं पाऊँगा, इसलिए मैंने गुरुजी से और कोई सवाल नहीं पूछा।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৭৩

मैं हैरानी से रहस्यमयी तांत्रिक देवी-देवताओं को देखता रहा। गुरुजी ने चुप्पी तोड़ी। उन्होंने कहा, "चुप रहो और बिना देखे मन में मणि मंत्र का जाप करो। एक समय आएगा जब तुम देखोगे कि मंत्र और देवता एक हो गए हैं। कोशिश करो, तुम्हें सब्र से प्रैक्टिस करनी होगी।" यह कहकर, वे कंबल के नीचे छिप गए। मैं थोड़ी देर और बैठा रहा।

मध्य हिमालय में उस शांत रात में, मैं देवी प्रज्ञा देवी की पूजा में डूबा हुआ था।

गियाट्स के रास्ते पर

अगले दिन, हम फिर से सड़क पर थे। समदा ने पहले जो बड़ा शहर देखा था, वह डोसेन था। उसके पास, हमने रात में एक सुंदर झील देखी। समदर लामा शेरिंग जोंग ने हमसे पूछा कि क्या हमने अपनी तीर्थयात्रा के लिए वहाँ प्रार्थना की थी। रात में बहुत ज़्यादा ठंड होने के कारण गुरुजी ने हमें वहाँ खड़े नहीं होने दिया। शेरिंग जोंग ने हमें खास तौर पर सलाह दी कि सड़क से उतरते ही उस झील पर प्रार्थना करें। भारत से यहाँ आने वाले सभी लोग उस झील के किनारे बने मंदिर में पूजा करते हैं। झील का नाम राम-ह्रद है, कई लोग इसे राम सरोवर भी कहते हैं क्योंकि यह मानस सरोवर जितना ही पवित्र और सुंदर है। इसलिए, बूढ़े लामा शेरिंग जोंग की सलाह के अनुसार, हमने सड़क से उतरते ही प्रार्थना की। गुरुजी ने हमें बताया कि वह भी वहाँ एक रात रुकना चाहते हैं, लेकिन कई लोगों ने उन्हें चेतावनी दी कि पास में हनांदा का एक टेंट है और वे तीर्थयात्रियों पर अच्छी नज़र नहीं रखते। इसलिए उन्हें सूरज डूबने के बाद उस सड़क को पार करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

तांगला के बाद से हमारा रास्ता आसान हो गया है, लेकिन पहाड़ी रास्ता, आसान कहने का मतलब है कोलकाता के लोगों के लिए बहुत मुश्किल। हम अब विशाल हिमालय की छत पर चल रहे हैं। ऊंचाई हमेशा ग्यारह या बारह हज़ार फ़ीट से ऊपर लगती है, कभी उतरती है, कभी चढ़ती है।

गंगटोक से निकलकर हम नाथुला की ऊंचाइयों पर चढ़े, जहाँ हमें सख्त चट्टानों का एक बैरियर मिला, फिर चुम्बी घाटी में हमें तीस्ता घाटी जैसा खूबसूरत रंग मिला। फिर वहाँ से हमें बर्फ से ढकी पहाड़ की चोटियों की खूबसूरती दिखती है। कुछ दिनों बाद, हमने फिर से चढ़ाई की, तंगलार पहाड़ का दर्रा पार किया, 15,600 फीट की ऊंचाई पर भी हमारा मन और शरीर शांत था। अगर हमारा ग्रुप तीर्थयात्री ग्रुप न होकर एक एक्सपीडिशन ग्रुप होता, तो मेरी डायरी के पन्ने बड़े-बड़े एडवेंचर की कहानियों से भरे होते। तीर्थयात्रियों का घमंड उन्हें शोभा नहीं देता। हम इस महान हिमालय के सामने बहुत छोटे हैं, इस महान शक्ति के सामने हम तुच्छ हैं, इस अनंत राजसी बर्फ से ढकी सुंदरता के सामने घमंड करना हमारे लिए पाप है। तीर्थयात्री के हर कदम में भक्ति, विनम्रता और समर्पण की भावना होती है। रास्ता तीर्थयात्रियों के लक्ष्य का रास्ता है।

101

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৭৫

৭৬

तथागत के प्रति समर्पण की साधना और व्रत में विविधता है। आध्यात्मिक मार्ग वहीं से शुरू होता है जहां सांसारिक मार्ग समाप्त होता है।

दो-तीन दिन से हमारी फिजिकल और मेंटल ताकत धीरे-धीरे बढ़ रही है, ठंड अब काफी सहने लायक हो गई है। कई लोगों को ऊंचाई की वजह से अस्थमा

जैसा लग रहा था, और जिन्हें खांसी थी, वे भी काफी कम हो गए थे। तब से, कुदरती नज़ारे बहुत अच्छे रहे हैं, चारों तरफ सिर्फ बर्फीले पहाड़ हैं। बर्फ जैसी सफेद पहाड़ों की चोटियां रंगों के खेल में हमारे साथ नशे में धुत हो गई हैं। हिमालय अब हमारे सामने कोई रुकावट नहीं है, हम उन्हें पार करके दूसरी तरफ पहुंच गए हैं। अब हमारे देश में बसंत का त्योहार मनाया जा रहा है और ऐसा लगता है जैसे यहां हमेशा बर्फ रहने का त्योहार चल रहा हो। यहां के जंगल और जंगल सपनों जैसी चीजें हैं। इतनी ठंड में बड़े पेड़ नहीं उगते। जब गर्मी आती है, तो चारों तरफ सिर्फ घास ही घास होती है। यहां ठंड बहुत तेज और सूखी होती है, दिन में सूरज की किरणों से टेम्परेचर बढ़ता है और रात में गिरता है। सूरज डूबते ही यह दुनिया पूरी तरह बदल जाती है। बर्फ का रंग धीरे- धीरे चांदी जैसा हो जाता है और फिर रोशनी और अंधेरे की लुका-छिपी का खेल शुरू हो जाता है। तंत्र की एक रहस्यमयी दुनिया इस धरती पर उतरती है।

हमने फिर से उत्तरी रास्ता लिया, कोई और रास्ता नहीं था। हम दोपहर में सड़क पर रुके। हमारे पास जलाने की लकड़ी लगभग खत्म हो गई थी, इसलिए हमने समादर से कुछ जौ और जौ का भूसा खरीदा। हम एक चट्टानी मिट्टी के घर के सामने रुके। हमें देखकर, घर के आस-पास के सभी लोग दौड़कर आए, हमारे सामने खड़े हो गए और जीभ निकालकर हमारा स्वागत किया। उनमें जवान और बूढ़े लोग थे। जैसे ही हमने अपना परिचय दिया, उनमें से कई झुक गए। हमने भूसा भिगोने के लिए थोड़ा गर्म पानी मांगा। बिना किसी हिचकिचाहट के, वे गर्म पानी का इंतज़ाम करने चले गए। अगर हर परिवार पाँच या छह लोगों के लिए गर्म पानी ले आए, तो हम सभी के लिए काफी होगा। बच्चे हमारे सामने बैठ गए। दुनिया की इस छत पर प्रकृति की गोद में इन बच्चों को देखकर मैं मोहित हो गया। मुझे उनकी आँखों में एक साफ और पवित्र रोशनी, उनके चेहरों पर एक सरल और पवित्र भाव दिखाई देता है। यहाँ के लोगों के चेहरों से भी कोई उस

पवित्रता को नहीं छिपा सकता। ऐसा लगता है कि पाप की हवा अभी तक इस बेदाग स्वर्ग तक नहीं पहुँची है। ऐसा लगता है कि हिमालय की इस ऊंची बाड़ पर चढ़ने के बाद पाप यहां नहीं आ सकता। उनका लाइफस्टाइल कैसा भी हो, वे कितने भी फकीरी कपड़े क्यों न पहनते हों, मैं उनमें सत्य, शिव और सुंदरता का रूप देख सकता हूं। शायद दुनिया का कोई दूसरा देश उनके जितना दिल से मुस्कुरा नहीं सकता।

ऐसा लगता है कि अगर हम और आगे नहीं जा सकते, तो इसमें कोई बुराई नहीं है। यहाँ तक आना हमारे लिए बहुत बड़ा फ़ायदा है।

हमने कपड़े को गर्म पानी में भिगोया और उसमें नमक मिलाया, और बच्चों और गांववालों के साथ उसे पकाया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

हमने खाना शेयर किया। गांव वाले भी इतने सारे संतों के साथ बैठकर खाना खाकर बहुत खुश हुए। उनके हाव-भाव देखकर ऐसा लगा जैसे वे स्वर्ग का सुख ले रहे हों। फिर हम वापस चल पड़े।

समादा से हमें नियांग नदी मिली है, इसके आस-पास पिघलती बर्फ़ इस नदी में नहर की तरह बह रही है, एक बहुत छोटी पहाड़ी धारा। इसकी कलकल की आवाज़ हमारे चलने में जान डाल देती है। यह बिल्कुल भी बोरिंग नहीं लगता। इस घाटी का नाम इसी नदी के नाम पर न्यांगचू रखा गया है। अगर आप पूरी ज़िंदगी इस नदी के किनारे चलें, तो भी ऐसा लगता है कि कोई थकेगा नहीं। हमारी सैर में अब एक लय आ गई है। मेरा मन भी इन दिनों बहुत हल्का महसूस होता है। इंडो-तिब्बत बॉर्डर के पास बड़ी संख्या में तैनात सैनिकों को देखकर हमारा मन भी भारी हो गया था, और बॉर्डर पर मौसम भी बहुत भारी था। अब हमें वह डर नहीं लगता।

उस रात हमने एक छोटी सी झुग्गी में रात बिताई। अगले दिन दोपहर में हम खंगमा नाम के एक छोटे से गांव में पहुंचे।

जैसे ही हम खंगमा गांव में घुसे, खम्पा जाति का एक पुलिसवाला हमारे पास आया। उसने हमें झुककर प्रणाम किया और पूछा, "क्या आप गंगटोक से आ रहे हैं? क्या आप नेपाली तीर्थयात्री हैं?"

हमारे पास हाँ कहने के अलावा कोई चारा नहीं था। लेकिन हमें शक था कि वह हमें पूछताछ के लिए पुलिस स्टेशन ले जा सकता है। उसने कहा, "तो मेरे साथ बैठो।" आधे घंटे बाद, हम उसके साथ एक छोटे से बंगले पर पहुँचे। बंगले के बरामदे में लामा के चोगे में एक तिब्बती सज्जन ने मुस्कुराते हुए हमारा स्वागत किया। उनकी मुस्कान देखकर हमारा शक दूर हो गया। जैसे ही हम उनके पास पहुँचे, सज्जन ने सिर झुकाया, और बाकी सबने भी। गुरुजी और हम सबने उन्हें आशीर्वाद दिया।

उस आदमी ने अब बहुत विनम्रता से कहा, "हमारे छोटे से गांव में आपका स्वागत है। हमें गंगटोक से आपके आने की खबर टेलीग्राम से मिली है। सिक्किम के महाराजा ने हमें आपका ध्यान रखने के लिए कहा है। मेरा भाई सिक्किम के महाराजा के लिए काम करता है, और उसने यह खबर भेजी है।"

यह हमारे लिए बहुत अच्छी खबर थी, लेकिन हमें लामाओं के साथ खुशी से उछलना नहीं चाहिए था। हमने बहुत शांति से खबर को स्वीकार किया, फिर, बहुत बुद्धिमान लोगों की तरह सिर हिलाकर और हाथ उठाकर, हमने उसके भाई को आशीर्वाद दिया।

सोरोन थापे थोड़ी दूर रहते हैं। उन्होंने हमें बार-बार भरोसा दिलाया कि हमें यहाँ कोई दिक्कत नहीं होगी, गाँव वाले हमेशा हमारी मदद के लिए मौजूद रहेंगे। इससे भी ज़्यादा मज़ेदार बात यह थी कि उन्होंने बताया कि हमें खाना नहीं बनाना पड़ेगा, गाँव वाले हमारे लिए खाना बाँटकर तैयार करेंगे।

गुरुजी ने कहा, "मुझे यहाँ कोई अपशकुन नहीं दिख रहा, इसलिए अगर तुम चाहो तो बोल सकते हो।" मैंने पहले ही कुछ तिब्बती शब्द सीख लिए हैं, लेकिन मुझे उन्हें इस्तेमाल करने का मौका नहीं मिला। जब मुझे इजाज़त मिल गई, तो कोशिश करने में क्या हर्ज़ है? मैं बंगले से अकेला निकल गया। यह गाँव सड़क के चारों ओर बसा है। यह एक छोटा सा गाँव है, लेकिन इसमें एक पवित्र भावना है। सभी घर पत्थर और मिट्टी के बने हैं, कोई बाड़ नहीं है। सभी घर एक साथ सटे हुए हैं, चलते-चलते एक सड़क है, और दोनों तरफ पत्थर रखकर उसे सुरक्षित किया गया है। घरों में लकड़ी के बरामदे नहीं हैं, ऐसा लगता है कि इस इलाके में लकड़ी बहुत कम है। सब लोग घरों से बाहर निकले और एक-एक करके मुझे प्रणाम करने लगे।

गांव में अब हर कोई हमें जानता है, बच्चे, जवान, बूढ़े, हर कोई मेरा स्वागत करने आया। बहुत से लोग कई सवाल पूछने लगे, खासकर जवान लोग; लेकिन भाषा की कमी के कारण मैं जवाब नहीं दे सका। मैंने बस मुस्कुराकर हाथ उठाकर उनका अभिवादन किया और चलने लगा। कुछ ही समय में, मैं गांव में जाना-माना हो गया।

दोपहर में गांव वाले हमसे मिलने आए। उनमें से

৭৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

बहुतों ने सिक्किम देखा है। दोपहर में, हम बरामदे में कंबल ओढ़कर बैठे और गांववाले हमारे चारों ओर बैठ गए, और हम सब साथ में प्रार्थना करने लगे-

"मैं उस धन्य, अरहंत, पूर्ण प्रबुद्ध, अरहंत, पूर्ण प्रबुद्ध, बुद्धिमान, विद्वान, अद्वितीय, पवित्र, देवताओं और मनुष्यों के प्रिय को नमन करता हूँ।"

हमने पहले पाली में प्रार्थना की, फिर तिब्बती में। मुझे तिब्बती में प्रार्थना करना पसंद है, हालाँकि मुझे शब्दों का मतलब समझ नहीं आता, लेकिन जब वे रुककर शब्दों का उच्चारण करते हैं, तो प्रार्थना सुनने में बहुत मीठी लगती है। जब तिब्बती लोग मंत्रों का उच्चारण करते हैं, तो वे हर अक्षर को अलग-अलग उच्चारण करते हैं, और हमें उनके साथ एक साथ चलना होता है। ऐसा लगता है कि हर अक्षर नाभि से उच्चारण किया जा रहा है। गाँव में हर कोई मंत्र और कुछ प्रार्थनाएँ जानता है। लगभग आधे घंटे के बाद, हमारी प्रार्थनाएँ खत्म हो गईं। सूरज पश्चिम में पहले ही डूब चुका था। तापमान धीरे-धीरे कम होने लगा, और ठंड बढ़ने लगी। एक-एक करके सब लोग बंगले के बरामदे में बैठने लगे। ऐसा लग रहा था कि बंगले के उस छोटे से बरामदे में लगभग 250 लोग जमा थे। उनमें अलग-अलग उम्र के बच्चे और लड़कियाँ थीं। माँएँ भी अपना घर का काम खत्म करके आ गई थीं।

हमारा कोई प्रोग्राम नहीं है, और उनकी खुशी संतों के दर्शन में है। सूरज डूबते ही यहाँ अंधेरा छा गया। अचानक देखा कि बहुत से तिब्बती लोहे के कड़ाहों में कोयले की आग लाए थे। ऐसे बहुत से कड़ाह एक के बाद एक वहाँ जमा हो गए। उस आग के चारों ओर वे छोटे-छोटे ग्रुप में

बंट गए और आग जलाने लगे। एक नज़र में ऐसा लगा कि गाँव वाले यहाँ आग जलाने आए हैं, और हम तो बस एक मौका थे। वे आपस में गपशप करने लगे, जैसे वे सब एक ही परिवार के हों। बीच-बीच में, एक-एक करके, गुरुजी से तरह-तरह के सवाल पूछने लगे। सवाल बहुत आसान और सरल थे।

-यहां तक पहुंचने में आपको कितना समय लगा?

-क्या आप चेनरेज़िग घूमने जा रहे हैं?

-हम यहां कब तक रहेंगे?-ऐसे और भी कई सवाल।

माताओं और बहनों के सवाल थोड़े अलग होते हैं, जैसे कि मेरे और कितने बेटे होंगे, क्या मेरी बेटी की शादी अच्छी होगी, क्या मेरे पति की बीमारी ठीक हो जाएगी, वगैरह।

हमारे पास कुछ चावल थे। जब रात करीब आई, तो गुरुजी ने उन सभी को एक-एक करके बुलाया और प्रसाद की तरह हर एक को चावल के दो-तीन टुकड़े बांटने लगे। वे भी गुरुजी के प्रसाद से संतुष्ट हो गए। अब उनके घर लौटने की बारी थी। उस समय सोरन थापा गुरुजी के पास आए और उनके कान में फुसफुसाए।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৭৯

गुरुजी ने उसकी बात सुनकर हल्के से मुस्कुराया, मेरी तरफ देखा और मुझे अपने पास बुलाया और कहा,

-गांव वालों ने इतना छोटा इंडियन तीर्थयात्री कभी नहीं देखा। उनके लिए, आप बहुत लकी और नेक हैं। वे आपसे कुछ सुनना चाहते हैं, वे जानते हैं कि आप इंडियन हैं।

गुरुजी की ओर देखते हुए मैंने पूछा, "ठीक है! लेकिन मैं क्या कहूँ?"

- जो खुश है.

गुरुजी से भरोसा मिलने के बाद मैंने उनसे कहा, "ठीक है, मैं हिंदी में बात करूंगा, आप इसे तिब्बती में ट्रांसलेट करें।" वे मान गए। मैंने उनसे कहा,

-मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, माता-पिता जैसे आदरणीय लोगों! आपकी गर्मजोशी से भरी मेहमाननवाज़ी से हम बहुत खुश हैं। मैं अपने भाइयों और बहनों को ढूंढने के लिए भारत से बहुत दूर आया हूँ। मुझे बहुत अफ़सोस है कि मुझे आपकी भाषा नहीं आती, लेकिन अगली बार जब मैं आऊँगा, तो मैं तिब्बती ज़रूर सीखूँगा। मैं अपने गुरुजी की कृपा से यहाँ आया हूँ। मैंने इतना सुंदर देश कभी नहीं देखा। महातीर्थ के रास्ते में आपको देखकर मेरी यात्रा सार्थक लगती है। आपके सीधे-सादे व्यवहार से मुझे लगता है कि आप कैलाश के शिव चरित्र के प्रतीक हैं। मैं आपकी भलाई के लिए प्रार्थना करता हूँ।

ॐ अयम्बकम इजमहे सुगंधित पोषक वर्धनम

"आत्मा का बंधन मृत्यु का बंधन है, मृत्यु का बंधन मृत्यु का बंधन है, ॐ शांति, शांति, शांति।"

प्रार्थना के बाद मैं रुक गया। फिर सबने एक-एक करके हमें अलविदा कहा।

दूर ले गया

उस रात हमें गांव वालों से चावल और दालें मिलीं। बहुत दिनों बाद उन्हें पाकर हम सब खुश थे। तिब्बत में अब तक हम जितने भी शहरों और गांवों में गए, कहीं भी बिजली नहीं थी। हमें सड़क के दोनों तरफ सिर्फ टेलीग्राफ पोस्ट ही दिखे। भले ही आज भी तिब्बत के लोगों के पास बिजली नहीं है, लेकिन उन्हें रोशनी की कमी नहीं है - यहां घी के दीयों या हरिकेन लैंप से काम चलता है। तिब्बत में रात बहुत शांत होती है, जैसे पूरी दुनिया सो गई हो। ऐसा लगता है कि वहां नींद खराब करने के लिए एक उल्लू भी नहीं है।

गांववालों के कहने पर हमें अगले दिन भी वहीं रुकना पड़ा। वे हमें पाकर खुश थे, गांववाले पूरे दिन हमारे आस-पास थे। हमने एक और काम किया, घर-घर जाकर लामाओं को उनके घर ले जाना एक नेक काम है, और उन्हें घर ले जाकर खाना खिलाना एक बड़ा सौभाग्य है। उस दोपहर, मुझे भी ऐसा ही एक न्योता मिला।

৮০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं गया। सोरन थापा गुरुजी को ले गए, दूसरे लामा भी अलग-अलग गांववालों के साथ गए। मुझे दोरजे के घर बुलाया गया। दोरजे सज्जन का घर बहुत पास है। हमारे देश के मिट्टी के घरों की तरह, खिड़कियां और दरवाज़े बहुत छोटे हैं, चार कमरे हैं, जिनमें से दो में खिड़कियां

नहीं हैं। मैं उनके बड़े कमरे में आया और बैठ गया। दोरजे परिवार छोटा है। सज्जन लगभग चालीस साल के हैं, उनकी पत्नी उनसे ज़्यादा समझदार लगती हैं। मैंने तिब्बत में देखा है कि औरतों का बहुत असर होता है, खासकर शादीशुदा औरतें दुनिया की मालिक लगती हैं। एक तरफ, वे घर पर काम करती हैं और अपने पति, बेटे और बेटियों का ख्याल रखती हैं, वहीं दूसरी तरफ, वे खेतों में जाकर मर्दों के बराबर काम करती हैं। तिब्बती औरतों की मेहनत की तारीफ़ करनी होगी।

दरबान के कमरे में एक बहुत बड़ा टाट का गद्दा था। गद्दा सूखे भूसे से भरा हुआ लग रहा था, और उस आदमी ने मुझे उस पर बिठा दिया। मिसेज़ दरबान तुरंत दौड़कर आईं, यह जानते हुए कि मुझे उनकी भाषा नहीं आती, इसलिए उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे गद्दे से उठाया। फिर, रस्सी से लटके अपने बहुत गंदे स्मॉक को लेकर, उन्होंने मुस्कुराते हुए मुझे इज्ज़त से वापस गद्दे पर लिटा दिया। फिर, अपने पति की तरफ देखते हुए, उन्होंने ऐसे लहजे में कहा जो डांटने वाला लग रहा था, "क्या तुम एक संत को इस गंदे गद्दे पर बैठने दोगे?" हालाँकि यह बदलाव मेरे लिए कोई बड़ी बात नहीं थी, लेकिन मेरे लिए उनकी भक्ति और देखभाल देखकर, मैं मुस्कुराई और उन्हें आशीर्वाद दिया, "माँ, भगवान आपका भला करे।"

बेडरूम के बगल में एक छोटा सा बरामदा था, और मिसेज़ दोरजे हमें वहीं छोड़कर चली गईं। कमरे के लेआउट से मुझे पता चल गया कि वह किचन था। किचन में कोई दरवाज़ा या खिड़की नहीं थी। जैसे ही उन्होंने स्टोव चालू किया, पूरा कमरा लकड़ी के धुएं से भर गया। उन्होंने सदियों पुराने बर्तन में पानी डाला, शायद मेहमानों के मनोरंजन के लिए। मैं बैठ गया और कमरे की धीमी रोशनी में देखने लगा। उन्होंने उबालने के लिए पानी में कुछ चीनी चाय की पत्तियां तोड़ीं। तिब्बती लोग आमतौर पर पुरानी चाय की पत्तियां उबालकर बार-बार खाते हैं। मुझे लगता है

कि उन्होंने नई पत्तियां भिगोई थीं। तिब्बती चाय की खास बात यह है कि इसे मक्खन के साथ मिलाया जाता है। चाय को लकड़ी के एक पतले कटोरे में गर्म पानी के साथ मिलाया जाता है, फिर उसमें मक्खन मिलाया जाता है। मक्खन को उस कटोरे में घी की चाशनी की तरह मिलाया जाता है, जिसमें समय लगता है। मिसेज़ दोरजे ने मदद के लिए अपने पति को बुलाया। चाय बनाना सच में एक झंझट का काम है। थोड़ी देर में, उनके बच्चे आ गए, दो सबसे बड़ी लड़कियां, शायद उन्नीस या बीस, और फिर चार छोटी लड़कियां। दोरजे ने अब अपनी सबसे बड़ी बेटी को मक्खन मिलाने का काम सौंपा और मेरे साथ बैठने के लिए वापस आ गए। खड़ी होकर लड़की चाय बनाने लगी, जैसे सॉसपैन में मसालों का मिक्सचर हो। कभी-कभी वह अपनी माँ के साथ बैठ जाती।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৮১

वे बातें कर रहे थे। करीब एक घंटे बाद, जब चाय में मक्खन मिल गया, तो लेडी ने उसे फिर से गरम किया और एक लंबे बांस के कप में मुझे सर्व किया। इतनी मेहनत से बनी चाय ज़रूर अच्छी होगी। उसने घर में किसी और को नहीं दी। उनका इरादा संतों की सेवा करना लग रहा था। असल में, मैं कोई संत नहीं हूँ, लेकिन सीधा-सादा दोरजे परिवार यह नहीं समझेगा। इसलिए, उन्हें निराश किए बिना, मैंने मुस्कुराते हुए एक घूंट लिया। मुझे नहीं पता कि चाय में क्या था, लेकिन जैसे ही एक अजीब सी महक मेरी नाक में आई, मैं रुक गया। मैंने उस एहसास को बहुत अच्छे से छिपा लिया। तिब्बती लोग चाय को लेकर बहुत सेंटीमेंटल होते हैं, अगर हम उन्हें नाराज़ कर दें, तो हमें मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है। घर में कोई खिड़की नहीं है जिससे हम इसे बाहर फेंक सकें, इतना ही

नहीं, बल्कि इस चाय में मिसेज़ दोरजे और पूरे परिवार की पवित्र आत्मा है। इन बेचारों ने मेहमानों की जो कुछ भी कर सकते थे, किया है, मैं इसे खराब स्वाद क्यों कहूँ, शायद उन्हें ऐसा ही पसंद हो। मैंने तर्क और दलीलों से खुद को समझाने की कोशिश की, लेकिन फिर भी दूसरी बार मुंह से लगाने के बाद भी मुझे उसे वापस लेने पर मजबूर होना पड़ा। कोई और चारा न देखकर, मैंने प्यार से दोरजे के छोटे बेटे को पास खींचा, फिर बहुत प्यार से उसे गोद में उठा लिया, इस बार चाय उसके मुंह के पास करते हुए कहा - खाओ। हैरानी की बात है! मेरे इस व्यवहार पर किसी ने एक भी आवाज़ नहीं की। लड़के ने एक घूंट लिया और वह भी मुँह फेर लिया, इस बार मैंने उसके बड़े भाई को आवाज़ दी, उसने भी आकर एक घूंट लिया, उसके बाद और कोई मुश्किल नहीं हुई, आखिर में दोरजे की बेटियों ने भी मेरे कप से चाय पी, यह लगभग प्रसाद पाने जैसा था। मैंने खाली कप मिसेज दोरजे को देते हुए कहा - बहुत बढ़िया।

जैसे ही मैंने बोलना खत्म किया, वह उठा और कप में थोड़ी और चाय डाल दी। क्या मुसीबत है, अच्छी चाय भी खतरनाक होती है। इस बार उसने मुझे दोस्ताना तरीके से समझाया कि मुझे अब बच्चों को यह नहीं देनी चाहिए और खुद पी लेनी चाहिए। सब लोग मेरे आस-पास बैठे थे, मुझे देख रहे थे, जैसे मुझे ज़बरदस्ती हमेशा का पानी पिलाया जा रहा हो।

कोई रास्ता नहीं है, मुझे उन्हें खुश करना है। अब मैंने मन में सोचा कि मैं तिब्बत में पहली बार ऐसे माहौल में आया हूँ, मुझे इस परिवार को दुखी नहीं करना चाहिए। क्योंकि मैं अभी-अभी इस देश में आया हूँ, इसलिए मुझे उनके खाने और सोशल सिस्टम के हिसाब से ढलना होगा। सब कुछ नॉर्मल है। ये सोचते हुए मैंने चाय की एक चुस्की ली। ऐसा लगता है कि नमक डाला है, चीनी का ज़रा भी नामोनिशान नहीं है। इस सर्दी में दूध को मक्खन की तरह रखने का फ़ायदा यह है कि मक्खन ठंड में जमने पर सख्त हो जाता है। मक्खन का स्वाद भी अलग होता है, ऐसा लगता है कि यह याक के

दूध से बना है। पहले हमने रास्ते में चाय पी थी, लेकिन ऐसा लगा कि उसमें थोड़ा गुड़ मिला हुआ है। मुझे जो बांस का कप दिया गया था, उसमें हमारे देश में चार-पाँच कप चाय आ जाती थी, भले ही कम हो। मैंने चाय पी।

৮২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

खाने के बाद मैं मुस्कुराई और उन्हें फिर से धन्यवाद दिया, और ध्यान से यह एहसास छिपाया कि मेरा पेट उनके लिए मचल रहा था।

वे मेरे आस-पास बैठ गए, मेरे पास कहने के लिए कोई शब्द नहीं थे या मैं बहुत कुछ कह सकता था क्योंकि साधु बाबा ने अपने चुप रहने वाले शिष्य को यहीं अपनी कसम तोड़ने का आदेश दिया था, मौका था, लेकिन कोई रास्ता नहीं था। पूरा दोरजे परिवार मेरे आस-पास बैठा था; ऐसा लग रहा था कि उनकी बेटियाँ मुझसे बड़ी थीं, मैं उनके बच्चों जैसा था। उनकी आँखों में सच्चा आदर और भक्ति थी। समय बिताने के लिए, मैं बीच-बीच में उस छोटे लड़के के साथ मुस्कुराने लगा। फिर मुझे लगा कि वे शायद मुझसे कोई प्रार्थना या कविता सुनना चाहते हैं। यह सोचकर, मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और प्रार्थना की मुद्रा में बैठकर कवि की लिखी अपनी पसंदीदा कविताओं में से एक सुनाई। असल में, इस कविता का समय और जगह से कोई लेना-देना नहीं है, यह बस कुछ कहने के लिए कही गई थी। मेरे पढ़ने के आखिर में, मिसेज़ दोरजे धीरे-धीरे सबको कमरे से बाहर ले गईं, उनके पति भी उठ गए लेकिन उस महिला ने मुझे ज़बरदस्ती बैठने पर मजबूर कर दिया। फिर वह महिला खुद भी चली गईं। मैं कमरे में उनकी सबसे बड़ी बेटी के साथ बैठा था जो मेरी तरफ मुँह करके खड़ी थी और जिसने चाय बनाने में मदद की थी। मेरे मन में सवाल उठा, लेकिन क्यों?

लड़की पास आई और ठीक मेरे सामने बैठ गई। उसके चेहरे की सादगी और पवित्रता त्रिशा की सफ़ेद चोमलहारी की तरह पवित्र थी। मेरे अंदर का पुराना बिमल मुझे धक्का देता हुआ सा लगा - क्यों? लड़की ने मेरी तरफ़ शर्माती हुई आँखें उठाईं और कुछ कहा, जो मुझे समझ नहीं आया। मैंने उसके सिर पर हाथ रखकर समझाने की कोशिश की कि भगवान तुम्हारी रक्षा करे। तुम जो कह रही हो, मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा, प्लीज़ मुझे माफ़ कर दो।

मेरे चुप रहने वाले पिता गायब हो गए थे। मैंने खुद को, एक सोलह साल के बंगाली लड़के को, एक जवान तिब्बती लड़की के सामने पाया! वह क्या चाहता है, उनके रीति-रिवाज क्या हैं, मेरा क्या फ़र्ज़ है? मेरे सीने में खून का बहाव तेज़ हो गया था। मैंने बहुत समय से ऐसी स्थिति का सामना नहीं किया था। इस माहौल में मैं क्या करूँ, अच्छा करने से भी बुराई हो सकती है। अगर मैं अपनी चाल में एक छोटी सी गलती करता, तो साधुओं का पूरा ग्रुप खतरे में पड़ सकता था। मैंने बहुत ध्यान से अपनी जिज्ञासा को कंट्रोल किया। फिर, आँखें बंद करके, मैंने अपना फ़र्ज़ तय करने के लिए रत्न-मंत्र का जाप करना शुरू कर दिया।

मुझे ध्यान करते देख, लड़की खुद बोलने लगी। उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ा कि मैं समझ पाया या नहीं, वह अपनी कहानी सुनाती रही। कभी-कभी वह मेरी तरफ़ देखती और फिर कुछ बुदबुदाती। ऐसा लग रहा था जैसे वह अपना दिमाग खोल रही हो और मुझे अपने दिल की बात बता रही हो। लेकिन क्या?

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৮৩

भगवान जाने। फिर ठाकुर ने मुझे ऐसे झुकाया जैसे प्रणाम कर रहे हों और मेरी तरफ देखा। काफी देर की चुप्पी के बाद वे चले गए, एक-एक करके उनके पिता, माता और भाई-बहन घर लौट आए। मैं थोड़ी देर और बैठा रहा और फिर उठ गया। पूरा दोरजे परिवार मेरे साथ बंगले पर आया। मैंने सोचा कि गुरुजी को वहीं पाऊंगा, उन्हें सब कुछ बताऊंगा और उनकी बात सुनूंगा। जब मैं बंगले पर पहुंचा तो पाया कि वे वहां नहीं थे, यानी अभी तक लौटे नहीं थे। तो मैंने मुस्कुराते हुए उस रात के लिए पूरे दोरजे परिवार को अलविदा कहा। मैंने बिना बात किए ही हमारे ग्रुप के हर लामा से करीबी बना ली थी। मैं उनके नाम नहीं जानता था। बेशक, मैं उनके साथ इशारा करके काम करता था, उनमें जो बहुत चालाक था, वह दूसरे लामाओं से छोटा था, और गुरुजी की गैरमौजूदगी में उसने छोटी-मोटी जिम्मेदारियां संभाल लीं। मुझे घर में आते देख वे आगे आए और मुस्कुराते हुए मुझसे बोले - भक्त कुछ सब्जियां, चावल और गेहूं लाए हैं, देखते हैं मैं क्या बना सकता हूं।

यह इलाका तिब्बत का ऊंचा इलाका है। फरिज़ोंग समुद्र तल से करीब 15,000 (पंद्रह हज़ार) फीट ऊपर है। टुनाओ भी लगभग इतनी ही ऊंचाई पर है। खंगमा या नियांग नदी की घाटी तुलनात्मक रूप से नीची है, लेकिन दार्जिलिंग या गंगटोक से बहुत ऊंची है। हिमालय की छत यहां सिर्फ बर्फ का साम्राज्य है। ऐसा लगता है कि ये शहर भारत के साथ ट्रेड रूट की वजह से ही डेवलप हुए हैं, वरना यहां खेती लगभग नामुमकिन है। आम लोग गाय और भेड़ चराते हैं, और बहुत कम गर्मी के दिनों में वे थोड़ा जौ और जई उगाते हैं, लेकिन ज़्यादातर समय वह फसल घर पहुंचने से पहले ही बर्फ से खराब हो जाती है। ऐसे में, जब लामा ने मुझे बताया कि सब्जियां मिल गई हैं, तो मुझे खुशी से ज़्यादा हैरानी हुई। खैर, जब मैं किचन में गया, तो मैं सच में हैरान रह गया। पांच सेर आलू, बारह या तेरह पहाड़ी चुकंदर और जौ। एक गांव वाले ने मुझे मक्खन दिया, तो यह

हमारे लिए एक खास दिन है। लामा आमात्य (उनका नाम) ने मुझे सब्जियां काटने का ऑर्डर दिया। जौ की खिचड़ी बनेगी।

अगली सुबह, मैं उठा तो देखा कि मिसेज़ दोरजे और उनकी बेटी बरामदे में बीच में आग जलाकर बैठी थीं। मेरे मन में बिना वजह जिज्ञासा हुई, क्या बात है, वे इतनी सुबह यहाँ क्यों हैं? क्या उन्हें कल मेरे बर्ताव में कोई कमी दिखी थी? खैर, हमेशा की तरह, मैंने कंबल मोड़ा और आँखें मलते हुए गुरुजी के पास आया, लेकिन वे अभी भी नहीं जागे थे। मैं उनके जागने तक वहीं बैठा रहा। इस बीच, जैसे ही मैंने खिड़की से मिसेज़ दोरजे को देखा, उन्होंने और उनकी बेटी ने जीभ निकालकर गुड मॉर्निंग कहा। मैं उनके पास नहीं गया और गुरुजी का इंतज़ार करने लगा। थोड़ी देर में गुरुजी उठे, और मुझे पास बैठा देखकर उन्होंने पूछा

৮৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

"क्या तुम ठीक से सोए?" मैंने जवाब दिया, "हाँ।" फिर मैंने प्यार से उसे बताया कि बाहर एक औरत उसका इंतज़ार कर रही है। "क्या ऐसा है?" उसने कहा और कमरे से बाहर चला गया। मैं भी उसके साथ बाहर आ गया। हमें कमरे से बाहर जाते देख, मिसेज़ दोरजे बरामदे के कोने में रखा एक बर्तन ले आईं और हमें दे दिया। फिर उसने प्यार से कहा, "मैं तुम्हारे लिए चाय लाई हूँ।"

फिर से चाय, और आज सुबह! पता नहीं चाय का नाम सुनते ही मेरा पेट क्यों मचलने लगा, पर मैं थोड़ा शांत हो गया। ये बेचारे जो इतने आदर से लाए हैं, उसे खुशी-खुशी मान लेना चाहिए; तथागत इससे खुश होंगे। चाय गर्म

उसकी रिक्वेस्ट समझता हूँ, इसलिए वह दूसरों के सामने कुछ भी नया नहीं कहेगी।

हम भी कुछ देर चुपचाप बैठे रहे। फिर मैंने गुरुजी से कहा, "मेरे बारे में कुछ मत कहिए।" उन्होंने असहमति में सिर हिलाया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৮৫

उन्होंने कहा, "बिना जाने तुम किसी सवाल का जवाब कैसे दे सकते हो?" खासकर ऐसे विषय पर, तुम्हें बच्चा नहीं होना चाहिए। उनकी बातें सुनकर मैं मन ही मन मुस्कुराया, "अरे बच्चे! क्या उन्होंने मुझे दीक्षा देकर बच्चा नहीं बनाया? क्या उन्होंने मुझे चुप रहने वाले पिता का रूप देकर बच्चा नहीं बनाया?" बेशक, उनके अच्छे या बुरे गुणों को आंकना मेरा काम नहीं है। अब मेरा मुख्य काम इस समस्या को हल करना है। मिसेज दोरजे और उनकी बेटी उनका इंतज़ार कर रही हैं, अगर उन्हें मुझसे जवाब नहीं मिला तो शायद वे जागें भी नहीं। मैं एक बड़ी समस्या में हूँ। मैं इन दो समस्याओं के बीच फँस गया हूँ: एक तरफ पाखंड और दूसरी तरफ विवेक। मुझे जवाब देना है। गुरुजी इस मामले में मेरी तरफ से कुछ नहीं कहेंगे, वे बस इसका अनुवाद करेंगे। मैंने लड़की के चेहरे की तरफ देखा, सादगी और पवित्रता की प्रतिमूर्ति, वह अपनी बकवास से उन्हें धोखा देने की कोशिश कर रही थी। यह नहीं कहा जा सकता कि यह भी मेरी तरक्की के रास्ते में किस्मत का इम्तिहान हो सकता है। अचानक मेरे दिमाग में एक विचार आया। मैंने गुरुजी से समझाने के लिए कहा। लड़की से बात करते हुए मैंने कहा, "सोमम (लड़की का नाम), भले ही मुझे तुम्हारी कही हर बात समझ नहीं आई, लेकिन बुद्ध, जो बुद्धिमान और ध्यान करने वाले हैं, उन्होंने सब सुन लिया है। उन

पर भरोसा रखो और ज़िंदगी के रास्ते पर आगे बढ़ो, वे तुम्हारा भला करेंगे। मैं तिब्बत के सबसे बड़े मंदिर में तुम्हारे लिए भगवान से प्रार्थना करूँगा, मेरा वादा है।"

जैसे ही गुरुजी ने मुझे ये शब्द समझाए, माँ और बेटी दोनों मेरे सामने झुक गईं। उनके चेहरे पर मुस्कान आ गई। इससे बड़ा कोई तोहफ़ा नहीं हो सकता था। उसकी माँ ने मुझे छुआ और कहा, "मुझे पता है कि तुमने सब कुछ सुन और समझ लिया है। तुम विजयी हो!"

अगर मैं तिब्बती शब्दों को सीधे समझ पाता तो बहुत अच्छा होता। जब माँ और बेटी हमें छोड़कर जा रही थीं, तो मैंने उन्हें देखा। बेदाग और पवित्र चरित्र की ऐसी निशानी मेरी ज़िंदगी का एक यादगार चैप्टर है। जो लोग लोगों को अपने दिल में भगवान की तरह जगह देते हैं, वे भगवान के प्यारे बच्चे लगते हैं।

महातीर्थ का मार्ग

श्री सोरन थापा की मेहमाननवाज़ी में हम बहुत आराम कर रहे हैं। और साथ ही हमें गाँव वालों से मिलने-जुलने का मौका भी मिल रहा है। उनकी सलाह पर, श्री थापा गाँव के चार और जाने-माने लोगों के साथ हमारी हर तरह से मदद करना चाहते हैं। वे इस इलाके की सड़कों और घाटों को अच्छी तरह जानते हैं, वे हमें इस बारे में सलाह देंगे। ठाकुर पहले बंगले में नौकर हुआ करते थे, लेकिन इन दिनों मेहमान बहुत कम हैं, लगभग नहीं के बराबर। इसलिए हम जैसे मेहमानों से मिलने और उनकी बात सुनने का बोझ गाँव वालों पर आ गया है। वे हमेशा हमारे आस-पास रहते हैं। हालाँकि हमारी ज़रूरतें बहुत छोटी हैं, लेकिन वे हमेशा सेवा के लिए तैयार रहते हैं। हम सलाह के लिए बैठे, गाँव वाले हमारे लिए चाय बनाने में लग गए।

अभी तक रास्ते के बारे में गुरुजी से कोई बात नहीं हुई है। मुझे बस इतना पता था कि मैं तिब्बत जा रहा हूँ, अब मुझे पता है कि मैं तिब्बत पहुँच गया हूँ। गुरुजी ने सारी ज़िम्मेदारी ले ली है कि कहाँ जाना है, कहाँ रहना है, क्या खाना है, हमारा काम आगे बढ़ना है। इसलिए, गाँव के बुज़ुर्गों से इस बारे में बात करना मेरे लिए बहुत दिलचस्पी की बात है।

इस बातचीत से हमें सबसे पहले अपने आगे के रास्ते के बारे में पता चला, वहाँ से हम ग्यात्से जाएँगे। फिर वहाँ से हम पूर्वी रास्ते से ल्हासा जाएँगे। अगर ल्हासा में लामा लोग तन और मन से ठीक हैं, तो हम ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे श्यगत्से नाम के शहर में वापस आ जाएँगे। वहाँ से हम फिर से एक नई जगह, कैलाशनाथ और मानसरोवर के लिए निकलेंगे, फिर हम अल्मोड़ा होते हुए भारत लौट आएँगे।

इस खंगमा गांव से ल्हासा के लिए सीधा रास्ता है, गुरुजी उस रास्ते से जाना चाहते थे लेकिन शोरंजी ने कहा कि हमें ग्यात्से जाना होगा। वहां से टेलीग्राम आया था, वहां के पुलिस ऑफिस ने हमें पहले ही बता दिया था कि हमें वहां रिपोर्ट करना है।

तिब्बत की गुफाएँ भारत के मंदिरों की तरह ही तीर्थस्थल हैं। लेकिन मुख्य वे हैं जहाँ तीर्थयात्री सदियों से आते रहे हैं। इनमें ल्हासा, शिगात्से और कैलाशनाथ के मंदिर खास हैं। लामाओं और संतों की ये तीनों जगहें महान तीर्थस्थल हैं, जिनमें कैलाशनाथ का स्थान सबसे सम्मानजनक है। पाँच साल पहले भी, ये जगहें भारतीयों के लिए खुली थीं, आजकल

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৮৭

पॉलिटिकल वजहों से वह रास्ता दिन-ब-दिन बंद होता जा रहा है। चीनियों या हिंदुओं का कोई धर्म नहीं है, पॉलिटिक्स ही उनका धर्म है और नेताओं ने भगवान की जगह ले ली है। लेकिन अब तक उन्होंने तीर्थयात्रियों पर कोई रोक नहीं लगाई है। हालांकि, चाहे वे भारतीय तीर्थयात्री हों या स्वर्ग के तीर्थयात्री, उनकी एंट्री मना है। नेपालियों के लिए रास्ता अभी भी खुला है, मैं उस रास्ते का यात्री हूं। आम तिब्बतियों के लिए नेपाल, सिक्किम, भूटान सब भारत के हिस्से हैं, उनमें कोई फ़र्क नहीं है।

सिक्किम से यहां तक के रास्ते में मौसम भी बहुत बदल गया है। नाथुला पार करने से पहले और बाद में हमें नमी वाली ठंडी हवा मिली थी, लेकिन जैसे ही हमने तांगला पार किया, वह हवा गायब हो गई, अब हमें ठंडी, सूखी हवा मिल रही है, जिससे हमारी हड्डियां कांप रही हैं। अगर हमें रात में आग न मिली होती, तो हम इतनी दूर नहीं आ पाते, हमें शरीर को सड़क पर ही छोड़ना पड़ता।

अब हम बर्फ़ के राज्य में हैं। हिमालय पार करने में हमें पंद्रह दिन लगे। अब हमारे चारों तरफ़ छोटे-छोटे पहाड़ और घाटियाँ हैं, और बर्फ़ पिघलने से बनी पहाड़ी नदियाँ हैं। ठंडी हवा दिन में थोड़ी दूर चली जाती है और धूप में इंतज़ार करती है, और शाम को ही वापस नीचे आती है। यहाँ रात की ठंड बहुत भयानक होती है। तिब्बत एक अजीब देश है। इसके दक्षिण में हिमालय पर्वत श्रृंखला है, और उत्तर में कुएन लुन पर्वत श्रृंखला है। इन दो पहाड़ी दीवारों के बीच छिपा यह बहुत ठंडा देश है, जिसकी औसत ऊँचाई लगभग तेरह से पंद्रह हज़ार फ़ीट है और तापमान एक सौ पाँच डिग्री तक बढ़ जाता है और शून्य से पैंतालीस डिग्री नीचे

गिर जाता है। अभी बर्फ़ गिरना मुश्किल से बंद हुई है, यह अभी दिन में धूप में धीरे-धीरे पिघलना शुरू हुई है। असली गर्मी अभी दूर है।

चुम्बी वैली के बाद हम जितना उत्तर की ओर जाते हैं, उतना ही बर्फ के साम्राज्य में पहुँचते हैं। यह इलाका सिर्फ़ इंडो-तिब्बत ट्रेड रूट की वजह से बसा हुआ है। हमारे साथ बहने वाली नदी इस इलाके का ग्लेशियर का पानी है, जो आगे उत्तर की ओर बहकर ब्रह्मपुत्र में मिल जाती है। अगर हम इस नियांग नदी के किनारे-किनारे चलते रहें, तो हमें ग्यात्से शहर मिलेगा। हम चाहें तो भी उस रास्ते से नहीं जा सकते जो खंगमा से ल्हासा तक थोड़ी देर के लिए जाता था, बल्कि हमें ग्यात्से जाना ही होगा।

मीटिंग में कई लोगों ने हमें सलाह दी कि एक साथ जाने के बजाय दो या तीन ग्रुप में बंट जाना बेहतर होगा, क्योंकि लगभग दस मील उत्तर में एक बड़ा हान आर्मी बेस था, और वे हमें बेवजह परेशान कर सकते थे। खासकर जब हम भारत से आ रहे थे, तो वे इन तीर्थयात्रियों को जासूस भी समझ सकते थे।

उनकी दूसरी सलाह है कि जितना हो सके बड़ी गुफाओं से बचें। ग्यात्सो के मंदिरों में हान सैनिक तैनात हैं, और जब भी वे विदेशियों को देखते हैं तो उनसे पूछताछ करते हैं। हमारा अभी का डेस्टिनेशन ल्हासा है; हमारा परमिट ल्हासा के लिए है।

৮৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

वहां कोई डर नहीं है। गांव वाले चाहते हैं कि हम कुछ और दिन रुकें, लेकिन हमारी इच्छा है कि हम जितना हो सके उतना दूर जाएं।

तिब्बत में मैंने एक और बात देखी कि आम तिब्बती, यहाँ तक कि सोरोन थापे मसाई भी, यहाँ के अलग-अलग शहरों के बीच की दूरी नहीं जानते। कोई भी मील में दूरी नहीं जानता, दूरी दिनों या बेला में मापी जाती है। यानी, यहाँ से वहाँ तक एक दिन का सफ़र, पाँच दिन का सफ़र, साढ़े सात दिन का सफ़र वगैरह होता है। हालाँकि कभी-कभी फाद ज़ोंग और ग्यात्सो के बीच लॉरी चलती हैं, लेकिन वे यात्रियों को नहीं ले जातीं। आने- जाने के लिए गधे, घोड़े, याक गाड़ियाँ और अमीर परिवारों के लिए पालकी का इस्तेमाल किया जाता है।

मीटिंग चर्चा और चाय के साथ खत्म हुई। हमें जल्द से जल्द जाना है।

वहाँ तीन रात आराम करने के बाद, हमें गाँव वालों से विदा लेनी पड़ी। जब हम जा रहे थे, तो कई गाँव वाले एक बेसिन में पानी लाए और उसमें हमारे पैर धोए, और साथ ही, हमने भी उनकी मेहमाननवाज़ी के लिए उन्हें दिल से दुआएँ दीं, फिर साथ में प्रार्थना करने के बाद, हम अपने रास्ते पर निकल पड़े। गाँव वाले भी हमें थोड़ा और आगे जाने देने के लिए हमारे साथ आगे बढ़े। गाँव वालों में, दोरजे परिवार भी मेरे साथ चला। बिना किसी वजह के, मैं सोम को देखता रहा, ऐसा लग रहा था कि मैं उसे कुछ नहीं दे सकता। अचानक, मुझे याद आया कि मेरे पास कुछ एक्स्ट्रा रुद्राक्ष ब्रेसलेट हैं, और चलते-चलते मैंने उन्हें अपने बैग से निकाल लिया। फिर, आखिरी पल में, मैंने उन्हें सोम के हाथों में रख दिया, मुस्कुराते हुए और खुद से कहा - यह मेरा आखिरी तोहफ़ा है। मुझे पता है कि लामाओं से माला मिलना तिब्बतियों के लिए बहुत किस्मत की बात है।

तीर्थयात्री का पहला अभिवादन

৯০

अगली सुबह, दोनों तरफ के पहाड़ धीरे-धीरे हमारे पास आने लगे। नियांग नदी का चौड़ा रूप धीरे-धीरे छोटा होता गया। आखिर में, जहाँ हम पहुँचे, वहाँ नियांग-चू घाटी थी। ऐसा लग रहा था कि पूरी घाटी एक रहस्यमयी दुनिया में आ गई है, और नदी दो पहाड़ों के बीच में है।

जब हम नाथू ला जा रहे थे तो सड़क कुछ ऐसी ही थी, बस फर्क इतना था कि यह ऊपर जाने वाले रास्ते पर थी। लेकिन इस बार सड़क नीचे की ओर गई।

बड़ी नदी धीरे-धीरे पाताल की ओर उतरती हुई लग रही थी। अचानक यात्रियों की उत्सुकता और उत्साह सौ गुना बढ़ गया। हमारे चलने की स्पीड अपने आप बढ़ गई। ऊपर नीला आसमान था, और हमारे दोनों तरफ के पहाड़ नदी से दीवारों की तरह दूर हट गए थे। वह दीवार नदी से कम से कम तीन हज़ार फ़ीट ऊँची लग रही थी। असल में, इस नियांग-चू नदी ने हज़ारों सालों की कोशिश के बाद यह भयानक रास्ता बनाया है। पानी ने पहाड़ों को काटकर रास्ता बना दिया है, नदी का शांत रूप यहाँ रुद्र के रूप में बदल गया है। यहाँ उसकी तबाही की तस्वीर, उसका भयानक रूप है। तबाही का गवाह आज भी मौजूद है। नदी को रोकने की बेकार कोशिश में बड़े-बड़े पत्थर पड़े हैं। नदी की ताकत यहाँ इकट्ठा है और सैकड़ों रुकावटों को नज़रअंदाज़ करते हुए आगे बढ़ती जा रही है। उसका रूप भयानक है और उसकी आवाज़ भी भयानक है।

बाढ़ की नदी तस्वीरों का एक कलेक्शन है, बारिश की तस्वीर अलग होती है। और यहाँ हम उसकी पहाड़-दरार तस्वीर देखते हैं। जैसे-जैसे हम पास

पहुँचे, हमें एक अनोखा रूप दिखाई दिया। ऐसा लगा जैसे सपनों के राज का दरवाज़ा अचानक खुल गया हो। नीले आसमान के नीचे हमारी दुनिया में छिपा था दुनिया का यह अजूबा। इस अनोखी खूबसूरती को बताने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। सिर्फ़ मैं ही नहीं, हम सब अचानक शांत हो गए। इस बेपनाह खूबसूरती ने अचानक हमारे सीने पर खुशी की लहर दौड़ा दी। झरने की खूबसूरती को और क्या कह सकते हैं! अपनी हैरानी दूर करने में हमें थोड़ा समय लगा, फिर हम सबने मिलकर उस खूबसूरत भैरवी की रुद्र रूप में पूजा शुरू कर दी - हे देवी!

आप सुंदरता और कुरूपता की देवी हैं, आप प्रकाश और अंधकार की देवी हैं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

आप ज्ञान और अज्ञान से परे हैं। हमें आपको समझने की शक्ति दें, हमें आपको देखने के लिए आँखें दें, और हमें आपके निराकार रूप को उसके भौतिक रूप में देखने दें। हमें आगे ले चलो, हमें आगे ले चलो, हमें आगे ले चलो।

नदी अचानक अपनी पूरी ताकत से नीचे गिरी, और नतीजतन, पानी फट गया और सफेद हो गया। वही नियांग नदी यहां एक हजार झरनों में बदल गई है। ऐसा लगता है कि हजारों सुंदरियां किसी अज्ञात देवता के लिए अपने सफेद बाल फैलाए नाच रही हैं। सूरज की रोशनी उस पर पड़ती है और छोटे इंद्रधनुष बनाती है। वे अपने ही खेल में मदमस्त लगती हैं, अलग-अलग आकार के पत्थरों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। पत्थर भी अलग-अलग रंगों के हैं, और उनमें काई जमा होकर हरा किनारा बना है। उनके बगल में कई चैत्य या चोर्टेन हैं और पहाड़ की दीवार पर, दीप्तिमान भगवान बुद्ध की शांत मूर्ति किसी अज्ञात कलाकार की अमर कलात्मक प्रतिभा

के हस्ताक्षर के रूप में खड़ी है। दुनिया के इस एकांत कोने में प्रकृति और मनुष्य का एक अंतहीन खेल चल रहा है। शिव से भरे पहाड़ पर नदियों के साथ प्रकृति के इस खेल में सृष्टि का रहस्य छिपा है।

पहाड़ पर अजंता के फ्रेस्को की तरह बुद्ध की कई मूर्तियां खुदी हुई हैं, जो बहुत पुरानी हैं। इन मूर्तियों में सबसे खास, जो नीले, लाल, पीले और हरे रंग की हैं, भगवान पद्मसंभव की मूर्ति है। पहाड़ पर लिखा है - 'जो मेरी पूजा नहीं करते उनका रास्ता अंधेरा है।' इसलिए, हर तीर्थयात्री को यहां पूजा करना और प्रसाद चढ़ाना ज़रूरी है। कैलाश जाते समय, पहला प्रसाद यहीं चढ़ाना होता है।

पद्म स्वामी को तिब्बत का मुख्य देवता कहा जा सकता है, जो भगवान बुद्ध का दूसरा रूप हैं। उनकी मूर्ति तिब्बत की किसी भी गुफा में मिल सकती है। वे असल में एक जाने-माने कश्मीरी विद्वान थे। तिब्बत के राजा उन्हें बौद्ध धर्म का प्रचार और प्रसार करने के लिए तिब्बत ले आए थे। उन्होंने गूढ़ तंत्र और बौद्ध धर्म को मिलाकर बौद्ध तंत्र को एक रूप दिया। उनके चमत्कारी कामों और गहरी समझ को जानने के बाद, तिब्बत के लोग उनके चरणों में समर्पित हो गए। तिब्बत के कुछ मठों और मंदिरों में पद्म स्वामी को भगवान बुद्ध से भी ऊँचा स्थान दिया गया है। तिब्बत के आम लोगों के लिए, उन्हें गुरु रिम्पोछे के नाम से जाना जाता है। गुरु रिम्पोछे का मतलब है अनमोल गुरु; जिनके गुणों को दुनियावी चीज़ों से नहीं खरीदा जा सकता। कई तिब्बती किताबों में, उन्हें उर्ज्ञान लामा भी कहा जाता है! उनकी चमत्कारी शक्तियाँ अनंत थीं। गुरु रिम्पोछे के आने के बाद, तिब्बत के पुराने राक्षसों और भूतों में भी डर पैदा हो गया था। गुरु रिम्पोछे ने उन्हें काबू में किया और लोगों के मन में आत्मविश्वास भरा। गुरु

117

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৯১

रिम्पोछे कभी-कभी खालीपन की यात्रा पर कैलाश जाते थे, जहाँ वे जिन आत्माओं को देखते थे, उन पर राज करते थे। पद्म संभव के पास दिव्य शक्तियाँ थीं, और उनके जादू की वजह से, पहले के राक्षसी सिद्धों ने उनके सामने सरेंडर कर दिया और पद्म संभव की धार्मिक सर्वोच्चता को स्वीकार कर लिया। पद्म संभव ने तिब्बत में बौद्ध धर्म को हमेशा के लिए स्थापित किया। उन्होंने ही तांत्रिक साधना को बौद्ध धर्म के साथ जोड़ा। इस तरह तिब्बत में बौद्ध तंत्र बना। उनकी सलाह पर, तिब्बत के उस समय के राजा, त्रि-स्रोन-दे-सान ने पूरे देश में मठ, विहार और चैत्य बनाए। यह शायद सातवीं सदी के आखिर की बात है। सिक्किम या भूटान के रास्ते कैलाश जाने वाले तीर्थयात्री उन्हें अक्सर पद्मासन बाबा के नाम से जानते हैं।

पद्मसंभव की मूर्ति के आस-पास और भी कई मूर्तियाँ हैं; उनमें ध्यानी बुद्ध, मंजुश्री और अवलोकितेश्वर की मूर्तियाँ सभी ध्यान में डूबी हुई हैं। ध्यान का ऐसा सुंदर माहौल दुनिया में बहुत कम मिलता है। इसके दूसरी तरफ, हमने चैत्यों की एक लाइन देखी। सड़क आगे बढ़ी और उसके दोनों तरफ यह सुंदर तीर्थस्थल बना हुआ था। इस जगह का नाम नियांग-चू-चोर्टेन है। इस जगह का नाम चैत्यों और फव्वारे के नाम पर रखा गया है।

यहां हमें एक छोटी सी गुफा मिली। गुफा नहीं तो किसी पुराने मंदिर के खंडहर जैसी ज़्यादा थी। हमने अपना सामान वहीं रखा, फिर पूजा के लिए तैयार हो गए। गुरुजी ने कहा - हम यहां एक घंटा रुकेंगे। यानी पूजा,

खाना बनाने और खाने के बाद लगभग दोपहर हो जाएगी। फिर हमें फिर आगे बढ़ना होगा। हम रात में यहां नहीं रुक सकते। यहां की हवा भी नहाने के लिए बहुत भारी है, हममें से कई लोगों को सर्दी-खांसी है और हम इसे बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे। गुरुजी ने हमसे बार-बार कहा - ध्यान लगाकर इस जगह की महानता को महसूस करने की कोशिश करो। मैंने किसी जगह की महानता के बारे में कई बार सुना है, लेकिन यह पहली बार सुन रहा हूं कि इसे महसूस किया जा सकता है। कैलाश के रास्ते में यह एक और नया अनुभव है।

ग्येट्से शहर में घुसने से पहले कुछ बातें जान लेना अच्छा रहेगा। भगवान बुद्ध के तीन मुख्य रूप हैं - ध्यान बुद्ध, ध्यान बोधिसत्व, मानसी बुद्ध। तिब्बती में इनके नाम हैं - ओ-पा-मे, चेन-रे-जी और शाक्य थुप। संस्कृत में इन्हें अमिताभ, अवलोकितेश्वर और शाक्यमुनि कहा जाता है। तिब्बत में बौद्ध मठ और मठ इन तीन कैटेगरी में आते हैं, लेकिन इनके अलावा भी कई ब्रांच हैं। पंचेन लामा को अमिताभ बुद्ध या ताशी लामा कहा जाता है, और दलाई लामा अवलोकितेश्वर का ही एक रूप हैं, दलाई लामा का लोकल नाम चेन-रे-जी है।

हमारा लक्ष्य पंचेन लामा और दलाई लामा के दर्शन करना है। फिर हम कैलाश के रास्ते पर चलेंगे।

৯২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

भगवान कहते हैं - शरीर दुख का कारण है, मन केवल उसे व्यक्त करता है। दुख है,

ओ-पा-मे या अमिताभ बुद्ध

शाक्य-थूप या शाक्य मुनि

चेनरेज़ी या अवलोकितेश्वर

धन के दाता, महान बुद्धिमान आर्य-तारा

भगवान बुद्ध के ये चार रूप तिब्बत में हर जगह देखे जाते हैं।

और दुख की जड़ में उसका कारण है। दुख को खत्म करने के लिए, हमें उसके कारण को खत्म करना होगा।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৯৩

आज हम हिमालय के दुर्गम रास्ते को पार करके दुनिया की छत तिब्बत पहुँच गए हैं। इसके जैसी पवित्र कोई दूसरी ज़मीन नहीं है, इसके जैसी पवित्र कोई दूसरी ज़मीन नहीं है। भले ही हम कड़ाके की सर्दी में परेशान हैं, लेकिन दुनिया में कहीं और ऐसा सुकून भरा सन्नाटा नहीं है। इस पवित्र ज़मीन पर बैठकर गहराई से सोचिए, क्या मुझे कोई दुख है, दुख का कारण क्या है? क्या दुख मेटाफिजिकल है, मेटाडिवाइन है या मेटास्पिरिचुअल है? सोचिए, सोचिए, अगर आप पूरी सोच और विश्वास के साथ जानना चाहते हैं, तो पद्मसंभव खुद आपकी मदद करने आएंगे।

सभी लामा समझदार हैं, सभी फिलॉसफर हैं। गुरुजी अब तक गाइड रहे हैं, आज सुबह उन्होंने अचानक गुरु का रोल निभाया। उन्होंने सबको नदी के

किनारे बिठाया और शॉर्ट में समझाया कि क्या करना है। अब सुबह हो गई है, सूरज भी धीरे-धीरे तेज हो रहा है। हमें नदी के पास एक छोटा सा गर्म पानी का झरना मिला, नदी के पास इस छोटे से कुएं जैसी जगह में पानी जमा होता है, हमने पानी में हाथ डाला और देखा कि यह कितना अजीब है, चारों ओर बर्फ के इस साम्राज्य में, किसी ने हमारे लिए गर्म पानी बना दिया है। पानी का टेम्परेचर शरीर के टेम्परेचर से कुछ डिग्री ज़्यादा लग रहा है। इसके पास बैठकर हम मेडिटेशन में डूब गए।

एक घंटे का ध्यान टूटने के बाद हम सब नंगे ही पानी में कूद पड़े, ओह! क्या मज़ा आया। करीब डेढ़ महीने में यह पहली बार है जब हमारे शरीर पर पानी लग रहा है, चारों तरफ बर्फ है, यह बर्फ की ज़मीन है, और इसके बीच हम नंगे ही नहा रहे हैं, कुदरत का कैसा अजीब खेल है। गुरुजी ने हमें चेतावनी दी कि इसके बाद हम दोबारा नहीं नहा पाएंगे, इसलिए अच्छे से नहा लें। नहाने के बाद हमें ऐसा लगा जैसे हमारी जान में जान आ गई हो। हमने झरने के पास ही खाना बनाना शुरू कर दिया। कल नियांग-चू गुफा से निकलने के बाद हमने एक टूटे-फूटे घर में रात बिताई, रात में हमने कुछ नहीं खाया था, इसलिए हम सब भूखे थे। हमारे पास लकड़ी थी। गुरुजी ने सबको चेतावनी दी कि इस झरने का पानी शरीर के लिए अच्छा है लेकिन खाने के लिए नहीं, यह पानी पीने से बदहज़मी और पेट खराब हो सकता है। इस पानी में सल्फर की मात्रा बहुत ज़्यादा होती है।

पास में ही गियात्से है, कई लोग इसे गियानसे या गियाचियो कहते हैं। पहाड़ी रास्ते पर चलते हुए गुरुजी ने अचानक सबको इंतज़ार करने को कहा, फिर पहाड़ की जगह तय की और हमसे कहा - बहुत जल्द हम गियात्से शहर में दाखिल होंगे। वहाँ जाते समय हमें हैंड चेकपॉइंट पार करना होगा, आपको सब्र रखना होगा। भगवान से प्रार्थना करें कि हम यह आखिरी चेकपॉइंट अच्छे से पार कर लें।

गुरुजी की बातों से हमें बहुत हिम्मत मिली। और थोड़ी ही देर में हम तिब्बत के सबसे पारंपरिक शहरों में से एक पहुँच जाएँगे। तिब्बत के तीन शहर व्यापार और कॉमर्स के सेंटर हैं।

৯৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

पुराने ज़माने से अपनी कला के लिए मशहूर। इनमें नंबर एक है ल्हासा, जो तिब्बत की राजधानी है, दूसरे नंबर पर शिगात्से और तीसरे नंबर पर ग्यात्से है। ल्हासा परम पावन दलाई लामा की सीट है, शिगात्से शाक्य अवतार पंचेन लामा का घर है, और ग्यात्से अपने बौद्ध आर्किटेक्चर और तीर्थ स्थलों के लिए मशहूर है। थोड़ी देर बाद, जैसे ही हमने एक पहाड़ की दीवार पार की, हमारी नज़र ठीक सामने वाले पहाड़ पर पड़ी। अचानक, आसमान से विशाल समतल ज़मीन पर सोना बिखरा, और यह है ग्यात्से।

सुबह के सूरज की किरणें शहर की सुनहरी छतों पर चमक रही हैं, हम बहुत ऊपर हैं। यहाँ से शहर एक जादुई जगह जैसा दिखता है।

गुरुजी ने हमें समझाया कि ग्यात्से शहर साफ़ तौर पर दो हिस्सों में बंटा हुआ है, यहाँ से आप अनगिनत घर, गलियाँ वगैरह देख सकते हैं, यह शहर का एक हिस्सा है; शहर का दूसरा हिस्सा हमारा लक्ष्य है। शहर का दूसरा हिस्सा एक बहुत बड़ी दीवार से घिरा हुआ लगता है। उस हिस्से में पवित्र मंदिर और कई तरह के धार्मिक संगठन हैं। ग्यात्से का मुख्य मंदिर वहीं है। उस दीवार के अंदर जो सबसे बड़ी सुनहरी छत आप देख सकते हैं, वही यहाँ का मुख्य मंदिर है। अगर आप पास जाएँगे, तो आप

देखेंगे कि यह बौद्ध दुनिया की एक अमर रचना है, तिब्बती मूर्तिकला की आत्मा वहाँ छिपी हुई है।

गुरुजी के कहने पर हमने ध्यान से चारों ओर देखना शुरू किया, यह शहर अब तक हमने जितने भी शहर देखे हैं, उनसे कहीं बेहतर है, एक नज़र में ही आप समझ सकते हैं कि यह एक खुशहाल शहर है। ठीक जहाँ हम खड़े होकर शहर की खूबसूरती का मज़ा ले रहे थे, हमें एक चैत्य मिला। चैत्य के पास बैठकर हमने ग्यात्से शहर में घुसने से पहले आखिरी बार आराम किया।

अब नीचे उतरने की हमारी बारी थी। आधे घंटे बाद, हमें शहर की शुरुआत मिली। हमारे दाईं ओर कई झुग्गी-झोपड़ियाँ थीं, उनके पीछे खानाबदोशों के टेंट थे, और उनके चारों ओर कई याक और गधे पथरीली ज़मीन पर घास ढूंढ रहे थे।

हम सबने लामा के कपड़े पहने हुए हैं, और हम कुछ ज़्यादा ही हैं। तो रंगचांग में तीर्थयात्रियों के इस ग्रुप पर शहर के लोगों की नज़र पड़ेगी। याक हमें देखते ही रुक गए, कुछ भेड़ों ने अपनी मिमियाहट से हमारा स्वागत किया, और गाँव के पहरेदारों ने हमारा और भी दोस्ताना स्वागत किया, जो झुंड में हमारी तरफ़ दौड़े, अपनी आवाज़ में चिल्ला रहे थे, और हमें वहीं खड़े रहने के लिए मजबूर होना पड़ा। आजकल उनका भौंकना हमारे लिए जाना-पहचाना हो गया है। तिब्बत के इन यमदूतों जैसे पहरेदारों से कौन बच सकता है? उनकी आँखों में धूल झोंककर एक मक्खी भी अंदर नहीं आ सकती। लेकिन मुझे लगता है कि वे चीनी ड्रैगन से डरते हैं, वरना वे इस देश में कैसे बसे?

इन कुत्तों की एक खासियत यह है कि जब वे खड़े होते हैं तो कुछ और नहीं करते,

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৯৫

धीरे-धीरे सबने अपने रास्ते की तरफ देखा। इस शहर के एंट्री गेट पर ऐसा वेलकम। मुझे यह कोई बहुत अच्छा साइन नहीं लगा। कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनकर देश भर से लोग सड़क के पास जमा हो गए। हमें देखकर वे अपने रिवाज के हिसाब से हमें सलाम करने लगे। कुछ झुग्गी- झोपड़ियों को पार करने के बाद हम असली शहर में दाखिल हुए। दोनों तरफ मिट्टी, पत्थर और सीमेंट से बने शानदार घर और दुकानें थीं। चाय और तेल जलाने वाली दुकानें, ऊन की किराने की दुकानें भी काफी शानदार थीं। एक गली में एक मीट की दुकान हमारी नज़रों से ओझल नहीं हुई, इन घरों की छतें हमारे देश की तरह छप्पर की थीं। इकट्ठा होने के लिए बरामदे और आंगन थे। दुकानों में खरीदने-बेचने वाले ज़्यादातर लोग औरतें थीं। बाज़ार कुछ-कुछ दार्जिलिंग के सब्ज़ी बाज़ार जैसा था, लेकिन बहुत छोटा और गंदा। सड़क पर खंभों से कई भेड़ें और याक बंधे हुए थे, शायद बेचने के लिए रखे गए थे। हमारे बारे में शहर में पहले ही बात फैलने लगी थी। तिब्बतियों के लिए तीर्थयात्रियों के पास जाना पुण्य की बात है। लेकिन, अगर तीर्थयात्री भिखारी हों, तो कोई उनकी तरफ नहीं देखता। लामा तीर्थयात्रियों का बहुत सम्मान किया जाता है और भारतीय तीर्थयात्रियों को स्थानीय गुरु माना जाता है। उन्हें लगता है कि भारत से आने वाले सभी लोग पुण्य आत्मा हैं।

सड़क बाज़ार के ठीक बीच से गुज़रती है, और हम बाज़ार के बिल्कुल आखिर में एक बड़ी चाय की दुकान पर रुके। ऐसा लगता है कि यहाँ

तीर्थस्थल पर पुरी या गया की तरह पंडों से कोई परेशानी नहीं है, कम से कम अभी तक तो नहीं। कोई भी हमें किसी भी तरह से परेशान करने नहीं आया है। चाय की दुकान के बाहर, दो लड़कियाँ एक लंबे लकड़ी के चम्मच में चाय में मक्खन मिला रही हैं। बड़ी दुकानों में इस तरह की चाय मिलाने के लिए अलग लोग रखे जाते हैं, उनका काम सिर्फ़ चाय में मक्खन मिलाना होता है। हम सब दुकान में घुस गए। दुकान के ठीक बीच में, एक बहुत बड़ा कोयले का चूल्हा है, जिसके चारों ओर दस-बारह लोग भीड़ लगाए बैठे हैं। हमें देखकर, उन्होंने आदर से अपना घेरा बढ़ाया और हमें अपने बीच बुलाया, हर एक के हाथ में चाय का गिलास था।

हम सबने एक-एक ग्लास चाय पी और पैसे दिए। यह शहर इंडिया के किसी छोटे शहर जैसा ही है, बस सड़क पर घोड़े और गाड़ियां नहीं हैं। हमने सड़क पर कुछ इंडियन्स को पहले ही देख लिया था, उन्होंने हमें नमस्ते किया और आगे बढ़ गए। सड़क पत्थरों से बनी थी, सीमेंट या एस्फाल्ट से नहीं। अचानक, तीन हान सैनिक आए और हमें रोका, उनके साथ एक लोकल तिब्बती गार्ड भी था। नमस्ते करने के बाद, उन्होंने पूछा:

-आप कहां से आ रहे हैं?

-नेपाल से। हमने जवाब दिया।

৯৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

"क्या आप सिक्किम से आ रहे हैं?" उनका काउंटर सवाल था।

-हाँ। हम गंगटोक, पेमा चौकी, फारी द्ज़ोंग वगैरह से आ रहे हैं। गुरुजी ने उन्हें समझाया।

तिब्बती वॉचमैन ने हान सैनिकों को हमारी बात समझाई। आप तिब्बती सैनिकों और हान सैनिकों को देखकर ही बता सकते हैं। हान सैनिक हमारे सैनिकों की तरह खाकी कपड़े पहनते हैं। वे फुल पैंट, शर्ट, जैकेट, बेल्ट और बूट पहनते हैं, सिर पर टोपी और हाथ में राइफलें। और तिब्बती अपने ढीले लुंगी जैसे कपड़े पहनते हैं, साथ में ढीली पैंट और शर्ट जैसा कपड़ा भी। आप चाहें तो आसानी से एक आस्तीन उतार सकते हैं। सबसे बड़ी बात, उनके स्वेटर भारी होते हैं। उनके कपड़े इतने भारी होते हैं कि ऐसा लगता है कि ज़रूरत पड़ने पर वे दौड़ भी नहीं सकते। हान सैनिकों के कपड़ों में फुर्ती का एहसास होता है। मैंने यह भी देखा कि हान लोगों के चेहरे थोड़े पीले होते हैं, और वे तिब्बतियों से हाइट में छोटे होते हैं।

उन्होंने हमसे अपने पीछे चलने को कहा। कहने की ज़रूरत नहीं कि हमें फिर से पुलिस की पूछताछ का सामना करना था। ऐसा लग रहा था कि यह हमारी आखिरी परेशानी थी, अगर हम जिया त्से में इस चेकपॉइंट से आगे निकल गए, तो डर नहीं रहेगा। हमने शहर से होकर दूसरी सड़क ली और शहर से बाहर निकल गए, जहाँ हमने सैनिकों के टेंट और लकड़ी और टिन से बने टेम्पररी घरों की लाइनें देखीं।

आखिरकार हम वहां सबसे बड़े ऑफिसर टेंट पर पहुंचे। एक बड़े मैदान के चारों ओर मिलिट्री परेड चल रही थी, और उसके बीच में, एक टेंट के बगल में टेबल और कुर्सियों के साथ एक कामचलाऊ सेंटर बनाया गया था।

जैसे ही हम टेंट के पास पहुँचे, हमने एक छोटे, गोल आदमी को देखा जो अचानक एक छोटे सैनिक जैसा लग रहा था। जैसे ही हम उसके पास पहुँचे,

हमारे साथ के सैनिकों ने सैल्यूट किया। मैं समझ गया कि यह छोटा आदमी यहाँ अकेला था। मैंने कलकत्ता के परेड ग्राउंड पर ऐसी कई रिपोर्ट देखी थीं। वह ऑफिसर आदमी मुस्कुराते हुए हमारे पास आया, हमसे हाथ मिलाया, और फिर सीधे पूछा-

-आप में लीडर कौन है? उन्होंने यह तिब्बती में कहा। मैं समझ गया कि उन्हें इस भाषा पर अच्छी पकड़ है।

गुरुजी ने अपने कागज़ निकाले और कहा, "मैं उनका गाइड हूँ। हम सब काठमांडू में स्वयंभूनाथ गुफाओं से आ रहे हैं। रास्ता छोटा करने के लिए, हम सिक्किम के रास्ते आ रहे हैं। हम तीर्थ यात्रा करने जा रहे हैं, फिर जितनी जल्दी हो सके वापस आ जाएँगे।" गुरुजी ने बहुत साफ़ और छोटे शब्दों में हमारा इरादा समझाया।

अधिकारी ने हमारे परमिट की बहुत ध्यान से जांच शुरू की, फिर गंभीर स्वर में कहा:

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৯৭

৯৮

- कागज़ पर पचास लोग हैं, और बत्तीस लोग बॉर्डर पार कर चुके हैं, बाकी कहाँ हैं?

-और कोई नहीं आया।

- क्यों?

- आखिरकार बहुत ज़्यादा ठंड के कारण उन्होंने हार मान ली।

-हम्म! क्या आप पहले कभी यहां आये हैं?

-मैं ही अकेला हूं जो यहां की सड़कों को जानता हूं, मैं तीर्थयात्रियों के साथ कई बार यहां आया हूं, और इसके अलावा, यह उन सभी का पहली बार है।

-हम्म! तुम्हारे पास क्या है?

-थोड़ा सा खाना और कपड़ों का एक एक्स्ट्रा सेट।

गुरुजी का जवाब सुनकर उस आदमी ने पुकारा कि किसका नाम है। तुरंत ही, सिपाही कठपुतली की तरह उसके सामने आ गया। फिर, अपने मालिक के आदेश के अनुसार, उसने सामान की तलाशी शुरू कर दी। कहने की ज़रूरत नहीं कि उसे उन्हें छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा क्योंकि उसे हमारे पास कोई संदिग्ध सामान नहीं मिला।

मुझे शक की नज़र से देखने के बावजूद, उस आदमी ने मुझसे कोई सवाल नहीं किया। उसने मुझे जाने दिया, यह सोचकर कि मैं बहुत छोटा हूँ। रिहा होने के बाद हमने भी राहत की साँस ली। हमें इतनी जल्दी रिहा होने की उम्मीद नहीं थी। चीनी सैनिकों के इलाके से निकलकर हम बड़ी दीवार से घिरे हिस्से की तरफ़ आगे बढ़े। जैसे ही हम शहर के घनी आबादी वाले इलाके से गुज़रे, शहर के लोग हमें सलाम करने लगे। यहाँ के लोग बहुत

सीधे-सादे और भरोसेमंद लगते हैं। यह शहर तिब्बत के दूसरे शहरों से ज़्यादा साफ़ भी है।

करीब एक घंटे चलने के बाद हम बताई गई जगह पर पहुँचे। फिर, बड़े आर्चवे से होते हुए हम पवित्र जगह में दाखिल हुए।

दीवारों से घिरा इलाका एक बहुत बड़ा मंदिर है, यहाँ कई छोटे-बड़े मंदिर हैं। जैसे ही हम अंदर गए, हमें सामने एक चैत्य दिखा, जहाँ हमने अपने कंधे पर लगे बैग रखे और रुक गए। हमें देखकर कुछ जवान लामा दौड़कर आए और फिर गुरुजी से बात करने के बाद उन्हें पता चला कि हम तीर्थयात्री हैं। यह सुनकर वे गायब हो गए। पंद्रह मिनट के अंदर, सबको हमारे बारे में पता चल गया। दो बुज़ुर्ग लामा हमारी तरफ आए। नमस्ते करने के बाद, उन्होंने प्यार से पूछा कि हम कब तक रुकेंगे, कहाँ जा रहे हैं, वगैरह। परिचय होने के बाद, उन्होंने कहा, "मैं आपको मुख्य लामा से मिलवाता हूँ।" वही यहाँ अकेले हैं।

कई मंदिरों में घूमने के बाद हम एक बड़े मंदिर में पहुंचे, जहां लामा ने हमसे कहा, "मंदिर के चारों ओर घूमते रहो।"

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं देखता हूँ कि खाम्पो वहाँ है या नहीं। दूसरा लामा हमारे साथ रहता है। मंदिर बहुत बड़ा है, मंदिर के चारों ओर की दीवारें प्रेयर व्हील्स से भरी हैं। हमने ग्यात्सो के मंदिर की परिक्रमा शुरू की, यानी खुद को प्रणाम करना और फिर प्रेयर व्हील घुमाते हुए मंदिर का चक्कर लगाना। और साथ ही मंत्रों का जाप करना। दार्जिलिंग के घूम मठ से शुरू करके, मैंने अब तक जितने भी मठों में देखा है, उनमें मुझे इस तरह का प्रेयर व्हील मिला है, प्रेयर व्हील गुफा से पूरी तरह जुड़ा

हुआ है। इस मंदिर में फ़र्क यह है कि यहाँ प्रेयर व्हील्स बड़े हैं और प्रार्थना मंत्र कागज़ के बजाय सीधे टिन पर खुदे हुए हैं।

तीन चक्कर लगाने के बाद हम बैठ गए। हमने दीवारों से घिरे इस पवित्र स्थान के चारों ओर रंग-बिरंगे मंदिरों को हैरानी से देखा। लामा हांफते हुए वापस आए, उनके साथ तीन-चार और लामा भी थे जो हमसे मिलने आए थे।

उस सज्जन ने हमें बताया कि महामहिम खाम्पो (मठाधीश) अपने घर में थे और हमारा इंतज़ार कर रहे थे। बड़े मंदिर से ज़्यादा दूर नहीं, हमें एक बड़ा सफ़ेद घर मिला, जिसकी बड़ी दीवार पर लकड़ी की एक सुंदर बालकनी थी, बालकनी लाल और पीले रंग की सुंदर लकड़ी की नक्काशी से भरी हुई थी। घर के दरवाज़े और खिड़कियाँ भी लाल और पीले डिज़ाइन से सजी हुई थीं। हम सीढ़ियों से ऊपर गए और हमारे सामने एक बड़ा हॉल था। घर के एक कोने में, कुछ लामा एक आसन पर बैठे थे, जिनमें से एक इस जगह के मठाधीश, खाम्पो थे। वह ऊपर आए और हमारा अभिवादन किया, मुस्कुराते हुए हम सबका स्वागत किया और हमें बैठने के लिए कहा। गुरुजी ने उन्हें स्वयंभू गुफाओं और गंगटोक के महाराजा के बारे में बताया, साथ ही रास्ते की खबर भी दी। खाम्पो ने हमें भरोसा दिलाया कि वह कुछ दिनों के लिए यहाँ हमारे रहने और खाने का इंतज़ाम कर देंगे, इसलिए हमें चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।

फिर उन्होंने एक-एक करके सभी लामाओं का परिचय कराना शुरू किया। गुरुजी ने मेरा परिचय कराया – यह मेरा शिष्य है। यह तीर्थ यात्रा के रास्ते में मौन व्रत ले रहा है। तीर्थ यात्रा के अंत में, यह भी स्थायी रूप से लामा बन जाएगा। अब मैंने इसे कठिन मार्ग पर दीक्षा दी है।

हिज़ एमिनेंस थम्पो ने गुरुजी की बात सुनी और फिर मुझे ध्यान से देखा और कहा, "वह बिल्कुल भी नेपाली नहीं लगता, वैसे भी उसके पिता या माता भारतीय हो सकते हैं। बेशक, उत्तर भारत और नेपाली लोगों में कोई बड़ा अंतर नहीं है। लेकिन वह बहुत छोटा है, नहीं तो हैंड की सख्त नज़र से बचना मुश्किल होता, उन्हें भारतीय बिल्कुल पसंद नहीं हैं।"

गुरुजी ने कहा, "आपका अंदाज़ा सही है, चेकपॉइंट पर हमसे इस बारे में बार-बार पूछताछ की गई, लेकिन आखिर में उन्होंने हमें नहीं रोका क्योंकि हम जवान थे और तीर्थयात्री थे।"

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৯৯

১০০

खाम्पो ने मेरे सिर पर हाथ रखकर मुझे आशीर्वाद दिया और कहा, "तुम इंसान बनो, तथागत तुम्हारी रक्षा करें।" आखिर में, उन्होंने हमारी देखभाल की ज़िम्मेदारी अपने एक साथी लामा को देते हुए कहा, "हम आज शाम मंदिर में मिलेंगे।"

हमें वहाँ गेस्टहाउस में ठहराया गया, और वहाँ के लामाओं ने खाने- पीने का इंतज़ाम किया। गेस्टहाउस मुख्य मंदिर से ज़्यादा दूर नहीं है। हमें एक बड़े लकड़ी के घर के हॉल में ठहराया गया। गंगटोक छोड़ने के बाद यह हमारी पहली मंज़िल थी। हम खुशकिस्मत थे कि हमें बिना किसी रुकावट के और बहुत आसानी से यहाँ रहने दिया गया, और हमने राहत की

साँस ली। हम बहुत थके हुए थे, इसलिए गुरुजी ने सभी को अच्छे से आराम करने का आदेश दिया।

उस दोपहर, लामा और थेरवाद इकट्ठा हुए और खाम्पो ने हमें सबसे मिलवाया। मैं तीर्थयात्रियों में सबसे छोटा था, इसलिए सबकी नज़र मुझ पर पड़ी। सिक्किम से इतना दूर आने के बाद भी मैं थका नहीं था, जिससे सब हैरान थे। परिचय के बाद, हम उनके साथ डाइनिंग रूम में गए। वहाँ, सबने गुरुजी को घेर लिया और मेरे बारे में हज़ारों सवाल पूछने लगे, जैसे मैं किस संप्रदाय से हूँ, मैं मठ में कितने समय से हूँ, उन्होंने मुझे इस महान तीर्थयात्रा के लिए कैसे चुना, मैं अभी आध्यात्मिक मार्ग के किस पड़ाव पर हूँ, क्या मुझमें कोई खास गुण हैं, वगैरह।

अगली सुबह मैं जल्दी उठ गया। मैं दिन की रोशनी में इस पवित्र शहर को एक्सप्लोर करने के लिए उत्सुक था। मैंने सराय की छोटी खिड़की से बाहर देखा, लेकिन अभी तक दिन की रोशनी नहीं आई थी, इसलिए मुझे थोड़ी देर और सब्र रखना पड़ा।

सूर्योदय देखना मेरी पसंदीदा चीज़ों में से एक है, इसलिए मैं कुछ देर बिस्तर पर करवटें बदलता रहा और फिर आखिरकार उठ गया। मैंने एक बार फिर खिड़की से बाहर देखा, बाहर का नज़ारा पहले से ज़्यादा साफ़ था। बस, बस इतना ही। मैंने जल्दी से कंबल को चादर की तरह अपने चारों ओर लपेटा और घर से निकल गया, लामा की तरह कपड़े पहने, इसलिए मुझमें ऐसा कुछ भी नहीं था जो भोर की इस धुंधली रोशनी में किसी का ध्यान खींचे। मैं एक छोटे से रास्ते पर बिना डरे चलता रहा। जैसे ही मैं मठ की सड़क से हटा, दो कुत्ते भौंकते हुए मेरी ओर दौड़े, लेकिन मेरे पास आते ही रुक गए। मैं किसी तरह उनसे बच गया और थोड़ा चलने के बाद, मैं एक लामा के सामने गिर गया। वह सज्जन आगे आए, मुझे अच्छी तरह देखा,

हाथ जोड़े और सम्मानपूर्वक मेरा अभिवादन किया। फिर उन्होंने मुझसे पूछा - तुम कहाँ जा रहे हो?

कुम्मुम। मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। क्योंकि मुझे कोई और नाम याद नहीं आ रहा। वह आदमी मुझे कुम्मुम की तरफ ले गया। मैंने सोचा था कि मैं सुबह की शांति में पवित्र शहर को देखते हुए, अकेले और आज़ादी से यहाँ घूमूंगा।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

शांत नज़ारा और सूरज उगने का रंगीन आसमान, लेकिन ऐसा लग रहा था कि यह मुमकिन नहीं है, क्योंकि लामा सज्जन मेरा साथ छोड़ ही नहीं रहे हैं। हम चैत्य कुम्मुम में आए और खड़े हो गए। मुझे नहीं पता कि अगर यह लामा मेरे साथ नहीं होते तो मैं क्या करता, लेकिन उनके सामने मुझे एक सच्चे लामा का रोल निभाना पड़ रहा था वरना मैं बोल पड़ता। तेज़ ठंड और पाले से मेरा शरीर जमने वाला था, मैं ज़मीन पर लकड़ी की तरह लेट गया - प्रणाम करने के बाद, मैं प्रार्थना चक्र की ओर बढ़ा। फिर, उन चक्रों को घुमाते हुए, मैंने मंदिर का चक्कर लगाना शुरू कर दिया।

मेन गेट के सात चक्कर लगाने के बाद, मैंने मेन गेट का रास्ता लिया। लामा सज्जन तुरंत एक भक्त की तरह मेरे साथ रहने लगे। मुझे लगता है कि वे यहाँ के गार्ड हैं, क्योंकि उनकी आँखों और चेहरे को देखकर ऐसा लगता है कि वे रात में सोए नहीं थे। लेकिन इस बीच, उनके चेहरे पर मुस्कान बहुत खूबसूरत है। जब मैं दीवार के पास पहुँचा, तो मैंने देखा कि वहाँ शेर का गेट बंद था, उसके बगल वाला छोटा गेट खुला था, और गेट के बाहर आठ-दस कुत्ते लेटे हुए थे। मुझे लगा कि अगर मैंने गेट पार किया, तो वे मुझे पकड़ लेंगे, इसलिए मैं बाहर नहीं गया और दीवार का किनारा पकड़कर आगे बढ़ने लगा। दीवार बहुत ऊँची है, लगभग तीन

लोगों जितनी ऊँची, और जैसे अंदर से अचानक बाहर जाना मुमकिन नहीं है, वैसे ही आम लोगों का बाहर से अंदर आना भी नामुमकिन है। दीवार बहुत धीरे-धीरे ऊपर उठी है। दीवार इतनी चौड़ी है कि ऐसा लगता है कि दो लोग उस पर साथ-साथ चल सकते हैं। लामा सज्जन, मुझे नहीं पता कि वे मुझ पर नज़र रख रहे हैं या नहीं, लेकिन वे मेरा साथ बिल्कुल नहीं छोड़ते। हो सकता है कि वह मेरे साथ चल रहा हो, यह सोचकर कि मैं छोटा लड़का हूँ ताकि अकेला न खो जाऊँ। कुल मिलाकर, वजह जो भी हो, उसका साथ मेरे लिए बोझ बन गया।

आसमान पहले से ज़्यादा साफ़ था। दीवार के दूसरी तरफ़ से मुझे बार-बार मुर्गियों की बांग सुनाई दे रही थी। फिर भी, सूरज देवता नज़र नहीं आ रहे थे, और आसमान का रंग भी सुनहरा नहीं था, मैं निराश था। जैसे ही मैं दीवार पर थोड़ा और चढ़ा, अचानक सूरज उगने लगा। मैं खड़ा हो गया। टाइगर हिल जैसा खूबसूरत नज़ारा यहाँ नहीं दिखता, लेकिन दुनिया की इस छत पर खड़े होकर सूरज देवता के रूप में एक बड़प्पन दिखता है। सूरज उगते ही, उनकी चांदी जैसी रोशनी बर्फ़ से ढकी पहाड़ों की चोटियों पर खेलने लगी। सोई हुई पहाड़ों की चोटियों ने धीरे-धीरे सिर उठाकर उन्हें बुलाया। आसमानी जीव अपनी चांदी जैसी चोटियों के साथ एक शांत लय में नाच रहे थे, मैंने पहाड़ों का ऐसा हिलता-डुलता रूप पहले कभी नहीं देखा था। जैसे-जैसे सूरज ऊपर चढ़ता गया, छोटी-छोटी पहाड़ की चोटियाँ उसकी रोशनी में खुशी से सिर हिलाती हुईं नज़र आईं। मैं इस नज़ारे के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था, घियात्सा का यह सूरज उगना मेरे लिए एक नई खोज थी। मैं यहाँ जान-बूझकर नहीं आया, ऐसा लगता है कि प्रकृति की देवी ने खुद मुझ पर मेहरबानी करके मुझे अपना यह अद्भुत खेल दिखाने के लिए यहाँ लाया है। मैंने टाइगर हिल से सूर्योदय देखा,

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১০১

১০২

मैंने कन्याकुमारी से सूर्यास्त देखा है, लेकिन यह नज़ारा उससे भी ज़्यादा सुंदर है, यह एक और सपनों की दुनिया है। मैंने हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम किया। मेरा अर्पण-

हे सूर्य, दुनिया के सुंदर स्वामी, वेदों के अमृत, शिव के स्रोत। ज्ञान, ब्रह्म जैसे, सुरेश, बुराई, दुनिया का मन, स्वयं, इंद्रादित्य, मनुष्यों के स्वामी, स्वर्ग के गुरु, तीनों लोकों के शिखर, ब्रह्मा-विष्णु, शिव, हृदय के रूप, मैं पूजा करता हूँ, हमेशा मूर्ति। और भगवान का चेहरा, स्वर्ग के स्वामी, भगवान का चेहरा

फिर, कंबल एक तरफ रखकर, मैंने सूर्य नमस्कार शुरू किया। लामा सज्जन मुझे सम्मान से देखने लगे। फिर, मैं धीरे-धीरे हमारी धर्मशाला की तरफ नीचे उतरा। जब मैं वहाँ पहुँचा, तो मैंने देखा कि सब लोग लगभग बाहर जाने के लिए तैयार थे। मैंने जल्दी से कंबल नीचे रखा और अपने नॉर्थनर को साथ ले लिया। क्योंकि मुझे यह बताने की ज़रूरत नहीं थी कि मैं कहाँ गया था, इसलिए मेरे साथ वाले लामा सज्जन ने गुरुजी को सब कुछ बता दिया।

गुरुजी ने कहा, "आज सुबह, ग्यात्सा का मठ और मठ एसोसिएशन हमारा स्वागत करेंगे, हमें वहीं जाना है। दीवार के अंदर का हिस्सा पवित्र मठ है, सभी लामा यहीं रहते हैं, यहां कोई महिला लामा नहीं हैं। शहर

से कुछ महिला भक्त आएंगी और ग्यात्सा के म्युनिसिपल ऑर्गनाइज़ेशन के प्रेसिडेंट भी हमारा स्वागत करने आएंगे।"

हम एक बड़े लकड़ी के बंगले पर पहुँचे और उसके बरामदे में खड़े हो गए। बरामदे के ठीक सामने एक मैदान था, जहाँ लोग खड़े होने लगे। थोड़ी देर में, रंग-बिरंगे म्यूज़िशियन का एक ग्रुप हमारे साथ आ गया। उन्होंने लामा के कपड़े पहने हुए थे, सिर पर एक लंबी ताज जैसी टोपी, पैरों में लंबे ऊनी जूते, और उसके ऊपर, हाथ से बनी नाज़ुक झालरें। उनकी लंबी तुरहियाँ शंख जैसी लग रही थीं, और लगभग पंद्रह मिनट तक वे अलग-अलग धुनों में अपनी बांसुरी बजाने लगे। ऐसा लग रहा था कि उनकी आवाज़ हिमालय की चोटियों से टकराकर गूंज रही है। वह आवाज़ शंख और तुरही के बीच की थी। पूरा शहर उस आवाज़ से जाग उठा। चारों ओर से लामा ग्रुप के ग्रुप दौड़ते हुए आए और बंगले के सामने मैदान में इकट्ठा हो गए। थोड़ी देर में, मैदान भर गया। हमारा बरामदा काफी ऊँचा था, इसलिए वे खड़े होकर हमें देख रहे थे। सबसे छोटे, उन्नीस साल के, से लेकर नब्बे साल के बूढ़े तक।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

हमारे सामने हर उम्र के लामाओं का एक समंदर बन गया। उन सभी ने लगभग एक जैसे कपड़े पहने थे और सिर मुंडाए हुए थे, ऐसा लग रहा था जैसे यह देश ब्रह्मचारियों और साधुओं से भरा हो। मैंने ऐसा नज़ारा पहले कभी नहीं देखा था। और लामाओं के पीछे, शहर के लोग एक-एक करके इकट्ठा होने लगे। बरामदे के एक कोने में, एक बड़ी सिंहासन जैसी कुर्सी रखी थी, और महाराज खाम्पो वहाँ बैठे थे।

म्यूज़िक काफ़ी हद तक नहावतखाना जैसा था, तीर्थयात्रियों का स्वागत म्यूज़िक से किया गया। जब म्यूज़िक बंद हुआ, तो हिज़ एक्सेलेंसी

कुम्मुम एक चैत्य है। दूर से यह मंदिर जैसा दिखता है। इस स्तूप में महान भिक्षु चांग मुनि का शाश्वत शरीर रखा है। यह काठमांडू के स्वयंभूनाथ मंदिर जैसा दिखता है, जिसके ऊपर बुद्ध की दो आंखें बनी हुई हैं, बिल्कुल वैसी ही।

कुम शब्द का सही अनुवाद है 'हज़ार मूर्तियों का मंदिर'। हज़ार मूर्तियाँ

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১০৩

स्तूप का मेन बेस 108 हाथ लंबा और 108 हाथ चौड़ा है। यह चार मंज़िल या चार सीढ़ियों पर बना है। ऊपरी हिस्सा पूरी तरह से गहरे सुनहरे रंग से ढका हुआ है, और निचला हिस्सा दूसरे रंगों से ढका हुआ है। उनमें से ज़्यादातर सफ़ेद हैं। स्तूप के चारों ओर एक प्रार्थना घेरा है, और उससे ज़्यादा मूर्तियाँ हैं। दीवारों पर पत्थर की नक्काशी उतनी ही शानदार है जितनी मैंने कोणार्क के सूर्य मंदिर में देखी थी। इतनी सारी मूर्तियों के बावजूद, स्तूप की बनावट में कोई कमी नहीं है।

मंडप पर क्षिति, अप, तेज, मारुत, ब्योम, ध्यानी बुद्ध के अनंत शरीर की मिलन छवि खड़ी है। शून्य, विशाल शून्य, सूक्ष्म, महान सूक्ष्म अपने रूपों के साथ यहां खड़े हैं। कुम्मुम तिब्बती मूर्तिकला का एक चमकदार उदाहरण है। भक्त और भक्ति यहां एक हो गए हैं, दुनिया धीरे-

धीरे सूक्ष्म दुनिया की ओर बढ़ गई है। इस चार मंजिला स्तूप के भीतर चौहत्तर मंदिर हैं। दुनिया के विभिन्न सिद्धांतों का खंडन करके, भगवान तथागत ने एक मानसिक मंदिर बनाया है, विद्यालय की दुनिया के 'जितने मार्ग' सूक्ष्म दुनिया के एक मार्ग पर पहुंच गए हैं। तीन तरह के दुखों के कारण और उन्हें रोकने के तरीकों को देवी-देवताओं और विभिन्न रूपों के माध्यम से खूबसूरती से व्यक्त किया गया है। कुम्मुम की प्रत्येक छोटी छवि का शोध करने के लिए, एक संपूर्ण मानव जीवन की आवश्यकता है।

ग्यात्सो के इस मंदिर वाले राज्य में हर कोई पवित्र है। सुबह से शाम तक, आप छोटे ब्रह्मचारियों (त्रपा) की हरकतें देख सकते हैं। वे इस राज्य के राजा हैं। क्योंकि तिब्बत में कोई आम स्कूल या कॉलेज नहीं हैं, इसलिए गार्जियन अपने बच्चों को मठों में भेजने के लिए मजबूर हैं। वहाँ, वे अपना सिर मुंडवाते हैं और भगवा कपड़े पहनते हैं और धर्म के रास्ते पर शिक्षा लेते हैं। ये छोटे डबा और त्रपा बड़े होकर लामा बनते हैं। उनमें से देश के सही नेता चुने जाते हैं। आगे चलकर, वे समाज, इंडस्ट्री, बिज़नेस, धर्म और राजनीति में फैल जाते हैं। लड़कियों के लिए इतने अच्छे इंतज़ाम नहीं हैं, सभी मठों में महिलाओं की शिक्षा का कोई इंतज़ाम नहीं है। वे अपने गार्जियन से थोड़ी-बहुत शिक्षा लेती हैं, और वही करती हैं। उस थोड़ी सी जानकारी के आधार पर, लड़कियाँ दुकानें चला रही हैं, सामान खरीद रही हैं, और ज़मीन पर खेती कर रही हैं। जब आप बाज़ार जाते हैं, तो ऐसा लगता है कि लड़कियाँ अपना राज्य चला रही हैं और पुरुष साधु बनकर घूम रहे हैं।

दूसरे दिन, मैंने शहर के इस पवित्र हिस्से में एक और चीज़ देखी जो काफ़ी दिलचस्प थी। यहाँ के लामाओं के बीच, मैंने दो या तीन रंग के कपड़े और कान ढकने वाली टोपियाँ देखीं। पहले तो मुझे लगा कि यह बस रंग की ज़्यादा या कमी है। मैंने लगभग हर जगह भूरा रंग देखा, लेकिन

यहाँ मैंने ध्यान से देखा तो पाया कि इसमें पीला, लाल और केसरिया रंग शामिल थे। इस पर रिसर्च करने के बाद, मुझे पता चला कि यह असल में एक कम्युनिटी का मामला था। यहाँ तीन कम्युनिटी का एक साथ आना था। पहला है गेलुक-पा कम्युनिटी, जिसके हेड दलाई लामा हैं। दूसरा है शाक्य कम्युनिटी,

১০৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

पंचेन लामा इसके प्रमुख हैं। तीसरा है सा-लू संप्रदाय, इनका प्रमुख उनके उम्मीदवार पर निर्भर करता है, यानी कोई निश्चित गुरु नहीं है, बल्कि एक आदर्श है।

इन तीनों समुदायों के तीन अलग-अलग संगठन हैं, जिनमें से हर एक का अलग मुखिया है। महामहिम खाम्पो इन तीनों समुदायों के ऊपर से यहां का प्रशासन चलाते हैं। खाम्पो ल्हासा द्वारा नियुक्त एक प्रतिनिधि हैं। उनकी प्रतिष्ठा और शक्ति मेयर से ज़्यादा है। हालांकि, सड़क पर लोगों के अनुसार, चीनियों के आने के बाद से मेयर की शक्ति दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। ग्यात्सो की धार्मिक शक्ति का मुखिया खाम्पो है, और व्यावसायिक शक्ति का मुखिया मेयर है।

हम गेस्टहाउस में रुकते हैं और हर कम्युनिटी के साथ एक-एक करके खाते-पीते हैं। लामाओं के क्वार्टर शहर के ऊपरी हिस्से में हैं। यहाँ से घियात्स किला भी बहुत सुंदर दिखता है, यह घियात्स किला बहुत ऊँचा है और प्रकृति के साथ खूबसूरती से बनाया गया है। मेरी इच्छा के बावजूद, वहाँ जाने का कोई रास्ता नहीं है, एक तीर्थयात्री के लिए बेहतर है कि वह ऐसी चिंता न दिखाए। हम बत्तीस लोग यहाँ बहुत अलग-थलग

हैं, हम अपनी मर्ज़ी से आते-जाते हैं - हर कोई आज़ाद है। गुरुजी ने हमें पूरी आज़ादी दी है, हम यहाँ घर के बेटों की तरह ही हैं। हालाँकि, मुझे थोड़ा सावधान रहना होगा क्योंकि मैं इन आठ सौ भिक्षुओं में अकेला चुप रहने वाला पिता हूँ। सबकी नज़रें मुझ पर हैं। चुप रहने का रास्ता सभी रास्तों में सबसे अच्छा और सबसे मुश्किल है, वही रास्ता मैंने अपनाया है। थोड़ी सी लापरवाही, थोड़ी दोस्ती, थोड़ी सी सादगी मेरा मुँह खोल सकती है, जो न केवल मेरा अपमान कर सकती है बल्कि तीर्थयात्रा का रास्ता भी रोक सकती है। जो आँखों से देखता हूँ, जो कानों से सुनता हूँ, वही मुँह से मंत्र के सिवा कुछ नहीं निकलता। किसी से बचना हो तो जल्दी से माला जपते हुए आगे बढ़ जाता हूँ। भले ही यह पाखंड हो। फिर भी चुप रहता हूँ, इसीलिए मुझे यह बहुत पसंद है। मेरा मन कभी-कभी बगावत करता है, सीने में गर्व से खून दौड़ जाता है, मैं खुद को दिलासा देता हूँ, सावधान! मैं यहाँ तक इसलिए नहीं आ पाया हूँ कि मुश्किल है। चुप रहने की वजह से ही मुझे खुद से बात करने का मौका मिला है, मैं समझता हूँ कि खुद को अच्छी तरह जानने और शुद्ध करने का इससे बढ़िया तरीका और कोई नहीं है। यह मेरी छोटी सी ज़िंदगी की सबसे अच्छी कामयाबी है, अब मैं इस कामयाबी को थामे रखना चाहता हूँ।

दीवारों के अंदर पवित्र शहर हमेशा गंभीर रहता है। माहौल पवित्र है, लेकिन रोशनी नहीं। गियात्सा का बाज़ार बहुत सुंदर है। जब आप वहां जाते हैं, तो यह एक अलग ही राज लगता है। यहां सुबह से शाम तक खूब शोर, हंसी-मजाक और मस्ती होती है। यहां के लोगों को देखकर मुझे गंगटोक बाज़ार के शेरपाओं की याद आती है। अगर मेरा दोस्त अंचू आज मेरी तरह चुप रहने वाले पिता के कपड़े पहने, तो बेचारा ज़रूर हांफने लगेगा।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১০৫

यहां के मार्केट में सब कुछ मिलता है। पुराना मार्केट तो कमाल का है, यहां आपको पुराने टूथपेस्ट, पुराने मोजे से लेकर हाथी के दांत और चीनी कांसे के ड्रैगन तक सब कुछ मिल जाएगा। वहीं, सिंगार रोटी, कई तरह के फ्राइड फूड और इंडियन चाय बेचने वाली दुकानें भी हैं। दूसरे शब्दों में, यहां सब कुछ मिलता है, लेकिन फ्रेश नहीं, यही हाल सब्जियों का भी है।

आर्य तारा का ध्यान

दूसरी रात, जब हम हॉल में शांति का आनंद ले रहे थे, एक त्रापा आया और गुरुजी से बोला, "महाराज खाम्पो आपको बुला रहे हैं।" गुरुजी उसकी बातें सुनकर उठकर चले गए।

हम बैठ गए। यह हॉल आम तौर पर लामाओं के ध्यान और अलग-अलग धार्मिक रस्मों के लिए इस्तेमाल होता है। दीवारों पर अनगिनत टंका हैं। लकड़ी का काम ड्रैगन की मूर्तियों से भरा है, और वेदी पर अनगिनत देवी-देवता हैं। घी का दीया हमेशा जलता रहता है, लेकिन वह बहुत कमज़ोर होता है, और उसकी रोशनी में कुछ भी साफ़ नहीं दिखता। इस हॉल में दिन और रात एक जैसे होते हैं। तिब्बत के दूसरे मंदिरों की तरह, यहाँ खिड़कियाँ नहीं हैं। दिन में, दरवाज़े से आने वाली रोशनी आपको कमरे की सारी कला देखने नहीं देती। मुझे तिब्बत की सभी गुफाओं में बहुत सुंदर और अद्भुत कला दिखती है। लेकिन सही रोशनी न होने की वजह से वे अनजान रह जाती हैं। कलाकार ने अपनी कला को यहाँ जगह देकर अपना फ़र्ज़ पूरा कर दिया है, और उसे इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि वह दुनिया में जानी जाती है या नहीं। भगवान, जो हर जगह मौजूद और सब

कुछ जानने वाला है, ने यह तोहफ़ा ज़रूर स्वीकार किया होगा। तिब्बत में, वे हर चीज़ में बहुत चमकीले रंगों का इस्तेमाल करते हैं, इसलिए दीवारों पर बनी कलाकृतियाँ अक्सर कम रोशनी में भी देखी जा सकती हैं। लेकिन अगर वे काम पच्चीस या तीस साल पुराने हैं, तो उन्हें देखना नामुमकिन है, क्योंकि वे लैंप की कालिख से लगभग मिट गए हैं। हमारे हॉल के साथ भी यही सच है। लैंप की कालिख के अलावा, लकड़ी का धुआं भी है, जिससे इन दीवारों पर बनी पेंटिंग कभी नहीं बच पाईं।

गुरुजी करीब एक घंटे बाद आए, उन्हें देखकर लग रहा था कि वे परेशान हैं। वे हमारे बीच में बैठे और हमें अपनी प्रॉब्लम बताई।

हालांकि तिब्बत एक आज़ाद देश है, लेकिन इसके बॉर्डर और विदेशी मामले पूरी तरह से हैंड के हाथ में हैं। ग्यात्स में हान मिलिट्री विदेशियों के आने-जाने को कंट्रोल करती है। हमारे यहां आने से पहले उन्होंने हमसे पूछताछ की। उनका एक रिप्रेजेंटेटिव खाम्पो आया और उसने नए ऑर्डर जारी किए। इनमें से पहला ऑर्डर यह है कि तीर्थयात्रियों को ग्यात्स में सात दिन से ज़्यादा रुकने की इजाज़त नहीं है; दूसरा, शहर में किसी भी धार्मिक समारोह के लिए मिलिट्री चीफ से इजाज़त लेनी होगी; और तीसरा, यहां से ल्हासा तक तीन से ज़्यादा लोगों को जाने की इजाज़त नहीं है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১০৭

एक साथ जाने की इजाज़त नहीं है। पहली और दूसरी शर्तें बिल्कुल भी मुश्किल नहीं हैं, लेकिन तीसरी शर्त में दिक्कत आती है, यानी ग्रुप में जाने की इजाज़त नहीं है।

हमारा इरादा था कि तीन-चार दिन में सुबह-सुबह यहां से निकल जाएंगे, लेकिन जब हनांदा की नज़र हम पर पड़ी, तो बेहतर था कि यहां और न रुकें।

हम ग्यात्सा में थोड़ी देर के लिए मिले, लेकिन अगर हमें और पता होता तो इस जगह के अंदर की जानकारी भी पता चल जाती, लेकिन 'नान्यः पंथा न विद्यते', हमें जाना ही होगा। गुरुजी ने कहा - यह भगवान तथागत की इच्छा है। बाद में तय हुआ कि हमें तीन-तीन हिस्सों में बंटना होगा, यानी तीन दशकों में तीस और दो बचे। गुरुजी ने मेरी तरफ देखा और कहा - मैं समझता हूं कि तुम मेरे साथ जाना चाहते हो। लेकिन यह मुमकिन नहीं है क्योंकि खाम्पो चाहता है कि तुम दो-तीन दिन और रुको। उनके शब्द शिरोधार्य हैं। गुरुजी पहले जाएंगे और मैं सबसे आखिर में जाऊंगा। कहने की ज़रूरत नहीं है, इस बार मुझे अकेले ही जाना होगा।

उस रात गुरुजी ने सबको बांट दिया और साथ ही उन्हें रास्ते भी बता दिए। यानी गुरुजी सुबह निकलेंगे, फिर तीन-तीन करके, एक घंटे बाद और डेढ़ घंटे बाद। अगले दिन सोलह निकलेंगे और बाकी सोलह उसके अगले दिन निकलेंगे।

यहां मठ में दो बार खाना मंगाया जाता है, पहली बार 10:30 बजे और दूसरी बार 4:00 बजे। वे सुबह या रात में नहीं खाते। हमारे खाने में चावल और एक तरह की करी, और जौ की दाल होती है। खाने के तुरंत बाद मैंने गुरुजी को अलविदा कहा। मठ के सभी सीनियर लामाओं ने उनकी यात्रा के लिए शुभकामनाएं मांगीं। उनके जाने के एक घंटे बाद, खाम्पो

ने मुझे बुलाया। जैसे ही मैं उनके पास गया, उन्होंने मुझे अपने बगल में बैठने को कहा। मैंने उन्हें प्रणाम किया और उनके बगल में बैठ गया। मैं पहले से ही थोड़ी तिब्बती समझता हूं, लेकिन मैं इसे बोल नहीं सकता। खाम्पो का घर बहुत बड़ा है। छत बड़े लकड़ी के खंभों पर टिकी हुई है।

दीवारों पर लाल, पीले और सुनहरे रंग की अलग-अलग तस्वीरें बनी हुई थीं। कमरे में सिर्फ़ एक खिड़की थी, जिससे दूसरे मंदिर और घर दिख सकते थे। जब मैं उस तरफ़ देख रहा था, तो खाम्पो ने मेरा नाम पुकारा, और मैं हैरानी से उनकी तरफ़ देखने लगा। गंगटोक छोड़ने के बाद से किसी ने मुझे उस नाम से नहीं पुकारा था। मैंने हैरानी से खाम्पो के चेहरे की तरफ़ देखा, लेकिन क्या वह सब कुछ जानने वाले थे? खाम्पोजी ने मुझे फिर से मेरे नाम से पुकारा और साफ़ हिंदी में कहा-

-सुनो बिमल, मैंने तुम्हारे बारे में सब सुन लिया है। जिस तरह से तुम गया से अब तक आए हो, उससे मैं बहुत हैरान हूँ। मैं तुम्हारी हिम्मत और सब्र की तारीफ़ करता हूँ। तुम मुझसे बात कर सकते हो, कोई दिक्कत नहीं होगी।

১০৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं बहुत शर्मिंदा हुआ और एक अपराधी की तरह उनके पैरों में झुक गया और बोला, "मुझे माफ़ कर दीजिए।"

मैं अचानक उस महान और महान व्यक्ति के सामने खुद को बहुत छोटा महसूस करने लगा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उनसे क्या कहूँ। खुद खाम्पोजी

ने मेरे लिए यह आसान कर दिया - मैं तीन बार गया हूँ और दस साल सारनाथ में रहा हूँ। मैं कलकत्ता में कई लोगों को जानता हूँ। जब तुम इतनी दूर आ गए हो, तो डरो मत, तथागत तुम्हारी रक्षा करेंगे। यह कहकर उन्होंने ज़ोर से पुकारा - समशारगे! उनकी पुकार सुनकर एक लामा दौड़कर उनके पास आया, खाम्पो ने उनसे दो कप चाय लाने को कहा। मैंने पहले सोचा था कि यहाँ के महान लामा, जो सर्व-त्यागी हैं, शायद चाय नहीं पीते होंगे। थोड़ी देर में दो काँच के गिलासों में चाय और उसके साथ कुछ बिस्किट आ गए।

चाय पीते हुए उन्होंने मुझे अपना प्लान समझाया। ग्यात्सो में कई लोग मानते हैं कि मैं इंडियन हूँ, हालाँकि मैं नेपाली लामाओं के साथ आया था, यहाँ कई लोग नहीं मानते कि मैं नेपाली हूँ। सिर्फ़ तिब्बती लोग ही मानते हैं कि इंडिया एक पवित्र ज़मीन है। पुराने ज़माने से इंडियन ऋषि-मुनि इसी रास्ते से कैलाश जाते रहे हैं। उनके दर्शन से शांति मिलती है और उनके आशीर्वाद से पापों से मुक्ति मिलती है। लगभग चार-पाँच साल से इस रास्ते पर इंडियन संत नहीं दिखे। इसलिए अब वे मुझ जैसे इंडियन को पाकर बहुत खुश हैं। भले ही यह छोटा हो, इस लंबे रास्ते में कोई बुराई नहीं है और जो भी हिमालय पार करके यहाँ तक आए हैं, वे सभी नेक हैं। खाम्पो नहीं चाहते कि यहाँ के चीनी अधिकारियों को यह पब्लिक ओपिनियन पता चले, इससे दिक्कत हो सकती है। वे खुद भी इंडियन्स की बहुत तारीफ़ करते हैं, इसलिए उन्होंने तय किया है कि जो बाकी दो दिन मैं रुकूँगा, उन्हें कुछ सीखने में बिताऊँ। यहाँ सिर्फ़ मंदिर और लामा देखकर समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।

ग्यात्सो में दीक्षा के अलग-अलग स्टेज के लिए अलग-अलग इंतज़ाम हैं। उनमें से, वह मुझे एक फ़ायदेमंद प्रोसेस सिखाएंगे। उन्होंने मुझसे पूछा:

-क्या आप कोई संस्कृत मंत्र जानते हैं?

-ज़रूर. मैंने जवाब दिया.

-आप कौन से मंत्र जानते हैं?

-मैं बहुत संतों की संगत में रहा हूं, इसलिए मैंने कई मंत्र याद कर लिए हैं, यहां तक कि ब्रह्म गायत्री मंत्र भी।

खाम्पो हैरान हुआ - बताओ, क्या तुम गायत्री मंत्र जानते हो? क्या तुम ब्राह्मण हो, क्या तुम्हें दीक्षा मिली है?

-नहीं सर, मैंने उपनयन नहीं किया है, न ही मैं ब्राह्मण हूं। केवल मनुष्य ही उच्च मार्ग पर हैं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২০৯

১১০

गायत्री मंत्र तो बस चढ़ने की एक सीढ़ी है। मैं जाति नहीं मानता, मैं मानता हूं कि भगवान इंसान के अंदर है।

-ठीक है! ठीक है! तो फिर मुझे मंत्र बताओ।

उनकी बातें सुनकर मैं बेंच पर बैठ गया और आँखें बंद करके कहने लगा:

-ॐ भू भुवः स्वः तत् साबितुरवारेण्यं वर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात् ॐ।

खाम्पोजी ने मुझे रुकने को कहा। उनके चेहरे को देखकर लग रहा था कि वे मुझसे बहुत खुश हैं, उन्होंने किसी को ज़ोर से आवाज़ दी। जब पिछले लामा आगे आए, तो उन्होंने उनसे कुछ कहा, और फिर वे सज्जन चले गए। खाम्पोजी अब मुझे कोलकाता की कहानी सुनाने लगे। उनके अनुसार, कोलकाता एक जादुई जगह है, और कोलकाता की सबसे कमाल की चीज़ इसकी ट्राम है। उन्होंने ड्राइवर की तरफ से इसे बहुत अच्छे से देखा। बस पहिये के हल्के से घूमने पर, यह कोलकाता की सड़कों पर चलती है, इतने सारे लोगों के साथ झूमती हुई। जितना ज़्यादा वे इसके बारे में सोचते, उतना ही हैरान होते जाते।

मैंने उसे कहते सुना, "तुम्हें पता है कि ट्राम बिजली से चलती हैं, है ना?" वह बच्चों की तरह हँसा, "हाँ, यही असली अजूबा है। मैं यह सोचकर हैरान हूँ कि उस पतले तार से कितनी ज़बरदस्त ताकत काम कर रही है।"

जब हमने दरवाज़े के पास एक लामा को देखा तो हम रुक गए। खाम्पो अचानक फिर से सीरियस हो गए, उन्होंने लामा को बुलाया और मेरा परिचय कराया - वे गेलुक-पा संप्रदाय के दूसरे हेड लामा हैं। वे दार्जिलिंग और कलिम्पोंग गए हैं और सारनाथ में भी पढ़े हैं। आप उनके साथ दो दिन रहेंगे। वे आपको कुछ चीज़ें सिखाएंगे।

मैंने लामा को प्रणाम किया, मैं खाम्पोजी से थोड़ी देर और बात करना चाहता था, लेकिन यह मुमकिन नहीं था। बहुत बिज़ी होने के बावजूद, मैं

शुक्रगुजार था कि उन्होंने मुझसे आसानी से बात की और मेरे बारे में सोचा। मैंने मुँह से कुछ नहीं कहा, ज़ाहिर है। मैंने उन्हें श्रद्धा से प्रणाम किया और दूसरे लामा के साथ चला गया। धार्मिक शहर ग्यात्सा के गेलुक-पा संप्रदाय के दूसरे प्रमुख लामा, उनका नाम थेरेपा है, वे चालीस से पचास साल के लगते हैं। उनके चेहरे पर मुस्कान नहीं है, लेकिन बहुत सीरियस भी नहीं हैं। वे बहुत साफ़ हिंदी नहीं बोलते, उन्होंने मुझसे तिब्बती, नेपाली और हिंदी शब्दों को मिलाकर बात करना शुरू किया, जिसे समझना बिल्कुल भी मुश्किल नहीं है।

हम एक पुराने मंदिर में गए, जो अंदर से बहुत ठंडा और सीलन भरा था। उन्होंने एक दीया जलाया और मुझे वहीं इंतज़ार करने को कहा। दीये की रोशनी में, मैंने देवी-देवताओं की कई मूर्तियाँ देखीं। दीवारों पर लाइनों में बहुत सारी तिब्बती किताबें थीं। थोड़ी देर बाद, उन्होंने दो किताबें खोलीं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

वह एक भारी कंबल लेकर आया। मंदिर के अंदर, एक कोने में लकड़ी के टुकड़े पर कुछ पतले गद्दे थे, और हम उन पर अगल-बगल बैठ गए। अब, मैंने अपने सिर और शरीर को कंबल से कसकर लपेट लिया। इस मंदिर का दरवाज़ा काफी बड़ा है, लेकिन यह दरवाज़े के ठीक सामने है, और एक बड़े मंदिर की दीवार इतनी बड़ी होती है कि ऐसा लगता है जैसे कोई दरवाज़ा ही नहीं है, इसलिए उसमें बिल्कुल भी रोशनी नहीं आ सकती। और सूरज की किरणें एक सपना हैं। बाहर की खूबसूरत गर्म धूप को छोड़कर, हम एक अंधेरी गुफा में घुस गए।

दीये की रोशनी में सारी मूर्तियाँ साफ़-साफ़ नहीं दिख रही हैं। बहुत सारे कपड़ों और चादरों के बीच से जो चेहरा थोड़ा-बहुत दिख रहा

है, वह माँ तारा की मूर्ति है। मुझे चेहरे के अलावा कुछ नहीं दिख रहा। लामा थेरेपा ने मेरा ध्यान इस ओर दिलाया और धीमी आवाज़ में कहा
- अब हम माँ तारा का ध्यान करेंगे। मेरा मन नाच उठा - माँ तारा तो माँ काली का ही एक रूप हैं, तो इसमें क्या बुराई है? हम बचपन से ही पड़ोस के काली मंदिर से परिचित हैं, इसलिए लामा थेरेपा की बातें अच्छी लगीं। हालाँकि, अपनी चिंता को दबा न पाने के कारण, मैंने उनसे पूछा -

-आप तो बौद्ध हैं, तो माँ तारा आपके मंदिर में कैसे प्रकट हुईं?

-हम तांत्रिक बौद्ध हैं। अगर समय हुआ तो मैं आपको बाद में समझाऊंगा। अब चलो बैठकर ध्यान करते हैं।

आम लोग इस दुनिया और अगली दुनिया का सारा बोझ भगवान या देवी-देवताओं पर डालकर बैठे रहते हैं, लेकिन लामाओं को अपने कर्मों के सभी नतीजों से उबरना पड़ता है और अपनी कोशिशों से ऊपर उठना पड़ता है। कर्मों के नतीजों के बंधन तोड़ने के लिए निर्वाण पाना ज़रूरी है।

मैंने उनसे पूछा, "मैंने निर्वाण प्राप्ति के बारे में कई बार सुना है। क्या आप मुझे इसके बारे में समझा सकते हैं?"

-बेशक। यह कहते हुए उन्होंने एक श्लोक का अनुवाद किया और कहा- आप अपने चारों ओर मंदिर, आसमान, सड़कें, पहाड़, लोग देखते हैं। निर्वाण में हम इन सबसे बिल्कुल अलग दुनिया में होते हैं। इसे मन की स्थिति नहीं, बल्कि मन की स्थिति कहना चाहिए। हम अहंकार से ऊपर उठते हैं और ऊंचे उठते हैं। उस दुनिया में न पानी है, न धरती, न हवा, हमें सांस लेने की कोई जरूरत नहीं है। उस दुनिया में तारे रोशनी नहीं देते, सूरज नहीं चमकता, चांद और अंधेरे का वहां आना मना है। वह एक अमृत दुनिया है, जहां हम आकार और निराकार सुख-दुख से मुक्त होकर बुद्धत्व

को प्राप्त करते हैं। वह गहरा मौन ही निर्वाण की दुनिया है, जो जगह, समय और कंटेनरों से ऊपर एक अमृत दुनिया है।

लामा थेरेपा एक पल के लिए रुके, अपनी आँखें बंद कर लीं जैसे कि स्थिति को समझने की कोशिश कर रहे हों। थोड़ी देर बाद, उन्होंने अपनी आँखें खोलीं और कहा, "क्या आप मंत्र जानते हैं?" मैंने उनके सवाल का जवाब नहीं दिया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১১১

मैं चुपचाप बैठा रहा और न समझने का नाटक करता रहा, मुझे नहीं पता कि वह समझे या नहीं, लेकिन उसने बात बदल दी और कहा-

"तुम्हें यहाँ चुपचाप बैठना है, उस मदर स्टार को देखते रहना है। तुम यहीं बैठो, बिल्कुल मत उठना। जब तक मैं न आ जाऊँ, यहीं रुको।" यह कहकर लामा उठ गए।

मैं वहीं बैठा रहा, जैसा उन्होंने कहा। मैं मदर स्टार को देखता रहा, लेकिन भगवान बुद्ध के अलग-अलग रूप मेरे मन में झाँकने लगे। लगभग आधे घंटे (या शायद एक घंटे) बाद लामा वापस आए और मुझसे पूछा-

-क्या आपको चुपचाप बैठने में कोई परेशानी होती है?

नहीं सर। वह मेरे बगल में बैठ गए और मुझसे बात करते हुए बोले।

पसंद किया-

-आप जानते हैं कि महायान बौद्ध धर्म में हिंदू धर्म से कई समानताएं हैं। वह न केवल मां हैं, बल्कि हमारी बुद्धि हिंदू सरस्वती के बराबर है। बौद्ध आरती हिंदू अदिति हैं, वह बुद्ध की एक शक्ति का नाम हैं। शिव मंजुश्री, इंद्र और बोधिसत्व वज्रपाणि के समान हैं, चाहे हम कुछ भी करें, हमारा अंतिम लक्ष्य सृजन या मुक्ति पाना है।

-मुझे लगता है कि आप हिंदू धर्म के बारे में बहुत कुछ जानते हैं।

-नहीं-नहीं। मुझे हिंदू धर्म के बारे में कुछ नहीं पता, लेकिन बौद्ध धर्म के लिए हमें यह सब पढ़ना होगा। मैं तुम्हें तारों के बारे में कुछ बताऊंगा, ध्यान से सुनो। मां तारा अवलोकितेश्वर की शक्ति हैं, जैसे हिंदू धर्म में, आपको काली, उमा, पार्वती, आदि के माध्यम से शिव की शक्ति मिलती है। भगवान को पाने के लिए, आपको पहले उनकी शक्ति प्राप्त करनी होगी। मां तारा मुक्ति देने वाली और कठिनाइयों का नाश करने वाली हैं, तिब्बत में, मां तारा के दो रूप हैं, एक हरा है, हरे रंग का तारा अपने हाथ में कमल का फूल लिए हुए है और सफेद तारा अपने हाथ में कमल का फूल लिए हुए है-यह कहकर, लामा ने थोड़ी देर आराम किया, यानी, उन्होंने मुझे इसे अवशोषित करने का समय दिया, फिर उन्होंने फिर से शुरू किया- हम अब सुंदर तारे का ध्यान करेंगे, हमारे जैसे आम लोगों के लिए बुद्धत्व प्राप्त करना इतना आसान नहीं है, इसमें हजारों साल लगते हैं, शाक्य मुनि को भी बुद्धत्व प्राप्त करने के लिए धैर्यपूर्वक इंतजार करना पड़ा, अवलोकितेश्वर या पद्मपाणि को पाने के लिए, आपको उनकी शक्ति की पूजा करनी होगी, आपको धैर्यपूर्वक उनकी पूजा करनी होगी। उनकी पूजा करने से पहले, आपको उनके रूप का ध्यान करना होगा। अपनी आँखें बंद करो, मैं तुम्हें उनका रूप दिखाऊंगा, तुम उनकी कल्पना करने की कोशिश करो।

"ठीक है, जैसा आपने कहा, मैं अपनी आँखें बंद कर लूँगा।" मैं थोड़ा सा हिला और कंबल ओढ़कर बैठ गया।

लामा थेरेपा ने अब मेरी तरफ देखा और कहना शुरू किया, "आसमान के बारे में सोचो, सिर्फ़ आसमान के बारे में। इसमें कोई रंग नहीं है, यह एक खालीपन है, उस खालीपन में चाँद है।"

১১২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

नहीं, कोई तारे नहीं, कोई सूरज नहीं, कोई रोशनी नहीं, कोई अंधेरा नहीं। अब उस खाली जगह पर धीरे-धीरे उगते हुए एक हरे पहाड़ के बारे में सोचो, वह पहाड़ हरा और चमकदार है, अब उस हरे रंग को अपने मन में रखने की कोशिश करो.... वह रंग धीरे-धीरे जमा हो रहा है और एक महिला की आकृति बना रहा है, वह महिला आकृति हमारी आराध्य देवी भगवती तारा है। अब अपनी आँखें खोलो और उसे अपने सामने देखो, इस दयालु रक्षक देवी माँ तारा का चेहरा।

मैंने लामा के कहने पर घी के दीये में माँ तारा की मूर्ति को ध्यान से देखा। फिर मैंने लामा के कहने पर अपनी आँखें बंद कर लीं। वह फिर से शुरू हुआ - फिर से कल्पना में शरण लो, उनका एक चेहरा है, दो हाथ हैं, उनके दाहिने हाथ में अभय मुद्रा है, उनके बाएँ हाथ में उप्पला फूल है, उनके आधे बाल सिर पर बंधे हैं और बाकी आधे उनकी पीठ पर हैं, कल्पना करो कि वह सभी गहनों से सजी हुई हैं। उनके स्तनों पर कपड़े का एक छोटा सा टुकड़ा गिरा हुआ है; और उन्होंने लाल चोगा पहना हुआ है। वह एक हीरो की तरह खड़ी हैं। और उनका आसन हरे आधे चाँद पर है, वह

रोशनी पर खड़ी हैं, वह चमक रही हैं, उनका शरीर सभी कृपा से भरा हुआ है, वह सोलह साल की हमेशा मुस्कुराने वाली वरदान देने वाली हैं; हे देवी! हे माँ! मैं आपका ध्यान करता हूँ, मैं आपका ध्यान करता हूँ - मैं आपका ध्यान करता हूँ...

मैं आँखें फाड़े निडर माँ तारा को देखता रहा। थोड़ी देर बाद ऐसा लगा जैसे वो धीरे-धीरे गायब हो रही हैं, और बहुत कोशिश करने के बाद भी मैं उनके रूप को अपनी कल्पना में नहीं रख पा रहा था। तेज़ ठंड में मेरा पूरा शरीर काँपने लगा। मैंने आँखें खोलीं, कम्बल कसकर लपेटा और लामा थेरा से कहा - चिंता मत करो, बहुत ठंड है और मैं ध्यान नहीं कर सकता। तुम्हें ठंड नहीं लग रही? वो मेरी बात से सहमत हुए और बोले - हाँ, ये सच है। मैंने दरवाज़ा बंद किया था, किसी छोटे लड़के ने खोला होगा। खैर, चलो आज की तरह इसे यहीं खत्म करते हैं।

हमने माँ तारा को प्रणाम किया और उठ गए। जब हम बाहर आए तो बहुत ठंड थी। लगभग शाम हो रही थी, इसलिए सूरज डूबने के साथ ठंड बढ़ गई। लामा थेरेपा दूसरे लामाओं के साथ रहते हैं, मैं उनके साथ किचन में गया। बहुत बड़ा किचन, लकड़ी की आग पर खाना बन रहा था। इतना बड़ा किचन, लेकिन उसमें एक भी खिड़की नहीं है। यहाँ दूसरे कमरे से आना पड़ता है, ऐसा लगता है कि यह इंतज़ाम गर्मी को पूरी तरह अंदर रखने के लिए है। दूसरे लामा खाना खा चुके थे, और हम ही बचे थे। जौ और चावल को थोड़े से आलू के साथ मिलाकर खिचड़ी बनाई गई थी, वह खाने में अमृत जैसी थी। लामा थेरेपा ने मुझसे पूछा-

-क्या आप आज रात यहीं सोने वाले हैं या अपने साथियों के साथ रहेंगे?

-मैं उनके साथ बहुत समय से हूं और आगे भी रहूंगा, लेकिन शायद मुझे आपके साथ रहने का यह मौका दोबारा न मिले। अगर आप इजाज़त दें तो मैं यहीं रहूंगा।

139

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১১৩

-हाँ, ठीक है, तुम चाहो तो यहाँ सो सकते हो, अगर दो-तीन और लोग यहाँ रात को सो जाएँ तो कोई दिक्कत नहीं होगी, चूल्हे में लकड़ी रात भर जलती रहती है, यह कमरा हमेशा बहुत गर्म रहता है।

लामा थेरेपा मेरे साथ थोड़ी देर और रुके। मैंने सोचा था कि मैं उनके साथ रात बिताऊंगा, लेकिन आखिर में उन्होंने मुझे किचन में ही छोड़ दिया। दूसरे लामाओं के साथ रहने के बजाय यहां उनोन के पास रात बिताना एक अलग अनुभव होगा। इसलिए मैं अपनी धर्मशाला गया और उन्हें उस रात की तरह अलविदा कहा। जैसा वादा किया था, मैंने एक कंबल लिया और उनोन के पास एक खंभे के पास लेट गया। आसपास के तीन-चार और लामा पहले ही खर्राटे लेने लगे थे। उनके पास रात में करने के लिए कुछ नहीं होता, इसलिए वे बहुत जल्दी सो जाते हैं। किचन में कोई लामा नहीं है, सिर्फ वही हैं जो खाना बनाने और पकाने में मदद करते हैं। वे सुबह बहुत जल्दी उठ जाते हैं। ऐसा लगता है कि कोई भी तिब्बती सुबह अपना चेहरा, हाथ-पैर नहीं धोता। इस सर्दी में तो यह मुमकिन भी नहीं है। टॉयलेट के लिए एक बड़ा सा छेद है, जिसका वे जब चाहें इस्तेमाल कर सकते हैं। पानी का इस्तेमाल बहुत कम होता है, कम से कम मैं तो यही

देखता हूं। अगर उन्हें पत्ते या अखबार मिल जाएं, तो वे सफाई कर लेते हैं। खास लामाओं का मामला अलग है, उनके लिए गर्म पानी होता है। तिब्बत में आम लोगों के लिए यह न केवल दुर्लभ है बल्कि बहुत कीमती भी है।

सूरज निकलते ही लामा थेरेपा उठ गए। अब तक मैंने दो कप चाय पी ली थी, इसलिए मैं बहुत ताकतवर हो गया था, लामा थेरेपा की ज़िम्मेदारी मुझ पर आ गई थी कि वह मेरा ख्याल रखें। तिब्बतियों ने मुझे दो कप चाय दी थी, मैंने लामा से कहा कि वे मेरी तरफ से उन्हें धन्यवाद दें। उन्होंने हैरान होने का नाटक किया और कहा, "क्योंकि तुमने पहले ही खा लिया है, तो मुझे तुम्हें धन्यवाद देना चाहिए।" आज मैंने सोचा था कि मैं सुबह बिना कुछ खाए अपनी माँ के साथ ध्यान में बैठूंगा, बेशक, यह मेरी गलती थी, मुझे तुम्हें पहले बता देना चाहिए था।

हम बाहर गए। हम मुख्य स्तूप पर आए और प्रार्थना चक्र के सात चक्कर लगाए। आखिर में, उन्होंने मुझसे स्तूप के चारों ओर खुदी हुई मूर्तियों को बहुत ध्यान से देखने को कहा - उन्होंने मुझसे खास ध्यान देने को कहा,

देखो, भैरचना का शेर राजा का प्रतीक है। अक्षोभ्य का हाथी शक्ति का प्रतीक है। रत्नसंभव का घोड़ा गति का प्रतीक है। अमिताभ का मोर सुंदरता और लय का प्रतीक है।

थोड़ी देर बाद हम कुम्मुम स्तूप से निकलकर नीचे आ गए। उन्होंने कुछ देर सोचा और फिर कहा - वह मंदिर सुनसान था लेकिन बहुत नमी और ठंड थी, चलो मैत्रेय मंदिर चलते हैं। हम चलते हुए एक पुराने लेकिन खूबसूरती से बने मंदिर में पहुँचे। लामा ने मुझे समझाया कि मैत्रेय ही भविष्य के बुद्ध हैं। मैत्रेय के बाद मानसी बुद्ध और फिर शाक्यमुनि

बोधिसत्व। यही मैत्रेय बुद्ध असंगमुनि को दिखाई दिए और तंत्र का रहस्य बताया। हम वहाँ गए।

১১৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

हम जा रहे हैं, लेकिन हमारा ध्यान देवी तारा पर होगा। तिब्बत में महायान, हीनयान, वज्रयान और तंत्रयान सभी को बराबर मान्यता दी गई है, और अलग-अलग संप्रदाय अलग-अलग रास्ते चुनते हैं और उनका पालन करते हैं।

हम मंदिर में घुसे और दरवाज़े के पास एक वेदी पर बैठ गए। बिना किसी परिचय के, उन्होंने सीधे कहा:

अब अपनी आँखें बंद कर लो। अपने आप से कहो, हे देवी! मेरा हृदय चक्र खोलो और मुझ पर कृपा करो;

वे माताएँ हैं

आप

सुधार से मुक्त,

मुझे

माँ तारा, तुम मुझे भय से मुक्त करो,

माँ तारा, कृपया मुझे बीमारी से मुक्त करें।

त्वं ॐ वज्र समाजः, नमो गुरुभ्य, नमो आर्या तारा मंडलेभ्य ॐ आर्या तारा संबरा अर्घ्यम, प्रतीच्य हुं स्वाहा।

पद्मा

परिचय है हम स्वाहा।

खिले हुए

जलता हुआ

प्रकाश में

गंध

यथार्थ में

हे देवी! मैं आपके चरणों में शरण लेता हूँ, मैं आपको समर्पित करता हूँ, मैं खुद को बौद्ध धर्म और संघ को समर्पित करता हूँ...

ध्यान करते समय, मैंने मंदिर में पूजा करने का बुलावा सुना। हिमालय की चट्टानों से तुरही, ड्रम और झांझ की आवाज़ें गूंज रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे हर कोई मदर स्टार की पूजा करने के लिए तैयार है। मैंने एक अद्भुत एहसास के साथ अपनी आँखें खोलीं। अब हमारे जाने का समय हो गया था।

खाने-पीने के बाद, मैंने एक घंटे आराम किया और फिर वादे के मुताबिक मैत्रेय मंदिर लौट आया। ध्यान करने बैठने से पहले, लामा थेरेपा ने मुझसे कहा, "तुम अभी जवान हो, इसलिए अगर तुम ध्यान के रास्ते के मुश्किल तरीकों को नहीं अपनाओगे तो भी यह काम करेगा।"

मैंने उनसे पूछा - मुश्किल रास्ते क्या हैं?

शुरू में ये आसान लगते हैं लेकिन जैसे-जैसे आप ऊपर जाते हैं, ये उतने ही मुश्किल होते जाते हैं। जैसे, पहला व्रत है हत्या, किडनैपिंग, व्यभिचार, झूठ और शराब पीने से दूर रहना। दूसरा व्रत है सुबह होने से पहले खाना न खाना, नाचना-गाना न करना, खुशबू न लगाना, मुलायम बिस्तर पर न सोना और सोना-चांदी न लेना। ये आम आदमी और घर के मालिक के सबसे बड़े दुश्मन हैं।

मैंने लामा को रोका और पूछा, "मेरी कई बुरी आदतें हैं।"

141

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১১৫

इस सफ़र में वे आदतें मेरे साथ हैं, लेकिन मैं उन्हें पूरी तरह से छोड़ नहीं पाया हूँ। वे बुरी आदतें मेरा पीछा कर रही हैं, तो क्या धरती माँ मुझ जैसे पापी पर दया करेंगी?

मेरी बात सुनकर उसने जवाब दिया, "नदियां समुद्र तक पहुंचने से पहले बहुत सारा कचरा अपने साथ ले जाती हैं, लेकिन क्या इसका मतलब यह नहीं है कि समुद्र उसे स्वीकार नहीं करता?" यह कहकर वह एक पल के लिए रुका।

फिर उसने फिर से अपना मुँह खोला - हरी माँ तारे की पूजा करने से मन की सारी गंदगी दूर हो जाती है। फिर हम काफी देर तक चुपचाप बैठे रहे। पास के मंदिर से लामाओं के भजन हमारे कानों तक पहुँचने लगे। वह भजन सुनने में बहुत सुंदर था। धीमी आवाज़ में पाठ, जैसे हिमालय पर अनगिनत छोटी चोटियाँ किसी नाभि से ऊपर-नीचे उछल रही हों। भले ही आप इसका मतलब न समझें, लेकिन लय और सुर दिल को छू गए। जैसे ही आप दरवाज़े से बाहर देखते हैं, आपको अनगिनत प्रार्थना झंडे दिखते हैं, दिल की इच्छाएँ शब्दों में बयाँ की गई हैं, और प्रार्थनाएँ हवा के सहारे बहुत ऊपर से माँ तारे तक पहुँच रही हैं। वही आपकी इच्छाएँ पूरी कर सकती हैं।

अब अपनी आँखें बंद करो, ध्यान से सुनो, और मेरे मुँह पर कहो-

ॐ वज्र समाजः

हे भगवान

सभी तथागत

अर्घ्यम

पद्मा

खिले हुए

धूप में

प्रकाश में

गंध

यथार्थ में

शब्दों में

इस बार, खड़े होकर इक्कीस बार घुटनों के बल बैठो और अपना माथा ज़मीन पर रखकर अपनी माँ को प्रणाम करो। हर बार, अपने दिल में अपनी माँ की छवि को याद करो। मैंने अपनी माँ को इक्कीस बार प्रणाम किया, खड़े होकर और बैठकर, जैसा उन्होंने मुझसे कहा था। इक्कीस बार ऐसा लगा जैसे एक सौ आठ बार। खैर, आखिरकार मैं बैठ गया। इस बार उन्होंने वही बात कही जो पहले कही थी:

-अब अपने मन से अपने माथे पर देखने की कोशिश करें कि वहां 'ॐ' लिखा है। अपनी आवाज़ पर ध्यान दें और अपने मन में कल्पना करें कि वहां 'अह' लिखा है। अब अपने दिल पर ध्यान दें - यह देखने की कोशिश करें कि वहां 'त्वं' लिखा है। अब अपने माथे पर ध्यान दें कि वहां 'ॐ' सफेद रंग का है। अब आपकी आवाज़ में 'अह' की आवाज़ लाल रंग की है। अब अपने दिल पर ध्यान दें कि वहां 'त्वं' की आवाज़ नीले रंग की है।

১১৬

छवि

पद्मा

हम्म स्वाहा।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

जैसे ही उन्होंने कहा, मैंने अक्षरों के रंग देखने की कोशिश की। मैं चुपचाप बैठा रहा - मंत्र और रंगों में खोया हुआ, मैं अपनी ही बनाई सपनों की दुनिया में घूम रहा था, जहाँ हिमालय की सफ़ेद चोटियों पर शिव और शक्ति का खेल चल रहा था। बोधिसत्व बुद्ध और मैत्रेय में खोया हुआ, मैं अपनी प्यारी हारा-गौरी के राज्य में घूम रहा था। लामा की मीठी आवाज़ ने हैरानी को तोड़ा -

ओम तारे तुत तारे तुरे स्वाहा। माँ, मुझे बंधनों से मुक्त करो, मुझे डर से मुक्त करो, मुझे बीमारी से मुक्त करो। मुझे बुद्ध का मार्ग दिखाओ, मुझे धर्म का मार्ग दिखाओ, मुझे संघ का मार्ग दिखाओ...

ग्यात्सा के चौथे दिन, मैंने एक-एक करके सभी लामाओं से विदा ली, मैं वहाँ अकेला बचा था, मैं माँ तारा की जो पूजा सीख रहा था, उसे पूरा किए बिना नहीं जा सकता था, यह अशुभ होता। मुझे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन गुरुजी की गैरमौजूदगी बहुत खालीपन महसूस कराती है। मैंने मन ही मन सोचा - अगर सच में माँ तारा की पूजा करने की ज़रूरत होती, तो गुरुजी मुझे सिखाते। फिर, मुझे लगा कि यही भविष्य है, जब जो होना था - जब जो आना था, वो आएगा। यही नियति थी, यही उनकी मर्ज़ी थी।

थेरापा लामा ने सुबह मुझे अलग-अलग मंदिर दिखाना शुरू किया। उन्होंने हर मंदिर की खासियतें डिटेल में समझाना शुरू किया –

जिनमें से ज़्यादातर मुझे समझ नहीं आईं लेकिन लामा को इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ा। वह एक गाइड की तरह फ़्लूएंटली बात करने लगे – ऐसा लगा जैसे यह उनका फ़र्ज़ है या उन्हें यह ज़िम्मेदारी दी गई है। लगभग चार घंटे तक अलग-अलग मंदिर घूमने के बाद, हम परम पावन खाम्पो के घर पहुँचे।

खाम्पो आमतौर पर मुस्कुराता नहीं है, लेकिन जब मुस्कुराता है, तो बहुत सुंदर लगता है। उसका बड़ा शरीर एक बच्चे की सुंदरता दिखाता है। जब वह मुझे देखता है, तो वह हिम्मत करके मेरे सिर को छूता है और पूछता है, "हम यहाँ कैसे हैं?"

"अच्छा लग रहा है," मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

फिर मैं काफी देर तक उनके पास बैठा रहा, बिना बात किए। थोड़ी देर बाद, वह अचानक उठे और मुझसे कहा, "मेरे साथ आओ।"

हम घर के पीछे एक पतली गली से होते हुए थोड़ा ऊपर गए। हम एक घर में पहुँचे जो एक बहुत बड़े मंदिर जैसा लग रहा था। साधु घर के आँगन में धूप में बैठकर भजन गा रहे थे। हमें देखकर वे सब खड़े हो गए। हमने उन्हें देखकर मुस्कुराया, हाथ हिलाया, और कोने में एक बड़े कमरे की तरफ चल दिए। जैसे ही हम कमरे में घुसे, हमने देखा कि यह एक पुराना मंदिर था। सामने बड़ी वेदी पर, हमने एक भयानक मूर्ति देखी। हमने उसके सामने सिर झुकाया। साधु ने मेरी तरफ देखा और कहा, "यह किसकी मूर्ति है?"

मैं उस डरावनी मूर्ति को बहुत देर तक देखता रहा और फिर बोला,

महातीर्थ का अंतिम यात्री

-नहीं, यह जाना-पहचाना लग रहा है, लेकिन मैं इसे ठीक से पहचान नहीं पा रहा हूँ।

১১৭

-यह मूर्ति महाकाल की है, जो महाकाल के बहुत जागे हुए देवता हैं। तुम यहाँ कुछ समय अकेले रहोगे। तुम अपने मनचाहे फल के लिए इस महाकाल भगवान से प्रार्थना करोगे। फिर तुम मेरे पास वापस आ जाओगे। यह कहकर वह चला गया।

उस महान समय से मैं क्या मांगूं, मांगने को क्या है? अब तक मुझे बिना मांगे ही सब कुछ मिला है, जो मैं मांगता हूं वह मेरे लिए अच्छा नहीं हो सकता है, लेकिन खाम्पो ने कुछ मांगने के लिए कहा है। मुझे उस भयानक महान समय से कुछ भी मांगने में डर लगने लगा। आखिरकार मैं बिना कुछ मांगे वहीं बैठ गया। मैं थोड़ी देर चुपचाप वहीं बैठा रहा और फिर उठ गया। मैं उसी रास्ते से खाम्पो के घर लौट आया, जिस रास्ते से मैं गया था।

खाम्पो ने मुझे देखा और अपने पास बैठने को कहा। वह ज़्यादातर समय वहीं बैठते हैं। वह अपने घर से ग्यात्सो के पवित्र मंदिर एरिया को मैनेज करते हैं। वहाँ पूरी पवित्रता के साथ लगभग तीन हज़ार लोग रहते हैं। वह चार एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन; मंदिर और उसके आस-पास की जगह, सड़कें, पुजारी, सब कुछ मैनेज करने के लिए ज़िम्मेदार हैं। 1950 से पहले, वह ग्यात्सो के पूरे मालिक थे। अब, जैसे-जैसे वह बड़े हो रहे हैं, उनकी ज़िम्मेदारियाँ कम होती जा रही हैं। आजकल पॉलिटिक्स भी बहुत बदल गई है, पहले यह धर्म पर आधारित हुआ करती थी, अब यह कानून पर आधारित है। खाम्पो, बेशक, इस बारे में कुछ नहीं कहना चाहते।

हालाँकि, उनके अनुसार, अगर हर देश तथागत के बौद्ध धर्म और संघ के आधार पर बनाया जाए, तो इस दुनिया को दुख और बुढ़ापे से बचाया जा सकता है।

मैंने अचानक खाम्पो से सवाल पूछा - आप अचानक मुझ पर इतनी दया क्यों दिखा रहे हैं? आप जानते हैं कि मैं इस रास्ते का यात्री बिल्कुल नहीं हूं। मैं घर से भागकर गया आया था, फिर गुरुजी की कृपा से यहां हूं।

उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं आपके सवाल से बहुत खुश हूँ। आपका सवाल साबित करता है कि आप सच्चे और सीधे-सादे हैं।" मैंने उनकी बातों का विरोध किया, लेकिन उन्होंने मुझे रोका और अपनी बात जारी रखी, "आप अकेले नहीं हैं। इंडिया में सैकड़ों लड़के स्कूल और घर से भाग रहे हैं, लेकिन उनमें से एक भी इस तरफ नहीं आता। इस तरफ आने के लिए, आपको सही तैयारी और अपने पिछले जन्मों के कर्मों की ज़रूरत है। एक बार जब आप यहाँ आ गए, तो उनकी मर्ज़ी से कुछ सीखो। तिब्बती बौद्ध धर्म दूसरे देशों के बौद्ध धर्म से अलग है। यहाँ, हिंदू देवी-देवता बौद्ध धर्म से बहुत करीब से जुड़े हुए हैं। आप यहाँ उनका असली और असली रूप देखेंगे। जैसे, माँ तारा की पूजा, मुझे बताओ, क्या आपको यह जानकर खुशी नहीं हुई?"

उनकी बातें सुनकर मैं रोने लगा। उन्होंने खुद मुझे जवाब दिया - मैं समझता हूँ कि शुरू में तुम्हारे लिए उनकी पूजा करना बहुत मुश्किल है। लेकिन जैसे-जैसे तुम्हें इसकी आदत होगी, उतना ही तुम देखोगे कि तुम उनकी कृपा से उनकी पूजा करने के काबिल हो।

১১৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

यह होगा। यह ग्रीन आर्य स्टार की पहली दीक्षा है, दूसरी दीक्षा व्हाइट आर्य स्टार की पूजा होगी। अब आप ल्हासा जा रहे हैं। वापस आते समय, अगर आप चाहें, तो दूसरी दीक्षा का इंतज़ाम किया जा सकता है।

"लेकिन आपने मुझे दीक्षा क्यों दी, खाम्पोजी?" मैंने पूछा।

अगर तुम इस दीक्षा के ज़रिए सच्चे तिब्बती लामा समुदाय में शामिल हो गए, तो बाहर कोई भी तुम्हें बेइज्जत नहीं कर पाएगा। और जब तक तुम तिब्बत में हो, यह धर्म तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारी रक्षा करेगा। अगर अभी नहीं, तो बाद में समझ जाओगे। यह मेरी अपनी इच्छा के अनुसार किया गया है - मैंने तुम्हारे टीचर को इस बारे में बता दिया है। खैर, तुम्हारी यात्रा सफल हो और तुम ठीक रहो। यह कहकर वह चुप हो गए।

पहले तो उनके गंभीर चेहरे को देखकर मुझे लगा कि इस विशाल शरीर में सिर्फ़ सूखी कहावतें हैं, लेकिन अब अचानक उनकी महानता का रूप मेरे सामने खुल गया। मेरा सिर खाम्पो के दयालु हृदय के आगे झुक गया। मैंने श्रद्धा से उन्हें प्रणाम किया।

उन्होंने प्यार से उसके सिर को छुआ और कहा, "मैं तुम्हें पसंद करता हूँ, इसलिए इस दीक्षा को इसका कारण मान लो। तथागत तुम्हें आशीर्वाद दें। माँ तारा तुम्हारे मन को पापों से मुक्त करें।"

मैं ग्यात्से में पाँच दिन तक पूरी तरह पवित्र रहा, और छठे दिन सुबह मैं शहर से निकल गया। खाम्पो ने मुझे शहर में एक आदमी के पास छोड़ दिया। उस आदमी का नाम देशेन वांगडी था, जिसके साथ मैं अगले गोशी

गाँव जाऊँगा। वह आदमी वहाँ रुकेगा, और मुझे इसी रास्ते पर यमद्रोक झील तक जाना होगा। वहाँ मुझे समदिंग गुफा से आगे के निर्देश मिलेंगे। यहाँ से समदिंग पहुँचने में कई दिन लगेंगे। रास्ते में मैं खाम्पो और लामा थेरा के बारे में सोचता रहा। मुझे सुबह जल्दी मठ से निकलना था, इसलिए मुझे उनसे मिलने का मौका नहीं मिला। ग्यात्से में मुझे बहुत कुछ मिला। सिर्फ़ रूहानी ही नहीं, दुनियावी भी। एक जोड़ी नए तिब्बती जूते, नए धार्मिक कपड़े, और दो टका कैश। यह सब मुझे खाम्पो की कृपा से मिला। इस सर्दियों वाले देश में इससे बड़ा कोई तोहफ़ा नहीं हो सकता।

ग्यात्सो से सैंडिंग गुफा

वांगडी मसे दिखने में अच्छे आदमी हैं। शायद उनकी उम्र तीस के आस-पास होगी। उनके बाल लड़कियों जैसे लंबे हैं और वे लेचा जैसे कपड़े पहनते हैं। वांगडी मसे का गाँव यहाँ से अठारह मील दूर, ल्हासा के रास्ते में है। गाँव का नाम गोशी है, और वहाँ उनकी एक छोटी सी किराने की दुकान है। लगभग पंद्रह या सोलह दिन बाद, उन्हें सामान खरीदने के लिए ग्यात्से शहर आना पड़ता है। सामान ले जाने के लिए उनके साथ एक खच्चर होता है। जब भी वे शहर आते हैं, तो वे बड़े मंदिर में परिक्रमा करने और प्रार्थना चक्र घुमाने जाते हैं। वे लामाओं से भी अच्छी तरह परिचित हैं। जब भी खाम्पो ल्हासा जाते हैं, तो उनके घर चाय पीते हैं। देशान वांगडी हमेशा की तरह कुछ शॉपिंग करने आए थे, और खाम्पो ने यह मौका नहीं छोड़ा। उन्होंने ही वांगडी को अपने साथ गोशी गाँव ले जाने का इंतज़ाम किया था।

सारा सामान खच्चर की पीठ पर रख दिया गया है, हमारे हाथ पूरी तरह खाली हैं। जानवर को लगता है कि उसने यहाँ के सारे रास्ते याद कर लिए हैं और उसे अपने पीछे चलने के लिए किसी दबाव की ज़रूरत नहीं है, वह अपनी

ही गंभीरता से चलने लगा है। ऐसा लगता है कि वह भी मुझ जैसे विदेशी लामा को साथी के रूप में पाकर बहुत खुश है। वांगडी सिगरेट पीने में माहिर है और उसके पास लोकल वाइन की एक बोतल भी है। इस सूखी सर्दी में शरीर और मन को मज़बूत रखने के लिए इससे ज़्यादा सही कुछ नहीं हो सकता।

ग्यात्से से, हमें अपनी सड़क के ठीक बगल में न्येरेरू नदी मिलती है, इसलिए इस क्षेत्र का नाम न्येरेरू घाटी पड़ा।

घियाट्स के मंदिर आज भी साफ़ दिखते हैं। और पहाड़ पर बना किला पहले से ज़्यादा साफ़ दिखता है। घियाट्स का इस किले को देखने का बहुत मन था, लेकिन इस सफ़र में यह मुमकिन नहीं था। इसे पहाड़ के हिसाब से इतनी खूबसूरती और काबिलियत से बनाया गया है कि यह हर किसी को अपनी ओर खींचता है। ऐसा लगता है कि इस बड़े महल में कोई जादूगर ज़रूर छिपा होगा। इंसानों के लिए पहाड़ काटकर यह खूबसूरत घर बनाना नामुमकिन लगता है। बहुत देर तक मैं आसमान में उस किले को देखने के लिए अपना सिर घुमाता रहा। फिर धीरे-धीरे वह भी गायब हो गया। हम भी पूरब की ओर जा रहे हैं।

১২০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

ग्यात्स का चौड़ा मैदान धीरे-धीरे एक पतली घाटी में बदल गया। यह पहली बार था जब मैंने खेती लायक ज़मीन देखी। हमारे देश की तरह, दोनों तरफ़ हल से जोते हुए चारागाह थे। बर्फ़ अब पिघलने लगी थी, अगर मैं इस रास्ते से वापस जाता, तो मुझे तिब्बती किसान याक के कंधों पर हल रखकर ज़मीन जोतते हुए ज़रूर दिखते। सड़क ख़राब नहीं थी, यह

पत्थरों से पक्की कच्ची सड़क थी। मैंने अक्सर लोगों को याक, गधे और खच्चरों की पीठ पर सामान लादकर सड़क पर चलते देखा। वे वांगडी से ज़्यादा मुझ पर ध्यान देते थे। जैसे ही मैं पास पहुँचा, वे बड़ी- बड़ी जीभों से मेरा स्वागत करने लगे। हमारे दाईं ओर पहाड़ों की रेंज चोमलहारी थी, यहाँ से ऊपर बर्फ़ का नज़ारा बहुत सुंदर लग रहा था। नियांग घाटी से नज़ारा अलग था। हमारी सड़क अब नदी को नीचे छोड़ते हुए ऊपर चढ़ने लगी। नदी पहाड़ के नीचे ही रही और मैं उस पहाड़ पर चढ़ने लगा। ठीक वैसा ही जैसा मुझे तीस्ता ब्रिज के बाद गंगटोक जाते समय मिला। लेकिन, फ़र्क यह है कि यह नदी पहले के मुकाबले बहुत छोटी है। नदी के किनारे वाली यह सड़क पहले जैसी सुनसान नहीं है। कभी-कभी, हमारे आस-पास घर दिखने लगे। हम पहाड़ी पर चढ़ने लगे। वहाँ ज़्यादा पेड़ नहीं दिख रहे थे, इस सूखी ठंड में ऐसा लग रहा था कि चीड़ के अलावा कोई और पेड़ नहीं हो सकता।

दोपहर में हम एक झरने के पास रुके, वांगडी खच्चर को बर्फ जैसी ठंडी घास और पानी पिलाने में बिज़ी था। इस बीच, मैंने एक जमी हुई चट्टान पर अपना कंबल बिछाया और थोड़ी देर आराम करने के लिए लेट गया। हमने सूखी रोटी खाकर अपना दोपहर का खाना खत्म किया और अपनी चटाई झरने के पानी में भिगोकर फिर से निकल पड़े। शाम को हमें एक गाँव मिला। यह गाँव गोशी था। गोशी गाँव में हज़ार से ज़्यादा लोग नहीं थे। जैसे ही हम गाँव में घुसे, हमेशा की तरह गाँव के कुत्तों ने हमारा स्वागत किया। वांगडी इसी गाँव का है, इसलिए कुत्ते उसे जानते थे। गाँव की शुरुआत कुछ छोटे-छोटे झुग्गी-झोपड़ियों वाले घरों से हुई थी। ठंड से बचने के लिए सबने अपने-अपने घरों में शरण ली थी। गाँव का मेन सेंटर चार सड़कों का जंक्शन है। यहाँ से नदी 150 फीट नीचे लगती है। घर मिट्टी और लोकल पत्थर को मिलाकर बने हैं। हम एक घर के सामने रुके। घर एक फार्महाउस जैसा था, जब हमने दरवाज़ा खटखटाया, तो दरवाज़ा अंदर से खुल गया। मैंने अपने सामने तीन-चार लोगों को देखा।

एक बूढ़ी औरत, दो जवान आदमी और एक जवान औरत। मुझे देखकर सब हैरान थे। जब वांगडी ने मुझे सबसे मिलवाया, तो वे सब आदर से जीभ निकालकर खड़े हो गए और झुक गए। बूढ़ी औरत उनमें सबसे खुश थी, मुझे देखकर उसका चेहरा खिल उठा। हम दरवाज़े पर खड़े थे, हमारी बारी थी परिचय की। औरत सबको अंदर ले गई। हम एक कमरे में आए और बैठ गए। कमरा

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১২১

बिस्तर, कंबल और गद्दे खाली थे। जब मैंने वहाँ बैठने के लिए अपने जूते उतारे, तो उन्होंने मुझे रोक दिया। मुझे उठकर जूते पहने हुए उनके बिस्तर पर बैठना पड़ा। कहने की ज़रूरत नहीं है, बिस्तर कभी साफ़ नहीं किए गए थे। आप कंबल और गद्दों का पैटर्न देखकर ही बता सकते हैं। तूफ़ान की धीमी रोशनी में, उस औरत का चेहरा बहुत चमकीला और पवित्र लग रहा था। वांगडी ने मुझे सबसे मिलवाया। बुज़ुर्ग औरत उसकी माँ थी, दो भाई थे, जवान औरत उसकी पत्नी थी, और उसके दो बेटे अब सो रहे थे।

सब लोग मेरे आस-पास बैठ गए, हरिकेन को बीच में रख दिया। दोनों भाइयों ने खच्चरों से अपना सामान पहले ही उतार दिया था। उनकी दुकान इसी घर के एक हिस्से में थी। उन्होंने मुझसे बहुत कम बात की। कौन जाने वांगडी ने मेरे बारे में क्या कहा। उसने जो भी कहा, वह मेरे फेवर में था, यह कहने की ज़रूरत नहीं है। थोड़ी देर बाद, हम सब किचन में आकर बैठ गए। कमरा लकड़ी के धुएं से पूरी तरह काला हो गया था। हम स्टोव के पास कुछ लकड़ियों पर बैठ गए। घर में सबने खाना खा लिया था, और खाना सिर्फ़ हमारे लिए था। जौ के शोरबे में सूखे मटन से बहुत स्वादिष्ट तिब्बती सूप बनाया गया था। हम बहुत थके हुए थे। इसलिए खाने के बाद,

[illegible]

[illegible] of [illegible]

[illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]; [illegible]-of, [illegible], [illegible], [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] of of of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible], [illegible] of [illegible] of, of [illegible] [illegible] of [illegible] of of of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

[illegible] of [illegible] [illegible] of, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of of of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of, [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

बना रही थी। अगर इतनी ठंड न होती, तो मैं पास की किसी चट्टान पर बैठकर यह नज़ारा देखता। लेकिन अब, न सिर्फ़ ठंड है, बल्कि दिन की रोशनी भी कम हो रही है। मुझे रात होने से पहले यहाँ मठ ढूँढ़ना है। तिब्बत का एक फ़ायदा यह है कि आपको बात करने या सवाल पूछने के लिए लोगों को ढूँढ़ना नहीं पड़ता। जैसे ही उन्हें किसी नए व्यक्ति की गंध आती है, वे दौड़कर मेरे पास आ जाते हैं। मेरा लामा काफ़ी साफ़ दिखता है, कई लोगों को लगता है कि मैं इसी देश का हूँ, लेकिन जब मैं पास पहुँचता हूँ, तो वे एक पल के लिए रुकते हैं, एक-एक कदम बढ़ाते हैं और धीरे से कुछ शब्द कहते हैं, शायद यह परखने के लिए कि मैं सच में उनके देश का हूँ या कोई विदेशी। इस रास्ते पर कोई चीनी सैनिक नहीं है, इसलिए मुझे किस्मत वाला होना चाहिए, वरना अगर मैं अकेला होता तो उनसे आसानी से छुटकारा पाना मुश्किल होता।

एक दुकान के सामने खड़े होकर मैंने उनसे पूछा, "क्या आप मुझे बता सकते हैं कि गुफा किस तरफ़ है?" मेरा सवाल सुनकर वे सब एक साथ जवाब देने लगे, सबने मुझे सड़क की दिशा दिखाने के लिए अपने हाथ और चेहरे हिलाने शुरू कर दिए। बदकिस्मती से, मैं उनकी तेज़-तेज़ बातों में से कुछ भी समझ नहीं पाया, और आखिर में एक

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১২৩

वह आदमी दुकान से बाहर आया - सबको रोकते हुए - और पूछा - क्या आप गुफा जा रहे हैं? यह अच्छी बात है, यह यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है। अगर आप इसी सड़क पर चलते रहेंगे, तो वह आपको सड़क पर ही मिल जाएगी।

मैंने मुस्कुराते हुए उन्हें धन्यवाद दिया और आगे बढ़ गया। मैंने कुछ ही कदम उठाए थे कि पीछे से तीन-चार लोग 'ट्रापा-ट्रापा' चिल्लाते हुए मेरी तरफ दौड़े। मैं रुक गया। उन्होंने मुझे बताया कि कोई मुझे पीछे से बुला रहा है। मैं वापस मुड़ा। जिस आदमी ने मुझे गुफा का रास्ता दिखाया था, वही असल में मुझे बुला रहा था। जैसे ही मैं पास पहुँचा, उसने मुझसे पूछा - क्या तुम चाय लोगे? मैंने हाँ कहा, और मैं खुशी से उछल पड़ा।

मेरी बात सुनकर वो सज्जन तुरंत घर के अंदर चले गए। मैं गांव वालों के साथ सड़क पर खड़ा था। सूरज डूब चुका था, और सूरज डूबने के साथ ही घाटी में ठंड और अंधेरा छा जाता है। इस समय एक कप गर्म चाय, ओह! यह तो अमृत है। भगवान की असीम कृपा के बिना यह व्यवस्था संभव नहीं थी। मेरी जेब में दो टके हैं लेकिन मैंने चाय पीने के बारे में नहीं सोचा, रात को कब आराम मिलेगा, थोड़ी नींद आ पाएगी - यही मेरा लक्ष्य था।

थोड़ी देर बाद एक औरत दुकान का दरवाज़ा खोलकर बाहर आई। उसने मुझे बुलाया और अंदर ले गई। जैसे ही मैं दुकान में घुसा, मुझे पता चला कि यह एक चाय की दुकान है। सूरज डूबते ही यहाँ की सारी दुकानें बंद हो गईं। वह औरत बिल्कुल लेप्चा जैसी लग रही थी, कमर पर सतपाक पगड़ी बंधी थी, बाल कसकर बंधे थे, कपड़े का अगला हिस्सा बहुत गंदा था, और काम करते समय ऐसा लग रहा था जैसे वह अपने सीने को तौलिए जैसे हाथ से छू रही हो। पहली नज़र में ही पता चल जाता था कि वह एक मेहनती इंसान थी। हालाँकि यह एक चाय की दुकान थी, लेकिन अंदर कोई बेंच या टेबल नहीं थी। बड़े कमरे के बीच में एक बड़ा गड्ढा खोदा गया था, जहाँ आग जलाई जाती थी और ग्राहक उसके चारों ओर बैठकर बातें करते और चाय पीते थे। ये बहुत मेहनती लोग हैं। इस इलाके में, उन्होंने पत्थर काटकर धीरे-धीरे खेती के लायक ज़मीन बनाई है। यहाँ गर्मी एक या दो महीने

तक रहती है, और उस दौरान फसलें जल्द से जल्द उगाई जाती हैं। खेती के अलावा, एक और चीज़ जो यहाँ अक्सर दिखती है, वह है मवेशी, भेड़, गधे, याक वगैरह। यह कुत्तों और मुर्गियों के लिए जन्नत है। मुझे लगता है कि चाय बन रही थी, लेडी ने उसे गर्म किया और मुझे गिलास में दिया। मैंने अपनी जेब से दो टका निकाले और कहा, "इससे कीमत ले लो।"

महिला तुरंत दो कदम पीछे हट गई। उसने कीमत लेने से मना कर दिया। जैसे ही मैं चाय पीकर जाने वाला था, उस आदमी ने मुझे जाने के लिए कहा।

১২৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उसने मुझे इंतज़ार करने को कहा - फिर वह अपनी पत्नी से कुछ बात करने लगा। उसने मुझे समझाया - गुफा का रास्ता यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं है, लेकिन रात में रास्ता बहुत खतरनाक होता है। गाँव के कुत्ते तुम्हें नहीं पहचानते, इसलिए वह भी एक खतरा है, रात में कुत्ते और भी ज़्यादा खतरनाक होते हैं। तुम चाहो तो यहाँ रुक सकते हो, उनोन की आग लगभग पूरी रात जलती रहती है, इसलिए कोई दिक्कत नहीं होगी।

मैं थोड़ा हिचकिचाया लेकिन उनकी अच्छी सलाह से आगे जाने की हिम्मत नहीं हुई। मैं मान गया। एक अनजान यात्री के प्रति उनकी दया और ईमानदारी देखकर मैं बहुत इम्प्रेस हुआ। मुझ जैसे छोटे इंसान को बचाकर उन्हें क्या मिलता है? शायद लोगों का लोगों से प्यार ही इन तिब्बतियों की खासियत है। लेकिन जब वे हमसे मिलने आते हैं, तो हम उनके गंदे कपड़ों की वजह से उन्हें नीची नज़र से देखते हैं। यह

सोचकर मेरा चेहरा शर्म से लाल हो गया कि हमने उनके अंदर छिपी इस दयालु आत्मा को कैसे दुख पहुंचाया।

मैं समझ गया कि ये लेडी और जेंटलमैन मालिक गिन्नी नहीं थे। लेडी दुकान की मालकिन थीं, और दूसरे जेंटलमैन वहीं काम करते थे। लेकिन उन्होंने रात यहीं बिताई। मुझे इससे ज़्यादा कुछ नहीं पता था, लेकिन इसमें कोई शक नहीं था कि वे दोनों अच्छे लोग थे। दुकान की हालत देखकर ऐसा नहीं लगता था कि वे अमीर थे। जब मैं दिन भर चलने से थक जाता था, तो मुझे बस सोने के लिए जगह और आग चाहिए होती थी। अगर मैं न भी खाऊं तो भी ठीक था। लेकिन जेंटलमैन और लेडी दोनों ने मुझे अपने साथ खाने के लिए कहा। कुल मिलाकर, आधे घंटे में खाना बन गया। उबले हुए जौ और कीमे के साथ शोरबा, यह अमृत जैसा था।

अचानक मुझे याद आया कि मेरे बैग में थोड़ा ज़्यादा नमक है, तिब्बत में नमक बहुत महंगा है और ज़रूरत पड़ने पर बेचा जा सकता है। जब मैं ग्यात्से से निकला, तो गुरुजी ने मेरे लिए कुछ छोटी जलाने की लकड़ियाँ और नमक का एक बैग छोड़ा था। वे खाने का चार्ज नहीं लेना चाहते थे, इसलिए मैंने सोचा कि मैं अपनी तरफ से कुछ दे दूँ। इसलिए खाने के बाद, मैंने बैग से थोड़ा नमक निकाला और एक कटोरे में डाल दिया। वे दोनों मुझसे नमक पाकर बहुत खुश हुए। तूफ़ानी रोशनी में उनके चेहरे खुशी से चमक रहे थे। महिला ने बिना किसी एतराज़ के इसे ले लिया। फिर मैंने कंबल बिछाया और बिस्तर का इंतज़ाम किया। जब मैं सो रहा था, तो महिला ने मुझे उसके बॉक्स से एक संभालकर रखी हुई टेबल क्लॉक निकाली, फिर किसी तरह मुझे समझाया कि क्या मैं इसे चला सकता हूँ। मैंने घड़ी ली और उसे पलटा तो देखा कि सब कुछ ठीक था, लेकिन ऐसा लग रहा था कि इसका इस्तेमाल बहुत समय से नहीं हुआ था। जैसे ही उसने उसमें साँस दी, वह चलने लगी, और महिला खुशी से नाचने लगी।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১২৫

वह उठ गया। फिर, उन्हें हैरानी हुई, मैंने अलार्म बजा दिया। यह सुनकर, वह औरत एक छोटी बच्ची की तरह खिलखिलाई, मैंने कभी नहीं सोचा था कि वह इतनी छोटी सी बात पर इतनी खुश होगी। ऐसा लगा जैसे मैं उन्हें जादू दिखा रहा हूँ।

बाद में उस औरत ने बताया कि उसके भाई ने यह घड़ी सिलीगुड़ी से खरीदी थी, लेकिन वह इसे हमेशा एक डिब्बे में रखता था, यह कहकर कि यह एक कीमती तोहफ़ा है। उसके भाई ने इसे चलाना सिखाया था, लेकिन उसने कभी इसे छूने की हिम्मत नहीं की। खैर, मैंने उस औरत को घड़ी पढ़ना, उसे घुमाना और अलार्म बजाना सिखाया। वह औरत मुझ जैसे काबिल संत को पाकर बहुत खुश हुई। उसके और भी कई सवाल हो सकते थे, लेकिन मेरी हालत इतनी खराब थी कि थकान के कारण मेरी आँखें अपने आप बंद हो रही थीं। यह समझकर, उसने चूल्हे के पास लकड़ी के दो और बड़े टुकड़े रखे और कंबल ओढ़ लिया। चूल्हे को बीच में रखकर हम तीनों तीन तरफ़ सो गए।

अगली सुबह मैं उठा और गरम चाय ली, फिर वो लेडी खुद मुझे आगे ले जाने आईं। वो आदमी अभी भी बहुत खुशी से खर्राटे ले रहा था। गाँव में सब अभी तक नहीं जागे थे, और जब मैं सड़क पर आया और आगे देखा तो हैरान रह गया। मैं अपने ठीक सामने हिमालय का जो अद्भुत रूप देख सकता था, उसे देखकर हैरान रह गया। इसे खूबसूरत कहना कम होगा। अगर मैं इसे बहुत खूबसूरत भी कहूँ, तो भी मैं इसके असली रूप को बताने से बहुत दूर रहूँगा, ऐसा लगता है कि इस खूबसूरती को शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। यह कुदरती दौलत शब्दों से परे एक अनकही दुनिया की है। हमसे

ज़्यादा दूर नहीं एक खूबसूरत बर्फ से ढका पहाड़ है, जिसका पवित्र और कोमल रूप धरती पर सूरज की रोशनी को पकड़ रहा है। ऐसा लगता है कि इसी पहाड़ पर देवताओं के राजा इंद्र की इंद्रपुरी है, इसकी अडिग पवित्रता को ऊपर साफ नीले आसमान की छतरी फैलाकर बचाकर रखा गया है।

उस महिला ने मुझे हैरान नज़रों से उस तरफ़ देखते हुए देखा और कहा, "इस पहाड़ का नाम नोजिन कांग सांग है। सांगपु नदी इस पहाड़ के ठीक नीचे बहती है; आपके देश के लोग इसे 'ब्रह्मपुत्र' कहते हैं।" मुझे यह बात मन में याद आई और मैंने सिर झुका लिया।

ब्रह्मपुत्र तिब्बत से शुरू होती है। इसका पानी पहाड़ों पर बर्फ पिघलने से बनता है। ब्रह्मपुत्र का सोर्स देखने के ख्याल से ही मेरा सीना खुशी से उछल पड़ा। तिब्बत का यह बड़ा पहाड़, नोजिन कांग सांग, कारो-ला नाम की जगह पर चोमलहारी से मिलता है। ल्हासा जाते समय हमें वह सड़क पार करनी पड़ती है, जो यहां से सिर्फ़ साढ़े तीन घंटे की दूरी पर है। नोजिन कांग सांग की ऊंचाई चौबीस हज़ार फ़ीट है। पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ़ जमी हुई है, जिसे ग्लेशियर कहते हैं। अगर यह ज़्यादा भारी होता, तो शायद पूरी तरह पिघल जाता।

১২৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

चोटी खुद ही लैंडस्लाइड के रूप में नीचे आ जाएगी। आसमान में बादलों ने पहाड़ की चोटी को रोककर शिव की जटाओं जैसी भारी बर्फ बना दी है। फिर उस बर्फ से सूरज की किरणों से एक तेज़ बहने वाली नदी बनती है। ब्रह्मपुत्र उसी नदी के पानी से पोषित होती है। टाइगर हिल से ऐसा नज़ारा नहीं देखा जा सकता, सिर्फ़ वही लोग जो अनजान को जानने के लिए

पहाड़ की चोटी पर चढ़ते हैं या जो किस्मत से तिब्बत के इस इलाके में आ जाते हैं, वे ही प्रकृति की देवी के इस रहस्यमयी और रहस्यमयी नज़ारे को कैद कर सकते हैं। इस नज़ारे को एक बार देखने पर स्वर्ग जैसी फीलिंग आती है। यह स्वर्ग के राज्य की कल्पना करने का एक बेहतरीन मौका है।

थोड़ी देर खड़े रहने के बाद, मैं रालुंग गुफा की ओर चल पड़ा। एक मील चलने के बाद, जैसे ही मैं मोड़ पर मुड़ा, मुझे पहाड़ के नीचे एक छोटा सा गाँव दिखाई दिया। गाँव बढ़ रहा था, सभी घरों की छतें मंदिरों जैसी थीं, और घर पत्थर के बने थे। उनके चारों ओर खेती की सुंदर ज़मीन थी। नदी ज़्यादा दूर नहीं थी। यह एक सुंदर, शांत और पवित्र माहौल जैसा लग रहा था। महिला ने मुझे गाँव दिखाया और कहा, "यह रालुंग गुफा है। अगर आप इस सड़क पर चलते रहेंगे, तो आपको इसका दरवाज़ा मिल जाएगा।" महिला मुझे छोड़ना नहीं चाहती थी, लेकिन मुझे जाना पड़ा। मैं धीरे-धीरे मठ की ओर बढ़ने लगा। वह तब तक वहीं खड़ी रही जब तक मुझे नहीं देखा गया। उसकी माँ की छवि मेरे दिल में बसी रहेगी।

गाँव असल में एक पूरा बौद्ध मठ है। यह मठ सात छोटे घरों से बना है, जिसमें बड़े-बड़े खंभे और बहुत सारे प्रार्थना झंडे लहरा रहे हैं। सामने, कुछ गधे और भेड़ें मुझे हैरानी से देख रहे थे। फिर, पारंपरिक तिब्बती रिवाज के अनुसार, कुत्ते मेरा स्वागत करने के लिए दौड़ते हुए आए। जब कुत्ते दौड़ते हुए आते हैं, तो चुपचाप खड़े होकर प्रार्थना करने का नियम है, फिर मठ से दो लामा बाहर आए और मुझे बचाया। दो जवान लामा ऐसे लग रहे थे जैसे अभी-अभी अपनी जवानी पूरी करके लामा के लेवल पर पहुँचे हों। जैसे ही वे मेरे पास आए, उन्होंने पूछा - क्या आप मौनी बाबा हैं, गंगटोक से आ रहे हैं? मैंने सिर हिलाया और मुस्कुराते हुए हाँ में हाँ मिलाई। मुझे कुछ पूछने की ज़रूरत नहीं पड़ी। उन्होंने मुझे वह बताना शुरू किया जो मुझे जानना

था - सभी तीर्थयात्री एक-एक करके यहाँ से गुज़रे हैं, उनमें से कई ने यहाँ रात बिताई है, अगर आप अभी निकल जाएँ, तो आज रात समदिंग गुफा पहुँच सकते हैं, वहाँ सब आपका इंतज़ार कर रहे होंगे।

दोनों लामाओं ने मुझे ये बातें बहुत धीरे-धीरे और डिटेल में समझाईं। उनके एक्सप्रेशन देखकर मैं साफ समझ गया कि सबने मुझे साइलेंट फादर समझ लिया है, इसलिए मेरे बोलने का सवाल ही नहीं उठता। मैंने उनसे डायरेक्शन भी लिए। मुझे इस रास्ते पर सीधे चलना था। दोपहर के समय, मेरे दाईं ओर एक बड़ी झील पड़ती, उसका नाम यमद्रोक झील था।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১২৭

सड़क उस झील के किनारे-किनारे उत्तर की ओर जाती है, जहाँ आपको समदिंग गुफा नाम का एक बड़ा बौद्ध मठ मिलेगा। सभी तीर्थयात्री वहाँ मेरा इंतज़ार कर रहे हैं।

उनकी बातें सुनकर मैंने और देर नहीं की। मैंने उनके साथ वहाँ बड़े मंदिर में शाक्यमुनि को प्रणाम किया, मंदिर के चारों ओर प्रार्थना का घेरा बनाया और अलविदा कहा। इस रालुंग गुफा में शायद पच्चीस से तीस लामा रहते हैं, और मैं उन सभी से मिला। लेकिन सन्नाटे के कारण कोई बातचीत नहीं हुई। वहाँ हर लामा ने मेरे सिर पर हाथ रखकर मुझे आशीर्वाद दिया, और सभी ने भगवान से मेरी भलाई के लिए प्रार्थना की।

सदियों से तीर्थयात्रियों के ग्रुप को यहां खींचकर रखा है। हर कोई इस अमृत की तलाश में आता है।

১২৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं नहीं जानती कि यम, निमायती, आसन, प्राणायाम, वत्र, ध्यान, गर्भाधान, समाधि हमें कहाँ ले जाते हैं, मैं तो अपने चारों ओर इस लयबद्ध जगत की साक्षी हूँ, इसे कहाँ रखूँ जो मुझे अनायास ही मिल गया है? मैं पूरे हृदय से उस दयालु देवी के चरणों में गिर पड़ी, जो अनंत रूप वाली है, अपना आभार व्यक्त करने के लिए। मैंने साष्टांग प्रणाम किया और अपनी भक्ति भेंट अर्पित की। मैं धन्य हूँ, मेरा जन्म सफल हुआ। एक क्षण में, मेरे साथी, दोनों गधे, मेरे पास आकर खड़े हो गए। ऐसा लगा कि वे भी चुपचाप अपने देवता को सम्मान देने लगे। एक क्षण बाद, दो तिब्बती व्यक्ति वहाँ आए, जो भेड़ों का झुंड हाँक रहे थे। मुझे देखकर, उन्होंने श्रद्धा से अपनी जीभ निकाली और साष्टांग प्रणाम में खड़े हो गए। उन्होंने कुछ पूछा, लेकिन मौनी बाबा उन्हें उत्तर नहीं दे सके। कारो-ला के ऊँचे भाग के बगल में, मैंने एक विशाल पत्थरों के ढेर को देखा, जिसके बीच में एक विशाल प्रार्थना ध्वज खड़ा था। जब मैंने तिब्बतियों को देखा, तो मैंने किनारे से एक पत्थर उठाया और पत्थरों के ढेर में फेंक दिया। तिब्बत में किसी भी 'पास' को पार करते समय, आपको ऐसे पत्थरों के ढेर मिलेंगे। 'ला' या इंग्लिश में पास स्वाभाविक रूप से उस क्षेत्र का सबसे ऊंचा रास्ता है। पत्थरों के ढेर की जगह 'चैत्य' का प्रतीक है। यह भक्तों को उस क्षेत्र को बिना किसी रुकावट के पार करने के लिए भगवान की कृपा मांगने के लिए एक छोटी सी भेंट है, आभार का संकेत है। पत्थरों को व्यवस्थित करके एक स्तूप बनाने की यह कोशिश ताकि लोग इतनी ऊंचाई पर चढ़ने के बाद भी

भगवान को न भूलें, यही मतलब रखती है। तिब्बत में ऐसी कई व्याख्याएं हैं। आम तौर पर, तिब्बती इन व्याख्याओं को नहीं मानते हैं। यह उनके लिए एक कर्तव्य है, और ऐसा लगता है कि उन्होंने कभी नहीं सोचा कि यह कर्तव्य क्यों निभाया जाना चाहिए।

मैं वहाँ एक घंटे रुका और फिर से रास्ता पकड़ लिया। यह रास्ता सीधा नीचे जाता था। कारो-ला से कुछ ही कदम दूर मुझे सड़क पर बर्फ़ मिली। इस ढलान पर सूरज की गर्मी काफ़ी कम होती है। इसलिए बर्फ़ को पिघलने का समय नहीं मिला। मैं उस बर्फ़ पर चलने लगा जो सफ़ेद कैंडी जैसी थी। ऊपर जाने में मैंने कितनी मेहनत की थी, लेकिन जब नीचे आया तो लगा जैसे कोई मेहनत ही नहीं हुई। हमारी दुनिया इसी नियम से बंधी हुई लगती है। समाज में अपनी जगह बनाने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है, साधना के रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है, जबकि जो लोग जीवन के सत्य से बाहर हैं, उनके लिए नीचे की ओर जाने का रास्ता होता है। नीचे जाना हमेशा आसान होता है। मैं कीचड़ जैसी बर्फ़ में फँसता रहा। जैसे-जैसे मैं नीचे जाता गया, मुझे उस पहाड़ की चोटी का शांत और चमकदार रूप दिखता रहा। यह नज़ारा नीचे से नहीं दिखेगा। इसलिए नीचे जाने से पहले मुझे अपना दिल भरना होगा। मैं एक आम पाखंडी हूँ, साधना का आनंद मेरी पहुँच से बाहर है। संत होने का दिखावा करने से मुझे बहुत कुछ मिलता है, सच्चे संत इस मामले में ज़रूर आनंद के सागर में होते हैं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১২৯

भासेन. बेशक, अपनी खोज में वे इस पल की खुशी को हमेशा के लिए खुशी में बदल सकते हैं. जो भी हो, यह मेरी समझ से परे एक बिल्कुल अलग दुनिया है.

कारो-ला से नीचे आते हुए, मुझे एक छोटा सा गाँव मिला, जिसमें बड़े- बड़े पत्थर के घर थे, जिनमें से ज़्यादातर फार्म हाउस थे। भेड़ों, सूअरों, मुर्गियों, गधों, याक और पहाड़ी घोड़ों का एक बड़ा झुंड था। अचानक, यह किसी पशु मेले जैसा लग रहा था। वे सभी सड़क पर रखे गए थे। मैं बहुत डरते हुए उनके पास से गुज़रा। गाँव के ठीक बीच में, मुझे एक छोटी सी चाय की दुकान मिली। दुकान के सामने आग के पास तिब्बती लोग बातें कर रहे थे। उनसे नमस्ते करने के बाद, मैंने धीरे से पूछा कि क्या उस तरफ कोई सराय है। कम से कम धीरे से ही सही, वे मुझे समझ गए। दुकानदार एक छोटा लड़का था, वह मुझे अपनी दुकान के एक कोने में ले गया और एक डिब्बे से कुछ जौ और साबुत जौ दिखाया, जिससे वह थोड़ा सूखा मटन मिलाकर शोरबा बना सकता था। लेकिन मुझे इसके पैसे देने थे। मैं कीमत देने के लिए मान गया, बेशक। मैंने उसे अपनी जेब से दो टकारा का नोट दिखाया और उसे भरोसा दिलाया कि वह पैसों की चिंता न करे।

खाना कुछ ही देर में तैयार हो गया। जब मैंने उसे गरम-गरम दो रुपये दिए, तो उसकी आँखें खुशी से चमक उठीं। बदकिस्मती से, उसके पास खुले पैसे नहीं थे, खाने की कीमत सिर्फ़ चार आने थी। उसके पास तिब्बती और चीनी सिक्के थे, लेकिन अगर वह इंडियन करेंसी लेता, तो उसे इंडियन करेंसी में ही वापस करने पड़ते। मैंने उसे इशारों से काफ़ी देर तक समझाया कि मुझे लोकल करेंसी लेने में कोई एतराज़ नहीं है। मैं उससे जेब में खुले पैसे लेकर चला गया, और जाने से पहले, मैंने उनसे गाँव का नाम पता किया। निकनेम ज़ारा था।

ज़ारा गांव से निकलने के बाद, मेरे दाईं ओर बर्फ़ से ढकी पहाड़ की चोटी धीरे-धीरे एक और छोटी पहाड़ी के पीछे गायब हो गई, सड़क नीचे उतरती रही, और एक घंटे चलने के बाद, सड़क एक बड़े मैदान में मिल गई। वहाँ मुझे एक बड़ी झील मिली। यह यमोद्रक झील थी।

जिन लोगों ने बड़ी चिल्का झील देखी है, उनके लिए इस झील की कल्पना करना आसान होगा। झील का पानी नीले आसमान का सबसे साफ़ रूप है। मेरा ध्यान यहाँ लगे हज़ारों झंडों पर गया। लकड़ी के खंभों वाले घर के ऊपरी हिस्से में पेड़ों की डालियाँ अलग-अलग रंग के धार्मिक झंडों और प्रार्थनाओं वाले कपड़ों से भरी हैं। ऐसा लगता है जैसे उन्हें आने वाले किसी त्योहार के लिए सजाया गया हो। गाँव के सभी घर पत्थर के बने हैं, लोकल पत्थरों को जमाकर सीमेंट से जोड़ा गया है, और ऊपर टिन या ढलवाँ छत है। हर दरवाज़े और खिड़की के चारों ओर सुंदर लकड़ी का काम है। आस-पास के पहाड़ों से बर्फ़ पिघलकर इस बड़ी झील में गिरती है, और फिर एक छोटी सी धारा के रूप में वह पानी ब्रह्मपुत्र नदी में मिल जाता है। ऐसी कई झीलों और पहाड़ों के पानी से तिब्बत

১৩০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

हमारे देश में सांगपो नदी का नाम ब्रह्मपुत्र नदी से लिया गया है। मुझे पहाड़ देखने की आदत हो गई थी, लेकिन अचानक इसके बीच में यह समुद्र जैसी झील मुझे दुनिया के दूसरे हिस्से में ले गई। शांत, साफ़, गहरी और गंभीर झील का दूसरा किनारा यहाँ से दिखाई नहीं देता। झील के चारों ओर हिमालय की चोटियाँ स्थिर खड़ी हैं। जैसे दुनिया के प्रतीक पर शाश्वत, स्थिर और शांत शिव खड़े हैं, वैसे ही महान माया, जो सुर का रूप है, खड़ी है।

मैं सड़क पर थोड़ा और आगे बढ़ा, सड़क गाँव में घुस गई। गाँव में घुसते ही मुझे एक मंदिर मिला जिसमें चेनरेज़ी की मूर्ति थी। माथा टेकने के बाद, मैंने मंदिर का चक्कर लगाना शुरू कर दिया। मैंने इस गाँव में एक बात देखी। आस-पास के ज़्यादातर घरों के दरवाज़े और खिड़कियाँ बंद थीं, मैंने मंदिर का चक्कर लगाया और माथा टेका। जैसे ही मैं मंदिर से दो कदम दूर चला, तीन-चार जवान लड़कों ने मुझे घेर लिया। मैं समझ नहीं पाया कि वे क्या कह रहे हैं। उनके चेहरे से साफ़ था कि वे भिखारी नहीं थे। छोटे बच्चों को देखकर, कुछ और जवान लड़के मेरी तरफ़ आए। मैंने उनकी बातचीत को बहुत ध्यान से समझने की कोशिश की, लेकिन मैं कुछ समझ नहीं पाया। उनमें से एक ने मुझे अपने पीछे चलने को कहा, और मैं बच्चों से घिरा हुआ उसके पीछे चल पड़ा। जैसे- जैसे वे मेरे आगे चलते गए, आस-पास के और भी बच्चे उनके ग्रुप में शामिल होने लगे। बच्चों के चेहरों से साफ़ था कि वे मेरे आस-पास रहकर खुश थे। गाँव के बड़े-बुज़ुर्ग मुझे आगे छोड़कर आगे बढ़ने लगे, जैसे उन्हें छोड़कर जा रहे हों। मैं बेवकूफ़ों की तरह उनकी बात मानता रहा। गाँव के थोड़े ऊँचे हिस्से में एक किला था, जिसकी बनावट ग्यात्सो किले जैसी थी। बाईं ओर कुछ घरों के बाद, मैंने देखा कि सड़क के किनारे तीस या चालीस लामा एक लाइन में खड़े थे, और आस-पास कोई मठ या मठ नहीं दिख रहा था। एक साथ कई सवाल मन में आए - क्या वे मेरे लिए खड़े हैं? उन्हें किसने बताया? शायद गाँव वाले नए लामाओं का स्वागत ऐसे ही करते हैं। जैसे-जैसे मैं पास पहुँचा, मैंने देखा कि सभी लामा हाथ हिला रहे थे और मुझे अपनी ओर खींचने की कोशिश कर रहे थे। जैसे-जैसे मैं पास पहुँचा, मुझे लगा जैसे उन्हें देखकर मेरा खून खौल रहा है। मैं मौनी बाबा को भूल गया और चिल्लाया - साधु बाबा।

मैं हैरानी से उन्हें एक पल के लिए देखता रहा, उन्होंने प्यार से मेरी पीठ और सिर थपथपाया, जिससे मैं शांत हो गया, मौनी बाबा भी शांत

हो गए। मैंने पहले साधु बाबा को, फिर एक-एक करके सभी साधुओं को प्रणाम किया और उनके ग्रुप में शामिल हो गया। गांव के बच्चे जो मुझे यहां तक लाए थे, हमारी मुलाकात देखकर खुश और प्रसन्न थे। उन सभी को धन्यवाद देते हुए, मैं लामाओं के साथ अंदर चला गया।

मुझे लगा कि मैं सामिडोंग पहुंच गया हूं, मुझे आज रात पहुंचना था।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৩১

"अभी शाम बहुत हो चुकी है, मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं इतनी जल्दी यहाँ कैसे आ गया। जब मैं घर में आग के पास बैठा था, तो साधु बाबा ने मुझे समझाया कि यह गाँव समदिंग नहीं है, बल्कि इस गाँव का नाम नागरत्से है। समदिंग यहाँ से और उत्तर में है। सभी को समदिंग गुफा में जाना था, लेकिन इन दिनों गुफा की हालत बिल्कुल भी ठीक नहीं है, वे पैसे की तंगी में जी रहे हैं। इसलिए वे कुछ दिनों के लिए एक पुराना घर किराए पर ले रहे हैं, घर का मालिक ल्हासा में रहता है। मालिक के भाई के पास चाबी थी, उसने लामा तीर्थयात्रियों को कुछ दिनों के लिए पुण्य कमाने के लिए यह घर इस्तेमाल करने दिया।

जब गुरुजी समदिंग पहुँचे और देखा कि बत्तीस लामाओं को ठहराना मुमकिन नहीं है, तो वे इस गाँव में वापस आ गए। वे गाँव के कई बुज़ुर्गों को बहुत पहले से जानते थे, इसलिए कोई मुश्किल नहीं हुई। ल्हासा जाने के लिए इसी गाँव से गुज़रना पड़ता था। उन्होंने घर पर सबको बता दिया था कि विदेशी लामा एक-एक करके इसी रास्ते से आएँगे, ताकि उन्हें देखते ही साधु बाबा को बता दें। गाँव की बोरिंग ज़िंदगी में साधुओं को ढूँढ़ने का यह काम कुछ दिनों के लिए गाँव वालों के

लिए एक खेल बन गया। पहले तो बुज़ुर्गों में जोश था, लेकिन जब उन्हें देखा तो बच्चे भी इस खेल में शामिल हो गए। जैसे ही उन्होंने किसी नए लामा को गाँव से गुज़रते देखा, उन्होंने साधु बाबा को बता दिया। ग्यात्से के लामा, मेरी तरह, समदिंग जाते हुए एक-एक करके यहाँ पकड़े गए। मैं उनमें सबसे आखिरी यात्री था।

थोड़ी देर आराम करने के बाद, मैं शाम के करीब साधु बाबा के साथ झील की तरफ निकल गया। यह झील नहीं बल्कि एक समंदर है, इस तरफ से दूसरी तरफ नहीं देखा जा सकता। इस जगह पर खड़े होकर ऐसा लगता है जैसे मैं पुरी के समंदर के किनारे खड़ा हूँ। साधु बाबा के साथ जप, शाम और दोपहर की पूजा के बाद, मैं गाँव लौट आया। साधु बाबा ने मुझे चेतावनी दी और कहा - बहुत सावधान रहना! तुम मौनी बाबा हो, बिल्कुल बात मत करना। गाँव में सब तुम्हें मौनी बाबा के नाम से जानते हैं। ऐसा लगता है जैसे कई युगों बाद मुझे फिर से अपने मिल गए हैं, यही मेरी खुशी है। भले ही मैं सालों से साधु बाबा के सामने मौनी हूँ, मुझे लगता है कि मैं बोर नहीं होऊँगा।

घर एक मंज़िला है, जिसकी दीवारें बड़े पत्थरों से बनी हैं और चारों तरफ़ पत्थर की दीवारें हैं। साफ़ है कि यह जंगल का घर है, और किचन भी बहुत बड़ा है। घर की छत पगोडा जैसी है जिस पर लकड़ी के बीम लगे हैं, जैसे पहाड़ी ज़मींदारों के बंगले होते हैं। घर मुफ़्त में मिला था। सभी लामा किचन में पनाह लिए हुए हैं। वे सब मेरा इंतज़ार कर रहे थे - उस रात यह तय हुआ कि मैं अगली सुबह समदिंग के लिए निकलूंगा।

दरवाजे के अंदर आओ

नागत्सा की शाम बहुत खूबसूरत होती है, सूरज डूबने की रंगीन रोशनी बर्फीली चोटियों पर पड़ती है और पूरी दुनिया को एक जादुई दुनिया में

बदल देती है। सूरज डूबने के बाद सब अपने-अपने घरों में चले जाते हैं। बहुत ज़्यादा ठंड में आग जलाने पर भी कोई बाहर नहीं रहता। खाने-पीने के बाद गुरुजी ने हमें समदिंग गुफा के बारे में एक बहुत अच्छी कहानी सुनाई, कहानी कुछ इस तरह है।

समदिंग गुफा के दो हिस्से हैं, पहला हिस्सा महिलाओं के लिए है, दूसरा हिस्सा पुरुषों के लिए है। समदिंग गुफा अपने महिला सेक्शन के लिए बहुत मशहूर है। तिब्बत में महिलाओं के लिए इतना बड़ा कोई दूसरा मठ नहीं है। यहां की महिलाओं को पुरुष लामाओं के बराबर दर्जा दिया जाता है। अगर हम तिब्बती शब्द समदिंग का मतलब समझें, तो इसका मतलब है 'ध्यान का पहाड़'। ऐसा लगता है कि यह नाम इस गुफा के चारों ओर शांत और कोमल पहाड़ों की वजह से दिया गया था। यह एक पुरानी गुफा है। जो सबसे ताकतवर है, यानी महिला सेक्शन की गुरु को दोर्जे पामो कहते हैं। सब लोग असली दोर्जे पामो को तिब्बत की मां कहते थे। तिब्बत में बुद्ध की आत्मा की कोई कमी नहीं है। एक मजबूत लामा को ही जीवित बुद्ध के तौर पर सम्मान दिया जाता है। अपने शब्दों और धर्म के लिए, वह तिब्बत में लामा के रूप में घूमते हैं, वह हमेशा पुरुष शरीर में जन्म लेते हैं। इसी समदिंग गुफा में वह 'पत्नी' के रूप में प्रकट हुईं, जिनका नाम दोर्जे पामो रखा गया। इतिहासकारों के अनुसार, वह लगभग पाँच सौ साल पहले 1716 AD में दोर्जे पामो के रूप में यहाँ पहली बार आई थीं। उस पहली दोर्जे पामो की दिव्य शक्ति असाधारण थी। वह एक महिला के शरीर में देवी थीं। उनकी चमत्कारी कहानियाँ बहुत हैं। मैं आपको उनके बारे में बता रहा हूँ जो हर जगह जानी जाती हैं।

सैमडिंग में पहले से ही मर्दों और औरतों के लिए गुफाएँ थीं, लेकिन औरतों की जगह काफ़ी कम थी। उस समय, चीनी तातार तिब्बत में घूम रहे थे, लूटपाट कर रहे थे। उनके हमलों और ज़ुल्म के डर से कई नेक लामा यहाँ शरण लेने आए थे। उन्हें लगा कि हिमालय की गोद में छिपी गुफा कम

से कम जंगली लोगों के हमलों से तो सुरक्षित रहेगी। उनका यह सोचना गलत था। तातार भेड़ियों से ज़्यादा खूंखार और गीदड़ों से ज़्यादा चालाक थे। लूटपाट उनका धर्म था। इसलिए सैमडिंग उनके हाथों से बच नहीं सका। एक दिन, वे अचानक सैमडिंग गाँव के शांत और बेफिक्र गाँव वालों पर टूट पड़े।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৩৩

ज़्यादातर गाँव वालों ने उन्हें रोकने की कोशिश में अपनी जान गँवा दी, उनकी माँ-बहनों ने उनके ज़ुल्म की वजह से अपनी इज़्ज़त गँवा दी और जिन्हें मौका मिला, उन्होंने समदिंग गुफा में पनाह ले ली। गुफा के बीच में एक बड़ा आँगन था और उसके चारों ओर किले जैसी पत्थर की दीवार थी। जब तातार सरदार को पता चला कि सबने समदिंग मठ में पनाह ले ली है, तो उन्होंने तुरंत मठ पर हमला कर दिया। वह निशान आज भी गुफा या मठ की दीवार पर मौजूद है। गुफा का दरवाज़ा अंदर से बंद था। बहुत कोशिशों के बाद भी वे उसे बाहर से नहीं खोल पाए। आखिर में उन्होंने एक बड़े पत्थर के हथौड़े से दरवाज़ा तोड़ना शुरू कर दिया। उनका शोर सुनकर गुफा की सभी औरतें मुख्य लामा के पैरों पर गिर पड़ीं और पनाह माँगने लगीं - माँ, हमें बचा लो। उसने उन्हें भरोसा दिलाया और कहा - डरो मत।

तातारों की चीखें अपने चरम पर पहुँच गईं, उन्हें पता चल गया था कि गाँव की खूबसूरत जवान लड़कियाँ इस गुफा में छिपी हैं, वे लगभग उनकी गिरफ़्त में थीं। उनकी चीखें सबसे भयानक जानवरों जितनी तेज़ थीं। आखिर में, उन्होंने दरवाज़ा तोड़ा और गुफा के अंदर घुस गए। अंदर

जाते ही उनकी आँखें एकटक जम गईं। ढूँढ़ने के बावजूद, उन्हें अंदर एक भी इंसान नहीं दिखा। गुफा के आँगन में सूअरों का एक झुंड मज़े से घूम रहा था, फुफकारने की आवाज़ कर रहा था, और उनके बीच में एक सफ़ेद सूअर था। तातारों को हार मानकर वापस लौटना पड़ा, उन्हें लगा कि इस गाँव में और कोई नहीं है, और थोड़ी ही देर में वे गाँव छोड़कर कहीं और चले गए। वह सफ़ेद सूअर बिजली गिराने वाला दोर्जे फाग्मो था या, जैसा कि कहा जाता है, दोर्जे पम्मो, और बाकी सूअर गुफा के लामा और गाँव वाले थे। उसने अपने जादू से उन सभी को सूअर बनाकर ज़ालिम तातारों से बचाया। तब से इस गुफा के बड़े लामा को दोर्जे फामो कहा जाता है।

अगली सुबह हम निकल पड़े। गांव वालों का आशीर्वाद लेने के बाद, हम समदिंग की सड़क पर चल पड़े। सुबह की सड़क काफी सुहानी थी, और चलते- चलते हमने माँ तारा की पूजा के मंत्र याद करने शुरू कर दिए। गुरुजी के अनुसार, अगर मैं माँ तारा का ध्यान पूरी तरह से कर लूँ, तो मुझे भविष्य में कोई सांसारिक परेशानी नहीं होगी।

यमद्रोक सरोवर के किनारे करीब दो घंटे चलने के बाद हम झील के सबसे उत्तरी हिस्से में पहुँचे जहाँ झील उत्तर की ओर एक तीखे कोण पर खत्म होती है। इसके किनारे पर हमें कुछ मंदिर दिखे। हमारे सामने समदिंग गुफा थी। पहले हमने गुफा के ऊँचे झंडे देखे, और फिर जैसे-जैसे हम आगे बढ़े, हमें घर और साफ़ दिखने लगे। इस इलाके के सभी घर एक जैसे हैं, यानी लोकल पत्थर की ऊँची दीवारों पर बने हैं। गाँव के एंट्री गेट पर हमें एक चैत्य मिला। वहाँ हमने खड़े होकर प्रणाम किया और मेन मंदिर की तरफ़ बढ़े। जैसे ही हम गाँव में घुसे, हमारी नाक में मछली की तेज़ गंध आई। यह मछली ही थी।

১৩৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

यह एक बाज़ार जैसा था, लेकिन मैंने आस-पास देखा लेकिन कुछ नहीं दिखा। मुख्य मंदिर गुफा के अंदर है। हमने एक पगोडा जैसे दरवाज़े से गुफा की दीवार पार की और अंदर गए। जैसे ही हम अंदर गए, हमने तीन-चार जवान औरतों (लामा) को देखा जिन्होंने हमें देखा और भाग गईं। एक पुरुष लामा हमारे सामने आया और पूछा, "क्या आप तीर्थयात्री हैं, जो भारत से आ रहे हैं?"

हाँ। चीफ लामा को हमारे बारे में पता है, उन्हें बताओ। गुरुजी ने जवाब दिया। लामा ने हमारी आवाज़ सुनी और चिल्लाने लगे। उनकी आवाज़ सुनकर, कुछ लड़कियाँ दौड़कर आईं, भूरे लामा वाले कपड़े पहने और सिर मुंडाए हुए। वे हमारे सामने आईं और झुकीं। पहले से जाने-पहचाने लामा ने किसी तरह उन्हें समझाया, और लड़कियों ने फिर से हमें झुककर प्रणाम किया और चली गईं। वहाँ से, हम एक मंदिर में आए। मैं खड़ा हुआ और ध्यान से चारों ओर देखा। यहाँ से झील दिखाई नहीं दे रही थी। सब कुछ शांत और पवित्र था। गर्मियों में, ऐसा लगता था कि कुछ खेती होती है। लेकिन बगीचे के कोने में अभी भी बर्फ़ पड़ी है, जो अभी पिघलनी शुरू हुई है। मेन मंदिर के अलावा, कुछ छोटे मंदिर और लामा का मठ है। कभी-कभी, हवा में मछलियों की तेज़ गंध आने लगती थी। गाँव वाले और लामा हमारे आस-पास इकट्ठा होने लगे। फिर एक समय पर, एक बुज़ुर्ग महिला हमारे पास आईं, उनके दोनों ओर चार जवान औरतें, दो-दो करके खड़ी थीं। उन सभी ने पुरुष लामाओं जैसे कपड़े पहने थे, और इस कड़ाके की ठंड में भी उनके सिर मुंडे हुए थे। वे हमारे पास आकर खड़ी हो गईं। गुरुजी ने उनसे हमारा परिचय कराया। यह माँ जैसी महिला यहाँ की सबसे बड़ी देवी, दोर्जे पाम थीं। हम सबने एक-एक करके उन्हें प्रणाम किया। हमारे प्रणाम करने के बाद, मठ की लड़कियाँ आईं और एक-एक करके हमें

प्रणाम करने लगीं। चूँकि मैं लामाओं में सबसे छोटा लामा था, इसलिए सबकी नज़रें आसानी से मुझ पर पड़ गईं। जैसे ही प्रणाम करने की बारी खत्म हुई, मंदिर के दरवाज़े के दोनों तरफ़ से मंगल भेरी बजने लगी। उन्होंने लगभग पाँच मिनट तक तुरही बजाई और हमारा स्वागत किया। इस तरह, समदिंग गुफा में हमारा स्वागत हुआ। हम उनके खास मेहमान थे। फिर लड़कियाँ हमारे दोनों तरफ़ खड़ी होकर प्रार्थना करने लगीं और हमारा स्वागत किया। मैंने उन्हें गिना और देखा कि वे सिर्फ़ छप्पन थीं। उनकी प्रार्थना के जवाब में, हमने भी प्रार्थना की। हमारी छोटी सी मीटिंग वहीं खत्म हो गई। लड़कियाँ अपने-अपने काम पर चली गईं। माँ दोर्जे पामो और उनके दो अटेंडेंट लामाओं ने हमारी मेहमाननवाज़ी की ज़िम्मेदारी अपने घर पर छोड़ दी, कहने की ज़रूरत नहीं कि वह बहुत बिज़ी थीं। हमें दोपहर में लड़कियों के साथ लंच करने के लिए बुलाया गया था। हमारी समदिंग प्रदक्षिणा शुरू हुई।

गांव छोटा है इसलिए देखने के लिए कुछ नहीं है। समदिंग गुफा यहां का मुख्य आकर्षण है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৩৫

मेन मंदिर में सौ भुजाओं वाली बुद्ध की एक बहुत बड़ी मूर्ति है। दूसरी मूर्तियों में, वज्रपाणि प्रथम दोरजे पामो की मूर्ति यहाँ के मुख्य देवता लगते हैं। मंदिर में सैकड़ों टंका और बुद्ध के अलग-अलग अवतारों की छोटी सोने की मूर्तियाँ हैं। दूसरे मंदिरों की तरह यहाँ भी घी के दीये जलाए जाते हैं। ग्यात्सा के मुकाबले, समदिंग गुफा कुछ भी नहीं है। कम से कम, मेरी आम आँखों को तो अपनी डायरी में लिखने के लिए कोई अच्छी जानकारी नहीं मिली। मैं काफी निराश हुआ। क्योंकि

दोरजे पामो और समदिंग गुफा का नाम सुनकर मुझे लगा कि यह भी कुछ बड़ा ही होगा।

आखिर में, मैं मंदिर के पीछे एक कमरे में आया और खुशी से उछल पड़ा, मुझे कुछ नया मिला। गुरुजी ने कहा, "जिस कमरे में हम अब जा रहे हैं, वहाँ तुम्हें वेदी पर बक्सों की एक लाइन दिखेगी। उन बक्सों में पहले से लेकर अब तक के सभी दोर्जे पामो के शरीर ममी के रूप में संभालकर रखे गए हैं। यहाँ जो दोर्जे पामो है, ये सभी शरीर उसके हैं, वह एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण करता है। नया शरीर धारण करके, यानी दोर्जे पामो की जगह लेकर, वह अपने पिछले शरीरों को देखने के लिए इस कमरे में आता है। यहाँ उसे तीन दिन तक बिल्कुल अकेला रहना होता है। इन तीन दिनों में वह तीन गुणों, सत्व, रजस और तमस का ध्यान करता है, और उस ध्यान को तोड़ने के बाद, वह चमत्कारी शक्तियों का मालिक बन जाता है।"

हम उस कमरे में घुसे। कमरा मौत जैसा ठंडा लग रहा था। एक लैंप की रोशनी में कुछ भी ठीक से देख पाना नामुमकिन था। हमें लैंप की उस हल्की, रहस्यमयी रोशनी में ममी के बक्सों को देखना बंद करना पड़ा। उस कमरे में बात करना भी मना था। अगर मैं तीर्थयात्रियों के साथ नहीं आया होता, तो मैं ज़रूर उस कमरे में कम से कम एक दिन रुकने की इजाज़त मांगता। तंत्र साधना के कुछ मुख्य राज़ ज़रूर उस कमरे में छिपे होंगे।

हमने करीब एक घंटा घूमते हुए बिताया, फिर हम गांव में आए, जैसे ही हम गांव के पीछे की तरफ झील के किनारे पहुंचे, हमें एक बहुत बड़ा सूखा मछली सेंटर दिखा। झील से मछलियां पकड़ी जाती हैं, उनका पेट काटकर, साफ करके झील के किनारे रेत पर सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है। लड़के उन्हें चील और दूसरे पक्षियों से बचाने के लिए हाथों में

पत्थर लेकर रखवाली कर रहे हैं। यहीं से मछलियों की खुशबू आती है। झील से मछलियां पकड़ी जाती हैं, सुखाई जाती हैं और ल्हासा भेज दी जाती हैं। ट्रांसपोर्टेशन की दिक्कत की वजह से, ताज़ी मछली भेजने का कोई इंतज़ाम नहीं है। थोड़ी देर झील के किनारे घूमने के बाद, हम गुफा में वापस आ गए। जैसे ही खाने की घंटी बजी, हमें किचन में लाया गया। धीरे-धीरे सब लोग वहां इकट्ठा होने लगे। बरामदे में धूप तेज़ चमक रही थी। वहां हम दो लाइनों में बैठ गए। लड़कियां हमारे सामने बैठी थीं। खाना बनाने की ज़िम्मेदारी एक बार में एक ग्रुप पर थी। जो खाना बनाती थीं, वे सेवा करती थीं। यहां लड़कियां दस-बारह साल तक ब्रह्मचर्य और संन्यासी का व्रत लेती हैं, फिर अलग-अलग गांवों में सेवा करने जाती हैं।

১৩৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

क्योंकि. यह समझा जा सकता है कि यहाँ का माहौल सूखा और कठोर है। अलग-अलग सब्ज़ियों, सूखी मछली, जौ और चावल को मिलाकर एक अजीब तरह की तिब्बती खिचड़ी बनाई जाती है, यह खाने में सच में बहुत स्वादिष्ट होती है, पकाने की तारीफ़ करनी होगी। प्रार्थना के बाद सब लोग खाने में बिज़ी हो गए, खाते समय एक भी शब्द नहीं बोल पाए। मैं अपने सामने लड़कियों को देखने लगा - आम तिब्बती लड़कियाँ बहुत खुशमिजाज़ होती हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि उनकी हँसी ध्यान के इस मुश्किल रास्ते से पूरी तरह हट गई है। क्या यही खुशी का रास्ता है!

खाने के बाद, हमने मदर दोर्जे फागमो को प्रणाम किया और उन्हें हाथी के दाँत की एक छोटी बुद्ध मूर्ति भेंट की, और जल्दी से बाहर निकल गए। जब हम जा रहे थे, तो मैंने देखा कि लड़कियाँ और दूसरे वर्कर हमें

अलविदा कहने के लिए गेट पर खड़े थे। जहाँ तक हमारी नज़र जा सकती थी, हमने उन्हें हाथ हिलाकर अभिवादन किया।

चलते-चलते गुरुजी ने सबका ध्यान यमद्रोक झील की ओर दिलाया और कहा, "गर्मियों में बहुत से तिब्बती लोग इस झील की परिक्रमा करते हैं। उनके अनुसार, इस झील की परिक्रमा करने से बहुत पुण्य मिलता है। लेकिन इसकी परिक्रमा करने में एक महीना लगता है, लगभग दो हज़ार मील की दूरी। मैदान (समुद्र तल) से इसकी ऊँचाई लगभग 15,000 (पंद्रह हज़ार) फ़ीट है। गर्मियों में इस झील में बहुत सारे हंस देखे जा सकते हैं, और बहुत सी रंग-बिरंगी मछलियाँ भी देखी जा सकती हैं, हालाँकि मैं उन सभी को नहीं जानता।"

163
भाषा

मैंने पहले ही कुछ तिब्बती शब्द सीख लिए हैं, और अगर मैं धीरे बोलूं, तो मैं उन्हें समझ भी सकता हूँ। मुझे उनकी प्रार्थनाएँ सबसे ज़्यादा पसंद हैं, उनकी लय पहाड़ों की तरह ऊँची और नीची है। उनकी आवाज़ के टोन के बारे में कहने को ज़्यादा कुछ नहीं है, वे गद्य को लय के रूप में पेश करते हैं। गद्य खुद मन की भावना और ईमानदारी के साथ कविता की तरह व्यक्त होता है। मुझे उन्हें सुनने की मनाही नहीं है, इसलिए मैं हमेशा उन्हें सुनता हूँ - मौनी बाबा को बोलने की मनाही है, इसलिए अगर मैं चाहूँ भी, तो मुझे प्रैक्टिस करने का मौका नहीं मिलता।

वे हर शब्द को दो बार बोलते हैं, जैसे हंस को गंगपो कहते हैं। शब्द को एक साथ बोलने के बजाय, वे न्गंग-पो कहते हैं। हिरण को खस्सा कहते हैं, जिसका उच्चारण ख-सा होता है, प्रार्थना को झंडा-धर-चक या धर-चक कहते हैं, सुअर को पक-को, फूल-में-टोक, पुल-झाम-पा, भेड़ को लुक-चा, ज़मीन को सा-चा, लंका-अ-कार, वगैरह कहते हैं।

एक अक्षर के लिए कई शब्द हैं, जैसे -न्या-मछली, भा-गाय, हैम-लोमड़ी, आदि।

उन्हें पूरा शब्द बोलने के लिए कई बार रुकना पड़ता है, जैसे 'था- चूड़ी-थुंग थुंग बे', जिसका मतलब है कि यह प्रार्थना झंडा छोटा है।

वे व्यंजन (3) और व्यंजन (ಂ) का बहुत इस्तेमाल करते हैं। ತ अक्सर शब्दों से पहले सुनाई देता है, यानी शब्द का उच्चारण होने से पहले, यह ತ से शुरू होता है। उदाहरण के लिए, ತ-sang-pakhir basa, ತ-jam-basanapatra, ತ-san-deng-pine gacha।

ऐसा लगता है कि बहुत ज़्यादा ठंड की वजह से यह भाषा इस तरह बनी है। यानी ठंड में कांपते हुए भी यह भाषा बोलना आसान है। अब तक मुझे सड़कों पर बहुत कम लोग मिले हैं जो सौ, दो सौ और हज़ार तक गिनती गिन सकते हैं। ज़्यादातर समय, बाज़ार में आम छोटे दुकानदार एक से दस या बीस तक गिन सकते हैं। और कई बार मैंने उन्हें जोड़-घटाने के लिए छोटे पत्थरों की मदद लेते देखा है। कई लोग गिनती करने के लिए प्रार्थना की माला का भी इस्तेमाल करते हैं। तिब्बती में गिनती सुनना बहुत अच्छा लगता है। जब बच्चे सिर हिलाकर उन्हें पढ़ते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे वे कविता सुना रहे हों। उदाहरण के लिए, चिग-नी- सुम-ज़ी-नगा-डुग-डुन-गी-गु-चू, यानी 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10. फिर चू- चिग, गी-सु, नगेर-चिग, सु-चू, सा-चिग, वगैरह. तिब्बत में घड़ियों का

इस्तेमाल बहुत कम होता है. अमीर लोगों के पास घड़ियाँ होती हैं, लेकिन वे प्रॉपर्टी या

১১

১৩৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

दोस्ती की निशानी। मैंने अब तक गुफाओं में घड़ियों का इस्तेमाल नहीं देखा है। सुबह मुर्गे की बांग और सूरज निकलने से समय तय होता है। मैंने उन समयों को भी अपनी डायरी में मोटे तौर पर लिख लिया है-

चक-तांग पो-

चक-नी-पा-

थोंग-रंग-

टी-से-शर

धरती

टी-शा-टिंग-

नी-कुंग-

गोंग-ता-

समलैंगिक नहीं

सा-रेप-

नाम-चे-

भोर में पहला मुर्गा बांग देता है।

मुर्गा सुबह दूसरी बार बांग देता है।

पहली सुबह की रोशनी

सूर्योदय

सुबह (जैसे सुबह आठ बजे या साढ़े आठ बजे)

सूरज उग चुका है (लगभग साढ़े दस या ग्यारह बजे)

दो बजे

दोपहर

सूर्यास्त

रात

मध्यरात्रि

किसी भी गुफा में रहने के लिए ऊपर बताए गए समय को जानना ज़रूरी है क्योंकि गुफा का प्रोग्राम इसी पर आधारित है। समय का हिसाब हमारे देश जैसा ही है, सात दिन मिलकर एक हफ़्ता बनाते हैं। सोमवार-जा न्यिंगमा, मंगलवार-जा डाबा, बुधवार-जा मिंगमा, गुरुवार-जा लाक पा, शुक्रवार-जा फुरपु, शनिवार-जा पासंग, रविवार-जा पेम्पा।

मैंने तिब्बती भाषा शुरू से नहीं सीखी, उनकी लिखी बातें पढ़ने के लिए, शुरू से ही इस भाषा को अच्छे से सीखना ज़रूरी है। मेरे सीखने का मतलब है कि मैं रास्ते में जो सुनता हूँ और उससे जो समझता हूँ, उसे याद करने की कोशिश कर रहा हूँ। जो लोग लेचा भाषा जानते हैं, उनके लिए यह भाषा समझना बहुत आसान है। मैं ज़बरदस्ती सीख रहा हूँ। यह कहना नामुमकिन है कि मुझे ग्यात्से से अकेले आना पड़ा - अगर भविष्य में हम फिर से अलग हुए, तो मुझे आगे बढ़ने के लिए कुछ शब्दों की ज़रूरत ज़रूर होगी। इसलिए अब से, मैं ज़्यादा सतर्क रहता हूँ, जैसे ही मुझे कोई नया शब्द मिलता है, मैं उसे याद रखने की कोशिश करता हूँ। मुझे उनकी प्रार्थनाएँ और मंत्र सबसे ज़्यादा पसंद हैं। जो लोग भूटान गए हैं और वहाँ की गुफाओं से परिचित हैं, वे ज़रूर मुझसे सहमत होंगे।

प्रथम त्सांगपो दर्शन

ट्रामलूक से हम इस इलाके के सबसे ऊंचे पहाड़ी दर्रे तक चढ़ते रहे, ल्हासा के रास्ते में यह आखिरी रुकावट थी। सत्रह हज़ार फीट की ऊंचाई पर खंबा-ला या खंबा दर्रा। इससे पहले हम तीन और ला या पहाड़ी दर्रे पार कर चुके थे, पहला बॉर्डर पर नाथू-ला, दूसरा फरीर का तांग-ला, तीसरा कारो-ला। लेकिन यह खंबा-ला बेशक बाकी तीनों से बिल्कुल अलग है। खंबा-ला की अपनी खासियतें हैं। यहां से दो दिशाओं में दो नज़ारे

दिखते हैं, बिल्कुल अलग। एक तरफ चोमलहारी और दूसरी हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियां, और दूसरी तरफ सांग-पो की घाटी। यमड्रोक झील बहुत अजीब लगती है, ऐसा लगता है जैसे किसी बड़े पहाड़ी घाटी में कोई बिच्छू सो रहा हो। अगर आप थोड़ी कल्पना करें, तो यह झील बिच्छू जैसी दिख सकती है। इतनी ऊंचाई से पानी अब पानी जैसा नहीं लगता, ऐसा लगता है जैसे कोई बहुत बड़ा बिच्छू राक्षस सो रहा हो। इसीलिए कई भारतीय तीर्थयात्री इस झील को बिच्छू झील कहते हैं। यहीं से हमें ब्रह्मपुत्र के असली रूप की पहली झलक मिली। आगे घाटी में एक विशाल, शांत, बर्फीले अजगर का शरीर पड़ा है। ऐसा लगता है जैसे कोई छोटी पहाड़ी नदी हो जिसमें कोई हलचल न हो। यह बस अपने अस्तित्व के साथ वहीं खड़ी है। त्सांगपो का यह शांत रूप देखकर ऐसा नहीं लगता कि यह नदी वही है जो हर साल सैकड़ों गांवों और जिंदगियों को तबाह कर देती है। भारत में ब्रह्मपुत्र नाम लेने से पहले, इस तिब्बती घाटी में पश्चिम से पूर्व की ओर इसका रास्ता लगभग पंद्रह सौ मील का है। त्सांगपो यहां से दो हजार फीट नीचे है। यह नदी हमेशा समुद्र तल से लगभग बारह हजार फीट ऊपर बहती है। खंबाला के ठीक बाद, पहाड़ सीधे नीचे चला जाता है और त्सांगपो नदी की घाटी में मिल जाता है। यह हिमालय का आखिरी हिस्सा है। महान हिमालय को पार करने के बाद, हम दूसरी तरफ पहुंच गए हैं। त्सांगपो के उत्तर में चांग-तांग पहाड़ भी उठ रहे हैं। चीन उस पहाड़ के किनारे पर है।

मैंने अपनी डायरी में पहले ही लिख दिया है कि इस इलाके की खूबसूरती को बताने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। यह दुनिया कुदरती खूबसूरती से कहीं आगे है। हिमालय की पवित्र, पवित्र और शांत खूबसूरती की आत्मा यहीं छिपी है। सत्यम शिवम सुंदरम का पूरा रूप। खंबा-ला से हम नीचे पात्सी नाम के एक गांव में आए। उस रात हमने किसी तरह तीन घरों में रात बिताई।

১৪০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

अगली दोपहर हम त्सांगपो के किनारे पहुँचे। जैसे ही सूरज डूबा, हमने अपनी प्रार्थना पूरी की और पवित्र त्सांगपो का पानी अपने सिर पर डाला। त्सांगपो दिखने में बहुत बड़ी नहीं है, ऋषिकेश के पास गंगा की तरह, लेकिन यहाँ दोनों तरफ की घाटियाँ ज़्यादा चौड़ी हैं। नदी पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है। यहाँ से हमें नदी पार करनी है - ल्हासा अब सिर्फ़ दो दिन की दूरी पर है।

सांगपो का बड़ा पीला रेतीला टीला, नदी के दोनों तरफ कई घर। नदी के किनारे सड़क पर बहुत से लोग चल रहे थे। नदी के दूसरी तरफ, हमने सड़क पर कुछ लॉरी देखीं। काफी देर बाद, हम अपनी दुनिया में लौट आए।

चक्खम गुफा

जैसे ही हम त्सांगपो के किनारे पहुँचे, हमें पहाड़ों की सूखी ठंड से राहत मिली। यहाँ की ठंड बहुत हल्की लग रही थी। हम त्सांगपो के किनारे-किनारे पूरब की ओर चलने लगे। सड़क त्सांगपो की बजरी वाली रेत से बनी थी। यहाँ से ल्हासा तक हमें और पहाड़ नहीं चढ़ना पड़ा। थोड़ी देर बाद, पहाड़ों की ढलानों पर दाईं ओर कुछ मंदिर दिखाई दिए। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें सूखे पेड़ों से ढकने की नाकाम कोशिश की गई हो।

यह चक्कसम गुफा है, हम इस गुफा की धर्मशाला में रात बिताएंगे, गुरुजी ने घोषणा की।

त्सांगपो के किनारे पहुँचकर हमारा जोश दोगुना हो गया था, और थके- हारे लामाओं में अचानक जान आ गई थी। त्सांगपो का रास्ता छोड़कर हम दाईं ओर छोटी पहाड़ी की ओर मुड़े। इसे पहाड़ के बजाय थोड़ी ऊँची पहाड़ी कहना ज़्यादा अच्छा होगा। जैसे ही हम थोड़ा आगे बढ़े, हम अचानक एक बाघ के मुँह में गिर पड़े - नहीं, तिब्बती कुत्ता नहीं, बल्कि एक ज़्यादा खतरनाक चीनी सैनिक। हम सोच भी नहीं सकते थे कि पहाड़ी के पीछे उनके टेंट छिपे हुए थे। वे अचानक बेइज्जत चीखते हुए हमारी ओर दौड़े। हमें उनकी मेहमाननवाज़ी पहले भी मिली थी, लेकिन वह तहज़ीब वाली मेहमाननवाज़ी थी, लेकिन मुझे नहीं पता कि इस मेहमाननवाज़ी को क्या कहूँ, भले ही मैं इसे बदतमीज़ लिखूँ, ऐसा लगता है कि उन्हें पूरी इज़्ज़त दी गई, यह इन पहाड़ी सैनिकों का नॉर्मल बर्ताव लगता है।

हमारा सब्र और शांति बनाए रखना अब नेचुरल हो गया है, सांप के काटने के बाद भी हमें वह एहसास परेशान नहीं करता। कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे हम ज़िंदा होते हुए भी बेजान हैं। वासना और गुस्से से परे एक बेजान दुनिया में एक अजीब जीव। मैं प्यार का साधु हूं, इसलिए मेरे मन में अक्सर ऐसे ख्याल आते हैं, लेकिन मैंने यह रास्ता जानबूझकर चुना है, तो मैं किससे शिकायत करूं? जिस तरह से चीनी सैनिक अचानक हमारे सामने आ गए और हमें घेर लिया, वह किसी को भी चौंका देता। गुरुजी हर तरह के पलों के लिए तैयार थे, उन्होंने बहुत कोशिश करके उन्हें यकीन दिलाया कि हम लामा हैं, चक्खम गुफा जा रहे हैं। उन्होंने हमारा रास्ता छोड़ दिया, लेकिन गुफा तक हमारे पीछे-पीछे आए। हमने गुफा का मेन दरवाज़ा खटखटाया, और अंदर से एक लामा आया।

১৪২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उन्होंने हमारा स्वागत किया। जैसे ही हम अंदर गए, हमें पता चला कि इस समय धर्मशाला में कोई मेहमान नहीं है। इसलिए रुकने में कोई दिक्कत नहीं होगी। हमें अंदर आते देख चीनी सैनिक चले गए, और मैं सोचने लगा कि मैं तिब्बत में हूँ या पेकिंग में।

उस दिन धर्मशाला में उनोन के पास बैठकर हमने खुशी और सच्चे मन से बार-बार गुरुजी का शुक्रिया अदा किया। सैकड़ों मुश्किलों के बावजूद हम आखिरकार त्सांगपो के किनारे पहुँच गए, यह गुरुजी की वजह से है। ल्हासा के रास्ते त्सांगपो पहुँचने का मतलब है ल्हासा पहुँचना।

चक्खासम एक बड़ा मठ है। वहां करीब सात सौ लोग रहते हैं। और अगर चाहें तो मठ में तीन सौ लोग रह सकते हैं। यह गुफा तिब्बत में बुद्ध पूर्णिमा और पद्मसंभव त्योहारों के लिए बहुत मशहूर है। मठ बड़ा है, हम इसके कोने में तीन कमरों में रह रहे हैं। यहां हमें जो मेहमाननवाज़ी मिलती है, वह ग्यात्से या दूसरी गुफाओं जैसी नहीं है। यहां हर कोई अलग-अलग रहना पसंद करता है। हम रास्ते में लामाओं से मिलते हैं, सिर झुकाते हैं और नमस्ते करते हैं, बस। यहां मठ के मुखिया, जिनसे मैंने पहले दिन बात करने के लिए कहा था, पूरी तरह से गायब हो गए हैं। यहां हर कोई सुन्न सा महसूस कर रहा है।

चक्क्सम गुफा की लोकेशन बहुत अच्छी है, यहाँ से त्सांगपो नदी और उसके मैदानों का सुंदर नज़ारा दिखता है। बुद्ध मंदिर, लोटस सुवर्णभूमि मंदिर और यहाँ के प्रार्थना कक्ष भी खूबसूरती से सजाए गए हैं। लकड़ी का काम, दीवारों पर बनी पेंटिंग और अलग-अलग देवी-

देवताओं की मूर्तियाँ बहुत सुंदर और बारीक काम से भरी हुई हैं। गी- यात्से गुफा में, लामा हमेशा हमें सब कुछ समझाते थे, ऐसा लगता था जैसे यहाँ सब कुछ खाली है। ऐसा लगता था जैसे लामा वहाँ थे ही नहीं। पहले तो मुझे लगा कि वे सब ध्यान और समाधि की दुनिया में भटक रहे हैं, इसलिए उन्होंने आम बातचीत और मेहमानों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। लेकिन बाद में हमारा यह ख्याल चला गया। मठ में रहने और खाने का कोई चार्ज नहीं है, इसलिए ल्हासा में घुसने से पहले, हमने तय किया कि हम एक दिन और आराम करेंगे और फिर निकल जाएँगे।

अगली दोपहर, धर्मशाला के इंचार्ज लामा आए और प्यार से हमें बताया कि यहां के चीनी अधिकारियों ने ल्हासा को एक मैसेज भेजा है जिसमें हमें हमारी स्थिति के बारे में बताया गया है, जिसका मतलब है कि हमें यहां तब तक इंतज़ार करना होगा जब तक ल्हासा में चीनी अधिकारी जवाब नहीं देते, न कि परम पावन दलाई लामा के दरबार में, और हमें चीनी अधिकारियों से आदेश मिले बिना त्सांगपो नदी पार नहीं करनी चाहिए। इंचार्ज लामा ने हमें यह खबर बहुत दुख के साथ दी। हम सब इस बात से हैरान थे, क्योंकि हमारी उम्मीदों के मुताबिक, तिब्बत

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৪৩

यह परम पावन दलाई लामा के राज में है, लेकिन यहाँ मैं देख सकता हूँ कि लगभग सब कुछ चीनियों के कंट्रोल में है, वे ही यहाँ के असली मालिक हैं। अब यह पूरी तरह से साफ़ है कि चक क्षाम गुफा का शानदार रूप इन चीनियों की वजह से है। चीनी, ड्रैगन की तरह, गुफा के सामने बैठे इंतज़ार करते हुए लगते हैं।

गुरुजी ने हमें बार-बार चेतावनी दी कि इस समय तिब्बत और चीनियों के बीच पावर की लड़ाई चल रही है। तिब्बतियों के पास हौसला और धार्मिक ताकत है, जबकि चीनियों के पास हथियार हैं। मुझे नहीं पता कि कौन जीतेगा, लेकिन अब तक हम यह साफ समझ चुके हैं कि तिब्बत पर असल में चीनी ही राज करते हैं। चीनी हमें इसलिए जाने दे रहे हैं क्योंकि हम नेपाली तीर्थयात्री हैं, और भारतीयों के लिए रास्ता पूरी तरह से बंद है। हमें बिल्कुल भी अंदर नहीं जाने दिया जाएगा, और भले ही चीनी सौ सवाल पूछें, हमें बहुत सावधानी से उनसे बचना होगा। लेकिन हमारा हौसला उतना कम नहीं हुआ है। जब हम इतनी दूर आ गए हैं, तो हमें ल्हासा तक जाना ही होगा।

मैं चकसम के एक जवान लामा से मिला। वो आदमी खुद आकर हमसे घुल-मिल गया। वो यहाँ असिस्टेंट वाइस-प्रिंसिपल है। उसने हमसे रास्ता पूछा और पूछा कि चीनी सैनिक कहाँ तैनात हैं। मैं एक शांत साधु हूँ, इसलिए जवाब पता होने के बावजूद मैं चुप रहा, मेरी डायरी में सब कुछ साफ-साफ लिखा है। इस सवाल के जवाब में दूसरे लामा चुप रहे। गुरुजी की सख्त मनाही है कि बताने वाला इन सब में न पड़े। हमें नहीं पता कि किसके मन में क्या है, वो क्या समझाएगा। हमसे कोई जवाब न मिलने पर, असिस्टेंट वाइस-प्रिंसिपल, उस आदमी ने हमसे और घुलने-मिलने की कोशिश की और कहा, "आप हमसे बात कर रहे हैं, आपको पता है, 1950 के चीनी हमले के बाद से हमें लगभग कोई आज़ादी नहीं है।" बहुत से लोग इंडिया और नेपाल चले गए हैं। ल्हासा चारों तरफ चीनी सैनिकों से भरा है, ल्हासा के बाहर के मठ और मठ अभी भी आज़ाद हैं, लेकिन धीरे-धीरे चीनी नुमाइंदे हर तरफ अपनी पॉलिसी थोपने की कोशिश कर रहे हैं। शांगपो के इस तरफ पहले चीनी सैनिक नहीं थे। पिछले पांच-छह दिनों से वे अचानक यहां आकर टेंट लगा रहे हैं। फेरी पियर यहां से ज्यादा दूर नहीं है और उनका मकसद लोगों की आवाजाही पर कड़ी नजर रखना है। उन्हें बिल्कुल समझ नहीं आ रहा कि इससे हमारी तपस्या में रुकावट आ रही है। हमने PLO (पिल्स लिबरेशन

आर्मी) और ल्हासा में प्रिपरेटरी कमेटी से कड़ा विरोध जताया है, लेकिन हमें अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है। ये चीनी सेनाएं हमारी शांति और प्रैक्टिस को बहुत नुकसान पहुंचा रही हैं। इसलिए मैं जानना चाहता हूं कि आप बॉर्डर गार्ड के तौर पर क्या कर रहे हैं, इस पर आपकी क्या राय है?

उनकी बातें सुनकर गुरुजी ने कहा, "हम सीधे-सादे और आम यात्री हैं। हमने अब तक कुछ जगहों पर कुछ सैनिक देखे हैं, लेकिन हमें कोई मुश्किल नहीं हुई। हम चीनी और तिब्बती सैनिकों में कोई फ़र्क नहीं समझते, और

১৪৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

हमारे पास इसे देखने का भी समय नहीं था। हम इसके बारे में कुछ नहीं कह सकते। गुरुजी की बातें सुनने के बाद, उस सज्जन ने अलविदा कहा, यह समझते हुए कि उन्हें हमसे कुछ नहीं मिलेगा।

उस सुबह से सूरज की किरणें बहुत ज़्यादा तेज़ थीं। इसलिए गुरुजी ने हमसे कहा कि आज ब्रह्मपुत्र में जाकर नहाओ और पूजा करो। साल के इस समय ब्रह्मपुत्र (सांगपो) के किनारे छोटे-छोटे सफ़ेद फूल खिलते हैं, तो हमने वो फूल तोड़े और नदी के किनारे आ गए। हमारे कपड़े, फतवा और चादरें, बहुत गंदे थे, और हमारे मोज़े भी। हमें उन्हें धोना पड़ा। हमने अपने कपड़े पहने और पानी में कूद गए। जैसे ही हमने पानी में पैर रखा, मैं उछल पड़ा - यह पानी नहीं है, यह बर्फ़ के टुकड़े हैं! नामुमकिन है, इस पानी में नहाना तो दूर, इसे साफ़ करना भी मुमकिन नहीं है। पानी को छूने से ही मुझे ऐसा लगता है जैसे मुझे निमोनिया

हो जाएगा। दूसरे लामा अलग थे, वे सब काठमांडू से थे, और बागमती के बर्फीले पानी में नहाना उनकी आदत थी। थोड़ी देर बाद, मैंने ज़ोर से कहा, कुछ भी हो, ब्रह्मपुत्र के इस सोर्स में नहाना भी बहुत पुण्य की बात है। अगर मैं इस पवित्र जगह पर ठंड से मर भी जाऊं, तो भी मुझे अगले जन्म में स्वर्ग ज़रूर मिलेगा। दूसरी बात यह है कि सभी लामा एक-एक करके पानी में घुसे हैं, इसलिए अगर मैं नहीं घुसा, तो यह आसानी से साबित हो जाएगा कि मैं ठंडे देश से नहीं हूं।

मौसम बहुत अजीब है। आसमान में कड़ी धूप ब्रह्मपुत्र के रेत के टीलों पर पड़ते ही और भी गर्म हो गई है। हम 12,000 फीट की ऊंचाई पर हैं। हमारे आस-पास के पहाड़ बर्फ से ढके हुए हैं, लेकिन यह गर्म धूप वैसी नहीं लग रही। गुरुजी को देखकर मेरा हौसला बढ़ गया है। अगर वे इस उम्र में नीचे आने की हिम्मत कर सकते हैं, तो मुझे पीछे नहीं हटना चाहिए। मैंने धीरे-धीरे अपने पैर और कोहनी गीले किए और अपने शरीर पर ठंड को सहा। मैंने थोड़ा समय लिया और फिर क्रिस्टल जैसे साफ पवित्र पानी में उतर गया। मैंने ब्रह्मपुत्र के बर्फीले पानी में डुबकी लगाई, जो सभी पापों को धो देता है। बस एक डुबकी से मेरे शरीर में बहुत बड़ा बदलाव महसूस हुआ। मैं किनारे पर उठा और खुद को सुखाया, और फिर मेरे अंदर के ब्लड सर्कुलेशन में एक बहुत बड़ा बदलाव शुरू हुआ। मेरी हड्डियों में जो ठंडक थी वह बंद हो गई और मेरे पूरे शरीर का खून गर्म हो गया। मेरा मन एक अजीब सी खुशी से भर गया, कई दिनों के बाद पानी पाकर मेरे शरीर को शांति मिली। इस आनंद को पाने के लिए पाप या पुण्य का सवाल ही नहीं है, यह इस मौसम में स्वाभाविक है। इस बदलाव का नाम पुण्यस्नान लगता है। जिन्होंने अलकनंदा में स्नान किया है, वे समझ जाएंगे कि मेरा क्या मतलब है।

नहाने के बाद हम पूजा के लिए बैठ गए। सामूहिक प्रार्थना के बाद, हमने श्रद्धा से फूल चढ़ाए। लामाओं ने धम्मपद के पवित्र श्लोकों को सुर में पढ़ना शुरू किया:

मन ही सारी स्थितियाँ बनाता है, मन ही मन का मालिक होता है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

अशुद्ध मन दुख लाता है, और इस तरह जीवन का चक्र घूमता रहता है।

১৪৫

हे दयालु! मुझे इस बवंडर से आज़ाद करो। नफ़रत को नफ़रत से नहीं मिटाया जा सकता। नफ़रत को सिर्फ़ प्यार की नदी में डुबोकर ही मिटाया जा सकता है..." चक्कसम का वज्रधारा मंदिर बहुत बड़ा है, और सहस्रबाहु मंदिर के रंग बहुत चमकीले हैं, और अगर आप रोज़ाना लकड़ी के नाज़ुक काम को देखें, तो भी आपकी आत्मा संतुष्ट नहीं होगी। तिब्बती लामा कलाकारों ने इन कामों में भक्ति और मन की शांति डाली है। ऐसा लगता है कि वे किसी पवित्र माहौल में ज़िंदा हो गए हैं, इसलिए हम उन्हें देखने में समय बिताते हैं। लामाओं के अनुसार, भगवान बुद्ध की आत्मा इन अकथनीय मूर्तियों में छिपी है।

मेरा डेली रूटीन अधूरा रहेगा अगर मैं चक क्षम मंदिर की एक और खासियत का ज़िक्र न करूँ। वो हैं यहाँ के चूहे। यहाँ के मंदिर चूहों के लिए स्वर्ग जैसे हैं। उनकी हरकतें इतनी नैचुरल हैं कि कभी-कभी वे ध्यान कर रहे लामाओं के सिर पर चढ़ने से भी नहीं हिचकिचाते। मंदिर से

मिलने वाला चावल और मक्खन उनका मुख्य खाना है। तिब्बतियों के अनुसार, लामाओं ने अपना शरीर छोड़कर अपनी आत्मा इन चूहों में छिपा दी है, इसलिए वे इस मंदिर को छोड़ना नहीं चाहते। इसलिए, उनके मन में कभी भी उन नेक आत्माओं को भगाने या फंसाने का बुरा मन नहीं आएगा।

मुझे बद्रीनाथ के खटमल साफ़-साफ़ याद हैं। और मुझे लगता है कि मुझे यहाँ के चूहे हमेशा याद रहेंगे। मैं उनके हमारे सोते हुए शरीर पर आज़ादी से घूमने को कभी नहीं भूलूंगा, खासकर रात में। मेरी राय में, उन्होंने इन मंदिरों को बुद्ध मंदिरों के बजाय गणेश मंदिर समझ लिया है। चक्कासम मंदिर में मुझे जो सबसे बड़ा फ़ायदा मिला, वह था गुरुजी के साथ धार्मिक अभ्यास। गुरुजी हर दिन हमारे धम्मपद से खास अध्याय पढ़ते थे। चौथे दिन, सुबह हमें छोड़ दिया गया, जिसका मतलब था कि चीनी कैंप कमांडर को हमें ल्हासा से निकलने का ऑर्डर मिल गया था। हमें सुबह नौ बजे खबर मिली। हम बिना देर किए निकल पड़े, और दस बजे तक हम त्सांगपो के किनारे पहुँच गए।

त्सांगपो का पानी दूर से कितना भी शांत क्यों न दिखे, अपनी स्पीड और बहाव के लिए यह बदनाम है। हम त्सांगपो के किनारे-किनारे पूरब की ओर बढ़ते रहे। जैसे ही हम थोड़ा और आगे बढ़े, सबसे पहले मैंने देखा कि तिब्बती गांव वाले खुशी से गा रहे थे, नदी में कपड़े धो रहे थे, और कई लोग नहा रहे थे। जिस पानी में मैं ठंड की वजह से अंदर जाने से डर रहा था, उसमें मैंने औरतों को खुशी से कूदते देखा। ज़्यादातर औरतें जवान थीं, उनके सीने पूरी तरह खुले थे, उनके कपड़े चट्टानों पर पड़े थे। मैंने धूप सेंकने का ऐसा नज़ारा पहले कभी नहीं देखा था। जब उन्होंने हमें देखा, तो वे एक पल के लिए रुकीं और फिर, पारंपरिक रिवाज के अनुसार, अपनी जीभ निकालकर हमें प्रणाम किया। लेकिन मैंने उनमें शर्म का कोई निशान नहीं देखा।

১৪৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

नहीं। वे कितने आसान हैं; ऐसी आसानी और सरलता सिर्फ़ यहीं मुमकिन है। जहाँ मन पवित्र है, वहाँ मुक्ति है।

थोड़ा और आगे जाने पर हमें एक फेरी घाट मिला। यह फेरी घाट ही इस इलाके को पार करने की एकमात्र उम्मीद है। नदी का पानी बहुत ठंडा है, उसमें तेज़ बहाव है और दूसरी तरफ की दूरी भी ज़्यादा है। बहरामपुर के पास तो यह लगभग गंगा जैसी है, इसलिए तैरकर पार करना तो दूर की बात है। हर कोई फेरी लेने को मजबूर है। ज़रूरत के मुकाबले फेरी घाट की हालत बहुत दयनीय है। इसकी ज़िंदगी एक छोटे से लकड़ी के घर के आस-पास बसी है। अगर नदी किनारे रेत का तूफ़ान आ जाए, तो लगता है कि यह घर उठाकर फेंक दिया जाएगा। घर के अंदर एक लंबे टब में एक ऊँचे बर्तन में पानी उबल रहा है। और उसमें चाय की पत्तियाँ हैं। भगवान जाने नई चाय की पत्तियाँ कब डाली जाती हैं। अगर आपको चाय चाहिए, तो यह उबलता हुआ चाय का पानी बांस के कप या एल्युमिनियम के मग में डाला जाता है, लेकिन परोसने से पहले उसमें नमक और मक्खन मिलाया जाता है। ऐसे ही एक मग चाय की कीमत दो पैसे है, जो पानी की कीमत है। हम जैसे कई लोग फेरी का इंतज़ार कर रहे हैं। जैसे तिब्बती लोग सिलीगुड़ी स्टेशन पर दिन-रात अपने ग्रुप लीडर का इंतज़ार करते हैं, वैसे ही हम भी भावसिंधु पार करने के लिए नाव का इंतज़ार करने लगे। दूसरी तरफ से लोगों और सामान से भरी एक नाव आई। यह नाव नहीं, बल्कि एक बेड़ा था। यह गंगा में लकड़ी की नाव जैसी थी। इसे एक चौकोर लट्ठे को धकेलकर जहाँ तक ले जाया जा सकता था, धकेला गया, और फिर बैठा और कोनकुनी धाराओं की मदद से दूसरी तरफ लाया गया। कहने की ज़रूरत नहीं कि यहाँ कोई जेटी या किसी तरह का पुल नहीं था। नाव जहाँ तक हो सके किनारे तक आती थी और

फिर वहाँ से घुटनों तक पानी में उतरना पड़ता था। बेशक, मानसून में या एक महीने बाद, जब नदी भर जाती थी, तो नाव और पास आ जाती थी।

नाव में गांव भर जाता है, है न? याक, भेड़, गधे, सूअर, मुर्गियां, सामान, घास, भिखारी, यहां तक कि लोग भी, कुछ नहीं बचता। बस किसी तरह उन्हें ठूंस-ठूंस कर नदी पार करने की बात है। किराया सिर्फ चार पैसे (हर आदमी) है। आजकल, 1950 के बाद, यानी हनांदा के आने के बाद, फेरी की हालत काफी सुधर गई है। पहले, याक की खाल की राफ्ट होती थीं, जिन पर एक बार में आठ या दस से ज़्यादा लोग पार नहीं कर सकते थे। और कभी-कभी, दिन में एक या दो बार ही पार किया जा सकता था। लेकिन आजकल, हालत सुधर गई है। दिन में चार बार, और अगर ज़रूरत पड़ी तो इसे एक बार और बढ़ाया जा सकता है, एक बड़ी पाइल बोट के अलावा, सैनिकों के लिए एक और बड़ी मिलिट्री बोट है। तिब्बती सेना के ऑफिसर भी उस बोट का इस्तेमाल कर सकते हैं।

हमें इसे पार करने में लगभग एक घंटा लगा। यह पहली बार था जब हमने तिब्बत में गाड़ी का इस्तेमाल किया था। गंगटोक से ल्हासा तक, इस एक नाव को छोड़कर, सब कुछ पैदल ही किया गया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৪৭

पैदल चलने के रास्ते। जो लोग इनका खर्च उठा सकते हैं, वे टट्टू या घोड़े का इंतज़ाम कर लेते हैं। सामान खींचने के लिए पालतू गायें या याक हैं, और इस देश में गधों की कोई कमी नहीं है।

हमने त्सांगपो पार किया, हम एक बिल्कुल अलग दुनिया में पहुँच गए। हिमालय पार करने के बाद, हमने ल्हासा की पवित्र ज़मीन को छुआ। हमने भगवान से प्रार्थना की कि वे हमें सेहतमंद होने में मदद करें। फिर हम निकल पड़े। इस बार रास्ता पूरी तरह रेतीला था, पहाड़ियों के ऊपर से एक रास्ता। यह बिल्कुल वैसा ही था जैसा सर्दियों में सिलीगुड़ी से जलदापारा जाते समय तीस्ता नदी पर होता है। हम त्सांगपो के किनारे-किनारे पूरब की ओर बढ़ते रहे। थोड़ी दूर जाने के बाद, हमने त्सांगपो को अलविदा कहा। मेन रोड छोड़कर, हमने सड़क को छोटा करने के लिए एक छोटी सी सड़क ली, जो सड़क नहीं बल्कि एक रास्ता था। त्सांगपो का तिब्बती उच्चारण टी-सांग-पो है, अब हम इसके उत्तरी हिस्से में हैं। इस तरफ, मैदान चौड़े हैं, उस तरफ, त्सांगपो के ठीक बाद, हिमालय के पहाड़, यानी त्सांगपो का दक्षिणी हिस्सा शुरू होता है। इस बीच, खेती की ज़मीन भी दिख रही थी और कभी-कभी कुछ घर भी। खेतों की रोशनी देखकर लगता है कि यहाँ अच्छी खेती होती है। सड़क लोगों से भरी थी, और यहाँ से पवित्र शहर ल्हासा तक पूरे दो दिन का पैदल रास्ता था। हम थोड़ा दाईं ओर मुड़े और मेन रोड पर वापस आ गए। इस समतल ज़मीन को की- चू नदी की घाटी कहते हैं। अगर हमने यह शॉर्टकट नहीं लिया होता, तो हमें की-चू नदी और ब्रह्मपुत्र का संगम मिल जाता, और सड़क घूम जाती। हमने यह शॉर्टकट लेकर लगभग तीन घंटे बचाए और की-चू नदी के किनारे पहुँच गए। यहाँ हम रुके, गाँव का नाम चुसुल था।

छोटा सा गांव, घर सब पत्थर के बने हैं। यहां बहुत सारे पेड़ भी हैं। इसका लुक सिक्किम के किसी छोटे गांव जैसा है। गांव में कोई रेस्टोरेंट या चाय की दुकान नहीं है। हमें देखकर आस-पास के घरों के छोटे बच्चे भागकर वापस आ गए, हमने उनसे पूछा कि क्या यहां कोई लकड़ी मिलती है। एक ग्यारह-बारह साल का लड़का आगे आया और बोला, "मैं तुम्हें ले चलता हूं, चलो।"

लड़के का पीछा करते हुए हम नदी के किनारे एक घर के पास पहुँचे और दरवाज़ा खटखटाया। जब घर में लोग होते हैं तो दरवाज़ा अक्सर खुला रहता है, इसलिए हम समझ गए कि अंदर कोई नहीं है। उस घर के सामने बत्तीस लामाओं को देखकर, आस-पड़ोस के सभी लोग दौड़कर आए, क्या बात है? हमने उन्हें समझाया कि मामला बहुत छोटा है, हम तीर्थयात्री हैं, अपने दोपहर के खाने के लिए किचन ढूंढ रहे हैं।

"तो, घर का मालिक अभी यहाँ नहीं है, प्लीज़ थोड़ा इंतज़ार करें, हम आपके लिए लकड़ी इकट्ठा कर रहे हैं।" भीड़ में से एक आदमी आया और उसने काम संभाला।

इस इलाके के आस-पास बहुत सारे पेड़ हैं, लकड़ी की कोई कमी नहीं है, लेकिन हमें सूखी लकड़ी चाहिए जो अभी काटी जा सके। गांव वालों की मदद से हम इसे ले सकते हैं।

১৪৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

जल्द ही प्रॉब्लम सॉल्व हो गई। लकड़ी की दुकान कुछ समय के लिए बंद थी, इसलिए गांव वालों ने आपस में बांटकर अपने घरों से लकड़ी का एक टुकड़ा ले आए। हालांकि हम इसके लिए पैसे देना चाहते थे, लेकिन उन्होंने नहीं लिया। वे हमारी मदद के लिए शुक्रगुजार थे। गांव में हर कोई बहुत खुश था। इन सीधे-सादे गांव वालों की सादगी और सरलता सफेद बर्फ की तरह पवित्र है। बड़ी लड़कियां दूर पेड़ों या घरों के पीछे खड़ी होकर हमारा खाना बनाते हुए देखती थीं। खाना बस कुछ दाल और चावल के साथ गर्म पानी का मिक्सचर था। हमारा दिल खुशी से भर गया था, हम सिर्फ अपने शरीर के लिए खा रहे थे। हम सबने नदी से अपने

एल्युमिनियम के कटोरे में पानी लिया और नदी किनारे एक बड़े पत्थर के पीछे लकड़ी से खाना बनाया। हमने गांव वालों को अपने साथ खाने के लिए बुलाया। चार छोटे बच्चे और दो बूढ़े लोग आकर हमारे साथ बैठ गए, जबकि बाकी लोग दूर खड़े रहे। खाने-पीने के बाद, हमने गांव वालों को धन्यवाद दिया और शुभ भगवान से प्रार्थना की और फिर से चल पड़े।

हिमालय पर चढ़ते समय हमारे पैरों में ज़्यादा दर्द नहीं हुआ, लेकिन चक्सम गुफा पहुँचने के बाद हमारे घुटनों में दर्द होने लगा। खंबाला से नीचे आने के बाद से ही हमारे घुटनों में दर्द हो रहा है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमें खड़ी चढ़ाई पर तेज़ी से नीचे उतरना पड़ा। वह दर्द अभी भी है। इसलिए, भले ही वह समतल है, हम पहले की तरह नहीं चल सकते। हमारी रफ़्तार बहुत धीमी है।

मुझे की-चू नदी बहुत पसंद है। यह नदी ल्हासा से त्सांगपो की ओर बहती है। हम बहाव की उल्टी दिशा में चल रहे हैं। सड़क लगभग समतल है। नदी के दूसरी तरफ, पहाड़ों की एक रेंज धीरे-धीरे नदी के पास आती हुई लगती है। तेज़ बहती नदी में कई चट्टानें हैं, जिनसे बहाव टकराता है और लहरों जैसी आवाज़ आती है। हम उन लहरों की लय में कदम रखते हुए चलने लगे।

शाम ढलने के थोड़ी देर बाद हमें एक बड़ा गाँव मिला, गाँव का नाम नेथांग है। गुरुजी ने कहा कि वे इन गाँवों को बहुत अच्छे से जानते हैं, कि पिछले बीस सालों में इनमें ज़्यादा बदलाव नहीं हुआ है। हम एक घर के सामने रुके। हमारे बाईं ओर दो घरों के बीच हमें एक बड़ा चैत्य दिखा। जिस घर में हम घुसे, वह गाँव की गुफा है। इसे गुफा के बजाय धर्मशाला कहना बेहतर है। लामा लोग अपनी यात्रा में इस गुफा को धर्मशाला की तरह इस्तेमाल करते हैं।

एक बूढ़े लामा आए और हमारा स्वागत किया। हमारी बात सुनने से पहले ही उन्होंने कहा, "लकड़ी या कोयला नहीं है, सब कुछ चला गया है, इस महीने के लिए जो पैसे हमें बताए गए थे, वे अभी तक ल्हासा से नहीं आए हैं।" गाँव की किराने की दुकान भी पैसे माँग रही है, लेकिन एक-दो दिन में आ जाएँगे, चिंता करने की कोई बात नहीं है। बूढ़े लामा ने हमारी एक भी बात नहीं सुनी। हम कहाँ हैं?

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৪৯

उसने यह भी नहीं पूछा कि हम कब तक रुकेंगे। रात का अंधेरा घिर रहा था, तूफ़ान या किसी भी तरह की रोशनी का कोई निशान नहीं था। उस थोड़ी सी रोशनी में, उसने हमें दो कमरे दिखाए और कहा, "रात की तरह यहीं सो जाओ। कल देखेंगे कि क्या मैं खाने-पीने का कुछ इंतज़ाम कर सकता हूँ।" यह कहकर, वह अंधेरे में गायब हो गया। दो कमरे होने के बावजूद, हमने सिर्फ़ एक ही कमरा इस्तेमाल किया। एक साथ सोने से ठंड कम लगती। कहने की ज़रूरत नहीं है, हमने उस रात कुछ नहीं खाया। हम बहुत थके हुए थे, इसलिए सोना ही हमारा एकमात्र ऑप्शन था। यह अच्छा था। हमें जल्दी सो जाना चाहिए और कल सुबह जल्दी निकल जाना चाहिए।

हम सुबह बहुत जल्दी उठ गए, मुझे सबसे ज़्यादा खाने की ज़रूरत थी। मेरा पेट गुड़गुड़ा रहा था, मुझे बहुत समय से ऐसी भूख नहीं लगी थी। पिछले दिन, मैं की-चू नदी से पानी पीते हुए सड़क पर चल रहा था। जैसे ही सुबह हुई, हम तैयार हो गए। हमें सीधे गाँव में एक चाय की दुकान पर जाकर अंदर जाना था। बूढ़े लामा को इतनी जल्दी जगाने का कोई सवाल ही नहीं था। हम बिना कोई आवाज़ किए निकल गए। चोर्टेन से प्रार्थना करने के बाद, हमने आस-पास देखना शुरू किया, ऐसा लगा कि वह जगह गाँव का

बाज़ार है। कुछ कुत्तों ने हमें देखा और इज़्ज़त से आगे निकल गए। तिब्बत में यह पहली बार था जब मैंने देखा कि कुत्ते भी हमारी इज़्ज़त कर रहे थे। उन्होंने कोई आवाज़ भी नहीं की।

अचानक, सड़क पर एक औरत खांसते और छींकते हुए चली गई। उसे रोका गया और पूछा, "क्या आप बता सकती हैं कि यहाँ कोई चाय की दुकान है?" उसने खांसते हुए दूर एक घर की ओर इशारा किया और कहा, "दरवाज़ा खटखटाओ, वे अंदर सोते हैं।" उसके कहते ही हम आगे बढ़े और दरवाज़ा खटखटाया। थोड़ी देर खटखटाने के बाद, दुकान का दरवाज़ा खुला और एक आदमी ने गुस्से से पूछा, "आपको क्या चाहिए?" फिर, अचानक, इतने सारे लामाओं को एक साथ देखकर, उसने अपनी जीभ बाहर निकाली और आदर से अपनी आवाज़ बदलकर कहा, "मुझे बताइए कि मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।"

हम सही जगह पहुँच गए हैं, यह एक चाय की दुकान है। उस आदमी ने जल्दी से लकड़ी से आग जलाई और पुरानी, काली पड़ चुकी चाय की पतीली चूल्हे पर रख दी। यह तैयार है, बस मक्खन डालना है, उसने बहुत प्यार से कहा। चाय तैयार है। मैं अब तक तिब्बत में लगभग हर दिन चाय पीता आया हूँ, इसलिए मुझे इन दिनों नॉनटा चाय की आदत हो गई है। मैं अब कोलकाता की चाय का स्वाद लगभग भूल ही गया हूँ। आज की चाय बहुत कड़वी थी। हम सब दो घूँट से ज़्यादा नहीं पी पाए; हमारा रवैया देखकर दुकानदार बोला, "ओह! मैं समझता हूँ कि आपको इस तरह की चाय पीने की आदत नहीं है। यह मेरी खासियत है, मैं चाय का शौकीन हूँ।"

১৫০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैंने इसमें कुछ दवा वाली पत्तियां (जैसे सैलंडन) मिलाईं, यह गांव वालों के लिए बहुत फायदेमंद है जिन्हें अक्सर पेट की बीमारियां रहती हैं। उस आदमी ने बहुत गर्व से कहा कि यह उनके दादाजी का बनाया हुआ है। खुशकिस्मती से, मुझे घर पर अपनी दादी का दिया हुआ सैलंडन का पानी पीने की आदत थी, इसलिए मैं इसे निगल पाया, नहीं तो मुझे दिक्कत होती। तिब्बती लोग बहुत अच्छे लोग हैं, लेकिन वे अपने देश के खाने की बेइज्ज़ती को माफ नहीं करते। हालांकि, उसने अपनी मां के नाम पर हंगामा किया क्योंकि उसने थोड़ा और मक्खन डालकर कड़वाहट कम कर दी थी। कीमत भी बहुत कम थी, उसने बत्तीस गिलास चाय के लिए सिर्फ एक टका लिया। हमने उसे अलविदा कहा और निकल पड़े, रास्ते में हम एक बार फिर गुफा में गए और बूढ़े लामा को झुककर प्रणाम किया, और दिल से शुक्रिया अदा किया। उसने मुस्कुराते हुए हमें आशीर्वाद दिया।

पवित्र मंदिर के द्वार पर

हम फिर से की-चू नदी के किनारे आए और मेन रोड पकड़ ली। दूर का पहाड़ धीरे-धीरे नदी के किनारे तक पहुँच गया। की-चू नदी अब एक पहाड़ी नदी बन गई थी। कहने की ज़रूरत नहीं है, उसकी दहाड़ अब पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ है। नदी के दूसरी तरफ़ का पहाड़ नदी तक आकर रुक गया है, और उस पहाड़ से बड़े-बड़े पत्थर नदी पर लुढ़क आए हैं। उसके उलट, नदी की दहाड़ और गर्जना, नदी की धारा उन पत्थरों से टकरा रही है। हम आगे बढ़ने लगे। हम नेथांग गाँव से थोड़ा पहले पूरब की ओर बढ़ रहे थे। उससे पहले वाली सड़क उत्तर की ओर थी। जैसे ही हम थोड़ा मुड़े, हमारे सामने एक ऐसा नज़ारा सामने आया जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। अचानक, ऐसा लगा जैसे हमारे सामने का पर्दा उठ गया हो और दर्शकों को एक नए स्टेज की सेटिंग ने हैरान कर दिया हो। की-चू नदी की यह बड़ी घाटी कुछ देर पहले इन पहाड़ी दीवारों से ढकी हुई थी। कई नज़ारे

अचानक हमारी आँखों के सामने आ गए। हमें अपनी हैरानी दूर करने में थोड़ा समय लगा।

घाटी की दूर पहाड़ियों पर कई मंदिरों की चमकीले रंग की छतें चमक रही थीं, जो सुबह के सूरज से सैकड़ों सूरज की तरह रोशन थीं। उनके बगल में पहाड़ की चिकनी दीवार पर एक बड़ी पेंटिंग बनी हुई थी। भगवान बुद्ध की इस बड़ी पेंटिंग में, जो हमेशा रोशनी के प्रतीक हैं, उनकी आत्मा अपने आप प्रकट हुई लगती है। हमने महान चार भुजाओं वाले देवता के सामने माथा टेका। हम सब सड़क पर गिरकर अपना प्रसाद चढ़ाने लगे। फिर हम ध्यान में बैठ गए, भगवान बुद्ध के आशीर्वाद के लिए हमारे मन को खाली और शुद्ध करने की ज़रूरत थी। फिर हमारी सामूहिक प्रार्थना शुरू हुई।

मुक्ति तब मिलती है जब हमारे कर्म, दुख और दुख के कारण सब दूर हो जाते हैं। बंधन भौतिक इच्छा से आता है। सच्चा सच जानने से उस इच्छा से मुक्ति मिल सकती है, निर्वाण का हमारा रास्ता शून्य के ज्ञान से है।

১৫২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मुझे दिखाओ। हे तंत्राचार्य पद्मसंभव! अपना असली रूप हमें दिखाओ।

बुद्ध का मार्ग ही मुक्ति का एकमात्र मार्ग है। केवल एकांत में ही निर्वाण संभव है। हम आपके मार्ग पर चलते हैं, हे महान योगी! हे तंत्राचार्य, पद्मसंभव, हमें अपना असली रूप दिखाइए।

पहाड़ पर और भी कई तस्वीरें हमारे ध्यान में आईं, पहाड़ की चिकनी दीवार देवी-देवताओं की अनगिनत मूर्तियों से भरी हुई थी, वे सभी हमें आशीर्वाद देने का इंतज़ार कर रही थीं, उस खूबसूरत नज़ारे को देखकर हमारी सारी थकान दूर हो गई। दूर से ल्हासा के मठ और मंदिर ऐसे लग रहे थे जैसे स्वर्ग से पहाड़ पर गिरे हों। वह नज़ारा देखकर हम समझ गए कि यह दुनिया का एक रहस्यमयी देश है।

नदी के किनारे थोड़ा और आगे जाने पर हमें फिर से रुकना पड़ा। नदी के बीच में एक वेदी पर बुद्ध की एक बहुत बड़ी पत्थर की मूर्ति बनी हुई थी। उसे देखकर हमने फिर से सड़क पर माथा टेका। हम उठे और प्रार्थना की। भगवान बुद्ध की पवित्र ध्यान मूर्ति देखकर हमें लगा कि हमारी यात्रा सफल रही। पहाड़ों से या नदी के बहाव में बहुत सारे बड़े-बड़े पत्थर नदी में अटके हुए थे। नदी की सैकड़ों लहरों के बावजूद, वे ज़रा भी हिलना नहीं चाहते थे। उन्होंने सदियों से वहीं अपनी नींव बनाई हुई है। नदी के बहाव और पत्थर की स्थिरता की दो ताकतें यहाँ हमेशा से लड़ रही हैं। हमने वह कुरुक्षेत्र देखा। उसके बीच में, एक बहुत बड़े ग्रेनाइट पत्थर पर, यह शांत और सुंदर बुद्ध मूर्ति पूरे बौद्ध धर्म और दर्शन की पूरी व्याख्या के साथ खड़ी है। इस हमेशा बदलती दुनिया में, दुनिया के पिता, महान ऋषि भगवान बुद्ध स्थिर और शांत बैठे हैं। कलाकार की अद्भुत रचना सिर्फ़ एक कल्पना नहीं है, इसे तुरंत हकीकत में बदल दिया गया है। हम यहाँ रुके। महातीर्थ की ओर जाने वाले तीर्थयात्रियों को अपनी दूसरी अंजलि यहीं पर देनी होती है। उन्हें यहीं स्नान और पूजा करनी होती है।

यह दुनिया के अंदर एक बिल्कुल अलग स्पिरिचुअल दुनिया जैसा है। मुझे लगा कि मैं इतनी दूर तक आकर ब्लेस्ड हूं, यहां तक आना इतना मुश्किल नहीं है, फिर भी बहुत कम लोग आते हैं। मेरे मन में मेरा ईगो मज़बूत हो गया, मुझे लगा कि मैं बाकी सब जैसा नहीं हूं। मैं इसलिए आया

क्योंकि मैंने घर छोड़ा था। मुझे आज यह रिवॉर्ड इसलिए मिला क्योंकि मैं अपने दिल की ताकत के साथ बाहर गया था। इस रिवॉर्ड की कोई दुनियावी वैल्यू नहीं है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৫৩

यह अवॉर्ड ईमानदारी, पवित्रता और खुशी से भरा है। जो लोग एग्जाम में फर्स्ट आए और सोचा कि उन्हें सब मिल गया, उन्हें यहां आना चाहिए। जब तक वे खुशी के इस सागर में डूबे नहीं हैं, उन्हें यह समझाना मुश्किल है कि उन्हें यहां क्या मिला।

जब मैं नदी की सैकड़ों लहरों की आवाज़ के बीच इन अलग-अलग बातों के बारे में सोच रहा था, तो अचानक मेरे मन में एक झटका लगा - मैंने खुद से पूछा - क्या तुम घमंडी हो रहे हो? मैंने खुद को रोका, इसीलिए इस खुशी के सागर में डूबने के बाद भी मेरे मन में घमंड आता है, यह बहुत गलत है, सिर्फ़ गलत ही नहीं बल्कि पतन का कारण भी है। अगर अहंकार है, तो मुक्ति कभी नहीं मिलेगी। खुद की भावना को दूर करना होगा, अगर यह भावना है, तो अहंकार नहीं जाएगा। इच्छा अहंकार से आती है और इच्छा ही हमारे बंधन का कारण है। मुझे बंधन या आज़ादी नहीं चाहिए। बंधन क्या है और आज़ादी क्या है? मैं अब आज़ाद हूँ, मैं इन यात्रियों के साथ हिमालय के दुर्गम रास्ते पर घूम रहा हूँ, क्या यह आज़ादी नहीं है? मुझे मन की मुक्ति और आत्मा की मुक्ति शब्द समझ नहीं आते, ये बहुत उलझी हुई बातें हैं, लेकिन मैं फिर भी जानना चाहता हूँ। मैं पत्थर पर बैठकर सोच रहा था - अचानक मुझे अपने साथी यात्री लामा की आवाज़ सुनाई दी - वह प्रार्थना कर रहे थे -

महान संत त्सोंग-का-पा, हमें रास्ता दिखाओ, हमें बोधिसत्व से बुद्धत्व तक का रास्ता दिखाओ, जिसके हासिल होने से हमारे मन में इंसानियत के लिए प्यार, सेवा, एकता और एकजुटता आएगी, बुद्ध, मैं आपका अनुसरण करता हूँ; धर्म, मैं आपका अनुसरण करता हूँ, संघ....

जब तक हमने पूजा खत्म की, दोपहर हो गई थी। पास में ही एक सराय थी, इसलिए खाने में कोई दिक्कत नहीं हुई। मैं इस जगह की तुलना ऋषिकेश और लछमनझोला से कर सकता हूँ। नज़ारा एक जैसा है, लेकिन लछमनझोला के पास नदी गंगा से ज़्यादा खतरनाक है। लछमनझोला के नज़ारे की कल्पना करने पर यह अलकनंदा जैसा लगता है। ल्हासा अब हमारे सामने है, अब कोई रुकावट नहीं है।

हम अपने सामने बने बड़े मंदिर की तरफ़ बढ़ने लगे। बहुत सारे मंदिरों वाला एक बहुत बड़ा मंदिर शहर। इसके गुंबद जैसे मंदिर के शिखर और कई पगोडा जैसी इमारतें न सिर्फ़ हर आने-जाने वाले का ध्यान खींचती हैं बल्कि हर आने-जाने वाले को रुकने पर भी मजबूर करती हैं। यह दुनिया भर में मशहूर ड्रेपुंग गुफाएँ, ड्रेपुंग मठ है, जो दुनिया का सबसे बड़ा मठ और मठ है। नालंदा या तक्षशिला आज खंडहर बन गया है, लेकिन यह ड्रेपुंग गुफा उसके मॉडल और नकल में बनाई गई है। हम शाम को वहाँ पहुँचे। वहाँ की धर्मशाला भारतीय, नेपाली, सिक्किमी और भूटानी संतों और लामाओं के लिए खुला दरवाज़ा है। धर्मशाला जाने से पहले, हमने

১৫৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

हमने प्रार्थना चक्र घुमाया और प्रार्थना की। और एक बार फिर, हमने पूरे मंदिर की परिक्रमा की और अपना सच्चा आभार व्यक्त किया। ल्हासा शहर यहाँ से सिर्फ़ साढ़े तीन मील दूर है। हमारी अब तक की मेहनत रंग लाई है। हमारी खुशी का ठिकाना नहीं है। हमने आज सुबह पूजा में बिताई है, इसलिए आज हम बहुत उत्साहित हैं। साथ ही, हम थके हुए भी हैं। अब हम आराम करना चाहते हैं।

১২

ड्रेपुंग गुफा

धर्मशाला में हमारी नींद बहुत अच्छी आई। हम आखिरकार अपनी मंज़िल पर पहुँच गए थे, इसलिए चिंता की कोई बात नहीं थी। सुबह 7 बजे घंटी की आवाज़ से हमारी नींद खुली। आवाज़ धर्मशाला की बालकनी से आ रही थी, इसलिए मैं जल्दी से उठा और उसकी तरफ़ भागा, जहाँ मैंने दो तिब्बती लामाओं को रंग-बिरंगे कपड़े और मुकुट पहने दो बड़ी, लंबी बांसुरियाँ बजाते देखा। मैंने ऐसी बांसुरियाँ ग्यात्सो गुफा में देखी थीं। मैंने अपने देश में ऐसी तिब्बती बांसुरियाँ कभी नहीं देखीं। सनाई से बीस गुना लंबी, बांसुरी का सिरा ज़मीन पर थोड़ा और दूर रखा होता है। लगभग दस मिनट तक, शंख की आवाज़ अलग-अलग मंदिरों की छतों पर गूंजती रही और रुक गई। बांसुरी रुकने के बाद, दोनों लामाओं ने सिर झुकाकर हमारा अभिवादन किया - मैंने भी मुस्कुराते हुए उनका अभिवादन किया। बालकनी से, मैं दूर ल्हासा शहर का नज़ारा देख सकता था। मेरे दिमाग में सबसे पहले पोताला, परम पावन दलाई लामा का महल आया। पोताला अपनी रंगीन छतों, मंदिरों, दरवाज़ों और खिड़कियों के साथ दुनिया की शान है। यह अद्भुत जादुई शहर इस दूर देश में पहाड़ों की गोद में छिपा है।

सुबह हम ड्रेपुंग गुफा में बिज़ी थे। एक सरकारी अफ़सर हमसे मिलने आया, वह यहाँ के फ़ॉरेनर्स रजिस्ट्रेशन ऑफ़िस से था। ल्हासा में हर फ़ॉरेनर को वहाँ रजिस्टर करना होता है। उसने कुछ छोटे-मोटे सवाल पूछे जैसे हम कितने दिन रुकेंगे, क्यों आए हैं, आगे कहाँ जाएँगे, और जवाब लिख लिए। साथ ही, उसने हर तीर्थयात्री का नाम भी लिख लिया। मुझे लामा मौनी बाबा नाम दिया गया।

फिर हमें ड्रेपुंग गुफा के चीफ सेक्रेटरी के पास बुलाया गया। ड्रेपुंग गुफा के चीफ सेक्रेटरी हमारी धर्मशाला से थोड़ी दूर रहते हैं। उनका घर एक बहुत ही सुंदर पगोडा-स्टाइल बंगला है। वह एक बड़े, भारी आदमी हैं। उन्होंने मुस्कुराते हुए हमारा स्वागत किया। उन्होंने हम दोनों का हाथ छुआ और सिर झुकाकर कहा, "ड्रेपुंग गुफा से आपका स्वागत है।" कहने की ज़रूरत नहीं है कि चीफ सेक्रेटरी बहुत बिज़ी आदमी हैं। उनके कलीग ने हमारे नाम लिख लिए। फिर उन्होंने हमसे पूछा, "क्या आप एक कप चाय पीना चाहेंगे?" "ज़रूर।" हम इसी की उम्मीद कर रहे थे।

১৫৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

थोड़ी देर में चाय आ गई, और मैं यह देखकर हैरान रह गया कि चाय और चाय के कप और प्लेट बहुत पतले और शानदार थे, बिल्कुल कलकत्ता की तरह। मुझे एहसास हुआ कि हम ल्हासा के सबसे इज्ज़तदार लोगों में से एक से बात कर रहे थे। मुझे और भी हैरानी हुई जब चाय के साथ बिस्किट आए। जब हम चाय पी रहे थे, तो उन्होंने हमारे रास्ते और फिजिकल कंडीशन के बारे में पूछा। मुझे देखकर उन्होंने कहा, "तुम इतनी कम उम्र में यहाँ पहुँच गए हो, यह तुम्हारे पिछले जन्म का नतीजा होगा।" वह थोड़ी

देर और हमारे साथ रहे और हमारी ज़िम्मेदारियाँ अपने असिस्टेंट पर छोड़ दीं। असिस्टेंट ने हमें पूरी ड्रेपुंग गुफाएँ घुमाने की ज़िम्मेदारी ली।

ड्रेपुंग एक तिब्बती शब्द है जिसका बंगाली में मतलब चावल का पहाड़ होता है। दूर से यह सफ़ेद गुफा चावल के पहाड़ जैसी दिखती है, इसलिए इसका नाम ड्रेपुंग है। आजकल इसमें बहुत बदलाव आ गया है, लेकिन असली मंदिर और घर अभी भी वहीं हैं। हम एक घर के सामने रुके। असिस्टेंट सज्जन ने कहा-

ड्रेपुंग गुफा में सिर्फ़ तिब्बती ही नहीं, बल्कि विदेशी भी पढ़ने आते हैं। पुराने ज़माने में, भारत के उड़ीसा राज्य में 'श्रीदांग कोटक' नाम का एक बड़ा बौद्ध मठ था, लेकिन आजकल उसका कोई निशान नहीं है, यह ड्रेपुंग गुफा उसी मठ की नकल में बनाई गई थी। हमारे सामने वाले इस घर में नेपाली स्टूडेंट रहते हैं, मैं आपको उनसे मिलवाता हूँ। जैसे-जैसे हम पास आए, हमें अंदर से प्रार्थना और मंत्र सुनाई दिए। यह घर बिल्कुल दार्जिलिंग में घूम गुफा के गेस्ट हाउस जैसा है। परिचय होने के कुछ ही मिनटों में, अंदर से सभी लोग हमें सलाम करने आए। हम बहुत खुश थे कि बहुत समय बाद रिश्तेदार मिले। हर लामा ने इस मठ, गाँव और शहर की अदला-बदली की और उनके बीच का कनेक्शन जानने के लिए उत्सुक हो गए। आप कहाँ से हैं? अरे हाँ, मैं कुछ साल फलाने मठ में था - क्या कहा, फलाने लामा ने तुम्हें दीक्षा दी, वो मेरे गुरु भाई हैं, मैंने तुम्हारे मठ की नींव रखी.... उनकी बातचीत से मुझे समझ आया कि हमारे ग्रुप में हर लामा खास ज्ञान वाला इंसान है। गुरुजी ने सबको अपना परिचय दिया और कहा कि मैं नेपाल और भारत के बॉर्डर पर रक्सौल नाम के शहर से आया हूँ। मैंने मन ही मन सोचा कि मुझे मौनी बाबा ने बचाया, नहीं तो मेरा असली रूप यहाँ पता चल जाता। नेपाली

स्टूडेंट्स ने असिस्टेंट लामा को जाने को कहा, स्टूडेंट्स ने हमारे इंस्पेक्शन का काम संभाला। मैं फिर उनके साथ बाहर चला गया।

गुफा का मुख्य मंदिर बीच में है और उसके चारों ओर चार कॉलेज हैं। दीवारें और छत सफेद और सुनहरे रंग की हैं, और बालकनी, दरवाज़े और खिड़कियां चमकीले लाल रंग के काम से सजी हैं। पहले कॉलेज को लोसेलिंग, खाम और कहा जाता है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৫৭

पूर्वी तिब्बत से लामा वहां फिलॉसफी और तिब्बती कल्चर की पढ़ाई करने आते हैं। दूसरे कॉलेज का नाम गोमांग ट्रात्सांग है, तीसरे का नाम डेयांग ट्रात्सांग है, और चौथे का नाम न्गाकपा ट्रात्सांग है। ब्रात्सांग शब्द का मतलब शायद रेजिडेंशियल एजुकेशन सेंटर है। तिब्बत के अलग-अलग इलाकों के लिए स्टूडेंट्स की संख्या तय की गई है। ये स्टूडेंट्स तिब्बत के भविष्य के लीडर हैं। ये लामा ही भविष्य में मिनिस्टर, सेक्रेटरी, सैनिक, गार्ड, इंजीनियर, आर्किटेक्ट, डॉक्टर, धार्मिक लीडर वगैरह के पद संभालेंगे। यहां विदेशी स्टूडेंट्स के रहने की भी व्यवस्था है। नेपाल, भूटान और सिक्किम से आने वाले स्टूडेंट्स के लिए एक फॉरेन डिपार्टमेंट है, और उन्हें तिब्बती स्टूडेंट्स से अलग रखा जाता है।

ड्रेपुंग गुफा में स्टूडेंट्स की संख्या करीब दस हज़ार है। ये सभी दस हज़ार यहीं पढ़ते हैं। अगर मैंने इसे अपनी आँखों से न देखा होता, तो मुझे यकीन नहीं होता - यह ल्हासा में एक बहुत बड़ा शांतिनिकेतन है। हर कॉलेज के हेड को खेमपो कहते हैं, और चारों खेमपो में से जो

उम्र और स्कॉलरशिप में सबसे अच्छा होता है, वही ड्रेपुंग का हेड होता है, जैसे कलकत्ता यूनिवर्सिटी का वाइस चांसलर। स्टूडेंट्स के बीच शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए दो पीस ऑफिसर रखे जाते हैं, उन्हें शालिंगो कहते हैं, और उन्हें ड्रेपुंग का वार्डन कहा जा सकता है।

कॉलेज सभी पगोडा-टाइप के हैं। कहने की ज़रूरत नहीं है, तिब्बत का यह इलाका समतल है, चारों ओर पेड़ों से भरा है, अब जब सर्दी अभी-अभी गुज़री है और गर्मी शुरू हो गई है, तो यहाँ के बगीचे जल्द ही फूलों से भर जाएँगे।

तीर्थयात्रियों, यानी जो लोग धर्मशाला में रुकते हैं, उन्हें पहले तीन दिन मुफ़्त खाना खिलाया जाता है, तीन दिन के बाद वे खास इजाज़त लेकर चार दिन और रुक सकते हैं, और अगर वे तब भी रुकना चाहते हैं, तो उन्हें यहाँ के पुजारियों के साथ रहकर धार्मिक शिक्षा लेनी होती है। आम तौर पर, लोग एक बार में दो दिन से ज़्यादा नहीं रुकते। धर्मशाला में दोपहर का खाना खाने के बाद, मैं बाकी जगह देखने के लिए फिर से बाहर निकल गया।

दोपहर में हम फिर चीफ सेक्रेटरी से मिले। उन्होंने हमें चीनी अधिकारियों के प्रतिनिधियों से मिलवाया, लेकिन हमें समझ नहीं आया कि क्यों। बेशक, समझने की कोई ज़रूरत नहीं थी। हालांकि, चीफ सेक्रेटरी ने हमसे माफ़ी मांगने वाले अंदाज़ में कहा - बुरा मत मानना, हमारा हनांदा के साथ एग्रीमेंट है और जब भी कोई नया आता है, तो उसे मिलवाना ही पड़ता है। बेशक, यहां के हान अधिकारी आपकी स्थिति से अच्छी तरह वाकिफ हैं। कई वजहों से, इन दिनों विदेशी तीर्थयात्रियों ने यहां आना लगभग बंद कर दिया है। वैसे भी, इस बारे में और कुछ न कहना ही बेहतर है। यह कहकर उन्होंने एक गहरी सांस ली और

फिर कहा - चलो आपको मुख्य मंदिर के अवलोकितेश्वर के दर्शन कराते हैं।

১৫৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

ड्रेपुंग का मुख्य मंदिर बहुत बड़ा है, अनगिनत मूर्तियों और दीवारों पर बनी पेंटिंग्स से भरा हुआ है, मुझे उनके बारे में बताने का ज्ञान नहीं है। मंदिर में अंदर जाने से पहले, हमने छड़ी को सात बार काटकर मंदिर की परिक्रमा पूरी की। फिर, मंत्र पढ़ते हुए, हमने प्रार्थना चक्र को सात बार घुमाया और मंदिर के चारों ओर चक्कर लगाए। अगर सर्दियों का मौसम न होता, तो मुझे चक्कर आ जाते, फिर ओम-माने- पामे-हम बोलते हुए मंदिर में अंदर गए। चार भुजाओं वाले बोधिसत्व अवलोकितेश्वर ने हमारा ध्यान खींचा - हम उस देवता के चरणों में गिर पड़े जिन्हें महान ध्यानी, चार भुजाओं वाले सत्य-निर्माता, कर्म-फल कहा जाता है। फिर हमने प्रार्थना करना शुरू किया -

हे जगत के स्वामी

हे जगतपिता, आप इस बर्फ की धरती के मालिक हैं, आप इस असीम नीले आसमान के दिव्य मंत्रों के राजा हैं, छह शब्दों के मालिक हैं, कमल धारण करने वाले हैं, अचल और अचल के स्वामी हैं। हे अवलोकितेश्वर, आप प्रकाश के रचयिता हैं, आप तीनों तापों को दूर करते हैं, आप प्रकाश लाते हैं। आप दुख दूर करते हैं, आप प्रकाश लाते हैं, आप कर्मों के फल दूर करते हैं, आप मुक्ति का प्रकाश दिखाते हैं, आप भोगों के शरीर हैं, आप हृदय के प्रकाश हैं, मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

बुद्ध की बड़ी मूर्ति कई टंकियों और कपड़ों से ढकी हुई है, उसके सामने वेदी पर छोटी मूर्तियाँ और पूजा की अलग-अलग चीज़ें हैं, घी के दीपक के ठीक सामने तपस्या के लिए पानी के कई कटोरे और चढ़ावे के तौर पर चावल का एक बड़ा बर्तन है। और अनगिनत किताबें भी। मंदिर की पूजा पूरी करने के बाद हम बाहर आ गए। सेक्रेटरी हमें बस से वहाँ ले गए थे। गुरुजी एक साल तक ड्रेपुंग गुफा में रहे थे, इसलिए उन्होंने यहाँ की दूसरी बातें समझाना शुरू कर दिया।

हम ड्रेपुंग में तीन दिन रहेंगे, यानी जब तक हम बिना इजाज़त के रह सकते हैं। फिर हम तन और मन से पूरी तरह स्वस्थ होकर ल्हासा में दाखिल होंगे, इसलिए ये कुछ दिन ड्रेपुंग गुफा में दूसरी चीज़ों के बारे में जानने के लिए काम आएंगे। मैंने यहाँ दूसरी चीज़ों के बारे में जितना हो सका, सीखना शुरू कर दिया।

जब मैंने पहली बार तिब्बत में कदम रखा, तो मुझे एहसास हुआ कि यह एक पुजारियों का राज्य है। हर सरकारी कर्मचारी एक पुजारी, यानी एक लामा था। ड्रेपुंग पहुँचने के बाद मुझे इस बारे में और पता चला।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৫৯

तिब्बत की गुफाओं ने यूनिवर्सिटी की जगह ले ली है। ल्हासा के उत्तर, दक्षिण और पश्चिम में तीन मुख्य गुफाएँ हैं। उनमें सबसे बड़ी ड्रेपुंग है, फिर दक्षिण में सेरा और उत्तर में गंडेन है। सेरा ल्हासा से डेढ़ मील उत्तर में और गंडेन ल्हासा से पैंतीस मील उत्तर-पूर्व में है। ड्रेपुंग के स्टूडेंट्स और लामा छोटे-छोटे ग्रुप में बंटे हुए हैं, और हर घर का अपना मंदिर का बगीचा और किचन है। हर सुबह

में मुश्किल से पढ़ाई करनी पड़ती है। ड्रेपुंग गुफाओं में एक साल से बिजली लगी हुई है, लेकिन सभी कमरों में रोशनी होने में अभी भी बहुत देर हो चुकी है। वे पढ़ाई के लिए जिन किताबों का इस्तेमाल करते हैं उनमें से हर एक का वज़न लगभग ढाई से तीन किलोग्राम होता है। ए. टी. देव की मोटी डिक्शनरी भी उसके सामने कुछ नहीं है। उन्हें उन किताबों को नीचे उतारने के लिए सीढ़ी चढ़नी-उतरनी पड़ती है। अगर सीढ़ी गिर गई, तो वे किताबों के नीचे दब जाएंगे और उनकी ज़िंदगी का काम खत्म हो जाएगा। उन्हें सुबह सात बजे पढ़ना शुरू करना होता है और दोपहर दस बजे तक लगातार पढ़ना होता है, साथ ही ध्यान और पूजा भी करनी होती है। दोपहर में वे बगीचे का काम करते हैं, मंदिर की सफाई करते हैं, घर में झाड़ू लगाते हैं।

১৬০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

देना, फिर पढ़ना। अगर ठीक से पढ़ाई नहीं की तो बंदरों और लामाओं के कान खाने पड़ेंगे। सर्दियों के दिनों में बच्चों की ज़िंदगी और भी मुश्किल हो जाती है।

कई लामाओं ने वॉलंटियर्स की तरह अपने पंखों पर रिबन बांधे हुए हैं। वे गुफा के लिए आतंक हैं। अपनी आम भाषा में, वे "डोब-ज़ब" कहते हैं। अगर आप नियमों से थोड़ा भी भटके, तो उनका डंडा आपके सिर पर गिर जाएगा। ड्रेपुंग और सेरा गुफाओं की एक और खासियत यहाँ की सेना है। तिब्बत में ये सिर्फ़ दो गुफाएँ हैं जहाँ लामाओं की सेना है। सेना के सभी सैनिक लामाओं से ही सेना में शामिल हुए हैं। स्टूडेंट्स में, जो बहुत हेल्दी और बहुत अच्छे दिखते हैं लेकिन पढ़ाई में अच्छे नहीं होते, उन्हें इस सेना में ले लिया जाता है। उनका दूसरा नाम धर्म-

सेना है। हर साल, ड्रेपुंग और सेरा गुफाओं की सेनाओं के बीच अलग-अलग कॉम्पिटिशन होते हैं। रस्सी खींचना, कुश्ती, रेत में गड्ढे खोदना और दौड़ना कॉम्पिटिशन के मुख्य विषय हैं।

तिब्बती पॉलिटिक्स की जड़ में ड्रेपुंग, सेरा और गंडेन का असर है। सेरा में करीब पांच हज़ार लामा और गंडेन में करीब तीन हज़ार लामा हैं। दलाई लामा तिब्बत के मुख्य शासक हैं। वे अब नाबालिग हैं, लेकिन उनके आस-पास के धार्मिक नेता नाबालिग दलाई लामा के प्रतिनिधि के तौर पर राज्य पर राज करते हैं। तीन गुफाएं तिब्बत की तीन नींव हैं, परम पावन दलाई लामा के दरबार में आठ मंत्री हैं, तीनों गुफाओं के प्रमुख सलाहकार के तौर पर काम करते हैं, सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट और कुछ बड़े लामाओं के साथ एक काउंसिल बनाई जाती है। काउंसिल का कोई भी फैसला लेने के लिए ड्रेपुंग, सेरा और गंडेन गुफाओं के मुख्य पुजारियों की राय और सलाह की ज़रूरत होती है। हर साल परम पावन दलाई लामा तिब्बत की सालाना लामा कॉन्फ्रेंस बुलाते हैं। इस कॉन्फ्रेंस में बौद्ध धर्म के अलग-अलग मुद्दों पर चर्चा होती है और साथ ही खूब बहस भी होती है। उस समय दलाई लामा इसी ड्रेपुंग गुफा में रुकते हैं। उस समय धार्मिक सम्मेलन का त्योहार मनाया जाता है।

ड्रेपुंग गुफा के सभी लामा बहुत सीरियस हैं, वे खाने के समय के अलावा कभी मुस्कुराते हुए नहीं दिखते। आम पढ़ाई के अलावा, ड्रेपुंग गुफा में कुछ छोटे-मोटे काम भी सिखाए जाते हैं। उनमें ऊन का काम, सिलाई, मक्खन बनाना और बुनाई के काम खास हैं। गुरुओं के प्रति उनकी भक्ति सच्ची नहीं लगती थी। यह डर के साथ मिला हुआ लहजा था। शायद लामाओं की ज़िंदगी ऐसी होती है कि खुशी पाने के लिए दुख को मानना पड़ता है। मैं एक शांत इंसान हूँ, लेकिन अपने सभी सेंस को अलर्ट रखते हुए, मैंने इन पुजारी शासकों के अंदरूनी राज़ जानने शुरू किए।

लामा और शिक्षा प्रणाली

तिब्बत पुजारियों के दबदबे वाला देश है।

मैं पहले ही लिख चुका हूँ कि ड्रेपुंग सेरा और गंडेन की तीन गुफाएँ तिब्बत में सीखने की जगह हैं। ये सभी के लिए सीखने की जगह हैं, दस साल के छोटे त्रापा या डाबा से लेकर अस्सी साल के लामा तक। मैं कुछ शब्द लिखने के लिए मजबूर हूँ कि कैसे एक बच्चा भविष्य में लामा के लेवल तक पहुँचता है।

हमारी भाषा में लामा शब्द का मतलब संत या महान आत्मा होता है। एक बच्चा (लड़का) लामा पैदा नहीं होता। उसे यह टाइटल उसके बाद के ज्ञान और फैसले के हिसाब से दिया जाता है। बहुत से लोग उस टाइटल से जुड़ाव पाते हैं और इसे मरे हुए लामा का पुनर्जन्म बताते हैं। परम पावन दलाई लामा और पंचेन लामा इसका सीधा सबूत हैं।

जैसे ही बच्चा पैदा होता है, माता-पिता तय करते हैं कि अपने बेटे को मठ में भेजना है या नहीं, क्योंकि तिब्बत में मठ ही एकमात्र शिक्षा केंद्र हैं। इसलिए, बेटे को वहाँ भेजना भविष्य के विकास का रास्ता है। जैसे ही बेटा सात या आठ साल का होता है, पिता या अभिभावक स्थानीय गुफा के प्रमुख से संपर्क करते हैं। फिर प्रमुख लड़के को देखता है और उसके एडमिशन के लिए एक दिन तय करता है। बेशक, उसे यकीन होता है कि लड़का एडमिशन के लिए अच्छी सेहत में है। अगर गुफा का प्रमुख लड़के के अभिभावक को जानता है, तो कोई समस्या नहीं है। अगर कोई जान-पहचान वाला नहीं है, तो गुफा परिषद इस बारे में पूछताछ करती है। तिब्बत या बौद्ध धर्म में, आम तौर पर कोई जाति का फैसला नहीं होता है। ऊँचे और निचले वर्ग का कोई सवाल ही नहीं है। हालाँकि, लोहारों और चांडालों

लड़के के पालन-पोषण की पूरी ज़िम्मेदारी गुफा के मुखिया को सौंपी जाती है। छोटा लड़का धीरे-धीरे आत्मनिर्भर बनता है, और गुरु सेवा भी उसकी शिक्षा का एक बड़ा हिस्सा होती है। इस तरह कुछ और साल बीत जाते हैं, और तेरह या चौदह साल की उम्र में उसे फिर से परीक्षा देनी पड़ती है। अगर वह यह परीक्षा पास कर लेता है, तो उसे गे-थु-का से गे-नियन के पद पर प्रमोट कर दिया जाता है। असली तपस्या गे-नियन क्लास से शुरू होती है। इस दौरान उसके चरित्र और अनुशासन पर बहुत दबाव डाला जाता है। तीन या चार साल तक गे-नियन क्लास में पढ़ाई पूरी करने के बाद, उसे परीक्षा देनी पड़ती है। इस परीक्षा की तुलना हमारे देश में मैट्रिक या स्कूल की आखिरी परीक्षा से की जा सकती है। पढ़ाई के विषयों में मुख्य रूप से धर्म, दर्शन, इतिहास, गणित, भूगोल शामिल हैं। पूजा और विभिन्न धार्मिक समारोहों पर विशेष जोर दिया जाता है।

गे-न्येन स्टेज से ऊँचे लेवल, यानी यूनिवर्सिटी तक आगे बढ़ने के लिए, उसे कई टेस्ट देने होते हैं, और स्कॉलर्स के साथ डिबेट कॉम्पिटिशन में भी हिस्सा लेना होता है। सभी टेस्ट पास करने के बाद, उसे प्रीस्ट रैंक पर प्रमोट किया जाता है। यह नया सम्मान पाने के लिए, उसे एक कॉन्वोकेशन सेरेमनी और आखिरी ऑर्डिनेशन सेरेमनी से होते हुए लामा स्टेज तक पहुँचना होता है। लामाओं के इस स्टेज को गेट-सुल या गेल कहा जाता है।

गे-नियन परीक्षा के लिए नए लोगों को जो व्रत लेने होते हैं, उनमें हत्या, किडनैपिंग, व्यभिचार, झूठ और शराब पीने से दूर रहना शामिल है। गुफा या मठ में हर किसी को साधु जैसा जीवन जीना होता है, यानी उन्हें पाँच बुराइयों से दूर रहना होता है। जैसे, दोपहर से पहले खाना न खाना, नाचने-गाने का शौक रखना, अगरबत्ती की माला पहनना, मुलायम बिस्तर पर सोना और सोने-चांदी के पैसे का त्याग करना, ये वो व्रत हैं जिनका बौद्ध धर्म में पालन करना ज़रूरी है। गे-शुल स्टेज

के लिए, स्टूडेंट को छत्तीस व्रत लेने होते हैं। उन व्रतों का पालन करने के लिए, शारीरिक और मानसिक बनावट की ज़रूरत होती है। जब शरीर सभी बीमारियों से मुक्त हो जाता है, तो मन हल्का हो जाता है और शांत मन से सुप्रीम बुद्ध, सुप्रीम लाइट का ध्यान कर सकता है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৬৩

गेट-शुल लेवल के लामा हर तरह की सरकारी मदद और सुविधाओं के हकदार होते हैं। इस समय, दो-चार साल इधर-उधर करने से कोई फर्क नहीं पड़ता, सबसे ज़्यादा ज़रूरत मन पर काबू पाने की होती है। सच्चा लामा वही होता है जिसमें अहिंसा, सत्य, धर्म और ताकत हो। गेट-शुल का विद्वान बनना तिब्बतियों के जीवन का एक शुभ और पवित्र अध्याय होता है। इस समय, स्टूडेंट का पूरा परिवार खुशियों से झूम उठता है। गेट-शुल के आम स्टूडेंट, यानी जो पढ़ाई में होशियार नहीं हैं, उनके गार्जियन तरह-तरह की गुज़ारिशें लेकर आते हैं। ऐसे में अगर गार्जियन हॉस्टल का खर्च उठा सकें, तो स्टूडेंट को रखने में कोई दिक्कत नहीं होती। लगभग साठ परसेंट तिब्बती लामा यहीं रहने को मजबूर हैं। पैसे लेकर गुफा में पढ़ने वाले गेट-शुल स्टूडेंट ज़्यादातर हैं। यह पैसा गुफा के विकास के लिए इस्तेमाल होता है। गुफा के छोटे से कमरे में हमेशा के लिए मुक्ति की मेहनत शुरू हो जाती है। गेट-शुल स्टेटस से ही उन्हें लामा के तौर पर पहचान मिल जाती है। लेकिन, उन्हें पूरी पहचान मिलना अभी बहुत दूर की बात है। इस समय उन्हें त्रापा कहा जाता है, उनकी उम्र अभी भी बीस साल से कम होती है। हॉस्टल में उनके निजी सामान में दो बड़ी चादरें, एक लामा का चोगा, दो कंबल, एक लैंप, एक कटोरा, एक गिलास, एक प्लेट और कुछ किताबें हैं। इस समय से, त्रापा

मंदिर के लिए ज़िम्मेदार है। सिर मुंडवाने की ज़िम्मेदारी गुफा के नाई को दी जाती है।

इस समय से, लामा को कांग्यू के पवित्र ग्रंथों को याद करना होता है और गुरु से उनकी व्याख्या और व्याख्या सीखनी होती है। धार्मिक किताबों की कॉपी बनाने और अलग-अलग तरह के मंडल बनाने पर भी ज़ोर दिया जाता है। छात्र आध्यात्मिकता के गहरे रहस्यों पर बहस करते हैं, जिसमें गुरु जज की भूमिका निभाते हैं। जो लोग बहस जीतते हैं उन्हें गेलंग-मा की उपाधि से सम्मानित किया जाता है। बीस साल बाद, लामा को राज्य पर शासन करने या गुफा की ज़िम्मेदारी लेने के लिए खास कानूनी मामलों या दर्शन की पढ़ाई करनी होती है। निर्वाण की असली खोज भी इसी अवस्था से शुरू होती है। जो लोग राज्य पर शासन करने की ओर बढ़ते हैं वे शादी करते हैं और पारिवारिक धर्म का पालन करते हैं। और जो लोग आध्यात्मिक मार्ग की ओर बढ़ते हैं वे हमेशा जवानी का कठिन रास्ता चुनते हैं।

तिब्बत में यह काफी धार्मिक एजुकेशन सिस्टम है। ल्हासा से दूर गांवों में, गुफाओं के प्रिंसिपल स्टूडेंट्स का भविष्य तय करते हैं। हालांकि, राजधानी में किसी भी ऊंचे पद के लिए कैंडिडेट ड्रेपुंग सेरा और गंडेन गुफाओं से चुने जाते हैं।

तिब्बत का धर्म और इतिहास

तिब्बत में घुसने के बाद से ही मुझे यह देखकर हैरानी हुई है कि वे सभी बौद्ध हैं। भगवान बुद्ध वैदिक रीति-रिवाजों और समारोहों के खिलाफ थे। वे जाति-भेद के खिलाफ थे, और केवल मनुष्य ही निर्वाण पाने के हकदार हैं। भगवान बुद्ध को उन लोगों से सीधी शिकायत थी, जो ब्राह्मण होने के बावजूद ब्रह्म के बारे में कुछ नहीं जानते, जो

ईश्वर को नहीं समझते और केवल ईश्वर को ईश्वर कहकर सूखे मंत्रों का जाप करते हैं, और जो मछली और मांस खाकर सभी जीवों से प्रेम का धर्म सिखाते हैं। वे रीति-रिवाजों और बलि के ज़रिए पुजारियों को बसाने के खिलाफ थे। जब अंतर्यामी ने पूजा और असंख्य देवी-देवताओं के मेले में निरुद्देश्र के रास्ते पर अपनी यात्रा शुरू की, उस समय महान बुद्ध सामने आए। उन्होंने उन लोगों को रोशनी दिखाई जो अंधेरे में खो गए थे। उन्होंने सभी को इस दुनिया की खुशियों और सुखों का राज समझाया। उन्होंने कहा - अपना रास्ता मत खोओ। जीवन में मोक्ष के अलावा कुछ भी वांछनीय नहीं है। अंधेरे में अपना रास्ता मत खोओ, मुक्ति के रास्ते पर चलो, वहीं सच्चा सुख है।

तिब्बत में बौद्ध धर्म का रूप बिल्कुल अलग है। हर मंदिर की वेदी पर बुद्ध की अलग-अलग मूर्तियों के साथ-साथ हिंदू देवी-देवताओं की भी बहुत सारी मूर्तियाँ हैं। मैंने अपनी आँखों से अलग-अलग गुफाओं में काली, तारा, दुर्गा, भैरवी, ब्रह्मा, सरस्वती और कई दूसरे देवी- देवताओं की मूर्तियाँ देखी हैं। इसके अलावा, सबसे खास बात यहाँ बौद्ध धर्म और तंत्र-साधना का अजीब मिक्सचर है। इसका कारण जानने के लिए हमें पुराने इतिहास में जाना होगा, यानी बौद्ध धर्म ने इस देश में अपना असर कैसे फैलाया। आइए इस पर थोड़ी देर बात करते हैं।

तिब्बत का असली धर्म बान-पा है। उनका काम मारना, सिर काटना, राक्षस मारना और पूरी तरह से इंसानी बलि देना था। आम लोगों को डराकर और उनसे फ़ायदा उठाकर, कई बेईमान लोग संतों के लेवल पर बैठकर धर्म के नाम पर जाल बिछाते थे। तिब्बत के आम लोग हमेशा से सीधे-सादे और सरल रहे हैं, उनमें कभी इन भयानक चीज़ों के ख़िलाफ़ सिर उठाने की हिम्मत नहीं हुई। इस बीच, कभी-कभी देश के या कबीलाई नेता उठ खड़े होते थे, उनमें से सबसे मज़बूत खुद को राजा घोषित कर देते थे और मिलकर राज करते थे, और फिर, जब दूसरी ताकतों से हार जाते थे, तो वे सिर झुका

लेते थे। उस समय का सही इतिहास अभी तक नहीं मिला है। लेकिन चाहे किसी भी राज्य का राज रहा हो, धर्म बान-पा ही था, जो बहुत नीच था।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৬৫

तंत्र मार्ग की तरह। तांत्रिक धर्म की शुरुआत शरीर सिद्धांत को जानने से होती है, फिर धीरे-धीरे मन, ध्वनि, स्पर्श, स्वाद, गंध को जानना और फिर ऊपर उठकर पंचमहाभूतों, भूतों और सांसारिक पदार्थों के स्रोत को खोजना। मुख्य उद्देश्य अलौकिक और अलौकिक के ज्ञान के माध्यम से प्रकृति और मनुष्य के मिलन का रहस्य जानना है। लेकिन वह मार्ग जितना जटिल है, उतना ही कठिन भी है। इसलिए, बहुत से लोग भटक गए और मनुष्य और प्रकृति के मिलन के रहस्य के मुख्य स्रोत को समझ नहीं पाए और शरीर सिद्धांत से खुश हो गए। वे ऊर्जा के रूप में माँ की रचनात्मक शक्ति की खोज के कठिन मार्ग को छोड़ देते और रूप, स्वाद और गंध के आकर्षण से आकर्षित होकर वहीं रुक जाते। या सच्चिदानंद के आनंद के बजाय, वे भोगानंद का आनंद पाकर रुक जाते। इस तरह, तिब्बत में अनगिनत वन पथ और तंत्र मार्ग विकसित हुए। तंत्र के प्रकाश मार्ग पर जाने के बजाय, उनमें से ज़्यादातर ने अंधकार मार्ग चुना, यानी शरीर और उसकी आत्मा के साथ खेले जा सकने वाले सभी तरह के खेलों को बाहर नहीं रखा गया। तिब्बती राजाओं या नेताओं ने भी इस धर्म को संरक्षण दिया। हालाँकि बान-पा तंत्र जैसा ही था, लेकिन तंत्र से इसका अंतर बहुत बड़ा था। बान-पा धर्म पर ड्रैगन और राक्षसों का राज था। इस दौरान तिब्बत का पूरा इतिहास आज भी नहीं मिल पाया है। सातवीं सदी AD में, यानी भगवान बुद्ध के शुभ रूप में प्रकट होने के लगभग बारह सौ साल बाद, तिब्बत में पहली बार बुद्ध के वचनों का प्रचार किया

गया। उस समय के राजा स्रॉन्ग-सान गम्पो तिब्बत में बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। उनके नाम पर, तिब्बती मठों को गोम्पा या गुम्फा कहा जाता है।

लगभग 650 AD में, महान तिब्बती राजा स्रॉन्ग-त्सान-गम्पो ने तिब्बत की सीमाओं को दूर दक्षिण तक बढ़ाने के लिए चीन और नेपाल पर हमला किया। उन्होंने चीन पर हमला किया और जीत हासिल की, और चीन की राजकुमारी से शादी करके उसे तिब्बत ले आए। चीन उस समय भारत का सहयोगी था, और उस समय चीन में बौद्ध धर्म मुख्य धर्म था। चीनी राजकुमारी से शादी करने के साथ-साथ, वह उस देश के धर्म को भी तिब्बत ले आए। फिर वह वापस लौटे और नेपाल पर हमला कर दिया। नेपाल के राजा ने एक संधि पर साइन करके उनके हमले का जवाब दिया। उस संधि के अनुसार, नेपाल के राजा अंशु वर्मा को अपनी बेटी भुकुटी को तिब्बत के राजा स्रॉन्ग-त्सान-गम्पो को सौंपना पड़ा। कहने की ज़रूरत नहीं है कि उस समय पूरा नेपाल बौद्ध था।

इस तरह, राजा स्रॉन्ग-सान-गम्पो अपनी राजकुमारियों के साथ चीन और नेपाल से बौद्ध धर्म ले आए। इन दोनों रानियों का राजा पर बहुत ज़्यादा असर था। इन दोनों रानियों के कहने और दबाव में, राजा ने तिब्बत में बौद्ध धर्म को राजधर्म घोषित कर दिया। उस समय, नेपाल की राजकुमारी दहेज के तौर पर नेपाली महल से बुद्ध की एक बहुत बड़ी मूर्ति अपने साथ लाईं। वह मूर्ति तिब्बत में बुद्ध की पहली मूर्ति है। राजा स्रॉन्ग-सान-गम्पो ने उनके सम्मान में ल्हासा में एक बहुत बड़ा मंदिर बनवाया और उस मूर्ति को स्थापित किया।

১৬৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

भारतीय धर्म को हटाना मुश्किल हो गया। राजा की मौत के बाद, दो रानियों, राजा स्रोंग्-सान गम्पो और उनके फाइनेंस मिनिस्टर की लगातार कोशिशों से तिब्बत में जो धार्मिक राज कायम हुआ था, उसमें फिर से राक्षसी हिंसा दिखने लगी। सैकड़ों कोशिशों के बावजूद, कोई भी महाकाल और ड्रैगन को बौद्ध धर्म में आने से नहीं रोक सका, और ऐसा लग रहा था जैसे बुद्ध से ही लोगों के खून में ड्रैगन के लिए प्यार बस गया हो। ऐसे में, यह कहना ज़रूरी है कि इस समय चीन में बौद्ध धर्म पर ड्रैगन का बहुत ज़्यादा असर था। इसलिए, चीनी राजकुमारी के साथ, बौद्ध दर्शन और ड्रैगन आर्किटेक्चर इस देश में आए। उस समय, बोन-पा धार्मिक पुजारियों ने भारतीय तंत्र साधना के नाम पर अपना धर्म वापस लाने की कोशिश की। लगभग सौ सालों तक, बौद्ध धर्म और बोन-पा धर्मों के बीच दुश्मनी चलती रही। फिर, श्रोंग-सान-गम्पो के असली वारिस, थ्री- स्रोन-इदे-त्सान (755-780 AD) गद्दी पर बैठे। राजा थ्री-स्रोन-इदे- त्सान ने सत्ता की बागडोर संभाली और तिब्बत का बैलेंस ठीक किया। उन्होंने अपने महान पूर्वज के नाम पर काउंसिल बुलाई और कहा, "हमारे देश का बान-पा धर्म असली धर्म है, लेकिन बौद्ध धर्म ने हमारे देश में शांति लाई है। बौद्ध धर्म को अपनाकर,

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৬৭

हमारे पूर्वजों ने मोक्ष और निर्वाण प्राप्त किया है। इसलिए हम उसे भी नहीं छोड़ सकते। इसलिए, हमें एक ऐसा धार्मिक नेता खोजना होगा जो इन दोनों पक्षों का सम्मान के साथ न्याय कर सके और समाधान का रास्ता दिखा सके। राजा की बातें सुनकर, मंत्री एक उपयुक्त धार्मिक नेता की तलाश में चारों ओर बिखर गए। न केवल तिब्बत में बल्कि तिब्बत के बाहर

भी, तिब्बती राजदूत फैल गए, युद्ध नहीं, बल्कि शांति, उस शांति के लिए, हमें एक महान गुरु चाहिए।

बहुत खोजबीन और बहस के बाद, राजा को आखिरकार एक सही गुरु मिल गया। कश्मीर में एक बहुत खास गुरु मिले। कश्मीर के महान विद्वान गुरु पद्म स्वामी को राज्य का आचार्य मान लिया गया। गुरु पद्म स्वामी को तिब्बती गुरु की उपाधि से सम्मानित किया गया। उनका नाम रिम्पोछे था, जिसका मतलब है महान गुरु। कई लोग उन्हें उर्गियन लामा के नाम से जानते हैं। उनका जन्म कश्मीर के उर्गियन गांव में हुआ था। गुरु पद्म स्वामी के जन्म का रहस्य भी बहुत अनोखा है, उनका जन्म इंसान की कोख से नहीं हुआ था, वे सीधे कमल के फूल के अंदर से प्रकट हुए थे। वे एक हर चीज़ जानने वाले विद्वान थे।

तिब्बत पहुँचते ही उन्होंने सुधार का काम शुरू कर दिया। उन्हें तंत्र और वेदों के साथ-साथ बौद्ध धर्मग्रंथों में भी बहुत ज़्यादा जानकारी थी। वे एक होशियार विद्वान थे। पुराने पंथों को सीधे तौर पर नकारे बिना, उन्होंने धीरे-धीरे गैर-ज़रूरी रीति-रिवाजों को हटाना शुरू कर दिया। उन्हें पता था कि अगर उन्होंने अचानक उन पर जंग का ऐलान कर दिया, तो बौद्ध धर्म को ही नुकसान होगा। सदियों से, राक्षसों, भूतों और आत्माओं पर आधारित और उन पर विश्वास करने वाला यह धर्म तिब्बती सुधार के हर कोने में घुस गया था, इसलिए इस धर्म को पूरी तरह खत्म करना सही नहीं था। इसके अलावा, वे खुद एक तांत्रिक थे, इसलिए उन्होंने बहुत ध्यान से उनके बीच अपनी राय फैलाना शुरू किया - यानी राक्षसों, भूतों और आत्माओं को धीरे-धीरे इज्ज़त के साथ काबू में किया जाना चाहिए और फिर शांति का रास्ता खोजना चाहिए। एक बार सज़ा मिल जाए, तो मुक्ति और निर्वाण का रास्ता खोजना चाहिए।

उनका अद्वैतवाद सबको पसंद था। जो लोग उनकी बातों पर अविश्वास या अनादर दिखाते, पद्म संभव उन्हें कई तरह की दिव्य और चमत्कारी शक्तियां दिखाकर वश में कर लेते। गुरु रिम्पोछे का नाम पूरे तिब्बत में फैल गया। पुराने पंथ भी उनके पास आकर चमत्कारी शक्तियों की दीक्षा लेने लगे और साथ ही शाही बौद्ध धर्म का प्रसार भी शुरू हो गया। राजा थ्री-स्रोन-इडे-सान ने पद्म संभव के गुणों और प्रतिभा और चमत्कारी शक्तियों को देखकर धर्म के प्रचार के लिए राज्य का खजाना खोल दिया। इस समय, कई तिब्बती विद्वान धर्म, दर्शन और संस्कृत की साधना के लिए भारत आए। मशहूर विद्वान शांता रक्षित इस समय तिब्बत गए थे। इस समय, राजा के संरक्षण में चीन और भारत से विद्वान धर्म और दर्शन की शिक्षा लेने आते थे।

১৬৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

बौद्ध धर्म के बारे में एक लंबी चर्चा और वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिए। इसी दौरान भारतीय विद्वान कमलशीला ने ल्हासा के महल में बौद्ध धर्म के विषय पर एक बड़े वाद-विवाद प्रतियोगिता में चीनी विद्वानों को हराया। राजा पंडित कमलशीला की असाधारण विद्वता को जानकर बहुत खुश हुए, लेकिन चीनियों ने शर्म और अपमान से अपना विवेक खो दिया, और कुछ दिनों बाद, एक चीनी साजिश के परिणामस्वरूप, विद्वान कमलशीला को एक हत्यारे ने मार डाला। उनकी मृत्यु के साथ, भारतीय छवि की जीत दोगुनी हो गई। तिब्बत के बुद्धिमान लोगों के बीच भारतीय दर्शन की एक बड़ी लहर उठी। शायद, उस समय, भारतीय दर्शन और आयुर्वेद ग्रंथों के कई और अनुवाद तिब्बती में किए गए थे।

गुरु पद्म संभव की शोहरत पूरी दुनिया में फैल गई। उन्होंने एक बौद्ध भिक्षु, एक तांत्रिक गुरु और एक उर्गियन लामा के तौर पर अलग-अलग समुदायों को अलग-अलग धर्मग्रंथों का ज्ञान और दीक्षा देना शुरू किया। इस तरह, उन्होंने पुराने पंथों पर जीत हासिल की।

गुरु रिम्पोछे ने चारों ओर कई मठ और मठ बनाए, और साथ ही कई तांत्रिक मंदिर भी बनाए। उनकी पर्सनल लाइफ बहुत अजीब थी। वे तंत्र, वेद और बौद्ध फिलॉसफी के टॉप पर थे। उनकी चार मुख्य पत्नियां और कई रखैलें थीं। लेकिन उनकी इज्ज़त या प्रतिष्ठा उतनी कम नहीं हुई। उन्होंने ही तंत्र और बौद्ध धर्मग्रंथों को मिलाकर तिब्बत के बौद्ध तंत्र मार्ग की स्थापना की। उन्होंने बुद्ध की बातों और सलाह को फैलाने के लिए हर गांव में लामाओं को तैनात किया। यह लामा एक ही समय में राजा और धर्म के प्रतिनिधि के तौर पर काम करते थे। राजा श्रोंग-सान-गम्पो ने तिब्बत में बौद्ध धर्म की नींव रखी, लेकिन उनके वंशज राजा थ्री- स्रोन-इदे-सान ने उस नींव को मजबूत किया। इसकी नींव तिब्बत के इतिहास में परम पूज्य गुरु पद्म संभव के तोहफे से लिखी जाएगी। तिब्बत में लामा पूजा इसी समय से शुरू हुई।

अपने आखिरी सालों में, गुरु रिनपोछे ने खुद को पूरी तरह से बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में लगा दिया। वे धीरे-धीरे तंत्र से हटकर मोक्ष और निर्वाण की ओर बढ़ गए। गुस्से में उनके ही एक पुराने ख्यालों वाले (लेफ्ट-विंग) साथी ने उन्हें मार डाला। उनकी मौत के बाद, इस कट्टर पुराने ख्यालों वाले पुजारी ने कई कीमती संस्कृत ग्रंथों को नष्ट कर दिया, जिनका तिब्बती में अनुवाद किया गया था। उन ग्रंथों के अनुवाद नहीं मिले हैं। गुरु पद्म संभव के हत्यारे को बाद में पकड़ लिया गया और उसका सिर काट दिया गया।

तिब्बत में, गुरु रिस्पोछे को आज भी बुद्ध के अवतार के तौर पर पूजा जाता है। मेरे हिसाब से, पूरे तिब्बत में, गुरु रिम्पोछे पुराने जागे हुए देवता हैं, जैसे बंगाल में मा-काली हैं। नी-यिंगमा-पा संप्रदाय गुरु रिम्पोछे को सबसे सम्मानित गुरु या देवता के तौर पर पूजते हैं। उसी समय मंदिर में गुरु रिम्पोछे की दोनों पत्नियों की मूर्तियों को भी जगह मिली। पुराने संप्रदायों के विरोध के बावजूद, भारत से विद्वानों का आना-जाना बढ़ता रहा। ग्यारहवीं सदी में, राजा ये-सेस-ओड के राज में, युवा विद्वानों का एक ग्रुप बौद्ध फिलॉसफी सीखने के लिए भारत आया था। उनके बुलावे पर

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৬৯

भारत से विद्वानों का एक ग्रुप भी धर्म का प्रचार करने के लिए तिब्बत गया था। उस ग्रुप के लीडर महान विद्वान आतिश दीपांकर थे। पंडित आतिश दीपांकर ने अपने काबिल शिष्य ब्रोम-टन की मदद से कदम-पा संप्रदाय को 'शुरू' किया। बाद में, इस कदम-पा संप्रदाय को गेलुक-पा के नाम से पहचान मिली। दलाई लामा इस गेलुक-पा संप्रदाय के मुख्य पुजारी हैं।*

11 वीं सदी में, ल्हासा में गेलुक्पा संप्रदाय के अलावा कोई दूसरा बौद्ध संप्रदाय नहीं था। सभी ने दलाई लामा का दबदबा माना। लेकिन 50 वीं सदी में, अचानक एक और संप्रदाय सामने आया, जिसे शाक्य कहा जाता था। शाक्य संप्रदाय नी-यिंगमा-पा और गेलुक्पा के बीच का रास्ता है। यह शाक्य संप्रदाय सम्राट कुबलई खान की देखरेख में दूसरे छोटे संप्रदायों को किनारे करके मशहूर हुआ। ताकतवर चीनी सम्राट ने शाक्य संप्रदाय से वादा किया कि अगर ज़रूरत पड़ी तो वह

अपनी सेना के साथ मदद करेंगे। ताशी लामा, या पंचेन लामा, को शाक्य संप्रदाय का लीडर माना गया।

इस तरह तिब्बत के दो मुख्य पंथ शुरू हुए। ल्हासा में दलाई लामा के अंडर गेलुक-पा पंथ और ग्यात्सो में पंचेन लामा के अंडर शाक्य पंथ। दूसरे शब्दों में, बौद्ध धर्म शुरू में नि-यांगमा पंथ था जिसके गुरु खुद पद्म संभव थे। फिर गुरु आतिश के अंडर कदम-पा पंथ बना। फिर दलाई लामा के लीडरशिप में गेलुक-पा और पंचेन लामा का शाक्य पंथ बना। पंद्रहवीं सदी में शाक्य पंथ बहुत ताकतवर हो गया और उसने गेलुक-पा पंथ को लगभग कुचल दिया। उस समय, तिब्बत में त्सोंग-का-पा नाम का एक टैलेंटेड लामा आया। उसने कदम-पा को फिर से ज़िंदा किया, जिसे दलाई लामा का गेलुक-पा पंथ भी कहा जाता है। वह एक धार्मिक नेता और समाज सुधारक दोनों था। उसने सभी पार्टी झगड़ों को खत्म करके एक तानाशाही कायम की। उसके समय से, पूरा तिब्बत दलाई लामा के राज में आ गया। यानी 1640 AD से पूरे तिब्बत को दलाई लामा को मुख्य लामा और शासक के रूप में मान्यता देने के लिए मजबूर किया गया।

मशहूर गंडेन गुफा की स्थापना इन्हीं त्सोंग-का-पा लामा ने की थी। ल्हासा में त्सोंग-का-पा का स्थान बहुत ऊंचा है, यानी वे दलाई लामा के पिछले जन्म के हैं। त्सोंग-का-पा ने बार-बार दलाई लामा के रूप में जन्म लिया। तंत्र का प्रभाव दो मुख्य बौद्ध संप्रदायों, गेलुक-पा और शाक्य में भी बहुत मजबूत है। आज तिब्बत के लामा पुजारियों की तंत्र के बिना कल्पना करना असंभव है।

1950 के दशक से तिब्बत में बौद्ध धर्म के पंथों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। कभी-कभी कोई पंथ किसी मठ या मंदिर के आस-पास बन गया है। इनमें खास हैं उर्ग्येन-पा, गंडेन-पा, कार्ग्युड-पा, कर्मा-पा, देकुंग-पा, डुक-पा, तंत्र मार्ग, शुन मार्ग, पोंग-पा। बाहर

परिशिष्ट नोट

১৭০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उन्हें एक-दूसरे से अलग पहचानना नामुमकिन है। जो बात ध्यान देने लायक है, वह है उनके कपड़ों या टोपियों का रंग। इसीलिए उन्हें येलो रोब कम्युनिटी और रेड रोब कम्युनिटी कहा जाता है। येलो रोब कम्युनिटी गेलुक-पा या दलाई लामा के लोग हैं और रेड रोब कम्युनिटी शाक्य मुनि या पंचेन लामा के लोग हैं। दलाई लामा कम्युनिटी के लामा आमतौर पर हमेशा ब्रह्मचर्य का व्रत लेते हैं, जबकि पंचेन लामा कम्युनिटी के लामा शादी कर सकते हैं।

बौद्ध धर्म की महायान और हीनयान ब्रांच जब तिब्बत आईं, तो चीनी बौद्ध धर्म और तंत्र के साथ मिल गईं और बहुयान बन गईं। मेरे जैसे अनजान यात्री के लिए उन्हें जज करना या एनालाइज़ करना मुश्किल है। इसलिए, मैं अपनी डायरी में वही लिख रहा हूँ जो मैं अपनी आँखों के सामने देखता या सुनता हूँ। मैंने रास्ते के दोनों ओर के सभी फूलों से अपना फूलदान भर लिया, और गुलदस्ता सजाने की ज़िम्मेदारी जानकारों पर छोड़ दी।

১৩

ल्हासा और मुख्य मंदिर जोखांग

हम तीन दिन ड्रेपुंग गुफा में रहे, ल्हासा सिर्फ़ चार मील दूर है। इतने पास आने के बाद मुझमें तीन दिन यहाँ इंतज़ार करने का सब्र नहीं था, लेकिन मुझे यहाँ रुकना पड़ा। यहाँ से दलाई लामा का महल, पोटाला, सपनों के महल जैसा खूबसूरत दिखता है। यह दुनिया का एक अजूबा है। मैं इसे तीन दिन से देख रहा हूँ। ऐसा लगता है कि अगर मैं इसे हमेशा देखता रहूँ, तो भी यह बोरिंग नहीं होगा। यह एडवांस्ड आर्किटेक्चरल स्मारकों का सबूत है। ऐसा नहीं लगता कि यह बड़ी इमारत इंसान ने बनाई है। महल एक छोटी पहाड़ी पर बना है और उसके पीछे दूर-दूर तक पहाड़ हैं, जो बादलों में मिल रहे हैं। पोटाला पैलेस के ठीक नीचे ल्हासा तिब्बत की राजधानी है। पोटाला पैलेस तिब्बत की शान है।

ड्रेपुंग गुफा में हमारे तीन दिनों के दौरान, हमारे सभी डॉक्यूमेंट्स फिर से चेक किए गए। ड्रेपुंग में पढ़ने वाले सभी नेपाली बौद्ध स्टूडेंट पच्चीस से पैंतीस साल के बीच के हैं। वे नेपाल के तीन बड़े मंदिरों और मठों से आए हैं, उनके नाम क्रमशः स्वयंभू, महाबोधि और नंबुद्ध हैं। गुरुजी के जवाब के बावजूद, वे यह जानने के लिए बेचैन थे कि मैं किस मठ से जुड़ा था। उस लिहाज़ से, मैं अब आज़ाद हूँ और कोई रुकावट नहीं है। ड्रेपुंग में मिले सभी लोगों को अलविदा कहने के बाद, हम चौथे दिन सुबह राजधानी के लिए निकल पड़े। की-चू नदी पूरे रास्ते हमारे साथ थी।

सड़क पर घोड़े और घोड़ागाड़ियाँ दिखने लगीं। दोनों तरफ़ अब घर भर गए थे। यातुंग और ग्यात्सो के बाद यह पहली बार था जब हमने पब्लिक लॉरी देखीं। सड़क पर बहुत से लोग चल रहे थे, और दुकानें, रेस्टोरेंट और गरीब खानाबदोशों के टेंट अक्सर दिख रहे थे। यह सड़क भी हाल ही में रिपेयर हुई लग रही थी। यह बड़े पत्थरों से बनी एक पक्की सड़क थी, और दूर-दूर तक शहर के घर दिख रहे थे। यह पहले जैसी सुनसान और पहाड़ी सड़क नहीं थी। इस सड़क पर ज़िंदगी थी। समाज और शहर की खुशबू हर जगह

थी। यह लोकल लोगों से भरी हुई थी। हम अब पोताला के बहुत करीब थे। तिब्बत का मेन सेंटर सिर्फ़ दो मील दूर था, और हम दोगुने जोश के साथ चलने लगे। अचानक, हमने झंडों की लाइनें और कुछ छोटे-बड़े पगोडा देखे। सड़क अब थोड़ी ऊँची हो गई थी।

১৭২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

जैसे ही हम थोड़ा और ऊपर चढ़े, हमें एक चैत्य-टॉप मिला, जो काठमांडू के स्वयंभूनाथ मंदिर जैसा था। जैसे ही हम सड़क के सबसे ऊंचे पॉइंट पर चढ़े, हमने अपने सामने एक बहुत बड़ा चैत्य देखा। चैत्य अलग-अलग रंगों के प्रार्थना झंडों से ढका हुआ था। यहां से, हम परम पावन दलाई लामा के पवित्र महल, पोताला को और भी साफ देख सकते थे। एक छोटी पहाड़ी पर एक सुंदर लाल इमारत खड़ी है। एक चौदह मंज़िला इमारत अपनी हज़ार कुठियों के साथ खड़ी है। यह तिब्बत का एक अद्भुत आर्किटेक्चरल स्मारक है। ल्हासा का मुख्य शहर उस पहाड़ी के नीचे है। सूरज की रोशनी ने पोताला महल के चमकीले रंगों को और भी ज़्यादा चमका दिया था। हम हैरानी से उसे देखते रहे। हम कुछ देर और देखना चाहते थे, लेकिन अचानक कोई आया और हमें घेर लिया। गुरुजी ने उन्हें अनदेखा किया और कहा, "सामने जो विशाल चैत्य आप देख रहे हैं, उसे फार्गो-कलिंग कहते हैं।"

फार्गो-कलिंग, नदी तट पर यह विशाल शिवालय राहगीरों को दिखाई देगा। अब हम ल्हासा शहर में थे। हम अचानक चारों ओर से भिखारियों से एक बाधा की तरह घिर गए। कुछ ही समय में, वह बाधा चार गुना बढ़ गई, हम आगे नहीं बढ़ सकते थे, हम केवल तीस थे, हमारे आसपास कम से कम सौ भिखारियों ने हमारा रास्ता रोक दिया था, उस स्थिति से निकलना

मुश्किल था। ऐसा लग रहा था कि हम अचानक भिखारियों के राज्य में प्रवेश कर गए हैं जहाँ राजा और प्रजा सभी भिखारी हैं, इसलिए हम किससे शिकायत करें? भले ही हम सभी को एक पैसा दें, कम से कम सौ टका चाहिए। हमारे आसपास हर कोई चिल्ला रहा था - दे-दे, मुझे चाहिए-मुझे चाहिए, यह यहाँ का राष्ट्रीय मंत्र लगता है। एक बात मैंने देखी कि उन्होंने हमें घेर लिया था लेकिन किसी ने हमारे शरीर या सामान को नहीं छुआ। अंत में कोई रास्ता न देखकर, हम सड़क पर बैठ गए, भिखारियों ने दीवार की तरह घेर लिया।

गुरुजी ने हमें एक पैसा भी देने से मना किया, फिर उन्होंने उनसे मोल-भाव करना शुरू किया। उन्होंने उन्हें साफ-साफ समझाया कि हम तीर्थयात्री नहीं हैं, हम भी उनकी तरह ही भिखारी लामा हैं। इसलिए, अगर हमें हमेशा ऐसे ही घेर लिया जाए, तो भी कुछ नहीं होगा। पहले तो उन्हें हमारी बात पर यकीन नहीं हुआ, लेकिन बाद में उन्हें एक-एक करके रास्ता छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा। रिहा होने के बाद, हम फिर से चल पड़े। हमने फार्गो-कलिंग चैत्य के सात चक्कर लगाए और प्रार्थना की, और एक चाय की दुकान पर रुके। वहाँ हमने चाय और भारी ब्रेड खाकर खुद को तरोताजा किया। फार्गो-कलिंग उस जगह का नाम है और इसीलिए यहाँ के चैत्य को भी उसी नाम से पुकारा जाता है। वह जगह बिल्कुल भी साफ नहीं है। सड़क के दोनों तरफ भिखारी खानाबदोशों के टेंट और झोपड़ियाँ भरी हुई हैं। और उसके बगल में बहुत सारे पगोडा जैसे अमीर घर हैं। बाद में हमें पता चला कि,

199-200

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৭৩

ल्हासा के भिखारियों का अड्डा इसी फार्गो-कलिंग चैत्य के आसपास बना है। यह भिखारियों का अड्डा नया नहीं है, लेकिन गुरुजी के अनुसार, अब इनकी संख्या लगभग दस गुना बढ़ गई है।

बनारस, ऋषिकेश और कालीघाट की तरह यहां भी कई प्रोफेशनल भिखारी हैं। काम के बारे में पूछने पर वे सीधा जवाब देते हैं- काम करोगे तो कितने पैसे दोगे? भीख मांगने से तो बहुत अच्छा है। ल्हासा के लोग बहुत दयालु हैं, पैसा देने को तैयार रहते हैं और साथ ही हम आजाद हैं, किसी के नौकर नहीं हैं। उन्हें इस लॉजिक से बाहर लाना मुश्किल है। शहर फार्गो-कलिंग से शुरू होता है। यहीं मुझे आर्च मिला, ल्हासा सबका स्वागत करता है। ल्हासा को हला-सा कहते हैं, जिसका मतलब है ठाकुर का घर, कई लोग इसे तिब्बत का स्वर्ग कहते हैं। मंगोल लोग ल्हासा का मतलब अलग तरह से रखते हैं, वे इसे स्वर्ग की जगह कहते हैं। कई भारतीय संत मानते हैं कि कैलाश की इंद्रपुरी असल में इसी ल्हासा में है। हिमालय के सारे राज इसी ल्हासा में छिपे हैं। हमारा सपना अब तक सच हो चुका है। गंगटोक से निकलने के बत्तीस दिन बाद हमें ल्हासा मिल गया। हम ल्हासा के दक्षिण-पूर्व की तरफ से शहर में दाखिल हुए। रास्ते में हमने पहले शाक्य मुनि को, फिर महाकाली को, और आखिर में धर्मराज चेनरेज़िग (दलाई लामा) को प्रणाम किया। हमने एक साथ चिल्लाया:

शाक्य मुनि की जीत की जय हो!
महाकाली की जीत की जय हो!
राजाधिराज चेन-रे-जी की जीत की जय हो!
बुद्ध की जीत की जय हो, धर्म की जीत की जय हो, संघ की जीत की जय हो!

ओम मणि पद्मे हुम, ओम मणि पद्मे हुम, ओम मणि पद्मे हुम, स्रॉन्ग-सान-गम्पो की विजय, रानी की विजय, रानी की विजय.....

फिर, अलग-अलग देवी-देवताओं के नाम पच्चीस बार जपते हुए हम उठे। ल्हासा के लोग हमारे दोनों तरफ जमा हो गए थे। हम उनके बीच से होते हुए आगे बढ़े।

पोताला पैलेस हमारे बहुत पास है, बस आधे घंटे की ड्राइव पर। सड़क के दोनों तरफ अचानक जंगल जैसे लकड़ी के घर दिख गए। कई एक-मंज़िला और दो- मंज़िला सीमेंट के घर - और छतें सब पगोडा जैसी हैं, बिल्कुल काठमांडू जैसी। आस-पास कुछ तालाब दिखे, इस इलाके में पेड़ों की कोई कमी नहीं है। हमने कुछ पार्क भी देखे। पोताला को छोड़कर, सड़कों का पैटर्न देखकर ऐसा नहीं लगता कि हम किसी देश की राजधानी में आ गए हैं। दार्जिलिंग से कहीं ज़्यादा डेवलप्ड। मेन रोड धीरे-धीरे शहर के मेन सेंटर तक पहुँचती है और कई हिस्सों में बँट जाती है।

हम भिखारियों और आम लोगों की भीड़ से गुज़रते हुए शहर के मेन हिस्से में दाखिल हुए। हमें यहाँ अमीर लोगों के घरों की तारीफ़ करनी ही पड़ी। हर घर का रंग, लकड़ी का काम और बनावट अजीब तरह से खूबसूरत है।

ल्हासा की गलियां बिल्कुल बनारस जैसी हैं। हम कई गलियों से गुजरे।

১৭৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

□□□□□□□□, □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□

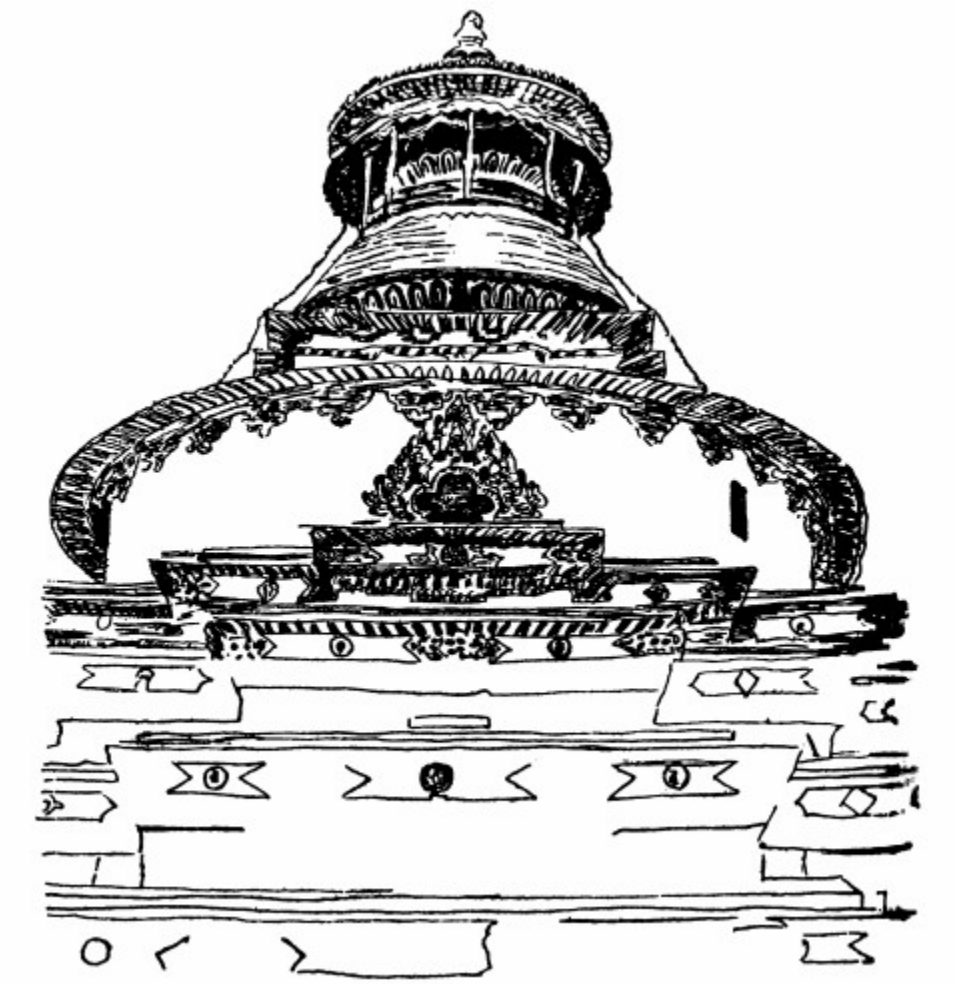

जोखांग मंदिर का शिखर

बनारस में बाबा विश्वनाथ मंदिर की हालत भी बिल्कुल ऐसी ही है। यह मंदिर बाहर से नहीं दिखता, यह ल्हासा और तिब्बत का मुख्य मंदिर है। जैसे ही हमें जोखांग मंदिर का आंगन मिला, हम उसकी तरफ दौड़े। हमने खुद को नीचे फेंक दिया जैसे विरोध कर रहे हों।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৭৫

मैंने इसे भगवान बुद्ध के चरणों में रख दिया है। सबके होठों पर एक ही बीज मंत्र है - ओम-मा-ने पा-दा-मे-हु-म! यहाँ हमें अपने सारे कर्म भगवान के चरणों में समर्पित कर देने चाहिए और उनका आशीर्वाद, मुक्ति और निर्वाण पाने का तरीका माँगना चाहिए।

लगभग आधे घंटे तक माथा टेकने के बाद, मंदिर की परिक्रमा शुरू हुई, जहाँ हमें मंदिर के सात चक्कर लगाने थे। फिर हमें अपने पिछले जन्मों के कर्मों को मिटाने के लिए प्रार्थना चक्र को सात बार और घुमाना था, और फिर मंदिर में एंट्री का जुलूस शुरू होता। इसका मतलब है कि हमारे पास मंदिर जाने के लिए अभी भी लगभग एक घंटा था। मैं एक लामाइस्ट हूँ, इसलिए मुझे उनके साथ सभी रस्में भी करनी थीं। अब मुझे

समझ आया कि ल्हासा में घुसने से पहले हमें आराम करने की ज़रूरत क्यों थी।

ल्हासा शहर को राजा श्रोंग-सान-गम्पो ने करीब 400 BC में बसाया था। उन्होंने पोताला हिल पर अपना किला बनवाया था। उस किले को अब पोताला पैलेस के नाम से जाना जाता है, हालांकि यह किला उससे पहले छोटे साइज़ में था। राजा की दो रानियां थीं। एक रानी नेपाल से थी, और दूसरी चीन से। ये दोनों रानियां अपनी शादी के दहेज के तौर पर तिब्बत में बौद्ध धर्म लाई थीं। नेपाल की राजकुमारी सोना, चांदी, बुद्ध की शिक्षाएं और बौद्ध विद्वान लाई थीं। और चीन की राजकुमारी शाक्य मुनि की एक सुंदर, अनमोल, बेमिसाल मूर्ति लाई थीं। चीन के तांग राजवंश की राजकुमारी बेन-चेंग जो शाक्य मुनि की मूर्ति लाई थीं, वही ल्हासा के मुख्य मंदिर, जोखांग में पूजी जाने वाली देवी हैं। मोक्ष का रास्ता खोजने के लिए रोज़ाना हज़ारों तीर्थयात्री और भक्त लामा यहां आते हैं।

बौद्ध-तांत्रिकों के अनुसार, यह मंदिर-देवता बहुत जागा हुआ है। मंदिर एक बड़े चौक को पार करके शुरू होता है। जोखांग मुख्य मंदिर है और इसके चारों ओर कई छोटे मंदिर हैं। मंदिर पर ध्यान बुद्ध, ध्यान बोधिसत्व और मानसी बुद्ध, अवलोकितेश्वर और कई अन्य की मूर्तियाँ बनी हुई हैं। मैं उन सभी को देखकर हैरान रह गया।

यह इतना बड़ा मंदिर है, जिसका नाम और शोहरत बेमिसाल है, फिर भी यहाँ एक भी पंडा नहीं है। बोधगया, पुरी, काशी और हरिद्वार में पंडों ने जो ज़ुल्म किए हैं, वे यहाँ नहीं दिखते। बस लामा और भिखारी, या भिखारी- लामा दिखते हैं। मैं कई तीर्थ स्थलों पर गया हूँ, लेकिन मैंने इतने सारे भिखारियों को एक साथ कभी नहीं देखा। मैंने भिखारियों में एक और बात देखी, कि वे आलस्य नहीं कर रहे थे। इन गरीब, बेसहारा लोगों में

भी थोड़ा बड़प्पन है। वे किसी तीर्थयात्री को परेशान नहीं करते, न ही एक-दूसरे के पीछे भागते हैं। तिब्बत में घुसने के बाद, सिर्फ़ फ़ार्गो-कलिंग के भिखारियों ने हमें घेर लिया। यह उनकी गलती नहीं है, आजकल बाहर से तीर्थयात्री यहाँ आना नहीं चाहते, इसीलिए भिखारियों की कमाई भी कम हो गई है। इस बुरी हालत में, वे अचानक हम जैसे बत्तीस विदेशी तीर्थयात्रियों को पाकर बहुत खुश हो गए।

১৭৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

राजा स्रॉन्ग-सान-गम्पो की नेपाली रानी ने ल्हासा में दूसरा बौद्ध मंदिर बनवाया, जिसे रामोस मंदिर कहा जाता है। और चीनी रानी तिब्बत के जागे हुए देवता शाक्य मुनि को लाईं। शाक्य मुनि की मूर्ति सारनाथ की दूसरी बौद्ध मूर्तियों जैसी ही है, लेकिन चेहरा पूरी तरह से चीनी स्टाइल का है। इससे भी ज़्यादा हैरानी की बात यह है कि बौद्ध पूजा के तरीके को मानने के बजाय, यहाँ पूजा का तरीका हिंदू धर्म जैसा ज़्यादा है। बेशक, बुद्ध खुद सिर्फ़ वेदों के सुधारक थे, वे वेदों के खिलाफ़ नहीं थे। उन्होंने सिर्फ़ उन सुधारों को सुधारा जो लोगों को अंदर से दूर ले जा रहे थे। जोखांग मंदिर में कोई भी परिक्रमा किए बिना अंदर नहीं जाता; हर तीर्थयात्री को दंडी काटनी पड़ती है। ठीक वैसे ही जैसे तारकेश्वर के मंदिर में दंडी काटी जाती है। यहीं से यह साबित होता है कि लोगों की अंदर की भक्ति का इज़हार हमेशा एक जैसा होता है। चाहे वह गंगासागर हो, गंगोत्री हो, सिंहल हो या ल्हासा, जब कोई इंसान अपना तन और मन पूरी तरह से भगवान को सौंप देता है, तो दंडी उसका रूप होता है। खड़े होकर, बैठकर और लेटकर हम मंदिर के चारों ओर घूमने लगे और प्रणाम करने लगे।

प्रार्थना के बाद प्रार्थना का दौर शुरू हुआ, जिसके बाद मंदिर के चारों ओर चक्कर लगाया गया। हमारे देश में सुबह व्रत और नहाने का नियम नहीं है, असल में, इस सर्दी में यहाँ नदी में नहाने का तो सवाल ही नहीं उठता। और अगर कोई सुबह पूरे जोश और हिम्मत के साथ नदी में डुबकी लगाने भी चला जाए, तो मैं पक्के तौर पर कह सकता हूँ कि वह डुबकी लगाने के बाद कभी नहीं उठेगा। ठंड में उसका शरीर सुन्न हो जाएगा। सर्दी की वजह से, तिब्बत के दूसरे मंदिरों की तरह जोखांग मंदिर में भी हर कोई जूते पहनकर ही जाता है।

सिर्फ़ लामा और भिखारी ही नहीं, बल्कि तिब्बत के अमीर परिवारों के लोग भी यहाँ परिक्रमा करते हैं और फिर मंदिर में जाते हैं। हालाँकि, आजकल ल्हासा के लोग बिना दहलीज़ पार किए सीधे मंदिर में जा रहे हैं, जिसके बारे में कई लोगों का मानना है कि यह चीनी असर की वजह से है।

हमें अपनी यात्रा पूरी करने में करीब दो घंटे लगे। मेरे साथ सभी लामा भक्त बहुत भावुक थे, इतनी मेहनत करने के बाद वे आखिरकार यहां पहुंच पाए, और इसीलिए उन्होंने अपना आखिरी लक्ष्य हासिल कर लिया है। उन सभी पापों और सुधारों के नतीजे में, उन्हें बार-बार इंसानी जन्म लेना पड़ता है, और यहीं पर इसका अंत होता है। इस उपलब्धि के नतीजे में, अब उनके लिए मुक्ति का दरवाज़ा खुल गया है। कई तीर्थयात्री करुण स्वर में अपनी प्रार्थना कर रहे हैं, और कई खुशी के आंसू बहा रहे हैं। कई जन्मों के अच्छे कर्मों और कोशिशों के नतीजे में, वे इस जीवन में ल्हासा पहुंचे हैं। यह लामाओं के जीवन का सबसे शुभ क्षण है। भगवान बुद्ध अपने शाश्वत प्रकाश और आनंद की लय के साथ अपना इंसानी जीवन खत्म करने के बाद यहीं रह रहे हैं। तिब्बत भगवान बुद्ध की प्यारी भूमि है। वे यहां के हर नागरिक के दिल में बसते हैं और जोखांग मंदिर उनकी इंद्रपुरी है।

मंदिर परिसर में असंख्य भक्तों की व्यथित प्रार्थनाएँ सुनाई देती हैं - 'पिता, मुझे बचाओ, धर्मराज, मेरे बेटे को बचाओ, धर्मराज, मेरे पति को ठीक कर दो, हे

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৭৭

हे भगवान, मेरी बेटी का विवाह अच्छा करो, हे देवी-देवताओं, हमें शांति दो, हमें पिछले जन्मों के पापों से मुक्त करो, आदि।

मंदिर का अगला हिस्सा एक बहुत बड़ी बिल्डिंग जैसा है। एक बार में पचास से साठ लोग बिना लाइन में लगे मंदिर में जा सकते हैं। मंदिर के मुख्य देवता शाक्य मुनि हैं, जिनके लिए भक्त तौलिए जैसी छोटी सफेद या पीली चादरें लाते हैं। कुछ लोग दीया जलाने के लिए मक्खन लाते हैं, और अमीर लोग चढ़ावे के तौर पर अलग-अलग चीज़ें और चावल लाते हैं। हम में से हर कोई शाक्य मुनि को चढ़ाने के लिए एक चादर ले गया। जोखांग मंदिर का दूसरा नाम सुक-ला-खांग है। इस बार हमने माथा टेका और मंदिर में घुस गए। मंदिर में घुसने से पहले परिक्रमा पूरी करने में हमें करीब दो घंटे लगे। बाहर से बिल्डिंग में घुसते ही अंधेरा हो गया था, थोड़ी देर बाद आँखों को उस अंधेरे की आदत हो गई, और फिर हमने दीवारों पर घी के दीयों की लाइनें देखीं। ये घी के दीये कभी नहीं बुझते। ये शाक्य मुनि की हमेशा रहने वाली रोशनी की निशानी हैं। आगे बढ़ने पर, वेदी के ठीक सामने, ग्रिल के दरवाज़े दोनों तरफ से मोड़ दिए गए हैं। भले ही यह लोहे का दरवाज़ा बंद है, लेकिन भक्तों को बुद्ध के दर्शन करने में कोई दिक्कत नहीं होती। मेरे ठीक सामने, मैंने भगवान की एक बहुत बड़ी मूर्ति देखी, जिसका चेहरा शांत सुनहरा और चमकीला था और सफेद पर नीली आँखें थीं। वह भक्तों और शरण लेने

इसकी तरफ कोई आकर्षण नहीं है। शाक्य मुनि की मूर्ति करीब डेढ़ आदमी ऊंची है और अपनी वेदी के साथ तेरह फीट से ज़्यादा ऊंची है। एक हाथ और अभय मुद्रा वाले चेहरे के अलावा, और कुछ भी हमारा ध्यान नहीं खींच पाया। सब कुछ गहनों और चादरों से ढका हुआ है। भक्तों की नज़रें इन चीज़ों को नहीं ढूंढतीं, उनका दिल उत्साह से भरा होता है। मैंने केदारनाथ और काशी विश्वनाथ मंदिरों में भी यही हाल देखा है, असली भगवान फूलों, पान और चंदन के ढेर में दबे हुए हैं। असली मूर्ति देखने के लिए, आपको मंदिर के बाहर आना होगा और उसका असली रूप देखने के लिए एक तस्वीर खरीदनी होगी।

ल्हासा के ये शाक्य मुनि सिर्फ़ एक जागे हुए देवता ही नहीं हैं, बल्कि इस मंदिर और मूर्ति में ल्हासा का खजाना छिपा है। यह मूर्ति दुनिया के सबसे कीमती पत्थरों में से एक से बनी है, और इस पर सोने की परत चढ़ी है। शाक्य मुनि के सिर पर सैकड़ों रत्न और मोती चमक रहे हैं। और उनकी वेदी पूरी तरह से सोने की बनी है। आध्यात्मिक महत्व के अलावा, शाक्य मुनि की आर्थिक कीमत को भी नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता, वे ल्हासा और पूरे तिब्बत की दौलत हैं। लोग कहते हैं कि अगर वे इस जोखांग मंदिर का सोना एक साथ रख दें, तो वे दुनिया खरीद सकते हैं। हालांकि यह एक कहावत है, लेकिन इस कहावत को पूरी तरह से खारिज नहीं किया जा सकता। मुख्य वेदी की पूजा की सभी चीज़ें सोने की हैं। पूजा करने वाले के अलावा किसी और के लिए वेदी के सामने बैठने का कोई रास्ता नहीं है। सुबह से रात तक भक्तों की लगातार भीड़ लगी रहती है। इसलिए ध्यान के लिए मंडप में जाना पड़ता है, जहाँ बैठने के लिए गद्दे हैं। गद्दा एक चटाई होती है, और एक समय में इसमें नारियल के छिलके होते थे, लेकिन अब इसका कोई निशान नहीं है। इसलिए, भक्त ध्यान के लिए कंबल या सीटें लाते हैं।

जोखांग मंदिर में घुसने के बाद, आपको नीचे मेन वेदी तक जाना होगा। सड़क से आप मंदिर के आंगन या आंगन में जाते हैं, फिर मंदिर के अंदर, आप सबसे पहले मंडप में आते हैं। वहां ध्यान, जप, प्रार्थना, भजन और पूजा पाठ किया जाता है। मंडप के दूसरी तरफ, हज़ार बुद्ध मंदिर है। हम इस बार वहां घुसे। यानी मंदिर के अंदर एक और मंदिर है। मैं इस छोटे से मंदिर को म्यूज़ियम कहूंगा। यह मंदिर कई तरह की छोटी-बड़ी मूर्तियों से भरा है। भगवान बुद्ध की जितनी भी मूर्तियों की कल्पना की जा सकती है, उनके सैंपल यहां मिल जाएंगे। अगर आप उन्हें ध्यान से देखेंगे, तो आपको इन मूर्तियों के बीच कई भारतीय देवी-देवताओं की मूर्तियां मिलेंगी। ब्रह्मा-विष्णु-शिव, हर-गौरी, सरस्वती, यमराज, राम, हनुमान, युधिष्ठिर, कृष्ण, काली, चामुंडा, वगैरह। यहां, मैंने चीन और भारत के बीच एक मिलन बिंदु देखा। शिव के सांप और दुर्गा के शेर ने यहां ड्रैगन का रूप ले लिया है। वहाँ हमने घूमकर सब कुछ देखा, इस बार हम मंदिर के दूसरे लेवल पर गए, यानी मंदिर के ऊपरी फ्लोर पर। मंदिर के निचले फ्लोर पर, जहाँ मेन वेदी है, वहाँ शाक्य मुनि की एक बहुत बड़ी मूर्ति है, और उसके बगल में, दूसरे मंदिर में, एक हज़ार बुद्ध की मूर्ति है। और इस बार हम मंदिर के ऊपरी हिस्से में गए। इस मंदिर में घुसते ही, मैं हैरान रह गया कि इस बुद्ध के मेन मंदिर में ऐसा क्या था जिसके बारे में मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। ठीक मेरे सामने, मैंने एक भयानक कालीमूती, कालीमूर्ति, यानी माँ काली ल्हासा की रक्षक को देखा।

205

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৭৯

तिब्बत के सामने, दुनिया की इस पवित्र ज़मीन की रक्षा करने वाले, डरावनी करालिम छवि पहने हुए, यह छवि देखकर मेरे सारे रोंगटे खड़े हो गए। ऐसा लगा जैसे मुझे बहुत समय बाद अपनी माँ मिल गई हो, जिनसे मेरा आध्यात्मिक जुड़ाव है।

जोखांग मंदिर सच में रहस्यमयी है। इस मंदिर में मैंने इंसान और प्रकृति के दो रूप देखे। बुद्ध का शांत शिव रूप, और हमेशा बदलती रहने वाली काली का विनाशकारी रूप। यह दुनिया चेतन और अचेतन के तालमेल का सबसे अच्छा प्रतीक है। यह महाकाली छिन्नमस्ता, तिब्बती धर्म के राजा दलाई लामा की देवी हैं।

दलाई लामा खुद बौद्ध हैं, लेकिन उनकी देवी महाकाली हैं। सुनने में यह अजीब लगता है और अपनी आँखों से देखना और भी ज़्यादा हैरान करने वाला है। महाकाली की यह मूर्ति भी बहुत जागी हुई है। हर दिन दो बार उनकी पूजा होती है। महाकाली की पूजा तांत्रिक बौद्ध धर्म के अनुसार की जाती है। तीर्थयात्री या भक्त पहले शाक्य मुनि के दर्शन करते हैं और फिर महामाया के दर्शन को आते हैं। आम लोगों के लिए, महामाया महाकाली ही सृष्टि की जड़ हैं। वे बनी हुई दुनिया की रक्षक हैं। वे सभी पापों का नाश करने वाली और वरदान देने वाली हैं।

यहां की मुख्य मूर्ति दक्षिणेश्वर, कालीघाट और तारापीठ जैसी नहीं है। यह मूर्ति ज़्यादा डरावनी है। दैत्यदलानी, महाकाल के विनाश और तबाही की इमेज के साथ, वह चमड़े का कपड़ा पहने हुए हैं और एक इंसान की खोपड़ी से दिमाग खा रही हैं। इस मंदिर में मां की और भी पूजी जाने वाली मूर्तियां हैं। मुझे नहीं पता कि तिब्बती पौराणिक कथाओं में मां के रूप के बारे में क्या बताया गया है। दीवारें मां के इन दस अवतारों की अलग-अलग इमेज और मूर्तियों से भरी हैं: काली, तारा,

षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातंगी और कमला।

बौद्ध-तांत्रिक कहते हैं कि महाकाली महामाया के ये रूप तांत्रिक साधना के ज़रिए तिब्बत से भारत में फैले हैं। तिब्बत के ध्यान बुद्ध सत्यम शिवम सुंदरम के प्रतीक हैं। उस ध्यान बुद्धत्व को पाने के लिए ध्यान बुद्ध की शक्ति की साधना करना ज़रूरी है। लोचना, यमकी, पंडारस, आर्यतारा और वज्रधात्रिश्वरी, बानीपानी, वज्रपाणि असल में तिब्बत की मूल शक्तियां हैं।

मैं ज़्यादा देर तक महामाया महाकाली के डरावने रूप को घूरता नहीं रह सका। अचानक मेरे पैर सुन्न हो गए, भक्ति से मेरे रोम-रोम खड़े हो गए, ऐसा लगा जैसे माँ मुझे बुला रही हों। वह मेरे मन और शरीर की थकान दूर करने के लिए वहाँ खड़ी थीं। मेरा झूठा रूप अचानक लामा के चोगे के अंदर से गायब हो गया। मेरा शरीर मंदिर के दरवाज़े पर गिर गया। उस पल, मुझे लगा जैसे मुझे सब कुछ मिल गया हो, मैं धन्य हो गया हूँ। मेरे शरीर का हर कण खुशी के एक अद्भुत रोमांच से भर गया, मैंने खुद को उस महान आनंद के सागर में समर्पित कर दिया।

मैं कुछ देर तक खुशी की उस लहर में डूबा रहा। फिर अचानक मुझे खुद का पता चला। मैं दूसरे लामाओं से घिरे हुए पवेलियन में बैठा था।

১৮০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

यह देखकर मैंने खुद को रोका। मेरे मन में कई सवाल थे जैसे मैं मंदिर से यहाँ कैसे आया, मुझे कौन लाया, वगैरह। एक पूजा करने वाले लामा

मेरे लिए गरम चाय का कटोरा लाए, मैंने उसका एक घूंट लिया और अपने शरीर और मन को नॉर्मल किया। साधु बाबा मेरे बगल में थे। उन्होंने बहुत प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा, "यह कुछ नहीं है, बहुत से लोग भावनाओं के साथ ऐसा अनुभव करते हैं।" मन की तेज़ी और भावनाओं के न दिखने का कारण मेरा चुप रहना था।

जो भी इमोशन या एक्साइटमेंट हो, उसका लॉजिक से कोई बना-बनाया जवाब मिल सकता है, लेकिन मेरे मन में जो बहुत खुशी उठी है, उसे समझाना किसी भी भाषा के दायरे से बाहर लगता है। कई बार, जब मैंने पहाड़ों की खूबसूरती बताने की कोशिश की, तो मैंने सिर्फ़ उनके फिजिकल रूप के बारे में बताया। जो सबकी आँखों के सामने है, उसे मैं बता नहीं सकता, और जो बताया नहीं जा सकता, उसे कैसे बताऊँ?

शब्दों में कहूँ तो, मेरी मौसी मेरी माँ से ज़्यादा दयालु हैं, लामा मुझसे ज़्यादा मेरी चिंता करते हैं। कुछ कहते हैं कि मैंने ठीक से खाना नहीं खाया या आराम नहीं किया, कुछ कहते हैं कि मुझे सर्दी लग गई। कुछ कहते हैं कि मुझे लगा जैसे मेरा दिमाग खराब हो रहा है, और कुछ कहते हैं कि मुझे कुछ एहसास हुआ, लेकिन किसी वजह से, मैं लगभग एक घंटे तक मंदिर के दरवाज़े पर बेहोश पड़ा रहा। कहने की ज़रूरत नहीं है, सुबह से हमारे साथ कुछ खास नहीं हुआ था। दिन पलक झपकते ही बीत गया। शाम होते-होते, मुझे मंदिर का बाकी हिस्सा फिर से दिखने लगा।

हम ग्राउंड फ़्लोर पर एक कमरे में बैठे थे। पूरा मंदिर लगभग अंधेरे में डूबा हुआ था, और ग्राउंड फ़्लोर पर तो और भी ज़्यादा अंधेरा था। यहाँ दिन की रोशनी कभी नहीं आती थी। यह पातालपुरी की किसी और कहानी जैसा था। यानी, अब हम ज़मीन के नीचे बने एक कमरे के पास खड़े थे। यह कमरा बिल्कुल गुवाहाटी के पास बने असली कामाख्या मंदिर जैसा था। दीये की धीमी रोशनी में, पत्थर की नींव के अंदर एक कमरा था, कमरे का

दरवाज़ा भी एक बहुत बड़े पत्थर का बना था, और दरवाज़ा बंद रहता था। इस कमरे के बारे में एक अद्भुत कहानी है। वही मैं लिख रहा हूँ:

जोखांग मंदिर बनने के बाद, तीन कमरे तीनों देवताओं को समर्पित किए गए। पहला कमरा शाक्य मुनि के लिए था, दूसरा कमरा बुद्ध के दूसरे अवतारों के लिए था, और ऊपर वाला कमरा रक्षाकली के लिए था। दूसरे मंदिरों की तरह, इसमें भी मज़बूत पत्थर की दीवारें हैं और अंदर लकड़ी का बढ़िया काम है। यह अपने समय का एक अद्भुत आर्किटेक्चरल मास्टरपीस था।

मंदिर की नींव मातृ-मंडल पर रखी गई, जो उस समय तंत्र साधकों का पसंदीदा और शक्तिशाली स्थान था। फिर, समय के साथ, मंदिर के देवताओं को सही पूजा और त्योहारों के साथ स्थापित किया गया। कई दिनों के बाद, पुजारियों और लामाओं को अचानक मंदिर के अंदर एक अजीब तरह की बेजान सी महसूस हुई।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৮১

आप महसूस करते हैं। घी के दीये बुझ जाते हैं, मंदिर की घंटियाँ ऐसे बजती हैं जैसे खामोश हों, भक्तों की प्रार्थनाएँ भगवान के कानों तक नहीं पहुँचतीं। भक्त पूजा करते समय मंत्र भूल जाते हैं। ऐसा लगता है जैसे मंदिर के अंदर किसी ठंडे राक्षस का अड्डा बना दिया गया हो। इतने खर्च और इतनी मेहनत से मंदिर बनाया गया था, और उसका यह नतीजा है! हज़ारों लोगों की मेहनत और सपनों को बेकार होते देख, राजा की आँखों में भी नींद नहीं है। राज्य के पंडितों, पुजारियों और तांत्रिकों को बुलाया गया। उन्होंने मंदिर की अलग-अलग तरह से जाँच

देखा, इस अंधेरे कमरे में रहने से बड़ा धरती पर कोई दुख नहीं है। कृपया हमें थोड़ी देर के लिए बाहर जाने की अनुमति दें, हम वादा करते हैं कि जब हम बाहर का उजाला देखेंगे तो खुश होंगे और फिर आप हमें फिर से यहीं कैद कर लेंगे। हम आपके चरणों में गिरते हैं और हम पर दया करें। राक्षसों की चीख-पुकार सुनकर पुजारी का दिल द्रवित हो गया। उन्होंने उन्हें थोड़ी देर के लिए आजाद करने के इरादे से दरवाजा खोल दिया। पांचों राक्षस कमरे से बाहर आते ही जोर से हंस पड़े। उन्होंने जोर-जोर से हंसते हुए कहा- मूर्ख पुजारी, हमने तुम्हारे जैसा मूर्ख कभी नहीं देखा- यह मंदिर हमारा है, यह हमारा राज्य है। यह कहकर वे पहले की तरह धरती पर लौट गए।

১৮২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उन्होंने हंगामा शुरू कर दिया। उन्हें कौन रोक सकता था? बेचारे भक्त को अपनी बेवकूफी का एहसास हुआ और उसे पछतावा होने लगा।

कुछ ही दिनों में यह खबर ल्हासा के बाहर पद्मसंभव तक पहुंच गई। पद्मसंभवजी उस समय तांत्रिकों के साथ खास ध्यान में बिज़ी थे। राक्षसों की आज़ादी की खबर मिलते ही वे ल्हासा लौट आए। पद्मसंभवजी बहुत विनम्र थे, लेकिन ज़रूरत पड़ने पर वे असुर का रूप लेने से भी नहीं हिचकिचाते थे। जोखांग मंदिर में घुसते ही उन्होंने दहाड़ लगाई। राक्षस उनके सामने डर गए। राक्षसों को देखते ही पद्मसंभवजी ने एक बड़ा पत्थर उठाया और उन पर फेंक दिया। उस पत्थर को हटाने में आम तौर पर पचास लोग लगते हैं। यह देखकर दो राक्षस डर के मारे मंदिर से भाग गए, जबकि तीन को पद्मसंभव ने फिर से पकड़ लिया। पद्मसंभव ने उन्हें पांचों तरफ से बांध दिया। जब तक इस मंदिर के देवता जागते

रहेंगे, वे यहीं कैद रहेंगे। अगर कोई बाहरी दुश्मन इसे खत्म कर दे, तभी उन्हें छोड़ा जाएगा। हम जहां खड़े हैं, ठीक उसके सामने वह बड़ा पत्थर एक खंभे के नीचे पड़ा है। इस पत्थर को देखना और छूना एक पुण्य का काम है।

मंदिर की घंटियाँ, टंका और बड़े-बड़े उत्सव के बर्तन देखने के बाद हम फिर बाहर आ गए। शाम होने वाली थी। हम मणि मंत्र का जाप करते हुए मंदिर के तीन और चक्कर लगा रहे थे, तभी मंदिर की तुरही बज उठी, साथ में ढोल भी। वह आवाज़ अचानक मंत्र की तरह काम करने लगी। शाम की प्रार्थना के लिए लोग हर जगह से झुंड में आने लगे। हम मंदिर का आखिरी चक्कर लगा रहे थे, इसलिए जब तक यह पूरा न हो जाए, हम नहीं जा सकते थे। खैर, जब हमने आखिरकार मंदिर का चक्कर लगाया और ठाकुर मंडप में पहुँचे, तो मंडप में इतनी भीड़ थी कि एक चूहा भी अंदर नहीं जा सकता था। जोखांग मंदिर की पहली शाम की प्रार्थना का अनुभव करने के लिए हमें बाहर खड़ा होना पड़ा। लामाओं और भक्तों की मिली-जुली प्रार्थनाओं के साथ-साथ पुजारियों की मुद्राओं और शंख जैसी तुरहियों ने हमें उस दिन स्वर्ग जैसा आनंद दिया, और मैं इसे ज़िंदगी भर नहीं भूलूंगा। शाम की प्रार्थना के तुरंत बाद मुख्य मंदिर (ग्रिल) के दरवाज़े बंद कर दिए गए। हम उस दिन की तरह ही पैरों के रस से संतुष्ट थे और अपनी थकान दूर कर पाए।

ल्हासा

जोखांग मंदिर में बाहरी लोगों को रुकने की इजाज़त नहीं है। मंदिर के बगल में पुजारी का घर है, जहाँ मंदिर की पूजा करने और देखभाल करने वाले लोग रहते हैं। बाहर से आने वाले लामाओं के रहने की कोई सुविधा

नहीं है। वहाँ करीब सौ लामा रहते हैं, वे सभी सैलरी वाले हैं। इसलिए हमारे वहाँ रुकने की कोई गुंजाइश नहीं है। हमने उस रात रुकने का इंतज़ाम दूसरे घर में किया है, इसे पुराना मठ कहना गलत नहीं होगा। हम शहर के उसी हिस्से में वापस आ गए जहाँ से हम सुबह अंदर आए थे, यानी फार्गो-कलिंग की तरफ। घर पुराना है लेकिन अंदर का इंतज़ाम बहुत अच्छा है, यानी तीर्थयात्रियों की ज़रूरत की हर चीज़ यहाँ है। किचन और आग जलाने के लिए लकड़ी है। टॉयलेट नहीं है, इसलिए हमें नदी तक थोड़ा पैदल जाना पड़ता है। हम बहुत पैदल चल चुके हैं, इसलिए हमें पैदल चलने में कोई दिक्कत नहीं हुई।

हमारा मठ फार्गो-कलिंग के पास है। हमारे मठ से ज़्यादा दूर नहीं यहाँ कशक ऑफिस है। कशक ऑफिस हमारे राइटर्स बिल्डिंग जैसा है। ल्हासा और पूरे तिब्बत पर यहीं से राज चलता है। मुख्य पुजारी और मंत्री अपने रोज़ के हिसाब-किताब निपटाने के लिए यहीं आते हैं। सुबह से अब तक, खुशी और उत्साह के कारण, मैंने एक चीज़ पर ध्यान नहीं दिया था। शाम को ही लामाओं ने इस पर ध्यान दिया। वह है रोशनी। हाँ, हम हैरान थे कि ल्हासा में बिजली है। यहाँ सिर्फ़ सड़कों पर ही नहीं, बल्कि घरों में भी बिजली की लाइटें हैं। हालाँकि, सभी घरों में नहीं, सिर्फ़ बड़े लोगों को ही बिजली मिल पाती है। मठ की खिड़की से, पोताला पैलेस एक सपनों के शहर जैसा दिखता है। पोताला की लाइटें और आसमान के तारे एक खूबसूरत मेल हैं। ऐसा लगता है कि आसमान के तारे धरती पर आकर शांत हो गए हैं।

हालांकि स्रॉन्ग-सान-गाम्पो ने ल्हासा और पोटाला के विकास को बढ़ावा दिया, लेकिन असल में ल्हासा बहुत पहले ही फलने-फूलने लगा था। ल्हासा शहर की स्थापना लगभग 400 AD में व्यापार और यात्रा के एक बड़े केंद्र के तौर पर हुई थी। सबसे पहले पास की पोटाला पहाड़ी पर एक छोटा किला बनाया गया था। उस किले को बाद में

১৮৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उन्होंने स्रॉन्ग-सान-गाम्पो को अपना महल बना लिया। ल्हासा पर राज करने के लिए आस-पास के मठों से लामाओं को अपॉइंट किया गया। ड्रेपुंग, सेरा और गंडेन, ये तीन मठ, ल्हासा के मालिक हैं। पिछले लामा-चीफ, यानी दलाई लामा, भी इन्हीं मठों से चुने गए थे।

ल्हासा एक अजीब शहर है। सुबह धर्मशाला की खिड़की से ल्हासा को देखकर मैं हैरान रह गया। मुझे लगा जैसे मैं किसी अजीब शहर में आ गया हूँ। यहाँ ज़्यादातर घर पगोडा जैसे हैं। मैंने उन्हें चीनी या जापानी तस्वीरों में देखा है। और उन घरों के बीच में कुछ सादे मॉडर्न घर हैं। शहर का मेन अट्रैक्शन बाज़ार है। यहीं शहर की आत्मा छिपी है। यहाँ, सभी तीर्थयात्री आज़ाद हैं, वे जहाँ चाहें जा सकते हैं, जो चाहें कर सकते हैं, हर कोई आज़ाद है।

सुबह हमारे साथी लामा एक-एक करके उठे और मंदिर की तरफ चल दिए, मैं गुरुजी के पास ही रहा। वैसे तो मैं तीर्थयात्रा के लिए आया था, लेकिन मेरा मकसद शहर को जितना हो सके अच्छे से देखना था। पोताला पैलेस को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। आप शहर में कहीं भी जाएं, यह आपको दिखेगा। जोखांग मंदिर की छतें शहर के बाहर से तो बहुत साफ़ दिखती हैं, लेकिन शहर के अंदर से इसका कुछ भी नहीं दिखता। और अगर आपको रास्ता नहीं पता, तो वहां पहुंचना मुश्किल है। यह कलिम्पोंग मार्केट से लगभग चार गुना बड़ा है, लेकिन मार्केट की गलियां बहुत गंदी हैं। कॉटन और ऊन का मार्केट बहुत दिलचस्प है। भेड़ के बाल कॉटन की तरह ही सड़क के किनारे बड़ी-बड़ी बोरियों में रखे होते हैं। अलग-

अलग तरह के ऊनी कपड़ों की दुकानों में लोगों की भीड़ लगी रहती है। ऊनी मोज़े, स्वेटर और टोपियां यहां बहुत सस्ते में बिकती हैं। मार्केट का एक हिस्सा होलसेल है और दूसरा हिस्सा रिटेल। रिटेल मार्केट में दुकानदार ज़्यादातर औरतें होती हैं, वे बहुत साफ़- सुथरी होती हैं, उनके बाल करीने से बंधे होते हैं, और उनके कपड़े साफ़ होते हैं। जैसे ही आप सड़क पर चलते हैं, आपको लड़कियों की ज़ोरदार हँसी सुनाई देती है। सब्ज़ी मंडी बहुत सूखी है। सब्ज़ियाँ अभी उगनी शुरू हुई हैं। बर्फ़बारी के बाद ज़मीन की अभी जुताई हुई है, और फ़सल उगने में एक महीना और लगेगा। कुछ पहाड़ी सब्ज़ियाँ, आलू, टमाटर-कुम्हड़ा, और पाम ऑयल जैसी छोटी सब्ज़ियाँ दिखीं। कुछ सब्ज़ियाँ पहले सिक्किम या कलिम्पोंग से आती थीं, लेकिन अब वे बंद हो गई हैं। इन दिनों, बाज़ार के हालात बिल्कुल भी ठीक नहीं हैं। बॉर्डर पर पाबंदियाँ दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही हैं। उनका मुख्य बिज़नेस भारत के साथ था, लेकिन अब वह बंद हो गया है। ज़्यादातर ऊन कोलकाता के व्यापारियों को बेचा जाता था, लेकिन वह भी इन दिनों बंद हो गया है। हाल ही में, पेकिंग के व्यापारी यहाँ आने लगे हैं, और ऐसा लगता है कि वे जल्द ही इस बाज़ार के मालिक बन जाएँगे।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৮৫

तिब्बती लामा जानवरों को नहीं मारते, लेकिन उन्हें मांस खाने में कोई दिक्कत नहीं है, इसलिए सूखे मांस और मछली का बाज़ार भी काफी बड़ा है। आम तौर पर, गांव वाले सूखी मछलियों के थैले लेकर बैठते हैं। स्थानीय लोग की-चू नदी से ताज़ी मछलियाँ भी यहाँ बेचने के लिए लाते हैं। मछली और मांस आम तिब्बतियों का मुख्य खाना लगता है।

जामद्रोक झील और त्सांगपो नदी से भी बड़ी मात्रा में (सूखी) मछलियाँ आती हैं। ट्रांसपोर्ट की दिक्कतों की वजह से तिब्बत में ताज़ी चीज़ों की कमी है। स्थानीय फसलों पर निर्भर रहना पड़ता है। कहने की ज़रूरत नहीं कि तिब्बत का सिर्फ़ यही दक्षिण-पूर्वी इलाका अच्छी फसलें पैदा करता है। यह इलाका तुलनात्मक रूप से कम ऊँचाई वाला है और घाटी में काफ़ी समतल ज़मीन है। यहाँ सर्दी का मौसम भी तुलनात्मक रूप से कम होता है। खेती के लिए सही मौसम होने की वजह से इस इलाके में आबादी ज़्यादा है। तिब्बत के लगभग सत्तर प्रतिशत लोग की-चू नदी के दोनों किनारों पर रहते हैं।

हम किराने वाली गली में आए। यहाँ चावल, दालें, जौ, गेहूँ और जौ की बहुत सारी वैरायटी है। दालों में मूंग दाल सबसे खास है। छट्टू और अलग-अलग तरह की जौ देखकर मैं हैरान रह गया। हमने दो टका में चावल की पाँच बोरियाँ खरीदीं। उन्होंने चावल नापकर हमारी चादर में डाल दिया, और तीर्थयात्री होने के नाते, हमें तोहफ़े में लगभग एक बोरी ज़्यादा चावल मिला। फिर हमने दस आने में ढाई बोरियाँ मूंग दाल खरीदीं। यह कोलकाता से सस्ता है, बाज़ार में बहुत सारी दुकानें हैं, लेकिन खुले बाज़ार में बहुत सारे फेरीवाले भी हैं। चमारी गायों का सूखा दूध यहाँ का एक और खास बिज़नेस है। उन्हें चॉकलेट की तरह छोटे- छोटे टुकड़ों में काटकर बोरी या दर्जन के हिसाब से बेचा जाता है। बाज़ार के आखिर में, ल्हासा गेट के पास, मैंने एक और चीज़ देखी। भिखारी पैसे को टुकड़ों में बेच रहे हैं, आप भारतीय पैसे से तिब्बती पैसे बहुत सस्ते में खरीद सकते हैं। तीर्थयात्री ये सारे छोटे सिक्के भिखारियों को देने के लिए खरीदते हैं। बिल्कुल वैसा ही जैसा मैंने रामेश्वरम के घाट पर देखा था। पहली बार मैंने बाज़ार की दुकानों में तेल में तली हुई, प्याज़-सिंगारा जैसी चाय देखी। सड़क किनारे ब्रेड, बिस्किट, करी, दालें बिकती हैं, और अगर आपको भाषा नहीं भी आती, तो भी इन्हें खरीदने में कोई दिक्कत नहीं होती। तिब्बती

चाय, और शराब की दुकानें हर जगह हैं। ल्हासा के आस-पास संतरे, नाशपाती और सेब बहुत ज़्यादा उगते हैं, इसलिए ये फल बाहर से नहीं लाने पड़ते। मंदिर के लिए छोटे टांके, तौलिए, छोटी चादरें और प्रार्थना के झंडे बेचने वाली रंग-बिरंगी दुकानों की लाइनें हैं। इसके अलावा, पूजा का सामान बेचने वाली दुकानें भी हैं, जहाँ घंटियाँ, डफ, तुरहियाँ और कई तरह के लामा और पुजारियों के कपड़े मिलते हैं। मंदिरों में फूल आम नहीं हैं।

मार्केट के बगल में परेड ग्राउंड है। यहीं पर ल्हासा पुलिस फोर्स इकट्ठा होती है, और यहीं पर बड़े इवेंट्स होते हैं।

ज़्यादातर घर खूबसूरती से रंगे हुए हैं।

১৮৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

छतें पगोडा जैसी हैं और लहरदार छतों के आखिर में चमकीले ड्रैगन की मूर्तियाँ ल्हासा शहर के चौकन्ने पहरेदार लगती हैं। ल्हासा में चीन के असर को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता, बड़े रेस्टोरेंट चीनी मेन्यू से भरे पड़े हैं, और खाने का स्टाइल भी चीनी है। वहाँ के लोग चम्मच के बजाय चॉपस्टिक से खाने के आदी हैं। जैसे कोलकाता के किसी फैंसी रेस्टोरेंट में खाना ऊँचे खानदान की निशानी है, वैसे ही तिब्बतियों का चीनी खाना खाना भी काफी मिलता-जुलता है। चीनी खाना, बर्तन और घर की सजावट के लिए चीनी सजावट का सामान ऊँचे टेस्ट की निशानी है। मार्केट की कई बड़ी दुकानें चीनी सामान से भरी पड़ी हैं, बिल्कुल कोलकाता के न्यू मार्केट की तरह। वहाँ एक छोटा सा चीनी मार्केट भी है। ल्हासा की सुंदरियाँ अपने नौकरों को वहाँ

मार्केटिंग करने के लिए लाती हैं। वह मार्केट चीनी सामान से भरा पड़ा है।

ल्हासा शहर बहुत बड़ा नहीं है। यह दो मील से ज़्यादा लंबा या चौड़ा नहीं है। शहर के उत्तर में पोटाला पैलेस है, दक्षिण में नदी है, पश्चिम में ड्रेपुंग गुफा है, और पूर्व में नोरबुलिंगका है, जो चेनरेज़िग का गर्मियों का घर था। दूसरे दिन, हम सब शाम की प्रार्थना और सामूहिक प्रार्थना के लिए मुख्य मंदिर में एक साथ गए। जोखांग की सामूहिक प्रार्थना की धुन हमारे लिए नई है, और अगर हम पूरी रात भी उस प्रार्थना को सुनें, तो भी हम थकेंगे नहीं। यह दुनिया के इस पहाड़ की चोटी पर सभी इंसानों की सबसे अच्छी प्रार्थना लगती है।

213

पोताला पैलेस

১৮৮

जब तक हम ल्हासा नहीं पहुँचते, मुझे यह महल सपनों की दुनिया जैसा लगता है, और मैं इसके अंदर का हिस्सा देखने के लिए बेताब हूँ। तीर्थयात्रियों का मन जोखांग मंदिर की तरफ खिंचता है, और मेरा मन पोताला पैलेस की तरफ खिंचता है। मैंने गुरुजी से बार-बार यह इच्छा ज़ाहिर की है। लेकिन हमें बहुत सावधान रहना होगा। ल्हासा अब चीनी जासूसों से भरा हुआ है। अगर हम जोखांग पैलेस छोड़कर पोताला की तरफ जाते हैं, तो लोग हमें देख लेंगे। हालाँकि पोताला पैलेस ल्हासा और तिब्बत का मुख्य आकर्षण है, लेकिन तीर्थयात्रियों के लिए इसकी वैल्यू कम है। तीर्थयात्रियों के लिए मुख्य आकर्षण जोखांग मंदिर है।

पोताला पैलेस

तीसरी सुबह गुरुजी अचानक अच्छी खबर लाए। एक लामा जो गुरुजी के खास जान-पहचान वाले थे, अभी पोताला पैलेस के एक ऑफिस में काम कर रहे थे। उनसे मिलने के बहाने हम दोनों बाहर निकल गए। दूसरे लामा सुबह-सुबह उठकर दान-दक्षिणा देने लगे थे। हमारी धर्मशाला के ठीक नीचे चाय की दुकानों की लाइनें थीं। वहां से हमने दो कप चाय पी और पोताला के लिए निकल पड़े।

पोटाला पैलेस ल्हासा से उत्तर में पच्चीस मिनट की पैदल दूरी पर है। पोटाला पैलेस के बारे में सही से बताने के लिए, मैं कहूंगा कि यह एक छोटी पहाड़ी को काटकर बनाई गई तेरह मंज़िला इमारत है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

एक घर बनाया गया है। और उस घर तक जाने के लिए, चारों ओर अलग-अलग साइज़ की सीढ़ियाँ हैं। पोताला दुनिया के सभी महलों में सबसे सुंदर है। पोताला के पीछे पहाड़ों की लाइनें हैं, और इसका बैकग्राउंड बादलों से सजा हुआ है। इस महल को साफ़ तौर पर तीन हिस्सों में बाँटा जा सकता है। बीच में एक लाल महल है और दोनों तरफ़ चिड़ियों के पंखों जैसे दो सफ़ेद घर हैं। बीच में लाल घर की छतें सुनहरे गुंबद वाली हैं। बिल्कुल मंदिर के ऊपर की तरह और दोनों तरफ़ के घरों की छतें ढलान वाली हैं। ल्हासा शहर से इस महल की ऊँचाई लगभग तीन सौ पचहत्तर फ़ीट है। और महल की सबसे ऊँची जगह पर परम पावन दलाई लामा का घर चार सौ फ़ीट से ज़्यादा ऊँचा है। हम पोताला पहाड़ी के नीचे पहुँचे।

पोटाला के ठीक नीचे मुझे एहसास हुआ कि ल्हासा शहर और पोटाला दो अलग-अलग जगहें हैं। पोटाला पैलेस के चारों ओर एक और शहर बसा हुआ है। पोटाला जाने के लिए कोई बड़ी सड़क नहीं है। यहाँ की सड़कें सभी सीढ़ियों से बनी हैं। सीढ़ियाँ लंबी और चौड़ी हैं, लेकिन सीढ़ियाँ छोटी हैं। घोड़े पर बैठकर इन सीढ़ियों पर चढ़ना मुश्किल नहीं होगा। पोटाला पैलेस कितना भी सुंदर क्यों न हो, उसका एंट्रेंस बिल्कुल भी साफ नहीं है। पहले मैंने एक भिखारी की झोपड़ी देखी और फिर कुछ गंदी झुग्गियाँ। उन घरों का कचरा सड़कों पर ढेर कर दिया गया है। यहाँ की म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन इस पर कोई ध्यान नहीं देती। बारिश का पानी या तूफान ही गंदगी साफ करने का एकमात्र तरीका है। पहाड़ को काटकर सीढ़ियाँ बनाई गई हैं। महल अभी भी बहुत ऊँचा है। हम एक खड़ी पहाड़ी

के किनारे-किनारे चले। हमने झुग्गी-झोपड़ी वाली जगह पार की और आगे एक छोटी सी गली में घुस गए। जैसे ही हम गली की सीढ़ियों पर खेल रहे कुछ बच्चों के पास से गुज़रे, किसी ने हमें पीछे से आवाज़ दी। ध्यान से देखने पर हमने देखा कि एक घर की खिड़की से एक बुज़ुर्ग लामा हमें देख रहे थे।

जैसे ही हमने एक-दूसरे को देखा, उसने पूछा, "तुम कहाँ जा रहे हो?"

"हम अपने एक पुराने दोस्त को ढूंढ रहे हैं," गुरुजी ने जवाब दिया।

-मैं तुम्हें देखकर बता सकता हूं कि तुम ल्हासा से नहीं हो।
तुम्हारे दोस्त का नाम क्या है?

-उनका नाम यांगचे लामा है, जो थोड़े बड़े आदमी हैं।

-ओह, मैं समझ गया - थोड़ा आगे, सीढ़ियों के नीचे गली में बाईं तरफ।
मुझे लगता है कि वह अभी ऑफिस में है।

हमने उस आदमी को धन्यवाद दिया और फिर से चढ़ना शुरू कर दिया। पोटाला का रास्ता सीढ़ियों से जाता है। यहाँ की सीढ़ियाँ बहुत अजीब हैं - मेन रास्ता बहुत चौड़ा है, लेकिन आस-पास की गलियों में सीढ़ियाँ बहुत खड़ी हैं। अगर कोई ऊपर से गिर जाए, तो रुकने का कोई रास्ता नहीं है। हम एक खास गली में पहुँचे और

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৮৯

मैंने लामा के घर का दरवाज़ा खटखटाया। काफ़ी देर तक खटखटाने के बाद भी कोई जवाब नहीं मिला। हमारे खटखटाने की आवाज़ सुनकर, बगल वाले घर से एक औरत बाहर आई। उसने मुस्कुराते हुए हमारा स्वागत किया और कहा,

-यांगचे लामा सुबह निकले, वे फाद्रोंग मार्पो गए। आप उन्हें फाद्रोंग मार्पो के निचले फ्लोर पर पाएंगे।

लेडी को धन्यवाद देकर हम फिर से सीढ़ियाँ चढ़ गए। हम बहुत ऊपर चढ़ गए। लेकिन, सड़कों के दोनों तरफ घने घर होने की वजह से दूर का नज़ारा हमारी नज़र से ओझल था। फाद्रोंग मारपो, पोटाला के लाल महल का लोकल नाम है। महल पहाड़ी की चोटी से शुरू होता है। आप इसे देखकर बता सकते हैं कि यह एक किला है। मेन रोड पोटाला के लाल महल के नीचे रुक जाती है। जब हम वहाँ पहुँचे, तो थोड़ी पूछताछ के बाद हमें यांग्त्ज़े लामा मिल गए।

जैसे ही मैं महल के नीचे एक लगभग अंधेरे कमरे में दाखिल हुआ, मुझे एक बूढ़े आदमी मिले। जब मैंने उनसे पूछा, तो उन्होंने कहा:

-यांग्त्ज़े लामा? यह क्यों ज़रूरी है?

-मैं उसका दोस्त हूँ, मैंने उसे बहुत समय से नहीं देखा है, इसलिए मैं उससे मिलना चाहता हूँ। -तुम्हारा नाम क्या है?

जैसे ही गुरुजी ने अपना परिचय दिया, बूढ़े सज्जन खुशी से लगभग उछल पड़े, मानो अंधेरे में भी उनका चेहरा छिप नहीं सकता था। वह उठे और गुरुजी उर्फ साधुबाबा को गले लगा लिया। दोनों बूढ़े लोगों का मिलना एक खुशी का नज़ारा था, वे दोनों अचानक अपनी जवानी में लौट आए। उनके गले लगने के बाद, मैंने बूढ़े लामा को प्रणाम किया। गुरुजी ने उनसे

मेरा परिचय कराया। दूर एक दीया जल रहा था, बूढ़े लामा ने दीये को थोड़ा हिलाया और मेरे चेहरे को ध्यान से देखा। उन्होंने कुछ देर मुझे देखा और फिर मुझसे पूछा - पिताजी, आपका नाम क्या है? मैंने जवाब दिया - बिमल। बूढ़े लामा के चमकदार चेहरे और पवित्रता के सामने, मेरी सच्चाई सामने आ गई। गुरुजी ने बात मान ली और कहा - मेरा मतलब है, मौनी बाबा और मेरे शिष्य।

फिर उन्होंने बूढ़े लामा को मेरी हालत के बारे में डिटेल में बताया। बूढ़े लामा ने डिटेल में सुनने के बाद मेरे सिर पर हाथ रखकर मुझे आशीर्वाद दिया और कहा, "भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें, सावधान रहना - संघ, धर्म और बुद्ध का रास्ता तुम्हें सबसे अच्छे रास्ते पर ले जाएगा।" फिर उन्होंने लगभग फुसफुसाते हुए कहा, "इस पर कड़ी नज़र रखना, हननंदा की नज़र तुम पर न पड़ने देना। उन्हें भारतीय बिल्कुल पसंद नहीं हैं। लेकिन अगर तुम मुसीबत में पड़ो, तो डिक्की लिंगा जाओ और वहां भारतीय दूतावास से मदद मांगो। लेकिन चूंकि तुम इतनी दूर आए हो, इसलिए तथागत तुम्हारी रक्षा करेंगे।"

मुझे उनकी बातों से पता चला कि बूढ़े लामा के मन में भारत के लिए बहुत सम्मान था,

১৯০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

वह एक बार कोलकाता गए हैं, और बोधगया की तीर्थ यात्रा पर भी गए हैं। ल्हासा के लोगों के लिए कोलकाता एक बहुत ही आश्चर्यजनक जगह है।

बूढ़े लामा में बहुत खूबियां हैं, वह एक आर्टिस्ट, एक टीचर और अलग-अलग गुफाओं के अकाउंटेंट हैं। आजकल वह पहले जितना ट्रैवल नहीं कर पाते, इसलिए वह पोताला के कपड़ों की दुकान के स्टॉक का हिसाब रखते हैं। यह काम पिछले काम से बहुत आसान है और ज़िम्मेदारी भी कम है। बूढ़े लामा ने अचानक मुझसे कहा - आओ और इस खिड़की से देखो, नज़ारा बहुत सुंदर है। उनकी बातों के अनुसार, मैं उनके कमरे की कोने वाली खिड़की की तरफ बढ़ा। कमरे की दीवारें पत्थर की बनी हैं, लेकिन दरवाज़े और खिड़कियां सब लकड़ी की हैं, बहुत खूबसूरती से बनी हैं, खिड़की से बाहर देखते ही अचानक मेरा सिर घूम गया। खिड़की के ठीक बाद पहाड़ की एक बहुत बड़ी घाटी है। यहां से दूर तक शहर का नज़ारा दिखता है, अब हम पहाड़ पर हैं। यह कमरा पोताला महल का एक कमरा है। बूढ़े लामा रोज़ ऊपर-नीचे नहीं जाना चाहते, इसलिए यह कमरा उनका ऑफिस है। दूसरे लामा उनसे सलाह लेने के लिए इसी कमरे में आते हैं। वह बूढ़े हैं लेकिन उनका शरीर बहुत मज़बूत है। पोताला की सीढ़ियों से ऊपर-नीचे चलना कमज़ोरों के बस की बात नहीं है। खिड़की से बाहर देखे बिना ऐसा नहीं लगता कि हम इतनी ऊंचाई पर चढ़ गए हैं। काफी समय बाद, बूढ़े लामा को अपना दोस्त मिला और वह अलग-अलग टॉपिक में डूब गए। उनका मेन टॉपिक यह था कि आजकल तीर्थयात्रियों का आना लगभग बंद हो गया है। चीनियों के डर से कोई आना नहीं चाहता। कौन जानता है कि यह कब तक चलेगा। परम पावन दलाई लामा सिर्फ़ इक्कीस साल के हैं। क्या एक लड़के के लिए चीनी पॉलिटिक्स को समझना मुमकिन है? फिर भी, दलाई लामा कहते हैं कि जिस तरह से वह चीनी प्रतिनिधियों और मिलिट्री अधिकारियों से बात कर रहे हैं, वह उनकी उम्र के किसी दूसरे लड़के के लिए मुमकिन नहीं है।

करीब एक घंटे तक अलग-अलग बातें करने के बाद हम फिर बाहर निकल आए। बूढ़े लामा हमारे साथ महल की चौथी मंज़िल पर आए, जहाँ महल के गेट पर छह तिब्बती गार्ड तैनात थे। अगर आपके पास पहचान पत्र नहीं है, तो

महल देखने के लिए आपको यहाँ के गार्ड ऑफिस से परमिशन लेनी होगी। यह परमिशन आपको स्टेट पुलिस या काशगर ऑफिस से लेनी होगी। बूढ़े लामा की कृपा से हमें अलग से परमिशन नहीं लेनी पड़ी। उन्होंने हमें एक दोस्त की तरह दरवाज़े से अंदर आने दिया। फिर उन्होंने अलविदा कहा और कहा कि हम दोपहर में फिर मिलेंगे। यांगचे लामा गुरुजी से करीब दस साल बड़े थे, इसीलिए गुरुजी उन्हें बूढ़ा लामा कहते थे। उस सज्जन ने हमसे बार-बार कहा कि उनके साथ खाए-पिए बिना कहीं न जाएँ। उन्होंने उस समय के लिए अलविदा कहा।

पोताला पैलेस कई साल पहले, वन धर्म के समय में संतों के लिए एक मेडिटेशन सेंटर था। यहां का मौसम और जगह मेडिटेशन के लिए बहुत अच्छी थी। जो फल पूरी ज़िंदगी की तपस्या से मिल सकता है, वह यहां बैठकर कुछ ही सालों में मेडिटेशन करने से मिल सकता है। जिन्होंने तंत्र और वन धर्म के साथ मेडिटेशन का ऊंचा रास्ता अपनाया है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৯১

उनका मानना था कि पोताला पहाड़ी आध्यात्मिक साधना के लिए एकदम सही जगह है। वह समय लगभग तेरह सौ साल पहले का था। प्राचीन वन पंथियों ने इस क्षेत्र को पवित्र स्थान घोषित किया था।

पांचवें दलाई लामा ने 17 वीं सदी AD में पोटाला पर काम करना शुरू किया था, और उन्हीं के समय में आज का महल बना था। मैंने इसके बनने के बारे में एक बहुत ही शानदार कहानी सुनी है। कहानी कुछ इस तरह है:

शरीर को उस पोटाला पैलेस में बड़े धूमधाम से दफ़नाया गया था। तब से, बाद के दलाई लामाओं के शरीर भी यहीं दफ़नाए गए हैं। धर्म और कर्म के अनुसार, पांचवें दलाई लामा बार-बार चेनरेज़िग अवतार के रूप में प्रकट हुए। वही अपने पोटाला पैलेस के रखवाले हैं।

১৯২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

भगवान। वह एक शरीर के नीचे दूसरा शरीर लेकर पुनर्जन्म लेते हैं। पांचवें दलाई लामा से पहले कोई दलाई लामा नहीं था। पांचवें दलाई लामा, पुनर्जन्म में दलाई लामा की भूमिका निभाने वाले पहले दलाई लामा हैं।

पोताला पैलेस में, मंदिर में सात बड़ी कब्रें हैं, जिनमें से हर एक में एक ही आत्मा के सात नए शरीर हैं। मुझे गीता के अमर वचन याद हैं:

एक शादीशुदा औरत की ज़िंदगी एक शादीशुदा आदमी की ज़िंदगी जैसी ही होती है। एक शादीशुदा औरत की ज़िंदगी एक शादीशुदा आदमी की ज़िंदगी जैसी ही होती है।

नया शरीर नए शरीर का शरीर है।

भगवान कृष्ण की बातों का इससे ज़्यादा लॉजिकल और सीधा सबूत और क्या हो सकता है? दलाई लामा की वही आत्मा बार-बार नया शरीर लेकर पोताला पैलेस में रहती है।

पोताला के बीच में बना घर बहुत रंगीन है, और उसके दोनों तरफ के घर लाल और सुनहरे धब्बों वाले सफेद हैं। जैसे ही हम अंदर गए, एक लामा हमारे साथ घूमने लगा। ऐसा लगा जैसे वह कोई गाइड हो। इससे पहले कि हम कुछ पूछ पाते, उसने सब कुछ समझाना शुरू कर दिया।

मेन महल के बीच में पैंतीस छोटे मंदिर हैं। इन पैंतीस मंदिरों में सबसे खास है चेन-रे-जी मंदिर। यह असल में एक यादगार है। बिल्कुल ताजमहल जैसा। लेकिन, ताजमहल में बेगम नूरजहाँ का शरीर उस पर लेटा है और उस पर एक मकबरा है। और यहाँ यादगार पर श्रोंग-सान-गम्पो की एक बहुत बड़ी सोने की मूर्ति बनाई गई है। अगर यह मूर्ति सच में सोने की है, तो पोताला पैलेस बेशक दुनिया का सबसे अच्छा और सबसे महंगा यादगार है। श्रोंग-सान-गम्पो या चेन-रे-जी की मूर्ति के दोनों ओर उनकी दो पत्नियाँ हैं। नेपाल और चीन की राजकुमारियों की इस आदमकद मूर्ति की तारीफ़ किए बिना कोई नहीं रह सकता। दूर से, हमने पोताला पैलेस की ये सात सोने की चोटियाँ देखीं, लेकिन अब, पास आने पर, हम देखते हैं कि वे चोटियाँ असल में समाधि चैत्य हैं, यानी सात चैत्य। 13 वें दलाई लामा का स्तूप सबसे बड़ा है। यह स्तूप जोखांग मंदिर जैसा है, इसे देखने के लिए आपको कुछ सीढ़ियाँ नीचे उतरना होगा। यह मकबरा, वेदी और मूर्तियाँ पूरी तरह से सोने से बनी हैं, इसमें ज़रा भी मिलावट नहीं है। अकेले 13 वें दलाई लामा की वेदी और मूर्ति एक टन सोने से बनी हैं। मेरे जैसे छोटे आदमी के लिए इसकी कीमत का अंदाज़ा लगाना नामुमकिन है। मैं अपनी आँखों के सामने एक टन सोना देख रहा हूँ
- मैं उसे छू रहा हूँ, मैंने पहले कभी सोने का एक भी टुकड़ा नहीं छुआ है, इसे देखते हुए, मुझे लगता है कि तिब्बत की मेरी यात्रा सफल रही। हम एक टन सोने के सामने खड़े हैं, हमारे आस-पास बहुत से गरीब तिब्बती हैं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৯৩

तीर्थयात्री और भिखारी भी हैं। इस बड़े खजाने की देखभाल के लिए कोई सैनिक या गार्ड नहीं हैं। यहीं पर तिब्बतियों का शुद्ध और बेदाग चरित्र सामने आता है। ऐसी पवित्रता और स्वर्गीय रवैया दुनिया में बहुत कम देखने को मिलता है। स्मारकों की दीवारों पर भी खूबसूरती से पेंटिंग की गई है। उन पर भगवान बुद्ध की जीवनी और कई दूसरी जानकारी मौजूद है। कई चीनी कहानियों को तस्वीरों के ज़रिए साफ-साफ समझाया गया है। चारों तरफ शेर, ड्रैगन, घोड़े, हाथी, सांप, बंदर वगैरह कई जानवरों की तस्वीरें भी हैं। चैत्य के बरामदे पर महंगे कपड़े पर बनी खूबसूरत ऑयल पेंटिंग लाइनों में टंगी हैं। वे मंडलों, सिक्कों और तथागत के जीवन के ब्यौरों से भरी हैं। पत्थर में बड़े-बड़े खंभे लगे हैं। साल के पेड़ के तनों की तरह, उन खंभों पर भी खूबसूरत नक्काशी की गई है। लाल, सुनहरा और पीला रंग तिब्बतियों के पसंदीदा रंग लगते हैं। रंग कोई भी हो, हर रंग का इस्तेमाल बहुत अच्छे से किया गया है। मैं कोई कलाकार नहीं हूँ, इसलिए मुझमें शिल्पकला को विशेष निर्णय से देखने की क्षमता नहीं है। मैं अपने नाखूनों को दांतों से काटते हुए उन सोने के सिक्कों के बारे में सोच रहा था। जिस देश में इतना सोना है, वहां लोग भीख क्यों मांगते हैं? शायद लोगों को यह सारा सोना खर्च करने का अधिकार नहीं है क्योंकि यह पवित्र है। यह फिलहाल मेरा पसंदीदा जवाब है। चेनरेज़िग की स्वर्ण मूर्ति तीस फीट ऊंची है। न केवल सोना, बल्कि अनगिनत रत्न, देवी-देवताओं के शीर्ष और बर्तन सभी अमूल्य रत्नों की तरह हैं। पोताला पैलेस के इस लाल घर के सात चैत्य आगंतुकों के लिए मुख्य आकर्षण हैं। हम अब घर की नौ या दस मंजिलों पर चल रहे हैं। कोई भी कमरा या बालकनी समतल नहीं है। यहां तक कि अगर आप एक कमरे से दूसरे कमरे में जाते हैं, तो भी आपको सीडी के सहारे ऊपर

या नीचे जाना होगा। बिना देखे यह समझना असंभव है कि एक पहाड़ को तराशने और इस जादुई शहर को बनाने में कितना कौशल और जादू लगा।

अपनी कभी न खत्म होने वाली जिज्ञासा को शांत करने के लिए, मैंने मंदिर के पीछे की खिड़की से झाँका। ऐसा लग रहा था जैसे हमारा महल बिना किसी सहारे के खड़ा हो। इससे पहले कि मैं कोई सवाल पूछ पाता, लामा सज्जन मेरी ओर आए। फिर, बहुत धीमी आवाज़ में, उन्होंने आस-पास के नज़ारे के बारे में बताना शुरू किया।

अब हम पोताला पैलेस की गुफा में हैं। इस गुफा या मठ में करीब दो सौ लामा रहते हैं। यह गुफा पूरी तरह से अलग है, पोताला की अपनी गुफा है। यहां के लामा पोताला के मंदिरों की देखभाल करते हैं। खिड़की के बाहर बिल्कुल अलग नज़ारा दिखता है। यह ल्हासा शहर के दूसरी तरफ है। दूर जो बड़ी गुफा दिखती है, वह मशहूर चंपुरी हर्बल सेंटर है। यानी तिब्बत का सबसे बड़ा मेडिकल सेंटर और मेडिकल कॉलेज। यह एक मेडिकल सेंटर है, लेकिन यह हमारे देश के अस्पतालों से बिल्कुल अलग है। यहां की दवा पूरी तरह से आयुर्वेदिक परंपराओं पर आधारित है। आयुर्वेद के साथ-साथ पहाड़ी और लोकल मेडिकल तरीके भी जुड़े हुए हैं।

১৯৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मशहूर तिब्बती डॉक्टरों और विद्वानों ने भारत से मेडिकल किताबों का अनुवाद किया है, उनमें भैरचना, रिचेन जाम्पो, यांग लाग के नाम हैं। तिब्बत में इस चंपुरी विद्यानिकेतन में पढ़ाई जाने वाली किताबों में चंद्रनंदन, जनार्दन, धर्मश्रीवर्धन, बगुट्टा, नागार्जुन जैसे भारतीय विद्वानों के नाम खास हैं। चंपुरी मेडिकल कॉलेज पांच-छह

बड़े चैत्यों के आस-पास बना है। यहां से सिर्फ़ इसकी छत ही दिखती है। थोड़ी दूर पर की-चू नदी धीरे-धीरे बह रही है, बहुत सुंदर नज़ारा है। खिड़की से ठीक नीचे, यानी पोताला पहाड़ी के ठीक नीचे जो गांव दिखता है, उसे चो कहते हैं।

गाइड ने लगभग एक ही सांस में हमारी खिड़की के बाहर का नज़ारा बताया और फिर सीधे हमसे कहा, "चार आने एक दिन के।" हमने उसे दो आने दिए और वह उससे खुश हो गया। वह बार-बार हमें प्रणाम करते हुए गायब हो गया। गुरुजी पोताला पैलेस को बहुत अच्छे से जानते थे, लेकिन वह आदमी हमें छोड़कर बिल्कुल नहीं गया। बालकनी बहुत चौड़ी और लंबी हैं। लेकिन उसके मुकाबले बहुत अंधेरा है। अंदर घी के दीये से आप सब कुछ साफ नहीं देख सकते। बिजली हर जगह नहीं है, और कई जगहों पर दीये नहीं हैं। पोताला में इस मठ का नाम नामग्येत्रचांग है। बालकनी के दोनों तरफ कमरों की लाइनें हैं, कभी-कभी आप लामाओं से मिल सकते हैं, लेकिन कम रोशनी में उनकी उम्र समझना मुश्किल है। गुरुजी के अनुसार, यहां के सभी लामा बूढ़े हैं। पोताला पैलेस के लिए की-चू नदी से पानी लाना पड़ता है। इतना बड़ा महल, लेकिन पानी की हालत बहुत खराब है। हर सुबह लोगों को लाइनों में लगना पड़ता है और बारी-बारी से नदी से पानी लाना पड़ता है। बेशक, इसके लिए लोगों की कोई कमी नहीं है। सैकड़ों तिब्बती नौकर मालिक की सेवा के लिए वहां मौजूद हैं।

पोताला के इस चैत्य इलाके की एक और खास बात जो सिर्फ़ विज़िटर ही देख पाएंगे, वह है यहां का सन्नाटा। आप अक्सर बरामदे में लामाओं से टकरा जाते हैं, लेकिन कोई आवाज़ नहीं करता। ऐसा लगता है कि हर कोई ध्यान में डूबा हुआ है। सिर्फ़ कभी-कभी लामाओं की गहरी सांस और खांसी की आवाज़ सुनाई देती है।

लाल घर पोटाला पैलेस का सबसे पवित्र हिस्सा है - जो चैत्य, कब्रों, वेदियों और मंदिरों से भरा है। लेकिन, पूर्वी हिस्सा सफेद रंग से रंगा हुआ है, और बाहर से यह हमारी राइटर्स बिल्डिंग जैसा दिखता है। लेकिन, रंग सफेद है, और पूर्वी हिस्से के कमरे सभी सरकारी कोर्ट और ऑफिस से भरे हुए हैं। अलग-अलग इलाकों के शासकों के लिए एक लॉ और एडमिनिस्ट्रेटिव एजुकेशन सेंटर भी है। इस एरिया के एक बड़े कमरे में तिब्बत की कैबिनेट का जनरल हॉल है। उस हिस्से में परम पावन दलाई लामा का घर है, यानी पोटाला पैलेस की चौदहवीं मंज़िल पर।

दलाई लामा सिर्फ़ सर्दियों में यहाँ रहते हैं, सर्दियों के आखिर में वे अपने गर्मियों के घर, नोरबुलिंगका पैलेस चले जाते हैं। जब वे पोटाला पैलेस से नोरबुलिंगका जाते हैं, तो ल्हासा के लोग अपने त्योहारों में पूरी तरह से डूबे होते हैं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৯৫

১৯৬

हर घर में रंग और झंडे दिखते हैं। यह ल्हासा के लोगों का वसंत का त्योहार है। दलाई लामा का जुलूस देखने के लिए हज़ारों लोग सड़क के दोनों ओर जमा होते हैं। वह त्योहार हमारे ल्हासा पहुँचने से कुछ हफ़्ते पहले हुआ था। यह त्योहार हिमालय में बर्फ़ पिघलने का त्योहार है, यह पिघलती हुई बर्फ़ पानी बनकर मैदानों में आती है, जिससे लाखों जीव ज़िंदा रहते हैं। इस तरह, चट्टानी हिमालय हर जीव के लिए एक दयालु माँ की तरह काम करता है। तिब्बती में इस त्योहार को मन्नान त्योहार कहते हैं। दलाई लामा उस महान हिमालय की निशानी हैं।

सर्दियों के आखिर में, वह पोताला पैलेस से नीचे आते हैं, वह सबके बीच मौजूद होते हैं। दलाई लामा अभी यहाँ नहीं हैं, अगर होते, तो हम उनसे मिलने की कोशिश कर सकते थे।

पोताला पैलेस में कई बड़े लामा और सरकारी अधिकारी रहते हैं। राज्य के शासक, जिन्हें मैं इंग्लिश में गवर्नर कहूंगा, ल्हासा आने पर पोताला पैलेस में ही रुकते हैं। यहां का सरकारी गेस्ट हाउस हमेशा भरा रहता है। दलाई लामा का घर ज़मीन से चार सौ फीट ऊपर है, और उनके कमरे म्यूज़ियम जैसे हैं, जो तिब्बत की महंगी और सबसे अच्छी चीज़ों से भरे हुए हैं। पोताला पैलेस में कई मूर्तियों के बीच, हमने चंदन की लकड़ी से बनी एक बहुत बड़ी बुद्ध की मूर्ति देखी। हम इसे छोटे लैंप से बहुत साफ़ नहीं देख पाए, लेकिन मूर्ति सिंहल से आई थी। इसे एक चमत्कारी मंत्र से बनाया गया था। जब मूर्ति की पूजा होती है, तो महल के आस-पास का इलाका चंदन की पवित्र खुशबू से भर जाता है। पोताला तिब्बत की इंद्रपुरी है।

जैसे-जैसे दोपहर बीतती गई, दोपहर हो गई और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि समय कहाँ बीत गया। अंदर का सुनहरा, पीला, लाल और नीला बाहरी हिस्सा देखकर हमारी आँखें हैरान रह गईं। हम कई घरों और पत्थर की सुरंग जैसी बालकनी और गलियों से गुज़रे और नीचे उतरे। अचानक, हम खुले आसमान में दिखाई दिए। जैसे ही हम एक गली के एंट्रेंस पर पहुँचे, हमें कुछ भिखारी मिले। उन्होंने हमें बताया कि थोड़ा आगे दाईं ओर एक चाय की दुकान पर एक लामा हमारा इंतज़ार कर रहा है। हमने उन्हें दो पैसे दिए और आगे बढ़ गए। हमने थोड़ी देर ढूँढा लेकिन कोई चाय की दुकान नहीं दिखी। इससे पहले कि मैं पूरी तरह निराश होता, मैंने गली में एक लड़की से पूछा। उसने मुस्कुराते हुए कहा, "दुकान हमारे ठीक सामने है, क्या तुम्हें दिख नहीं रही? चलो मैं तुम्हें दिखाती हूँ।"

"अंदर आ जाओ," कहकर वह आगे बढ़ी और खिड़की पर दस्तक दी। खिड़की तुरंत अंदर से खुल गई, और उसी समय मक्खन और चाय की खुशबू बाहर आई। हमने मुस्कुराते हुए लड़की को धन्यवाद दिया। टेढ़े दांतों वाली एक बूढ़ी औरत ने खिड़की के अंदर से हमें देखा और कहा, "ओह, तुम आ गए।" यह कहकर वह उठी और अगला दरवाज़ा खोला। हम अंदर गए।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं मेहमान की तरह चटाई पर बैठ गया। चाय की दुकान अब खाली थी। यह सच में एक चाय की दुकान थी। ऑफिस वाला आया और खिड़की पर दस्तक दी और पूछा कि कितने कप चाय चाहिए। अंदर से दी गई। कुछ लोग अंदर बैठे और चाय पी। कोई भी अंदर नहीं आया, जब तक कि वे बहुत जान-पहचान वाले न हों। बूढ़ी औरत ने हमें थोड़ी देर बैठने को कहा और चली गई, फिर हाँफते हुए आई और कहा कि लामाजी जल्द ही यहाँ आएँगे। उस औरत ने अपने दो बहुत महंगे चीनी मिट्टी के कप निकाले और हमें दिखाते हुए कहा, "देखो, ये दो कप पेकिंग में बने हैं। मैं इन कपों का इस्तेमाल तब तक नहीं करती जब तक मेरे पास कोई खास मेहमान न हो।" चाय पहले से ही तैयार थी, उसने हमें उसमें थोड़ा नमकीन मक्खन मिलाकर सिरप की तरह लकड़ी की आग पर गर्म करते हुए दिखाया। दोनों चाय के कप अच्छे थे, लेकिन ऐसा लग रहा था कि उन्हें कभी धोया ही नहीं गया था। खैर, हमने उस पर ध्यान दिए बिना एक घूँट लिया।

लेडी ने अचानक बात बदल दी - मैंने सुना आप सांगपो क्रॉस कर रहे थे, फ़ार्गो के पास आप भिखारियों के हाथ लग गए होंगे। और उनकी बात मत करो, वे फेस्टिवल के लिए आए थे और अभी तक गए नहीं हैं। वे हर साल फेस्टिवल में आते हैं। लेकिन हाँ, फेस्टिवल किसी और के लिए नहीं है, तो क्यों न आएं, उनका भी तो शौक है। लेकिन किसी भी आने-जाने वाले को ऐसे ही घेर लेना ठीक नहीं है। बेशक, मैं इसमें नहीं गई, मेरे पास

दुकान छोड़कर कहीं जाने का रास्ता है। अगर मैं एक दिन के लिए इसे बंद कर दूँगी, तो ऑफिस वाले लोग सूख जाएँगे। यह अच्छी बात है कि मेरी छोटी बेटी अभी भी मेरे साथ है, वरना मैं यहाँ तक नहीं पहुँच पाती। मोहल्ले में लड़कों की कमी नहीं है, लेकिन आप उन पर भरोसा नहीं कर सकते, वे बस बाज़ार में बैठकर गप्पें मारने में माहिर हैं...

हमारी बात सुनकर वह महिला एक ही स्वर में खुद से बातें करने लगी। थोड़ी देर बाद, बूढ़ा लामा आया और पूछा:

-खाना कहाँ परोसा गया?

-अभी तक नहीं।

-बताओ, अभी तक मेरे पेट में कुछ नहीं गया। ठीक है, चलो साथ में खाते हैं।

बूढ़े लामा ने दुकान वाली से रात के लिए एक अच्छा साम्पा बनाने को कहा, फिर हमें पोताला की छत दिखाने के लिए बाहर ले गए! हर किसी के लिए छत पर जाना मुमकिन नहीं है, जब तक कि वे यहाँ की गलियों को न जानते हों। हर तेरह मंज़िला घर के ऊपर एक बहुत बड़ा बरामदा है और हर दो या तीन मंज़िल पर एक बहुत बड़ी छत है। यहाँ की छत भी बहुत चौड़ी है, दार्जिलिंग के मॉल की तरह।

छत से आप ल्हासा का पूरा नज़ारा देख सकते हैं। कहने की ज़रूरत नहीं है कि नज़ारा बहुत सुंदर है। छत से मुझे चैत्य की चोटियों को अपने हाथों से छूने का मौका मिला। उनमें से कुछ सुनहरी चोटियाँ असली सोने की पत्तियों से ढकी हुई हैं। कुछ देर के लिए

महातीर्थ का अंतिम यात्री

১৯৭

हमें उतरना पड़ा, क्योंकि घंटी पहले ही बज चुकी थी। दोपहर की इस घंटी के बाद, बाहर से किसी को भी यहाँ रुकने की इजाज़त नहीं थी। मंदिर के लोहे के दरवाज़े धीरे-धीरे बंद हो गए। और गार्ड आने-जाने लगे। पूरी रात, हर आधे घंटे में गार्ड पोताला पैलेस की गलियों में घूमने लगे। लालबाड़ी के गार्ड रात में कब्र की वेदी के पास से गुज़रते हुए चिल्लाते थे, "सावधान, तुम...!"

बूढ़े लामा ने हमें पोताला के और राज़ बताए। महल का निचला फ़्लोर बंदूकों और गोला-बारूद से भरा है। हमारे पास तोपखाना तो है ही नहीं। अगर कोई विदेशी दुश्मन ल्हासा पर हमला करता है, तो यहाँ के बहादुर योद्धा अपनी जान देने से नहीं हिचकिचाएँगे। और उनके साथ, राज्य की रक्षक, मदर स्टार, हमेशा हमारी रक्षा के लिए तैयार रहती हैं। दलाई लामा के सेनापति, शिक्षक और सलाहकार चार मंज़िला घरों में रहते हैं। उनके सभी कमरे शानदार तिब्बती स्टाइल में सजे हुए हैं। राज्य की सबसे अच्छी जेल भी उसी महल के पीछे है। अगर बड़े लामा और ऊँचे सरकारी अधिकारी कोई भी गैर-कानूनी काम करते हैं, तो उन्हें वहीं कैद कर दिया जाता है।

पोताला पैलेस कितना भी शानदार क्यों न हो, मुझे यहाँ का माहौल बहुत भारी लगता है। अंदर जाते ही पत्थर की ठंडक, नमी से मेरा सीना काँपने लगता है। समाधि की पवित्र, पवित्र और आनंदमयी लहरें यहाँ आने के लिए मना लगती हैं। यहाँ के सुनहरे दीयों में जलने वाले घी के दीये फीके लगते हैं। पहरेदारों की हरकतों में थोड़ा घमंड है। मन को हल्का करने वाला मंत्र पोताला के कीमती रत्नों और जवाहरातों में दबा हुआ लगता

है। या मुझमें पोताला पैलेस के सुखों को सच में महसूस करने की काबिलियत नहीं है। अगर आखिरी बात सच हो तो मुझे खुशी होगी।

शाम होते ही हम महल के गेट पर उतरे। हम वहाँ की गंदी गलियों को पार करके बुढ़िया की चाय की दुकान में घुसे। हमें देखकर बुढ़िया मुस्कुराई और अपने टेढ़े-मेढ़े दाँत दिखाकर हमारा स्वागत किया - मुझे लगा तुम रास्ता भटक गए हो। अच्छा हुआ कि तुम नई झोपड़ी में नहीं गए, अगर वहाँ गए होते तो आज तुम्हें वापस नहीं आना पड़ता। वहाँ के सिपाही भी बहुत सख्त हैं। जैसे ही घंटी बजती है, वे दरवाज़ा बंद कर देते हैं, इस बात पर ध्यान नहीं देते कि अंदर कोई बचा है या नहीं। हाँ, अच्छी बात है, देखो मैंने तुम्हारे लिए क्या बनाया है। आह! इसकी महक से सड़क से गुजरने वाला हर कोई इसे सूंघने के लिए कम से कम एक बार रुक ही जाता है। और क्यों? जानते हो मैंने इसमें क्या डाला है? एकदम ताज़ा सूखा मटन। इसे खाने में मुश्किल नहीं होगी, मैंने इसे उबालकर पिघलाया है। मैंने इसमें की-चू नदी से तीन छोटी सूखी मछलियाँ डाली हैं। बेशक, यह थोड़ी महंगी होगी, लेकिन चूँकि तुम हमारे खास मेहमान हो, तो जो भी हो

১৯৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं अब उन्हें खाना नहीं खिला सकता। बूढ़े लामा ने मुझे बहुत सावधान रहने की चेतावनी दी है, ये मेरे खास दोस्त हैं।

"बहुत अच्छा! अब रुको, जब मैं खेलूंगा तो समझूंगा कि क्या हुआ था।" बूढ़े लामा ने महिला को रोका। एक बार जब महिला ने बोलना शुरू किया, तो उसे कोई नहीं रोक सका।

मेरी लेडी बहुत खुश थी। अपनी खुली मुस्कान और सादगी के साथ, वह एक खुश देवी की तरह लग रही थी।

खाने-पीने के बाद हम उठे, हमें शहर लौटना था। बूढ़े लामा ने हमारे कहने पर भी एक पैसा नहीं लिया। उन्होंने कहा, "मेरे पास जो कुछ भी है, अगर उसमें से कुछ भी मैं आपकी सेवा में लगा सकूं, तो यह मेरे लिए पुण्य होगा। मुझे खुशी है कि आप इतनी मेहरबानी करके आए, मुझे इस खुशी से दूर मत कीजिए।"

मैंने बूढ़े लामा को अलविदा कहा। उन्होंने मुझसे बस इतना कहा कि अगली बार जब मैं गया जाऊँ तो बुद्ध की कुछ मिट्टी उन्हें भेज दूँ। मैंने उनसे वादा किया। एक घंटे बाद, लेडी के सूप की तारीफ़ करने और बूढ़े लामा को प्रणाम करने के बाद, हम शहर की अंधेरी गलियों में निकल पड़े। हमारे सिर के ऊपर पोटाला पैलेस के बड़े हॉल सोने के वज़न से धीरे-धीरे ज़मीन में धंसते हुए लग रहे थे। पूरी तरह ज़मीन में धंसने से पहले, क्या परम पावन दलाई लामा और उनकी मिनिस्टर्स की काउंसिल अपनी दौलत का कुछ हिस्सा देश के गरीबों में नहीं बाँट सकती थी? इससे आज़ादी और हमेशा के लिए निर्वाण का रास्ता खुल जाएगा, एक ऐसी इच्छा जो शायद मेरे जैसे हज़ारों दूसरे मनों में भी उठी होगी। विनम्र, दयालु और रहमदिल चेनरेज़िग ने ज़रूर ऐसा महसूस किया होगा। ऐसा लगता है कि उनकी सोच बिल्कुल अलग है। ल्हासा के आसमान में चाँद उग आया था, और उस रोशनी में, ल्हासा मायापुरी शहर जैसा लग रहा था। उस रोशनी में, हम पत्थरों पर ठोकर खाते हुए अपनी धर्मशाला की ओर चल पड़े।

लामा लामडुप

अगली सुबह, किसी ने हमें आवाज़ देकर जगाया - मैंने कितना भी कंबल सिर पर लपेटा, कोई फ़ायदा नहीं हुआ। उठने के लिए मुझे चार-पांच बार लकड़ी के फ़र्श पर लोटना पड़ा। किसी तरह मैंने आँखें खोलीं और पूछा
- कौन? तब जाकर मैंने खुद को संभाला। गुरुजी मेरे बगल में सो रहे थे, सिर हिला रहे थे, और मुझे उन्हें धक्का देकर दूर धकेलना पड़ा। मद्धिम रोशनी में दरवाज़े के पास खड़ी भूतिया आकृति, हमें जगाने में लगी हुई थी, ऐसा लग रहा था कि कोई खास ख़बर लेकर आई है। कमरे के कोने में लोहे के बर्तन में कोयले की आग पूरी रात धूपदान की तरह जलती रही। उसकी मद्धिम रोशनी में, मैंने ध्यान से देखा तो एक बारह साल का लड़का वहाँ खड़ा था, पीठ पर चादर लपेटे, ठंड से काँप रहा था। मैं उसके पास गया और उसे आग के पास आने का इशारा किया। उसने कृतज्ञता में सिर झुकाया और खुद को गर्म करने के लिए आगे बढ़ा। तिब्बत में, मेहमान को चाय देने की तरह, मेहमान से आग जलाने के लिए कहना भी बड़ी ईमानदारी की निशानी है। इतने में गुरुजी उठकर बैठ गए, लड़के ने उनकी तरफ देखा और बहुत तेज़ी से कुछ कहा। मैंने उनकी बातों में एक खास लहज़ा देखा, और एक नाम मेरे कानों में गूंजता रहा, "गुरु लामडुप"। उन्होंने थोड़ी देर आग की गर्मी में अपना शरीर गर्म किया और फिर चले गए। साधुबाबा ने मुझे बताया कि लामा लामडुप जोखांग मंदिर आए थे। लामा लामडुप तिब्बत के मशहूर कुम्मुम मंदिर के मुख्य पुजारियों में से एक हैं। गुरुजी लामा लामडुप से पहले दो बार मिल चुके थे। उन्होंने लोगों से गुरुजी के ल्हासा आने के बारे में सुना था, इसलिए उन्होंने किसी को उनसे मिलने के लिए भेजा। यह सुनकर काफी अच्छा लगा
- गुरुजी के अनुसार, लामा लामडुप बहुत बुद्धिमान व्यक्ति हैं, इसलिए यह मौका भगवान की कृपा के बिना संभव नहीं है। वे सभी कम्युनिकेशन के मालिक हैं। कंबल के आकर्षण के बावजूद, मुझे गुरुजी के साथ उठने के

लिए मजबूर होना पड़ा। जब मैं बरामदे में पहुँचा, तो मैंने देखा कि आसमान में तारे अभी भी चमक रहे थे। मैंने सुबह के पहले मुर्गे की बांग सुनी। मैंने गुरुजी से पूछा:

-उसने तुम्हें इतनी सुबह-सुबह क्यों बुलाया?

-वह हमेशा सुबह जल्दी उठ जाते हैं। शाम के बाद किसी से बात नहीं करते। शायद यही उनके हेल्दी शरीर की असली चाबी है। आप देखिए, उनकी उम्र का अंदाज़ा लगाना मुश्किल है। जब वह इधर-उधर जाते हैं, तो उनके साथ हमेशा पांच-छह चेले होते हैं, इसलिए आप चुप रहते हैं।

২০০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

जैसे ही हम उठे, हमारे ग्रुप का एक और लामा उठा और हमारे साथ तैयार हो गया। जब हम जोखांग मंदिर के पास एक दुकान के सामने खड़े थे, तो हमने देखा कि कुछ लोग आग के चारों ओर खड़े बातें कर रहे थे। जैसे ही हम पास पहुँचे, हमने अपने रिपोर्टर, उस जाने-पहचाने लड़के को देखा। दूसरे लोग थोड़े बड़े थे, वे मंदिर के गार्ड थे। हमें देखकर, उन्होंने इज़्ज़त से अपनी जीभ बाहर निकाली और इज़्ज़त से झुके। हम हेड प्रीस्ट के घर के ठीक सामने वाले घर में पहुँचे और दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा खुला था। जैसे ही हम अंदर गए, एक औरत हाथ में तूफ़ान लेकर आगे आई। आम तिब्बती मर्दों और औरतों के कपड़े लगभग एक जैसे होते हैं, इसलिए पहली नज़र में वह औरत एक जेंटलमैन लगी। उस औरत के साथ, हम बड़े बरामदे को पार करके एक कमरे में घुसे। कमरे के बीच में आग जल रही थी और उसके पास सात लामा आँखें बंद करके बैठे थे। वे सभी मेडिटेशन कर रहे थे। उनके सामने, एक बुज़ुर्ग आदमी थोड़ी ऊँची

वेदी पर उनके सामने बैठा था। वह भी मेडिटेशन में डूबा हुआ था। हम उनके साथ हो लिए।

करीब एक घंटे बाद मंत्रों के जाप से उनका ध्यान टूटा। बुज़ुर्ग सज्जन ने धीरे से अपनी आँखें खोलीं। उन्हें देखकर मन में भक्ति का भाव आया, एक पवित्र और शांत रूप। उन्होंने सीधे गुरुजी की तरफ देखा और थोड़ा मुस्कुराए। उस मुस्कान में स्नेह और प्यार झलक रहा था। मुझे उस मुस्कान में जीवन और मिठास का एहसास हुआ, एक बच्चे की तरह सरल और सहज। फिर उन्होंने कहा, "कल मैंने आपको खबर भेजी थी कि आप नहीं हैं, इसलिए मैंने आपको अब खबर भेजी है। हमें मिले हुए बहुत समय हो गया है, क्या आप ठीक हैं? क्या आपको रास्ते में कोई परेशानी हुई?" उनकी बातों में ज़्यादा उत्साह नहीं था, इतने समय बाद मिल रहे थे और फिर भी ज़्यादा इमोशन नहीं था।

-आपकी दुआ से रास्ते में कोई मुश्किल नहीं आई। कल हम थोड़ी देर के लिए बाहर गए थे - वापस आने में थोड़ी देर हो गई थी। क्या आप कुछ दिनों से यहाँ हैं?

गुरुजी का सवाल सुनकर लामा लामडुप ने पहले की तरह ही नरम आवाज़ में जवाब दिया,

-आज मैं कहीं और जाऊँगा। मैं एक खास काम से आया हूँ।

उसके बाद, कोई बात नहीं हुई, लामा लामडुप ने फिर अपनी आँखें बंद कर लीं। कमरे में मौजूद दूसरे लामाओं ने भी तुरंत अपनी आँखें बंद कर लीं। फिर धीमी आवाज़ में मंत्र पढ़ना शुरू हुआ। थोड़ी देर बाद, हम सबने फिर से ध्यान किया। जब हमारा ध्यान टूटा, तो कांच की खिड़की से बाहर की रोशनी दिखाई दी। सुबह का ध्यान और शांति शरीर और मन को

स्वस्थ और मजबूत बनाते हैं, मन में खुशी और एकाग्रता लाते हैं। जब मन का अहंकार बुद्ध के चरणों में अर्पित किया जाता है, तो मन के संदेह दूर हो जाते हैं।

भक्तों ने गुरु के चरणों में सिर झुकाया और धीरे-धीरे उठ खड़े हुए। हमने अपने बीच सर्वोच्च गुरु लामा लामडू को पाया। अब उन्होंने गुरुजी को पास आने को कहा। अब मुझे उन्हें अच्छी तरह से देखने का मौका मिला।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২০১

उनका चेहरा दूसरे तिब्बतियों जैसा है, सिर पर थोड़े बाल हैं, दूसरे लामाओं की तरह मुंडा हुआ सिर नहीं है। उनकी दाढ़ी और मूंछें बहुत हल्की हैं और बाल सफेद हैं। वे लगभग छह फीट लंबे लगते हैं, और उनका चेहरा बहुत मजबूत है। गुरुजी ठीक कह रहे हैं कि उनकी उम्र का अंदाजा लगाना मुश्किल है। गुरुजी ने उन्हें पंद्रह साल पहले ऐसे देखा था। मैंने कई तीर्थस्थलों की यात्रा की है और अब हिमालय की सबसे ऊंची चोटी पर हूं, और यह पहली बार है जब मैंने हिमालय की पवित्रता को किसी इंसान में इतनी खूबसूरती से देखा है। वे एक सच्चे योगी हैं। मुझे एक देवतुल्य व्यक्ति के दर्शन पाकर धन्य महसूस हुआ। मुझे गुरुजी के साथ उनकी कोमल बातचीत में एक अद्भुत लय मिली। गुरुजी के साथ यह मुलाकात मेरे जीवन का एक अवर्णनीय अनुभव होगा। दो लड़कियां एक प्लेट में सूजी की बर्फी और चाय लेकर कमरे में दाखिल हुईं। लड़कियां बहुत छोटी थीं। मैंने शायद उनकी मां को पहले देखा था। वे पंद्रह या सोलह साल की थीं। सबसे खास बात उनके बालों का स्टाइल था। बाल सिर पर चोटी के आकार में बेंत के ढांचे पर फैले हुए हैं। बिल्कुल पहाड़ की

तस्वीर की तरह। जैसे ही मैंने अपनी आँखें खोलीं, मैं प्यार से मुस्कुराया और मुझे एक कटोरी चाय और दो आइसक्रीम दीं। मैंने सिर झुकाकर आभार में उन्हें स्वीकार कर लिया।

फिर उस कमरे में और लोग सुप्रीम गुरु के दर्शन के लिए इकट्ठा होने लगे। हम बैठ गए। गुरुजी के अलावा, उन्होंने किसी से पर्सनली बात नहीं की। कभी-कभी वह खुद भी धीमी आवाज़ में बोलते थे, ऐसा लगता था जैसे वह खुद से ही बात कर रहे हों।

हमने पूरी सुबह वहीं बिताई, फिर उनका आशीर्वाद लेकर हम उनके घर से निकल गए। जोखांग मंदिर के आंगन में बैठकर गुरुजी ने मुझे लामा लामडुप की शिक्षाएं समझाना शुरू किया। जो लोग इन कीमती शिक्षाओं को अमल में लाते हैं, उन्हें फायदा होता है। जैसे:

इच्छाशक्ति की कमी अंधकार है, इच्छाशक्ति का जागना प्रकाश है।

अगर आप अपना मन नहीं भरेंगे, तो खालीपन कैसे पाएँगे?

तर्क और निर्णय के ज़रिए इस ब्रह्मांड को समझना महायान कहलाता है।

जो लोग अशुद्ध और अपवित्र हैं, उनके लिए 'वज्रयान' जानना असंभव है।
उनके वज्रयान मार्ग को न अपनाना ही बेहतर है।

हमारे अंदर पर्सनल पावर है और हमारे बाहर वर्ल्ड पावर है। हमें सेल्फ-पावर से वर्ल्ड पावर को जानना होगा। वर्ल्ड पावर को अपने अंदर लाने की कोशिश करना बस सुसाइड करने जैसा है।

मंत्र मन की रक्षा करता है, तंत्र से दुनिया के राज़ पता चलते हैं।
ब्रह्मांड में जो खालीपन है, जिसमें रोशनी नहीं है, वह अंधा है।
ज्ञान की रोशनी से जो खालीपन महसूस किया जा सकता है, वही ब्रह्मांड है।

১৫

अपने मन को कंट्रोल करें, मन ही अच्छाई और बुराई का जज है, जज के मन के अनुसार।

২০২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

फैसला हो चुका है। अगर आप अपने मन को शुद्ध और पवित्र रखेंगे, तो आपका फैसला भी शुद्ध और पवित्र होगा। मन ही मन का राजा है, जैसा आप उसे बनाएंगे, वैसे ही आपके कर्म होंगे। और उस कर्म का फल भोगने के लिए आपको बार-बार इस दुनिया में आना पड़ता है। अपने मन को अलर्ट रखें और दिन-रात उसकी हरकतों को देखें, और आप देखेंगे कि वह अच्छा ही होगा।

जब हमें कुछ पाने या करने की इच्छा होती है, तो उसकी जड़ में टकराव होता है। आंखें, कान, नाक, जीभ और त्वचा बाहरी दुनिया की आवाज़ों, स्पर्श, रूपों, स्वाद और गंध के साथ टकराव में आ जाते हैं। इच्छा मन के सुंदर और इंद्रिय-स्पर्शी चीज़ों के साथ टकराव से पैदा होती है। ये तीन तरह की इच्छाएं, वासना, भावना और लगाव, हमें सच्चाई से दूर ले जाती हैं। हमें अपनी सभी दुनियावी इच्छाओं को पूरा करने के लिए बार-बार इस दुनिया में आना पड़ता है।

दर्द इंद्रियों और पदार्थ के बीच टकराव से होता है। अगर हम इन शब्दों को समझ लें, दर्द से पदार्थ आता है, पदार्थ से विचार आता है, और विचार से जाति आती है, तो हम आखिरी सच जान जाएंगे; भगवान तथागत इसी सच का प्रचार करने और जीवों को बचाने के लिए धरती पर आए थे। बुढ़ापे, बीमारी और मौत से छुटकारा पाने का एकमात्र तरीका इस सच को समझना और जन्म और कर्म से परे जाना है।

हम दुख से छुटकारा पाने के लिए इधर-उधर भटक रहे हैं। तथागत ने कहा - दुख से छुटकारा पाने के लिए, चाहे इंसान आसमान में कहीं भी हो, समुद्र के बीच में हो, पहाड़ की गुफा में हो, उससे बिल्कुल भी बचा नहीं जा सकता। दुख से छुटकारा पाने के लिए, दुख का कारण जानना होगा। कारण की असली सच्चाई का पता लगाने से ही दुख से छुटकारा पाया जा सकता है।

जोखांग मंदिर के मैदान में बैठकर गुरुजी ने मुझे लामा लामडुप की शिक्षाएं समझाना शुरू किया। मैं इनमें से कुछ शिक्षाएं समझ गया। लेकिन मेरे लिए उन्हें अनुभव करना मुश्किल था।

जोखांग स्क्वायर समय बिताने के लिए एक शानदार जगह है। तीर्थयात्री दूर-दूर से आते हैं। सब कुछ पैदल ही होता है। और यात्रा के लिए, उन्हें सब कुछ अपने साथ ले जाना पड़ता है। तो ऐसा लगता है जैसे पूरी दुनिया उनकी पीठ और कंधों पर आ गई हो। जैसे ही वे स्क्वायर में पैर रखते हैं, वे अपना सारा बोझ लेकर लेट जाते हैं, और फिर उनकी परिक्रमा और दंडी शुरू हो जाती है। वे इन ठंडे पत्थरों पर आसानी से चलते हैं। कमाल है! इसके बावजूद, ठंड उन्हें छूती नहीं है।

नोरबुलिंगका - दलाई लामा का ग्रीष्मकालीन निवास

मुझे बिना मांगे सब कुछ मिल जाता है। ल्हासा में अभी जो भी तीर्थयात्री हैं, वे जोखांग मंदिर और बाज़ार तक ही जाते हैं। और जो लोग काफ़ी हिम्मत वाले होते हैं, वे पोताला पैलेस का तीन बार चक्कर लगाने के बाद रुक जाते हैं। आजकल तीर्थयात्री पोताला पैलेस ज़्यादा नहीं जाते। इन दिनों पैलेस में अंदर जाने के लिए खास इजाज़त लेनी पड़ती है। शांति पसंद करने वाले तिब्बती आम तौर पर सभी रुकावटों से बचते हैं, और आम इजाज़त भी एक झंझट मानी जाती है।

लेकिन पहले ऐसा नहीं था। जैसे ही तीर्थयात्री जोखांग मंदिर परिसर में पहुँचते, लोग उनके पीछे-पीछे चलने लगते। वे उन्हें पोताला पैलेस और ल्हासा के दूसरे आकर्षण दिखाने के लिए उनके पीछे-पीछे चलते। गुरुजी ने कहा कि ल्हासा में गाइड सर्विस बहुत सस्ती थी। लगभग दस साल पहले, अगर वे एक दिन के लिए टट्टू किराए पर लेते और ल्हासा का पूरा चक्कर लगाने के लिए आठ आने मिलते तो वे खुश हो जाते। गुरुजी की वजह से, मैंने पोताला देखा है। मैं हर दिन जोखांग आता हूँ। हर दिन मैं खुद से सोचता हूँ कि अगर मैं किसी तरह परम पावन दलाई लामा से मिल पाता, तो ल्हासा की मेरी यात्रा हर तरह से सार्थक होती। मेरे साथी तीर्थयात्री अलग हैं, उन्हें जोखांग के अलावा कहीं और जाने की कोई इच्छा नहीं है। मैं दूसरों की तरह धार्मिक नहीं हूँ। और मुझे जोखांग मंदिर को पैसे देने की भी इच्छा नहीं है। रास्ते में चलते समय, मुझे एक सपना आया, उस सपने ने मेरे मन को भर दिया, वह संतुष्टि शायद बचकानी हो। शायद मैं वह न पाकर धन्य हूँ जिसके मैं हकदार हूँ।

ल्हासा के मंदिरों में रहने वाले लामाओं में से और बाज़ार में घूमते हुए, मैंने पाया कि मेरे बेटे की दिलचस्पी नकली लामा में ज़्यादा

थी। पिछले कुछ दिनों से, एक बात बार-बार मेरे मन में आ रही थी - काश मैं दलाई लामा से मिल पाता, काश मैं उनके दर्शन कर पाता। अगर मैं उनके दर्शन कर पाता, तो मुझे समझ नहीं आता कि क्या करूँ। मैंने गुरुजी को अपनी इच्छा बताई। हो सकता है कि मैं अपनी ज़िंदगी में फिर कभी इस दूर तीर्थस्थल पर न आऊँ। तो, एक बार आ गया, तो यह इच्छा पूरी नहीं होगी! गुरुजी ने तुरंत मेरी बात मान ली। उन्होंने कहा - दलाई लामा से मिलना मुश्किल है, इससे बेवजह परेशानी हो सकती है। क्योंकि दलाई लामा भले ही तिब्बत के हेड लामा हैं, लेकिन असल में वे राजा हैं। उनके दर्शन पाने के लिए, आपको उनके चार-पाँच दफ़्तरों के ज़रिए अर्ज़ी भेजनी पड़ती है। और आजकल, अगर दलाई लामा किसी विदेशी से मिलते हैं, तो चीनी बहुत नाराज़ हो जाते हैं। कोई भी

২০৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

किसी भी विदेशी को परम पावन दलाई लामा से मिलने से पहले लोकल चीनी अधिकारियों से इजाज़त लेनी पड़ती है। खासकर इसलिए क्योंकि मैं एक भारतीय हूँ, इसलिए यह समस्या और भी बड़ी है। लेकिन गुरुजी निराश होने वालों में से नहीं थे। उन्होंने मुझे भरोसा दिलाया कि कोई इंतज़ाम हो जाएगा। दलाई लामा सर्दियाँ पोटाला पैलेस में बिताते हैं और सर्दियों के आखिर में वे अपने गर्मियों के घर में आ जाते हैं। उनके गर्मियों के घर को नोरबुलिंगका पैलेस कहा जाता है। यह ल्हासा के पूरब में एक सबअर्ब में है - यहाँ से बस कुछ ही मील दूर।

मैं सुबह करीब 10 बजे गुरुजी के साथ निकला। ल्हासा का यह इलाका बहुत खूबसूरत है। दोनों तरफ बहुत सारे खेत हैं, और खेत घरों से भरे हुए हैं। एक घंटे में हम एक अमीर इलाके में पहुँच गए। दो-मंज़िला और तीन-

मंज़िला बंगलों और पगोडा स्टाइल के घरों को देखकर ही आप समझ सकते हैं कि यह बहुत खुशहाल इलाका है।

गुरुजी ने मेरा ध्यान थोड़ी दूर कुछ घरों की तरफ़ दिलाया और कहा, "ये जो घर तुम देख रहे हो, ये सब दलाई लामा की पर्सनल प्रॉपर्टी हैं।" हम एक बड़ी दीवार के पास पहुँचे। दरवाज़े के पास दो सैनिक खड़े थे, हमने उन्हें देखा और सिर झुकाकर नमस्ते किया। इस दीवार के अंदर मशहूर नोरबुलिंगका पैलेस है। गुरुजी इस पैलेस के एक एम्प्लॉई को जानते हैं। गार्ड्स की इजाज़त से हम अंदर वाले ऑफिस में गए। वहाँ हमने अपने नाम लिखे और सर्च ऑफिस के बारे में पूछा, लेकिन उन्होंने हमें एक घर दिखाया और कहा, "उस घर में खाने-पीने का सामान है, तुम जा सकते हो।"

खा-ओचे नोरबुलिंगका पैलेस के माली में से एक है। हम एक छोटे से लकड़ी के घर पर पहुँचे और दरवाज़ा खटखटाया। अंदर से एक महिला बाहर आई। हमें देखकर वह रुक गई। फिर, खुद को संभालते हुए उसने पूछा:

- आप क्या चाहते हैं?

-क्या खा-ओ-जी घर पर हैं?

-नहीं, वह घर पर नहीं है, लेकिन उसका बेटा वहीं है, रुको, मैं उसे फोन करके बताता हूं।

एक नौजवान घर से बाहर आया। लड़का बहुत लंबा और चौड़ा था, उसने फुल पैंट पहनी हुई थी और सिर पर साहिबी तुपाई थी। तिब्बतियों को साहिबी तुपाई बहुत पसंद है। जैसे ही वह हमारे सामने आया, गुरुजी ने उसे अपना परिचय दिया और कहा-

-मैं तुम्हारे पापा का पुराना दोस्त हूँ, उनसे मिलने आया हूँ। वे कहाँ हैं?

-ओह, क्या तुम अपने पिता के बारे में पूछ रहे हो? वह झील पर गए हैं। चलो तुम्हें वहाँ ले चलते हैं।

खा-ओंगच का बेटा, जिसका नाम चभान था। वह हमें अपने साथ ले गया। उस मौके पर, मैंने नोरबुलिंगका पैलेस देखना शुरू किया। पत्थर और सीमेंट पर

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২০৫

गंगटोक में लकड़ी के घर, सिक्किम के महलों जैसे। सुंदर लकड़ी का काम, जिस पर रंगों का छींटा है। यह पोटाला जितना आकर्षक नहीं है। नोरबुलिंगा का मुख्य आकर्षण यहाँ के सुंदर बगीचे हैं। आस-पास कई तरह के फूल और फलों के पेड़ हैं। हर पेड़ बहुत ध्यान से लगाया गया है।

इसे महल के बजाय गार्डन हाउस कहना ज़्यादा अच्छा होगा। थोड़ी देर में हम एक झील पर पहुँचे। झील बहुत बड़ी नहीं है, यह कोलकाता के ईडन गार्डन की झील जैसी होगी। यह अलग-अलग तरह के बसंत के पेड़ों से घिरी हुई है, कमल के पत्ते झील में साँप की तरह तैर रहे हैं, और लगभग एक महीने में फूल खिलेंगे। मैंने तिब्बत में पहली बार पानी वाले कमल के पेड़ देखे हैं। बेशक, इतनी ठंड में उन्हें ज़िंदा रखना मुश्किल है। मुझे यहाँ पानी में हंस देखकर सबसे ज़्यादा हैरानी हुई। जब मैंने

भबन से पूछा, तो उन्होंने बताया कि हंस तिब्बत से हैं। जब झील का पानी जम जाता है, तो वे झील के पास लकड़ी के घरों में रहते हैं, लेकिन तिब्बत की दूसरी झीलों में पाए जाने वाले हंस और कई तरह की बत्तखें कड़ाके की सर्दी में भारत की तरफ उड़ जाती हैं। रूस के उत्तर (साइबेरिया) से भी कई बत्तखें सर्दियों में ल्हासा आती हैं। पूरे तिब्बत में से, ल्हासा उत्तरी ध्रुव के पक्षियों का पसंदीदा लगता है। कड़ाके की सर्दी में भी, की नदी के किनारे कुछ बत्तखें देखी जा सकती हैं। सर्दियों से ठीक पहले, जब हंस झुंड में उड़ जाते हैं, तो वे सच में बहुत सुंदर लगते हैं।

मैं सिर्फ़ सोच सकता हूँ, लेकिन इससे ज़्यादा कुछ नहीं। क्योंकि मैंने अभी तक उड़ते हुए हंसों का झुंड नहीं देखा है। हंस झील पर शांति से घूम रहे हैं। झील के साफ़ पानी में उनकी परछाई दिख रही है। थोड़ा आगे बढ़ने पर, मैंने देखा कि कुछ लोग बगीचे में काम कर रहे हैं। हमें देखकर, उन्होंने काम करना बंद कर दिया और हमारी तरफ़ देखने लगे।

उनमें से एक बूढ़ा आदमी हमारी तरफ आया, फिर गुरुजी को ध्यान से देखा जैसे उसने अचानक उन्हें पहचान लिया हो। वह आगे आया और साधु बाबा को गले लगा लिया, जैसे उसे बहुत समय बाद अपना कोई रिश्तेदार मिला हो। मैं खा-ओच को जान गया। गुरुजी ने मुझे दिखाया और कहा कि वह मेरा शिष्य है और उसने मौन व्रत लिया है। खा-ओच ने मेरे सिर को छुआ और प्यार से और हिम्मत बढ़ाते हुए कहा, “बहुत अच्छा रास्ता, बहुत अच्छा रास्ता।” गुरुजी ने उससे कहा कि मुझे बगीचा देखना बहुत पसंद है, और अगर मुझे किसी तरह दूर से दलाई लामा की एक झलक मिल जाए, तो मैं हमेशा उनका शुक्रगुजार रहूंगा। यह सुनकर वह सज्जन बहुत हिम्मत वाला था। उसने हमें भरोसा दिलाया और कहा, “कोई बात नहीं, चलो पहले हम तुम्हें बगीचा ठीक से घुमाते हैं।” यह कहकर, उसने झील के ठंडे पानी में हाथ-

मुंह धोए और तैयार हो गया। मैं चुप रहा, गुरुजी मेरे लिए उसका अनुवाद करने लगे।

২০৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

यह गार्डन सच में अजीब है। नोरबुलिंगका पैलेस के इस गार्डन को ज्वेल पार्क कहा जाता है। ऐसा गार्डन दुनिया में सिर्फ़ तिब्बत में ही क्यों है? दुनिया की छत पर इस सर्दी में भी, इस गार्डन में सारे फूल ऐसे खिलते हैं जैसे जादू से। खाओ-ओचे गार्डन के एक सुपरवाइज़र को इस पर बहुत गर्व है। वह एक बार कलिम्पोंग और दार्जिलिंग जा चुके हैं और उन्होंने इसके बारे में खास सबक सीखे हैं। गार्डन बहुत बड़ा है, इसमें आपको दुनिया के लगभग सभी तरह के फूल मिल सकते हैं, गुलाब, वॉटर लिली, डहलिया से लेकर बोगनविलिया, ज़िननिया, लिली तक। सभी दलाई लामा फूलों के फ़ैन हैं। हर बार जब कोई नया दलाई लामा चुना जाता है, तो वह इस गार्डन में कुछ नया जोड़ता है, यह उनका पर्सनल घर भी है। इसलिए, गार्डन में दूर से जो भी महंगे बंगले याद आते हैं, वे सभी किसी न किसी दलाई लामा की पर्सनल प्रॉपर्टी हैं। उनके गुज़र जाने के बाद, इन घरों को म्यूज़ियम की तरह मेंटेन किया जाता है, सिर्फ़ महंगे फ़र्नीचर और मूर्तियों को ही नए घर में लाया जाता है।

जैसे ही हम एक खाली जगह से गुज़रे, खाओ ने बड़े गर्व से कहा, "आप कुछ बड़े लोगों को तीर-कमान चलाते हुए देख रहे हैं। दाईं ओर जो आदमी हैं, वे अभी के दलाई लामा के साले हैं। दलाई लामा की माँ, भाई और बहनें सब यहीं रहते हैं। उनके रहने के लिए अलग-अलग जगहें हैं। दलाई लामा काम के प्रेशर में पोटाला पैलेस में ही रहते हैं। उनके पास वहाँ घूमने- फिरने का टाइम नहीं है, इसलिए जब वे यहाँ आते हैं, तो उनकी साँस फूल

जाती है। यह ज्वेल पार्क तिब्बत का स्वर्ग है। नोरबुलिंगका का फलों का बगीचा भी बहुत सुंदर है। यह सेब, नाशपाती, बेर, चेरी, संतरे वगैरह पेड़ों से भरा है। ये सभी पेड़ कलिम्पोंग, कुर्सियांग से आते हैं। बिलिटी फूल के बीज सीधे यूरोप से आते हैं, और ब्रिटिश-इंडिया ट्रेड मिशन इसका सोर्स है। इस बगीचे के एक हिस्से में 'डॉग गार्डन' है जहाँ दलाई लामा के पालतू बिलिटी कुत्तों को रखा जाता है। ब्रिटिश सरकार ने पहले के दलाई लामा को दो मोटर कारें गिफ्ट की थीं। वहाँ से एक बड़ा अधिकारी गया था। कलकत्ता जाकर मोटर मैकेनिक्स सीखा, लेकिन इतना सब होने के बाद भी, सही सड़कें न होने की वजह से उस महंगी कार को बाहर ले जाना मुमकिन नहीं था। कार तेरहवें दलाई लामा की पर्सनल प्रॉपर्टी थी। अभी के दलाई लामा चौदहवें दलाई लामा हैं। आजकल, हनांदा की दौलत की वजह से, कारों के लिए कुछ सड़कें ठीक हैं, शायद वह एक दिन उनका इस्तेमाल कर सकें।

जब हम ऐसे ही नोरबुलिंगका के बगीचे में घूम रहे थे, तो खा-ओचे ने अचानक हमें रोका और चेतावनी दी - तुम्हारी किस्मत बहुत अच्छी है, चेन-रे-जी तुमसे खुश हैं। यह कहकर वह सज्जन सीधे ज़मीन पर साष्टांग प्रणाम करके लेट गए, उनके इशारे पर हमें भी झुकना पड़ा। जब हमने साष्टांग प्रणाम किया, तो उन्होंने हमें दिखाया कि वहाँ, महान चेन-रे-जी जा रहे हैं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২০৭

चेन-रे-जी, दलाई लामा। जब वे गुज़रे, तो तिब्बती रिवाज के अनुसार, सब लोग रुक गए और सड़क के दोनों तरफ हाथ जोड़कर खड़े हो गए, और हम भी सड़क छोड़कर बगीचे में खड़े हो गए। दलाई लामा का छोटा सा जुलूस

धीरे-धीरे आगे बढ़ा। कुल दस लोग थे, परम पावन दलाई लामा को पहचानने में कोई मुश्किल नहीं हुई। दलाई लामा के आगे दो बड़े तिब्बती गार्ड थे और उनके पीछे आठ लोग थे, बीच में चमकीले नारंगी कपड़े पहने युवा साधु, दलाई लामा थे। वे चुपचाप हमारे पास से गुज़र गए। ऐसा लगा कि दलाई लामा ने हमें देखा भी नहीं। वे बहुत छोटे थे, मुझे बाद में पता चला कि वे मुझसे सिर्फ़ पाँच साल बड़े थे। यानी, उनका जन्म 1935 में हुआ था। हमारी आँखों के सामने, तिब्बत के दिव्य धर्मराज गुज़र गए, इससे पहले कि हम समझ पाते, यह एक सपने जैसा हुआ। दलाई लामा के मुंडे हुए सिर पर बहुत छोटे-छोटे बाल उग आए हैं - उनका चेहरा दोहरा है, उनके हाव-भाव बिल्कुल बुद्ध जैसे हैं, ऐसा लगता है कि उन्होंने हर तरह के सुख-दुख पर विजय पा ली है।

दलाई लामा के जाने के बाद, हम सड़क से वापस चले गए। जब हमने इस मौके के लिए खा-ओ-चे को धन्यवाद दिया, तो उन्होंने थोड़े गर्व से जवाब दिया, "और फिर भी, हम उन्हें दिन में दो बार देख रहे हैं," और आम तीर्थयात्रियों को दीवार का चक्कर लगाने के बाद भी उनकी एक झलक नहीं मिलती। यह सब कर्म और उनकी कृपा का नतीजा है, यह कहकर उन्होंने धर्मराज को प्रणाम किया। पोताला पैलेस और नोरबुलिंगका पैलेस, दोनों ही आम तिब्बतियों के लिए बहुत पवित्र जगहें हैं। नोरबुलिंगका पैलेस में परम पावन दलाई लामा का आना-जाना बहुत आम है। वह इस घर से अपने घर पैदल जाते हैं, बेशक, उनके साथ हमेशा दो या चार बॉडीगार्ड और कुछ बड़े लामा होते हैं। तिब्बत के अलग-अलग प्रांतों से तीर्थयात्री हर दिन परम पावन दलाई लामा को देखने के लिए आते हैं। अगर वे कई दिनों तक दीवार के पास बैठे रहते और उनके दर्शन नहीं होते, तो वे सफेद दीवार के चारों ओर घूमते, छड़ी काटते और अपनी इच्छा बताते और चले जाते। इस हिसाब से, मुझे कहना होगा कि मेरी किस्मत बहुत अच्छी थी। हम बगीचे में घूमने लगे, नोरबुलिंगका पैलेस की अलग-अलग बिल्डिंग्स देखने लगे। खा-ओचे ने हमें नोरबुलिंगका पैलेस के बारे में खुद ही और भी

बहुत सी जानकारी देनी शुरू कर दी। बेशक, गुरुजी को उसमें कोई दिलचस्पी नहीं है, मुझे जानने में ज़्यादा दिलचस्पी है। अगर मौनी- बाबा न होते, तो मैं खा-ओचे से नोरबुलिंगका पैलेस के बारे में सब कुछ जानने के लिए सवाल पूछता रहता। गुरुजी ने मुझे इस बारे में एक बहुत अच्छी सलाह दी - हमें वही मिलता है जो आसानी से मिलता है, चाहे वह खाना हो या जानकारी, यह सभी मामलों में एक जैसा है।

मैंने परम पावन दलाई लामा को सिर्फ़ कुछ मिनटों के लिए देखा। इससे मेरा मन शांत हो जाना चाहिए था, लेकिन इसके बजाय, मैं उनके बारे में और जानना चाहता था।

২০৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं बेचैन हो गया। हमने लगभग पूरा दिन खा-ओचे लामा के साथ नोरबुलिंगका पैलेस में घूमते हुए बिताया। उन्होंने हमें दोपहर में खाना खिलाया। दोपहर में, हम उनका शुक्रिया अदा करते हुए और बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुए चले गए। दीवारों के बाहर आकर, हमने चेन-रे-जी के महल को बार-बार देखा। पोटाला में, मुझे कला और धन से भरे एक महान रईस का आभास हुआ। पोटाला की आत्मा हमेशा के लिए सोने और जवाहरात में कैद लगती है। और नोरबुलिंगका ठीक इसका उल्टा है, यहाँ कोई भी पवित्र आत्मा की आज़ाद हरकत महसूस कर सकता है।

235

दलाई लामा

২১০

ल्हासा का मार्केट बहुत अच्छा है, मैं पहले ही लिख चुका हूँ कि यह तिब्बत का दिल है। यहाँ की मेन रोड को 'सिक्स कॉर्नर्स रोड' कहते हैं। इस रोड के दोनों तरफ के घर बहुत बड़े हैं, कुछ घर पुराने हैं। ल्हासा की यही एक रोड है जिसकी तुलना कोलकाता की रोड से की जा सकती है। इसी रोड पर उनका सालाना मेला लगता है। मैं हर सुबह लामाओं के साथ जोखांग मंदिर आता हूँ, फिर सुबह की पहली पूजा के बाद चुपचाप शहर की तरफ निकल जाता हूँ! उस दिन, सिक्स कॉर्नर्स रोड पर चलते हुए, मेरी मुलाकात एक सज्जन से हुई। मुझे लगता है कि वह किसी अमीर परिवार से हैं। मैं सड़क के किनारे एक बड़े घर के दरवाज़े के पास तिब्बती और इंग्लिश में लिखी एक नेम प्लेट देखकर हैरान रह गया। उस पर इंग्लिश में लिखा था: ट्रेड एजेंट मिस्टर चिमी त्शेवांग। आई.एस.सी., कलकत्ता। नाम देखकर मुझे अचानक कोलकाता याद आ गया, मुझे लगता है कि मैं अनजाने में वहीं खड़ा था। और उसी पल, एक नौजवान ने दरवाज़ा खोला और अंदर से बाहर आया। गोरा रंग, नेपालियों जैसा टाइट पजामा पहने हुए। एक महंगा कोट और एक नेपाली पगड़ी। उम्र में छोटा, दरवाज़े के सामने एक विदेशी लामा को देखकर मैं थोड़ा हैरान हुआ, फिर उसने तिब्बती में पूछा - तुम्हें क्या चाहिए? मैंने उसे जवाब नहीं दिया। वह थोड़ी देर चुप रहा और फिर नेपाली में पूछा, क्या तुम तीर्थ यात्रा करने आए हो? मैं इस बार चुप नहीं रहा और सीधे जवाब दिया - हाँ, मैं एक तीर्थयात्री हूँ। लगता है कि वह मेरी ही उम्र का होगा। तो काफी देर बाद, मैं बात करने का लालच नहीं रोक सका। मैंने सड़क पर खड़े होकर बात करना शुरू कर दिया। लड़के को देखकर मुझे बहुत कॉन्फिडेंस आया तो मैंने उसे सीधे बता दिया। यानी, मैं एक तीर्थयात्री हूँ, मौनी बाबा, हो सकता है मैं ज़िंदगी में फिर कभी ल्हासा न आऊँ, इसलिए मैं कभी-कभी अकेले निकल जाता हूँ। ल्हासा में घूमने से ही बहुत सारी जानकारी मिल सकती है। वह मेरी बात सुनकर बहुत

खुश हुआ, ऐसा लगा जैसे उसे कुछ नया पता चला हो। वह तुरंत मुझे घर के अंदर ले गया और एक अच्छे से सजे हुए कमरे में बिठा दिया। फिर जब मैंने उसे बताया कि मैं असल में कोलकाता का लड़का हूँ, तो वह मुझे गले लगाना चाहता था। जान-पहचान के आधे घंटे के अंदर ही हम करीब आ गए। मिस्टर चिमी त्शेवांग उस लड़के के पिता हैं। एक बिज़नेसमैन। उनका कलिम्पोंग, सिलीगुड़ी और कोलकाता में बिज़नेस है। लड़के का नाम येशी-त्शेवांग है। वह सर्दियों में कलिम्पोंग से पढ़ाई करता है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

वह दो महीने के लिए देश आया था। मैं उसके तीन छोटे भाइयों, दो बहनों और उसकी माँ को एक-एक करके जानने लगा। उसकी माँ ने प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा, "यहीं रहो और हमारे साथ खाओ-पिओ।" मुझे एतराज़ करने की कोई वजह नहीं है। असल में, मैं एक अच्छे तिब्बती परिवार से मिलकर खुद को खुशकिस्मत महसूस कर रहा था।

येशी के पिता एक बिज़नेसमैन थे, दो चाचा सेक्रेटेरिएट में काम करते थे। दादा एक मशहूर लामा थे। और दादा ल्हासा के मशहूर आर्टिस्ट थे। मैंने उनसे अपनी जान-पहचान साधु बाबा के अलावा किसी और से शेयर नहीं की। इसी परिवार से मुझे दलाई लामा की हिस्ट्री पता चली। वे मुझे दलाई लामा के बारे में डिटेल्स बताकर और भी खुशकिस्मत महसूस करते थे। इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता था कि मेरी जानकारी बाहर न जाए। क्योंकि हैंड में जासूसों की कोई कमी नहीं है, खासकर अगर उन्हें किसी तरह पता चल गया कि मैं इंडियन हूँ, तो मेरे आस-पास रहने वाला पूरा तीर्थयात्री ग्रुप बड़ी मुश्किल में पड़ जाएगा। येशी की दिली इच्छा थी कि वह एक बार कलकत्ता ज़रूर जाए। मैंने उसे भरोसा दिलाया कि वह हमारे घर में एक दोस्त की तरह रह सकता है। मैं बता नहीं सकता कि इस छोटे से भरोसे से वह कितना खुश हुआ।

मैं परम पावन दलाई लामा के बारे में पूरी जानकारी देने के लिए इस परिवार का आभारी हूँ, जिसे मैं अपनी डायरी के पन्नों में लिख रहा हूँ। येशी ने मुझे डायरी में लिखने के लिए दो नई नोटबुक, एक पेंसिल और एक छोटा चाकू दिया।

तिब्बत में, खासकर ल्हासा में, दलाई लामा के कई नाम हैं। तिब्बती लोग इसे ता-ले-लामा बोलते हैं। मंगोल चीनी लोगों ने पहले दलाई लामा को इसी नाम से सम्मानित किया था। तिब्बती लोग दलाई लामा को कियाम-गोन/रिम-पो-चे कहते हैं, जिसका मतलब है रक्षक। कई लोग कहते हैं गी-वा- रिम-पो-चे, जिसका मतलब है स्वामी; बुक-अंतर्यार्मि। कियाम-गोन-बुक का मतलब है आत्मा का स्वामी; पोताला में, उन्हें आम बोलचाल में लाम-पोन-पो कहा जाता है, जिसका मतलब है मुख्य शासक लामा; कुंदुन का मतलब है सब कुछ जानने वाला; चेन-रे-जी-वज्रपाणि।

दलाई लामा ज़िंदा हैं। वे इस दुनिया में कोई काम नहीं करते, वे खुद बुद्ध के अवतार हैं। इसलिए, वे लोगों की सेवा करने के लिए बार-बार जन्म लेते हैं। दलाई लामा तिब्बत के मुख्य पुजारी और शासक हैं। वे ही पूरे तिब्बत के मालिक हैं। वे इंसान के रूप में भगवान हैं। यह परंपरा पांचवें लामा के समय से चली आ रही है, यानी 1641 AD से।

दलाई लामा की मौत के बाद, उनकी आत्मा किसी पवित्र वंश में दोबारा जन्म लेती है। नए बच्चे को कई सबूत देने होते हैं कि वह असली दलाई लामा है। आमतौर पर, अपनी मौत से पहले, बूढ़ा दलाई लामा अपने सबसे करीबी लोगों को बताता है कि वह कहाँ दोबारा जन्म लेगा। वह अक्सर सीधे तौर पर नहीं, बल्कि इनडायरेक्टली अपना इरादा बताता है। इससे भविष्य के दलाई लामा को ढूंढना आसान हो जाता है। हालाँकि, यह मामला

बहुत कॉम्प्लिकेटेड है - कोई भी बूढ़े दलाई लामा को उनकी मौत के समय या उनकी मौत के बिस्तर पर नहीं बता सकता।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২১১

वह यह पूछने की हिम्मत नहीं कर सकते कि उनका अगला जन्म कहाँ होगा। कई लोगों का मानना है कि इसका मतलब यह हो सकता है कि वे अब उनकी मौजूदगी नहीं चाहते। अगर किसी वजह से उन्होंने अपनी मौत से पहले अपने अगले जन्म की जगह का पता नहीं दिया, तो देश के अनगिनत नए बच्चों में से परम पावन दलाई लामा कहाँ पैदा हुए थे या कहाँ होंगे, इसकी ज़िम्मेदारी देश के समझदार लामाओं और पब्लिक हस्तियों पर आ जाती है। बेशक, तिब्बत में सिर्फ़ दलाई लामा ही नहीं, बल्कि कई ऊँचे पद वाले लामा भी ऐसे ही पुनर्जन्म लेते हैं।

दलाई लामा की मौत के बाद, नए जन्मे दलाई लामा को ढूंढने की ज़िम्मेदारी मुख्य रूप से राज्य के मंत्रियों और तीन गुफाओं के मुख्य पुजारियों पर आ गई। तीन गुफाओं (ड्रेपुंग, सेरा, गंडेन) के पुजारियों ने मिलकर राज्य के सबसे अच्छे साधुओं से सलाह ली। दलाई लामा की मौत का समय और मौसम देखकर, साधुओं ने बड़े-बड़े अनुष्ठान किए और ध्यान में बैठ गए। उस ध्यान में बैठे-बैठे, या किसी दिव्य भविष्यवाणी से या सपने में, उन्हें पता चल गया कि उनके होने वाले दलाई लामा का जन्म कहाँ होगा। राज्य के मुख्य साधुओं ने यह गुप्त खबर राज्य के मंत्रियों और तीन गुफाओं के प्रमुखों को बताई। इस समय, मंत्रियों की काउंसिल की सलाह पर एक सर्च कमेटी बनाई गई। राज्य के सबसे अच्छे लामाओं को इस सर्च कमेटी में रखा गया। वे अलग-अलग ग्रुप

में बंट गए और साधुओं के कहने पर पूरे तिब्बत में फैल गए। इस तरह दलाई लामा की मौत के बाद उनके दोबारा जन्म की तलाश शुरू हुई।

दलाई लामा के सिंहासनारूढ़ होने के मौके पर मंत्रिपरिषद उनके प्रतिनिधि के तौर पर राज्य पर शासन करती है। सम्ये गुफा के ज्योतिषियों और ज्योतिषियों के नाम बहुत मशहूर हैं। वे यह भी ठीक-ठीक बता सकते हैं कि नवजात शिशु किन निशानों के साथ पैदा होगा। सम्ये गुफा के ज्योतिषी ध्यान से देखते हैं कि दलाई लामा की आत्मा ने पुराना शरीर छोड़कर फिर से नया शरीर कहाँ लिया है। तांत्रिक संत भी इस बारे में बहुत जानकार होते हैं। ल्हासा के मुख्य ज्योतिषी का नाम नेचुंग है। नवजात शिशु पहले के दलाई लामा के कई निशानों और खूबियों के साथ पैदा होते हैं। जैसे, उनके पैरों पर बाघ की खाल के निशान, आँखें और माथा ऊपर की ओर खिंचा हुआ, कान आम बच्चों से बहुत बड़े, कंधों पर तीर के निशान, हाथों में शंख या बिजली के निशान। भले ही ये सभी निशान हर दलाई लामा के शरीर पर न मिलें, लेकिन ऐसे तीन या चार निशान मिल सकते हैं।

जब नए जन्मे बच्चे को इन निशानों और उसके कैरेक्टर को देखकर दलाई लामा के लिए सही माना जाता है, तो पहले के दलाई लामा की इस्तेमाल की हुई कुछ चीज़ों को दूसरे लोगों की चीज़ों के साथ मिलाकर बच्चे के सामने रखा जाता है। बच्चा अक्सर दलाई लामा की चीज़ों को छूता है, दूसरी चीज़ों में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाता। बच्चे, यानी 13 वें दलाई लामा ने वज्र चुना। जब बच्चे को महल में लाया गया, तो उसने आसानी से अपनी चीज़ें देखीं।

২১২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

पहचान सकते हैं। चार या पाँच साल का बच्चा भी अक्सर अपना पसंदीदा धर्मग्रंथ चुनकर उसे पढ़ना शुरू कर देता है। इन सभी सबूतों के बाद, इसमें कोई शक नहीं है कि असली दलाई लामा का पुनर्जन्म इसी बच्चे के ज़रिए हुआ है। अब उस कहानी पर आते हैं कि मौजूदा, यानी चौदहवें दलाई लामा को कैसे चुना गया। यह घटना आज की दुनिया के साइंटिस्ट्स को अजीब लगेगी। साइंटिस्ट्स आध्यात्मिक दुनिया के काम करने के तरीके को नहीं जानते। इसलिए, उनके पास इस घटना को अपने मैकेनिकल ज्ञान में लाकर वेरिफाई करने की ताकत नहीं है। लेकिन फिर भी, यह सच है।

13 वें दलाई लामा, थुप्टेन ग्यात्सो, तिब्बत में एक प्यारे इंसान थे। उन्होंने लंबे समय तक राज किया और तिब्बत में कई सामाजिक और राजनीतिक सुधार किए। पोटाला पैलेस में उनकी कब्र अब सबसे ज़्यादा पूजनीय और शानदार है। 1933 में उनका निधन हो गया। उनकी मौत के तुरंत बाद एक खास काउंसिल बनाई गई। यह काउंसिल अगले दलाई लामा के चुने जाने तक राज्य पर राज करेगी।

राज्य के मुख्य भविष्य बताने वालों, ज्योतिषियों और मुख्य लामाओं को पोताला पैलेस में बुलाया गया। उन्हें नए दलाई लामा को खोजने का काम सौंपा गया था। बदकिस्मती से, पहले के दलाई लामा ने यह नहीं बताया था कि उनका दोबारा जन्म कहाँ होगा। इसलिए ज्योतिषियों के लिए यह एक बड़ी समस्या थी। उन्होंने ध्यान लगाकर और उनकी आत्मा से बात करके समस्या को हल करने की कोशिश की। उसी समय, ल्हासा के उत्तर-पूर्वी आसमान में अचानक पतझड़ जैसा एक हल्का बादल दिखाई दिया। उसके आकार और स्वभाव को देखते हुए, ज्योतिषियों ने कहा कि परम पावन चेनरेज़िग ठीक उसी इलाके में पैदा होंगे जहाँ बादल दिखाई दिया था। राज्य के मुख्य भविष्य बताने वाले भी विद्वानों के हिसाब से सहमत थे।

13 वें दलाई लामा की मौत के बाद, उनके शरीर को नोरबुलिंगका पैलेस लाया गया। वहां उनके प्यारे सिंहासन पर उनके शरीर को रखने के बाद, उनका चेहरा कथित तौर पर उसी दिशा में घुमाया गया। इसलिए, विद्वानों ने इन दोनों घटनाओं को बहुत महत्वपूर्ण माना। लेकिन इसके बावजूद, ज्योतिषियों ने और जानकारी का इंतज़ार किया। इस तरह, लगभग दो साल और बीत गए। ज्योतिषियों के अनुसार, दलाई लामा के पुनर्जन्म के लिए यह सही समय था। उनकी आत्मा लगभग दो साल तक स्वर्गीय आनंद का आनंद लेगी और फिर नीचे उतर जाएगी। 1935 में, ज्योतिषी और ज्योतिषी एक साथ आए, फिर वे तिब्बत की सबसे पवित्र झीलों में से एक पर पहुंचे, यह झील ल्हासा से लगभग नब्बे मील उत्तर में स्थित है, इसका नाम लामोय-लत्सो है।

हिंदुओं के मानस सरोवर की तरह ही तिब्बतियों का लामे-ल्हासा सरोवर भी बहुत पवित्र तीर्थस्थल है। पुराने समय से ही ऋषि-मुनि यहां तपस्या करने आते रहे हैं। ज्योतिषी इस झील के शीशे जैसे पानी में भूत, भविष्य और वर्तमान देखते हैं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২১৩

वहाँ वे फिर से चेनरेज़िग पर ध्यान में बैठ गए। कई लोगों का मानना है कि उस झील की गहराई में कई जागृत देवी-देवता रहते हैं; केवल योग्य ऋषि ही उन्हें देख सकते हैं।

ध्यान, प्रार्थना और पूजा के बाद, उन्हें अचानक झील के पानी में एक चमत्कार दिखाई दिया। झील के बीच से तीन शब्द आसमान की ओर उठे - 'A' 'K'

और 'M'। वे अक्षर थोड़ी देर के लिए बुझ गए और फिर दीपक की रोशनी की तरह। पहले तो विद्वानों ने सोचा कि ये शब्द कोई मंत्र होंगे, लेकिन ठीक उसके बाद, झील के पानी में एक तस्वीर साफ तैरने लगी, एक गुफा की साफ तस्वीर, गुफा का ऊपरी हिस्सा चमकदार सुनहरा और हरा था, और उसके बगल में हरे रंग की टाइलों की छत वाला एक फार्म हाउस था। विद्वान और लामा सभी हैरानी से उस तरफ देखने लगे। एक तस्वीर उनकी आंखों के सामने तैरती और फिर डूब जाती। वे सभी इस चमत्कार का अनुभव लेकर लौटे, फिर ज्योतिषी फैसले के लिए ल्हासा में बैठे। भविष्य बताने वाले अपनी लीनियर थ्योरी में डूब गए। उन्हें पक्का फैसला करने में एक और साल लग गया। फिर एक जांच काउंसिल बनाई गई। उस काउंसिल के सदस्य सभी ल्हासा के ऊंचे पद वाले और ऊंचे पद वाले लामा थे। काउंसिल के सदस्यों के तहत अलग-अलग खोजी दल बनाए गए। वे सभी अलग-अलग ग्रुप में बंटकर दलाई लामा की तलाश में निकल पड़े। लामोय-लात्सो झील की चमत्कारी घटना को उन्होंने बहुत ध्यान से सीक्रेट रखा।

ऐसा ही एक एक्सपीडिशन ल्हासा के नॉर्थ-ईस्ट में डोखम ज़िले के तकस्टार गांव पहुंचा। एक्सपीडिशन के लीडर, लामा, मशहूर कुम्मुम गुफा को देखकर हैरान रह गए। गुफा बिल्कुल झील पर तैरती हुई पेंटिंग जैसी लग रही थी, और उसके बगल में हरी छत वाला एक फार्महाउस था, ठीक वैसा ही जैसा उन्होंने देखा था।

सर्च पार्टी के लीडर, लामोय-लात्सोय, स्कॉलर्स और कैडर के साथ थे। यह सीन देखकर वह बहुत खुश हुए। उन्होंने अपनी पार्टी से एक जवान लामा को उस फार्महाउस में भेजा। जवान लामा ने पूछताछ की और लौटकर उन्हें बताया कि उस घर में बहुत से बच्चे और लड़कियां हैं, जिनमें सबसे छोटा लगभग एक साल का था। पार्टी के लीडर ने उनकी बातें सुनीं और उन्हें मन ही मन गिना, फिर बिना कुछ कहे, वह रात की तरह वहां गुफा में पनाह ले ली। कुम गुफा बौद्ध तांत्रिकों के लिए बहुत पवित्र है।

यहां कई लामाओं ने ध्यान के ऊंचे रास्ते पर निर्वाण पाया है और यह अपनी तपस्या और शिक्षा के लिए भी बहुत मशहूर है। कुम गुफा अपने मौन व्रत के लिए भी बहुत मशहूर है। पुराने समय में, यहां के कुछ लामा सिद्धि मार्ग की ऊंचाइयों तक पहुंचे और पूरे देश में अपना संदेश फैलाया। आज भी, कई लामा भूत-सिद्धि और निर्वाण, इन दो कामों के लिए यहां आते हैं। कुंबुम गुफा के लामाओं ने सर्च पार्टी का स्वागत किया। यह उस गुफा में था

২১৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

खेत का सबसे बड़ा बेटा मिल गया। छोटा भाई करीब दो साल का था। आगे कोई बातचीत नहीं हुई।

अगले दिन, सर्च पार्टी के लीडर ने एक आम नौकर की तरह फटे-पुराने कपड़े पहने, और बाकी पार्टी ने बहुत महंगे कपड़े पहने, और वे सब एक साथ फार्म हाउस आए। घर का मालिक बहुत अमीर नहीं था, बल्कि एक मिडिल क्लास परिवार था। वह याक, मुर्गियां पालता था और थोड़ी ज़मीन पर खेती करके गुज़ारा करता था। सुबह, वह लामाओं के एक ग्रुप को घर आते देखकर बहुत हैरान हुआ, और साथ ही मेहमानों की सेवा करके खुश भी हुआ। उस दिन, सर्च पार्टी के एक नौकर ने लीडर के कपड़े पहने थे, घर के मालिक ने उन्हें आदर से प्रणाम किया और घर के अंदर ले आया। कुछ बातों के बाद, लामा उसके छोटे बेटे को देखना चाहते थे। पिता का सीना गर्व से चौड़ा हो गया। उसने सोचा कि उसके बच्चे को आशीर्वाद देने के लिए बुलाया जा रहा है। उसकी पत्नी अपने दो साल के बेटे को गोद में लेकर वहाँ पहुँची।

ग्रुप का असली लीडर सबके पीछे था, नौकर की तरह चुप। बच्चे ने सबको देखा और सीधे ग्रुप के असली लीडर के पास गया, जो नौकर के कपड़े पहने हुए था। उसने उसका हाथ पकड़ा और कहा, "मुझे अपनी बाहों में ले लो।" बच्चे का एक्सप्रेशन देखकर पिता तैयार नहीं हुआ, और उसने ग्रुप के लीडर को ज़बरदस्ती हाथ पकड़ा और कहा, "हे प्रभु, बुरा मत मानना, बच्चे को अपनी बाहों में ले लो और उसे आशीर्वाद दो।" उसकी बातें सुनकर सब चुप रहे, लेकिन बच्चा आगे आया और अपने पिता से कहा, "

-नहीं, पिताजी, मैं सही कह रहा हूँ - मैं उनकी गोद में चढ़ जाऊँगा। वह आदमी सबसे अच्छा है - गुफा का महान संत।

बच्चे की आधी-अधूरी आवाज़ में यह सुनकर सब हैरान रह गए। तभी ग्रुप का असली लीडर नौकर के भेष में आगे आया। उसे देखकर बच्चे ने फिर गुज़ारिश की:

-अपने गले का वह हार मुझे दे दो।

"क्यों, तुम इसका क्या करोगे?" बड़े लामा ने पूछा।

-मैं इसे अपने गले में पहनूंगा।

बच्चे की बातें सुनकर, नौकर जैसा ग्रुप लीडर अब शांत नहीं रह सका। उसने बहुत खुशी से बच्चे को दोनों हाथों से गले लगा लिया। फिर उसने सब कुछ बताया - बच्चे की बातें सही थीं; वह ग्रुप लीडर था, सबसे अच्छी गुफा का हेड लामा और केओट-सांग-रिम-पो-चे था। और जो हार उसने पहना था, वह उसे बहुत पहले दलाई लामा ने दिया था। साधारण कपड़े पहनने के बावजूद, बच्चे को बेवकूफ बनाना मुमकिन नहीं था क्योंकि यह बच्चा

असली दलाई लामा था। इस तरह, मौजूदा दलाई लामा, यानी चौदहवें लामा, जिनका असली नाम त्सेरिंग ग्यात्सो है, का पता चला।

सर्च पार्टी पोटाला लौटी और सबको खबर दी। वे तुरंत बच्चे को ले गए।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২১৫

वे लामा को ल्हासा लाने की तैयारी कर रहे थे, लेकिन चीन के साथ पॉलिटिकल और इकोनॉमिक वजहों से उनके आने में लगभग तीन साल की देरी हो गई। बच्चे दलाई लामा के साथ उनके माता-पिता, भाई-बहन और उनके परिवार के सभी सदस्य ल्हासा में थे। पोटाला में उनके आने का पूरे तिब्बत में बड़े सम्मान के साथ जश्न मनाया गया।

पांच साल के दलाई लामा ने पोटाला पैलेस में घुसते ही अपने काउंसलर को पहचान लिया, उनके नाम भी। फिर बच्चे ने उसे बताना शुरू किया कि फर्नीचर पहले ही कहां रखा जा चुका है। उसे अपना डंडा पहचानने में भी कोई मुश्किल नहीं हुई, जो लामाओं के डंडे के साथ रखा हुआ था। हर तिब्बती दलाई लामा की यह कहानी दिल से जानता है। वे इसे दूसरों को बताकर खुद को खुशकिस्मत मानते हैं।

मैं सिर्फ़ तीन बार त्सेवांग परिवार के पास गया था। फिर एक दिन मैंने खुद जाना बंद कर दिया। मैंने उनसे सुना कि चीनी जासूस बहुत खतरनाक होते हैं। अगर उन्हें एक पल के लिए भी पता चल गया कि मैं भारतीय हूँ, तो इस परिवार में बहुत अशांति फैल जाएगी, और तिब्बत के प्रधानमंत्री भी इस अशांति की परेशानी से बच नहीं सकते।

तो मैंने उन्हें बहुत धन्यवाद दिया और बातचीत को अचानक खत्म कर दिया।

अगले कुछ दिनों तक मैंने महामंदिर में ध्यान लगाया और मूर्तियों को देखा। गुरुजी कभी-कभी नागार्जुन और चंद्रकीर्ति की बौद्ध फिलॉसफी समझाते थे। लेकिन सच कहूँ तो, मैं उसके कुछ ही शब्द समझ पाता था और ज़्यादातर समय मैं बस हाँ, हाँ कहता था। मेरा मन हमेशा फिर से चलने के लिए बेचैन रहता था।

ल्हासा में पिछले कुछ दिन

जब हम ल्हासा से आ रहे थे, तो काशांग सेक्रेटेरिएट से एक ऑर्डर आया, जो हमारी रिक्वेस्ट का जवाब था। उस ऑर्डर के मुताबिक, तीर्थयात्रियों को पोटाला जाने की परमिशन दे दी गई है, मतलब अब सब लोग पोटाला जा सकेंगे। यह हमारे लिए बहुत अच्छी खबर है। मैं गुरुजी के साथ पोटाला गया था, लेकिन साथ जाने की खुशी से वंचित रह गया। मुझे लगा कि मैं थोड़ा मतलबी हो गया हूँ। यह सोचा भी नहीं जा सकता कि ल्हासा पहुँचने के बाद तीर्थयात्री पोटाला पैलेस में अंदर नहीं जा पाएँगे। तो, काशांग से मिली इस खबर से हम सब बहुत खुश हैं, ल्हासा की हमारी यात्रा सफल रही। हालाँकि हम इस खबर से खुश थे, लेकिन अगली खबर से हम चौंक गए। उस ऑर्डर के दूसरे हिस्से में लिखा है कि लोकल हान या चीनी अधिकारियों ने हमें जल्द से जल्द लौटने का ऑर्डर दिया है। उस ऑर्डर में साफ लिखा है कि तीर्थयात्रियों को अलग-अलग ग्रुप में बाँट दिया जाए, मतलब उन्हें ग्रुप में घूमने की इजाज़त नहीं होनी चाहिए। आखिरी खबर हमें बिजली गिरने जैसी लगी। हम साथ आए हैं और साथ जाएंगे - गुरुजी के बिना इस अनजान देश में कैसे जाएंगे, हमें न रास्ता पता है, न भाषा, लेकिन हमें ऑर्डर मानना ही होगा। यहां के चीनी अधिकारी बहुत ताकतवर हैं, जनरल ताकुआन। लोग कहते हैं कि उनके

कहने पर खुद को कुर्बान करने वाले रिपुजायी लामाओं का खून भी बदल जाता है। हमें ऑर्डर के हिसाब से एक डिटेल्ड प्लान बनाना था। तय हुआ कि हम उस दिन पोटाला देखने जाएंगे। अगले दिन हम चेन-रे-जी को देखने नोरबुलिंगका जाएंगे। फिर, ड्रेपुंग गुफा में दो दिन बिताने के बाद, हम फिर से सिक्किम के रास्ते पर निकल जाएंगे।

पोताला: पोताला पैलेस में अंदर जाने के लिए कई छोटे-छोटे रास्ते हैं। और उनके अलग-अलग नाम हैं। पोताला पहाड़ी के दक्षिण की ओर, तीर्थयात्री अक्सर रस्सी काटकर ऊपर चढ़ते हैं। रास्ता बहुत चौड़ा है। यह ऋषिकेश में घाट से राम मंदिर तक जाने वाली सड़क की सीढ़ियों जैसा है। यह सड़क विदेशियों के लिए ज़्यादा जानी-पहचानी है। सड़क का नाम तीर्थ पथ है। एक और मुख्य सड़क, जिस रास्ते से महान दलाई लामा या चेन-रे-जी पोताला में ऊपर-नीचे जाते हैं, उसे दलाई लामा पथ कहा जाता है। और अनगिनत छोटे-छोटे रास्ते हैं, जिनका इस्तेमाल करना तब तक नामुमकिन है जब तक आप पोताला के लोकल निवासी न हों! हालाँकि, पोताला के सभी रास्ते सीढ़ियाँ हैं, बड़े-बड़े पत्थर के स्टेप्स।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২১৭

हमारा टूर बहुत छोटा था, जिसमें सिर्फ़ खास जगहें दिखाई गईं। गाइड का नाम ओग्यान दोरजे है। वह पोताला का सरकारी कर्मचारी है। ओग्यान बहुत गंभीर इंसान लग रहा था। वह फालतू बातें नहीं करता। ओग्यान ने पोताला के अलग-अलग घरों को नज़रअंदाज़ किया और सीधे समाधि देवी के बारे में बात करना शुरू कर दिया।

पोताला में दलाई लामाओं की कई कब्रें हैं, लेकिन असली कब्रें पांचवें और तेरहवें दलाई लामाओं की हैं। ये दो गुंबद जैसी कब्रें पोताला के लाल महल और सफेद महल के बीच से ऊपर उठती हैं। तिब्बती लोग इन दोनों दलाई लामाओं की खास पूजा करते हैं। मैं पहले भी पोताला जा चुका हूँ, इसलिए मैंने गाइड की बातों पर ज़्यादा ध्यान दिए बिना और ध्यान से देखना शुरू कर दिया।

हम दलाई लामा के इनॉगरेशन रूम में आए, जहाँ से आप पोटाला पैलेस के अलग-अलग हिस्सों को बहुत अच्छे से देख सकते हैं। यहाँ से आप वह कमरा भी देख सकते हैं जहाँ दलाई लामा रहते हैं। 1904 में, यंग हस्बैंड नाम के अंग्रेज़ एक्सप्लोरर और अंग्रेज़ रिप्रेजेंटेटिव, जो ल्हासा आए थे, ने इसी इनॉगरेशन रूम में बैठकर दलाई लामा के साथ एक ट्रीटी साइन की थी। उस समय से, ब्रिटिश इंडिया का तिब्बत से सीधा कॉन्टैक्ट था।

हम पोटाला डोम के किनारे छत पर पहुँचे। वहाँ से हर तरफ का नज़ारा बहुत खूबसूरत है। ल्हासा की समतल ज़मीन चारों तरफ से पहाड़ों और पहाड़ियों से घिरी हुई है। ऐसा लगता है जैसे कुदरत की देवी ने ल्हासा को दीवार से घेरकर बाकी दुनिया से अलग कर दिया हो। इसीलिए बौद्ध धर्म आज भी दुनिया से बहुत दूर है। पोटाला पैलेस के अंदर हर कमरा चमकीले रंगों की आर्टवर्क से भरा है। दीवारों पर नक्काशी हो या पेंटिंग, हर काम को बराबर अहमियत दी गई है। सिर के ऊपर दीवार का एंगल हो या अंधेरा, कलाकार को अपने टैलेंट से दूर जाने से नहीं रोक पाया। पोटाला पैलेस का हर कोना लाल, सुनहरे और पीले जैसे चमकीले रंगों में अलग-अलग टंका, मंडल, बौद्ध कहावतों और बायोग्राफी से भरा है। और साथ ही, डोम गहनों से भरा है। पाँचवें और तेरहवें दलाई लामा के डोम के अंदर का हर फर्नीचर पूरी तरह से सोने का बना है। और गुंबद की छत भी

सोने की पत्ती से ढकी हुई है, ठीक वैसे ही जैसे मैंने चिदंबरनाथम मंदिर की छत देखी थी।

गाइड ओग्यान दोरजे ने हमें एक घंटे में पूरे पोताला का ऊपरी हिस्सा दिखाया और जाने दिया। उसकी तेज़ तिब्बती भाषा और महल के अंदर के अंधेरे ने हम सबको अंधेरे में डाल दिया। उसने बहुत जल्दी काम खत्म किया और हमें जाने दिया।

১৬

২১৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

लेकिन गुरुजी ने जितना हो सका, उतना ट्रांसलेट करके हमें समझाया। हम साफ़ समझ गए कि ओग्यान दोरजे को यह काम बिल्कुल पसंद नहीं था - गाइड की ड्यूटी उन पर ज़बरदस्ती डाली गई थी।

हम जिस धर्मशाला में रुके हैं, वहां से पोताला पैलेस तक चढ़ने में करीब डेढ़ घंटा लगता है। नीचे उतरने में कोई दिक्कत नहीं है। हम दोपहर को घर लौटे और कुछ सूखी सब्जियां और जौ उबालकर अपना लंच खत्म किया। सभी बुज़ुर्ग थोड़े थके हुए लग रहे थे। दोपहर करीब 2:30 बजे, जब हम बैठकर आगे की प्लानिंग कर रहे थे, ओग्यान अचानक दरवाज़े पर आ गया। बिना किसी इंट्रोडक्शन के उसने पूछा - क्या तुमने खाना खत्म कर लिया? - हां, हमने जवाब दिया। हमारा जवाब सुनकर ओग्यान बोला - तो उठो, चलो नोरबुलिंगका पैलेस चलते हैं। कल मेरे पास टाइम नहीं होगा, चलो अभी चलते हैं और चेन-रे-जी के दर्शन कर लेते हैं। वह शाम को थोड़ी देर के लिए दर्शन देते हैं, मैं सारा इंतज़ाम कर लूंगा।

हमें कल जाना था लेकिन ओग्यान ने हमारी बात सुनने से मना कर दिया। यानी अगर हम आज चले जाएं जैसा उसने कहा, तो बेहतर होगा वरना कल उसका समय नहीं होगा। यह पहली बार था जब मैंने सुना कि तिब्बतियों को समय का ज्ञान होता है या समय कीमती होता है। हमारी अनिच्छा के बावजूद हमें फिर से जाने के लिए मजबूर होना पड़ा। मुझे नहीं पता कि मुझे शुरू से ही ओग्यान क्यों पसंद नहीं था। उसका रूखा व्यवहार तिब्बती स्वभाव के बिल्कुल उल्टा लगता था। बाकी सभी तीर्थयात्री मुझसे उम्र में बड़े लग रहे थे और इन छोटी-छोटी बातों की परवाह नहीं करते थे। मैं भी चुप रहा, यह सोचकर कि यही उनका आदर्श है।

नोरबुलिंगका पैलेस में दलाई लामा के दर्शन: हम सबने जोखांग मंदिर के पास एक दुकान से एक सफेद कंथा (कपड़े का टुकड़ा) खरीदा। हमारे देश में फूलों की माला देने का रिवाज है। उनके देश में, जब महात्मा दर्शन के लिए जाते हैं, तो फूलों की जगह ये सफेद कपड़े के टुकड़े बदले जाते हैं। मंदिर में घुसते समय भी यही रिवाज है। शाम होने से थोड़ा पहले, हम नोरबुलिंगका पैलेस के सामने पहुँचे। जैसा कि मैंने पहले ही लिखा है, महल एक बड़े बंगले जैसा है। कई तिब्बती सफेद दीवार के सहारे बैठे हैं। दलाई लामा गरीब आम तिब्बतियों को दर्शन नहीं देते। इसलिए, वे दीवार को छूकर और उसका चक्कर लगाकर खुश हो जाते हैं। अलग-अलग त्योहारों के दौरान, जब परम पावन दलाई लामा या चेन-रे- जी स्टेज पर आते हैं, तो गरीब और सड़क पर रहने वाले लोगों को उनके दर्शन का आशीर्वाद मिलता है।

हमारे तीर्थयात्रियों का छोटा सा ग्रुप दूर नेपाल से आ रहा है, इसलिए हमारी कहानी अलग है। ओग्यान के साथ हम महल के मेन गेट पर पहुँचे और माथा टेका।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২১৯

मैंने किया। फिर, उस दरवाज़े से अंदर जाने के बजाय, मैं पीछे की तरफ़ चला गया। जैसे ही मैं महल के पीछे पहुँचा, मैंने एक और दरवाज़ा देखा, एक दीवार वाला। दरवाज़े के सामने एक वॉचमैन खड़ा था, ओग्यान उसे पहले से जानता था, इसलिए कोई दिक्कत नहीं हुई। वॉचमैन ने हमें एक-एक करके अंदर आने दिया और दरवाज़ा फिर से बंद करके लॉक कर दिया। हम एक छोटे से बंगले की तरफ़ बढ़े। हमारे वहाँ पहुँचने से पहले, तीन तिब्बती हमारी तरफ़ दौड़े, ओग्यान को देखकर वे रुक गए। थोड़ी देर बात करने के बाद, उन्होंने हमें वहीं इंतज़ार करने को कहा और बंगले की तरफ़ चले गए। यह बंगला परम पावन दलाई लामा का अपना मंदिर है। पोटाला की तरह, नोरबुलिंगका में भी दलाई लामा का अपना मंदिर है। हमारी खबर लगभग सात या आठ लोगों के ज़रिए परम पावन दलाई लामा तक पहुँची। हमें देखने के लिए बुलाया गया। यह मंदिर सिक्किम महल के बौद्ध मंदिर जैसा है। पत्थर और सीमेंट की दीवारें, लकड़ी के दरवाज़े और खिड़कियाँ और टिन की छत। लकड़ी पर खूबसूरती से नक्काशी की गई है, और सब कुछ चमकीले रंगों का है। जैसे ही हम बरामदे में चढ़े, दलाई लामा के एक सेवक ने मुस्कुराते हुए हमें बुलाया। हमने यह बात छिपाई कि गुरुजी और मैंने इस सज्जन को पहले बगीचे में देखा था। जैसे ही हम दरवाज़े से अंदर आए, एक बहुत बड़ी बुद्ध की मूर्ति ने हमारा ध्यान खींचा। जैसे ही हम उन्हें प्रणाम करने के लिए खड़े हुए, हमने देखा कि मूर्ति के नीचे एक बड़ी आरामकुर्सी पर एक सज्जन बैठे हैं। यह समझना मुश्किल नहीं था कि यह चेन-रे-जी थे। युवा तिब्बती राजा चेन-रे-जी। उनके आस-पास चार और लोग खड़े थे। पहले गुरुजी, फिर एक-एक करके

हम सबने उन्हें कंथा दिया और सामने वाले कुशन पर बैठा दिया। उन्होंने हम सबकी तरफ मुस्कुराते हुए देखा और हमारा स्वागत किया।
जब हम सब बैठ गए, तो उन्होंने सामूहिक प्रार्थना शुरू की। दो मिनट की प्रार्थना के बाद, उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया। फिर, हमारे उत्साह और भक्ति की तारीफ़ करते हुए, उन्होंने चार से पाँच मिनट की तारीफ़ की। फिर उनके लंबे साथी, इसारा ने हमें उठने के लिए कहा। हमने फिर से प्रणाम किया और अलविदा कहा। कुल मिलाकर, हम उनके साथ सिर्फ़ पाँच मिनट के लिए थे। इतने कम समय में, दलाई लामा का पवित्र और चमकता हुआ चेहरा हमारे दिल को छू गया। ओग्यान ने अपना काम पूरा करके अलविदा कहा। हमने उनका बहुत शुक्रिया अदा किया। उन्होंने जवाब दिया, "आपकी यात्रा सफल हो और भगवान आपकी रक्षा करें।" मैं चाहकर भी ओग्यान से ज़्यादा बात नहीं कर सका। नोरबुलिंगका पैलेस के बाहर आते ही उन्होंने अलविदा कहा। हम दलाई लामा की पवित्र याद के साथ धर्मशाला लौट आए।

ल्हासा में हमारी ड्यूटी पूरी हो गई है, हम जोखांग मंदिर में बैठ गए हैं, परिक्रमा की है और प्रार्थना की है। हमने पोताला पैलेस देखा है, हमें दलाई लामा की एक झलक मिली है, एक तीर्थयात्री के लिए इससे ज़्यादा कुछ नहीं चाहिए। इस बार हम ड्रेपुंग मठ में दो दिन बिताएंगे।

২২০

महातीर्थ की अंतिम यात्रा

हमें वहां से वापस लौटना होगा। अगले दिन, हमने सुबह-सुबह जोखांग मंदिर में महाकाली को प्रणाम किया और ल्हासा से निकल गए।

काउंसिल अंदरूनी संतुलन बनाए रखते हुए कहीं और नहीं देख पा रहे हैं। ड्रेपुंग गुफा में कुछ दिन बिताने के बाद यह बात साफ हो गई। चीनी ही वे लोग हैं जिन्होंने हमें परेशान किया है। ग्यात्ज़े से लौटते समय भी हमें ऐसी ही परेशानियों का सामना करना पड़ा था। खैर, उस रात मैंने गुरुजी से कई मुद्दों पर बात की। गुरुजी के अनुसार, इतनी दूर आकर कैलाश और मानसरोवर देखे बिना लौटना मौके की बहुत बड़ी बर्बादी होगी।

गुरुजी के मुँह से कैलाश शब्द सुनकर मेरा दिल ज़ोर से धड़क उठा। कैलाश का ख्याल मेरे दिमाग में बिजली की तरह आया। जब मैंने उनसे कुछ और सवाल पूछे, तो उन्होंने कहा-

रास्ता बहुत मुश्किल है लेकिन दिशाएँ बहुत सीधी हैं। ब्रह्मपुत्र हमारे ठीक सामने है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২২১

अगर आप सीधे सोर्स पर जाएंगे, तो आपको मानसरोवर मिलेगा और उसके बगल में कैलाश पर्वत है, जो हिंदुओं के लिए शिव का महान तीर्थस्थल, कैलाशनाथ है।

वे शब्द मेरे दिमाग में बस गए।

गुरुजी को तीर्थयात्रियों के साथ वापस लौटना होगा। गुरुजी ने उन्हें स्वस्थ शरीर में घर वापस ले जाने की बड़ी ज़िम्मेदारी ली है।

कैलाश यात्रा की तैयारी

तीर्थयात्री धीरे-धीरे ड्रेपुंग मठ से जाने लगे। गुरुजी पहले निकले, उनके बाद तीन लामा। सफ़र ज़्यादा मुश्किल था। खासकर यहाँ से ग्यात्से तक, इस बार सिर्फ़ चढ़ाई थी। गंगटोक से यहाँ वापस आते समय, गुरुजी का मोटा कंबल हमेशा मेरी पीठ पर रहता था - मेरे न चाहते हुए भी, मुझे इसे गुरुजी के साथ शेयर करना पड़ा। गुरुजी एक संयमी और अनासक्त इंसान हैं। उन्हें किसी चीज़ से कोई लगाव नहीं है, वे बस अपना फ़र्ज़ निभा रहे हैं। उन्हें अलविदा कहते हुए मेरा दिल भर आया और रोने लगा, लेकिन मैंने इसे छिपाने की बहुत कोशिश की। मैंने उन्हें प्रणाम किया और किसी तरह अपने आँसू रोके। मुझे समझ नहीं आया कि मेरा दिल अचानक क्यों रोने लगा। गुरुजी ने धीरे से मेरे सिर को छुआ और मुझे आशीर्वाद दिया, और उस पल, हमारे बीच और कोई बात नहीं हुई।

फिर चार दिन और बीते और एक-एक करके दो-तीन यात्री चले गए। मुझे आखिरी ग्रुप में जाना था। लेकिन मैं नहीं गया और उनसे कहा - तुम सब जाओ, मैं बाद में जा रहा हूँ। जब तक मैंने गुरुजी से कैलाश के बारे में नहीं सुना, मेरे मन में वही ख्याल घूमता रहा; कैलाशनाथ, शिव तीर्थ, महा तीर्थ। मैंने उन शब्दों के आस-पास अपने मन में एक कैलाश मैन बना लिया। और अनजाने में, मैं खुद उस जाल में फँस गया। मुझे जाना ही है, चाहे कुछ भी हो जाए। गुरुजी के शब्द मेरे कानों में गूंजते रहे - रास्ता मुश्किल है लेकिन कैलाशनाथ के रास्ते बहुत सीधे हैं। अगर आप सामने ब्रह्मपुत्र के साथ-साथ सीधे उसके सोर्स की ओर जाएँ, तो आपको मानसरोवर मिलेगा और उसके बगल में महा तीर्थ कैलाशनाथ है। गुरुजी सही कह रहे थे कि इतनी दूर आकर कैलाशनाथ देखे बिना वापस लौटना मतलब एक बहुत बड़ा मौका गँवाना है। मैंने मन बना लिया और खुद से वादा किया कि मैं कैलाशनाथ ज़रूर जाऊँगा।

मैंने तिब्बती अल्फाबेट पहले ही सीख लिया है। संस्कृत तिब्बती भाषा का सोर्स है। हालांकि, यह भाषा संस्कृत से आसान है। इसमें तीस वॉवेल और सिर्फ़ चार कॉन्सोनेंट हैं, इ, उ, अ और ओ। तिब्बती में इन्हें गिल्ड, शाकू, ड्रेंगबू और नारो कहा जाता है। अब मैं चुप रहने वाला पिता नहीं रहा। जोखांग मंदिर में धरने तक मैं चुप था। मैंने पहले ही कुछ नेपाली त्रपाओं से दोस्ती कर ली है,

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২২৩

मैंने उनसे बहुत सी नई बातें सीखीं। गुफा के स्टूडेंट्स को मंडल के राज़ बहुत अच्छे से जानने होते हैं। मंडल के ज्ञान से ही दुनिया बनने के राज़ जाने जा सकते हैं। स्टूडेंट्स को मंडल के मैथ्स और रंगों को समझने के लिए करीब दो साल तक स्पेशल एजुकेशन लेनी पड़ती है। और मुद्राओं के ज़रिए उन्हें जजमेंट और मन के डेवलपमेंट की टेक्नीक सीखनी पड़ती है। लामाओं को किसी भी एग्जाम या डिबेट के दौरान मुद्राओं की खास ज़रूरत होती है। मुद्राएं मन के विचारों को बताती हैं। मेडिटेशन के दौरान कोई खास मुद्रा रखने से मेडिटेशन का रास्ता आसान हो जाता है। ड्रेपुंग गुफा में ही मैंने पहली बार मुद्राओं के बारे में सीखा था।

शासन: दलाई लामा और पंचेन लामा तिब्बत के दो महान लोग हैं। पंचेन लामा शिगात्से में रहते हैं। वह लगभग आज़ाद हैं। वह शिगात्से के अलावा तिब्बत के किसी और मामले में दखल नहीं देते। असल में, दलाई लामा ही तिब्बत के शासक हैं। लेकिन, चीनी अधिकारी अभी उसकी रक्षा के बहाने उस ताकत को कमज़ोर कर रहे हैं। मैं उस मुद्दे को नज़रअंदाज़

कर रहा हूँ और सीधे दलाई लामा के शासन के बारे में कुछ शब्द लिख रहा हूँ।

दलाई लामा की रूलिंग काउंसिल दो हिस्सों में बंटी हुई है। 'इक्सांग' या धार्मिक काउंसिल, जिसमें ऊंचे पद वाले लामा होते हैं, राज्य की अलग-अलग गुफाओं और धार्मिक रस्मों का मालिक होता है। दूसरी काउंसिल को 'कशाग' कहा जाता है। कशाग राज्य में कानून और व्यवस्था का मालिक होता है। तिब्बत के बनेदी परिवार को ग्येर्पा कहा जाता है, आमतौर पर यह क्लास लामाओं के बाद आती है। इस कुलीन परिवार के नौजवान ल्हासा के स्कूल से पांच से छह साल तक सही शिक्षा लेने के बाद सीधे रूलिंग सिस्टम में आ जाते हैं। कशाग काउंसिल में सबसे ऊंचा पद चीफ मिनिस्टर या चिकाप का होता है। दूसरे मंत्रियों को शा-पे, दे-पोंग वगैरह कहा जाता है। पूरा तिब्बत पांच प्रांतों में बंटा हुआ है। पहला प्रांत, जिसमें ल्हासा और शिगात्से के दो मुख्य शहर हैं, उसे यू-सांग कहा जाता है, गर्तक दूसरा, खाम तीसरा, नॉर्थ तिब्बत या चांग चौथा और साउथ तिब्बत या लोका पांचवां है। हालांकि खाम प्रांत, या चांडो इलाका, अब पूरी तरह से चीनियों के कंट्रोल में है, लेकिन इसके चीफ़ मिनिस्टर, या ची-कियाप, अभी भी अपने गढ़ में बैठे हैं। हर प्रांत का चीफ़ मिनिस्टर अपने किले के चीफ़ के ज़रिए अपना शासन चलाता है। किले का चीफ़, प्रांत की सेना का कमांडर-इन-चीफ़ होता है, और उसे ज़ोंग-पो कहा जाता है।

युद्ध और संघर्ष: दूसरे देशों की तरह तिब्बत को भी बाहरी दुश्मनों के हमले सहने पड़े। तिब्बत का पूरा इतिहास मिलना मुश्किल है। तिब्बत का इतिहास 17 वीं सदी से, यानी राजा स्रॉन्ग-सान-गम्पो के समय से लगातार लिखा जाने लगा। हिमालय के इस गहरे कोने में छिपे होने के बावजूद, इसे बार-बार युद्ध और संघर्ष में उलझना पड़ा। स्रॉन्ग-सान-गम्पो ने चीनी सम्राट ताई-सुंग की बेटी से शादी का प्रस्ताव

रखा। चीनी सम्राट ने उनका प्रस्ताव ठुकरा दिया और पहला तिब्बत-चीन युद्ध शुरू हो गया।

২২৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

युद्ध। राजा स्रॉन्ग-सान ने वह युद्ध जीत लिया। युद्ध के मुआवज़े के तौर पर, उसने कई चीनी इलाकों और राजकुमारी पर भी कब्ज़ा कर लिया।

कुबलई खान के राज में तिब्बत को चीनियों के साथ एक संधि पर साइन करने के लिए मजबूर किया गया, जिसके नतीजे में तिब्बत को चीन के एक प्रांत के तौर पर पहचान मिली। नतीजतन, तिब्बती बौद्ध धर्म पूरे चीन में फैल गया। 15 वीं सदी में, तिब्बत के गेलुक-पा संप्रदाय को चीनी प्रांत मंचूरिया के शाही धर्म के तौर पर मान लिया गया। यह तिब्बत के लिए बहुत बड़ा सम्मान था। उस समय से, तिब्बत चीनी शासन के तहत आ गया। चीनी शासन के तहत होने के बावजूद, तिब्बती धर्म के असर की वजह से इसे एक आज़ाद देश के तौर पर आज़ादी मिली। उस समय से, तिब्बत में दलाई लामा के दोबारा जन्म की परंपरा शुरू हुई। तिब्बत के पहले दलाई लामा गेन-तुंग-द्री-पा थे, जिन्होंने ताशी लुम्पो गुफा (शिगात्से) में अपना पहला धर्म चक्र स्थापित किया था। वे गेलुक-पा संप्रदाय के थे। लेकिन फिर धीरे-धीरे बौद्ध धर्म अलग-अलग ब्रांच में बंट गया। 1587 में, मुगल बादशाह एल्डन ने गेलुक-पा संप्रदाय के धार्मिक नेता को वज्रधर दलाई लामा के तौर पर नियुक्त किया।

1652 में पांचवें दलाई लामा पेकिंग गए और उस समय से ल्हासा-पेकिंग के रिश्ते और मज़बूत होते गए। 19 वीं सदी में, वह रिश्ता धीरे-धीरे खराब होता गया। इस समय, चीन उसके अंदरूनी मामलों में शामिल हो गया।

इसलिए, तिब्बत धीरे-धीरे उनके कंट्रोल से बाहर होता गया। भारत तब ब्रिटिश राज के अधीन था, इसलिए तिब्बत को ब्रिटिश राज से दोस्ती करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

इस दौरान तिब्बत को कई युद्ध लड़ने पड़े। 1788 में गोरखा सेना ने तिब्बत पर हमला किया, लेकिन चीनी सैनिकों की मदद से तिब्बतियों ने गोरखा सेना को हरा दिया। 1856 में नेपाल ने तिब्बत पर अपना दबदबा बना लिया। 1857 में नेपाली सैनिकों ने तिब्बत पर हमला करने के लिए चीनियों के साथ एक संधि पर साइन किए।

1904 में, ब्रिटिश कमांडर फ्रांसिस योंगहसबैंड ने ल्हासा के लिए अपना अभियान शुरू किया। दलाई लामा यह सोचकर चीन भाग गए कि यह एक विदेशी हमला है। परम पावन दलाई लामा की गैरमौजूदगी में, पंचेन लामा तिब्बतियों के पॉपुलर लीडर बन गए। उन पर अपने देश और लोगों की रक्षा करने की बड़ी ज़िम्मेदारी थी। कहने की ज़रूरत नहीं कि लोग यह समझ नहीं पा रहे थे कि दलाई लामा, जो एक ज़बरदस्त विजेता थे, अपने देश के लोगों को एक विदेशी हमले के सामने छोड़कर अपनी जान बचाने के लिए कैसे भाग सकते हैं। आम लोगों के लिए परम पावन चेनरेज़िग की बुराई करना ठीक नहीं था। इसलिए वे चुप रहे, लेकिन यही पंचेन लामा का मुख्य हथियार था। उस समय, पंचेन लामा ने ताशी लुम्पे में लोगों को अपनी सुरक्षा का संदेश दिया, और वे सिगात्से के लोगों के फॉलोअर्स के बीच पॉपुलर ताशी लामा बन गए।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২২৫

1911 में, चीन में चीनी क्रांति शुरू हुई। 13 वें दलाई लामा ने सोचा कि यह तिब्बत को चीनी शासन से आज़ाद कराने का एक सुनहरा मौका है, क्योंकि उस समय पेकिंग में अंदरूनी उथल-पुथल मची हुई थी। उन्होंने "तिब्बत को एक आज़ाद और ऑटोनॉमस देश" घोषित किया। दलाई लामा के इस ऐलान का उल्टा असर हुआ, उनकी अपनी पार्टी के कई बड़े चीनी पसंद लामाओं ने दलाई लामा के चीन से अलग होने का विरोध किया, इसलिए अफ़रा- तफ़री शुरू हो गई, और आखिर में दलाई लामा की जान दांव पर लग गई, और दलाई लामा को भागने पर मजबूर होना पड़ा। वे दार्जिलिंग गए और अंग्रेज़ों से पनाह और मदद मांगी। 1912 में, अंग्रेज़ों की मदद से उन्होंने तिब्बत को आज़ाद घोषित कर दिया।

ताकतवर ब्रिटिश के साथ युद्ध में बिना हारे, पेकिंग ने 1913 के शिमला कॉन्फ्रेंस को मान लिया। चीनियों ने समझौते पर साइन तो कर दिए, लेकिन वे सच में एक आज़ाद तिब्बत को मान्यता नहीं देना चाहते थे। पेकिंग के अनुसार, तिब्बत चीन का हिस्सा था। यह तिब्बत के इतिहास का सुनहरा दौर लगता है। 1911 से 1949 तक, तेरहवें दलाई लामा के राज में तिब्बत फलने-फूलने लगा। पांचवें और तेरहवें दलाई लामा तिब्बत के इतिहास में चमकते हैं। यह पोटाला में उनकी यादगारों और स्मारकों को देखकर साफ समझा जा सकता है। हर कोई दलाई लामा की आज़ाद तिब्बती सोच को स्वीकार नहीं कर सका। कई चीनी समर्थक लामा और वर्दिष्णु परिवार के कुछ लोगों ने 1924 तक ल्हासा के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया, जिनके नेता पंचेन लामा थे। चालाक (तेरहवें) दलाई लामा ने विरोध को बढ़ने नहीं दिया और तुरंत इसके खिलाफ सही कदम उठाए। पंचेन लामा अपने फॉलोअर्स के साथ चीन भाग गए। पंचेन लामा (नौवें) कभी देश वापस नहीं लौटे। 1937 में चीन में उनकी मौत हो गई, और कहा जाता है कि पंचेन लामा तब से चीन में ही रह रहे हैं। नौवें पंचेन लामा की मौत के बाद, चीनी अधिकारियों की मदद से दसवें पंचेन लामा को अपॉइंट किया गया। वे अभी के पंचेन लामा (1956) हैं। चीनी

अधिकारी इस पंचेन लामा की अलग-अलग मामलों में एक्टिवली मदद करते हैं। नौवें पंचेन लामा की मौत के बाद, चीनी अधिकारी नौवें पंचेन लामा के पुनर्जन्म, यानी दसवें पंचेन को लामा परंपरा के अनुसार शिगात्से लाए और उन्हें उनके पद पर बिठाया। तब से, पंचेन लामा और दलाई लामा के बीच मतभेद रहे हैं। तेरहवें दलाई लामा की मौत के बाद, चीनी अधिकारी धीरे-धीरे तिब्बत को वापस चीन में लाने के लिए उठने लगे।

चियांग काई-शेक की नेशनल सरकार ने 13 वें दलाई लामा (1934) की मौत के बाद शोक जताने के लिए पेकिंग से ल्हासा एक ऑफिशियल मिशन भेजा था। 13 वें दलाई लामा की मौत के बाद उन्हें दोबारा जन्म लेने में करीब एक साल लगता है। फिर देश के हजारों बच्चों में से नए दलाई लामा को ढूंढने में एक और साल लगता है। कुल मिलाकर, 14 वें दलाई लामा (अभी के) गद्दी पर बैठे।

২২৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

इसे बनने में छह साल लगे, यानी 1940 में चौदहवें दलाई लामा की ताजपोशी हुई। उस समय वे सिर्फ़ पाँच साल के थे। बालक दलाई लामा की गार्डियन काउंसिल उनकी तरफ़ से तिब्बत पर राज करती रही। 1940 में बालक दलाई लामा सिर्फ़ एक पैगंबर थे, और उन्हें सरकार की बागडोर संभालने में और बारह साल लगने वाले थे। चीनियों के लिए यह सही समय था। दूसरी ओर, तेरहवें दलाई लामा की महान शख्सियत ने उस समय भारत में ब्रिटिश सत्ता के लिए तिब्बत में दखल देने की हिम्मत नहीं की। 1942 के बाद, भारत में ब्रिटिश आज़ादी की लड़ाई में बहुत ज़्यादा बिज़ी हो गए, और भारत की समस्याओं को संभालना मुश्किल हो गया, जो

तिब्बत की सोच से भी बाहर था। ब्रिटिश राज कमज़ोर हो गया था, और दूसरी ओर, चीनी एकता और राष्ट्रवाद से प्रेरित थे। तिब्बत को उस लहर का सामना करना पड़ा। कोई भी चीनी बढ़त को रोक नहीं सका।

सिर्फ़ भारत ही तिब्बत को चीनियों से बचा सकता है। भारत को 1947 में आज़ादी मिली थी। लेकिन तब भारत नया था। अंग्रेज़ भारत का खज़ाना ले गए थे और एक खाली डिब्बा छोड़ गए थे। इसलिए, इस हालत में, भारत तिब्बत को सिर्फ़ दिखावटी मदद दे सकता था, और अच्छी तरह से तैयार चीनी सेना के ख़िलाफ़ लड़ाई में शामिल होने की हालत में नहीं था। 1950 में, झोउ एनलाई ने पेकिंग से तिब्बत लिबरेशन मूवमेंट का ऐलान किया।

अब 1956 है, तिब्बत के कई इलाके अब चीनियों के कब्ज़े में हैं। अभी के दलाई लामा की पुरखों की ज़मीन, चंदो, पूरी तरह से चीनियों के कब्ज़े में है। तरह-तरह की मदद के नाम पर चीनी सैनिक तिब्बत के गांवों में घुस आए हैं। PLA (पीपल्स लिबरेशन आर्मी) के मुक्ति सेनानियों के नाम पर चीन का लाल राष्ट्रीय झंडा हर जगह लहरा रहा है। यह मानना होगा कि तिब्बत की चार मुख्य राष्ट्रीय सड़कें चीनियों ने बनाई हैं। एकता और दोस्ती के नाम पर चीनी सेना के ट्रक उन सड़कों से अंदर आ रहे हैं। विदेशी दूतावास धीरे-धीरे खाली हो गए हैं, भारतीय दूतावास ड्रेपुंग गुफा के बहुत पास है, जिसके दरवाज़े पर एक बड़ा सा ताला लटका है और वसंत के फूलों के बगीचे में भेड़ों का झुंड चर रहा है। उसे देखकर, मैंने बार-बार खुद से पूछा है कि क्या तिब्बत के वे खोए हुए दिन वापस आएंगे!

तिब्बत धर्म का राज है, यहाँ के बौद्ध तांत्रिक दुनिया भर में मशहूर हैं, क्या तिब्बत के इन सीधे-सादे और पवित्र लोगों की प्रार्थनाएँ

उद्धारकर्ता, भगवान बुद्ध का ध्यान नहीं तोड़ देंगी! शायद यही कर्म है, सामूहिक फल का आनंद लेना चाहिए। शायद यही तथागत की इच्छा है!

253

कैलाश के रास्ते की तलाश में

ड्रेपुंग गुफा की बहुत बड़ी लाइब्रेरी बिल्डिंग। वहां कम से कम छत्तीस हज़ार किताबें हैं। इसके अलावा, मंदिर में तंगिउर और कांगिउर की हज़ारों कॉपी हैं। वे भारत के कई विद्वानों की अनमोल किताबों और वेदांत से भरी हुई हैं। अगर गुफा के अच्छे चित्रों वाले टांकों को एक साथ रखा जाए, तो वे कम से कम चालीस कमरे भर देंगे। इसके अलावा, ऐतिहासिक, पौराणिक और भौगोलिक जानकारी का कलेक्शन है। मैंने त्रापास या लामाओं के साथ घूम-घूमकर सब कुछ देखा है। बेशक, उन सभी अनमोल किताबों को पढ़ना मेरे सपनों से भी परे है, उन सभी गणित और दर्शन की प्रैक्टिस करने के लिए, मुझे तिब्बत में जन्म लेना होगा और सिर्फ एक जन्म के लिए नहीं, बल्कि तिब्बत में कई जन्म और मौतें होनी हैं। यह बहुत दुख की बात है कि किताबों के इस समुद्र में भी, मुझे ल्हासा से कैलाश जाने के लिए कोई सही मैप नहीं मिला। उनसे सीधे यह कहना नामुमकिन है कि मैं कैलाश जा रहा हूं। मैं महान तीर्थ कैलाश के बारे में जानना चाहता हूं, यही मेरा सवाल था।

मैं तीर्थयात्रियों में सबसे आखिरी था। मुझे आखिरी तीन के साथ जाना था, मैंने उनसे कहा, मैं बाद में आऊंगा, अगर आप मुझे आगे नहीं देख पाए, तो चिंता न करें, भगवान जो चाहेंगे वो पूरा होगा, मेरा इंतज़ार न करें। तीर्थयात्रियों से मेरी यही आखिरी मुलाकात थी। तीन दिन बाद, मई 1956 के दूसरे हफ्ते में। सुबह-सुबह, मैं ड्रेपुंग गुफा के छोटे

से दरवाज़े से बाहर सड़क पर आया। उस समय, भोर की रोशनी बस झाँकने की कोशिश कर रही थी। गली के कुत्ते, एक युवा साधु को गुफा से बाहर आते देख, भौंकते हुए आगे आए, फिर, ऐसा लगता है, साधु को बैठा देखकर वे शर्माकर रुक गए। भोर की हल्की रोशनी में, ड्रेपुंग गुफा मायापुरी के सपने जैसी लग रही थी। उसकी पगोडा जैसी छत और हल्के सुनहरे रंग ने मेरा ध्यान खींचा। मैं पीछे हट गया, उसकी तरफ देखा और उसे आखिरी बार देखा - मैंने दुनिया के सबसे बड़े मठ और बौद्ध-तांत्रिक क्षेत्र का आखिरी बार दौरा किया। मैंने वहाँ के लामाओं का शुक्रिया अदा किया। मैंने उस मंदिर में बुद्ध की मूर्ति की कल्पना की और प्रार्थना की -

हे ज्ञान और पवित्रता के स्वामी, मुझे रास्ता दिखाओ, अपने मार्ग पर मेरा मार्गदर्शन करो, मैं तुम्हारी शरण में आता हूँ - अपनी रोशनी से मुझे प्रकाशित करो।

২২৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं ड्रेपुंग और ल्हासा से निकल गया, मेरी मंज़िल त्सांगपो है, वहाँ सिर्फ़ एक मेन रोड है, रोड पहचानने में कोई दिक्कत नहीं है। एक हफ़्ते पहले हम इसी रोड से ल्हासा में दाखिल हुए थे। इस बार मेरे पास एक कंबल है। गुफा वालों ने मुझे दो बोरी आटा, कुछ सूखी सब्ज़ियाँ और एक एल्युमिनियम का मग, जूते, मोज़े, एक भारी चादर दी। दो दिन पहले गुफा वाले नाई ने फिर से तीर्थयात्रियों के बाल काटने शुरू कर दिए। मेरे सिर पर ठंड लगना अब लगभग आदत बन गई है। गुरुजी ने मुझे सिखाया है कि नासा को ठीक से कैसे पीना है, और रोज़ाना नासा पीने का नतीजा यह है कि ऐसा लगता है कि ठंड शरीर पर असर नहीं कर पा रही है।

तीसरे दिन, मैं ल्हासा जाते समय जिन गुफाओं में रात बिताई थी, वहाँ से की-चू नदी के किनारे सड़क पर चलते हुए त्सांगपो के किनारे पहुँचा। गुरुजी ने मुझे चार रुपये छोटे-मोटे छुट्टे दिए थे, इसलिए नदी पार करने में कोई दिक्कत नहीं हुई। तीसरे दिन, दोपहर में, मैंने त्सांगपो पार किया। याक की खाल से बनी नाव में सिर्फ़ दो खुले सिक्के ले जाने की इजाज़त थी। ये भारतीय खुले सिक्के तिब्बत में बहुत कीमती हैं, क्योंकि गरीब लोग इन्हें अपने गले या कमर में माला बनाकर बाँध लेते हैं, इसलिए इनके खोने का चांस बहुत कम होता है। मैं अब एक महीने से तिब्बत में हूँ, और एक बात जो मैंने बार-बार देखी है, वह यह है कि उनमें से कोई भी चोरी नहीं करता, चाहे वे कितने भी गरीब हों, वे कभी दूसरों से चोरी नहीं करते।

अब से मेरा नया रास्ता है, यहाँ से एक सड़क ग्यात्से होते हुए गंगटोक की ओर जाती है। जो लोग घोड़े या गधे पर ग्यात्से जाते हैं, उनके लिए भी यही मेन रास्ता है। उस रास्ते को लेने के बजाय, मैंने वह छोटा रास्ता लिया जो सीधे त्सांगपो के किनारे-किनारे पश्चिम की ओर जाता है। अगर मैं यह रास्ता लेता हूँ, तो खो जाने का कोई डर नहीं है। त्सांगपो या ब्रह्मपुत्र तिब्बत के ग्लेशियरों के पिघले हुए पानी के साथ असम की ओर बहती है - मैंने धारा के दूसरी तरफ वाला रास्ता लिया, सोर्स उसी सड़क के आखिर में मिलेगा।

साधु बाबा मेरे गुरुजी हैं, मेरे गाइड हैं। मैं उनकी कृपा से गया से गंगटोक और गंगटोक से ल्हासा आया। अब मैंने कैलाश का रास्ता पकड़ लिया है। मैंने खुद को तैयार कर लिया है, अब से मैं ही अपना अकेला साथी हूँ। मुझे हर तरह की रुकावटों और खतरों से बहुत सावधानी से बचना है।

मुझे बार-बार याद आया कि बुढ़ापे में भी उनमें कितना जोश था, वे कितने आसान कदम उठाते थे, शरीर पर उनका अजीब सा कंट्रोल था। उन्होंने बार-बार कहा था कि शरीर सिर्फ़ मन का नौकर है, इसलिए मन को ठीक रखो। मन का बैलेंस बनाए रखना चाहिए। अगर सफ़र की थकान से शरीर टूट जाए, तो मन को मत टूटने दो। उनकी इन बातों को दिल से मानते हुए मैं आगे बढ़ा। मैंने मन में सोचा कि मेरे दाईं ओर का सांगपो मेरा दोस्त है, आसमान मेरा भगवान है, और बर्फ़ जैसा सफ़ेद पहाड़ मेरा गाइड है।

संगपार ओझा

मैंने दो दिन पहले त्सांगपो पार करके चुसुल छोड़ा था, और इस बीच मुझे सिर्फ़ दो छोटे गाँव मिले। मैंने त्सांगपो के पानी से रोटी बनाई, और उसे सूखी घास की आग पर सेंका, और मज़े से खाया। मैंने पहली रात एक खाली घर में बिताई। अगर मैं ऐसे ही चलता रहा, तो मेरा आगे बढ़ना तय है।

नदी के किनारे वाली सड़क बिल्कुल भी समतल नहीं है। यह बड़े-बड़े पत्थरों के किनारे-किनारे मुड़ती है, इस पर चलने में मज़ा आता है और बिल्कुल भी बोरियत नहीं होती। दूसरे दिन दोपहर में, मुझे अचानक एक छोटा सा शेल्टर मिला। चलते-चलते, मुझे अचानक एक झोपड़ी दिखी। नदी के किनारे से इकट्ठा किए गए पत्थरों, रेत और मिट्टी से किसी तरह चार दीवारें बनाई गई थीं, और उसके ऊपर कुछ पेड़ों के तनों और घास से एक छतरी बनाई गई थी। मैंने घर के आस-पास ध्यान से देखा लेकिन कोई आवाज़ नहीं आई और सोचा कि यह किसी का छोड़ा हुआ शेल्टर होगा। रात में ठंड होती है, लेकिन अब कंकन में पहले जैसी ठंड नहीं रहती। मैंने सोचा कि मैं आज की तरह यहाँ रात बिता सकता हूँ।

घर में घुसते ही मैंने देखा कि वहाँ कई जली हुई लकड़ियाँ थीं, इसलिए आग जलाने में कोई दिक्कत नहीं होगी, और सूखी घास की भी कोई कमी नहीं थी। आसमान धीरे-धीरे रंग बदलने लगा था, और जब दिन का उजाला था तो मैं साम्पो के पास बैठकर अपनी प्रार्थना और ध्यान पूरा किया। लगभग एक घंटे बाद, मैं झोपड़ी की ओर बढ़ रहा था कि अचानक मैंने अपने सामने एक इंसानी आकृति देखी और मुझे रुकना पड़ा। मेरे सामने एक तिब्बती आदमी खड़ा था। मैंने सिर झुकाकर थोड़ा मुस्कुराकर, फिर जीभ निकालकर उसे सलाम करके उससे बचने की कोशिश की, लेकिन यह मुमकिन नहीं था; वह मेरे रास्ते में खड़ा हो गया और कुछ पूछा। हालाँकि वह तिब्बती था, लेकिन मुझे उसका उच्चारण नहीं आता था, इसलिए मैं कुछ समझे बिना वहीं खड़ा रहा।

मैंने उस आदमी को ध्यान से देखा। उसने लामा की तरह लाल साधु के कपड़े पहने हुए थे। लेकिन, ऐसा लग रहा था कि उसने कभी शेव नहीं किया था, रंग अब फीका पड़ रहा था और काला हो रहा था, और उसके सिर पर अनगिनत धारियाँ थीं। उसके सिर पर बहुत सारे लंबे बाल थे, और लगभग कोई दाढ़ी या मूंछ नहीं थी, उसके चेहरे को देखकर, वह एक शुद्ध तिब्बती लग रहा था।

২৩০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उत्तर दिशा से, पैरों में मोटे ऊनी मोज़े और ऊपर पुराने मिलिट्री बूट पहने, वह एक भिखारी जैसा लग रहा था।

मेरे हाथ में मग था, मैं रोटी बनाने के लिए नदी से पानी ले रहा था। कहने को कुछ नहीं मिला, तो मैंने उसे मग में पानी दिखाया और किसी तरह समझाया कि मैं सम्पा बनाने जा रहा हूँ, और अगर वह चाहे, तो मेरे साथ खा सकता है। मुझे लगता है कि वह मेरी बात समझ गया - वह थोड़ा मुस्कुराया और मेरे पीछे आ गया। जब मैं शेल्टर में घुसा, तो मैंने देखा कि मेरे कंबल के बगल में एक और कंबल बिछा है और उसके ऊपर एक बोरा है। मैं समझ गया कि यह उस आदमी का बोरा है। जैसे ही वह कमरे में घुसा, उसने जल्दी से अपने बोरे से माचिस निकाली और आग जलाने लगा। हमारे बीच कोई बातचीत नहीं हुई। उसने खुद आग जलाई, फिर पास के एक छेद से कुछ एल्युमिनियम के कटोरे निकाले। अब मैं साफ-साफ समझ गया था कि वह घर का मालिक है। मैंने उसे कई तरीकों से समझाने की कोशिश की कि मैं एक ट्रैवलर हूँ - एक छोटा लामा - और बस रास्ते में यहाँ एक रात बिताना चाहता हूँ। मुझे नहीं पता कि वह समझा या नहीं, लेकिन मैं अपनी बातों से खुश लग रहा था। उसने मेरे आटे में थोड़ा जौ और सूखा मांस मिलाया, और जब वह पक गया, तो हम दोनों ने उसे बड़े मज़े से खाया। खाने के बाद, मैं अपना मग धोने के लिए नदी पर गया, लेकिन उसने मुझे अपना कटोरा नहीं धोने दिया, उसने उसका एक-एक टुकड़ा चाट लिया और फिर उसे वापस झूले में रख दिया।

रात होने लगी, हम चुपचाप आग के पास बैठकर उसे देखते रहे। घर में कोई दरवाज़ा या खिड़की नहीं थी, और अंदर से हमने सांगपो के पार धूल भरे पहाड़ों को देखा और सुंदर नज़ारा देखा। ब्रह्मपुत्र हमारे ठीक नीचे अपने पूरे ज़ोर से बह रही थी। यहाँ ठंड वैसी ही है जैसी सर्दियों में उत्तर प्रदेश में होती है। यानी टेम्परेचर टॉलरेंस लिमिट को पार नहीं कर पाया है। कोलकाता में अब बसंत आ गया है, और ऐसा लगता है कि यहाँ बसंत शब्द का कोई मतलब नहीं है। सर्दी और गर्मी, सर्दी का खत्म होना और गर्मी का खत्म होना, ऐसे ही मौसमों को बताया जाता है। हमारे सामने एक अनजान आदमी बिल्कुल नए माहौल में समय बिता रहा था।

पहले मुझे लगा कि वह कोई बहुत गरीब लोकल आदमी होगा, फिर मुझे लगा कि वह कोई दुखी भिखारी है, लेकिन उस आदमी का चेहरा बहुत देर तक देखने के बाद मुझे एहसास हुआ कि उसमें एक खूबसूरती छिपी है, वह लगभग साठ या पैंसठ साल का होगा। जब हम लगभग एक घंटे तक चुपचाप बैठे रहे, तो बाहर एक और आदमी की परछाई दिखाई दी। वह आदमी अंदर आया, और मुझे देखकर थोड़ा हैरान हुआ। उनके हाव-भाव समझकर, मैंने उन्हें अपनी कच्ची और टूटी-फूटी तिब्बती भाषा में अपना परिचय दिया। पहले से जान-पहचान वाले सज्जन ने अब उन्हें मेरा काम समझाया, और हम जान-पहचान वाले हो गए।

बूढ़े आदमी अजनबी में खो गए। उसकी एक्टिविटी देखकर, मैंने

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৩১

मैं हैरान रह गया, उसने सबसे पहले अपने बैग से एक हड्डी निकाली। मैंने देखा कि वह इंसान के बछड़े की हड्डी थी, फिर उसने एक खोपड़ी निकाली, फिर एक सूखी बकरी की खाल। उसने उन्हें निकालकर एक तरफ रख दिया। फिर वह अजनबी से किसी ज़रूरी बात पर बात करने लगा। उसके बात करने के तरीके और उसके पास जो औज़ार थे, उससे लग रहा था कि वह या तो कोई तांत्रिक है या कोई जादूगर। उन दोनों ने बैग में रखी चीज़ों को बहुत ध्यान से देखा और फिर उन्हें वापस बैग में रख दिया। थोड़ी देर बाद, वे दोनों उठे और इशारे से मुझसे कहा कि मुझे कोई डर नहीं है, मैं चाहूँ तो वहीं लेट सकता हूँ। उन्होंने मुझे अलविदा कहा और चले गए। मैं पूरे दिन चलने से बहुत थक गया था, इसलिए बिना कुछ और सोचे लेट गया। मेरे बगल में लकड़ी की आग जल रही थी; गर्मी में मेरी आँखें बंद हो गईं।

अगले दिन मैं सुबह जल्दी उठा, मुझे बहुत अच्छी नींद आई। सुबह की ठंड में जैसे ही मैं उठा, मैंने देखा कि मेरे शरीर से कंबल गिर गया था और आग भी बुझ गई थी। मैं जल्दी से उठा और अपनी सुबह की पूजा-पाठ करने के लिए तैयार हो गया। जैसे ही मैं बाहर गया, मैंने देखा कि ओझा का बैग दीवार पर एक खंभे से लटका हुआ था। फिर वह लौट आया होगा, इसलिए मैंने उसे ढूंढना शुरू कर दिया। उसे ढूंढने में ज़्यादा समय नहीं लगा। वह एक पत्थर का सहारा लेकर बैठा था। जैसे ही मैं पास गया, मैंने देखा कि वह ध्यान में बैठा है, उसकी आँखें बंद हैं। उसके सामने एक चौकोर कमरा था, बिल्कुल बाघ के पिंजरे जैसा। उसका शांत और कोमल चेहरा देखकर, मुझे सच में भक्ति का एहसास हुआ। ऐसा लग रहा था जैसे उसके फटे कपड़ों में परम बुद्ध छिपे हों। सब कुछ शांत था, और उसके सामने एक सुंदर नज़ारा था - सूर्योदय में अभी बहुत देर थी। उसे देखकर, मैं भी ध्यान में बैठ गया। जब मैंने अपना ध्यान तोड़ा, तो दूर पहाड़ों पर सूरज की रोशनी दिखाई दी। ओझा मेरे बगल में बैठा है। उन्होंने मुझे प्यार से देखा और पूछा, "त्रापा?" मैंने सिर हिलाकर हाँ में हाँ मिलाई। अब उन्होंने अपने बाएं हाथ में घंटी और दाएं हाथ में वज्र लिया और आरती की तरह हिलाते हुए आवाज़ की, और फिर उठ गए। रात भर हमने बिल्कुल बात नहीं की, हम दोनों में से किसी को भी किसी की सही पहचान नहीं पता थी। कैलाश ही मेरा लक्ष्य है, इसलिए लगता है कि ऐसे व्यक्ति से ही असली मार्गदर्शन मिल सकता है। इसलिए मैंने इस बार उन्हें समझाने की कोशिश की-

मैं गंगटोक से आने वाला एक तीर्थयात्री हूँ, मैं ल्हासा गया था, अब मैं कैलाशनाथ की ओर जा रहा हूँ, मैं इस नदी के सोर्स पर जा रहा हूँ जिसे आप देख रहे हैं। मेरे हाव-भाव और सिक्किम दार्जिलिंग जैसे बार-बार कहे गए शब्द असरदार लगे। जैसे ही मैंने जाने की कोशिश की,

उन्होंने मुझे रोक दिया, कहा कि रुक जाओ, कम से कम उनकी राय में तो यही है।

২৩২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

ऐसा ही लगा। मेरे पास बहुत समय था, इसलिए मैं इस जादूगर के बारे में और जानने की अपनी उत्सुकता को दबा नहीं सका। मैं उसकी एक बात पर मान गया।

यह भाषा सीखने का एक बहुत अच्छा मौका है, भाषा विचारों को बताने के लिए बनती है। मुझे यह खासकर उनके होने से महसूस हुआ। उन्हें सज्जन या संत कहना गलत होगा, वे अपने पहनावे में बिल्कुल भी तांत्रिक नहीं लगते। उनके व्यवहार और उनके पास मौजूद चीज़ों को देखकर, मुझे लगा कि वे कोई जादूगर हैं। मेरा अंदाज़ा गलत भी हो सकता है। हम बहुत कम बात करते हैं, इसलिए मैं उन्हें बहुत अच्छे से देखने लगा।

सबसे पहले जिस चीज़ पर मेरा ध्यान गया, वह था उनका चोगा, खोपड़ी और जबड़ा, जिसे देखकर मुझे तुरंत बकरेश्वर के तांत्रिक संतों की याद आ गई। मुझे नहीं पता कि वह पूरी रात कहाँ थे। लेकिन जब मैंने सुबह उन्हें देखा, तो वह बाउंड्री में बैठे थे। जब वह बैठते, तो मंत्र पढ़ते और अपने चारों ओर लाइनें खींचते, ताकि बुरी आत्माएँ उस बाउंड्री में न आ सकें। एक खानाबदोश जादूगर की तरह, वह कभी-कभी अपने हाथ की घंटियाँ बजाते और किसी से बात करने के लिए आसमान की ओर देखते। उनके मुँह से बहुत ज़्यादा बदबू आने के बावजूद, उनके अजीब स्वभाव ने मुझे अपनी ओर खींचा। मैंने सुना था कि तिब्बत में अभी भी

असली तांत्रिकों की कोई कमी नहीं है। मुझे लगा कि यह एक सुनहरा मौका है। ऐसा मौका शायद ज़िंदगी में दोबारा न मिले।

जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया, मैं ओझा के साथ सांगपो नदी पर गया और अपने कपड़ों से कुछ मछलियाँ पकड़ीं। ओझा बाबाजी ने नदी से एक पतला चैनल काटकर पानी को एक बड़े गड्ढे में डाल दिया था। कभी-कभी, कुछ मछलियाँ गलती से उस चैनल से इस गड्ढे में आ जाती हैं और फिर उन्हें पकड़ने में कोई दिक्कत नहीं होती। अगर मैं वहाँ नहीं होता, तो ओझा बाबाजी को उस गड्ढे से पानी निकालकर उसे सुखाना पड़ता और फिर मछलियाँ पकड़नी पड़तीं। मछलियाँ छोटी मारुला मछलियों जैसी थीं। ओझा बाबाजी इस पकड़ से बहुत खुश हुए और एक छोटे बच्चे की तरह हँसे। ऐसा लग रहा था कि वह बहुत समय से ऐसी खुशी से महरूम थे। जैसे हमें इच्छापुर के गंगा के पानी में तौलिया लपेटकर मछली पकड़ने में खुशी मिलती थी, वैसे ही हम दो बच्चों की तरह खुशी से नाचने लगे। हमने लगभग उतनी ही मछलियाँ पकड़ीं जितनी एक मछली। उसके बाद, हम अपने कैंप में वापस आ गए। मैं सच में जानना चाहता था कि वह मछली कैसे पकाते हैं लेकिन आखिर में मुझे निराश होना पड़ा। उसने मछली कच्ची खाना शुरू कर दिया, सुबह खाली पेट मुझसे रहा नहीं गया, तो मैंने उससे कहा कि सब खा ले। उसने बिना किसी झिझक के सब खा लीं, ज़रा सा भी नमक नहीं डाला। आदत हो या न हो, जैसा कि कहा जाता है, अगर शरीर स्वस्थ है, तो आयरन भी पच जाता है। हमारी ईमानदारी पहले ही बन चुकी है। अगर बाहर कोई मुझे देखेगा, तो उसे लगेगा कि मैं हमेशा उसके साथ रहता हूँ।

ओझा बाबाजी सूरज को देखकर अपना समय तय करते हैं। जैसे ही सूरज थोड़ा गर्म होता है,

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৩৩

बाबाजी ने अपना बैग कंधे पर रखा और मेरा हाथ पकड़कर कहा, "चलो।" उनके अचानक बुलाने पर मुझे यह सोचने का समय ही नहीं मिला कि जाऊं या नहीं। उन्होंने मुझे लगभग जबरदस्ती अपने साथ उठा लिया।

हम दक्षिण की ओर चल पड़े, यहीं से असल में हिमालय शुरू होता है, मतलब अगर आप इस पहाड़ के साथ सीधे दक्षिण की ओर चलें, तो हिमालय पार करके आपको भारत मिल जाएगा। इस समय सिर पर सूरज की गर्मी बहुत अच्छी लगती है, चलने में थकान नहीं होती। छोटे पेड़ों में अब हरियाली आ गई है, सूखी घास से छोटी-छोटी नई घास उग आई है। चलने के लिए कोई रास्ता नहीं है, बस इधर-उधर चट्टानों पर कूदना है। ओझा बाबाजी के नंगे पैर, उन्हें ऐसे पहाड़ी रास्तों पर चलने की आदत है, मैं बस उनके पीछे- पीछे चल रहा हूँ। सांगपो के इस तरफ का नज़ारा बिल्कुल भी आरामदायक नहीं है, सिर्फ़ पहाड़ की दीवार, उत्तर की ओर एक बड़ा मैदान, दूर-दूर तक पहाड़ दिखाई दे रहे हैं। करीब दो-तीन घंटे चलने के बाद हमें एक छोटा सा पहाड़ी गाँव मिला। मिट्टी और पत्थर की दीवारें, और टिन की छत। गाँव पहाड़ से ढका हुआ लग रहा था, अचानक छह घर हमारी नज़र में आए। ये घर एक बड़े खेत के चारों ओर बने हैं। देखने से ही साफ़ है कि ये बस गरीब किसान या मज़दूर हैं। आस-पास की ज़मीन पर सीढ़ियाँ काटकर खेती की जाती है, और अब बीज अभी-अभी गिरे हैं।

जब कुछ लोगों ने हमें गाँव में घुसते देखा, तो उन्होंने यह खबर फैला दी। हम घरों के बीच में जाकर खड़े हो गए। जैसे ही वे वहाँ पहुँचे, ओझा बाबाजी ने अपने थैले से एक हड्डी निकाली और उससे एक बड़ा छेद कर दिया, हम अंदर जाकर बैठ गए। इस बार, उन्होंने धीरे-धीरे अपने थैले से खोपड़ियाँ, सूखी खाल और तरह-तरह की हड्डियाँ निकालीं और उन्हें किसी जादूगर की तरह फैला दिया। ऐसा लग रहा था कि ये उनके उपदेश देने

अलग कटोरे में कुछ लाए और लड़की को खिलाया। दिन की रोशनी लगभग खत्म हो रही थी। लेकिन फिर भी ओझा बाबाजी बिना रुके नाच रहे थे। उनकी तेज़ लय अब धीमी हो गई थी। सबसे हैरानी की बात यह थी कि दोपहर से कोई भी दर्शक अपनी सीट से नहीं उठा था। सब लोग बैठकर ओझा का करतब देख रहे थे।

दोस्ती

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৩৫

शाम होते-होते ठंड बढ़ने लगी, देखने वाले अपने घरों से कंबल लाने लगे और जो कहीं नहीं जा रहे थे, वे धीरे-धीरे अपने घुटनों के बीच चेहरा छिपाने लगे। अभी अंधेरा नहीं हुआ था। मेरे हाथ कांप रहे थे, घंटी लगभग पैरालाइज्ड हो गई थी क्योंकि मैं हाथ बदल रहा था। उसी समय, सबको हैरानी हुई जब तीन डंडियों पर रखी मृतक की खोपड़ी ज़ोर-ज़ोर से हिलने लगी। ऐसा लगा जैसे कोई उसे हिला रहा हो। यह देखकर, मेरे हाथ में घंटी अचानक रुक गई। जादूगर ने मुझे डांटते हुए चेतावनी दी, "बाजी मा।" कई देखने वाले चीखते हुए भागने लगे। खोपड़ी और जादूगर के बीच का फासला ज़्यादा था, वहां हवा का ज़रा भी एहसास नहीं था, फिर भी खोपड़ी लगातार हिलती रही, कभी-कभी रुक जाती थी। मैंने इस बार ज़ोर से मणि मंत्र बोलना शुरू किया।

आस-पास का माहौल देखकर ऐसा लगता है कि दर्शक दोपहर से ही सिर्फ़ यह सीन देखने के लिए बैठे थे। दर्शक पहले एक घेरे में बैठे थे। जब से

खोपड़ी हिलने लगी थी, वे सब एक-दूसरे को पकड़े हुए एक-दूसरे से लिपट गए थे। उनके चेहरों और आँखों पर डर और चिंता साफ़ दिख रही थी। एक बार जब खोपड़ी ज़्यादा हिली, तो वह ज़मीन पर गिर गई, और उसी समय बीमार लड़की ने डर के मारे चीख मारी और लगभग बेहोश हो गई। अब जादूगर लड़की के पास गया, उसकी नाक, कान और मुँह में फूँका, और कई बार अपना मंत्र पढ़ा। फिर उसने उसके पैरों और हाथों से रस्सियाँ खोलीं। लड़की अब आज़ाद हो गई थी और उठकर बैठ गई थी। फिर ऐसा लगा कि उसे होश आ गया है। खुद को उस हालत में देखकर, उसने शर्म से अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। उसके बगल में एक बुज़ुर्ग महिला ने अपना कंबल उस पर डाल दिया। फिर सब एक-एक करके चले गए। जादूगर ने अपना सामान पैक किया और मुझे गर्नी पर चढ़ने को कहा। लगभग पाँच-छह घंटे एक छोटे से कमरे में बैठने के बाद, मैं आज़ाद हो गया। वह खोपड़ी को हाथ में पकड़कर देखना चाहता था, लेकिन ऐसा करने से पहले ही उसने उसे अपने बैग में रख लिया।

इस घटना को अपनी आँखों से देखे बिना मेरे लिए यकीन करना नामुमकिन था। मेरे मन में कई सवाल उठे, मैं समझ नहीं पा रहा था कि यह किसी पागल आदमी का इलाज था या किसी बुरी आत्मा का, लेकिन मुझे मानना पड़ेगा कि मैं ओझा बाबाजी की अनोखी शक्ति से बहुत प्रभावित था। लड़की के गार्जियन बहुत खुश लग रहे थे, उन्होंने हमें खाने पर बुलाया। क्योंकि मिट्टी के फर्श पर ठंड थी, इसलिए उस पर तख्ते थे, और उन पर गद्दे बिछे थे, तो आप समझ सकते हैं कि यह एक बैठक का कमरा था। कमरे से अंदर के महल में जाने के लिए एक और दरवाज़ा था, लेकिन वहाँ खिड़कियाँ नहीं थीं। कमरा लगभग अंधेरा था, उस अंधेरे कमरे में आधे घंटे बैठने के बाद, जिस लड़की को हम जानते थे, वह हाथ में तूफ़ान लेकर आई और विनम्रता से अपनी जीभ बाहर निकालकर अपना सम्मान दिखाया - हमने उसे आशीर्वाद दिया। शायद लड़की की माँ ने हमें दो कटोरी गर्म जौ का शोरबा परोसा।

২৩৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उसने उसे दे दिया। लड़की सूखे मांस का एक कटोरा ले आई। हमने उसे बड़े संतोष के साथ खाया, और हमने जादूगर के साथ कुछ बीयर भी पी, लेकिन वह बहुत छोटी थी।

खाना खाने के बाद, औरतें तूफ़ान और बर्तन लेकर चली गईं, और हम फिर से अंधेरे में रह गए। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उस अंधेरे में क्या करूँ या मुझे वहाँ कितनी देर बैठना होगा। उस अंधेरे में, मैं उस हिलती हुई खोपड़ी के बारे में सोचता रहा। खोपड़ी मेरे बगल में ओझा के चंगुल में थी, और मैंने मन ही मन सोचा, अगर वह ज़िंदा हो जाए और अब हमारे सामने झूलने लगे... तो क्या होगा? यह सोचते ही मेरा शरीर काँपने लगा। अचानक, मुझे एक आवाज़ सुनाई दी, और मैंने उस आवाज़ को ध्यान से सुना। आवाज़ ठीक मेरे बगल से आ रही लग रही थी, लेकिन ध्यान से सुनने पर, यह साफ़ हो गया कि यह असल में ओझा बाबाजी के खर्राटों की आवाज़ थी। मैंने अपने दाहिने हाथ से ओझा बाबाजी के शरीर को महसूस किया। उन्होंने अपने ऊपर लदी हुई बोरी को कंबल की तरह अपने शरीर पर फैला लिया था। मैं समझ गया कि हमें रात यहीं बितानी होगी। बेशक, हम और क्या कर सकते थे? इस रात के अंधेरे में चलने का कोई रास्ता नहीं था।

ओझा बाबाजी की तरह, मैंने भी अंधेरे में टटोला और कमरे के कोने में फटे-पुराने कपड़ों का ढेर देखा - वहीं से मैं अंदर गया। मुझे पहले से पता था कि गरीबों के फटे-पुराने कपड़े बिस्तर, गद्दे और गर्मी के लिए सबसे अच्छा सस्ता तरीका हैं। जब शरीर सच में थक जाता है, तो भूत-प्रेत का डर भी उसे जगा नहीं पाता। पता नहीं कब मैं सो गया। अगले

दिन, ओझा बाबाजी ने मुझे बुलाया। मैंने अपने सिर से फटे-पुराने कपड़े हटाए और उनकी तरफ देखा, यह देखकर कि दिन की रोशनी निकल आई थी और उन्होंने एक बोरा ओढ़ा हुआ था, तो मैं तुरंत उठ गया। कहने की ज़रूरत नहीं है, रात में इस बर्फीली ज़मीन पर काफ़ी ठंड थी, लेकिन मुझे बिल्कुल भी ठंड नहीं लग रही थी। सुबह, चलते-चलते मेरे दांत किटकिटाने और कांपने लगे। बाबाजी थोड़ा मुस्कुराए, फिर जब मैं चल रहा था, तो उन्होंने अपने बोरे से कुछ छोटे सूखे पत्ते निकाले और कहा, "इन्हें चबाओ।" मैं उन्हें निसुंडी के पत्तों की तरह चबाने लगा। थोड़ी देर में, मुझे गर्मी महसूस हुई। अब हम धीरे-धीरे पहाड़ पर चढ़ने लगे, पहाड़ की चोटी से हमें त्सांगपो घाटी का सुंदर नज़ारा दिख रहा था, जहाँ हम रुक गए। खेत में इधर-उधर देखने पर मुझे एहसास हुआ कि यह एक श्मशान घाट है, लेकिन वहाँ जली हुई लकड़ी का एक भी निशान नहीं था - इंसानी हड्डियाँ, खोपड़ियाँ, हाथ, पैर, रीढ़ की हड्डी वगैरह हर जगह बिखरी हुई थीं। तिब्बत के इस इलाके में जलाने की लकड़ी की कमी है, इसलिए यहाँ के नियम अलग हैं। लाश को इस ऊँची जगह पर लाकर फेंक दिया जाता है, और गिद्ध, सियार और कुत्ते उसका दाह संस्कार करते हैं। इस इलाके में चांडालों का एक खास वर्ग भी है, जिनका काम लाशों को मटन की तरह टुकड़ों में काटना है। लोगों का मानना है कि अगर लाश को सीधे छोड़ दिया जाए, तो बुरी आत्माएँ बाहर निकल जाती हैं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৩৭

इसका उपयोग किया जा सकता है, लेकिन यदि अंग काट दिए जाएं तो अन्य आत्माओं द्वारा कब्जे का कोई डर नहीं है। ओझा हड्डियों की तलाश में यहां आए हैं। कभी-कभी वह विभिन्न श्मशानों में जाकर काम के लिए

उपयुक्त हड्डियों को ढूंढ़ते हैं। मुझे इस संबंध में कोई अनुभव नहीं है। मैं तारापीठ और बकरेश्वर के कुछ संतों को जानता था, लेकिन हड्डियों का उनका संग्रह आसन का आकर्षण बढ़ाने के लिए अधिक था। ओझा बाबाजी ने एक के बाद एक हड्डी की जांच शुरू की। कुछ हड्डियां दिखाते हुए उन्होंने मुझे समझाना शुरू किया- यह एक बूढ़े आदमी का जबड़ा है, यह एक बूढ़े आदमी का कूल्हा है। दाहिनी ओर की हड्डी का जो हिस्सा आप देख रहे हैं उसे कुत्ते ने खा लिया है, इसका मतलब है कि यह बहुत नरम है, यह एक जवान लड़की होगी। तंत्र साधना के लिए कंकाल के दो हिस्से बहुत महत्वपूर्ण हैं, पहला खोपड़ी, दूसरा जबड़े की हड्डी। अगर जबड़े की हड्डी कुंवारी की है, तो यह ठीक है। और यह सबसे अच्छा है अगर यह किसी भारतीय ब्राह्मण कुमार की है। उनकी बातें सुनकर मैं मुस्कुराया और समझाया कि मैं ब्राह्मण कुमार बिल्कुल नहीं हूँ, मैं तो बस एक बहुत ही साधारण त्रपा हूँ। ऐसा लगा कि वह मेरा डर समझ गए - उन्होंने मुस्कुराकर मुझे भरोसा दिलाया - डरो मत।

उस श्मशान में बहुत देर तक खोजने के बाद भी काम आने लायक कोई हड्डी नहीं मिली। ऐसा लगता है कि वह थोड़ा निराश था। हम दूसरे रास्ते पर चलते रहे। थोड़ा और आगे जाने पर हमें एक और छोटा सा गाँव मिला। ओझा को देखकर गाँव के सभी लोग खूब मस्ती करने के लिए दौड़े चले आए। गाँव में सभी लोग ओझा को जानते हैं, और कई लोग उसे त्रापा के साथ देखकर थोड़े शक में पड़ जाते हैं। मुझे इसकी परवाह नहीं है। लेकिन मुझे ओझा बाबाजी के साथ रहने से फायदा हुआ है। क्योंकि ऐसे इंसान से मिलना बहुत कम होता है, और जब किस्मत से मैं उनके संपर्क में आया हूँ, तो मैं यह मौका नहीं छोड़ता। जब से मैं उनसे मिला हूँ, मैं इस सबसे प्यारे ओझा बाबाजी की तरफ आकर्षित हो गया हूँ। उस गंदे शरीर, टेढ़े-मेढ़े दाँतों, उलझे बालों, सूखी नाक, दागदार माथे और बदबूदार चेहरे के बावजूद, उनमें एक महान व्यक्तित्व छिपा है। वह कपालिक हैं, पाखंडी हैं या योगी, यह जानने की ज़रूरत नहीं है। मैं उनके चेहरे पर

एक महान आत्मा की छाप साफ देख सकता था। मेरे लिए इतना ही काफी है। वह सचमुच दयालु है।

यह गांव दूसरे गांवों की तरह छोटा है, लेकिन यहां एक चाय की दुकान है और सड़क चौड़ी है। हम चाय की दुकान पर गए और बैठ गए। वे खबरें शेयर करने लगे। गांव के पास, भेड़ों का एक झुंड सूखे खेत में घास के पत्तों को ढूंढते हुए घूम रहा था जो उग रहे थे।

मरीज़ दो-दो करके आने लगे। ओझा बाबाजी ने उनकी जांच करना और उन्हें सलाह देना शुरू किया। सिर्फ़ एक केस में उन्होंने खोपड़ी, सिक्का और घंटी का इस्तेमाल किया। एक बच्चा बुखार से परेशान लग रहा था। मैं समझ गया कि इस गांव में कोई बहुत बीमार है।

২৩৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

नहीं। वहाँ हमने दो कटोरी चांग खाई और फिर से सड़क पर निकल पड़े। हमें चांग के लिए कोई पैसे नहीं देने पड़े, ओझा बाबाजी ने मंत्र पढ़कर और आशीर्वाद देकर दुकानदार को खुश कर दिया।

वहां से हमने नदी का सीधा रास्ता लिया। ऐसा लग रहा था कि यह हमारे शेल्टर का रास्ता है। हम दोपहर में शेल्टर पहुंचे। जैसे ही हम वहां पहुंचे, हमने देखा कि एक गांव वाला हमारा इंतजार कर रहा है। वजह तुरंत पता चल गई। जैसे ही उस आदमी ने अपनी पीठ पर चादर खोली, एक घाव दिखाई दिया। यह पुराना लग रहा था और सेप्टिक हो गया था। ओझा बाबाजी ने इसे ध्यान से देखा और उसे भरोसा दिलाया। उन्हें ठीक-ठीक पता था कि इस मामले में क्या करना है। उन्होंने कुछ सूखी लकड़ियों के साथ

कुछ जली हुई लकड़ी और कोयला जलाया। जब वे काफी लाल हो गए, तो उन्होंने मरीज़ को पेट के बल लेटने को कहा। उनके कहते ही उस आदमी ने अपनी पीठ पर चादर खोली और लेट गया। ओझा ने अब एक डंडे से कुछ लाल गर्म लकड़ी और कोयला उठाया और घाव पर रख दिया। नतीजा ठीक वैसा ही हुआ जैसा मैंने सोचा था, जैसे ही आग उसकी पीठ पर लगी, वह आदमी दर्द से चीख पड़ा। उसकी चीखें सांगपो और पहाड़ों के पानी में गूंजने लगीं। वह आदमी चीखा लेकिन बिल्कुल भी नहीं हिला, कैसी अजीब रोक थी। गर्म कोयले को छोड़कर, ओझा बाबाजी ने बारह या तेरह बार मणि मंत्र का जाप किया। उन्होंने घाव से कोयला हटाया और वहां मिट्टी का लेप लगाया। ऐसा लगा कि इससे दर्द में कुछ आराम मिला। आधे घंटे तक वहीं लेटे रहने के बाद, वे उठे। बहुत ही आसान देसी इलाज लेकिन बहुत असरदार। वे घाव पर मिट्टी का लेप लगाकर वापस आए।

शाम को, हमने पश्चिम की ओर मुँह किया, कंबल ओढ़े, और ध्यान के लिए आग जलाई। मैंने रोटी बनाना शुरू किया। और वह मन ही मन गाने गुनगुनाने लगे... अगली सुबह, मैंने ओझा बाबाजी को प्रणाम किया और अलविदा कहा। उनसे बार-बार पूछने के बावजूद कि वहाँ से मानसरोवर कितनी दूर है, सफ़र कितना लंबा है, सड़क का रास्ता वगैरह, मुझे उनसे कोई सही जवाब नहीं मिला। मुझे लगता है कि मैं उन्हें ठीक से समझा नहीं पाया। हालाँकि, उन्होंने साफ़-साफ़ समझाया कि हमें इसी नदी के रास्ते आगे बढ़ना चाहिए, और ल्हासा जितना बड़ा शहर शिगात्से में होगा। आम तिब्बतियों के लिए समय की कोई कीमत नहीं होती; उनके लिए सात या दस दिन लगभग एक जैसे होते हैं। जैसे ही मैंने प्रणाम किया, ओझा बाबाजी ने मुझे गले लगा लिया - उनका चेहरा खुशी और गर्व से चमक उठा। तिब्बती लोग सड़क के किनारे खड़े होकर जीभ निकालकर प्रणाम करते हैं। आमतौर पर बड़े मंदिरों या गणमान्य लामाओं के बीच प्रणाम किया जाता है। इसलिए ओझा बाबाजी को मेरा प्रणाम और भी ज़्यादा सम्मानजनक हो गया है। वह बार-बार मेरे सिर पर थपथपाते हैं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৩৯

उन्होंने अलग-अलग मंत्र पढ़ना शुरू किया और मुझे आशीर्वाद दिया। मैंने अपना बैग और कंबल लिया और चल पड़ा।

इस इलाके में नदी शांत और गहरी है, इसके किनारे चलते हुए भी कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती। ऐसा लगता है जैसे कोई बहुत बड़ी ताकत चुप हो। सूखे पत्थरों के साथ-साथ आज मुझे कुछ घास और छोटे पेड़ भी दिख रहे हैं। अमरूद के पेड़ों की तरह ही कुछ पेड़ भी दिख रहे हैं, जिनमें अभी-अभी नई पत्तियां निकली हैं। नदी के इस किनारे पर, यानी दक्षिण की तरफ का नज़ारा पहाड़ों से ढका हुआ है - उत्तर की तरफ का नज़ारा काफी अच्छा है। सुबह ठंड होती है, फिर सूरज उगते ही मौसम गर्म हो जाता है। मैं नदी के किनारे चलता हूँ - कोई सड़क नहीं है, लोगों के चलने का कोई निशान भी नहीं है। इसलिए मेरी रफ़्तार बहुत धीमी है। मैं थोड़ी देर चलता हूँ, फिर रुककर फिर से चलता हूँ, बीच-बीच में अपने कंधे और कंबल बदलता रहता हूँ। जैसे ही मैं दोपहर की तरफ चल रहा था, मुझे अचानक हँसी की आवाज़ सुनाई दी। मैंने अपने कान खुले रखे - फिर मुझे फिर से आवाज़ सुनाई दी। ऐसा लग रहा था कि गाँव की लड़कियाँ एक साथ खेल रही थीं। जैसे ही मैंने दो कदम आगे बढ़ाए, मैंने देखा कि मेरा अंदाज़ा सही था, लगभग दस-बारह लोग एक साथ नदी में नहा रहे थे। उनमें कुछ जवान औरतें भी हैं, इस ठंडे पानी में किसी तरह दो-चार डुबकी तो लग जाती हैं, लेकिन तैरना और पानी में छप-छप करना बिल्कुल भी मुमकिन नहीं है। हालांकि जवान औरतों की कमर पर कपड़े के पट्टे हैं, लेकिन उनके सीने पूरी तरह नंगे हैं। मैंने पहले भी आम तिब्बतियों को देखा है, और जवान औरतें बहुत ज़्यादा गर्मी में या

नहाते समय अपने सीने नंगे रखने में हिचकिचाती नहीं हैं। गांव के तिब्बतियों का यह सीधा-सादा स्वभाव तारीफ़ के काबिल है। जब मैंने उन्हें गुज़रते देखा, तो सबने मेरा अभिवादन किया। मैंने भी हमेशा की तरह हाथ उठाकर उनका अभिवादन किया और चला गया। सुबह से ओझा बाबाजी के जाने के बाद यह पहली बार था जब मैंने लोगों को देखा। मुझे लगता है कि इससे सफ़र की थकान थोड़ी कम हुई।

अचानक मुझे एक पगडंडी मिली; जंगल में काफी देर चलने के बाद, मुझे अचानक एक खेत मिला। मुझे यह रास्ता इसलिए लेना पड़ा क्योंकि नदी मेरे सामने मुड़ गई थी, और नदी से एक बहुत बड़ी पहाड़ी दीवार शुरू हो गई थी। मैं चाहता भी तो आगे नहीं बढ़ सकता था। इसलिए मैं उस रास्ते से दक्षिण की ओर उतरने लगा। दाईं ओर की पहाड़ी दीवार ने यहाँ सूरज की रोशनी भी नहीं आने दी। सड़क पहाड़ पर चलकर बनी पगडंडी है। जैसे ही मैंने पहाड़ी दीवार पार की, मुझे कुछ घर दिखे। खेती के लिए कुछ ज़मीन, दो गधे, और कुछ मुर्गियाँ। मैं उन्हें देखकर हैरान रह गया। मुझे लगा, "तुम कहाँ से हो?"

मैं नदी को अपना टारगेट बनाकर आगे बढ़ रहा हूँ। मुझे पहाड़ी पार करके फिर से दाएँ मुड़ना है और नदी के किनारे चलना है। सांगपो ही मेरा एकमात्र गाइड है। जैसे ही मैं आगे बढ़ रहा हूँ, मैं अचानक पीछे मुड़कर देखता हूँ कि कुछ बच्चे चुपचाप मेरा पीछा कर रहे हैं।

২৪০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

वे आगे आए। उन्हें देखते ही वे रुक गए। मैं भी रुक गया। मुझे आराम करना था। मैंने अपना कंबल और बैग सड़क पर रख दिया और बैठ गया। देखते

बेशक, यह पहले जैसा पहाड़ी रास्ता नहीं था, रास्ता ज़्यादातर समतल था, लेकिन मुझे हर कदम पर अंधेरे में ठोकर खानी पड़ रही थी, आसमान में तारों के अलावा कोई रोशनी नहीं दिख रही थी। गाँव धरती से पूरी तरह गायब हो गए लग रहे थे। इस समय, मैं जो भी इंसान देखता, उसका पीछा करता। दोपहर में उस गाँव के बाद, मुझे कोई और इंसान नहीं दिखा।

सिर्फ़ अकेलापन ही नहीं, बल्कि एक नई प्रॉब्लम खड़ी हो गई - ठंड। सिर ढकना और शरीर को कंबल से कसकर लपेटना भी मुश्किल लग रहा था। मैं अब लाइन में चलते-चलते बहुत थक गया था, गाँव के आदमी के दिए लड्डू पहले ही खा चुका था। थोड़ी देर बाद, मैं एक ऐसी जगह पहुँच गया जहाँ मुझमें चलने की भी ताकत नहीं थी। बाहर की ठंड का प्रेशर और मन की थकान बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था, मैं मजबूरन बैठ गया। कंबल को और कसकर लपेटकर, मैंने खुद को एक बोरे में लपेटा और कुत्ते की तरह लेट गया। मैं सो गया; मैंने सपना देखा - मैं एक अनजान राज्य में पहुँच गया हूँ। उस राज्य में न कोई राजा था, न कोई प्रजा, न कोई आवाज़, बस आसमान से फूलों की तरह बर्फ गिर रही थी, इतनी ठंड थी कि उस ठंड में कोई ज़िंदा नहीं रह सकता था। वहाँ, तांत्रिक खोपड़ियाँ ढूँढ़ते घूम रहे थे, मैं उस राज्य में पहुँच गया था और खो गया था। मेरा पूरा शरीर सर्दी में काँप रहा है, मेरी हड्डियाँ आपस में टकरा रही हैं, यहाँ तक कि बगल में सूखी घास का कंबल लपेटने से भी कोई मदद नहीं मिल रही है। मेरे बगल में एक गिद्ध खड़ा है, मेरी मौत का गिद्ध की तरह इंतज़ार कर रहा है। उसे मेरी खोपड़ी चाहिए, उसके गले में चींटियों की माला है, हाथ में त्रिशूल है, सिर पर बालों का एक बड़ा गुच्छा है, उसे देखकर मैं डर के मारे चीख पड़ा... नींद टूट गई है, मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा है और खून के बहाव को कंट्रोल करने में लगा हुआ है। कामाख्या में देखे गए बलि के बकरे की तरह, मेरा पूरा शरीर सर्दियों में डर से कांप रहा है।

मैंने ऐसा सपना क्यों देखा? मैं यह नहीं कह सकता कि मुझे डर नहीं लगता, लेकिन मुझे डर की बिल्कुल भी परवाह नहीं थी। जब मैं मौत की गारंटी के साथ पैदा हुआ था, तो मुझे मौत की परवाह नहीं थी।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मुझे डर नहीं लग रहा है। कपालिक के साथ यह मेरी पहली रात नहीं है, मैंने कपालिक केश साधु के साथ बहुत समय तक मौत का सामना किया है लेकिन मैंने कभी डर के मारे उनका साथ नहीं छोड़ा। लेकिन आज के सपने ने मुझे अचानक कमजोर कर दिया। मैंने खुद को नियंत्रित करने और वापस सोने की कोशिश की लेकिन यह असंभव था। मुझे नहीं पता था कि रात में बाहर इतनी ठंड होगी, मैंने सोचा कि तिब्बत में अब बर्फ पिघलने लगी है, इसलिए अब गर्मी हो गई है। मेरी धारणा पूरी तरह से गलत थी। ठंड ने मेरे कपड़ों और कंबल के माध्यम से मुझ पर हमला करना शुरू कर दिया। कुछ देर तक करवटें बदलने के बाद, मुझे आखिरकार उठने के लिए मजबूर होना पड़ा। मेरा शरीर बहुत ठंडा था, ऐसा लग रहा था कि मैंने सारी गर्मी खो दी है। मुझे कपाल-भतीरा की कहानी याद आई, कि इस प्राणायाम को करने से इडा और पिंगला की गर्मी वापस आ सकती है। इसलिए मैंने प्राणायाम शुरू कर दिया। कुछ देर प्राणायाम करने के बाद, शरीर का तापमान सामान्य हो गया - फिर उस अवस्था में मैंने शुद्ध जाप शुरू कर दिया, सोअहम सोअहम सोअहम..., जाप करते हुए मैं शून्यता की स्थिति में आ गया। मंत्र भटक गया और मन शांत हो गया। मुझे नहीं पता कि मैं कितनी देर इसी हालत में था। मेरे मन में एक शांत ध्यान करते हुए बुद्ध का रूप उभरा - उनके बगल में मैंने कपालिका को देखा, जिसे मैंने सपने में देखा था। वह खड़ा था और मुस्कुरा रहा था। अब मुझे पता चला कि कपालिका के रूप में, वह मेरे साधु बाबा थे, लंबे, दोहरे चेहरे वाले। उन्हें पहचानते ही, मैं समय और जगह भूल गया और चिल्लाया, साधु बाबा! मैं तुरंत फिर से जाग गया। मंत्र की जगह, विचारों की एक जागी हुई

धारा मेरे मन में बस गई थी। मैं इस बार अच्छी तरह से जाग गया। मैं विचारों की इस धारा से बिल्कुल भी छुटकारा नहीं पा सका। तय नहीं कर पा रहा था कि क्या करूँ, मैं अपना बैग लेकर खड़ा हो गया - चलो चलते हैं।

रास्ता अब सिर्फ़ आसमान में तारों से गिरी थोड़ी सी रोशनी में दिख रहा था जो दुनिया के इस हिस्से पर पड़ी थी। मैंने आसमान में एक तारा चुना, उसे नदी के पैरेलल रखते हुए, और चलना शुरू कर दिया। ठंड धीरे- धीरे फिर से बढ़ने लगी थी। मुझे अपने चलने की रिदम समझ नहीं आ रही थी। मैंने फिर से मंत्र गुनगुनाना शुरू कर दिया। ओम मणि पद्मे हम, और मैंने अपने चलने की रफ़्तार और साँसों की रफ़्तार उसके साथ मिलानी शुरू कर दी। पता नहीं अब रात का कौन सा समय होगा, जब दूर पहाड़ी पर अचानक चाँद की एक किरण दिखाई दी। उसने बस किसी तरह खुद को दिखाया था। मेरे चारों ओर उस गहरी शांति में, ऐसा लग रहा था जैसे मैं ही अकेला हूँ। मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं अचानक एक कभी न खत्म होने वाली रात में गिर रहा हूँ। मैं दुनिया के रास्ते पर चल रहा था, लेकिन उस रास्ते की बोरियत बर्दाश्त न कर पाने की वजह से, मैंने दूसरा रास्ता पकड़ लिया। उस रास्ते में इस अनजान कभी न खत्म होने वाली रात का जाल था, मैं उस जाल में फँस गया, यह नहीं जानते हुए कि यह रात खत्म होगी या नहीं। यह पहली बार है जब मुझे एहसास हुआ है कि रात इतनी लंबी है। मैं अपने दिमाग को जगाए रखने की कितनी भी कोशिश कर लूं, यह मुमकिन नहीं लगता।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৪৩

अचानक, मेरे सामने एक नज़ारा देखकर मेरा रोम-रोम खड़ा हो गया - कोई मेरे ठीक सामने चल रहा था, मैंने आसमान से गिरती रोशनी में उसे देखने की कोशिश की, ऐसा लगा जैसे कोई मकड़ी हो। चलते-चलते मैंने अपने दिमाग को और अलर्ट कर लिया, पक्का कोई भी सपने नहीं देखता। मैंने खुद को एनालाइज़ करना शुरू किया, चाहे मैं अपनी सिचुएशन के बारे में कुछ भी कहूँ, मैं कभी नहीं कहूँगा कि मैं हर समय सपना देख रहा था। ऐसा लगा जैसे इस कभी न खत्म होने वाली रात से छुटकारा पाने के लिए मुझे अभी इस इंसान की बहुत ज़रूरत है। सारी झिझक दूर करके, मैंने अपनी मेंटल स्ट्रेंथ से उसे वापस बुलाया - लेकिन मेरी पुकार आवाज़ बनकर नहीं निकली। फिर भी, उसके पीछे चलने के अलावा कोई चारा नहीं था - इस बड़े अंधेरे में वही अकेला उजाला था। काफी देर चलने के बाद, मुझे रुकने पर मजबूर होना पड़ा, मैं अब उस अनजान रहस्यमयी इंसान के ठीक दाहिनी ओर खड़ा था।

मैंने सीधे उनके चेहरे की तरफ देखा। उस रात की हल्की रोशनी में, मैं उनका चेहरा बिल्कुल नहीं देख पा रहा था। तिब्बत में घुसने के बाद से, मैंने सिर्फ़ अलग-अलग तरह के लामा देखे हैं। मैंने ऐसा कोई नहीं देखा जिसे भारतीयों के हिसाब से योगी या तांत्रिक कहा जाता हो। उस अंधेरे की हल्की रोशनी में, मैंने उन्हें देखा लेकिन मैं उन्हें बिल्कुल पहचान नहीं पाया, मुझे उनसे बात करने के लिए कोई भाषा नहीं मिली, और मुझे और भी हैरानी हुई कि वह पूरी तरह से नंगे थे। उन पर कपड़ों का एक निशान भी नहीं था। उनके बाल पीछे उलझे हुए थे, उनके हाथों में कुछ भी नहीं था। एक पूरी तरह से नंगे साधु। मैंने आगे देखा और पाया कि यह रास्ते का अंत था। हमारे बाईं ओर, एक छोटी नदी सांगपो में मिलकर एक संगम बना रही थी। साधु कुछ देर वहीं खड़े रहे और फिर नदी के स्रोत की ओर चलने लगे। मैं भी मंत्रमुग्ध होकर उनके पीछे-पीछे चला। नदी आखिरकार थोड़ी पतली हो गई। बीच में कई बड़ी चट्टानों से टकराते हुए, यह लगभग यहाँ एक झरने का आकार ले चुकी थी।

हम किसी तरह नदी में बड़ी चट्टानों पर कूदकर पानी पार करने में कामयाब रहे। नदी पार करने के बाद, साधु मेरा इंतज़ार किए बिना दक्षिण की ओर चला गया। मैं कोशिश करने पर भी उसके पीछे नहीं जा सका।

अचानक मेरे पैरों से ठंड बढ़ने लगी। मुझे मजबूरन नदी किनारे बैठना पड़ा। जब मैंने अपने लगभग स्थिर पैरों से जूते उतारे, तो देखा कि वे पानी से पूरी तरह भीगे हुए थे। नदी पार करते समय मुझे पता ही नहीं चला कि पानी कब मेरे जूतों में घुस गया। मैंने किसी तरह अपने जूते उतारे, चादर से पैर पोंछे और उनकी मालिश करने लगा। थोड़ी ही देर में मेरे पैर गर्म हो गए। लेकिन दोबारा जूते पहनने का सवाल ही नहीं था, क्योंकि इस सर्दी में नंगे पैर चलना मुश्किल था। साधु अब पूरी तरह गायब हो गया था। उसकी पहचान, रूप-रंग, और वह मुझे नदी पार कराने के लिए इतनी दूर कैसे आया, यह मेरे लिए एक रहस्य बना रहा।

২৪৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं चला गया। गीले जूतों की वजह से मुझे एक नई प्रॉब्लम हो गई। अगर मैं ऐसे ही बैठा रहा, तो ठंड से मर जाऊंगा, और अगर मैं नंगे पैर चलने की कोशिश करूंगा, तो मुझे वैसी ही ठंड लग जाएगी। मैं तय नहीं कर पा रहा था कि क्या करूं।

उसी समय, एक मुर्गे ने बांग दी, मेरी सारी परेशानियाँ हल कर दीं। कू- कू-रू-कू.... ताल और सुर का एक अद्भुत मेल मेरे कानों तक पहुँचा। वह आवाज़ उम्मीद और खुशी की खबर लेकर आई - मेरी कभी न खत्म होने वाली रात वहीं खत्म हो रही थी। मुर्गे की बस एक बांग ने ही मेरे अंदर नई

ज़िंदगी की धारा ला दी। ध्यान से देखने पर, मैंने पाया कि दूर के तारे थोड़े धुंधले होने लगे थे, भोर की शुरुआत हो रही थी।

मुझे उम्मीद की एक किरण दिखी, और मैं अपने जूते हाथ में पकड़े हुए, मुर्गे की बांग वाली दिशा में चलने लगा। मुझे उस दिशा में कोई गाँव ज़रूर मिलेगा। जैसे ही मैं थोड़ा और आगे बढ़ा, मुझे एक जुता हुआ खेत दिखा। मुझे अब गाँव को और नहीं ढूँढना पड़ा, ऐसा लगा जैसे गाँव मेरी ओर दौड़ता हुआ आ रहा हो। एक नए आदमी की तरह, मैं अपने जूते हाथ में लिए कुत्तों से घिरा हुआ था। मैं पूरी तरह बेवकूफ़ की तरह खड़ा होने और गिरने को मजबूर था। एक आदमी हाथ में तूफ़ान लिए मेरी ओर आया। वह मेरा रक्षक था, जैसे ही वह पास आया, मैंने किसी तरह उससे कहा - थोड़ी सी आग। एक आवारा की यह हालत देखकर, वह मुझे सीधे अपने घर ले गया। उस आदमी को कुछ खास समझाने की ज़रूरत नहीं पड़ी, उसने मेरी हालत देखकर ही सब अंदाज़ा लगा लिया। वह मुझे एक कमरे में ले गया और सीधे मुझे एक बिस्तर दिखाया और कहा, "लेट जाओ।" मेरी हालत में इससे ज़्यादा मीठा कुछ नहीं हो सकता था। बिस्तर पर कुछ और लोग भी लेटे हुए थे, तो मैं बिना किसी हिचकिचाहट के उनके साथ हो लिया। आह! क्या खुशी है! मुझे लगता है कि यह हालत सबसे बड़ी खुशी है, मैंने कंबल अपने सिर पर उठा लिया।

अजनबी

मैं उठा। सूरज बिस्तर पर चमक रहा था। मैंने जम्हाई ली और बिस्तर पर बैठ गया, जैसे ही मैं बैठा, मुझे रात की सारी बातें याद आ गईं। मैंने चारों ओर देखा और सोचा कि मैंने क्या सपना देखा, मैंने सारी बातों को अच्छे से याद करने की कोशिश की, मुझे उन्हें लिखने की ज़रूरत थी इससे पहले कि मैं भूल जाऊं। मैंने अपने बैग से एक नोटबुक और पेंसिल निकाली और अब लिखना शुरू कर दिया। सबसे हैरानी की बात यह है कि सुबह

की घटना, जब मैं रात के घने अंधेरे में रास्ता भटक गया था और सर्दियों में लगभग मर ही गया था, वह रहस्यमयी नंगा साधु आया और मुझे यहां ले आया। क्या किस्मत है। सिर्फ़ गुरु की कृपा के बिना ऐसा अनुभव पाना नामुमकिन है। यह घटना मुझे नामुमकिन लगती है। रात के अंधेरे में, दुनिया के एक अनजान देश में, जहाँ लोग और इंसान नहीं थे, कोई मेरा पता नहीं जानता था, एक रहस्यमयी साधु अचानक वहाँ प्रकट हुआ। अब मेरे मन में बस यही सवाल उठता है कि यह साधु कौन है? यह सिद्ध पुरुष कौन है? यह नंगा भैरव कौन है जो इस सर्दियों की रात में तिब्बत में भटके हुए लोगों को रास्ता दिखाने के लिए घूम रहा है? मुझे नहीं पता कि कोई इस सवाल का जवाब दे पाएगा या नहीं। मैं बार-बार उनके प्रति अपनी सच्ची श्रद्धा और आभार प्रकट करने लगा। मैं उस अधेड़ उम्र के आदमी के गद्देदार बिस्तर पर थोड़ी देर और बैठना चाहता था, लेकिन यह मुमकिन नहीं था। खेलते समय दो पिल्ले लगभग मेरी गोद में आ गिरे। और उनके ठीक बाद, बच्चों का एक झुंड दौड़ता हुआ आया, और मुझे देखकर वे रुक गए। मैंने मुस्कुराकर उनसे अपना प्यार जताया, फिर उनके साथ बाहर आ गया।

जैसे ही मैं आँगन में घुसा, मेरा शरीर धूप में नहाया हुआ महसूस हुआ। मुझे फ्रेश महसूस हुआ। आँगन में एक चटाई पर कुछ और बच्चे बैठे थे। कुछ जौ धूप में सूख रहे थे और दूर एक बूढ़ी औरत सूत कात रही थी। कुछ कुत्ते शांति से सो रहे थे, पिल्ले इधर-उधर दौड़ रहे थे। आँगन के चारों कोनों में चार घर थे, जिनकी नींव मिट्टी की थी और पत्थर के ब्लॉक से बनी मज़बूत दीवारें थीं। खिड़कियाँ और दरवाज़े लकड़ी के थे और घरों की छतें टिन की थीं। तिब्बत का एक मिडिल क्लास गाँव। मैंने चारों ओर देखा और उनकी खासियतें देखने लगा। मेरे आस-पास के बच्चे अब काफ़ी रिलैक्स हो गए थे और आपस में खेलने लगे थे। उसी समय, मेरे सामने एक आदमी आ गया।

[illegible]

[illegible] of [illegible]

[illegible] of [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] of [illegible] of of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible], [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] of [illegible] [illegible], of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] of of [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] of of [illegible] of [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] of of of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] of [illegible] of [illegible], [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] of of of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] of of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

of [illegible] of-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] of, [illegible] [illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] a [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] of, [illegible] of

सामने एक कटोरे में कुछ चावल, एक छोटा वज्र और एक घंटी है। अपने आस-पास की स्थिति देखकर मुझे एहसास हुआ कि मुझे पूजा करनी है। सभी गाँव वाले उसका इंतज़ार कर रहे हैं। मैंने एक-एक करके सबको गिनना शुरू किया, सभी इकतालीस लोग थे।

अब उस सज्जन ने मुझसे बहुत विनम्रता से पूजा शुरू करने को कहा। मैं कन्फ्यूज था; किसकी पूजा करूँ, कैसे करूँ, क्या करूँ, मुझे मंत्र के बारे में कुछ नहीं पता था। बिना अपना शक ज़ाहिर किए, मैं आगे बढ़ा और सीट पर बैठ गया। मैं पहले कभी ऐसी सिचुएशन में नहीं था। मैंने आँखें बंद कीं और खुद को कंट्रोल करने लगा कि क्या करूँ। थोड़ी देर बाद, मैंने सोचा कि पूजा का मतलब है हमारी छोटी सी आत्मा का उस महान आत्मा से कनेक्शन। यह उस अनजान आनंद की दुनिया के देवताओं को इस धरती पर लाने का तरीका है, और देवताओं से दिल की इच्छाएँ पूरी करने की प्रार्थना करना। दिल में बसे भगवान जानते हैं कि मुझे पूजा और आराधना के बारे में कुछ नहीं पता, फिर भी उन्होंने मुझे इस सिचुएशन में डाल दिया है। मुझे उस रात देखे गए साधु की इमेज याद आ गई। अचानक, मैंने एक रोशनी देखी, उसका पूरा शरीर मेरे दिमाग में चमक उठा, वह मेरा सेवियर है। वह असल में इस इलाके का गुरु-साक्ष्य है। उसके बारे में सोचते हुए, मेरा मन

273

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৪৭

मैं खुशी से भर गया। मेरे दिल ने उस भगवान से प्रार्थना की। उस प्रार्थना की भाषा मेरी मातृभाषा थी, और मैंने सच्ची श्रद्धा के साथ उन्हें अपनी भेंट चढ़ाई।

आप जहाँ भी हों, मैंने आपके दर्शन देखे हैं, आपने मुझे मौत से बचाया है, आपने मेरी रक्षा की है। आप जो भी हों; मैं उस रहस्यमयी रात के अंधेरे में उस दर्शन के सच या झूठ को वेरिफाई करके आपके अस्तित्व को खोना नहीं चाहता। मैंने जागते हुए जो रूप देखा, उससे मैं धन्य हो गया हूँ, मेरा तिब्बत आना पूरा हुआ है, जो मुझे मिला है, उससे मेरा दिल भर गया है। मैं अपने दिल में पूरी श्रद्धा के साथ आपको सरेंडर करता हूँ...

प्रार्थना के आखिर में मैंने कुछ मुद्राएं बनाईं, फिर बिजली और घंटियों की आवाज़ के साथ आरती की और उन्हें चावल चढ़ाए - अक्षता समर्पयामि श्रीगुरु चरण कमलेव्य नमः।

मैंने झुककर कहा-

यही बात माता और पिता के लिए भी सत्य है, यही बात मित्रों और परिचितों के लिए भी सत्य है, यही बात ज्ञान और शिक्षा के लिए भी सत्य है, यही बात सभी प्राणियों के लिए सत्य है, यही बात सभी प्राणियों के लिए सत्य है।

वहां मौजूद गांववालों को संबोधित करते हुए मैंने कहा:

ॐ त्र्यम्बकं इजामहे सुगन्धैंग नोष्टि वर्धनम उर्भरुकामिभ बन्धनान् मृतः मुक्षि मामृतात्। ॐ सहन भवतु सहनौ भुनक्ता सह वीर्यं कर्बाभाय ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

पूजा के बाद, थोड़ी देर चुप रहने के बाद मैं खड़ा हुआ। अब गांव वालों की बारी थी पूजा-पाठ करने की। गांव की एक महिला ने मुझे एक सफेद तौलिया दिया, जो गांव का सबसे बड़ा सम्मान था। खुशी और शुक्रगुजार होने के आंसू मेरी आंखों में लगभग आ ही गए। मुझे आंखें बंद करके ठाकुर को याद करना पड़ा और अपनी भावनाओं पर काबू पाना पड़ा। गांव वालों के साथ चैत्य की परिक्रमा करने के बाद, हम फिर से गांव के रास्ते पर चल पड़े। उस गांव का जुलूस मेरे साथ शुरू हुआ।

सड़क पर चलते हुए उस सज्जन ने पूछा, "क्या आप भारतीय संत हैं?" मुझे उनसे अचानक ऐसी उम्मीद नहीं थी, मैंने उनकी बातों का कोई जवाब नहीं दिया। थोड़ी देर बाद उन्होंने फिर कहना शुरू किया, "हमारे गांव में ऐसे हिंदू संत को पाकर हम बहुत खुश हैं।" उनकी बातों को मना करने की मुझमें कोई ताकत नहीं है, जब दिल की भक्ति ज़ाहिर होती है, तो सिर्फ़ मातृभाषा ही एक ज़रिया होती है। गांव वालों के इस ज़िंदादिल माहौल में मेरा दिल खुल गया है। मैं माहौल और खुद के बीच कन्फ्यूज़न की हालत में हूं।

২৪৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं सावधान रहना भूल गया और अपनी मातृभाषा, बंगाली, और अपने पसंदीदा भजन, संस्कृत का इस्तेमाल किया। इसलिए मैं उनके हाथों पकड़ा गया।

गंगटोक छोड़ने के बाद से ही मैं हमेशा सचेत था। मैं हमेशा तिब्बतियों से दूर रहता था, खुद को नेपाली तीर्थयात्री और चुप रहने वाला पिता कहता था। जब साधु बाबा आस-पास होते थे तो मुझे ऐसा नहीं

लगता था; लेकिन ल्हासा से कैलाश जाते समय, मैं अपने गार्जियन के तौर पर बहुत सावधानी से था, अपनी बहुत इच्छा के बावजूद, मैंने खुद को ल्हासा में लोगों से दूर रखा। लेकिन आज, किसी वजह से, वो सारी रुकावटें, चीनियों का डर और जड़ता, सब मेरे मन से गायब हो गए थे। मेरा मन इतना हल्का कभी नहीं हुआ था। मेरे इस दुख का अंदर का बिमल अचानक सामने आ गया। मेरे मन की वो रुकावट खुशी के सैलाब में गायब हो गई। मुंडा सिर और भूरे लामा चोगे के साथ तिब्बत में घूमता हुआ ये शरीर अचानक एक अनजान इंसान जैसा लगने लगा। मैं इससे बिल्कुल अलग था। मुझे अचानक इच्छापुर का वो बिमल मिल गया।

मैंने उस आदमी को अपनी ज़िंदगी की कहानी सुनाई। मैंने अपनी टूटी- फूटी तिब्बती भाषा में कहा और उनसे कहा, "हाँ, आप सही कह रहे हैं, मैं इंडियन हूँ। मैं तीर्थयात्रियों के साथ तिब्बत आया था। वे सभी नेपाली लामा थे। मैंने दीक्षा ली और उनके साथ ल्हासा गया। वे सभी लौट आए। मैंने कैलाश जाने के लिए यह रास्ता लिया।"

मेरी बातें सुनकर वह आदमी खुशी से उछल पड़ा, जैसे उसे अचानक हीरे का टुकड़ा मिल गया हो। मेरी और कोई बात सुने बिना, उसने सबको मेरे बारे में बताना शुरू कर दिया।

बाद में मुझे पता चला कि तिब्बतियों के लिए भारतीय तीर्थयात्रियों को देखना बहुत बड़ी बात है। आजकल तीर्थयात्री सफ़र नहीं करते, लेकिन दस साल पहले भी तिब्बती लोग भारतीय तीर्थयात्रियों को देखने के लिए मेन रोड पर ग्रुप में इकट्ठा होते थे। वह इस गाँव के मुखिया हैं, और उनके दो बेटे यातुंग में रहते हैं। वह सज्जन दो बार गंगटोक आ चुके हैं, इसलिए वह इस गाँव में एक इज्ज़तदार इंसान हैं। वह यांगतू में ऊन का व्यापार भी करते थे, लेकिन अब उनके बेटे उनकी देखभाल करते हैं। वह अब भेड़ और खेतों में बिज़ी रहते हैं। कुछ ही समय में, मैं न

सिर्फ़ उस परिवार में बल्कि पूरे गाँव में एक सम्मानित मेहमान बन गया।

गाँव का नाम डिंगो है और उस आदमी का नाम यिगी है। यिगी और उसके भाई गिबिट की एक ही पत्नी है, यानी उस औरत के दो पति हैं, और जो छोटे बच्चे मैं देख रहा हूँ, वे सब गिबिट के बच्चे हैं। यिगी से पैदा हुए बच्चे अब बड़े हो गए हैं। गिबिट के बच्चे अब छोटे हो गए हैं। उस औरत की तारीफ़ करनी चाहिए, और एक ही समय में दो पतियों को खुश करना कोई छोटी बात नहीं है। वह औरत अब लगभग पचास साल की है, लेकिन यह सिर्फ़ मेरा अंदाज़ा है। यिगी, मिस्टर उपजाचक

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৪৯

उसने तुरंत मुझे अपने बर्तन के बारे में बताया, यह तिब्बत में बहुत आम बात है। ऐसा क्यों होना चाहिए या नहीं? इसमें गलत क्या है? द्रौपदी के पांच पति होने के बावजूद, हम उसे सर्वोच्च देवी लक्ष्मी का दर्जा देते हैं। इस परिवार को देखकर लगता है कि दुनिया में इतना सुंदर और खुशहाल परिवार बहुत कम मिलता है।

मैंने यिगी से रात के साधु के बारे में कुछ ही बातों में पूछा - उसे मेरी कोई भी बात समझ नहीं आई। इसलिए मैं इस बारे में चुप रहा। दिन बहुत जल्दी बीत गया। वे शाम होने से पहले ही रात का खाना खा लेते हैं, जिससे लाइट का खर्च भी बचता है और शरीर के लिए भी बहुत अच्छा होता है। उस महिला ने मेरे लिए अपने बच्चों के साथ सोने का इंतज़ाम किया, मैं उनकी सादगी और सरलता को कभी नहीं भूलूंगा।

डिंगबो गांव में दो दिन आराम करने के बाद, हम फिर से सिगात्से की ओर चल पड़े। हम फिर से त्सांगपो नदी के किनारे-किनारे पश्चिम की ओर बढ़े। यहां से सिगात्से का रास्ता बहुत सीधा है।

गांव वाले इसी रास्ते से सिगात्से जाते हैं। आपको त्सांगपो के दक्षिणी किनारे से सीधे सोर्स की ओर जाना होगा। कुछ दिन चलने के बाद, आपको एक नदी मिलेगी - वह है नियांग नदी। नदी पार करने के लिए आपको एक फेरी बोट मिलेगी - नदी के दूसरी तरफ सिगात्से है। इसका मतलब है, यहां से मुझे नियांग नदी के अलावा कोई और नदी पार नहीं करनी पड़ेगी। यह मेरे लिए एक खास सुकून की बात है।

सीगेट

गंगटोक से ल्हासा जाते हुए रास्ते में हमें लगभग हर रात कोई न कोई गाँव मिला। हर गाँव में गुफाएँ हैं, इसलिए वहाँ रुकने में कोई दिक्कत नहीं हुई। गुफाएँ तीर्थयात्रियों के रहने की जगह हैं। अगर कोई चुसुल से त्सांगपो लेकर सिगत्से की तरफ़ आता है, तो उसे निराशा होगी। वहाँ लगभग कोई आबादी नहीं है, पिछले पाँच दिनों में 41 लोगों वाले उस छोटे से डिंगबो गाँव को छोड़ने के बाद, मुझे सिर्फ़ छह घर मिले हैं। वे बहुत गरीब किसान हैं, उनकी सच्ची भक्ति को अपनी डायरी में बयां करना नामुमकिन है। क्या ज़िंदगी की उस धड़कन को शब्दों में बयां करना मुमकिन है? वे मेहमान की सेवा के लिए अपनी जान दे सकते हैं, खासकर अगर मेहमान कोई लामा या साधु हो। वे वफ़ादार और सीधे- सादे होते हैं। उन्हें साधना के ऊँचे रास्ते पर संघर्ष नहीं करना पड़ता, वे पहले से ही ऊपर होते हैं। वे बिना कोई सवाल पूछे मदद के लिए दौड़े चले आते हैं। मैं उनका कर्ज़ कभी नहीं चुका पाऊँगा।

ल्हासा से सिगात्से की दूरी करीब एक सौ तीस मील है। मेन रोड से आने में करीब दस से ग्यारह दिन लगते हैं। मैंने पूरे रास्ते सांगपो को फॉलो किया - मेरे लिए यह सबसे आसान रास्ता था। न सिर्फ सड़क बल्कि चट्टानें भी - यह बहुत मुश्किल था। नियांग नदी के किनारे पहुंचने में मुझे करीब तेरह दिन लगे।

तेरहवें दिन, दोपहर में, त्सांगपो घाटी से गुज़रते हुए, मुझे अचानक अपनी बाईं ओर एक और घाटी दिखाई दी। हिमालय की वह बड़ी दीवार जिसके पीछे मैं त्सांगपो के दक्षिण में चल रहा था, अचानक खत्म हो गई। मेरे सामने एक और बड़ा मैदान था, और यहाँ अचानक एक गाँव उभर आया था। मुझे एहसास हुआ कि मैं सिगात्से के किनारे पहुँच गया हूँ। त्सांगपो के ठीक किनारे, मुझे एक खुशहाल गाँव मिला। मैं गाँव से होकर चलने लगा। गाँव एक नदी के संगम पर खत्म हुआ। यह नियांग नदी थी। मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा, तिब्बती लोग जब तक बहुत ज़रूरी न हो, किसी से बात नहीं करते, इसलिए उस तरफ कोई डर नहीं था। मैंने एक चाय की दुकान देखी और वहाँ बैठ गया। दुकान के सामने, एक लड़की एक बड़े कटोरे में चाय में मक्खन मिला रही थी। जब उन्होंने मुझे देखा, तो उन्होंने अपनी जीभ निकाली और सम्मान दिखाया। दुकान के अंदर बैठने की जगह नहीं है, लेकिन बाहर एक बेंच है, दो लोग वहाँ बैठकर बातें कर रहे हैं। जब उन्होंने मुझे देखा, तो वे खड़े हो गए, फिर अपनी आस्तीन से बेंच से धूल साफ़ की और मुझे वहीं बैठने को कहा।

১৮
महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৫১

मैंने उनसे एक गिलास चाय बनाने को कहा। तिब्बत में हर जगह चाय लगभग एक ही तरह से बनती है। यहाँ भी, चाय की पत्तियों को दो दिन तक पानी में भिगोया जाता था, वे उन्हीं पत्तियों का इस्तेमाल करते थे, और जब वे चाय बनाते थे, तो उसमें मक्खन और नमक मिलाते थे। इसके लिए लंबे चिमटे का इस्तेमाल किया जाता था। जब मैंने पहली बार यह सीन देखा, तो मुझे लगा कि कोई लंबा चिमटा मसाले मिला रहा है।

फिर मुझे लोगों से पता चला कि यहाँ दो फेरी पियर हैं। एक ब्रह्मपुत्र पार करने के लिए और दूसरा नियांग नदी पार करने के लिए। ब्रह्मपुत्र फेरी पकड़ने के लिए, आपको नियांग नदी पार करके सिगात्से जाना पड़ता है, दिन में दो या तीन बार नावें चलती हैं। और यहाँ से नियांग नदी पार करने के लिए, आपको पियर पर जाकर नाव वाले को आवाज़ लगानी पड़ती है - नाव दूसरी तरफ से आ रही है, नावें दिन में एक या दो बार चलती हैं। अगर यह एक आदमी के लिए है, तो नाव वाला आना नहीं चाहता।

मैंने घाट के पास देखा कि कोई फेरी घाट नहीं था। और इधर-उधर देखने के बाद भी मुझे कोई नाव नहीं दिखी। नियांग नदी ज़्यादा चौड़ी नहीं है, लेकिन संगम के पास दोनों तरफ़ रेत के बड़े-बड़े टीले हैं। मैंने इस नदी का सोर्स समद के पास देखा। वहाँ से, हम नदी के साथ-साथ ग्यात्से तक गए। ग्यात्से के पास, यह एक दूसरी सहायक नदी से मिल जाती है और यहाँ एक बहुत बड़ी नदी बन जाती है।

अगर मैं अपने देश में इस हालत में होता, तो न रुकता और न ही तैरकर पार करता, लेकिन यहाँ यह नामुमकिन है। हालाँकि तिब्बत में गर्मी है, लेकिन यह गर्मी दार्जिलिंग की गर्मी से बहुत ज़्यादा ठंडी है। इस बर्फ़ के पिघले पानी में तैरने से पहले, मुझे जम कर डूबना पड़ेगा।

पार करने का कोई और रास्ता न मिलने पर मुझे मजबूरन उस चाय की दुकान पर लौटना पड़ा। मैंने दुकान वाले से पूछा तो वह घाट की तरफ भागा; फिर वापस आकर निराश स्वर में बोला, "आज पार करना मुमकिन नहीं है। उन्होंने नाव हटा दी है।" मेरी निराशा देखकर उसने मुझे दिलासा दिया और कहा कि चिंता करने की कोई बात नहीं है। मैं चाहूँ तो उसकी दुकान में रात बिता सकता हूँ। आग लगी है, इसलिए कोई दिक्कत नहीं होगी। इससे बेहतर इंतज़ाम नहीं हो सकता, और मैं मान गया।

उजाला होते ही उन्होंने दुकान बंद कर दी। मैंने लड़के को रात रुकने के लिए एडवांस में एक सिक्का दिया। मैं आपको बता नहीं सकता कि सिक्का पाकर वह कितना खुश हुआ। तिब्बती लोग दो या तीन पैसे पाकर खुश होते हैं, लेकिन भारतीय सिक्के को देखकर मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने चार गुना कीमत चुका दी हो। उसने खुशी में मुझे अपने साथ खाने के लिए कहा, मैं लगभग उछल पड़ा और तुरंत मान गया। वह दुकान में एक छोटे से कमरे में रहता है। मैं लड़के के साथ उस कमरे में गया, लगभग अंधेरा हो गया था, और जब मैं अंदर गया, तो मैंने लड़की को देखा।

২৫২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

वह एक बर्तन में खाना बना रहा था। जैसे ही उसने हमें कमरे में आते देखा, उसने मुस्कुराकर मेरा स्वागत किया। बिना किसी परिचय के, उसने मुझे बर्तन में गरमागरम खिचड़ी जैसी कोई चीज़ परोसी। लड़का मेरे बगल में बैठ गया। वह भी कटोरे में खाने लगा। शुरू करने से पहले, मैंने बर्तन के अंदर देखा, बर्तन लगभग खाली था। मैंने उसे बर्तन से आधा खाना दिया और कहा, "चलो इसे बांट लेते हैं।" वह पहले तो नहीं माना, लेकिन आखिर में मान गया। हम तीनों ने दो-दो लोगों के लिए खाना

बांट लिया। ऐसा लग रहा था कि वे भाई-बहन हैं। मैं रात होने से पहले दुकान पर लौट आया। दुकान में कोई भीड़ नहीं थी, मेरे जैसे दो और लोग वहाँ आ गए थे। ऐसा लग रहा था कि वे भी कल की फरवरी की छुट्टी के लिए आए थे। मुझे मेहमान के तौर पर उनोन के ठीक बगल में जगह मिल गई। लड़के ने उनोन में एक बड़ा आधा जला हुआ लट्ठा भर दिया और चला गया। मैं भी थका हुआ था, इसलिए जैसे ही मुझे थोड़ी गर्मी महसूस हुई, मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं।

अगली सुबह हम उठे। जब हम उठे, तो हमें बुलाया गया; लड़की ने हमें जगाया। हमें पता भी नहीं चला कि चाय तैयार थी। हमने जल्दी से अपनी चाय पी और लड़की को चार पैसे और देकर मैं फेरी के लिए निकल पड़ा। यहाँ एक गिलास चाय की कीमत दो पैसे है। मैं फेरी पियर पर दो और लोगों के साथ पहुँचा जो एक दिन पहले नदी पार करने आए थे।

नाव देखकर मैं हैरान रह गया, मैंने पहली बार ऐसी नाव देखी थी। इसे चमड़े का एक बड़ा कटोरा कहा जा सकता है। हम अंदर ठूंस-ठूंस कर भरे थे, अगर हम खड़े होते तो इसके पलटने का खतरा था। नाव किसी तरह एक तख्ते से चल रही थी, उसमें बिल्कुल भी बदबू नहीं थी। हम चलने के लिए नदी की धारा पर निर्भर थे। हम किसी तरह उसे पार कर सकते थे।

एक बार पार करने के बाद, उसे वापस घाट तक ले जाना पड़ा, नहीं तो वह पानी के बहाव में बहकर नदी के मुहाने पर चला जाता। आखिरकार, हम सिगात्से पहुँच गए।

शिगात्से तिब्बत के सबसे बड़े शहरों में से एक है, ल्हासा पहला, शिगात्से दूसरा। ग्यात्से तीसरा और यातुंग चौथा है, इस शहर को छोड़कर, बाकी शहर मैंने पहले देखे हैं। यह शहर नियांग और त्सांगपो के संगम पर बना है, जो परम पावन पंचेन लामा का पवित्र स्थान है।

परंपरा के अनुसार, पंचेन लामा दलाई लामा के धार्मिक भाई हैं। पूरे तिब्बत में धार्मिक समारोहों और प्रचार की मुख्य ज़िम्मेदारी इसी पंचेन लामा पर थी, और दलाई लामा शासन और राजनीति के लिए ज़िम्मेदार थे। लेकिन असल में, दलाई लामा तिब्बत के शासक हैं और पंचेन लामा त्सांग प्रांत के शासक हैं, त्सांग प्रांत के तीन मुख्य शहर, शिगात्से, ग्यात्से और फारी, वह इन तीनों शहरों के शासक हैं। पंचेन लामा के स्थानीय मौजूदा नाम ताशी लामा और पंचेन रिम्पोछे हैं!

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৫৩

ल्हासा की तरह शिगात्से भी तिब्बत की बड़ी पवित्र जगहों में से एक है। शिगात्से शहर को साफ़ तौर पर तीन हिस्सों में बांटा जा सकता है। पहला है यहाँ का किला, कई साल पहले चीनियों ने इसी किले में अपना मेन बेस बनाया था। आज भी उन्होंने ताशी लामा की सुरक्षा और लॉ एंड ऑर्डर में मदद के लिए यहाँ अपना हेडक्वार्टर बनाया है। किले के नीचे शहर और कमर्शियल एरिया है, जो इस इलाके का मेन मार्केट है, और कुछ मील दूर यहाँ की मेन गुफा है जिसे ताशिलम्पो कहते हैं। ल्हासा के पोटाला की तरह ही, यहाँ ताशिलम्पो है, जहाँ पंचेन लामा रहते हैं। दलाई लामा के समर रेसिडेंस की तरह, ताशी लामा का भी एक समर रेसिडेंस है, जो शहर से लगभग बारह मील दूर है; इसका नाम कुन-क्यापलिंग है। मैंने साधु बाबा से शिगात्से के बारे में पहले ही बहुत कुछ जान लिया है।

जैसे ही मैं नियांग नदी के ऊपर से ऊपर चढ़ा, मेरी आँखों के सामने एक बहुत बड़ा शहर दिखाई दिया। वहाँ घर बहुत घने थे, वहीं मैंने कदम रखा। यह शहर सांगपो घाटी में एक बड़ी समतल ज़मीन पर फैला हुआ है। मैं धीरे-धीरे बाज़ार की तरफ़ बढ़ा। शहर की हर गली बाज़ार में मिलती

है। ग्यात्स के बाज़ार की तरह, गधे, याक, भेड़, मुर्गियाँ, कुत्ते सड़क पर जमा हुए थे। दोनों तरफ़, कलिम्पोंग के बाज़ार की तरह, दुकानें और शेरपा भरे हुए थे। इस बीच, मैं आगे बढ़ा। अचानक, मुझे एक साइनबोर्ड देखकर रुकना पड़ा। उस पर हिंदी और अंग्रेज़ी में 'होटल' लिखा था। जब यह हिंदी में लिखा था, तो मैं ज़रूर उसकी तरफ़ गया, इस उम्मीद में कि कोई हिंदी जानने वाला मिल जाएगा। मुझे यहाँ से कैलाश जाने की पूरी जानकारी इकट्ठा करनी है। होटल एक मंज़िला सफ़ेद घर है। हिंदी में होटल शब्द लगभग साफ़ नहीं है। ग्राउंड फ़्लोर पर एक किराने की दुकान है। दुकान में कोई हिंदी जानने वाला नहीं था, इसलिए मैं घर के अंदर चला गया। एक बुज़ुर्ग सज्जन ने मुझे हैरानी से देखा। मैंने मुस्कुराते हुए हिंदी में पूछा, "मैंने आपके घर की दीवार पर हिंदी में 'होटल' लिखा देखा। क्या आप हिंदी समझते हैं?" उन्होंने मेरी बात ध्यान से सुनी। मेरे सवाल का सीधे जवाब देने के बजाय, उन्होंने अपनी कमज़ोर मूंछों पर उंगलियां फेरीं और सोचने लगे।

फिर बिना कुछ कहे वह अपनी सीट से उठ खड़े हुए, मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया, वह बाहर आए, मैं उनके पीछे गया। मैं सड़क पार करके एक सुंदर पगोडा जैसे घर के सामने खड़ा हो गया। उन्होंने मुझे बाहर खड़ा किया और घर के अंदर चले गए। थोड़ी देर बाद, एक और बूढ़े आदमी उनके साथ घर से बाहर आए और मुस्कुराकर मेरा स्वागत किया। इस बूढ़े आदमी का चेहरा देखते ही मेरा पूजा करने का मन कर रहा है। उन्होंने प्यार से पूछा - क्या आप गंगटोक से हैं? उनके मुँह से सुंदर हिंदी सुनकर मैं हैरान रह गया। मैंने कहा - हाँ। वह

২৫৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मेरा जवाब सुनकर वह हैरान रह गए, फिर उन्होंने हैरानी से अपनी आवाज़ ऊँची की और कहा, "बताइए! मैंने सुना है कि आजकल आना-जाना बंद हो गया है। इस पवित्र आत्मा के सामने झूठ बोलना मुमकिन नहीं है।" मैंने उन्हें गंगटोक से ल्हासा और ल्हासा से यहाँ तक सब कुछ बताया। मैंने उनसे खास तौर पर रिक्वेस्ट की कि मैं कैलाश जाकर मानसरोवर में डुबकी लगाना चाहता हूँ, प्लीज़ मुझे बताइए कि वहाँ कैसे और कहाँ पहुँचा जा सकता है, मैं आपका शुक्रगुजार रहूँगा।

मेरी बातें सुनकर वह आदमी बहुत परेशान हो गया। उसने अपनी हल्की दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए सिर्फ़ "हम्म" की आवाज़ निकाली। उसने उस आदमी से, जो मुझे वहाँ लाया था, जाने को कहा और मुझे अंदर के कमरे में ले गया।

लकड़ी के खंभे और सीमेंट की दीवारें। घर को देखकर ही समझ आ जाता है कि यह एक अमीर परिवार है। उन्होंने मुझे एक छोटे भारी गद्दे पर बिठाया और किसी को ज़ोर से आवाज़ दी। अंदर से एक औरत आई। मुझे देखकर वह रुक गई और आदर से सिर झुका लिया। उस आदमी ने उससे कुछ खाना लाने को कहा, और वह फिर चली गई। इस खूबसूरत मूर्ति को देखकर मेरे मन में एक नई लहर आई। मुझे उन्हें दादाजी कहने का हक मिला। वह मेरे सामने पैर क्रॉस करके बैठ गए और बहुत ही राज़दार लहजे में, थोड़ी डांटते हुए बोले, "तुमने अपना ग्रुप छोड़कर अच्छा नहीं किया। जब तुम आ ही गए हो, तो और क्या किया जा सकता है?"

तुम कैलाश जाओगे। यह बहुत अच्छा है। भगवान बुद्ध और बोधिसत्व तुम्हारी रक्षा करें। लेकिन तुम अभी बच्चे हो। कैलाश यहाँ से बहुत दूर है। इसके अलावा, रास्ता बहुत मुश्किल है। मैं तुम्हें रास्ता दिखा सकता हूँ। अगर तुममें वहाँ पहुँचने की हिम्मत है, तो तुम ज़रूर पहुँच जाओगे।

हमारी बातचीत के बीच में, अंदर से एक लेडी एक बड़ी लकड़ी की प्लेट में चाय और स्नैक्स लेकर आई और हमारे पास रख दी। चाय पीते-पीते और बातचीत शुरू हो गई और फिर अचानक मुझे कुछ बहुत ज़रूरी जानकारी मिली। मैंने तुरंत दादाजी से उसे दोहराने के लिए कहा, उन्होंने मुस्कुराते हुए फिर कहा-

अगर आप मानस सरोवर कहेंगे तो लोग इसे पहचान नहीं पाएंगे। भारतीय तीर्थयात्री इसे इसी नाम से पुकारते हैं, लेकिन हमारे लिए इसका नाम बिल्कुल अलग है। हम मानस सरोवर को मफहम त्सो कहते हैं, कई लोग इसे मभंग त्सो के नाम से भी जानते हैं। त्सो का मतलब है झील। मानस सरोवर के बगल में लंगक त्सो है, जिसे भारतीय संत राक्षसताल कहते हैं। इन दोनों झीलों का आपस में गहरा रिश्ता है। तिब्बतियों के लिए कैलाश कोई बहुत बड़ा तीर्थस्थल नहीं है, बड़ा तीर्थस्थल वहां की गुफा है। अगर आप सबको दिराफुक गुफा बता देंगे, तो वे

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৫৫

मैं तुम्हें रास्ता दिखाऊंगा। दादाजी ने ये नाम एक कागज़ पर तिब्बती भाषा में साफ़-साफ़ लिख दिए।

मुझे नाम लगभग याद हो गए थे: मफाम त्सो, मभांग त्सो, लांगक त्सो, दिराफुक गुफा, दिराफुक गुफा। मैंने उन नामों को मन में इष्ट मंत्र की तरह जपना शुरू कर दिया। अगर मेरे कागज़ या डायरी खो भी जाती, तो कम से कम कैलाश का रास्ता मेरे दिमाग से नहीं जाता। मुझे दोपहर में

अपने दादाजी के साथ लंच करने का न्योता मिला। किसी और दिन, मैं न्योता पाकर खुशी से झूम उठता, लेकिन उस पल, मेरे मन में कैलाश की एक सपने जैसी तस्वीर उभरी, और मैं सोचता रहा कि मुझे अभी निकलना चाहिए। मेरा मन खुशी से उछलने लगा - मुझे मिल गया, मुझे मिल गया, मुझे कैलाश का रास्ता मिल गया।

दादाजी ने मुझे ज़बरदस्ती ये-वो खिलाया, काफ़ी देर बाद मैंने चावल और सब्ज़ी खाई और साथ में मीट भी था। खाने के बाद मैंने उन्हें थैंक यू कहा और बाय कहा, लेकिन वो लगभग उछल पड़े - उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और कहा - पागल हो क्या! अब कहाँ जा रहे हो? बॉस, बॉस, आराम करो। मुझमें उनकी प्यार भरी मेहमाननवाज़ी को नज़रअंदाज़ करने की हिम्मत नहीं थी, इसलिए मैं मान गया।

बाद में मुझे पता चला कि दादाजी इस घर के मालिक थे - लेडी खाना बनाती थी। उनके सभी बच्चे कुछ दिन पहले एक रिश्तेदार की शादी में गए थे। दादाजी ने बचपन में दार्जिलिंग में पढ़ाई की थी, और उन्हें अभी भी कुछ बंगाली शब्द याद हैं। वे लंबे समय तक कुर्सियांग, कलिम्पोंग और सिलीगुड़ी में रहे थे, और वे दो बार कलकत्ता भी गए थे। उनके अनुसार, दुनिया में बंगालियों जितना होशियार कोई दूसरा देश नहीं है। वे कभी-कभी अपने टेढ़े दांतों से हंसते थे, और अक्सर बहुत पुरानी बातें याद करके खुश हो जाते थे। मुझे उनकी याददाश्त के बारे में जानकर हैरानी हुई, वे अभी तक हिंदी नहीं भूले थे। बाद में मुझे पता चला कि दादाजी का सड़क के उस तरफ एक होटल था, लेकिन वह बिज़नेस अब नहीं है। वह बंगाल का गोल्डन एज था जब इंडिया के साथ अच्छा कम्युनिकेशन था।

पंचेन लामा

दोपहर में दादाजी ने अचानक मुझसे पूछा,

-क्या आपने ल्हासा में दलाई लामा को देखा है?

मैंने जवाब दिया, "हां, मैंने उसे देखा था, लेकिन मुझे उससे बात करने का मौका नहीं मिला।"

बेशक, उससे बात करने का कोई मतलब नहीं है। वह अभी भी एक लड़का है, और लोग हमेशा उसके आस-पास रहते हैं। लेकिन पंचेन लामा अलग है, उसे अच्छी तरह पता है कि कहाँ जाना है और क्या करना है।

दादाजी की बातों से मैं हैरान रह गया, उनके लहजे से मैं साफ समझ गया कि वे दलाई लामा से ज़्यादा पंचेन लामा की इज्ज़त करते थे। दलाई लामा उनके लिए बस एक नाबालिग थे। उनकी बातों से मैंने दादाजी से और भी बहुत सी बातें सीखीं। वे कहने लगे-

एक ज़माने में पंचेन लामा तिब्बत के स्पिरिचुअल लीडर थे। लेकिन पॉलिटिकल वजहों से दलाई लामा ने धीरे-धीरे वह पावर अपने हाथ में ले ली। बेशक, इसके लिए दलाई लामा को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। असली दोषी तो उनके साथी हैं। वे ही हैं जो तिब्बत में दलाई लामा के आस-पास ज़रूरी पोस्ट पर कब्ज़ा किए हुए हैं। एक समय था जब छोटे दलाई लामा बड़े होकर देश चलाने की पावर पाने से पहले ही मर जाते थे। इस मौत की मुख्य वजह कैबिनेट में हेरफेर थी। पंचेन लामा खुद तिब्बत के इस लामा धर्म का मुख्य राज़ अच्छी तरह जानते हैं। पुराने ज़माने से, भारत से जो भी तीर्थयात्री मानस की परिक्रमा करने के लिए इस रास्ते से जाते थे, वे सभी पंचेन लामा का आशीर्वाद लेते थे। आप कई लोगों से सुनेंगे कि पंचेन लामा चीन के सपोर्टर हैं, जो सच नहीं है। असल में, वे दूर की सोचने वाले हैं। हमारा तिब्बत एक छोटा सा देश है। आपने ल्हासा देखा है, कोलकाता के मुकाबले, वह बस एक छोटा सा शहर है। चीन और भारत के

मुकाबले यह बहुत छोटा है, हमारे पास मॉडर्न हथियार या काबिलियत नहीं है, अगर अचानक कोई बाहरी दुश्मन हम पर हमला कर दे, तो हमारी रक्षा कौन करेगा? इसलिए हमें एक ऐसी फोर्स चाहिए जो हमारी रक्षा करे। तिब्बत हमेशा से चीन के अंडर रहा है, तिब्बत के बुरे वक्त में चीनी उसकी रक्षा के लिए आगे आए। तिब्बत के बनने की जड़ में चीन ही था। चीनी सम्राटों ने ही पांचवें दलाई लामा को गद्दी पर बिठाया और राजा की गद्दी पर बिठाया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৫৭

आओ, इस कमरे में आओ, देखो, ध्यान से देखो, यह बड़ी सी फोटो जो तुम सामने देख रहे हो, क्या तुम जानते हो कि यह किसकी फोटो है? यह आज (1923) से ठीक पहले पंचेन लामा हैं, वे अंग्रेजों के सामने सरेंडर करने के बजाय खुद को बचाने के लिए किंघाई गए थे, जहाँ उन्होंने अपनी जान दे दी। कुछ साल बाद उनका जन्म उसी प्रांत (1952) में हुआ था। वह बच्चा पंचेन लामा चीनियों की मदद से यहाँ लौटा था। चीनियों की मदद के बिना, वह कभी भी शिगात्से में अपना असर वापस नहीं ला पाता। किंघाई का वह बच्चा पंचेन लामा आज के महान पंचेन एर्डेनी हैं। क्या इसीलिए हम चरित्र और दिखावट में चीनियों जैसे दिखते हैं?

दादाजी को बहुत दिनों बाद कोई बात करने को मिला था, इसलिए उन्होंने मुझे बड़े जोश के साथ तिब्बत का इतिहास बताना शुरू किया। उनकी बातों से साफ़ था कि वे हान या चीनी समर्थक थे। मैंने दादाजी से जो सीखा, उसका छोटा सा ब्यौरा देता हूँ - हान अब पूरे तिब्बत में फैल चुके हैं। सिर्फ़ ल्हासा में ही उन्होंने अभी तक अपना असर पूरी तरह से

नहीं जमाया है। क्योंकि वहाँ के लामा और गुफाएँ बहुत ताकतवर हैं। तिब्बतियों का कलून वर्ग दलाई लामा की कशाग कैबिनेट का मालिक है। वे हान का दखल बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करते। चीनियों ने अब अपने दरवाज़े खोल दिए हैं। आजकल तिब्बत और चीन के बीच कोई बॉर्डर नहीं है। तिब्बती लगातार चीन आते-जाते रहते हैं।

लामाओं में पंचेन लामा सबसे दूर की सोचने वाले हैं और चाहे वे सौ हों या नहीं, पंचेन लामा ही दलाई लामा और पूरे तिब्बत के आध्यात्मिक नेता हैं। दलाई लामा ने हान के साथ जो समझौता किया था, उसे पंचेन लामा पूरी तरह से निभा रहे हैं। इसलिए, चीनी अब इस शिगात्से इलाके के विकास के लिए हर तरह के इंतज़ाम कर रहे हैं। पहले तिब्बत में सड़कें नहीं थीं, लेकिन आजकल चीनी सैनिकों ने पाँच सड़कें बना दी हैं। अब आप जीप से सीधे शिगात्से से काठमांडू जा सकते हैं।

चीनी सेना तिब्बत को डेवलप करने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है, और सिगात्से से ज़्यादा दूर नहीं, एक एयरपोर्ट पहले से ही बन रहा है। तिब्बती युवा पढ़ाई के लिए बड़ी संख्या में बीजिंग जा रहे हैं।
भिखारी समुदाय, जो पहले बिना खाने के सड़क के किनारे पड़ा रहता था, अब चीनी सेना में शामिल होने का मौका पा रहा है। आस-पास के मिलिट्री बैरक में काम आसानी से मिल रहा है।

दादाजी के शब्दों में, हांडे के आने का स्वागत करना समझदारी होगी। शिगात्से इलाके में अभी चल रहे सभी डेवलपमेंट प्लान के सेंटर में पंचेन लामा हैं। दादाजी की बातें साफ़ और लॉजिकल थीं। मुझे लगने लगा कि क्या मैंने उन्हें अपने बारे में सब कुछ बताकर ठीक किया है। जो भी होगा, जो मैंने कहा है, वही होगा।

২৫৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं अब इसे वापस नहीं ले सकता। चाहे वह चीन का समर्थक हो या दलाई का, मुझे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मुझे अपने दादाजी से पता चला कि शिगात्से पर अब चीनी सेना का कब्ज़ा है। इसलिए मुझे अब बहुत सावधानी से वहाँ से निकलना होगा। मुझे अपने दादाजी के घर का जाना-पहचाना माहौल, मेहमाननवाज़ी और उनके सीधे-सादे स्वभाव का भ्रम छोड़कर कैलाश का रास्ता चुनना होगा। मैं दोपहर में अपने दादाजी के साथ शहर की तरफ़ घूमने गया था। शिगात्से एक बड़ा शहर है, लगभग ल्हासा जैसा। वहाँ पक्के घरों और सड़कों की कोई कमी नहीं है, लेकिन उस अनोखी पहाड़ी पर पोटाला जैसा कोई महल नहीं है।

शिगात्से, त्सांगपो घाटी में एक खूबसूरत शहर है। मैदानों पर बनी पगोडा जैसी इमारतें बहुत खूबसूरत हैं। आप अलग-अलग घरों की दीवारों पर चीनी सरकार के नारे देख सकते हैं। दूर पहाड़ पर पंचेन लामा का महल है। दादाजी ने मुझे पाँच बड़े स्मारक दिखाए और कहा कि ये अलग-अलग पंचेन लामाओं की यादगार हैं। पंचेन लामा या पंचेन एर्देनी के महल और गुफा को ताशी लुम्पो भी कहा जाता है। ताशी लुम्पो गुफा तिब्बत की सबसे मशहूर गुफाओं में से एक है। यहाँ करीब चार हज़ार लामा रहते हैं। गुफा की हर दीवार, टंका और लाइब्रेरी सेक्शन की कला दुनिया भर में मशहूर है। मंदिर की पूजा की चीज़ें और फ़र्नीचर सभी शुद्ध सोने के हैं। यह ताशी लुम्पो लामाओं का एक पवित्र मंदिर है।

भले ही दादाजी ने इसका ज़िक्र नहीं किया, लेकिन मैं सिगात्से की सड़कों पर मिलिट्री यूनिफॉर्म पहने चीनी सैनिकों को देखे बिना नहीं रह सका। मुझे लोगों से पता चला कि सिगात्से और ग्यात्से के किलों पर अब भारत-तिब्बत बॉर्डर की रक्षा के लिए चीनी सैनिक तैनात हैं।

जैसे ही हम एक चौराहे के पास पहुँचे, दादाजी ने मुझे एक पक्की सड़क दिखाई और कहा, "तुम इस सड़क से जाओ। यह सड़क सीधे काठमांडू जाती है। अगर तुम अकेले कैलाश जाओगे तो क्या करोगे? यह बहुत लंबा रास्ता है, तुम नहीं जा सकते।" उन्होंने प्यार से मुझे चेतावनी दी।

जब तक मैंने अपने दादाजी से पंचेन लामा और सिगात्से के चीनी अधिकारी के बारे में नहीं सुना, मैं उस शहर को छोड़ने के लिए बेचैन था। मेरे शरीर की जो हालत थी, उसमें मैं इतने सम्मानित आदमी और उनके ठिकाने को कभी नहीं छोड़ता। ऐसा ठिकाना किसी भी तीर्थयात्री के लिए बहुत लुभावना होता है। लेकिन मेरा शरीर कितना भी थका हुआ क्यों न हो, मेरा मन मुझे आगे बढ़ने के लिए कह रहा था, आगे बढ़ने के लिए। मैं उस ठिकाने को छोड़ने के लिए बहुत बेचैन था। मैंने अपने दादाजी के साथ खाया-पिया।

बहुत दिनों बाद मुझे उस रात बिस्तर मिला, तिब्बती सर्दियों में असली कंबल मिलना एक सपने के सच होने जैसा था। भले ही यह एक सपना था, लेकिन यह सच था। मुझे लगा कि मैं सुबह जल्दी उठ जाऊँगा, लेकिन मैं इतनी गहरी नींद में था कि जब मैं उठा तो लगभग 8:30 बज चुके थे।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৫৯

दादाजी ने मुझे फ़ोन किया। काफ़ी देर बाद, मैंने एक जेंटलमैन की तरह अपना नाश्ता खत्म किया। फिर, जैसे ही मैं लिविंग रूम में टेबल पर बैठा, मुझे नमकीन सूजी और एक गिलास गरम चाय मिली। मैं दादाजी का

कर्ज़ नहीं चुका सकता था, इसलिए मैं बार-बार उनका शुक्रिया अदा करने लगा।

मुझे डायरी लिखने के लिए दादाजी से कुछ कागज़ और पेंसिल मिली। उन्होंने मुझे कुछ छोटे तिब्बती सिक्के और सफ़र के लिए ठीक-ठाक सूखा खाना भी दिया। मैंने दादाजी को अलविदा कहा। जब मैं सड़क पर चल रहा था, तो मुझे अचानक एहसास हुआ कि मैंने दादाजी के साथ एक रात बिताई थी, लेकिन मुझे उनका नाम नहीं पता था। मैं पूरी तरह से भूल गया था कि वह मेरे लिए एक अजनबी थे, क्योंकि उनका स्वभाव बहुत प्यारा था।

एक बार जब मैं रास्ते पर आ गया, तो वापस जाने का कोई मतलब नहीं था। मुझे उनका नाम भी नहीं पता था, वे हमेशा मेरे दिल में मेरे दादाजी की जगह लेंगे। सबसे मज़ेदार बात यह है कि मैंने उन्हें सब कुछ खुलकर बताया। और उन्होंने कुछ और ही सोचा, मेरे दादाजी के अनुसार, मैं एक नेपाली लड़का था जो तीर्थयात्रियों के एक ग्रुप से बचकर कैलाशनाथ गया था। उन्हें बिल्कुल भी समझ नहीं आया कि मैं एक भारतीय लड़का हूँ। यह उनकी सादगी और दरियादिली की एक और निशानी है। इसीलिए वे मुझे काठमांडू का रास्ता दिखाते रहे।

कैलाश का रास्ता शुरू हो गया है।

सिगात्से में एक रात बिताने के बाद, मैंने नए जोश के साथ चलना शुरू किया। मुझे रास्ते, सामान मिला और मेरा हौसला दोगुना हो गया। कैलाश का सपना अब सच होने वाला था - मैंने अपने दिल में उस अनदेखे भगवान को श्रद्धा से प्रणाम किया - आप मुझे अपने रास्ते पर ले चलो।

मैं पहाड़ पर ताशी लम्पो के बड़े महलों से खुश था, जहाँ मेरे दाईं ओर ब्रह्मपुत्र नदी है। मैंने यातुंग, ग्यात्ज़े से लेकर जोखांग, पोटाला तक कई गुफाएँ देखी हैं, इसलिए मैं ताशी लम्पो देखे बिना भी ठीक रहूँगा। ग्यात्ज़े में चीनी सेना का उदाहरण देखते हुए, मुझे लगता है कि यहाँ से जल्द से जल्द निकल जाना बेहतर है। मैं खासकर उनसे पूछताछ के लिए राज़ी नहीं हूँ।

सांगपो वैली में सड़क समतल है, लॉरी और जीप के ट्रैफिक के लिए बहुत अच्छी है, और मैं उसी पर चलने लगा। मौसम अब काफी अच्छा है, और सूरज की गर्मी भी बहुत अच्छी है। मैं बाईं ओर हिमालय की गहरी दीवार के पैरलल चलने लगा।

शाम होते-होते मुझे अपनी पसंद का चौराहा मिल गया। दोनों सड़कें चलने लायक थीं, एक बाईं ओर, यानी दक्षिण की ओर, काठमांडू की ओर जाती थी, और दूसरी सांगपो को पार करके, उत्तर और पश्चिम, दो हिस्सों में बंट जाती थी। दादाजी ने मुझे बार-बार चेतावनी दी थी कि कैलाश का रास्ता बहुत मुश्किल है, इसलिए काठमांडू लौट जाना ही बेहतर है। मैंने मन ही मन उनसे कहा, "मुझे माफ़ कर दो, मैं आपकी बात नहीं निभा सका, कैलाश मुझे बुला रहा है, मुझे जाना है।" मैं फेरी पियर की ओर जाने के लिए आगे बढ़ा।

ब्रह्मपुत्र यहाँ काफी चौड़ी है, इस सर्दी में इसे तैरकर पार करने का सवाल ही नहीं उठता। घाट के पास एक छोटी सी चाय की दुकान है। वहाँ कुछ मिलिट्री लॉरियाँ खड़ी हैं। मैं बिना किसी हिचकिचाहट के उस तरफ़ बढ़ गया। नदी में कोई नाव नहीं दिख रही थी, उसकी जगह एक बहुत बड़ी गधे वाली नाव थी।

दुकान में कुछ चीनी लोग पेट के बल बैठे थे, उनके हाथों में चाय के गिलास थे, वे आपस में बातें कर रहे थे। मैं उनके पास गया। मुझे चाय के लिए पूछना नहीं पड़ा, क्योंकि दुकान में घुसते ही दुकानदार ने मुझे एक बड़े बांस के कप में चाय का गिलास दिया। उस कप में कम से कम आठ या नौ कप चाय रही होगी। चीनियों से आमना-सामना

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৬১

यह पहली बार था। मैं भी उनकी तरह पेट के बल बैठा, दोनों हाथों में चायदानी पकड़े हुए और उसकी गर्मी का मज़ा ले रहा था।

सब बैठे-बैठे ही बैठे रहे, पता नहीं नाव कब आएगी, लेकिन शाम को जब रात होने वाली थी, तो सब चीनी लोग उठ खड़े हुए। एक घंटे बैठने के बाद अचानक उनमें जान आ गई। मैं उनकी व्यस्तता और एक्टिविटी देखकर हैरान रह गया। वे तेज़ी से नदी किनारे गधे वाली नाव की तरफ बढ़े, फिर उस पर बड़ी-बड़ी एल्युमिनियम शीट डालकर नदी किनारे से नाव तक गाड़ियों को ले जाने के लिए रास्ता बनाया। आधे घंटे में सब कुछ तैयार हो गया, उन्होंने धीरे-धीरे तीन लॉरी और दो जीप नाव तक पहुंचाईं और उन्हें नाव पर चढ़ा दिया। फिर हैरान होने की बारी मेरी थी। अचानक, गधे वाली नाव ने पानी हिलाया और उसका इंजन चालू हो गया। मैंने ध्यान नहीं दिया था कि यह नाव मशीन से चलती है। मैं हैरानी से उसे देख ही रहा था कि तभी दो चीनी लोगों ने मेरी तरफ देखा और मुझे नाव पर चढ़ने के लिए कहा। मैं त्सांगपो पार करने के लिए बैठा था, इसलिए उनके बुलाने पर मैं नाव पर चढ़ गया। चाय की दुकान से दो और तिब्बती सज्जन जो वहाँ पार करने का इंतज़ार कर रहे थे, वे भी उतर गए। इस बार नाव ज़ोर की आवाज़ के साथ अपने अगले हिस्से से निकली। हम लगभग पंद्रह मिनट में

दूसरी तरफ पहुँच गए। उन्होंने पहले की तरह एक पुल बनाया और सबको नीचे उतारने का इंतज़ाम किया। मैंने हाथ की माला उठाई और "ओम मणि पद्मे हुम" कहकर उन्हें आशीर्वाद दिया और अलविदा कहा। हमें पार करने के लिए कोई पैसे नहीं देने पड़े। हमने ल्हासा द्ज़ोंग पर फेरी से पार किया।

मैंने सांगपो पार किया। यहाँ से मुझे कैलाश जाने वाली मेन सड़क मिल गई। अब मुझे डायरेक्शन की ज़रूरत नहीं है। अगर मैं इस सड़क पर सीधे पश्चिम की ओर चलूँ, तो मुझे अपने सपनों का कैलाश धाम मिल जाएगा। अगर मैं अब तक ठीक चला हूँ, तो बाकी सब भी ज़रूर ठीक होगा। मेरा मन खुशी से उछल पड़ा - मैंने अपने मन से कहा कि अब कोई डर नहीं है - आगे बढ़ो।

मैंने उस रात सड़क के किनारे एक टूटे-फूटे घर में बिताई, सड़क सीधे पश्चिम की ओर जा रही थी - त्सांगपो के बिल्कुल पैरलल। मैं त्सांगपो के बहाव की उल्टी दिशा में चल रहा हूँ, यही मेरा मेन मोटिवेशन है - मैं सोर्स की ओर जा रहा हूँ। सड़क को लगभग एक जैसा कहा जा सकता है, ग्यात्सो की तरह बिल्कुल भी मुश्किल नहीं। यहाँ सर्दियाँ बहुत सूखी होती हैं, रातें ठंडी होती हैं। दिन में सूरज की तेज़ गर्मी रात की ठंड को दूर कर देती है। अगर आसमान में बादल होते, तो ठंड में आगे बढ़ना नामुमकिन होता। तिब्बत के आसमान में लगभग कोई बादल नहीं हैं। दिन में सूरज और रात में चमकते तारे, दोनों ही रास्ते में प्रेरणा देते हैं।

शांगपो पार करने के तीसरे दिन दोपहर में मुझे एक छोटा सा गांव मिला।

২৬২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

गांव का नाम लाका है। जैसे ही मैं गांव में घुसा, मुझे एक चोर्टेन दिखा। जैसे ही मैं वहां बैठा, गांव वालों ने मुझे घेर लिया। ऐसा लगा जैसे उन्हें बहुत समय बाद कोई लामा मिला हो। तिब्बत में गर्मी का मौसम है और ज़्यादातर गांव वाले खेती-बाड़ी में बिज़ी हैं। इस इलाके में जौ और जौ की खेती बहुत अच्छी होती है। मेरे आस-पास ज़्यादातर बच्चे और कुछ बूढ़े लोग थे। वे गांव में ही रहते हैं। चोर्टेन में बैठने के कुछ ही मिनटों में, एक बूढ़ी औरत गोद में एक बच्चा लिए मेरे पास आई। कुछ कहने से पहले, उसने मुझे प्रणाम किया, फिर दांत निकालकर कुछ कहा। मैंने बहुत ध्यान से सुना लेकिन कुछ नहीं कहा क्योंकि इस सिचुएशन में मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं था। हालांकि मैं तिब्बती भाषा थोड़ी-बहुत समझता हूं, लेकिन यह औरत जो कह रही थी, वह मुझे ज़रा भी समझ नहीं आया। वह औरत पीछे हटने वालों में से नहीं थी, और आखिर में मैंने अपना हाथ उसके सिर पर रखा और मन में एक मंत्र पढ़ने लगा - उसने तुरंत मेरा हाथ पकड़कर बच्चे के सिर पर रख दिया। मैंने बच्चे को दिल से आशीर्वाद दिया। अब वह महिला खुश थी।

गांव वालों ने मुझे घेर लिया था, इसलिए बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। दोपहर में, उनमें से एक सम्पा एक मेहमान को लेकर आया और उसका अंतिम संस्कार किया। खाने के बाद, मैं आराम करने के लिए उनके बीच लेट गया। दोपहर में, जवान लड़के और लड़कियां अपने खेत का काम खत्म करके घर लौटने लगे, और उसी समय गांव में फिर से रौनक आ गई। दोपहर में, मैंने उनके साथ खाना खाया। तिब्बतियों ने सूरज डूबने से पहले अपना खाना खत्म कर लिया। वे मुझे एक बड़े फार्म हाउस में ले गए। रात में, गांव वाले उस घर में एक मंडप की तरह आए और एक-एक करके फिर से दिखाई दिए। थोड़ी देर बाद, आसमान में पूरा चांद निकल आया, इसलिए इस जमावड़े के लिए अलग से रोशनी की ज़रूरत नहीं थी। मैं कुछ दिनों से चांदनी में सड़कों पर घूम रहा था। तिब्बत के बेदाग आसमान

में चांदनी दोगुनी चमक से चमक रही थी। उस रोशनी में, मुझे लगता है कि अगर मैं थोड़ी कोशिश करूं तो एक डायरी लिख सकता हूं।

जब सब लोग वहाँ इकट्ठा हो गए, तो एक बड़ा बर्तन लाकर उनके सामने रख दिया गया, और सब लोग उसके चारों ओर बैठकर मज़े करने लगे। फिर एक साथ गाना शुरू हुआ। उनकी धुन कितनी सुंदर थी, और गाँव के सभी लोग, छोटे, बड़े और जवान, गाने लगे और उसमें हिस्सा लेने लगे। रात की ठंड धीरे- धीरे बढ़ने लगी, और सबने अपने कंबल बिछा लिए और एक-दूसरे से लिपटकर बैठ गए। थोड़ी देर बाद, गाना बंद हो गया। उनमें से दो औरतें उठीं, बर्तन से कोई ड्रिंक ली और सबके लिए कटोरों में डालने लगीं। लड़की एक कटोरे में मेरे पास लाई। बस तीन कटोरों में, एक-एक करके, उन्होंने वह ड्रिंक पीना शुरू कर दिया। लड़की ने मुस्कुराते हुए कटोरा मेरे चेहरे की ओर बढ़ाया, और कहा, "मुझे इसे पीना है; लेकिन कोई रास्ता नहीं है - इसके अलावा, मैं सच में जानना चाहती हूँ कि यह किस तरह का ड्रिंक है।" तो, उत्सुकता से, मैंने दोनों हाथों से लड़की से कटोरा लिया और सारा ठंडा ड्रिंक पी लिया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৬৩

मैंने किया। लड़की मुस्कुराई और कटोरे में बची थोड़ी सी गंदगी चाट ली, मुझे इज्ज़त देते हुए। अगर मुझे यह पहले पता होता, तो मैं थोड़ी छोड़ देता। अब कोई चारा नहीं था, तिब्बती बीयर का स्वाद थोड़ा टैडपोल जैसा था। इस इलाके में जौ की कोई कमी नहीं है। ड्रिंक के बाद, म्यूज़िक तेज़ हो गया, और फिर उनका डांस शुरू हो गया। मैं उस डांस की तुलना बीरभूम ज़िले के संताली डांस से कर सकता हूँ।

मंडप में लकड़ी का फ्रेम और टिन की छत है। इसके चारों ओर कोई दीवार नहीं है। ठंड काफी बढ़ रही है। लेकिन नाच-गाना खत्म होने से पहले सोने का कोई तरीका नहीं है। चांदनी ने यहां अपनी किरणें बिखेरी हैं। नाचने की आवाज़ और लोगों की आवाज़ों ने इसे स्वर्ग जैसा बना दिया है। इसके अंदर से कभी-कभी हंसी आती है। आदमी और औरतें खुलकर मिलते- जुलते हैं, जिससे एक शानदार माहौल बनता है। इस सादे जमावड़े ने समाज की सभी बंदिशों से परे एक-दूसरे के लिए अपनी ज़िंदगी खोल दी है। ऐसा माहौल दुनिया की इस पवित्र ज़मीन पर ही मुमकिन है। गर्मियों में ऐसा लगता है कि चांदनी रातों में सभी लोग बिना किसी बंदिश के इस त्योहार के लिए इकट्ठा होते हैं। आखिर में, वे थोड़ी देर के लिए रुके, फिर एक-एक करके सब अपने-अपने घर चले गए। मंडप में बस एक खाली बर्तन और दूर से आता एक तीर्थयात्री था। उनके जाने के बाद, मैंने विकुली को एक जगह इकट्ठा किया और अंदर चला गया - यहीं मुझे रात बितानी है। तिब्बत में आग, कंबल और कम्बल को इंसान के तीन दोस्त कहा जाता है। मुझे नींद के लिए इंतज़ार नहीं करना पड़ा - जैसे ही मुझे थोड़ी गर्मी लगी, मेरी आँखें तुरंत बंद हो गईं।

वह रात एक सपने की तरह गुज़री। अगली सुबह, गांव वालों के जागने से पहले, मैं कुछ कुत्तों को गवाह बनाकर लाका गांव से निकल गया। अगर गांव वाले जाग जाते, तो वे मुझे आसानी से नहीं जाने देते। और दूसरी मुश्किलों का भी सामना करना पड़ सकता था। इसलिए, उस रात के नाच-गाने की मीठी यादों के साथ, मैं फिर निकल पड़ा।

सड़क अब त्सांगपो घाटी में है। हिमालय की दीवार त्सांगपो के पैरलल चलती है। चलने में कोई मुश्किल नहीं है, इस इलाके की बस एक ही मुश्किल है बोरियत। यहाँ का नज़ारा भी एक जैसा है। भले ही हम घंटों चलें, आस-पास का नज़ारा बिल्कुल नहीं बदलता। नदी के उत्तर की ओर के पहाड़ एक मील दूर चले गए हैं। इस इलाके में पेड़ ज़्यादा नहीं

दिखते, सिर्फ़ नदी और रेत दिखती है। दिन में, तेज़ धूप रेत पर रिफ्लेक्ट होकर आँखों को चौंधिया देती है। आबादी बहुत कम है, गंगटोक से ल्हासा जाते समय, मुझे लगभग हर दिन कोई न कोई गाँव मिला। इस इलाके के मुकाबले, मुझे उस दिशा में ज़्यादा घनी बस्तियाँ मिलीं।

गियात्से छोड़ने के बाद इस रास्ते पर मुझे बहुत कम बस्तियाँ मिलीं। कभी-कभी

২৬৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

तिब्बती खानाबदोशों के टेंट और चीनी सेना के कैंप दिखने लगे। शांगपो की इस यात्रा के चौथे दिन, मैंने पहली बार कुछ लॉरियां देखीं। पहले तो मुझे यकीन नहीं हुआ, फिर जब मैंने धूल को बादल की तरह उड़ते देखा, तो मेरा अंदाज़ा साफ़ हो गया। कारों को दहाड़ते हुए आगे आते देखकर, मैं सड़क से नीचे उतरा और एक तरफ खड़ा हो गया। मुझे देखकर, ट्रक के अंदर बैठे सभी लोगों ने हाथ हिलाकर मेरा अभिवादन किया। मैं उनसे काफ़ी दूरी पर था, इसलिए मैं उनके चेहरे ठीक से नहीं देख सका। चार कारें एक के बाद एक निकल गईं, जिससे उनके बीच काफ़ी दूरी हो गई। सूखी धूल का बादल लगभग बीस मिनट तक उड़ता रहा।

तीर्थयात्रियों के साथ रहने में मुझे कोई मुश्किल नहीं हुई। साधु बाबा मेरे गुरु और गाइड थे। रास्ते में कहाँ रुकना है और कहाँ जाना है, इसकी पूरी ज़िम्मेदारी उन्हीं की थी। इसके अलावा, वे हमें हर गाँव की खासियतें बताते थे। उन्हें गाँव के हर घर की दीवारें पता थीं। और यहाँ मेरी हालत बिल्कुल उलटी थी। रात कहाँ बितानी है, इसका कोई पक्का नहीं था, रुकने की जगह मिलेगी भी या नहीं। मुझे भगवान पर

पूरा भरोसा रखकर चलना था। जब भी सूरज को थोड़ा झुका हुआ देखता, मैं रात रुकने की जगह ढूँढ़ने लगता। दो दिन रुकने की जगह ढूँढ़ने के बाद रात हो गई और सुबह हो गई। अगर किसी तरह घर मिल जाता, एक टूटा-फूटा घर, और सिर पर छत, तो मैं खुश हो जाता था।

तिब्बत का यह हिस्सा बिल्कुल हिलता हुआ लग रहा है। दूर के पहाड़ रुक गए लगते हैं। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं त्सांगपो की धारा के विपरीत तैर रहा हूँ।

मेरे आस-पास की इस बोरियत में भी, ऐसा लगता है जैसे भगवान मेरा हाथ थामे हुए हैं और मुझे अपनी ओर खींच रहे हैं। दिन में सूरज और रात में चाँद मुझे रास्ता दिखा रहे हैं। सूरज गर्मी देता है और चाँद उम्मीद और रोशनी देता है। उस अकेलेपन में, मुझे खुद से करीब से बात करने का मौका मिला।

मुझे शरीर से अलग होकर अपनी आत्मा का आनंद लेने का आनंद मिला। इस सैर से मुझे एहसास हुआ कि मैं और मेरा शरीर एक नहीं हैं। हम सब यात्री हैं, इस छोटी सी दुनिया से हम सब अनंत दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं। जैसे मेरी आत्मा, परमपिता परमात्मा के छोटे रूप में, शरीर को कैलाश की ओर खींच रही है, वैसे ही यह सर्वव्यापी आत्मा पूरी दुनिया को अमृत की तलाश में खींच रही है, इसलिए हम सब यात्री हैं।

इस तरह मेरा सफ़र शुरू हुआ। गेबुक गाँव की एक छोटी सी गुफा में दो रात आराम करके और मंजुश्री के हज़ार नाम जपकर मुझे बोरियत से कुछ राहत मिली। गेबुक पूरी तरह जम गया था। बोधिसत्व के कंधे की चादरें चूहों ने फाड़कर उनकी गोद में जमा दी थीं। चूहे पूरे घर में आज़ादी से घूम रहे थे, और प्रार्थना की चटाई पर रात बिताने का मतलब था कि

इंसान चूहों के राज में घुस रहे थे। इसके बावजूद, घर और दीवारों की सजावट

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৬৫

यह पहले जैसा ही है। टंका और भारी किताबें अपनी शेल्फ से हटी नहीं हैं। दरवाज़े के ऊपर लकड़ी के पैनल को कोई छूता भी नहीं है। गुफाएँ तिब्बत की जान हैं। ऐसे में, इस छोटी, खूबसूरत गुफा को छोड़ा हुआ देखना बहुत दुख की बात थी। प्रार्थना के पहियों में अब जंग लगने लगी है, देखभाल की पूरी कमी है।

दूसरे दिन, सुबह-सुबह, तेरह गांववालों की एक छोटी सी भीड़ जमा हुई - उनके कहने पर, मैंने एक बहुत पहले इस्तेमाल न हुई घंटी और बिजली के बोल्ट से पूजा की। काफी समय बाद, प्रार्थना के पहिये वहां के भक्तों के हाथ लग गए। मुझे गांववालों से पता चला कि यहां का लामा लगभग एक साल से सिगात्से में था और वापस नहीं आया, और ताशी लम्पो ने उसकी जगह किसी को नहीं भेजा।

गांव वालों को इन दिनों चीनी कैंपों में काम भी मिल गया है, और वे कभी-कभी आते हैं। गांव में हर कोई इससे खुश है। इस इलाके में सूखे मौसम की वजह से खेती बिल्कुल नहीं हो पाती, इसलिए गांव वालों की आर्थिक हालत बहुत खराब है, और ऐसे में चीनी कैंपों में काम मिलना बहुत किस्मत की बात है।

गेबुक गांव से तीन दिन चलने के बाद, मुझे साका नाम का एक और गांव मिला। फिर एक और बोरिंग सड़क। इस बार सड़क धीरे-धीरे ऊपर चढ़ती हुई

लग रही थी। सांगपो की धारा को देखकर, मुझे लगा कि मेरा अंदाज़ा गलत नहीं था। पानी का बहाव अब पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ लग रहा था।

मुझे साका के चार दिन बाद यह गांव मिला। लात्से द्ज़ोंग के बाद यह सबसे बड़ा गांव है। मैं दोपहर में इस गांव में पहुंचा। आस-पास देखने के बाद मुझे लगा कि इस गांव में कम से कम एक हजार लोग रहते होंगे, यानी अगर हर घर में पांच लोग हैं, तो मेरे लिए काफी है।

गांव का नाम पासागुक है।

पासागुक का बुद्धिमान व्यक्ति

पासागुक सांगपो के किनारे एक शांत गाँव। गाँव में कोई हलचल नहीं है। घर खाली लगते हैं। तिब्बत के डरावने गार्ड डॉग भी यहीं सोते हुए अपना समय बिताते दिखते हैं। जैसे ही मैं गाँव में घुसा, मैंने चामोइस गायों का एक झुंड देखा। वे सूखी घास को अपनी लार में मिलाकर चबाने वाली गम की तरह चूस रही थीं। उन्होंने मेरे जैसे कई तीर्थयात्रियों को देखा था, इसलिए उन्होंने मेरी तरफ देखा भी नहीं। मुझे देखकर कुछ छोटे बच्चे रुक गए और अपनी जीभ बाहर निकालने लगे। जैसे ही मैं गाँव के बीच में पहुँचा, मैंने डंडों से बंधे सफेद झंडों की लाइनें देखीं। फिर मुझे एक गुफा दिखाई दी। मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा। मुझे अचानक रेगिस्तान में पानी मिल गया। आमतौर पर, गुफाओं के ऊपरी हिस्से काफी दूर से देखे जा सकते हैं। गुफाओं की छतें गाँव के बीच से मंदिरों की तरह ऊपर उठती हैं। मुझे समझ नहीं आया कि मैंने इस गुफा का ऊपरी हिस्सा पहले क्यों नहीं देखा था। यह एक मीडियम साइज़ की गुफा थी, बिल्कुल दार्जिलिंग के पास स्लीपिंग केव जैसी। मैं दीवारों के चारों ओर घूमा और रत्न चक्र को छूकर मंदिर में प्रवेश किया।

जैसे ही मैं बाहर से अंदर आया, मुझे अंधेरा दिखा। जैसे-जैसे मेरी आँखों को अंधेरे की आदत हुई, मैंने अवलोकितेश्वर की एक बहुत बड़ी मूर्ति देखी। उनके सामने, नीचे की वेदी पर, पानी के कटोरों की लाइनें थीं। कटोरों पर चावल और एक बड़ा घी का दीया बुद्ध के चरणों में समर्पित थे, जो मंदिर की आत्मा बन गए थे। मैंने सिर झुकाया और सामने वेदी पर जाकर बैठ गया। फिर मैं अपने शरीर और मन को शांत करने के लिए ध्यान में बैठ गया। बहुत देर बाद, मुझे रहने की जगह मिली और मैंने तथागत को अपनी भक्ति अर्पित करना शुरू कर दिया।

करीब एक घंटे बाद, मैंने मंदिर से सूखे चावल चबाकर किसी तरह अपनी भूख मिटाई। जब मेरा मन खुशी और संतुष्टि से भरा होता है, तो मैं बिना खाए रह सकता हूँ, लेकिन मैंने यह भी पाया कि जब मुझे भूख लगती थी, तो मैं बहुत कोशिश करने के बाद भी अपने मन को कंट्रोल नहीं कर पाता था। मन को देखने के लिए रास्ता ही सही जगह है। धरती पर एक बड़ा रास्ता है, मेरा स्कूल वाला शरीर उस रास्ते पर चल रहा है, और मन का छोटा शरीर उस शरीर पर टिका हुआ है। जब शरीर स्वस्थ होता है, तो मन को अपना आसान रास्ता मिल जाता है, शरीर ही मन का रास्ता है, और शरीर ही उसका रूप है क्योंकि वह है। संत कहते हैं कि मन ऊपर की ओर जाता है, लेकिन मुझे यह समझ नहीं आता। वह बड़ा ज्ञान मेरी समझ से बाहर है, अपने सीधे लॉजिक से मैं समझता हूँ कि अगर मन की नैचुरल चाल ऊपर की ओर है, तो वह वापस क्यों आता है?

১৯

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৬৭

২৬৮

इस शरीर की सीमाओं की ओर। मैं बैठा और इन अलग-अलग चीज़ों के बारे में सोचा। इन दिनों, अगर मैं घंटों भी बैठा रहूँ, तो मुझे कोई दिक्कत नहीं होती। उस विशाल शांति के सागर में, मुझे धुन मिल जाती है।

मैंने आज रात इसी गुफा में बिताने का तय किया। आराम करने के लिए इससे अच्छी जगह नहीं हो सकती थी। दोपहर में, मैंने गाँव के अलग-अलग रास्तों पर घूमना शुरू किया। तिब्बत का यह इलाका लगभग रेगिस्तान जैसा है। हवा सूखी और ठंडी है, आसमान में एक भी बादल नहीं है, दिन में आसमान साफ़ नीला रहता है, दूर पहाड़ों की आउटलाइन बहुत साफ़ दिखती है, और रात में तारों वाला आसमान रोशनी से भरा होता है। रात के आसमान में थोड़ा ऊपर एक रोशन पवेलियन जैसा लगता है।

शाम होने के बाद ऐसा लगा कि पासागुक गांव में रौनक है। गांव में हर कोई दिन में कहीं और काम पर जाता था और रात में लौटता था। मैं थोड़ा घूमा और गुफा में वापस आ गया। मुझे सुरक्षित महसूस हुआ क्योंकि गांव वालों ने मुझसे कोई सवाल नहीं पूछा।

गुफा के चारों ओर कोई दीवार नहीं है, एक छोटा सा घर, एक चैत्य और एक खुला मैदान ही इसका राज है। छोटा सा घर लामाओं के लिए लगता है, लेकिन अब वहाँ कोई नहीं है। मुझे इसका किचन मिल गया। तिब्बत में गुफाएँ आमतौर पर तब तक खुली रहती हैं जब तक कोई खास ज़रूरत न हो, तिब्बती लोग ताले और चाबियों का इस्तेमाल नहीं करते। और गाँव वाले अलग हैं, उनमें से कई ने अपनी ज़िंदगी में कभी ताले और चाबियाँ नहीं देखीं। मुझे शक है कि दुनिया में ईमानदारी की ऐसी कोई निशानी है भी या नहीं। मैंने तिब्बत में गुफाओं के किचन देखे हैं, लगभग एक ठेला

जैसा, वहाँ हर कोई आज़ादी से घूमता-फिरता है। मुझे एक स्टोव और थोड़ी लकड़ी चाहिए, मुझे बस कुछ रोटियाँ सेंकनी हैं। किचन लकड़ी का है और अंदर से काफी साफ़-सुथरा है। मुझे स्टोव के अंदर कुछ आधी जली हुई लकड़ी मिली, जो मेरा काम कर देगी। किचन की आग ने कमरे को बहुत गर्म कर दिया है। चारकोल का लाल रंग तीर्थयात्रियों की बहुत पसंदीदा चीज़ है। मैंने इसी किचन में रात बिताने का फैसला किया।

सुबह किसी के बुलाने से मेरी नींद खुली, किसी तरह मैं करवट लेकर बैठ गया, आँखें मलते हुए। मैंने जम्हाई ली और आगे देखा। मेरे सामने एक सज्जन लामा खड़े थे। मैंने उन्हें प्रणाम किया और खड़ा हो गया। उन्होंने पूछा - आप कहाँ से हैं?

मैं भारतीय और नेपाली तीर्थयात्रियों के साथ ड्रेपुंग और ल्हासा गया था, और अब मैं उनके ग्रुप को छोड़कर कैलाश की ओर जा रहा हूँ।

सुबह मेरे विचार सीधे इस भगवान जैसे आदमी के सामने आ गए।

मेरी बात सुनकर वह थोड़ा मुस्कुराया, फिर बोला, "मेरे कमरे में आओ।"

महातीर्थ का अंतिम यात्री

हम वहाँ बैठकर बातें कर सकते हैं। मैं उनके पीछे-पीछे अगले कमरे में गया। खूबसूरती से सजे हुए कमरे में, कोने में एक बिस्तर, एक डेस्क, एक नोटबुक, एक पेन और उसके बगल में कई पन्नों वाली एक किताब थी। दीवार पर कुछ टंका लटके हुए थे और एक छोटे से आले में बुद्ध तथागत की लकड़ी की मूर्ति थी। उन्होंने सब कुछ अनदेखा किया और सीधे मूर्ति की ओर चले गए, फिर उसे अपने हाथ में लिया और मुझे दिखाते हुए कहा, "देखो, कलकत्ता की महाबोधि सोसाइटी ने इसे मुझे तोहफ़े में दिया है; क्या

यह हाथ का बना सुंदर नमूना नहीं है?" उन्हें देखते हुए मैंने पूछा, "क्या तुम कलकत्ता गए हो?"

-नहीं, मैं कई सालों से दार्जिलिंग और कलिम्पोंग में रहा हूँ। उन्होंने मुझे अपने बिस्तर के पास बैठने को कहा और फिर पूछा-

-क्या ल्हासा और सिगात्सा के लोग जानते हैं कि आप कलकत्ता के बेटे हैं?

-नहीं, वे मुझे नेपाली मौनी बाबा के नाम से जानते हैं।

मेरी बातें सुनकर वह ज़ोर से हँस पड़े, फिर दिलासा देने वाले लहज़े में बोले, "जब तुम इतनी दूर आ गए हो, तो अब डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। ऐसा लगता है जैसे भगवान ने खुद तुम्हें संभाल लिया है।"

उन्होंने अपने कमरे के कोने में रखी कड़ाही में आग में कुछ लकड़ी और कोयला डाला और कहा, "तुममें हिम्मत है। जब तुम इतनी दूर मुश्किल से आए हो, तो बाकी रास्ता मुश्किल नहीं होगा।"

लामा की विनम्रता और प्यार ने मुझे छू लिया। उनके प्यार के स्पर्श से, मेरे टूटे-फूटे तिब्बती शब्दों और उनकी टूटी-फूटी हिंदी और बंगाली में हमारी ईमानदारी का पुल बनकर मुझे तसल्ली हुई। वे इस गुफा के मुखिया हैं, उनका नाम गेशे रेप्टेन है, जो तिब्बती लामा का बहुत बड़ा पद है। गेशे रेप्टेन करीब साठ साल के हैं, वे पाँच साल से यहाँ हैं। उन्होंने बार-बार हैरानी जताई कि मैं बिना किसी रुकावट के इतनी दूर कैसे आ गया।

उन्होंने मुझे समझाया कि गुफाएँ तिब्बत की जीवनरेखा, शिक्षा और धार्मिक संस्थाएँ हैं। आजकल, कई तरह की राजनीतिक उलझनें आ गई हैं। आजकल, ताशी लम्पो से सप्लाई लगभग बंद हो गई है। लामाओं को गाँव वालों पर निर्भर रहना पड़ता है और गुफाओं की अपनी पूंजी बेचनी पड़ती है। सरकारी कानून दिन-ब-दिन बदल रहे हैं, चीनी अधिकारी देश के विकास के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। देश के युवाओं को सड़कें और पुल बनाने के लिए कैश मिल रहा है, इसलिए आजकल बुज़ुर्गों को छोड़कर कोई भी गुफाओं में नहीं आना चाहता। ल्हासा की तरफ की गुफाएँ अभी भी तुलना में बहुत सतर्क हैं। गेशे रेस्पेन के अनुसार, चीनी इस देश में अच्छा काम कर रहे हैं, वे समाज के ऊँचे तबके से बचकर सीधे देश के लोगों से हाथ मिला रहे हैं। अनपढ़ देशवासी आजकल पढ़ना-लिखना सीखने लगे हैं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৬৯

सब ठीक है, लेकिन गेशे रेस्पेन के अनुसार, वे शरीर से डील करते हैं, आत्मा को छोड़ देते हैं। आखिर में उन्होंने आह भरी और कहा, "शायद यह भगवान तथागत की इच्छा है, वे दुनिया का पहिया घुमाने के लिए धरती पर उतरे हैं, वे धर्म की रक्षा के लिए बार-बार जन्मे हैं, शायद वे बदलाव भी चाहते हैं। यह सब उनकी इच्छा है।" उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा, "क्या तुम देश जाकर भी संयम का यह व्रत रखोगे?"

-जब मैं देश वापस जाऊंगा...? मैंने उसे प्यार से जवाब दिया, "हां, जब मैं देश वापस जाऊंगा, तो मुझे लगता है कि मैं अपने दूसरे बंगालियों

की तरह एक अच्छा लड़का बनने की कोशिश करूंगा और स्कूल जाऊंगा। मुझे मैट्रिक पास करना है।"

उन्होंने मुझे टोकते हुए कहा, "नहीं, मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ।" मैं पूछ रहा हूँ, "अब तुमने बौद्ध धर्म की दीक्षा ले ली है - क्या तुम वापस आने पर इसे बनाए रखोगे?" उनकी बातें सुनकर मैं थोड़ी देर चुप हो गया। थोड़ी देर सोचने के बाद मैंने कहा, "मैं एक हिंदू परिवार में पैदा हुआ हूँ, मैंने यह रूप इसलिए अपनाया है कि मैं यहाँ आऊँ, भविष्य के बारे में क्या कह सकता हूँ?" लेकिन यह सच है कि अगर मैं इसी रूप में अपने घर लौटूँगा, तो मुझे बेवजह की मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने मुझसे पूजा की जगह पर पानी के बर्तन धोने और साफ करने को कहा। मैंने उनके कहे अनुसार काम करना शुरू कर दिया। अचानक उन्होंने पूछा, "तुम हिंदू हो, है ना?"

-जी सर, मैंने जवाब दिया।

-आप हिंदू धर्म के बारे में क्या जानते हैं?

उनका सवाल सुनकर मैं रुक गया, समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दूं। फिर उन्होंने पूछा, "आप कौन से मंत्र जानते हैं?"

-हाँ, सर, मुझे बहुत से मंत्र आते हैं, यहाँ तक कि ब्रह्म गायत्री मंत्र और त्रि-संध्या जप भी मुझे कंठस्थ हैं। सुनिए - भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं वर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ।

उन्होंने अब मेरी तरफ देखा और कहा, "सिर्फ़ याद करना काफ़ी नहीं है, तुम्हें इसे समझना होगा, तुम्हें इसे महसूस करना होगा। हमें इस

इंसानी ज़िंदगी का इस्तेमाल महसूस करने और समझने के लिए करना होगा।"

मंदिर का काम खत्म करने के बाद, हम गेशे रेप्लान के घर आए। घर के सामने दो लोग इंतज़ार कर रहे थे। वे वही थे जो गेशे रेस्टोरेंट के लिए मार्केट और खाना बनाते थे। उन्हें सही सलाह देने के बाद, वह मुझे घर के अंदर ले गए। घर के अंदर एक सीक्रेट कमरा था। उस कमरे में कोई खिड़की या दरवाज़ा नहीं था, और वह मुझे उसमें ले गए। उन्होंने एक लैंप जलाया और मुझसे कहा, "तुम यहीं रहो और अपने आस-पास की तस्वीरों को ध्यान से देखो। मैं बाद में आकर तुमसे बात करूँगा।" उन्होंने मुझे लैंप दिया और बाहर से दरवाज़ा खींच लिया। अगर मुझे उन पर भरोसा नहीं होता,

২৭০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

बेशक, मैं खुद को कैदी ही समझता। मेरे मन में थोड़ा शक था, लेकिन मैंने उसे समझाया और दूर धकेल दिया।

कमरा अजीब है, थोड़ी सी भी रोशनी अंदर नहीं आ रही है। लैंप की रोशनी में सबसे पहले मैंने यमंतक की एक बहुत बड़ी मूर्ति देखी। यह डरावनी मूर्ति, इंसान जितनी बड़ी, मुझ पर कूदती हुई लग रही थी। यमंतक के नौ सिर, चौंतीस हाथ, सोलह पैर और भैंसे जैसा सिर है। यह अजीब मूर्ति भयंकर लाल, नीली और सफेद है। पहली नज़र में कोई भी डर के मारे चीख पड़ेगा। उस मूर्ति के पीछे छत पर पचास और बंदर बने हैं। गोल छत के चारों ओर आग की लाल लपटें हैं। इसके मुकाबले हमारा श्मशान घाट सच में शांत है। यमंतक ने यमराज को लड़ाई में हरा दिया है और मौत का

राजा बन गया है। मैंने अपने मन को बार-बार दिलासा दिया और कहा, "डरो मत, यह तो बस मिट्टी और लकड़ी की एक मूर्ति है। अगर इसमें जान होती, तो यह तिब्बत की इस अनजान गुफा के एक कमरे के कोने में कैद नहीं होती।" कमरे में यही एक मूर्ति है, बाकी सब कपड़े पर बनी बड़ी-बड़ी वॉटरकलर पेंटिंग हैं, जिन्हें लोकल भाषा में तंखा कहते हैं।

मैं ल्हासा से अब तक अकेला चल रहा हूँ, मेरा मन पहले से ज़्यादा मज़बूत हो गया है, मुझे अब रात के अंधेरे की आदत हो गई है। इसीलिए भले ही मैं अचानक इस अंधी झोपड़ी में घुस गया, मेरा दिल नहीं धड़कना। मैं अभी मर नहीं सकता, मुझे बहुत दूर जाना है, मैं कैलाश पहुँचने से पहले मर नहीं सकता। रात के अंधेरे में डर लगता है, अंधेरे में खुद को खोने का डर होता है, और दिन की रोशनी में मैं उस डर को अपने होने से छोड़ सकता हूँ। मुझे पता है कि इस तंग कमरे के बाहर रोशनी की एक बहुत बड़ी दुनिया है, मैं उस दुनिया का इंसान हूँ, तो डरने की क्या बात है?

मैंने लैंप को घुमाया और यूनिवर्स की डरावनी और शांत तस्वीरों को देखा। अचानक, ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरे कंधे को छुआ हो, मेरी छाती बिना किसी वजह के फूल गई, लैंप अचानक हिल गया। ऐसा लगा जैसे कोई मेरे पैरों पर चलकर चला जा रहा है। मेरी कोशिशों के बावजूद, ऐसा लगा जैसे डर मेरे शरीर को पैरालाइज़ करने की कोशिश कर रहा है। मैंने अपने मन को और भी कंट्रोल करने की कोशिश की। मैंने लैंप को ज़मीन पर रखा और वहीं बैठ गया। मैंने अपने मन में मुक्ति देने वाली माँ काली के रूप को याद किया, और मेरे मुँह से निकले शब्द थे ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्...

कमरा गायत्री मंत्र से गूंजने लगा। मैंने बार-बार अभय मंत्र पढ़ना शुरू किया, फिर धीरे-धीरे उस बाहरी मंत्र को अंदर की ओर मोड़ दिया।

हवा के बजाय, वह मंत्र मेरे हार्ट चक्र में गूंजने लगा। फिर एक समय पर सारी आवाज़ें और गूंज पूरी तरह से गायब हो गईं - मैं एक शांत दुनिया में रह गया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৭১

काफी देर बाद मैंने अपनी आँखें खोलीं। ऐसा लगा जैसे मैं किसी अच्छी नींद से जागा हूँ, मेरे सामने रखा टंका मेरी आँखों के सामने साफ दिखाई दे रहा था। कमरा रोशनी से भरा हुआ लग रहा था, जैसे ही मैंने सामने रखे लैंप पर नज़र डाली, मैंने देखा कि वह बुझ गया था। अब हैरान होने की मेरी बारी थी, या यूँ कहें कि हैरान होने की कोई वजह नहीं थी, डूबते सूरज की रोशनी कमरे के खुले दरवाज़े से अंदर आ गई थी। मैं कमरे से उठा और बाहर खड़ा हो गया। मेरा पूरा शरीर सूरज की रंगीन रोशनी में नहाया हुआ लग रहा था। मेरा शरीर बहुत हल्का और साफ-सुथरा हो गया था। जिस आदमी को मैंने पहले देखा था, वह चुपचाप मेरे पास आकर खड़ा हो गया था, और उसने विनम्रता से मुझसे कहा - आपका खाना तैयार है।

मुझे समझ नहीं आया कि समय इतनी जल्दी कैसे बीत गया। मैं लगभग हर दिन एक घंटे मेडिटेशन में बैठता हूँ, लेकिन आज ऐसा लग रहा है जैसे मैं छह से आठ घंटे एक ही पोजीशन में बैठा रहा हूँ। मुझे समझ नहीं आया कि समय कैसे बीत गया। सुबह घर में घुसा तो देखा कि मेडिटेशन में दोपहर हो गई थी। आमतौर पर अगर मैं ज़्यादा देर तक बैठता हूँ, तो मेरे पैर अकड़ जाते हैं, लेकिन आज ऐसा भी नहीं हुआ। मेरा शरीर इतना हल्का हो गया है कि मुझे अजीब लग रहा है। यह एक अविश्वसनीय सच जैसा है। अचानक, मेरे मन में खुशी की एक लहर बह रही है। उस लहर में कोई लहर या करंट नहीं

है, सिर्फ़ परफेक्शन है। आह! कितनी खुशी। इसे रियलाइज़ेशन क्या कहते हैं!

शाम को मैं लामा के कमरे में आकर बैठ गया। वह मुझे देखकर हल्के से मुस्कुराए। उस मुस्कान से मुझे आशीर्वाद मिला। काफी देर तक चुपचाप बैठने के बाद, मैंने सबसे पहले बात की - मुझे यह सोचकर हैरानी हो रही है कि मैं इतने लंबे समय से एक ही जगह पर बैठा हूँ, क्या यह उस जगह की महानता के कारण संभव है?

-जगह की महानता! उसने शब्द कहे और फिर रुककर कहा - गुरु की कृपा और साधना। फिर वह रुका, काफी देर तक चुपचाप बैठने के बाद उसने कुछ एकालाप में कहा - तुम डर गए थे! तुम ही दुनिया में अकेले क्यों यमंतक के सामने कांप रहे हो और कांप रहे हो? यह दुनिया यमंतक के कांटों से ढकी हुई है, और एकमात्र बचाने वाले तथागत हैं। डर से लड़ने के बजाय, तुमने खुद को महामाया के चरणों में सौंप दिया, और उन्होंने तुम्हें बचा लिया।

किसी और समय, मेरे मन में हज़ारों सवाल आ सकते थे, लेकिन आज मुझे ऐसा लग रहा है कि कोई सवाल ही नहीं है। लामा उठे, कढ़ाई में आग में कुछ कोयला डाला, उस पर कुछ छोटी अगरबत्तियाँ रखीं, और फिर से बैठ गए। एक पल में, पूरा कमरा एक सुंदर खुशबू से भर गया। बिस्तर पर बैठकर, उन्होंने एक भारी किताब के पन्ने पलटे और कहा, “आपने दीक्षा ले ली है, चेनरेज़िग गए हैं, और जोखांग मंदिर में पूजा की है। अब आप एक सच्चे बौद्ध भिक्षु हैं।”

২৭২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

-सच कहूँ तो, मेरा यकीन करो, मुझे लामा धर्म के बारे में कुछ नहीं पता। मैंने यह कसम सिर्फ़ तिब्बत आने के लिए ली थी। मैं पूरी तरह से तैयार नहीं था।

मेरी बातें सुनकर उसने एक 'गुनगुनाहट' की आवाज़ की। फिर वह फिर चुप हो गया। अब तक दिन की रोशनी लगभग खत्म हो चुकी थी। आले में रखे लैंप की रोशनी धीरे-धीरे फैलकर पूरे कमरे में फैल गई थी। उस रोशनी में, मैं लामा का आधा जला हुआ चेहरा देख सकता था। एक्सप्रेशन पूरा था। उसके चेहरे पर शांति और पवित्रता का एक्सप्रेशन आ गया था। हम काफी देर तक चुपचाप बैठे रहे। उसने ही चुप्पी तोड़ी-

जो लोग बौद्ध धर्म या लामा धर्म की पढ़ाई करते हैं, उन्हें इस धर्म को समझने में कई साल लग जाते हैं, और तपस्या और साधना से इसे समझने में और भी ज़्यादा साल लग जाते हैं। पिछले जन्म की साधना या गुरु की कृपा के बिना, एक ही जन्म में बौद्ध धर्म और तंत्र को समझना नामुमकिन है। यह रास्ता बहुत मुश्किल है। हिंदू धर्म में भक्ति नाम का एक रास्ता है, जहाँ कोई अपने मन और आत्मा को समर्पित करके भगवान को पा सकता है। लेकिन यहाँ ऐसा नहीं है - साधना से सब कुछ मिल सकता है। ध्यान, योग, तपस्या की बहुत बड़ी साधना करनी पड़ती है और फिर उसे पाना पड़ता है। वह रास्ता सच में मुश्किल है।

मैं तिब्बत के उस मुश्किल रास्ते के बारे में सोचने लगा जिस पर मैं चल रहा था। वह ध्यान के मुश्किल रास्ते के बारे में बात कर रहा था और मैं तिब्बत के पहाड़ी और ठंडे हवा वाले रास्ते के बारे में सोच रहा था।

लामा ने फिर से शुरुआत की - तिब्बती धर्म खुद असल में भारत से आया था। महान योगी गुरु पद्मसंभव और महान दार्शनिक शांता रक्षित हमारे असली गुरु हैं। तिब्बती बौद्ध तंत्र के मुख्य सोर्स महायान, वज्रयान और प्राचीन तंत्रयान हैं।

मेरे मन में एक सवाल आया, और मैंने सीधे-सीधे कह दिया - यह मंडला चीज़ क्या है? क्या आप मुझे तिब्बत के सभी हिस्सों में इसके हर जगह होने के बारे में कुछ बता सकते हैं? उन्होंने बहुत देर तक अपना सिर झुकाया और कहा - ठीक है, तो सुनिए -

मंडलों के बारे में सही जानकारी के बिना, वे ज्योमेट्रिक आकृतियों और अलग-अलग आकार की तस्वीरों जैसे लग सकते हैं; लेकिन अगर आप थोड़ा और गहराई से जानेंगे, तो आप उनका असली मतलब समझ जाएंगे। मंडल ब्रह्मांड का एक छोटा रूप हैं। तिब्बत में अलग-अलग आकार के हज़ारों स्तूप पांच तत्वों को दिखाने के लिए फैले हुए हैं। यह मंडल पांच तत्वों का रूप है। मंडल इंसानी सोच का पहला रूप हैं, और फिर उस रूप का इस्तेमाल ध्यान के मंदिर के केंद्र के तौर पर किया जाता है।

लामा एक पल के लिए रुके, फिर धीरे से बिस्तर से उठे और बरामदे की तरफ़ चले गए, जहाँ से उन्होंने मुझे इशारा किया। मैं उनकी तरफ़ चला गया। उन्होंने दूर एक पहाड़ की तरफ़ इशारा किया और कहा, "तुम्हें वहाँ क्या दिख रहा है?" सूरज डूबने के बाद, हल्की लाल रोशनी में, मुझे एक धुंधला पहाड़ दिखा, ऐसा लग रहा था

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৭৩

वह मेरा ध्यान उस ओर खींच रहा था। मैंने उसकी ओर देखा और कहा, "एक पहाड़।"

-हाँ, यह एक पहाड़ है। घर बनाने के लिए आपको एक मज़बूत नींव की ज़रूरत होती है, जिस पर एक सुंदर घर बनता है। नींव घर का मंडला है। और पहाड़ की जड़ में एक बहुत बड़ी, सोच से परे नींव है - यह बहुत बड़ी पथरीली ज़मीन उस नींव पर खड़ी है। पहाड़ की असली ज़मीन जिस पर यह खड़ा है, वह पहाड़ का मंडला है। मंडला जितना मज़बूत होगा, उस पर बनने वाली चीज़ उतनी ही मज़बूत होगी। विचार, विलपावर का एक रूप है। सभी काम, यानी एक्शन, विचार की ताकत पर निर्भर करते हैं। अगर प्लानिंग ठीक से न की जाए, तो भविष्य में कुछ भी बड़ा करना मुमकिन नहीं है।

वह बालकनी से नीचे झुका और आवाज़ लगाई, "मू-मू।" उसके आवाज़ देने के तुरंत बाद, मू-मू सीढ़ियों से ऊपर आया। उसने उस आदमी से, जिसे वह पहले से जानता था, मू-मू से, चाय बनाने को कहा। फिर हम कमरे में वापस आ गए। रात की ठंड से कंपकंपी छूटने लगी थी। उसने आग का बर्तन बिस्तर पर उठाया और मुझे अपने बगल में बैठने को कहा। फिर उसने पूछा, "क्या तुम मंडला के बारे में और सुनना चाहते हो?"

-बेशक, आप मुश्किल थ्योरी को इतनी आसानी से समझाते हैं - सच में मुझे यकीन नहीं हो रहा। मुझे लगा था कि मंडला शब्द का मतलब समझने के लिए मुझे कम से कम एक साल पढ़ना पड़ेगा। मुझे और बताइए, मैं सुनूंगा, आप जैसे समझदार टीचर से मिलना किस्मत की बात है।

मेरी बातों पर कोई कमेंट किए बिना, उन्होंने फिर कहा, "मंडलों को अच्छी तरह समझने के लिए, तंत्र की प्रैक्टिस करनी होगी। मंडलों का

असली सोर्स तंत्र है। तंत्र की प्रैक्टिस से मन डेवलप होता है। जब मन ठीक से बन जाता है, तो सोचने का तरीका सही रास्ता अपनाता है। मंडलों का ज्ञान उस मूवमेंट के हिसाब से ढलने से आता है।"

-तंत्र से आपका क्या मतलब है? मुझे कुछ भी समझ नहीं आता।

-तिब्बत में तंत्र का मतलब है दुनिया के राज़ जानना, शरीर के राज़ जानना, जन्म-मरण के राज़ जानना। जो लोग तंत्र-मंत्र को मानते हैं, उन्हें चार अध्यायों के ज़रिए साधना करनी पड़ती है।

पहले अध्याय को (1) बीर गिउड या क्रियातंत्र कहा जाता है

दूसरे अध्याय को (2) पियर गिउड या कार्यतंत्र कहा जाता है।

तीसरे अध्याय को (3) नल-वियार गिउड या योग तंत्र कहा जाता है।

चौथे अध्याय को (4) ला-ना मेड गिउड या अनुत्तर योगतंत्र कहा जाता है।
क्रियातंत्र में विभिन्न प्रकार के बाहरी समारोहों - पूजा और दीक्षा की आवश्यकता होती है।

इस सिस्टम में ज़्यादा पूजा और धार्मिक रस्मों, कॉन्सेप्ट्स और मेडिटेशन की प्रैक्टिस, साथ ही मंत्रों और उनके मतलब सीखने की ज़रूरत होती है।

২৭৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

योग तंत्र का रास्ता ज़्यादा मुश्किल है। इस दौरान, व्यक्ति को योग, तपस्या और अलग-अलग संस्कारों से ऊपर उठने की प्रैक्टिस करनी पड़ती है। व्यक्ति को निर्वाण पाने के तरीकों और ज्ञान के बारे में जानकारी मिलती है।

अनुत्तर योगतंत्र ऋषि की आखिरी और अंतिम परीक्षा है। इस अध्याय में, ऋषि अपने मन को शुद्ध और मुक्त करके निर्वाण प्राप्त करने के योग्य हो जाता है।

ऋषि को शांति मिलती है, और सभी तरह की मानसिक परेशानियां दूर हो जाती हैं।

जब साधक क्रिया, कार्य, योग और अनुत्तर के सभी टेस्ट में सफल हो जाता है और अपनी प्रैक्टिस के पीक पर पहुँच जाता है, तो मंडल के सभी मतलब और मतलब उसके लिए आसान हो जाते हैं, और तंत्र के रहस्यों के सभी दरवाज़े खुल जाते हैं।

तो आप समझ गए होंगे कि मंडल तंत्र का सीक्रेट जाल है, तंत्र की चाबी इस मंडल के रंगों और पैटर्न में बंद है।

जैसे ही मंडल बनाया या पेंट किया जाता है, साधु का मन उस सेंटर में लग जाता है, दिन-ब-दिन वह अपने मन को पैटर्न, रंग और पैटर्न में लगाए रखता है।

यह एक मंडल के आकार से शुरू होता है, जिसमें चार दिशाओं में चार दरवाज़े हैं: पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण। हर दरवाज़े को उसके सही गार्डियन के साथ दिखाया गया है। रंग खास गुणों और दिशाओं के हिसाब से तय किए गए हैं, जैसे पूरब में सफ़ेद, पश्चिम में लाल, उत्तर

में हरा और दक्षिण में पीला। पूरब का गार्डियन विजया है, पश्चिम का हयग्रीव है, उत्तर का अमृतधारा है और दक्षिण का यमंतक है।

चार दरवाज़े हमारे जीवन की चार सीमाएँ हैं। पूरब में जन्म और मृत्यु, पश्चिम में हवा, उत्तर में उद्भव और शून्यता, दक्षिण में अमृत और हमेशा रहने वाला निर्वाण। विजया के हाथ में अंकुश है, हयग्रीव के हाथ में वज्र की जंजीर है, अमृतधारा के हाथ में किंकिणी है, और यमष्टक के हाथ में पासा है।

सफेद - अकल्पनीय का प्रतीक है; लाल - अंडाणु का प्रतीक है; हरा - गर्मी और उष्णता का प्रतीक है; पीला - मातृत्व का प्रतीक है।

लामा अब रुक गए। मैंने उनकी बातें बहुत ध्यान से सुनीं। इस बार वे बहुत देर तक चुप रहे। मुझे उनके शब्दों को अपने दिमाग में ठीक करने का समय मिला। पास में रखी हरिकेन की चिमनी की सफाई बहुत समय से नहीं हुई थी। वह बस ऐसे ही दिखाई दी थी। हम लैंप की रोशनी में काम कर रहे थे। खिड़कियां और दरवाजे बंद थे, और चारों ओर सन्नाटा था। दुनिया के एक अनजान कोने में, मैं एक महान बुद्धिमान शिक्षक के आमने-सामने बैठा था। वह अपना ज्ञान बता रहे थे। मैं इसे कैसे मान सकता था?

इस बार वह उठे, एक सुंदर लकड़ी का बक्सा खोला, उसके अंदर से फूल के आकार का कागज़ और एक पेंसिल निकाली, मुझे दी और कहा, "हो सकता है तुम्हें सब कुछ याद न हो, इसलिए इसे लिख लो।"

फिर उसने दरवाज़ा खोला और मुन्नू अंदर आया, हमारे सामने सूजी और बटर टी के दो कटोरे रखे, और जैसे आया था वैसे ही चुपचाप चला गया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৭৫

हज़ारों तरह के मंडल होते हैं, और हर समझदार लामा अपने मन और आध्यात्मिक विकास के हिसाब से मंडल बना सकता है। लेकिन, वह चाहे किसी भी तरह का मंडल बनाए, उसे पाँच बातों पर खास ध्यान देना चाहिए, जो मंडल की मुख्य शिक्षाएँ हैं।

हर मंडल का अपना नाम और खासियतें होती हैं - परंपरा को पहचानना ज़रूरी है। मंडल की पाँच खासियतें हैं - वैराचन, वज्रसत्व अक्षोभ्य, रत्नसंभव, अमिताभ, अमोघसिद्धि। मंडल में, वैराचन बीच में है, वज्रसत्व अक्षोभ्य पूरब में है, रत्नसंभव दक्षिण में है, अमिताभ पश्चिम में है और अमोघसिद्धि उत्तर में है।

बीज मंत्र को दिखाते समय, मन और आत्मा को मंत्र में लगा देना चाहिए। सबसे पहले, बीज मंत्र को शुद्ध मन से पढ़ना चाहिए और फिर मंडल पर रखना चाहिए। इस समय, गुरु बार-बार साधु को चित्रण पर नज़र रखने का निर्देश देते हैं। वैराचन का बीज मंत्र है ॐ; वज्रसत्व अक्षोभ्यार हुं; रत्नसंभवरा तर्म; अमिताभाचं ह्रीं; अमोघसिद्धिर आ। उनके परिवार क्रमशः मोह, द्वेष, चिंतामणि, राग और समय हैं, उनके रंग क्रमशः सफेद, नीला, पीला, लाल और हरा हैं।

वैराचन का प्रतीक धर्म चक्र है, वज्रसत्व अक्षोभ का प्रतीक भूमिपारश है, रत्नसंभव का प्रतीक वरद है, अमिताभ का प्रतीक ध्यान है, और अमोघसिद्धि का प्रतीक अभय है।

वैराचन की गाड़ी शेर है, वज्रसत्व अक्षोभ की गाड़ी हाथी है, रत्नसंभव की गाड़ी घोड़ा है, अमिताभ की गाड़ी मोर है, और अमोघसिद्धि की गाड़ी गरुड़ है।

वैराचन का भूत आकाश है, वज्रसत्व अक्षोभ्य का भूत जल है, रत्नसंभव का भूत पृथ्वी है, अमिताभ का भूत अग्नि है, अमोघसिद्धि का भूत वायु है।

मंडल बनाते समय, किसी को अपनी जगह, समय, स्थान, जाति, शरीर, धातु, रंग और सितारों का ध्यान रखना होता है। गुफा बनाने से पहले, उसकी नींव मंडल के आकार की बनाई जाती है, और उस नींव की जड़ में एक और आखिरी नींव होती है। विद्वान लामा हर मामले की अच्छी तरह से जांच करते हैं और फिर उसके आकार और प्रकृति पर फैसला करते हैं। एक बुद्धिमान गुरु के बिना मंडल का अंदाजा लगाना और उसकी प्रकृति को जानना मुमकिन नहीं है। गुफाओं और स्तूपों से लेकर, पहाड़, नदियाँ, धरती, चाँद और सूरज तक, मंडल हर चीज़ की जड़ में हैं। मंडल के बारे में ज्ञान पाने का मतलब है इस दुनिया का मुख्य रहस्य जानना।

हमने चाय की चुस्की ली। कमरा मक्खन और चाय की मीठी खुशबू से भरा हुआ लग रहा था। समझदार गुरु लामा ने ज़ोर से चाय पी, फिर अचानक रुक गए और अपने होंठों पर लगी मक्खन की परत को जीभ से चाटने लगे। उन्होंने मेरी तरफ देखा और कहा,

हमें यह समझने की ज़रूरत है कि सिर्फ़ फूल, धूप और दीपक चढ़ाकर अपना काम पूरा करना काफ़ी नहीं है। फूल असल में हमारे पिछले विचारों का नतीजा हैं, इसके बारे में सोचें, समझने की कोशिश करें।

২৭৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

अगरबत्ती हमारे भविष्य के विचारों की निशानी है, अगरबत्ती जलती है और खुशबू देती है। हमें इस तरह से सोचना होगा कि हमारे विचार काम के हों। खुशबू भविष्य के विचारों की निशानी है।

दीपक अनंत विचारों की अनंत धारा है।

अगर यह सब आर्या तारा या श्रीदेवी के चरणों में सौंप दिया जाए, तो फिर क्या बचेगा? खुशी और निर्वाण का रास्ता कौन रोकेगा?

ऐसा लगा जैसे उसने मुझ पर सवाल उछाल दिया हो। फिर हम काफी देर तक बैठे रहे, मैंने जितना हो सका उसकी बातों का मतलब समझने की कोशिश की। मैंने खुद को थोड़ा रोका और पूछा - मैंने कोई तपस्या या साधना नहीं की है, फिर भी मुझे सब कुछ मिलता है, क्या आप मुझे इसका कारण बता सकते हैं?

बहुत आसान शब्दों में कहें तो, बहुत से लोग फल पाने की उम्मीद में पेड़ लगाते हैं, जबकि बहुत से लोग पेड़ नहीं लगाते और फल पाते हैं। हम कर्म करते हैं और कर्म के नतीजे में जन्म लेते हैं। यह जीवन पिछले जन्म का नतीजा है और हम इस जीवन में जो करते हैं, वही हमें भविष्य में मिलेगा।

फिर उन्होंने अचानक मंडल के गहरे सिद्धांत को समझाना शुरू कर दिया। हालाँकि मैं इसका कुछ हिस्सा समझ गया, लेकिन इसका ज़्यादातर हिस्सा मेरी समझ से बाहर था। मैंने जितना हो सका, उतना लिख लिया। चुड़ैल, रंग, उसने किस हाथ में क्या पकड़ा हुआ है, मंडल में उसका स्थान कहाँ

है, क्यों और क्या, आदि। चुड़ैल के कई नाम हैं, जैसे गौरी, विटाली, घासमरी, पुक्षी, शबरी, चांडाली, दंबी, आदि। उनके रंग काले, लाल, हरे, नीले, सफेद, नीले और हरे हैं। मंडल में गौरी का स्थान बीच में है, विटाली का स्थान पश्चिम में है, घासमरी का स्थान उत्तर में है, पुक्षी का स्थान उत्तर-पूर्व में है, शबरी का स्थान दक्षिण-पूर्व में है, चांडाली का स्थान दक्षिण-पश्चिम में है, और दंबी का स्थान उत्तर-पश्चिम में है।

इस समझदार लामा की समझ कभी खत्म नहीं होती। फिर उन्होंने बोलना शुरू किया - खालीपन और खालीपन की थ्योरी, फिर चेन-रे-जी। उनके मुँह से निकले अमृत वचनों को समझने के लिए, मुझे लामा और तंत्र शास्त्रों में जाना होगा। यह देखे बिना कि मैं समझ पाया या नहीं या मेरा उसमें मन है या नहीं, वे तंत्र शास्त्रों के गहरे राज़ समझाते रहे, रुक-रुक कर उन्हें दोहराते रहे।

मुझे नहीं पता कि उनकी बातें सुनते-सुनते मुझे कब नींद आ गई। अगली सुबह मैं जल्दी उठा, और जब मेरी आँखें खुलीं, तो मैंने देखा कि मैं लामा के बिस्तर पर आधा कंबल ओढ़े लेटा था और लामा बिस्तर पर आधे पैर मोड़े लेटा था। मुझे लगता है कि उसने मेरे ऊपर कंबल बिछा दिया था। मैं उठा और धीरे-धीरे नीचे गया, फिर मंदिर गया, प्रार्थना की, और गुफा में प्रार्थना चक्र घुमाने लगा। उस समय, मैंने देखा कि सभी गाँव वाले ग्रुप में कहीं जा रहे थे। ठीक वैसे ही जैसे मैंने संताल पल्ली से संतालों को काम की उम्मीद में बर्धिष्णु गाँव की ओर जाते देखा था।

परंपरा

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৭৭

एक पल में लामाजी उठ खड़े हुए। मैंने उन्हें प्रणाम किया और कहा, "मुझे अब जाना है।" उन्होंने मेरा सिर अपने पास खींचा और प्यार से कहा, "भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें। ध्यान से जाओ।"

फिर उन्होंने मुझे कुछ बहुत काम की सलाह दी, उन्होंने मुझे समझाया कि मानसरोवर का लोकल नाम त्सो मफाम है। थोकचेन पास का सबसे बड़ा शहर है। यह सड़क मुझे सीधे उस महान तीर्थस्थल तक ले जाएगी। सभी आम तीर्थयात्री मानसरोवर की परिक्रमा करते हैं, लेकिन लामा के अनुसार, इस समय परिक्रमा न करना ही बेहतर है, पूरा असर सिर्फ़ देखने और छूने से ही मिलेगा।

बार-बार चेतावनी देने के बाद, उन्होंने कहा, "तुम मानस सरोवर का नाम बिल्कुल मत लेना। त्सो मफाम के आस-पास के खानाबदोश इस झील को त्सो मभांग कहते हैं। त्सो मफाम के दक्षिण की ओर की गुफाओं में मत जाना, बल्कि उत्तर की ओर की गुफाओं में रहना।"

इस बीच, मुन्नू चाय और कुछ उबले आलू ले आया। चाय यहाँ के लिए थी और उबले आलू रास्ते के लिए। चाय पीते-पीते लामा ने एक चिट्ठी लिखकर मुझे दी। त्सो मफाम के उत्तर में लैंगबोना और कैलाश के उत्तर में दिराफुक नाम की दो गुफाएँ हैं। अगर मैं यह चिट्ठी गुफा के मुखिया को दे दूँ, तो वह मेरे लिए सब कुछ करेगा। मैंने ऐसे चिट्ठी को अपने इस अनजान देश में सबसे बड़ा खजाना समझा। मैं लामा के इस उपकार को कभी नहीं भूलूँगा। उनकी सलाह और उपकार का बदला सिर्फ़ अपना सच्चा

शुक्रिया अदा करके चुकाना मुमकिन नहीं है। सूरज भगवान को पीछे छोड़कर मैं निकल पड़ा। फिर से रास्ते पर।

पासागुक के बाद, सड़क अचानक मेरे खिलाफ हो गई। पासागुक में मठ से निकलने के एक घंटे के अंदर, मैंने नदी के किनारे एक बड़ी भीड़ देखी, लगभग सौ खाकी टेंट और दर्जनों जीप और लॉरी सड़क पर खड़ी थीं। मुझे तुरंत एहसास हुआ कि यह एक मिलिट्री कैंप है, इसलिए इससे बचना ही बेहतर था। मुझे एहसास हुआ कि यहीं पासागुक के लोग काम करने आ रहे थे, शायद सड़क ठीक करने के लिए या किसी बड़े सरकारी प्रोजेक्ट की प्लानिंग हो रही थी।

जितना हो सके मिलिट्री यूनिफॉर्म से बचना ही सबसे अच्छा था। इसलिए मैंने सड़क छोड़ दी और दाईं ओर पथरीली ज़मीन पर चला गया। नदी को पीछे छोड़कर, मैं सीधे उत्तर की ओर चला, मेरा मकसद नदी के साथ लगभग पैंतीस से चालीस डिग्री का एंगल बनाना और फिर वापस आना था। पथरीली ज़मीन पर चलना ताज़े कटे धान के खेत में नंगे पैर चलने जैसा था - मेरे पैर सच में थक रहे थे, लेकिन मैं चलता रहा, लेकिन अगले कदम के साथ मुझे रुकना पड़ा। एक छोटी, तेज़ बहती नदी अचानक मेरे साथ खेलने के लिए प्रकट हुई। वह एक छोटी पहाड़ी लड़की की तरह हँसी।

पहले तो इस तेज़ बहती नदी को देखकर मुझे लगा कि यह कोई बहुत बड़ी रुकावट है। नीचे चीनी कैंप है, और नदी का रास्ता यहीं खत्म होता लगता है। थोड़ा मन शांत होने के बाद, मैंने नदी का एक और रूप देखा। तेज़ बहती नदी की कलकल की आवाज़ किसी छोटी पहाड़ी लड़की की हंसी जैसी लग रही थी। साफ़, निर्मल पानी लड़की के बेदाग और पवित्र चरित्र की निशानी है, और लड़की उस साफ़ पानी के नीचे और किनारे पर छोटे गोल पत्थरों के हमेशा हिलते कंकड़ों से खेलती हुई लगती है। लड़की इस कभी न खत्म होने वाले खेल में खुशी और उत्साह से मदहोश है। ऐसा लगता है

कि यही ज़िंदगी का ज़रिया है। जब वह जवान होती है, तो वह सीधे-सादे खेल से मदहोश रहती है। फिर, जैसे-जैसे ज़िंदगी का बहाव आगे बढ़ता है, वह और भी मुश्किल होती जाती है। क्रिस्टल जैसा साफ़ पानी गंदा हो जाता है, और उसके अंदर जवानी की खुशी दिखती है। कंकड़ों को छोड़कर, नदी फिर एक प्रेग्नेंट माँ का रूप ले लेती है। कितने ही जीव उसमें जन्म लेते हैं और कितने ही जीव उसमें पनाह लेकर जीते हैं। एक भरी हुई नदी हमेशा जीवों की भलाई में लगी रहती है। फिर से, मुझे उसमें संघारिनी कोरल की मूर्ति दिखती है। आखिर में, वह माँ जैसी नदी अपने आखिरी रूप में नन है।

305

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৭৯

कमल के रूप में ध्यान करते हुए उन्हें निर्वाण मिला। वे समुद्र में मिल गए और ब्रह्मा बन गए। उनसे पहले, उस समय, माँ जैसी नदी, सबसे शुभ नदी ने अपने बच्चों के सिर पर हाथ रखा और अपना आखिरी आशीर्वाद दिया। समुद्र के संगम पर वह दया पाकर, जीवों का उद्धार हुआ।

नदी जीवन की एक चमकती हुई निशानी है। मेरे सामने जो छोटी, तेज़ बहती नदी है, उसी तरह सांगपो भी कई दूसरी नदियों के मिलने से बनी थी। भारत में आने पर इसका नाम बदलकर ब्रह्मपुत्र हो गया। यह छोटी नदी असम में सुपुर्णा नदी बन गई।

पहली नज़र में मुझे लगा कि यह छोटी सी, बिना नाम की नदी मेरे लिए एक रुकावट है, लेकिन थोड़ी देर बाद, यह मेरी दोस्त बन गई। यह सच में एक दोस्त थी - इस बड़ी सुनसान जगह में, यह मुझे ज़िंदगी के रहस्य की कहानी सुना रही थी। बहुत समय बाद, मुझे एक खेलने वाला साथी मिला, और मैं उससे बातें करते हुए उत्तर की ओर चल पड़ा। लगभग एक घंटे चलने के बाद, नदी का पानी पतला हो गया, और मेरी किस्मत फिर से खुल गई। मैंने दोनों हाथों से अपने कपड़े और जूते उठाए और बड़े कॉन्फिडेंस के साथ नदी में उतर गया। साफ़ पानी देखकर मुझे लगा कि ज़्यादा ठंड नहीं होगी, लेकिन जैसे ही मैंने पानी में पैर रखा, मेरा पूरा शरीर सुन्न हो गया। उस समय, मुझे साधु बाबा की कीमती सलाह याद आई। उन्होंने कहा था कि तिब्बत का पानी बहुत ठंडा है, अगर तुम अचानक उस पानी में पैर रख दोगे, तो ठंड से मर जाओगे। जब तुम कोई नदी या नहर पार करो, तो पहले उस पानी से अपने पूरे शरीर की तेल लगाने जैसी मालिश करो, फिर जब ठंड थोड़ी कम हो जाए, तो पानी में उतरो। मैंने साधु बाबा की सलाह पर अमल किया। अगर मुझे इस ठंडी नदी को पार करने का तरीका नहीं पता होता, तो मैं अपने छोटे से शरीर से इसे पार नहीं कर पाता। यहाँ बहाव धीमा था लेकिन फिर भी बेचैन था, इसलिए मैंने उसे अलविदा कहा और फिर से त्सांगपो का रास्ता पकड़ लिया। रास्ता अब और मुश्किल हो गया था, आस-पास कोई पेड़ नहीं था। दूसरी तरफ, पहाड़ उठ रहे थे, तिब्बत को भारत से हिमालय की बड़ी दीवार ने अलग कर दिया था। लोगों का एक भी निशान नहीं था। किस्मत अच्छी थी कि मेरे पास खाना था, वरना आग जलाने के लिए थोड़ी सी घास भी नहीं होती, इस हमेशा बर्फ़ वाली ज़मीन पर, मुझे नहीं लगता कि कभी घास होगी।

महातीर्थ का कभी न खत्म होने वाला रास्ता सच में मुश्किल है, लेकिन मुझे उम्मीद है कि यह रास्ता इस त्सांगपो के सोर्स पर खत्म होगा और मुझे कैलाशनाथ मिल जाएगा, वह पहाड़ जिसे मैंने सपने में देखा था। मुझे आराम करने के लिए कोई पनाह नहीं मिली, इसलिए मुझे पूरी रात

चलना पड़ा। अगली सुबह, मुझे एक छोटा सा गाँव मिला, गाँव वालों को एक जवान साधु मिला और उन्होंने उसे बहुत सम्मान और भक्ति के साथ पनाह दी। एक औरत ने गर्म दूध का कटोरा देकर मेरा स्वागत किया। चमारी गाय का दूध मेरे चेहरे पर अमृत जैसा लगा। वे मुझे आराम करने के लिए अपने एक कमरे में ले गईं। आराम! कहने की ज़रूरत नहीं है, मैं पिछले दो दिनों से लगातार चल रहा हूँ। उस अधेड़ उम्र के आदमी का यह बिस्तर पाकर मैं खुद को रोक नहीं पाया।

২৮০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैंने कंबल सिर पर लपेटा और लेट गया। उस गरीब और धार्मिक आदमी के घर पर एक दिन और एक रात बिताने के बाद, मैंने परिवार की भलाई के लिए प्रार्थना की और फिर से अपने रास्ते पर निकल पड़ा।

फिर, करीब चौबीस घंटे में मैंने दो नदियाँ पार कीं, जो दोनों त्सांगपो में मिलती हैं। नदियों को पार करने के लिए बने पुल भी बहुत पुराने हैं। दोनों पुल मिट्टी के बने हैं, मतलब पत्थरों के बने हैं और लकड़ी और रस्सियों की मदद से झूले गए हैं। दूसरी नदी पार करने के एक घंटे के अंदर मुझे एक घर मिला। कुत्तों ने, हमेशा की तरह, मेरा स्वागत किया। दो जवान लड़के आए और मुझसे पूछा कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। तिब्बती बच्चे आमतौर पर बहुत शर्मीले होते हैं और बात नहीं करते। उनका दोस्ताना व्यवहार देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैंने संक्षेप में जवाब दिया, 'त्सो मफाम'। मेरा जवाब सुनकर लड़के भाग गए। 'त्सो मफाम' शब्द में एक जादू था। जब मैं घर के पास से गुज़र रहा था, तो उन्होंने मुझे घेर लिया और मेरा रास्ता रोक दिया।

भीड़ देखकर मैं चुप हो गया। सब लोग मुझसे अपने साथ चलने की रिक्वेस्ट करने लगे। मुझे उनकी रिक्वेस्ट पूरी करनी थी। मौनी बाबा के दर्शन से वे धन्य हो गए थे। कहने की ज़रूरत नहीं, मैं भी उनकी उम्र का ही हूँ। चाय पीने के बाद, मैंने ध्यान से चारों ओर देखा और माहौल को समझना आसान हो गया। वे ज़रूर पास के किसी गाँव से होंगे, यहाँ गौरैया भाटी करने आए हैं। थोड़ी देर चाय पीने के बाद, मैंने उन्हें इशारे से बुलाया और साथ बैठकर मणि मंत्र पढ़ा, और सब चुप हो गए। लगभग आधे घंटे बाद, हमने प्रार्थना करके चुप्पी तोड़ी। बेशक, मैं चुप रहा। सब्ज़ियाँ उबालकर गेहूँ के साथ खिचड़ी की तरह पकाई गई थीं, और उसके साथ कुछ सूखा मटन। गौरैया भाटी के लिए एक स्वादिष्ट डिश। शाम को, मैं भी उनके साथ बाहर चला गया। मेरा आइडिया सही था। इस घर के बगल में एक गर्म पानी का झरना था, गाँव वाले कभी-कभी यहाँ नहाने और टहलने भी आते हैं। अगर मुझे पहले पता होता, तो मैं भी वहाँ नहा सकता था - अब मुझे इसका अफ़सोस क्यों होता?

सफ़र से ठीक पहले, मैंने उनसे एक बड़ी खुशखबरी सुनी, आगे बड़ा गाँव त्रादुम (त्रादुम) था। सफ़र सिर्फ़ एक घंटे का था। त्रादुम से मानसरोवर सिर्फ़ ग्यारह से बारह दिन का सफ़र था। जब तक मैंने यह खबर नहीं सुनी, मेरा मन बार-बार खुशी से उछल रहा था। और सिर्फ़ एक हफ़्ते के सफ़र के बाद, मुझे उस महान तीर्थ के दर्शन होने वाले थे। अगर ये लड़के मेरे आस-पास न होते, तो मैं सच में उछल पड़ता। मैंने खुद को रोका - उत्साह भावना का प्रतीक है, मुझे इससे ऊपर रहना है - "योगस्थ कुरु कर्माणि।"

हमने चलना शुरू किया - सूरज डूब चुका था, और उसके साथ चाँद भी।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৮১

अंधेरा घिर आया है। तिब्बत में अंधेरे में ग्रुप में चलना एक खेल है, अंधेरा भी एक रोशनी है, रात कितनी भी अंधेरी क्यों न हो, जब आसमान में तारे उगते हैं, तो रास्ता दिखता है। चलते-चलते रास्ता भटक जाना, कोई और समझ लेना, ठोकर लगना और अपने साथी से टकरा जाना, ये सब मज़ेदार बातें हैं। ऐसा लगता है कि एक घंटे चलने के बाद हमने पहली बार गाँव की रोशनी देखी। मुझे समझ नहीं आया कि गाँव कितना बड़ा है, कहाँ से शुरू होता है, जगह कैसी है - उनकी बातों से मुझे पता चला कि यह त्रादुम है। गाँव में घुसकर थोड़ी देर चलने के बाद, मुझे धुंधली रोशनी में एक मठ की परछाई दिखाई दी। जैसे ही मैं उसके पास पहुँचा, सबने मुझे अलविदा कहा और चले गए। उनमें से एक लड़के ने मुझे मठ के दरवाज़े के सामने खड़ा किया और कहा - अंदर से बहुत सुंदर है, लामा बाहर से आकर यहाँ रहते हैं।

जैसे ही मैंने मंदिर के भारी दरवाज़े को अंदर की तरफ़ धकेला, वह खुल गया, और मैं अंदर गया। दीवार के कोने में एक आले में घी का दीया जल रहा था। मैंने दरवाज़ा बंद किया और दीये की तरफ़ चला। जब मैंने दीया उठाया, तो देखा कि वह चारों तरफ़ घी के गोंद में फंसा हुआ था, सैकड़ों साल पुराना घी गिरा हुआ था और विशाल दीये का लगभग आधा हिस्सा घी में एक ठोस काली स्याही की तरह डूबा हुआ था। जो भी हो, वह रोशनी थी। आधार एनालिसिस में मेरा क्या काम था? मुझे उसकी रोशनी चाहिए थी। काफ़ी देर तक खोजने के बाद, मुझे मुख्य वेदी मिली और उसके सामने हज़ार दीयों की वेदी थी। कुछ अंदाज़ा लगाने और खोजने के बाद, मुझे प्रार्थना वेदी मिली। रात बिताने के लिए यह एकदम सही बिस्तर था। मैंने कंबल उतारा, खुद को पूरी तरह लपेटा, और गद्दे पर लेट गया। दूसरे दिनों की तुलना में, आज बिल्कुल भी थकान नहीं थी, लड़कों के साथ हँसी-खुशी से दिन बीता था।

मठ के इस कमरे में मुझे ठंड बर्दाश्त नहीं होती। मैं दो बार उठा और लैंप की हल्की गर्मी से अपनी हथेलियाँ सेंकी। उठने, झुकने और लेटने की कई तरह से कोशिश करने के बाद भी मुझे सोने की कोई पोज़िशन नहीं मिली। ठंड धीरे-धीरे मेरे सीने में घुसने लगी और मैं काँपने लगा। जब काफी देर कोशिश करने के बाद भी मेरा शरीर गर्म नहीं हुआ, तो मैंने सोचा, ऐसे लेटे-लेटे समय बर्बाद न करना ही बेहतर है। मैं शरीर को हिलाकर उठ बैठा - इस तरह ठंड में परेशान होने से अच्छा है कि कैलाश के रास्ते पर आगे बढ़ा जाए, कम से कम दूरी तो कम हो जाएगी। लैंप की धीमी रोशनी में मैंने अपना सामान पैक किया और कंधों पर उठा लिया। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब मैं कमरे में घुसा, तो मुझे लैंप दाईं ओर मिला। इसका मतलब है कि जब मैं बाहर निकला, तो बिल्कुल उल्टा होगा, यानी अगर मैं लैंप को बाईं ओर छोड़कर आगे बढ़ा, तो मुझे दरवाज़ा मिल जाएगा। मैंने मन ही मन हिसाब लगाया लेकिन मुझे दरवाज़ा नहीं मिला। दरवाज़े की जगह मेरे हाथ दीवार पर टंगे अलग-अलग टैंकों पर पड़ने लगे। जब कई बार कोशिश करने के बाद भी मुझे दरवाज़ा नहीं मिला, तो मुझे लगा कि मैं शायद गलत दिशा में चला गया हूँ। मैं सोचता रहा कि लैंप ही एकमात्र टारगेट है, मेरा एकमात्र लक्ष्य।

২০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৮২

मुझे अच्छी तरह याद है कि कमरे में घुसते ही मैं सबसे पहले लैंप के पास गया था। क्योंकि कमरे में सिर्फ़ वही रोशनी थी, इसलिए गलती होने की कोई गुंजाइश नहीं थी। लेकिन, यह सोचकर कि गलतियाँ सिर्फ़ इंसानों

से होती हैं, मैंने लैंप के दूसरी तरफ़ की दीवारों को ढूँढना शुरू कर दिया। उस दीवार को टटोलते हुए मेरे हाथ अलग-अलग मूर्तियों पर पड़ते रहे। हल्की रोशनी में कुछ भी ठीक से देख पाना मुमकिन नहीं था। काफ़ी देर कोशिश करने के बाद भी मुझे उम्मीद की कोई किरण नहीं दिखी। कमरे में घुसते समय मुझसे कहीं कोई गलती हुई होगी या दरवाज़ा बहुत चिकनी दीवार जैसा होगा, इसलिए मैं उसे ढूँढ नहीं पाया। लैंप को उठाने का कोई तरीका नहीं था, और अगर मैं उसे उठाने की कोशिश करता, तो रोशनी चली जाती। मैंने फिर से गद्दे पर शरण ली, इस उम्मीद में कि सुबह हो जाएगी। इस बार मैंने अपने शरीर को गर्म करने के लिए कुछ आसन शुरू किए - बक्रासन, मयूरासन और पश्चिमोत्तासन, और मुझे अपने हाथों से भी नतीजे मिले।

मेरे शरीर की कंपकंपी कम हो गई थी, और ऐसा लग रहा था जैसे कमरा गर्म हो गया हो। सुबह होने पर ठंड ज़्यादा होती है, इसलिए मैंने उसी हिसाब से खुद को तैयार करना शुरू कर दिया। मुझे वहम था कि सुबह होने से पहले मुझे दरवाज़ा मिलने की कोई उम्मीद नहीं होगी। लेकिन सबसे हैरानी की बात यह थी कि ठंड अचानक कम हो गई थी, लेकिन क्या होता अगर सुबह हो चुकी होती और सूरज की रोशनी कमरे में आ चुकी होती? दुख की रातें अक्सर जल्दी खत्म नहीं होना चाहतीं, तकलीफ़ की रातें हमेशा लंबी होती हैं। इस ठंड में रात अचानक खत्म हो गई लग रही थी। मुझे बिल्कुल यकीन नहीं हो रहा था - मैंने आँखें खोलीं और एक अजीब चीज़ देखी! यकीन नहीं हो रहा था, पर सच था, सूरज की रोशनी नहीं, बल्कि एक साधु मेरे बगल में गद्दे पर बैठा था, उसके सामने कोयले की लाल आग जल रही थी। मैं तुरंत उठ बैठा, उसके पैर छुए और माथा टेका। आग! आह, उस पल कमरा स्वर्ग जैसा लग रहा था। मैं साधु के बगल में बैठ गया और आग जलाने लगा। कोयले की आग में साधु का दिव्य चेहरा मेरी नज़र में आ गया। मेरी तरह, वह भी किसी बड़ी तीर्थ यात्रा पर गए यात्री रहे होंगे। मैंने कुछ नहीं कहा, मैं मुस्कुराया और विनम्रता से उनका

शुक्रिया अदा किया। मैंने थोड़ी देर अपने शरीर को गर्म किया, और जैसे ही मेरा शरीर नॉर्मल हुआ, मेरी आँखें नींद में डूबने लगीं। मैं बैठे-बैठे ही सोने लगा। मेरी हालत देखकर, उन्होंने मुझे बिस्तर पर लेटने को कहा। तिब्बत में आने के बाद यह पहली बार था जब मैंने लंबे बालों वाले साधु को देखा। मैं उनसे बात करना चाहता था, लेकिन मैं नींद की गिरफ़्त से आज़ाद नहीं हो पा रहा था, इसलिए मैं लेट गया।

सुबह गांव के लड़कों ने मुझे जगाया, जिनके साथ मैं कल यहां आया था। लड़कों के साथ दो लड़कियां भी आईं। वे मेरे पास आईं और मुझे प्रणाम किया, मैंने उन्हें आशीर्वाद दिया और प्रार्थना की। लड़कियां हमारे लिए कुछ खाना लाईं। कड़ा मक्खन, भारी रोटी और गुड़। मेहमान के लिए इससे अच्छा खाना और कुछ नहीं हो सकता, खासकर जब उसने धरती पर किसी अपने को खो दिया हो।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৮৩

मैं इस देश में गया था। मैंने कुछ खाया और कुछ उन्हें बांटा। मैंने उन सबसे अपने पास बैठने को कहा, और फिर, उनके लिए शुभकामनाएं देते हुए, हमने मंत्र पढ़ना शुरू किया, और हमारी एक साथ आवाज़ों से मंदिर का कमरा भर गया।

मुझे रात का साधु नहीं दिख रहा था, मुझे लगता है कि वह सुबह-सुबह ही चला गया था। खुले दरवाज़े से दिन की रोशनी आ रही थी। यह दरवाज़ा इतना पास था कि रात में इसे देखकर मैं परेशान हो गया। रात का राज़ जानने के लिए, मैं दरवाज़े के पास दिखे दीये की तरफ बढ़ा। फिर से, हैरान होने की बारी मेरी थी। घी में रखे दीये का कोई निशान नहीं था,

और बहुत देर तक ढूंढने के बाद भी, मुझे दीवार में छेद नहीं मिला। यह एक राज़ था! बच्चे दरवाज़े के पास खड़े थे, इसलिए रात के राज़ को कुछ देर के लिए टालना पड़ा। उनके साथ, मैं एक मिडिल क्लास परिवार के घर आया और पनाह ली। घर के आँगन में कुछ टट्टू और याक बंधे हुए थे, और मैं उनके पास से गुज़रते हुए एक लकड़ी के बरामदे में आया। लकड़ी का घर बहुत सुंदर और बारीक काम से भरा हुआ था। थोड़ी देर बाद, घर के अंदर से सब लोग दौड़ते हुए आए, अपनी जीभ बाहर निकाले, सिर झुकाए और सजदे में खड़े थे। आखिर में, एक बूढ़ी औरत आईं, उनका सीधा-सादा और पवित्र स्वभाव उनके चेहरे की सिलवटों से दिख रहा था। उन्होंने एक नए कंठा से मेरा स्वागत किया। तिब्बत में यही रिवाज है। जैसे हम गुरुओं या आदरणीय लोगों का फूलों की माला से स्वागत करते हैं, वैसे ही यहाँ यह कंठा भी है। थोड़ी देर बाद, एक बूढ़े आदमी किसी तरह एक छड़ी का सहारा लेते हुए दिखाई दिए। मैं उन्हें प्रणाम करने ही वाला था कि मैं रुक गया। इस देश में लामा कभी भी घरवालों को प्रणाम नहीं करते।

इससे पहले कि मैं उनसे कुछ कह पाता, वे समझ गए कि मैं मौनी बाबा हूँ। आजकल मैं थोड़ी-बहुत तिब्बती समझ लेता हूँ, लेकिन यहाँ के लोगों को बिल्कुल नहीं समझ पाता। मैं उनके एक्सेंट और बोलने के तरीके से वाकिफ नहीं हूँ। खैर, मैंने उन्हें ऐसे ही समझाया कि मैं एक तीर्थयात्री हूँ, जो मानस तीर्थ जा रहा हूँ।

थोड़ी देर बाद, घर के अंदर से कोई आग लेकर आया और उसे बीच में रख दिया। लड़कियों के कपड़े बहुत चमकीले रंग के थे। उनके गले में पत्थरों के हार, बुज़ुर्ग औरतों की कमरबंद बहुत सजी हुई थी। सबसे खास बात उनके गाल थे, बच्चों के गाल, सेब जैसे लाल थे। सब लोग सांस रोककर मुझे देख रहे थे और जैसे ही उनकी नज़रें मुझसे मिलीं, उन्होंने अपनी नज़रें ज़मीन पर झुका लीं। मैं बस वहीं बैठा रहा। भगवान जाने अब मौनी बाबा का क्या काम था। जब मैं पहली बार तिब्बत

में आया था, तो ऐसी हालत में खुद को पाकर बहुत अजीब लगता था। आजकल, मैं इसे बर्दाश्त कर सकता हूँ। मैं शर्म और डर से काफी हद तक आज़ाद हो गया हूँ। मैं धार्मिक या समझदार नहीं हूँ, मैं सब कुछ ट्राई एंड एरर से सीख रहा हूँ।

২৮৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

दोपहर में, मैंने सबको धन्यवाद दिया और आशीर्वाद दिया। अगर मैं ज़्यादा देर ऐसे ही रहा, तो कुबड़ा हो जाऊंगा। कैलाश मुझे बुला रहा था, इसलिए बैठना समय की बर्बादी थी। मैंने बार-बार भगवान बुद्ध से उन गांव वालों के लिए प्रार्थना की जिन्होंने मुझे प्यार और देखभाल से नई ज़िंदगी दी। आपकी कृपा उनके सीधे-सादे मन पर बनी रहे। मैं हैरान रह गया जब मैं यातुंग जैसे बड़े शहर, त्रादुम में गया। यहां का बाज़ार बिल्कुल वैसा ही लग रहा था जैसा बॉर्डर पर खुला बाज़ार होता है जब मैं हासीमारा के रास्ते भूटान जाता था। इस बाज़ार में ज़्यादातर जगह टट्टू, भेड़ और याक ने घेर रखी थी। इसे पहाड़ी जानवरों का मेला कहा जा सकता है। ब्रह्मपुत्र के ठीक उस पार, मैंने चीनी सेना के कैंपों की एक लाइन देखी। दो नावें फेरी का काम कर रही थीं। कुछ मिनट चलने के बाद, मुझे नदी के किनारे एक बहुत बड़ी गुफा दिखाई दी। सड़क गुफा की ओर जाती है, इसलिए उससे बचने का कोई रास्ता नहीं है। लेकिन मेरा गुफा में जाने का कोई मन नहीं है। जब मैं सोच ही रहा था कि क्या करूँ, तो बाज़ार से गुफा की ओर जाते समय मेरी ही उम्र के कुछ जवान लामा मेरे पीछे आ गए। मैं उनसे बच नहीं सका। यहाँ के रिवाज के अनुसार, रास्ते में हर तीर्थयात्री को गुफा के बड़े लामा को प्रणाम करना होता है। अगर वे ऐसा नहीं करते, तो उनकी बेइज्जती होती है। जब वे मुझे देखते हैं, तो गुफा में जाने से बचने का कोई

रास्ता नहीं होता। सड़क के दोनों ओर मठों की लाइनें हैं। उनमें से एक मुख्य मंदिर है। गुंबद पर सोने के पानी से रंग किया गया है, और यह निश्चित रूप से दूर से ही दिखाई देगा। मुझे लगता है कि मैंने इसे नहीं देखा क्योंकि मैं रात में गुफा में गया था।

मैंने मेन मंदिर या जोखांग चैत्य को छुआ और उसकी परिक्रमा करने लगा। परिक्रमा करने के बाद, मैं अंदर गया। मेरे सामने मंजुश्री की एक बहुत बड़ी मूर्ति दिख रही थी। जैसे ही मैं वहाँ पहुँचा, मैंने दूर कुछ लामाओं को पढ़ते हुए देखा। मैंने उन्हें नज़रअंदाज़ किया और मंदिर की कलाकृति देखने लगा। एक लामा मेरे बगल में खड़ा था और उसने बहुत प्यार से पूछा, "आप कहाँ से हैं?" मैंने उसे इशारा किया कि मैं चुप रहने की भाषा नहीं बोलता। वह मेरे आगे-आगे चला, और मुझे अपने पीछे आने को कहा। दो घरों के बाद, वह मुझे एक दो-मंज़िला लकड़ी के घर में ले गया और फिर मेरे कान में फुसफुसाया, "हमारे आदरणीय गेशे अभी यहाँ हैं, आओ और उनसे मिलो। वह तुम्हें आशीर्वाद देंगे।"

मैंने मन ही मन भगवान को याद किया। अगर मैं चुप रहने की कसम भी खा लूं, तो भी किसी गेशे या मठाधीश के सामने बोलने में कोई रुकावट नहीं है, और असल में, इससे पुण्य मिलता है। जैसे ही मैं कमरे में घुसा, मुझे बहुत धीमी आवाज़ में मंत्र पढ़ने की आवाज़ सुनाई दी। कमरे के कोने में एक छोटी सी खिड़की के पास एक लामा बैठा था, और उसने मुझे बैठने का इशारा किया। ऐसा लगा कि वह दूसरों को सिखा रहा है। वे धीमी आवाज़ में मंत्र पढ़ते हुए बीच-बीच में रुक जाते थे।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৮৫

और गेशे उन्हें कुछ शब्दों में समझा रहे थे। उन शब्दों में, मैंने सिर्फ़ 'कलाचक' शब्द बार-बार सुना। वे शब्द सच में समझ में नहीं आ रहे थे। थोड़ी देर बाद, लेसन खत्म होने पर, लामा चले गए, सिर्फ़ गेशे रह गए। उन्होंने मुझसे पूछा - तुम कौन हो, कहाँ से आए हो?

उस परम आदरणीय मठाधीश गेशे के सामने झूठ बोलना पाप है। शायद कैलाश के दरवाज़े पर आकर मुझे फिर से वही पाप करना पड़े। उनके सवाल का जवाब दिए बिना, मैंने उन्हें प्रणाम किया और फिर उठकर बैठ गया। सौम्यदर्शन ने मेरे सिर पर हाथ रखा और आशीर्वाद देते हुए फिर पूछा, "आप कहाँ से हैं, कौन हैं?"

मैंने बहुत विनम्र आवाज़ में कहा, "मैं एक तीर्थयात्री हूँ। मैं नेपाली लामाओं के एक ग्रुप के साथ गंगटोक से ल्हासा आया था। वहाँ से, मैं उनके साथ से चला गया और सिगत्से से होते हुए दिराफुक गुफा तक गया।"

मेरी बात सुनकर उसने थोड़ा हैरान होने का नाटक किया, फिर थोड़ी डांटते हुए कहा, "मुझे लगता है तुममें हिम्मत है। तुमने इतना बड़ा रिस्क लेकर अच्छा नहीं किया।"

उन्होंने जो कहा, उसे सुनकर मैं काफी हैरान रह गया और मेरे मुंह से कुछ भी नहीं निकला।

नहीं

कुछ देर चुप रहने के बाद उसने पूछा, "तुम्हारा घर कहाँ है?"

इस सवाल की वजह से मैं बेचैन हो रहा था, क्योंकि सभी भारतीयों को तिब्बत में जाने की इजाज़त नहीं है, और मैं दिन गिन रहा था कि मुझे ट्रैडम में चीनी कैंप कब दिखेगा। मैं थोड़ी देर चुप रहा, लेकिन गेशे मेरे जवाब का इंतज़ार कर रहे थे। थोड़ी देर और चुप रहने के बाद मैंने कहा, "मेरे गुरुजी नेपाली हैं, वे इस ग्रुप के भी गुरु हैं, मैं उनका सामान ले जाने आया हूँ।"

मुझसे कोई सीधा जवाब न मिलने पर, गेशे मेरी ओर मुड़े और सवाल पूछा, "आप भारतीय हैं, है ना?"

हाँ। मेरे दिल में एक टीस सी महसूस हुई - लेकिन मैंने शांति से जवाब दिया - "हाँ, सर।"

-आपको देखकर मुझे एहसास हुआ कि मैं भी कभी-कभी इंडिया जाता हूं, लेकिन आजकल कई वजहों से नहीं जा पाता।

इस बार हिज़ एक्सेलेंसी गेशे मुझसे टूटी-फूटी हिंदी में बात करने लगे। उनकी ईमानदारी देखकर मैं हैरान रह गया। गंभीर और शाही गेशे अचानक खुश हो गए। उन्होंने मुझसे पूछा, "क्या आपके पास दिराफुक गुफा जाने का परमिट है?"

-अज्ञानी हो, है ना? मुझे इस देश की भाषा नहीं आती, और वैसे भी, मैं जितना हो सके चुप रहना चाहता हूँ, इसलिए मेरे पास कोई डॉक्यूमेंट नहीं है।

২৮৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

जब उसने मेरी बात सुनी तो उसने ऐसा दिखाया जैसे उसे कोई बड़ी प्रॉब्लम हो और कहा, "मैं समझ गया! आप कब तक यहाँ रहना चाहते हैं?"

-मैं कल सुबह फिर से अपनी यात्रा शुरू करूँगा, बस एक रात। मैं थोड़ी देर के लिए रुका और फिर, गेशे से कोई जवाब न मिलने पर, मैंने उनसे इसे आसान बनाने के लिए कहा - आपको परेशान करने के लिए मैं माफ़ी चाहता हूँ।

-ठीक है. उसने गंभीर स्वर में उत्तर दिया.

मैंने फिर पूछा - क्या आप मुझे बता सकते हैं कि यहां से मानसरोवर और कैलाशनाथ तक कितना समय है?

-इसमें लगभग आठ से दस दिन लगेंगे।

-क्या रास्ता बहुत कठिन है?

- बिल्कुल।

-क्या आप मुझे इस बारे में कुछ सलाह दे सकते हैं?

गेशे एक पल के लिए रुके, फिर बोले, "ट्रेडम, यानी यह शहर कैलाश के रास्ते में आखिरी बड़ा शहर है। यहां से आप डेढ़-दो दिन में गियाबुनक पहुंचेंगे, और अगले दिन सैमसांग। गियाबुनक और सैमसांग दोनों आम गांव हैं, फिर आप थोकचेन पहुंचेंगे। थोन खानाबदोशों का ट्रेडिंग एरिया है। वहां से हर साल सर्दियों में खानाबदोश ग्रुप में पत्थर बेचने इंडिया जाते हैं। वहां एक गुफा है, रात रुकने में कोई दिक्कत

नहीं होगी, अगर ज़रूरत हो तो आप मुझे कॉल कर सकते हैं। वहां आपको ऊनी कपड़े बहुत सस्ते में मिल जाएंगे।" यह कहकर गेशे अचानक रुक गए। फिर, मुझसे बिना कुछ कहे, वे घर से चले गए। थोड़ी देर बाद, वे लौटे और मुझे कुछ छोटे-मोटे पैसे दिए और कहा, "लो, ये रास्ते में काम आएंगे।"

मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के तोहफ़ा स्वीकार कर लिया। उन्होंने मुझे कुछ और काम की सलाह दी और बताया कि त्रादुम के बाद मानस और कैलाश तक कोई चीनी कैंप नहीं है। यह मेरे लिए सबसे बड़ी खुशी की खबर थी, यह मेरे लिए सबसे बड़ी रुकावट थी। गेशे लामा के घर से निकलने से पहले, मैंने एक और रिक्वेस्ट की-

-कल रात मैंने ट्रैडम के एंट्रेंस पर मंदिर में रात बिताई। रात में कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिनका मुझे कोई कारण नहीं मिल रहा है। मैं आपको घटना बताता हूँ। क्या आप प्लीज़ सुनेंगे?

मेरी बात सुनकर वह हैरान रह गया और बोला, "बताओ क्या? क्या तुमने रात वहीं बिताई?"

हां हां।

- घटना की डिटेल्स बताने का कोई मतलब नहीं है। मुझे वहां की कई कहानियां पता हैं। वह गुफा अब खाली हो चुकी है। वहां कई श्रापित आत्माएं भटकती हैं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৮৭

मैं कुछ और सवाल पूछने वाला था लेकिन वह अचानक बिस्तर से उठ गया, ऐसा लगा जैसे वह इस बारे में कुछ सुनना ही नहीं चाहता था। मैंने सोचा कि अगर हम यह अजीब बात न उठाते तो अच्छा होता, लेकिन न पूछने का क्या मतलब है, मौनी बाबा के बिना पूछे सवालों का जवाब कौन देगा?

गेशे ने बरामदे से दो जवान लामाओं को बुलाया और मेरा बोझ उन पर छोड़ दिया। जैसे ही मैंने फिर से उनके सामने माथा टेका, उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया - मंजुश्री तुम्हें आशीर्वाद दें, वे तुम्हारे माता, पिता, भाई और दोस्त हैं। वे सभी बुद्धों और ज्ञानी लोगों के मालिक हैं, मंजुश्री की कृपा के बिना उस रोशनी को छूना नामुमकिन है - उनका ध्यान करो, उनकी कृपा पाकर इंसान निर्वाण पाता है। तुम्हारी यात्रा सफल हो।

मुझे युवा लामाओं के घर में जगह मिल गई। मुझे दूसरी मंज़िल पर एक लगभग अंधेरे कमरे में दो और लामाओं के साथ ठहराया गया। दो बक्से, दो छोटे कंबल वाले बिस्तर, चार बड़ी, हाथ से लिखी लकड़ी की किताबें, कुछ साधुओं के कपड़े, दो एल्युमिनियम की प्लेटें और एक गिलास। कमरे में और कुछ नहीं था। इस कड़ाके की सर्दी में भी, साधु लामाओं को ज़्यादा कुछ नहीं दिया जाता, यह ज़िंदगी सच में बहुत मुश्किल है। इस आध्यात्मिक रास्ते पर आगे बढ़ने के लिए किसी तरह शरीर को बचाना और मन को कंट्रोल करना होता है। जो आखिर तक ज़िंदा रहते हैं, वही निर्वाण पा पाते हैं। किसी तरह इस स्कूल वाले शरीर को ज़िंदा रखना होता है - उस छिपे हुए मकसद और लक्ष्य वाले छोटे शरीर के साथ। अगले दिन, मठ का बिगुल बजने से पहले, मैं मठ से निकल गया - मकसद खत्म हो गया था। सिर्फ़ आठ या दस दिन बचे थे, और मैं दिल में दोगुने जोश के साथ चलने लगा।

बहुत मुश्किल है

चीनी सैनिकों के टेंट और मूवमेंट अब त्सांगपो के पार, यानी नदी के दक्षिण में हैं। वहां से हिमालय पर्वत श्रृंखला शुरू होती है। इसलिए उन्हें अब इस जगह से डर नहीं लगता। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि रास्ता बिल्कुल आसान है। गंगटोक से रास्ते में मुझे कई उतार-चढ़ाव और कई मुश्किलों से गुज़रना पड़ा है, लेकिन इसके बावजूद मेरी मानसिक शक्ति उतनी कम नहीं हुई है। यहां भी मेरी मानसिक शक्ति पक्की है, लेकिन मेरी शारीरिक शक्ति दिन-ब-दिन कम होती जा रही है। भारत से इस महान तीर्थ यात्रा पर आने वाले सभी लोग अमारा और पहाड़ी गढ़वाल से होकर आते हैं। भारत से कोई भी शिगात्से से होकर मानसे नहीं आता है। मैं जिस रास्ते पर चल रहा हूं वह तिब्बत का अंदरूनी रास्ता है। ल्हासा या राजधानी से संपर्क का रास्ता।

ग्यात्से, शिगात्से और ल्हासा वो इलाके हैं जहाँ तिब्बत की 80 परसेंट आबादी रहती है। तिब्बत का यह इलाका सच में एक रेगिस्तान है। यहाँ लगभग कोई नहीं रहता। अब इसे गर्मी कौन कह सकता है? यहाँ का मौसम लगभग ज़ीरो डिग्री सेल्सियस से नीचे है और बर्फ़ गिर रही है। आस-पास कोई बड़े पहाड़ नहीं हैं - यह एक घाटी जैसा है। मेरे एक तरफ़ त्सांगपो और उसके रेतीले और कंकड़ वाले किनारे हैं और दूसरी तरफ़ पत्थरों से भरा मैदान है। कहने की ज़रूरत नहीं है, सड़क कच्ची है, नदी के दक्षिण में हिमालय के बड़े-बड़े पहाड़ हैं और उत्तर में धूल भरे कुलुन पहाड़ हैं। मैं अब चांग-तांग के ऊबड़-खाबड़ रेगिस्तान से गुज़र रहा हूँ। मैंने यहाँ-वहाँ एक-दो खानाबदोशों के टेंट देखे हैं, लेकिन मेरा वहाँ जाने का बिल्कुल मन नहीं है। खानाबदोश लोग मुझे देखते ही पैसे के लिए भिखारियों की तरह भागते हैं। एक बार जब वे नज़र में आ जाते हैं, तो मुझे बचाना मुश्किल होता है।

अपनी छोटी सी ज़िंदगी में मैंने कई दुर्गम रास्ते देखे हैं। दुर्गम से मेरा मतलब है चट्टान जैसे खड़े पहाड़, जंगली जानवरों से भरे जंगल, या जब तूफानी पानी में चलना मुश्किल हो। यहाँ बाघ या भालू का डर नहीं है, लेकिन कड़ाके की ठंड में मेरा शरीर दिन-रात काँपता रहता है। सड़क पर चाय की दुकानों की कोई महक नहीं है। मैं रात-दर-रात चला हूँ, जब दिन में सूरज सिर के ऊपर चढ़ता है, तो सड़क के किनारे कंबल बिछाकर लेट जाता हूँ - इस तरह, मैं दिन में सोता हूँ और रात में चलता हूँ। पिछले दो दिन और रातों से मेरे पेट में कुछ भी गर्म नहीं गया है। मैं सांगपो के पानी में मक्का, आटा और सूखे जौ मिलाकर अपनी भूख मिटा रहा हूँ।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৮৯

मैं हमेशा की चुप्पी तोड़ने के लिए मंत्र और बीज मंत्र पढ़ रहा हूँ, विचारों से बात कर रहा हूँ। और अपने विचारों को दूर भगाने के लिए गीत गा रहा हूँ। अगर मैं इसकी तुलना अपनी स्वस्थ अवस्था से करूँ, तो यह मेरे मस्तिष्क के विकृत होने की निशानी लगती है। मेरा एक ही प्रण है, मुझे आगे बढ़ना है। कभी-कभी मैं रुका हूँ, पीछे मुड़कर देखा है और सोचा है - आगे जाकर क्या होगा - मुझे क्या मिलेगा - इतनी मुश्किल से आगे बढ़ने का क्या फायदा, मेरे जैसे लाखों लोग पीछे हैं। वे कहाँ आगे नहीं बढ़ रहे हैं, तो क्या उनकी तरक्की नाकाम हो गई है? एक-दो बार मुझे लगा है कि मैं बहुत दूर हूँ! चलो वापस चलते हैं, इस बार ज़्यादा समय नहीं हुआ। लेकिन क्या वापस जाना इतना आसान है? पीछे जाना आगे बढ़ने से ज़्यादा मुश्किल है। इस स्थिति में, मैं आगे बढ़ने के रास्ते पर अटक गया हूँ।

दिमागी ताकत और शरीर की थकान का मेल मुझे हर पल कमज़ोर कर रहा है। संत की सलाह, लामाओं की हिम्मत और मेरा जोश, सब इस हालत में सिर्फ़ बातें लगती हैं। मैं पुण्य कमाकर क्या कर सकता हूँ? पुण्य कमाना, स्वर्ग में रहना और कैलाश देखना, ये सब तो बस एक बड़ी दुनिया है। साधु-संन्यासी, दुनियावी कपड़े और त्याग, ये सब जीने का एक और ज़रिया लगते हैं। क्या सच में लोगों में कोई फ़र्क है? किसी के माथे पर चाक से क्या लिखा है - वो समझदार और नासमझ। गुज़ारा करने के लिए कोई मेवा बेचता है, कोई भीख माँगता है, कोई अपने बच्चों को पढ़ाता है, तो कोई धार्मिक कहानियाँ सुनाकर भक्तों की जेबें खाली करता है। ये सब तो बस ज़िंदगी चलाने का ज़रिया है। तो धर्म के लिए आगे बढ़ने का क्या मतलब है? सीधे शब्दों में कहूँ तो, मैं थक गया हूँ। मेरा शरीर सूखकर छोटा हो गया है। खाने-पीने की कमी से मैं कमज़ोर हो गया हूँ, ठंड में मेरे होंठ और गाल फट गए हैं और फट गए हैं। अब आगे बढ़ने में बहुत रुकावटें हैं। ठंडी हवा, अकेलापन, हेड गूज़ के लिए जगह और खाने की कमी, उसे बार-बार छोटी नदियाँ पार करने की दिक्कत होती है। लगभग हर दिन मुझे सांगपो में दूसरी नदियों का संगम मिलता है, इसे पार करने के लिए मुझे नदी पर चढ़ना पड़ता है। यह तभी पार करना मुमकिन है जहाँ यह उत्तर की ओर संकरी हो जाती है या पानी की गहराई कम हो जाती है। कभी-कभी, बेशक, मुझे मान्धाता काल का कोई टूटा हुआ पुल मिल जाता है, लेकिन जब भी मैं उस पुल पर चलता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है कि मैं पूरी तरह से नीचे गिर जाऊँगा।

इतना सब होने के बाद भी मैं आगे बढ़ता रहा, लेकिन अब अचानक मेरे मन को गुस्सा आ रहा था। वह मेरे अंदर के मन के साथ चलने से मना कर रहा था। ल्हासा छोड़ने के बाद मुझे खांसी आ रही थी। वह खांसी अब मेरे सीने पर और भी ज़ोर से दबाव डाल रही थी। इस मनःस्थिति में, मैं सोचता रहा कि अगर चीनी मुझे पकड़ लें, तो बहुत अच्छा होगा, कम से कम मेरे

पास रहने की जगह तो होगी। यह ठंडी हवा सच में बर्दाश्त से बाहर है। मेरे आस-पास अभी-अभी छोटी-छोटी घास उगनी शुरू हुई है - यहाँ आग जलाने के लिए घास का एक सूखा तिनका भी नहीं मिल रहा है। शरीर को चलाने वाला मन अब टूट चुका है। मुझे अब घर से भागकर आने की खुशी अपनी हड्डियों में महसूस हो रही है। मैं अब उस खेल के नशे में हूँ जो मैंने हज़ारों मील दूर खेला था, कपड़े बदलकर नया रूप धारण किया था।

২৯০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मुझे उसका नतीजा मिल रहा है। मैं लगभग पूरी तरह से निराशा की हालत में आ गया हूँ, मैं चौबीस घंटे पहले भी अपनी हालत के बारे में सोच नहीं सकता था - जब मैं खड़ा होता हूँ तो ठंडी हवा चलती है, तो इसके बावजूद मुझे चलना पड़ रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे चलने का मज़ा अचानक खत्म हो गया हो। यह ज़िंदगी तिब्बत की इस दूर सड़क पर खत्म हो सकती है।

शाम हो गई थी। दूर हिमालय को देखते हुए, मैं अपने उस देश के बारे में सोचने लगा जिसे मैं बहुत दूर छोड़ आया था। ऐसा लग रहा था जैसे नदी के किनारे से धुआँ उठ रहा हो। मैंने अपनी आँखें ज़ोर से रगड़ीं - नहीं, इसे गलत देखने की कोई वजह नहीं थी, धुआँ नदी के किनारे से कुंडली बनाकर आसमान की ओर उठ रहा था। लेकिन अब सोचने का समय नहीं था, शायद यह कोई चीनी कैंप था, वे लोग थे। एक पल में, उस धुएँ की दूरी कम हो गई। जैसे ही मैं पास पहुँचा, मैंने देखा कि कुछ तिब्बती नदी के किनारे बैठे आग जला रहे थे। आग देखकर मुझे लगा जैसे मुझे नई ज़िंदगी मिल गई हो। वहाँ, एक आदमी ने मुझे देखा और एक पुरानी केतली में गर्म पानी डाल दिया। मौनी बाबा ने उनसे बात की और अपनी पुरानी हालत में लौट

आए। मैंने उन सबको चाय पिलाने के लिए पैसे दिए। दिन के आखिर में, फेरी टर्मिनल का मालिक ऐसे बदमाश, एक लामा को पाकर खुशी से हँसा, और मैं भी उसकी खुशी में शामिल हो गया। मुझे मानना पड़ेगा कि उस दिन के उस मौनी बाबा को उस नाविक, यानी चाय की दुकान के मालिक ने ही ज़िंदगी दी थी।

मैंने उनसे सुना कि थोकचेन यहाँ से सिर्फ़ एक दिन की दूरी पर है। यह सैमसांग गाँव है। मुझे लगता है कि मैं रात के अंधेरे में गियाबुनक गाँव से भटक गया था। उस रात, उनकी अच्छी मेहमाननवाज़ी ने मुझे फिर से ज़िंदा कर दिया।

317

महातीर्थ के द्वार पर

आखिरकार, हम महातीर्थ के गेट पर पहुँचे। यह तिब्बती खानाबदोशों की मीटिंग की जगह है, थोकचेन। थोकचेन चांग-लैंग रेगिस्तान में एक अनोखा शहर है। हर साल, तिब्बती खानाबदोश एक खास दिन यहाँ आते हैं। उनके ऊनी कपड़े, पुराने ताबीज, ऐतिहासिक टंका, मूर्तियाँ, और अलग-अलग पत्थरों और मैन्युस्क्रिप्ट्स का एक बड़ा कलेक्शन सड़क के दोनों ओर रखा होता है। अमीर खानाबदोश और व्यापारी उन चीज़ों को बहुत सस्ते में खरीदते हैं और उन्हें भारत के अलग-अलग बाज़ारों में ले जाते हैं। हम ये सामान नेपाल, भारत, सिक्किम और भूटान के बॉर्डर मार्केट में देखते हैं।

यहां से फिर पहाड़ शुरू होते हैं, यानी सड़क अब उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ती है, जो हिमालय पर्वत श्रृंखला की सीमा से लगती है। त्सांगपो

अब गायब हो गई है और एक छोटी पहाड़ी धारा में बदल गई है। हालांकि, इसका बहाव और ताकत अब और बेचैन है। हर पल यह अनगिनत चट्टानों से टकरा रही है, जिससे सफेद झाग की रहस्यमयी और डरावनी मूर्तियां बन रही हैं। अब इस नदी को पार करने में कोई मुश्किल नहीं है। थोड़ी सी कोशिश से, कमर तक पानी में घुसकर और बड़ी चट्टानों पर चलकर इसे आसानी से पार किया जा सकता है। अब, मैं इसे नदी कहने के बजाय, त्सांगपो को एक पहाड़ी धारा कहूंगा। मैं इस त्सांगपो, यानी गुवाहाटी के पास ब्रह्मपुत्र के बारे में सोच भी नहीं सकता। इस क्षेत्र में, त्सांगपो कई तरह से बंटी हुई है, यानी, सही ढंग से लिखने के लिए, यह कहना होगा कि तिब्बत की मुख्य नदी त्सांगपो ने इस क्षेत्र में सैकड़ों छोटी धाराएं बनाई हैं। ये सभी छोटी धाराएं लगभग स्वतंत्र रूप से बहती हैं। थोकचेन से हिमालय का एक अद्भुत दृश्य आंखों के सामने खुल जाता है। ट्रैडम से मैं बस आगे देख रहा था, इसलिए मुझे पता ही नहीं चला कि सड़क धीरे-धीरे ऊपर चढ़ रही है। शायद इसीलिए मैं थक गया था। जब सड़क ऊपर चढ़ती है, तो आपको आराम करना होता है और चढ़ाई करनी होती है, इससे आपके शरीर की ताकत बनी रहती है और रास्ता भी आसान होता है। जब मैं साधु बाबा के साथ जा रहा था, तो मुझे इन बातों के बारे में सोचने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वही थे जो तीर्थयात्रियों की रफ़्तार को कंट्रोल करते थे। यही मेरी बड़ी गलती थी। अगर आप दुनिया के इस अनजान कोने में ध्यान से गाड़ी नहीं चलाते हैं, तो आपको देखने वाला कोई नहीं होता, मैंने मुश्किल से सीखा - मैं यह गलती दोबारा नहीं करूँगा। मुझे पता ही नहीं चला कि मैं कब इतना ऊपर चढ़ गया था। अब मुझे समझ आया कि सांगपो ने अचानक झरने का रूप क्यों ले लिया। मैं उन सभी झरनों के नाम जानना चाहता हूँ जो सांगपो ने बनाए हैं।

২৯২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं नहीं कर सका। त्सांगपो का मुख्य झरना मानस सरोवर से आता है और इसे सामो-त्सांगपो कहा जाता है।

शमसांग के पास मैंने देखा कि त्सांगपो साफ़ तौर पर दो हिस्सों में बँट गई थी। उसका दूसरा हिस्सा हिमालय की पिघलती बर्फ़ को अपने साथ ले जा रहा था। चूँकि त्सांगपो इस तरफ़ था, इसलिए मैंने दूसरी ब्रांच के बारे में बिल्कुल नहीं सोचा। नेपाल-तिब्बत बॉर्डर त्सांगपो नदी के दूसरी तरफ़ है। मिलिट्री के डर से वहाँ जाने का सवाल ही नहीं उठता। बाद में मुझे पता चला कि वह तरफ़ त्सांगपो, यानी ब्रह्मपुत्र का हिस्टोरिकल और ज्योग्राफ़िकल सोर्स था। यहीं पर मात्सांग त्सांगपो से आंग्सी-युंगडुक, तमचक-खंबाब नाम की छोटी पहाड़ी नदियाँ बनती हैं। दक्षिण में मात्सांग त्सांगपो और उत्तर में मरियम चू शमसांग के प्रयाग में मिलती हैं। शमसांग प्रयाग तिब्बती तीर्थयात्रियों के लिए प्रयाग की मुख्य तीर्थ जगहों में से एक है। सही गाइडेंस न मिलने की वजह से मैं प्रयाग में उस पवित्र जगह को पहचान नहीं पाया। सांगपो को लगता है कि जिस उत्तरी ब्रांच को मैं फॉलो कर रहा हूं, वह असल में मरियम चू नदी है।

थोकचेन से हम जिस नदी के किनारे चल रहे थे, उसका नाम सामो था, जिसका मतलब है मरियम चू। यह नदी अब मरियम चू का सोर्स है। सामो सीधे मानस सरोवर से आती है। ये नाम सच में एक भूलभुलैया जैसे हैं।

थोकचेन की ऊंचाई करीब पंद्रह हज़ार सात सौ (15,700) फीट है। थोकचेन का लोकल नाम तसम है। यहां कुदरत ज़िंदा है। इसने झरनों में जान डाल दी है और आस-पास की पहाड़ी चोटियों के बीच अपने अनगिनत रूप बिखेर दिए हैं। बर्फ़ से ढकी अनगिनत पहाड़ी चोटियों में से दाईं ओर मां

जैसी नंदा देवी और बाईं ओर दूर अन्नपूर्णा दिखती हैं। ये दोनों चोटियां अनंत काल से कैलाश को एकटक देखती आ रही हैं। यह सोचकर कि महान तीर्थ यहां से ज़्यादा दूर नहीं है, मेरा दिल बार-बार नाचने लगा। हिमालय की खूबसूरती ने मेरी सारी थकान दूर कर दी और मुझे प्रेरणा से जगा दिया। खूबसूरती में ही जीवन है, और उस जीवन के स्पर्श में अमृत है, मन किया उसे पी लूं।

थोकचेन गांव ऊंचे हिमालय में बसे एक छोटे से गांव जैसा है। यह लकड़ी के खराब घरों और लकड़ी और पत्थर से बने सराय से भरा है। सिर्फ़ दो पैसे में मुझे गर्म पानी, बिस्तर के लिए एक गद्दा और दो आने में पूरी रात जलने वाली आग मिल गई। मेरे पास लगभग चार टका हैं, जो मेरी ज़रूरत से कहीं ज़्यादा हैं। अपने घर के दरवाज़े से मैं पहाड़ों की बेइंतहा खूबसूरती देख सकता हूँ। मैं टाइगर हिल से हिमालय की खूबसूरती देखकर हैरान था, और अब मैं हैरान हूँ।

यह पहाड़ यात्रियों के लिए एक आकर्षक चीज़ है, इसकी रहस्यमयी सुंदरता दूर से ही कैद हो जाती है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৯৩

और जब वह पास आता है, तो सूखे पत्थर में बदल जाता है। फिर भी, लोग अनादि काल से उसके पीछे भाग रहे हैं। किस उम्मीद में?

मैंने बहुत सारे पहाड़ देखे हैं - और अब मैं पहाड़ों को अपना रोज़ का साथी बनाकर चलता हूँ। मेरे इस अकेले सफ़र में पहाड़ मेरे गवाह और

भगवान हैं। पहाड़ मुझे रास्ता दिखा रहे हैं और मुझे किसी अनजान, चमत्कारी सपनों की दुनिया की ओर खींच रहे हैं।

तिब्बत के इस हिस्से में, पहाड़ों की चोटियाँ लाइनों में ऊँची खड़ी हैं, जो धरती पर जीवन के देवता बन गई हैं। वे आसमान से जीवन खींचती हैं, और उस जीवन ने, मंदाकिनी की तरह, हज़ारों जिंदगियाँ बनाई हैं, चुपचाप अपना हमेशा का काम कर रही हैं। जो लोग पहाड़ों पर चढ़ते हैं, झंडे फहराते हैं, और उनके नाम खोजकर्ताओं के नाम पर रखते हैं, वे पहाड़ों को ऐसी चट्टानें जानते हैं जिन्हें पार नहीं किया जा सकता। वे इस महानता के सामने इंसानों के छोटेपन के विरोध में घमंड का तूफ़ान उठाते हैं। वे पहाड़ों को बड़ी दीवारें, इंसानों के छोटे दिमाग का दिखावा ही मानते हैं।

जो लोग पहाड़ को जीवन के देवता के रूप में जानते हैं, वे महान हैं। पहाड़ ब्रह्मांड के पिता की पर्सनैलिटी का रूप है। उस मज़बूत और संयमित पर्सनैलिटी के अंदर, प्यार और स्नेह की कभी न खत्म होने वाली धारा धरती पर निडरता और दया का आशीर्वाद ला रही है। अगर हम पहाड़ को नहीं जानते, तो हमें डर लगता है, और अगर हम उसे जान लेते हैं, तो हम उसे पा लेते हैं। जब हम उसे पा लेते हैं, तो तुरंत खुशी का एक आनंद आता है। मेरे अंदर की छोटी सी आत्मा उस खुशी में नाचती है और एक महान आत्मा बन जाती है। लेकिन वह पल पलक झपकते ही गायब हो जाता है। फिर हम उसे पकड़ने की कोशिश करते हैं। पहाड़ की एक आत्मा होती है। इसे सिर्फ़ एक यात्री और तीर्थयात्री ही मानेगा। दिन के दौरान इसकी पर्सनैलिटी भी बहुत बदलती है। इस बदलाव को जानने के लिए, पहाड़ को हर दिन देखना ज़रूरी है। सूरज उगने के साथ, पहाड़ जागता है, फिर सूरज भगवान की चाल के साथ पहाड़ की पर्सनैलिटी रिदम में बदलती है। सुबह का नज़ारा बहुत अजीब होता है। हर पल के रंग के साथ, ऐसा लगता है कि इसका रूप बदल रहा है। इस बदलाव को देखने के लिए किसी को योगी या महान

व्यक्ति होने की ज़रूरत नहीं है, बस धैर्य और दूरदर्शिता ही काफ़ी है। दोपहर के समय, पहाड़ की पूरी पर्सनैलिटी सामने आती है। और दोपहर के समय, इसका बदलता हुआ ध्यान-गंभीर रूप दिखाई देता है।

बर्फ़ से ढकी पहाड़ की चोटियाँ बेमिसाल हैं। थोड़ी सी कोशिश से ऐसा लगता है जैसे आप उनसे बात कर सकते हैं। ध्यान करने से, उनके रूप को याद करके उनकी आत्माओं से बात की जा सकती है। इसके लिए बस भक्ति और समर्पण की इच्छा चाहिए। हर चोटी अलग-अलग देवताओं की मूर्ति की तरह है। दुनिया के इस तीर्थस्थल पर, शांति का एक अनंत पुल इंसान की आत्मा को उनसे मिलाने के लिए खड़ा है। मेरी किस्मत बहुत अच्छी है। मुझे तसम जाने वाली सड़क के किनारे एक घर में रहने को मिला। कुछ दिनों से नदी का बहाव कम था, और अब इसे पार करना बहुत आसान है। और यहाँ से, मुझे सीधे त्सोमाफाम जाने के लिए एक सही साथी मिल गया है। इन तीन वजहों से, मेरे जैसे सीधे-सादे तीर्थयात्री की किस्मत बहुत अच्छी है।

২৯৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

सुबह से ही डोंगलदादा मुझे ये बातें बार-बार समझाने लगे. डोंगलदादा इस घर के मालिक हैं. चालीस-पचास साल के एक सज्जन. तिब्बती लोग आमतौर पर काफी लंबे-चौड़े होते हैं, पर इन सज्जन का चेहरा किसी सख्त शेरपा का है. उनके आगे के दो दांत नहीं हैं. उनके भीतर से हंसी का फव्वारा बह रहा है. वे जितना बोलते हैं, उससे ज्यादा हंसते हैं. ऐसा लगता है कि दुनिया की कोई भी समस्या अभी उन्हें छू भी नहीं पाई है, चेहरे पर खुशी झलक रही है. वे गर्म पानी का बेसिन लाए और मुझसे हाथ-मुंह धोने को कहा. काफी देर बाद मुझे गर्म पानी मिला और मैंने अपनी गर्दन,

चेहरा और कोहनियां धोईं. डोंगलदादा बैठ गए और मेरे सौभाग्य की प्रशंसा करने लगे, वे बार-बार एक ही बात दोहराते रहे. उनके लहजे और मुस्कान ने मेरे मन को धोकर स्वच्छ कर दिया.

मुझे थोकचेन का छोटा सा खुला बाज़ार बहुत पसंद आया। मैं इस बाज़ार की तुलना हमारे देश के बारवारी मंडप से करूँगा। यहाँ हर कोई एक-दूसरे को जानता है। वहाँ हमेशा हँसी-मज़ाक और गाना-बजाना होता रहता है।

डोंगलदादा का घर बहुत पुराना है। गर्मियों में, उनके घर को धर्मशाला में बदल दिया जाता है। तिब्बत के मैदानी इलाकों से तीर्थयात्री महान तीर्थयात्रा के लिए इसी रास्ते से आते हैं। थोकचेन के रहने वाले सभी तीर्थयात्रियों के साथ व्यस्त रहते हैं। यहाँ की सड़कें गधों से भरी रहती हैं। उन्हें तीर्थयात्रियों को अलग-अलग तरीकों से सामान पहुँचाने में मज़ा आता है। पैसे के मामले में वे कितना कमाते हैं, यह कहना मुश्किल है, लेकिन गाँव के लोग इस काम में बहुत व्यस्त रहते हैं। इस गाँव के कई लोग दांडी और परिक्रमा के लिए लोगों को काम पर रखते हैं। तिब्बती लोग उन लोगों के लिए परिक्रमा करते हैं जो कैलाश यात्रा पर परिक्रमा नहीं कर पाते हैं। उन्हें लगता है कि इसके लिए थोड़े पैसे और खाना काफी है।

यह कैलाश और मानसरोवर के रास्ते का आखिरी गांव है। इसलिए तीर्थयात्री यहां अपनी आखिरी शॉपिंग में बिज़ी हो जाते हैं। अब गर्मियों का मौसम बस शुरू ही हुआ है, इसलिए भीड़-भाड़ कम है। डोंगलदादा के मुताबिक, इन दिनों तीर्थयात्रियों की संख्या बहुत कम है। तिब्बत के बड़े शहर तमाम बदलावों से बिज़ी हैं, वहां हर कोई बिज़ी है। खुशकिस्मती से, बदलाव का झटका अभी तिब्बत के इस हिस्से में नहीं आया है। यहां के लोगों को बदलती दुनिया की कोई खबर नहीं

है। इसलिए यहां मैं आज़ाद हूं। यहां चीनी सैनिकों और सरकारी पूछताछ के टेंट नहीं हैं। यह पहला बाज़ार है जहां मैं तिब्बत में घुसने के बाद आज़ादी से घूम सकता हूं। कोई नहीं पूछता कि मैं कौन हूं या कहां से आया हूं। मेरी बस यही पहचान है कि मैं महान तीर्थ का तीर्थयात्री हूं। यहां मैं मौनी बाबा नहीं हूं।

तसम बाज़ार का एक मुख्य आकर्षण कबीराजी आयुर्वेद और

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৯৫

टोलका के दवा व्यापारी। अलग-अलग जड़ों, पत्थरों और मरे हुए जानवरों की छाल और तेल का बहुत बड़ा स्टॉक। शरीर की रक्षा के लिए जो कुछ भी ज़रूरी है, इंसान को ज़िंदा रखने के लिए जो कुछ भी ज़रूरी है, वह सब यहाँ कुछ छोटे, लगभग अंधेरे घरों में मिल सकता है। बेचने वालों को देखकर लगता है कि दुनिया में इनसे ज़्यादा गंदा कोई भिखारी नहीं है। ऐसा लगता है जैसे गंदे और काले फटे कपड़ों के ढेर पर किसी बंदर को बिठा दिया गया हो। वे घर के एक कोने में पेशाब करते हैं और दूसरे कोने में खाना बनाते हैं। खांसने और छींकने के बाद, जो गाढ़ा पदार्थ उनके मुँह में आता है, उसे वे अपने मुँह से लकड़ी की दीवारों पर फेंकते हैं। शतरंज के घर की ऐसी दयनीय हालत के बारे में सोचना भी नामुमकिन है। उन्हें गाँव में लामा के बाद दूसरा सबसे इज्जतदार पद दिया गया है। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती है, यह बाज़ार और भी अच्छा होता जाता है। यहाँ लगभग पूरे साल एक दर्जन दुकानें खुली रहती हैं। सड़कों के किनारे लगने वाले खुले बाज़ार सिर्फ़ गर्मियों में लगते हैं। खुले बाज़ार का मुख्य आकर्षण फर है। यहाँ भेड़ के ऊन से बने

कपड़ों की कई तरह की वैरायटी मिलती है। स्वेटर, टोपी, मोजे और कंबल सभी यहां उपलब्ध हैं।

मैंने शुरू में कहा था कि यह पहली बार था जब मैं किसी तिब्बती बाज़ार में आज़ादी से घूम रहा था। पकड़े जाने के डर से या हंगामे की वजह से मुझे हमेशा बाज़ारों और शहर के मेन सेंटर्स से बचना पड़ता था। थोकचेन का बाज़ार अचानक मुझे दूसरी दुनिया जैसा लगा। लामा ने मुझे कपड़ों के लिए कुछ पैसे दिए थे, इसलिए मैंने स्वेटर खरीदने के लिए दुकान में स्वेटर और टोपियाँ देखना शुरू कर दिया। यहीं पर मुझे पहली बार समझ आया कि प्योर ऊन का क्या मतलब है। मोटे हाथ से खींचे गए धागे से बने स्वेटर का काम बेमिसाल होता है। और इसमें रंगों का एहसास होता है। महंगे स्वेटर और चादरों के बीच मोती और पत्थर रखे जाते हैं। वे मुझ जैसे गरीब कस्टमर के लिए बिल्कुल भी उत्सुक नहीं थे, उन्होंने मुझे बस एक छोटा लड़का समझा और मेरे लिए कुछ नहीं किया। काफी देर मोलभाव करने के बाद, मैंने एक रुपये और तीन आने में एक स्वेटर और ग्लव्स खरीदे।

मुझे बाज़ार में दूसरी चीज़ों के दाम भी पता चले, जैसे भेड़ की खाल के एक पूरे कोट की कीमत दो टका होती है, भेड़ की खाल को चरू कहते हैं और एक चरू की कीमत सिर्फ़ नब्बे आने होती है। एक तिब्बती कंबल की कीमत लगभग बाईस टका होती है। तिब्बती लोग इस कंबल का इस्तेमाल कंबल के तौर पर करते हैं और सबसे ज़्यादा ठंड में यह उनका तन ढकने का काम करता है। वे एक सादे हल्के ऊनी कंबल को पंघी कहते हैं जिसकी कीमत सिर्फ़ बारह से तेरह आने होती है। एक लाम या जूते की कीमत सिर्फ़ दस आने होती है। फर के अलावा, यहाँ चीनी फ़र्नीचर की कई दुकानें हैं। छोटी चाय की टेबल, रंग-बिरंगे डिब्बे, कप, डिश, लैंप और तरह-तरह के बर्तन बहुत सस्ते दामों पर मिल जाते हैं।

इसी मार्केट में मैंने पहली बार देखा कि उन्हें मोल-भाव करना बिल्कुल पसंद नहीं है।

২৯৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

आसान शब्दों में कहें तो, वे मोल-भाव को बेइज्ज़ती मानते हैं। मुझे नहीं पता कि तिब्बत के दूसरे हिस्सों में भी यही नियम है या नहीं। लगभग हर दुकान पर कपड़े पर तिब्बती वॉटरकलर पेंटिंग होती हैं। इनमें से ज़्यादातर पेंटिंग मंडल और भगवान बुद्ध के अलग-अलग रूपों से भरी होती हैं। कैलाशनाथ, राक्षसताल और मानसरोवर की कई मनगढ़ंत पेंटिंग भी यहाँ देखने को मिलती हैं, जो सभी टंका के तौर पर बेची जाती हैं। खाने की चीज़ों में आटा स्टिक, सूखा मीट, चावल और दालें, मक्का, गेहूं, जौ और जौ बहुत ज़्यादा मिलते हैं। एक kg चावल दो आने का और एक kg जौ चार पैसे का मिलता है। एक सूखे भेड़ के थन की कीमत तीन आने होती है। मेरे हिसाब से, यह सच में एक सस्ता बाज़ार है।

मार्केट का अड्डा यहाँ की चाय की दुकान है। दुकान के बाहर दो लड़कियाँ लकड़ी के लंबे चम्मच में चाय में मक्खन मिला रही हैं। जब उन्होंने मुझे देखा, तो उन्होंने काम करना बंद कर दिया और इज्ज़त में अपनी जीभ बाहर निकाली। मैं मुस्कुराया और आशीर्वाद में हाथ उठाए, सिर झुकाया, और दुकान में घुस गया। दुकान के अंदर बहुत छोटी सी जगह है, बस एक लकड़ी की झोपड़ी है। कोई भी आदमी सीधा खड़ा नहीं हो सकता, आपको सिर नीचे करके बैठकर पढ़ना पड़ता है।

चाय पीने के बाद मैं दुकान से बाहर निकला और थोड़ा आगे बढ़ने पर मुझे मरियम नदी मिली, जिसे वे चू कहते हैं। अगर मैं नदी का साफ़ पानी

और दूर बर्फ़ से ढके पहाड़ों की खूबसूरती ज़िंदगी भर भी देखता रहूँ, तो भी मुझे लगा जैसे मेरी उम्मीदें कभी पूरी नहीं होंगी। मैंने मन ही मन भाग्य के देवता को याद किया और उनकी अपार दया के लिए श्रद्धा से उन्हें प्रणाम किया। यहाँ खड़े होकर मुझे अचानक घर की याद आ गई। इच्छापुर के उस गर्म मौसम में वह छोटा सा माहौल, जहाँ से मैं आया था, ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी सपनों की दुनिया में चला गया हूँ। थोड़ी देर खड़े रहने के बाद मेरे पैर ठंडे पड़ गए, तो मैं चलने को मजबूर हो गया।

घर के अंदर जाते समय मेरी मुलाकात डोंगलदादा से हुई। मुझे देखकर वह मुस्कुराए और पूछा, "क्या तुमने स्वेटर खरीदा?"

-हाँ, बहुत गर्मी है, है ना?

मैं जाऊँगा। -बिल्कुल। फिर उसने खुशखबरी सुनाई - हम कल जा रहे हैं।

मेरा सीना खुशी से उछल पड़ा। मैंने अपने मन से कहा - सब्र रखो, शांत रहो, तुम्हें महान तीर्थ के दर्शन होंगे। सुबह-सुबह डोंगलदादा की माँ ने मुझे जगाया, डोंगलदादा बगल के कमरे से बाहर आए, मुझे प्रणाम किया और अंदर आने को कहा। मैं उनके कमरे में गया और देखा कि उस कमरे में आग के पास तीन और तिब्बती बैठे थे। चूल्हे के पास गर्म थुक्का का एक बड़ा बर्तन था, गर्म शोरबे जैसा, सब एक-एक करके उसे पी रहे थे, मैं भी उनके ग्रुप में शामिल हो गया। थुक्का जौ और मीट का शोरबा होता है। डोंगलदादा को छोड़कर, मैं बाकी तीनों से पहले नहीं मिला था। रात लगभग अंधेरी हो चुकी थी; दूर आसमान में तारे अभी भी अपने पूरे वजूद के साथ जाग रहे थे। तारों से भरा चमकीला आसमान सही लग रहा था।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

২৯৭

ऐसा लग रहा था कि अगर हम अपने सिर से थोड़ा ऊपर चढ़ें तो हम उसे पकड़ सकते हैं। हम कड़ाके की ठंड और अंधेरी सड़क की दो रुकावटों को नज़रअंदाज़ करते हुए निकल पड़े।

पहले तो मुझे लगा कि जब यह सड़क महातीर्थ तक पहुँचती है, तो डोंगलदादा की क्या ज़रूरत है? लेकिन रास्ते में मुझे एहसास हुआ कि इस सड़क पर डोंगलदादा बिल्कुल ज़रूरी है। पहली रुकावट यहाँ की छोटी नदियाँ हैं - उन्हें पार करने के लिए कोई सीधा पुल नहीं है। यहाँ के ज़्यादातर पुल लोकल पत्थरों से बने हैं, जिन पर लकड़ी और रस्सियाँ लगी हैं, लगभग सभी मान्धाता काल में बने थे, पत्थरों को जमाकर रखा गया था, उनमें सीमेंट का ज़रा भी नामोनिशान नहीं है। ज़्यादातर पुल अपनी उम्र के आखिर में पहुँच चुके हैं, उन पर कदम रखने से पहले डोंगलदादा उन्हें ध्यान से देखते हैं, और कई पुलों को पार करने के बजाय पानी में उतरना पड़ता है। फिर, कई बार पानी पार करने के लिए उसके सोर्स तक चढ़ना पड़ता है। इसलिए, हमें अक्सर सड़क छोड़कर दाईं ओर जाना पड़ता है और फिर वापस सड़क पर आना पड़ता है। कई बार, जब हम छोटी नदियाँ देखते हैं, तो लगता है कि हम उन्हें पार कर सकते हैं, लेकिन असल में, यह बिल्कुल उल्टा होता है। मुझे पत्थरों के ऊपर से कदम रखने का सही अनुभव भी चाहिए। अगर हमें पत्थरों का नेचर नहीं पता, तो वे इधर-उधर लुढ़ककर हमारे साथ चालें चल सकते हैं। यह बिल्कुल भी टॉलरेंट नहीं है।

इस रास्ते पर सर्दी बर्दाश्त नहीं होती, मौसम बहुत सूखा रहता है, आसमान में एक भी बादल नहीं होता। दूर के पहाड़ बहुत पास लगते हैं,

अगर आप चलते समय अपनी सांस की लय बनाए नहीं रखेंगे, तो तुरंत आपकी सांस फूलने लगेगी। कौन कहेगा कि यह तिब्बत की मुख्य सड़कों में से एक है। सड़क पर लोगों का एक भी निशान नहीं है। आवाज़ों में हमारी बार-बार चलने वाली सांसें, कदमों की आहट और कभी-कभी पहाड़ी नदी के लुढ़कते कंकड़ों की आवाज़ें शामिल हैं। हम मुश्किल से ही एक-दूसरे से बात करते हैं। मेरे कंधों पर कंबल और छोटा पोताला धीरे-धीरे भारी होने लगे हैं। ठंड से मेरे पैर लगभग सुन्न हो गए हैं, ठंड में मेरी नाक और कानों की नोक में झुनझुनी हो रही है, ऐसा लग रहा है जैसे सैकड़ों सुइयां लगातार चुभ रही हों, और मैं इसी के बीच चलने लगा - मेरे मन में बस एक ही उम्मीद है कि कैलाश के दर्शन हों। उस ठंड में, मणि मंत्र समेत बाकी सभी मंत्र मेरे दिमाग में जम गए हैं, वे मेरे मुंह से बिल्कुल नहीं निकल रहे हैं, मेरे पैर, कान और नाक मेरे दिमाग को पकड़े हुए लग रहे हैं। यह आग की तरह जल रहा है। फिर भी मुझे चलते रहना है - हर कोई जा रहा है और मुझे उनके पीछे चलने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है।

डोंगलदादा मेरी स्थिति को समझते हुए रुके, उनका चेहरा

मुस्कान भी अब सूखी लग रही थी। उसने अपने टेढ़े-मेढ़े दांत दिखाए और मुस्कुराया, "ठीक है?"

-नहीं-सर्दी-नाक और कान जल रहे हैं। उस समय मेरे मुंह से तिब्बती भाषा निकली, और मैं अपनी मातृभाषा में बार-बार कहने लगा-सर्दी जल रही है

২১

২৯৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

ठंड बढ़ रही है... डोंगलदादा महातीर्थ के अनुभवी यात्री हैं, उनका पेशा रास्ता दिखाना है, उन्होंने मेरी स्थिति देखकर समझ लिया।

उन्होंने तुरंत अपना बैग उतारा और उसमें से कुछ लकड़ी और माचिस निकाली, फिर उसे जलाकर मुझे पकड़ा दिया। मैंने भी अपने ग्लव्स उतार दिए, अपने हाथ गर्म किए और अपनी नाक और कानों पर गर्मी लगाने लगा। थोड़ी देर बाद, मेरी ठंड कम हो गई। उन्होंने मुझे एक पत्थर जैसी चीज़ दी और कहा, "लो, इसे अपने मुँह में रखो, धीरे-धीरे चूसो, इससे तुम्हारा शरीर गर्म हो जाएगा।" "क्या यह दवा है?"

-इसका नाम थुमा है, तिब्बत में इससे बड़ी कोई दवा नहीं है। डोंगलदादा ने बड़े गर्व से जवाब दिया। उसने बाकी तीनों के लिए थुमा को थोड़ा-थोड़ा करके तोड़ा। यह काफी हद तक पत्थर के जूते जैसा दिखता था।

थोड़ा ठीक होने के बाद हम फिर से निकल पड़े। शाम को हम एक छोटी सी खाली गुफा के पास रुके, जैसा हमने उस दिन किया था। डोंगलदादा ने कहा, "हमने बहुत लंबा रास्ता तय किया है। अगर हम ऐसे ही चलते रहे, तो हम कल दोपहर तक त्सो मफाम पहुँच जाएँगे।" यह अच्छी खबर है, लेकिन मुझे अभी पूरे आराम की ज़रूरत है।

325
महातीर्थ

मुझे अंदाज़ा था कि मानस सरोवर ब्रह्मपुत्र का सोर्स है। थोकचेन के बाद से मुझे उस बात पर बार-बार शक हो रहा था। क्योंकि अचानक मैंने देखा कि नदी का बहाव उल्टी दिशा में बहने लगा है। तो, क्या मैं पागल हो गया था? लेकिन सबने मुझे बार-बार यकीन दिलाया कि मैं सही रास्ते पर हूँ। मेरी मंज़िल मानस तीर्थ और स्वर्ग का कैलाश था, इसलिए मैंने इस सवाल पर ज़्यादा ज़ोर नहीं दिया। लेकिन पिछले कुछ दिनों से वह सवाल मेरे मन में बार-बार आ रहा है।

मैं सुबह की प्रार्थना के बाद गुफा में डोंगलदादा से यह सवाल पूछ रहा था। उन्होंने मुस्कुराते हुए मेरे सवाल का आसान सा जवाब दिया। त्सांगपो तिब्बत की मुख्य नदी है। यह नदी इसी इलाके से निकलती है, और भारत में ब्रह्मपुत्र का नाम इसी से पड़ा है। इस इलाके के पहाड़ों के ग्लेशियर पिघल गए हैं और उनसे कई नदियाँ बनी हैं। उनमें से कुछ नदियाँ शमसांग नाम से मिलकर त्सांगपो नाम ले चुकी हैं। उनकी बातों से मुझे साफ समझ आया कि शमसांग के बाद अब तक मुझे जितनी भी नदियाँ मिली हैं, वे लगभग अलग-अलग नदियाँ हैं। थोकचेन की कोई भी नदी त्सांगपो में नहीं मिली है। कुछ नदियों ने मिलकर तमुलुंग त्सो, यानी तमुलुंग झील बनाई है; कुछ नदियों ने मिलकर ताग त्सांगपो बनाया है; और कुछ नदियों ने सामो त्सांगपो बनाया है। हालाँकि उनका नाम त्सांगपो है, लेकिन उनका महान नदी त्सांगपो से कोई लेना-देना नहीं है।

हम त्सांगपो के किनारे-किनारे चल रहे हैं। ताग त्सांगपो और सामो त्सांगपो दोनों ही त्सो मफाम या मानस सरोवर में पड़ते हैं। इसीलिए अब हम नदी को उल्टी दिशा में बहते हुए देख रहे हैं। हम अब नदी के बहाव के साथ चल रहे हैं - मंज़िल मानस सरोवर है। कहने की ज़रूरत नहीं है, अब हमारे चारों ओर बर्फ़ का राज है, बर्फ़ पिघल रही है और उसकी आवाज़ चारों ओर गूंज रही है। यहीं, दक्षिणी हिमालय से, ब्रह्मपुत्र

या त्सांगपो का मुख्य स्रोत शुरू होता है - दूरी लगभग सत्तर मील है। हमने सुबह-सुबह शुरुआत की - हमारा रास्ता अब आसान है। सड़क अब धीरे- धीरे नीचे उतर रही है, थोकचेन की ऊंचाई लगभग पंद्रह हज़ार सात सौ फ़ीट है। हम अब नीचे उतर रहे हैं। मानस सरोवर की ऊंचाई लगभग चौदह हज़ार नौ सौ फ़ीट है, लगभग सात सौ पचास फ़ीट नीचे।

हमारी दिमागी ताकत अब पूरी तरह से ठीक हो गई है। हमारे शरीर में अचानक ऐसा महसूस होता है जैसे उसमें हाथी जैसी ताकत आ गई हो। मन की कमजोरी, शरीर की थकान, सब कुछ अचानक गायब हो गया है।

৩০০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मेरा शरीर इतना हल्का लग रहा है कि लगता है मैं यहाँ से उड़कर जा सकता हूँ। कल नाक रगड़ने से जो घाव हुआ था, जो सर्दियों में बेकार हो गया था, वह भी किसी जादू से ठीक हो गया लगता है।

हम दोनों पहाड़ों के बीच करीब एक घंटे तक चले। धीरे-धीरे पहाड़ हमसे दूर जाने लगे, हमारे सामने का नज़ारा धीरे-धीरे बदलने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे हमारे सामने का पर्दा हट रहा हो, हमारे सामने का मंच हर पल चौड़ा होता जा रहा हो। अपनी उत्सुकता और बेचैनी को रोक नहीं पाए, किसी अनजान आकर्षण की वजह से हमारी रफ़्तार बढ़ गई, और आखिर में हम एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ हम लगभग दौड़ने ही वाले थे। डोंगलदादा हमारे कदमों की आहट के साथ मंत्र बोल रहे थे। ओम मणि पद में हम, ओम मणि पद ये हम, ओम मणि पद में हम....

फिर वो सबसे बड़ा पल आया, एक छोटी सी पहाड़ी दीवार फांदकर हम अचानक स्वर्ग के राज्य में पहुँच गए... मैं कहूँगा स्वर्ग का राज्य... अचानक हम खड़े हो गए। हम अपनी आँखों से ब्रह्मांड के भगवान के इस अनंत रूप को देखने लगे! सभी इंद्रियाँ, आँखें, कान, वगैरह उस रूप का स्वाद लेने लगे। हमारे बीच कोई बात नहीं हुई, सब कुछ अपने आप यहीं रुक गया सा लगा। प्रकृति, मन को पार करके, अब आत्मा से बातचीत कर रही है, उस बातचीत में कोई रुकावट नहीं है। मेरी आत्मा को अचानक अपना सोर्स, यूनिवर्सल आत्मा मिल गई, यहाँ की शांति उस महान पल की गवाह बनी रही।

अगर मुझे भाषा में प्रकृति और मेरे बीच के कनेक्शन को समझाना हो, तो वह उसका बिगड़ा हुआ रूप होगा। अगर मैं प्यास लगने पर पानी के बारे में हज़ार पेज लिखूं, तो मैं इसे पानी का अपमान कहूंगा - पानी की सच्चाई पानी को खोजने, उसे पीने और उसे समझने में है; विवरण एक चीज़ है और समझना दूसरी। विवरण बहादुरी लाता है, समझ मुक्ति लाती है। मेरी यह छोटी सी आत्मा कुछ समय के लिए हमेशा के लिए मुक्ति का स्वाद चख रही है। प्रकृति हमारी माँ है - इसीलिए इस अद्भुत सुंदरता में बेटे की बड़ी खुशी दिखाई दी है। मैं उस खुशी को कैसे बताऊं! जैसे ही हमारी प्यास शांत हुई, डोंगलदादा ने हमें प्रकृति की सुंदरता समझाना शुरू कर दिया।

हमारी हालत वैसी ही है जैसे कोई जंगल में बहुत देर तक चलने के बाद समुद्र किनारे पहुँचता है। डोंगलडाडा को छोड़कर, हम चारों इस रास्ते पर पहली बार यात्री हैं। हमारे सामने एक बड़ा मैदान है जिसके बीच में दो छोटी पहाड़ियाँ हैं। उस मैदान के बीच में दो झीलें हैं। सामने वाली मानस सरोवर है और दूसरी राक्षसताल झील। दूर, एक पर्वत श्रृंखला दीवार की तरह उभरी हुई है। दक्षिण में बर्फ़ जैसे सफ़ेद पहाड़ को गुरलामांधाता कहते हैं। और उत्तर में दो पहाड़ियों के

पीछे, एक सफ़ेद तिकोनी बर्फ़ से ढकी पर्वत चोटी आसमान की ओर पहुँचती है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩০১

जो ऊपर उठा है, वह महान कैलाश है। जिनकी कृपा से मेरा यह साधारण शरीर यहाँ तक आ पाया है, जिनके आशीर्वाद से रास्ते की मेरी मुश्किलें पल भर में दूर हो गईं, जिनकी कृपा से मेरा जीवन सफल हो गया, मैंने उनके सामने सिर झुकाया। खुशी के आँसू बहने लगे - अपना शरीर ज़मीन पर रखकर, मैं बार-बार सिर झुकाकर अपनी भक्ति और प्रसाद चढ़ाने लगा -

हे दयालु! आपने इस गरीब भिखारी पर जो अपार दया की है, उसके लिए मेरी भक्ति स्वीकार करें। मैं कोई विद्वान नहीं हूँ, मैं कोई बुद्धिमान व्यक्ति नहीं हूँ, मैं कोई योगी नहीं हूँ, फिर भी मुझे आपकी कृपा मिली है - मेरा जीवन धन्य है! हे प्रभु, दया के स्रोत, दुनिया के स्वामी! कृपया मुझे अपने कमल के चरणों में स्थान दें।

मेरे सामने यह नज़ारा स्वर्ग जैसा है। भले ही मैं इसे सदियों से देख रहा हूँ, मुझे लगता है कि मैं कभी संतुष्ट नहीं हो पाऊँगा। झुककर प्रार्थना करने के बाद, हम थोड़ा आगे बढ़े। हमारे ठीक सामने, हमने एक बहुत बड़ा झंडा देखा जिसके नीचे एक छोटा सा चोर्टेन या स्तूप था। हम वहाँ गए और उसकी परिक्रमा की, फिर, जैसा कि यहाँ का रिवाज है, हम किनारे से कुछ पत्थर लाए और उन्हें स्तूप में जोड़ दिया।

सामो सांगपो में इस जगह से मानस सरोवर का नज़ारा बहुत साफ़ दिखता है। आस-पास के पहाड़ों की बर्फ़ पिघलने से कई छोटी पहाड़ी नदियाँ बन

गई हैं। वे सभी नदियाँ मानस सरोवर में मिल गई हैं। डोंगलदादा ने हमें बताया कि इस समय मानस सरोवर की परिक्रमा करना या चक्कर लगाना मुमकिन नहीं है, क्योंकि आस-पास की नदियों को पार करने के लिए कोई पुल या पानी की सुविधा नहीं है। हालाँकि, सर्दियों में, जब ये नदियाँ जम जाती हैं, तो तिब्बती लोग मानस सरोवर की परिक्रमा करते हैं।

वे डोंगलदादा और तीन अन्य तिब्बती सज्जनों के साथ पुरंग की ओर जाएंगे। डोंगलदादा ने मुझसे पूछा, "अब जब हमारे अलग होने का समय आ गया है, तो तुम क्या करोगे?"

मुझे क्या करना चाहिए? मैंने खुद से पूछा। यहां आना मेरा सपना था, अब मुझे नहीं पता कि क्या करना है।

मैंने डोंगलदादा से पूछा, "यहाँ आने पर तीर्थयात्री क्या करते हैं?"

डोंगलदादा मेरी बात सुनकर ज़ोर से हंस पड़े - तुम त्सो मफ़म आए हो लेकिन तुम्हें पता नहीं है कि क्या करना है। सुनो, यहां सब पूजा करने आते हैं, तुम्हें कोई न कोई पूजा करने वाला मिल जाएगा - वे पूजा करेंगे और तुम्हारे पुरखों के लिए प्रार्थना करेंगे। तुम्हारे मन में उतरकर तुम अपने पुरखों को बचा पाओगे और साथ ही पुण्य भी कमा पाओगे। अगर तुम चाहो तो मेरे साथ आओ, मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूं जो तुम्हारी मदद करेंगे।

मानसरोवर राक्षसताल और कैलाशनाथ के बारे में सारी जानकारी डोंगलदादा की उंगलियों पर है। जब उनसे पूछा गया कि क्या यहां कोई हिंदू मंदिर है, तो उन्होंने कहा - इस इलाके में

৩০২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

यहां कोई हिंदू मंदिर नहीं है, लेकिन हर साल भारत और नेपाल से कई हिंदू संत यहां तीर्थ यात्रा करने आते हैं। वे सभी मानस सरोवर के आसपास की गुफाओं और चैत्यों में रहते हैं। डोंगल दादा के अनुसार, हिंदुओं, शाक्यों, चेन-रे-जी आदि में कोई अंतर नहीं है। यह मानस खंड दुनिया का सबसे अच्छा तीर्थ है, यहां के सभी लोग एक जैसे हैं, बस भाषा अलग है।

चलते-चलते मैंने उनसे कहा - मेरे पास डिराफुक और लैंगबोना गुफाओं के लामा चीफ के लिए एक चिट्ठी है, इसलिए मुझे वहाँ जाना है। डोंगलजी उत्साह से लगभग उछल पड़े - तो यह बहुत अच्छा है - मैं तुम्हें शुरू से ही कह रहा हूँ कि तुम बहुत लकी हो। उन्होंने मुझे रास्ता दिखाया और कहा कि लैंगबोना गुफाएँ यहाँ से सिर्फ़ एक दिन की यात्रा पर हैं। अगर मैं इस सड़क पर सीधा चलता रहूँ, तो मुझे डिंग त्सो नाम की एक छोटी सी झील मिलेगी, वहाँ से सिर्फ़ एक दिन की यात्रा है। अगर मैं वहाँ गया, तो वहाँ के लामा मुझे सलाह देंगे कि क्या करना है। डोंगलदादा के अनुसार, अभी सीधे त्सो मफाम न जाना बेहतर है, क्योंकि नदियों और नहरों के चक्रव्यूह में फँसने की संभावना है। रास्ता बहुत सीधा है, आपको बस त्सो मफाम को अपने बाईं ओर रखना है और कैलाशनाथ का सामना करना है।

मैंने उन्हें स्पेशल थैंक यू के तौर पर दो टका दिए, इंडियन करेंसी पाकर वे बहुत खुश हुए - फिर उन्होंने मुझे कुछ और काम की सलाह दी।

मैं फिर से अकेला हूँ। बड़े आसमान के नीचे खोए हुए पंछी की तरह। डोंगलदादा गुरला मांधाता की तरफ जा रहा है, मैं कैलाश की तरफ चल रहा हूँ। यह छोटी सी सड़क, जो मानसरोवर से करीब एक मील दूर है, लगभग उसके पैरलल है। हालाँकि, यह सड़क झील से तीन-चार सौ फीट ऊँची लगती है।

डोंगलडाडा को अलविदा कहकर मैं चलने लगा। मानस सरोवर के आगे का नज़ारा सपने जैसा था, पहाड़ की चोटियों का क्या शानदार नज़ारा था। दोपहर के आस-पास, मुझे अचानक याक का एक झुंड दिखा। जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ा, मैंने देखा कि यह कहना गलत होगा कि झुंड ने मैदान को भर दिया है। कमाल है! वे बर्फ़ के इस साम्राज्य में क्या खा रहे हैं? मेरे मन में सवाल उठा - क्या वे जंगली हैं, शायद इस इलाके में यह नॉर्मल है। जैसे-जैसे मैं पास पहुँचा, मैंने टेंट की लाइनें, खानाबदोशों को देखा।

मैं मैदान में आया और धीरे-धीरे टेंट के बीच से गुज़रा। टेंट खाली थे, अंदर कोई नहीं था। याक ने मेरी तरफ देखा लेकिन कोई आवाज़ नहीं की। बर्फ़ पिघलने के बाद घास अभी-अभी उग रही थी, और याक खुशी-खुशी उसे ढूंढ रहे थे।

धीरे-धीरे सूरज सिर के ऊपर चढ़ने लगा। इसके साथ ही कैलाश का नज़ारा भी बदलने लगा। सूरज की किरणें अब बहुत सुहानी लगने लगी हैं, घूमने में काफी मज़ा आ रहा है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩০৩

हाँ। चलते हुए, मुझे खानाबदोशों का एक छोटा ग्रुप मिला। सब लोग एक टेंट के पास बैठकर धूप का मज़ा ले रहे थे। उनमें से ज़्यादातर बच्चे और अधेड़ उम्र के थे। मुझे देखकर, वे सब खड़े हो गए और अपनी जीभ निकालकर इज़्ज़त दिखाने लगे। मैंने उनकी तरफ़ हाथ बढ़ाया और मणि मंत्र पढ़ा और उन्हें आशीर्वाद दिया। जैसे ही मैंने बच्चों के सिर थपथपाए और उन्हें थोड़ा प्यार किया, उनके माता-पिता ने शुक्रगुज़ारी में सिर झुकाया और अपना शुक्रिया अदा किया। मैं बस मुस्कुराया और रास्ते में मिलने वाले हर किसी से दिल से बात की। मेरे सीधे-सादे व्यवहार से उनमें एक बहुत अच्छा रिएक्शन हुआ, जिसके लिए मैं बिल्कुल तैयार नहीं था। मेरे आस-पास के सभी लोगों ने जवाब दिया और चिल्लाने और बाकी सबको बुलाने लगे। न सिर्फ़ तिब्बती बच्चे उस आवाज़ पर दौड़े, बल्कि कई कुत्ते और याक भी आकर मेरे चारों ओर जमा हो गए। वे सब मुझे छूना चाहते थे - मौनी बाबा का आशीर्वाद लेना चाहते थे।

दुनिया का सबसे अच्छा तीर्थस्थल, कैलाश खंडा - यहां रहने वाले धन्य हैं। वे पवित्र हैं, वे भगवान के मिलन की संतान हैं। मैं उन्हें किस मंत्र से आशीर्वाद दूं? मैं ही उनका आशीर्वाद मांगता हूं। बच्चों के चेहरे दिव्य पवित्रता से भरे हुए हैं। और उनकी हर आंख की रोशनी में, मैं दिव्यता का रूप देख सकता हूं। मैं उन्हें किस भाषा में आशीर्वाद दूं? भगवान की यह क्या लीला है? यह क्या परीक्षा है? मानसरोवर और कैलाशनाथ के हर पत्थर पर शिव का नाम है - यहां की हवा सर्वोच्च आत्मा से छूती है, यह दृश्य उनके मिलन का एक रूप है। यहां स्वर्गीय लय लगातार आशीर्वाद के रूप में बह रही है। यहां रहने वाले सभी लोग भगवान हैं - फिर भी वे इस झूठे चुप पिता का स्पर्श चाहते हैं। वे चुपचाप मेरा इंतजार कर रहे हैं। मैं उन्हें अपनी मन की स्थिति कैसे समझाऊं? कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। चूंकि मैंने बिना ज्यादा सोचे-समझे शुरू किया, इसलिए मुझे इसे खत्म करना होगा।

मैंने कैलाश को देखा और बनाने वाले, भगवान शिव से प्रार्थना करने लगा:

हे अंतर्याम! आप मेरे ज़रिए उन्हें आशीर्वाद दें - मेरे गुनाहों को माफ़ करें - मुझे अपने रास्ते पर चलने का रास्ता दिखाएँ। फिर मैंने उनके सिर को छुआ और अपनी भाषा में कहा, "भगवान आपको आशीर्वाद दें और खुश रखें।"

यहाँ बच्चों के चेहरे सबसे खूबसूरत थे। इस भयानक सर्दी में भी, उनमें तकलीफ़ का ज़रा भी निशान नहीं था, हर कोई खिले हुए गुलाब जैसा था। उन्हें आशीर्वाद देकर, मैं फिर से सड़क पर आ गया। वहाँ सब मेरे पीछे आने लगे। मैंने उनसे एक भी शब्द नहीं कहा, लेकिन ऐसा लगा कि उन्होंने मुझे पीछे नहीं छोड़ा। मैंने उन्हें गिना और देखा कि वे चौंतीस थे - ऐसा लग रहा था जैसे वे मुझे छोड़ने की कोशिश कर रहे हों। हम सब रुकने को मजबूर थे, हमारे सामने एक नदी थी। नदी के नाम से इसे एक छोटी नहर कहना बेहतर होगा। ज़्यादा गहरी नहीं लेकिन पार करने में मुश्किल। मुझे बेबस देखकर, खानाबदोश

৩০৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उन्होंने मुझे दाईं ओर और ऊपर आने को कहा। जैसे ही मैं और ऊपर गया, मैंने देखा कि बड़े-बड़े पत्थरों से बना एक पुल था। यहाँ से पार करने में कोई मुश्किल नहीं थी। मुझे लगा कि मैं उनसे यहीं अलग हो जाऊँगा। लेकिन नहीं, मेरा अंदाज़ा गलत था, वे सब मेरे साथ नदी पार कर गए। फिर अचानक मैं मानस सरोवर के किनारे पहुँच गया। मेरे दाईं ओर एक छोटी सी झील थी और बाईं ओर मानस सरोवर। नीले और साफ़ मानस सरोवर पर

छोटी-छोटी लहरें उठ रही थीं और किनारे से टकरा रही थीं। मैं जल्दी से उसके किनारे भागा, पानी को छुआ और अपने सिर पर छिड़का। फिर, भक्ति से भरकर, मैंने मानस सरोवर के मालिक अनजान देवताओं को भोग लगाया। तभी उनके मन से गायत्री मंत्र निकला: ॐ भूः भुवः स्वः तत् साबितुर्बरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि दियो यो न प्रचोदयात्, ॐ भूः भुवः स्वः तत् साबितुर्बरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि दियो यो न प्रचोदयात्, ॐ...

अब दोपहर हो गई थी, पीछे मुड़कर सूर्य देव की स्थिति को देखकर लगा। पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि बच्चों का झुंड मेरे पीछे नहीं गया था। जैसे ही मैंने उनकी तरफ देखा, उन्होंने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया, ज़रूर कोई खास वजह होगी वरना वे इतनी दूर मेरे पीछे क्यों आएंगे? यह सोचकर मैं उनके पीछे-पीछे चल पड़ा, और जैसे ही मैं झील के किनारे-किनारे चला, मैंने दो हंसों को देखा। पहले तो मुझे यकीन नहीं हुआ, लेकिन जब मैंने ध्यान से देखा, तो पाया कि वे सही कह रहे थे। मैं इस बर्फीली ज़मीन पर हंसों को देखने की कल्पना भी नहीं कर सकता था। दूर-दूर तक सफेद पहाड़ों की चोटियां और यहां साफ नीले पानी पर सफेद हंस, सब मिलकर सच में स्वर्ग जैसा लग रहा था। बाद में, मैंने देखा कि सिर्फ दो नहीं, बल्कि और भी बहुत सारे हंस यहां खुशी-खुशी घूम रहे थे। मां सरस्वती का इससे ज़्यादा पवित्र रूप और क्या हो सकता है?

थोड़ी देर में, हम झील के किनारे कुछ और तिब्बती लोगों से मिले। वे मछलियाँ सुखा रहे थे। पहले तो मुझे लगा कि वे लोकल मछुआरे हैं, लेकिन उन्हें जानने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि वे भी उन्हीं खानाबदोशों में से थे जिन्हें मैं पहले से जानता था। उनसे मिलने के बाद, वे मुझे समझाते रहे कि उन्होंने मछलियाँ नहीं मारी हैं, यहाँ जानवरों को मारना पाप है। मछलियाँ मरी हुई तैर रही थीं और फिर लहरों के साथ किनारे पर आ गईं - वे बस उन मरी हुई मछलियों को सुखा रहे थे।

[redacted]

[redacted]

[redacted]

खानाबदोशों ने खुद मुझे लैंगबोना गुफा का साफ़ रास्ता दिखाया। मुझे इस झील के किनारे सीधे उत्तर की ओर चलना है, झील के किनारे से आगे कभी नहीं जाना है। काफ़ी देर चलने के बाद, जब मैं एक नदी के पास पहुँचूँगा, तो मुझे उस नदी के ऊपर एक पुल मिलेगा, और पुल पार करने के बाद, मैं लैंगबोना गुफा पहुँच जाऊँगा। जब तिब्बती लोग किसी रास्ते के बारे में बताते हैं, तो वे समय को मापने के लिए थोड़ी देर, बहुत समय, एक घंटा, दो घंटे, एक या दो दिन, वगैरह का इस्तेमाल करते हैं। शायद उन्हें घंटे का शब्द नहीं पता होगा। बेशक, मैं आम तिब्बतियों की बात कर रहा हूँ।

मानसतीर्थ में पहली रात

खानाबदोशों से मेरी मुलाक़ात ज़रूर भगवान की मेहरबानी रही होगी, वरना इतनी जल्दी लैंगबोना गुफा तक पहुँचना मुमकिन नहीं होता। दोपहर होते-होते पूरी दुनिया एक नए रूप में दिखने लगी; डूबते सूरज की रोशनी में आस-पास के पहाड़, नदियाँ, झीलें और आसमान रंग बदलने लगे। भारतीय सीमा पर गुरला मांधाता की अलग-अलग चोटियाँ सबसे खूबसूरत लग रही थीं। बर्फीली चोटियों पर रंग-बिरंगी धूप पड़ रही थी, कभी सुनहरी, कभी चांदी जैसी लहरें बहने लगीं। और कैलाश चोटी बिल्कुल वैसी ही लग रही थी जैसी मैंने गंगटोक की गुफा से कंचनजंगा को देखा था।

सूरज डूबने के बाद अचानक रात हो गई, तो मैं तेज़ी से चलने लगा, सोचा बाद में अच्छे से देख लूंगा। नदी ढूंढना मुश्किल था। पार करने का कोई रास्ता नहीं था। संगम से मैंने उत्तर का रास्ता लिया। इसे सड़क तो बिल्कुल नहीं कहा जा सकता, यह तो बस चट्टानों पर चढ़ाई है। इस जगह की अविश्वसनीय सुंदरता देखने के बावजूद, मेरे मन में एक अफ़सोस बना रहा, मैंने सोचा था कि दुनिया के इस सबसे बड़े तीर्थ पर आकर मुझे

सिर्फ़ महापुरुषों की भीड़ ही दिखेगी। मानस सरोवर के किनारे मुझे सिर्फ़ ध्यान करने वाले योगियों का ठिकाना मिलेगा - लेकिन वे कहाँ हैं? रात का अंधेरा होने से ठीक पहले, मुझे एक पुल मिला, जहाँ से मुझे आधी रोशनी और आधी छाया में एक बहुत बड़ा दो मंज़िला घर दिखाई दे रहा था। पहली बार, कोई कुत्ता मेरा स्वागत करने नहीं आया, कोई गाँव के बच्चे मौनी बाबा के पीछे-पीछे नहीं आए - मुझे उस बड़े घर का दरवाज़ा ढूंढना था।

रात का उजाला अभी दुनिया को अपनी चपेट में लेने लगा है, अंधेरा अभी भी मेरी आँखों के लिए बर्दाश्त से बाहर है - यह अच्छी बात है कि मैं बिना किसी दिक्कत के यहाँ तक पहुँच पाया हूँ। सर्दी की ठंड शुरू हो गई है - मैंने कंबल को चादर की तरह लपेट लिया है, सिर पर लपेट लिया है, हाथों में दस्ताने और पैरों में लैम, या तिब्बती जूते पहन लिए हैं, लेकिन फिर भी ऐसा लगता है कि सर्दी की पकड़ से कोई बच नहीं सकता। जब रात का अंधेरा मेरी आँखों के लिए बर्दाश्त के लायक हो गया, तो मैंने फिर से खोजना शुरू किया। मैंने लैंगबोना गुफा के चारों ओर देखा और एक के बाद एक कई दरवाज़े देखे, लगभग एक धर्मशाला की तरह, यह पता लगाना मुश्किल था कि मुख्य दरवाज़ा कौन सा है। मुझे किसी भी कमरे से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी, रोशनी का कोई निशान नहीं था। ऐसा लग रहा था कि सब लोग लाइट बंद करके सो गए हैं। कोई और रास्ता न देखकर, मैंने एक के बाद एक दरवाज़े खटखटाना शुरू किया, लेकिन मुझे कोई जवाब नहीं मिला। दो-तीन बार घर के चक्कर लगाने के बाद भी मुझे कोई दरवाज़ा खुला नहीं मिला। मुझे उम्मीद थी कि अगर मुझे रात के लिए कोई छत मिल जाए, तो मैं चला जाऊंगा।

333
महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩০৭

৩০৮

मैंने आस-पास देखना शुरू किया। जैसे-जैसे रात गहरी होती गई, ऐसा लगा जैसे तारे चमक रहे हों। उस रोशनी में, मुझे अचानक लगा जैसे बाहर से सीढ़ियाँ ऊपर जा रही हों। यह एक लकड़ी की सीढ़ी थी, और जैसे ही मैं सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा, मुझे एक बड़ी बालकनी और फिर घरों की एक लाइन मिली।

मैं एक के बाद एक कमरे में ज़ोर-ज़ोर से खटखटाने लगा। पता नहीं चल पा रहा था कि कोई है भी या नहीं। मेरा अंदाज़ा गलत नहीं था, मुझे कोने वाले कमरे में खटखटाने की ज़रूरत नहीं थी, मुझे लगा कि अंदर के शोर से कोई जाग गया है। मैंने मन में सोचा - कोई भी हो, मुझे रहने के लिए जगह चाहिए, बेवक्त आपको परेशान करने के लिए माफ़ी चाहता हूँ, ज़रूरत पड़ी तो मैं इस पर पैर रखने से भी नहीं हिचकिचाऊँगा - मुझे ठंड से बचने के लिए कोई घर ढूँढ़ना होगा। मैं बेपरवाही से वहाँ जाकर खटखटाने ही वाला था कि अंदर से दरवाज़ा खुल गया। मेरे सामने एक महापुरुष प्रकट हुए, उन्हें देखते ही मेरे सारे रोंगटे खड़े हो गए, मेरी नसें सुन्न हो गईं, मेरे शरीर की सारी ताकत एक पल में गायब हो गई। मैं लगभग बेहोश सा वहीं खड़ा रहा और उस महापुरुष को एकटक आँखों से देखता रहा। कमरे के अंदर एक कढ़ाई में अलाव जैसी आग जल रही थी, उसकी हल्की रोशनी और बाहर तारों की तेज़ रोशनी में मैं उनका रूप साफ़ देख सकता था। ऐसा लग रहा था जैसे उस दिव्य पुरुष के शरीर से रोशनी चमक रही हो - इस दिव्य पुरुष ने एक बार मुझे ठंड से बचाया था, अपनी चमत्कारी शक्ति से मुझे नदी पार कराई थी। वो मेरा जीवनदाता था और वो मुझे फिर से बचाने आया है। कौन कह सकता है कि भगवान नहीं है? वो मेरे ठीक सामने खड़ा है। उसके सिर पर बालों की एक बड़ी लट, पीठ पर

एक छोटा सा दुपट्टा, एक बहुत बड़ा शरीर। वो मुझे फिर से बचाने आया है, मैंने उसे पहली बार पहचाना नहीं था। इस बार मैं उसे नहीं छोड़ रहा, लेकिन इस समय मैं क्या करूँ? मेरी सारी बुद्धि और विचार अचानक गायब हो गए थे। मुझे नहीं पता कि मैं कब से वहाँ खड़ा था - वो शिव रूपी परम भगवान ज़रूर मेरे अंदर होंगे। मेरी हालत समझकर, उसने मुझे तिब्बती भाषा में अंदर आने को कहा। मैं मंत्रमुग्ध सा उसके पीछे- पीछे चला गया। अगर वो मेरे झुकने पर फिर से गायब हो गया, अगर वो मेरे बोलने पर गायब हो गया, तो जब तक मुझे उसके दर्शन हो सकते हैं, तब तक जीवन सार्थक है। इसलिए मैं उसे बिना रुके आँखों से देखता रहा। उसने मुझे पकड़कर आग के पास बिठाया और फिर अंदर से दरवाज़ा बंद कर लिया। मैं उनके मानवीय व्यवहार से बहुत प्रभावित हुआ। फिर उस परमपिता ने लगभग अपने आप से कहा:

इस कमरे में लैंप नहीं है, इसलिए लेट जाओ, मैं कल सुबह तुमसे बात करूंगा। तुम बहुत थक गए हो, अब लेट जाओ, यह कहकर वह आग के पास लेट गया। कोयले की आग उसे अच्छी तरह देखने के लिए काफी है। मैं कंबल के ऊपर कंबल ओढ़े ठंड में कांप रहा हूं और वह एक कंबल पर नंगा लेटा हुआ है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

वह शांति से लेट गए, जैसे बनारस के संत गंगा किनारे रात बिताते हैं। इस बार मैं इस महान योगी पिता को नहीं छोड़ रहा हूँ। घर की गर्मी में मेरी नॉर्मल हालत लौट आई। धीरे-धीरे मेरी सोच और लॉजिक वापस आ गए। उस परम सत्ता को देखकर मैं सोचने लगा, ज़रूर भगवान शिव ठाकुर अपना कैलाश छोड़कर मुझ जैसे आम लड़के के सामने नहीं सोएंगे। जिसे योगी, ऋषि और ऋषि हज़ारों साल की तपस्या के बाद नहीं पाए, उसे मैं कैसे पा सकता हूँ? मुझमें न कोई पुण्य है, न भक्ति, ऊपर से मैंने एक पापी मूक

पिता के रूप में इस रास्ते पर आते हुए कितने लोगों को आशीर्वाद दिया है - अगर आज इस ठंडी रात में मुझे बाहर रखा जाता, तो कम से कम मेरे कुछ पापों का प्रायश्चित तो हो जाता। लेकिन यह ठीक इसका उल्टा है। इतना सब होने के बाद भी, वह बार-बार मेरी रक्षा के लिए अपने दोनों हाथ बढ़ा रहे हैं। और किसी भी हाल में, जिसे मैंने आज मानसरोवर की इस पवित्र धरती पर पाया है, उसे मैं नहीं छोड़ रहा हूँ। मैंने मन ही मन उन्हें जीवन का देवता मान लिया।

मैं बिना लेटे ही उस महान व्यक्ति को अपनी आँखों से देखने लगा। ऐसा लग रहा था जैसे वो शिव के रूप में लेटे हों, और अदृश्य माँ काली उनके ऊपर खड़ी हों - मैं दर्शक बनकर देख रहा था। कैलाश का सीन याद आया, कैलाश चोटी उनके लिए सही जगह है जहाँ वो पार्वती के साथ बैठकर अपनी रचना में व्यस्त रहते हैं। लेकिन वो यहाँ क्यों आए? शायद उन्हें आने के लिए मजबूर होना पड़ा हो, अपनी रचना को बचाना उनकी ज़िम्मेदारी है। वो ही विष्णु के रूप में अपनी रचना की रक्षा करते हैं और ज़रूरत पड़ने पर उसे नष्ट भी कर देते हैं। पहाड़ की चोटी पर जमी बर्फ और कैलाश चोटी, ब्रह्मा के रूप में, उसके रचयिता हैं, और नदी के रूप में, वो विष्णु हैं और विनाश के स्वामी हैं। मैं कल्पना कर रहा हूँ।

मुझे यकीन नहीं हो रहा कि मैं अभी कैलाश के चरणों में बैठा हूँ - एक सपना... एक सच - मेरा मन बार-बार शक से भर रहा है। पता नहीं कब सो गया, सुबह उठा। जैसे ही आँखें खुलीं, मुझे तुरंत रात याद आ गई, मैं जल्दी से उठकर बैठ गया और सामने देखा, मैंने देखा कि वह गायब हो गया था - मेरा दिल अफ़सोस से जल उठा, मैंने उसे फिर से खो दिया। उसी पल, किसी की धीमी आवाज़ मेरे कानों में पड़ी। मैंने सुनने की कोशिश की, आवाज़ बगल के कमरे से आ रही थी - मुझे ऐसे सुनाई दी जैसे संस्कृत के श्लोक हों, तिब्बती प्रार्थनाओं की आवाज़ नाभि की धीमी आवाज़ जैसी होती है। यह ज़रूर कोई आवाज़ होगी। तो बगल के कमरे में कोई होगा। आवाज़

असल में बगल के कमरे से नहीं, नीचे से आ रही है। मैंने कंबल ओढ़ा और नीचे चला गया, इस बार मुझे संस्कृत के श्लोक साफ़ सुनाई दिए -

तुम ही सबसे बड़े पापी हो,

मैं बहुत समय बाद अपनी मातृभाषा सुन रहा था - अपनी जिज्ञासा शांत न कर पाने के कारण, मैं आगे बढ़ गया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩০৯

৩১০

मैंने दरवाज़े से झाँका, मेरा अंदर से खुशी का ठिकाना नहीं रहा, ठीक वैसे ही जैसे गंगटोक के बाज़ार में साधु बाबा को देखकर हुआ था। रात के वो महान व्यक्ति भगवान बुद्ध के सामने बैठकर गीता पढ़ रहे थे। मैं अपनी खुशी रोक नहीं पाया, मैंने दरवाज़ा खोला और सीधे अंदर जाकर उनके चरणों में समर्पित हो गया। वो मुझे फिर मिल गए।

उन्होंने लेसन रोक दिया और मेरे सिर पर हाथ रखकर कहा, "नारायण नारायण, आपके आशीर्वाद से मैं धन्य हो गया हूँ।" फिर हमारी बातचीत शुरू हुई। सिर पर बड़े बाल, लंबी दाढ़ी, पूरे शरीर पर राख लगी हुई, और एक छोटी टोपी, वह इस ठंडे देश में ज़रूर कोई महान योगी होंगे। मैं उनकी साफ़ हिंदी से समझ गया कि वह एक भारतीय योगी थे। जब मैंने उन्हें बताया कि वह पहले भी एक बार दिखे थे और गायब हो गए थे, तो

उन्होंने मुझे यकीन दिलाया कि यह पहली बार है जब वह मुझे देख रहे हैं - उन्होंने ज़रूर किसी और को देखा होगा। वह इस बारे में ज़्यादा नहीं बताना चाहते थे। जब उनसे मेरी पहचान के बारे में पूछा गया, तो मैंने उन्हें अपने बारे में डिटेल में बताया। मैंने उन्हें साफ़- साफ़ बताया कि मैं घर से भागकर गया आया हूँ, मेरा तिब्बत आने का कोई प्लान नहीं है, और साधु बाबा के प्रति मेरा आकर्षण ही मुझे इस महान तीर्थ यात्रा पर ले आया है।

उन्होंने मेरी बात बहुत ध्यान से सुनी और फिर मुझे घूरने लगे। उनकी सख्त निगाहों के आगे मुझे अपना सिर झुकाना पड़ा। मैंने उनकी आँखों में छिपी एक सम्मोहन शक्ति देखी। वह मुझे बहुत देर तक घूरते रहे - फिर उन्होंने मुझे अपने सीने से लगा लिया और कहा - सब कुछ शंकर का खेल है। मुझे समझ नहीं आया कि उन्होंने ऐसा क्यों कहा। मुझे उनके स्पर्श में शांति और एक बड़ा सहारा मिला, अगर मुझे इस महान व्यक्ति के दर्शन करने के लिए ही कैलाश आना पड़ा, तो मुझे लगता है कि मेरी मेहनत सफल रही। मेरा जीवन धन्य हो गया। कैलाश से, मन की यह पवित्र भूमि शिव की भूमि है, हमारे सामने अवलोकितेश्वर की एक विशाल मूर्ति है और वह भगवान कृष्ण की अमृतवाणी सुना रहे हैं। गीता सुनाते हुए उन्होंने मुझे समझाया कि शिव, कृष्ण, बुद्ध सभी समान हैं। हम किसी भी भाषा में प्रार्थना करें, वह उसी परम सत्ता तक पहुँचती है। शिव के समान उस महान व्यक्ति के पास बैठकर मैं लगभग एक घंटे तक गीता का अमृत सुनने लगा। मेरा ध्यान संस्कृत श्लोकों के बजाय उस महान व्यक्ति पर केंद्रित था। ऐसा लगा जैसे उन्होंने अचानक मुझे अपने वश में कर लिया हो।

फिर किसी समय हम उठे और घर से बाहर आ गए। लैंगबोना गुफा बहुत बड़ी नहीं है, यह एक मीडियम साइज़ के मठ जैसी है। हम दोनों के अलावा वहाँ एक भी जानवर नहीं था। बाहर आकर, हमने गुफा के सात चक्कर लगाए।

[illegible] [illegible]

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]...

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कमरे के कोने में एक टोकरी टंगी है, जिसमें कुछ गेहूं और चतु हैं। और फर्नीचर के बीच एक टूटा हुआ एल्युमिनियम का बर्तन है। ग्यूमा (चू) नदी कैलाश से पिघला हुआ पानी लेकर मानसरोवर में बहती है। वह उस नदी के पानी में गेहूं उबालता है और दिन में एक बार खाता है। बस उसे ही वह खाना कहता है। थोड़ा और पास जाकर मैंने उससे पूछा, "क्या यह तुम्हारी लंबी तपस्या का नतीजा है कि तुम इस कड़ाके की सर्दी में भी नंगे हो?"

उन्होंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "नहीं, राख ही ठंड से बचने का मुख्य ज़रिया है। सदाशिव, वह राख की वजह से ही अनंत काल से उस अनंत बर्फ़ पर बैठे हैं।" थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा, "हमारी ज़िंदगी में सब कुछ भ्रम है। इस दुनिया की सभी चीज़ें आग पकड़ने वाली हैं - आखिर में जो बचती है, वह राख है। राख ही ज़िंदगी का सार है। मन की आग में काम, क्रोध, लोभ, घमंड, वासना और नफ़रत को जला दो, फिर जो बचता है, वह राख ही हमारी ज़िंदगी का अमृत है।" सदाशिव को हमसे कुछ नहीं चाहिए, वह खुद राख में लिपटे बैठे हैं। अगर हम भी वह राख लगा सकें, तो कोई पाप हमें छू नहीं सकता। इससे पहले कि मैं उनकी बातें भूल पाता, मैंने जल्दी से झूले के अंदर से एक पेंसिल और कागज़ निकाला और लिखना शुरू कर दिया। वह इस पर हँसे - मुझे लगा जैसे मैं बचपना कर रहा हूँ। जैसे ही मैंने उनकी तरफ़ देखा, उन्होंने कहा, "पिताजी, दुनिया की सच्चाई अपने मन पर लिखने की कोशिश करो।" उनकी बातें सुनकर मुझे कागज और पेंसिल वापस अपने बैग में रखनी पड़ी।

उन्होंने सलाह दी और कहा, "पिताजी, आप बहुत पुण्य के फलस्वरूप यहां पहुंचे हैं। भारत से कैलाशनाथ आने वाले लोग अल्मोड़ा से आते हैं, जो बहुत छोटा है।"

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩১১

रास्ता, इसमें सिर्फ़ दो या तीन हफ़्ते लगते हैं, और आप ल्हासा के रास्ते आए हैं, वो तिब्बती रास्ता है, भगवान शिव शंकर ने आपको बुलाया है, आप लकी हैं। मुझे अपना इरादा बताओ और मैं आपकी मदद करूँगा।

मैं उनकी बात सुनकर हैरान रह गया और पूछा, "पिताजी, संकल्प क्या है?"

जब तक मैं इस महान व्यक्ति से नहीं मिला, मैं कैलाश की चोटी पर शिव के बारे में सोचता रहा, इसलिए मैंने उन्हें कैलाश-बाबा मान लिया। उन्होंने बताया कि संकल्प क्या था और कहा-

शब्दों में कहें तो संकल्प एक तीर्थयात्री की इच्छा है। किसी तीर्थस्थल या किसी मंदिर में जाते समय मन की इच्छा या चाहत के लिए प्रार्थना करनी होती है। सभी लोग इसी इच्छा या निश्चय के साथ तीर्थस्थल पर आते हैं। साधना के मार्ग पर कई दिनों की कड़ी मेहनत और तपस्या के बाद, वे भगवान की कृपा की भीख मांगते हैं। भगवान खुश होते हैं और उनकी इच्छा पूरी करते हैं।

मैंने अपने पिता से कहा कि मेरा ऐसा कोई संकल्प नहीं है। मैंने ल्हासा के जोखांग मंदिर में कुछ नहीं मांगा, और मैं यहां भी कुछ मांगने नहीं आया हूं। यह पहली बार है जब मैं संकल्पों के बारे में सुन रहा हूं। मैंने अपने पिता से इस गुनाह के लिए माफ़ी मांगी। फिर

मैंने उन्हें अपनी कहानी फिर से सुनाई, यानी कैलाश पर मेरा आना अचानक हुआ। मैं बिना मंत्रों के ध्यान करता हूं, मैं बिना तंत्र के लामा बन गया। मैं बिना तपस्या के कैलाश की इस स्वर्गीय भूमि पर आया और मुझे बिना प्रार्थना के आपकी शरण मिली। मुझे यकीन नहीं हो रहा है। मुझे अक्सर ऐसा लगता है कि मैं सपना देख रहा हूं।

कैलाश बाबा ने मुझे दिलासा दिया और कहा, "दुनिया में कुछ भी बिना वजह नहीं होता। हम अपने कर्मों के नतीजे में पैदा होते हैं, और अपने कर्मों के नतीजे में ही सुख और दुख भोगते हैं।" अगर आपमें कोई संकल्प नहीं है, तो आप एक महान आत्मा हैं। योगी कहते हैं कि जो लोग बिना किसी संकल्प के कैलाशनाथ के दर्शन करते हैं, उन्हें मुक्ति मिलती है।

मैंने अपने पिता से कहा कि मैं बहुत बड़ा पापी हूँ, मैंने उनसे लामा बनने की दीक्षा ली थी ताकि मुझे एक संत की संगति मिल सके, और मैं चीनियों के पकड़े जाने के डर से चुप रहने वाला पिता बन गया था। मैंने संत बने बिना इतने लोगों को आशीर्वाद दिया - मैं झूठा था।

बाबा ने कहा, "इसके बावजूद, तुम इस महान तीर्थ तक पहुँच गए हो। अगर किसी व्यक्ति का लक्ष्य सही है, तो वह सच है। अगर तुम किसी को नुकसान नहीं पहुँचाते हो, तो तुमने सही रास्ता अपनाया है।"

बोलते-बोलते मुझे लामा का दिया हुआ लेटर याद आ गया, और मैंने उसे खोलकर अपने पिता को दे दिया। उन्होंने लेटर लिया, उसे इधर-उधर देखा, और कहा कि वे तिब्बती पढ़ नहीं सकते, लेकिन वे इसे समझ और बोल सकते हैं।

मैंने कैलाश बाबा से मानसरोवर और लांगबोना गुफाओं के बारे में डिटेल्स सीखीं। बहुत से लोग थोकचेन को तसम कहते हैं, मुझे लगा कि यह इसका लोकल नाम है। असल में, तसम शब्द का मतलब पुलिस स्टेशन जैसा है। इस इलाके में वह जगह जहाँ

৩১২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

जिस जगह पर पुलिस स्टेशन या सरकारी ऑफिस होता है, उसे तसम कहते हैं। इस इलाके का सबसे अच्छा मार्केट तसम में लगता है। कैलाशनाथ और मानसरोवर जाने वाले तीर्थयात्री अपना मार्केट करने के लिए तसम ज़रूर आते हैं। जैसे मानसरोवर के पूरब में थोकचेन तसम है, वैसे ही उत्तर में तारचेन तसम है। जो लोग मानसरोवर के दक्षिण में आते हैं, वे तकलाकोट से अपना मार्केट करते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि कैलाश के दर्शन करने से सात जन्मों के पाप दूर हो जाते हैं और मानसरोवर में डुबकी लगाने से मोक्ष मिलता है। पवित्र और पवित्र आत्माएं यहां तपस्या के फलस्वरूप वरदान पाती हैं और उनके दर्शन करके उन्हें निर्वाण मिलता है। यह बौद्धों और हिंदुओं के लिए सबसे पवित्र तीर्थस्थल है, दुनिया में इससे ज़्यादा पवित्र ज़मीन कोई नहीं है। यहां कोई हिंदू मंदिर नहीं है। कोई नहीं कह सकता कि यह पहले था या नहीं। यहां किसी पुराने हिंदू मंदिर का कोई निशान नहीं है। ज़्यादातर तीर्थयात्री बौद्ध-तांत्रिक हैं। हिंदू संत या तीर्थयात्री यहां दर्शन, स्पर्श और स्नान के लिए आते हैं। हालांकि मानस सरोवर और रावण सरोवर एक बड़े मैदान में हैं, लेकिन उनके आसपास थोड़ी दूर पर कई छोटी पहाड़ियां हैं। उन सभी पहाड़ियों में कई गुफाएं हैं, कई संत और महापुरुष वहां तपस्या करने आते हैं।

मानसरोवर के आस-पास कई गुफाएँ हैं, और जब सर्दियों में नदी जम जाती है, तो तिब्बती लोग इन गुफाओं को तीर्थस्थल की तरह इस्तेमाल करते हैं। ये गुफाएँ आम घरों जैसी ही हैं। कई हिंदू तीर्थयात्री पुरखों की पूजा, श्राद्ध या तपस्या के लिए मानसरोवर आते हैं। इन गुफाओं में इसी काम के लिए पंडे और पुजारी मिलते हैं। यहाँ कैलाश बाबा के दर्शन ने मेरे रास्ते में एक नया अध्याय जोड़ दिया। पहले तो मुझे लगा कि वे खुद शिव हैं। फिर मुझे लगा कि वे मेरे प्यारे देवता हैं, जो मुझे बार-बार खतरे से बचा रहे हैं। लेकिन कैलाश बाबा के अनुसार, उन्होंने मेरे लिए कुछ नहीं किया था, उनका दर्शन तो बस दयालु का एक और खेल था। यह सोचना हैरानी की बात है कि मैंने उन्हें इस अकेली गुफा में बिल्कुल अकेला कैसे पाया। जितना मैं बातचीत के बारे में सोचता हूँ, उतना ही हैरान होता हूँ। दयालु की दया अपार है। कौन जाने, शायद इसी को जगह की महानता कहते हैं।

कैलाश बाबा असल में पौड़ी गढ़वाल से हैं। वे ज़्यादातर अल्मोड़ा में रहते हैं। उनका अपना कोई आश्रम या डेरा नहीं है। वे अब तक सात बार कैलाश खंड आ चुके हैं। हर बार वे एक महीने के लिए रुकते हैं। वे 66 साल के दिखते हैं लेकिन असल में वे बहुत ज़्यादा बूढ़े हैं। उन्होंने प्राणायाम और हठ योग से अपने शरीर को मज़बूत रखा है, और मेडिटेशन से वे आध्यात्मिक दुनिया में बहुत ऊँचे लेवल पर पहुँच गए हैं। मेरे जैसे आम लड़के के लिए उनकी ताकत को जानना नामुमकिन है।

वैसे तो मानसरोवर, राक्षस सरोवर और कैलाश पर्वत दुनिया के सबसे अच्छे तीर्थस्थल हैं, लेकिन आजकल यहाँ तीर्थयात्रियों की कमी है। चार साल पहले भी इस समय यहाँ तीर्थयात्रियों की भीड़ होती थी, लेकिन आजकल लोग नहीं हैं - वे धर्मशालाएँ या गुफाएँ आजकल लगभग श्मशान बन गई हैं। अल्मोड़ा और कश्मीर से

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩১৩

तीर्थयात्रा का रास्ता अब पूरी तरह से बंद हो गया है। मैंने सिक्किम का रास्ता अपनी आँखों से देखा है। लगभग सभी अमीर तीर्थयात्री भारतीय थे। गर्मियों में, हर जगह से खानाबदोश लोग मानस और कैलाश खंड में आते थे। फर और पत्थर बेचना उनका मुख्य काम था। तुलनात्मक रूप से गरीब खानाबदोश लोग तीर्थयात्रियों को भेड़ का दूध बेचते थे। और जवान लड़के थके हुए या बीमार तीर्थयात्रियों की तरफ से परिक्रमा करते थे। गर्मियों में मानस की परिक्रमा करने का तो सवाल ही नहीं उठता, लेकिन सर्दियों में कैलाश की परिक्रमा करना बहुत मुश्किल है। वे तीर्थयात्रियों के नाम पर तभी परिक्रमा करते थे जब उनके पास सर्दियों में आठ आने और गर्मियों में सिर्फ़ चार आने होते थे।

इस इलाके में गुफाओं के अलावा, खानाबदोशों के काले तंबू भी दिखते हैं। दुनिया में उनके जैसे सीधे-सादे और मज़बूत लोग नहीं हैं। हालांकि यह इलाका, यानी कैलाशखंड, तिब्बत में है, लेकिन इस पर भूटान का राज है। यहां का मेन मार्केट या बाज़ार और कई गुफाएं भूटानी सरकार की हैं। इन दिनों, राजनीतिक वजहों से भूटानी व्यापारियों ने यहां आना बंद कर दिया है। कई लामा सब कुछ छोड़कर भूटान या कश्मीर चले गए हैं। इसीलिए यह लैंगबोन गुफा भी, दूसरी कई गुफाओं की तरह, वीरान हो गई है। कैलाश बाबा लगभग दो हफ़्ते से यहां हैं। कुछ दिनों की शांत पूजा और प्रार्थना के बाद, वे अब कैलाश की परिक्रमा करके आराम कर रहे हैं। वे कुछ दिनों में चले जाएंगे।

बाबा ने मुझे एक कमरा दिखाया और कहा कि यहीं पर वे पहली बार 'चाम' तपस्या के लिए आए थे। मुझे 'चाम' तपस्या के बारे में नहीं पता था, इसलिए मैंने बाबा से पूछा - यह तपस्या कैसी होती है?

उन्होंने जवाब में बताया कि चाम या चाम एक तिब्बती शब्द है जिसका मतलब एकांत होता है। एकांत में, एकदम अंधेरे में भगवान के बारे में सोचना चाम-तपस्या कहलाता है। यह तंत्र साधना का एक बड़ा हिस्सा है। महाकाल या इष्ट को याद करना होता है और खुद को पूरी तरह से उनके चरणों में सौंप देना होता है। यह तपस्या बहुत कठिन रास्ता है। कोई तीन दिन, सात दिन, एक साल, दो साल, दस साल, जितना हो सके, व्रत लेकर इस कमरे में जाता है। कमरा पूरी तरह अंधेरा है, जिसमें कोई खिड़की या दरवाज़ा नहीं है। जिस गुफा से कमरे में जाना होता है वह भी बहुत छोटी है, गुफा तक जाने वाला टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता ज़्यादा रोशनी अंदर नहीं आने देता। दिन में गुफा से एक लामा खाना खाने आता है, गुफा के पास खड़ा होता है और ताली बजाकर खाना छोड़ देता है। बाहरी दुनिया से बस यही कनेक्शन होता है, कोई कम्युनिकेशन नहीं होता। तपस्वी को खाना लेकर गुफा के पास आना होता है और फिर अंधेरे में अंदर जाना होता है। खाने के बाद वह थाली गुफा के मुँह के पास रखता है और फिर से बंद कमरे में अंदर जाता है। सामान में दो कंबल और एक पूजा की माला होती है। खुद का सामना करने का यही सबसे अच्छा तरीका है। मन में बहुत ताकत और भगवान के प्रति अटूट भक्ति के बिना इस साधना में सफलता पाना मुमकिन नहीं है। अंधेरे कमरे में बुरी आत्माएं एक के बाद एक आती हैं और आपको डराने लगती हैं,

২২

৩১৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

फिर वे तपस्या में रुकावट डालने के लिए तरह-तरह के बहाने बनाते हैं।
इन परीक्षणों से संत ध्वनि, स्पर्श, रूप, स्वाद और गंध पर जीत हासिल करता है। फिर अहंकार, मन, बुद्धि और हृदय की जीत होती है।

महायोगी तांत्रिकों ने यहां सालों तक तपस्या करके चमत्कारी ज्ञान पाया है। यह मुक्ति का रास्ता नहीं बल्कि शक्ति साधना का रास्ता है। कैलाश बाबा वहां तीन महीने रहे। उस दौरान उनकी आंखों की रोशनी बहुत कम हो गई थी। फिर उन्होंने धूप की साधना करके वह रोशनी वापस पा ली। दोपहर में कैलाश बाबा कंबल ओढ़ लेते थे लेकिन हमेशा नंगे पैर। इस ठंड में, जहां मैं भारी ऊनी मोजे और जूते पहनकर भी ठंड से बच नहीं सकता, वे आराम से नंगे पैर चलते थे - इसे ही मैं चमत्कारी ज्ञान कहता हूं। डूबते सूरज की रोशनी में मैंने मानसरोवर का एक अलग ही रूप देखा। पहले मैंने पानी का रंग गहरा हरा और नीला देखा था, लेकिन अब मुझे वह सिर्फ नीला ही दिख रहा है। सूर्यास्त का नज़ारा बहुत ही शानदार होता है।

बाबा ने कहा कि जब साधारण सुंदरता हमारा ध्यान खींचती है, तो हम उसे दिखाने के लिए सबको बुलाना चाहते हैं, उस सुंदरता की महिमा को सबके साथ बांटना चाहते हैं - यही मनुष्य का धर्म है। लेकिन यहां की सुंदरता असाधारण है, यह सुंदरता स्वर्गीय सुंदरता है। यहां हमें एहसास करना होगा, हमें परमपिता परमात्मा की इस लीला में डूबना होगा, अगर हम मानस सरोवर के ठंडे पानी में डुबकी लगाते हैं, तो अब हमें ठंड से तड़पना पड़ेगा। इसलिए इस दिव्य सुंदरता में डूबो, अपने मन को इससे भरो, फिर उस सुंदरता को अपने दिल में उतारने की कोशिश करो और खुद को सुंदर बनाओ। जिसकी कृपा से ये तीनों लोक सुंदरता से भरे हैं, उसकी कृपा से हम कैसे वंचित रह सकते हैं? हम अब इस दुनिया से बाहर

नहीं हैं। मानस सरोवर मन का सरोवर है। साधना के जरिए हमें मानस सरोवर जैसा उदार और गहरा रवैया अपनाना होगा। मानस सरोवर पर उठने वाली छोटी-छोटी लहरें संकल्प हैं। वे संकल्प कैलाश नाथ के चरणों में समर्पण हैं। तीर्थयात्री मानस तीर्थ की कोमल ठंडी हवा में स्नान करके राहत पाते हैं। सर्दियों में ज्वार आने के बाद गंगा में जो गहरी शांति मैंने देखी है, वह काफी हद तक वैसी ही है। यह कोलकाता के पास गंगा की लंबाई से लगभग डेढ़ गुना है। मानस सरोवर का चक्कर लगाने के लिए आपको लगभग पचास या पचपन मील चलना पड़ता है, यानी घेरा। मैं मानस सरोवर के उत्तर में कैलाश बाबा के साथ खड़ा हूं, यहां से गुरला मांधाता पहाड़ी अजीब तरह से खूबसूरत दिखती है। हिमालय और भी दूर दिखाई देता है। चारों ओर की शांति और सुंदरता मेरे दिल को भर देती है। मैं इसे शब्दों में बयां नहीं कर सकता। इस माहौल में, कोई सोच भी नहीं सकता कि दुनिया में पाप और बुराई नाम की कोई चीज़ है।

मानस सरोवर के बारे में कई पौराणिक कहानियाँ हैं। हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार, स्वामी प्रणबानंदजी की किताब 'एक्सप्लोरेशन इन तिब्बत' से लिया गया है, ऐसा कहा जाता है कि मानस सरोवर में महान सर्प रहता है। मानस सरोवर के बीच में कल्प वृक्ष है, उस वृक्ष का फल

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩১৫

नागराज ने उसे खाकर प्राण ले लिए और बाकी फल पानी में डूबकर सोने के हो गए। मानस सरोवर को सिर्फ़ पवित्र लोग ही पार कर सकते हैं। शिव और पार्वती मानस सरोवर में नहाने आए थे, उस समय देवी सरस्वती हंस पर

सवार होकर यहां उनसे मिलने आई थीं। रामायण, महाभारत, स्कंद पुराण इस मानस सरोवर की तारीफ़ों से भरे हैं। पुराणों में कहा गया है कि महाराजा मान्धाता ने सबसे पहले इस मानस सरोवर का दौरा किया था, इसलिए इसका नाम मानस पड़ा। कई लोगों के अनुसार, यह झील सृष्टिकर्ता ब्रह्मा का मन है। इतिहासकारों का कहना है कि आर्यों के आने के बाद इस झील की बात दुनिया भर में फैल गई। भारत आते समय, वे इस जगह की सुंदरता देखकर बहुत खुश हुए।

लोकल लामा और तिब्बती मानते हैं कि भगवान बुद्ध इस मानसरोवर के बीच में बैठे हैं। एक अमर पेड़ उन्हें छाया देता है। उस पेड़ के फूल, फल और पत्तों में अमृत होता है। उसे खाने से निर्वाण मिलता है। बुढ़ापे, बीमारियों और मौत से मुक्ति मिलती है। अगर कोई सर्दियों के दिन झील की परिक्रमा करे, सिर झुकाए, तो भी उसे निर्वाण मिल सकता है। तिब्बतियों को इस तरह की परिक्रमा में लगभग पच्चीस से छब्बीस दिन लगते हैं। डूबते सूरज की रोशनी में, झील और दूर के पहाड़ एक खूबसूरत नज़ारा बनाते हैं। उस पर हंसों को देखकर, यह सच में सपनों की दुनिया जैसा लगता है। बाबा ने मुझे ब्रह्म गायत्री मंत्र की धुन दी और मैं उनके साथ जप करने लगा - ॐ भूर्भुवः स्वः तत् साबितुर्वरेण्यं भोरघो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात् ॐ.....

शाम के बाद हम वापस लौटे, शाम के बाद मैंने कैलाश बाबा का एक अलग चेहरा देखा, हमेशा मुस्कुराते रहने वाले बाबा अचानक गंभीर हो गए। गुफा में लौटकर मैंने लकड़ी जलाई, एक कड़ाही तैयार की और उसे घर ले आया। जैसे ही मैं घर पहुँचा, मैंने देखा कि बाबा एक कंबल पर ध्यान में बैठे हैं। बिना आवाज़ किए, मैंने कंबल बिछाया और अपनी माला लेकर उस पर बैठ गया।

कैलाशनाथ

अगली सुबह, बाबा ने मुझे बुलाया। जैसे ही मैं उठा, मैंने देखा कि गरमागरम आटे का सूप तैयार है, मैं हैरान था क्योंकि वह दिन में सिर्फ़ एक बार खाते हैं। जैसे ही मैं उठा, मैंने नाम जपना शुरू कर दिया। एक महीने से, यह मेरी सुबह का जप है, ओम मणि पद्मे हुं.... बाबा ने मुझसे कहा - गायत्री मंत्र का जाप करो और कोई दूसरा मंत्र नहीं। जैसा उन्होंने कहा, मैंने सौ बार गायत्री मंत्र का जाप किया और सीट से उठ गया। मैंने उनके साथ सूर्य प्रणाम और एक्सरसाइज़ करना शुरू कर दिया। जब मैंने सब कुछ खत्म किया, तब भी बाहर पूरी तरह से सुबह नहीं हुई थी।

उन्होंने मुझे आटे का कटोरा दिया और कहा, "मैं तुम्हें रास्ता बताता हूँ। तुम्हें अब कैलाशनाथ के लिए निकलना चाहिए। दिराफुक गुफा में चिट्ठी दिखा देना, कोई दिक्कत नहीं होगी। तीन दिन दिराफुक गुफा में रुकना और फिर नीचे आना। मैं तुमसे फिर परखा में मिलूँगा।" यह कहकर उन्होंने मुझे कैलाश चोटी की परिक्रमा करने का आदेश दिया।

मैंने उन्हें प्रणाम किया और चल दिया। कैलाश बाबा को इतनी जल्दी छोड़ने की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था, ऐसा लगा जैसे उन्होंने मुझे धक्का देकर बाहर निकाल दिया हो। इस व्यवहार में ज़रा भी दया नहीं थी। महात्माओं का व्यवहार आम लोगों से बिलकुल अलग होता है, वे जीवन को बिल्कुल अलग नज़रिए से देखते हैं। उनमें कोई उत्साह नहीं होता, सिर्फ़ कर्तव्य होता है। सर्दी के बारे में क्या लिखूँ, मैं तो सर्दी से धक्का खा रहा हूँ - उसके स्पर्श से बार-बार मेरी हड्डियाँ काँप उठती थीं। मैं गुफा से निकला और चलने लगा, झील मेरे बाईं ओर थी। थोड़ी देर चलने के बाद धीरे-धीरे मेरा शरीर जाग उठा। मैंने इतनी देर तक मणि मंत्र को अपना साथी बना लिया था। मेरी साँसों के साथ एक लय आ गई थी, और चलते-चलते वह मंत्र मेरे मन में आया, मैंने

फिर शुरू किया ॐ मणि पद्मे हुं ॐ मणि.... धीरे-धीरे मेरे सामने का पर्दा उठने लगा, भोर के उजाले के साथ ही मेरे सामने का मंच दिखाई देने लगा। यह कितना अद्भुत था!

कैलाश का आज एक अलग रूप है, आधी रोशनी और आधी छाया में उसका रहस्यमयी रूप हमें पता भी नहीं चल रहा है। उसे पाने के लिए हमें और रोशनी चाहिए। अज्ञानता के कोहरे को ज्ञान की रोशनी से हटाना होगा। उसके लिए हमें सूर्य देव की तपस्या की ज़रूरत है। मैंने अब ओम सूर्यंग सुंदर लोकनाथं अमृतं की प्रार्थना शुरू कर दी है......

काफी देर चलने के बाद मैं एक चौराहे पर पहुंचा। चौराहे का मतलब है दो बार चलना।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩১৭

৩১৮

पथ. मुझे अब मानसरोवर छोड़ना था, उसे छूकर और उसके सिर पर जल छिड़कते हुए- अशुद्ध, शुद्ध, सर्वत्र, अतीत, यः स्मरेत् पुंडरी कक्षां स बाह्य अवतारं सुहि- यह मंत्र कहकर मैंने उसे फिलहाल के लिए छोड़ दिया, अब मैंने सीधा उत्तर मार्ग लिया. कैलाशनाथ अब जाग चुके थे, उन्होंने भक्त के हृदय पर कब्जा कर लिया था, मैं उनके आकर्षण के साथ चलने लगा, न थकान है, न पीड़ा. मार्ग अब ऊपर की ओर चढ़ने लगा है, पर

इतना कठिन नहीं है. थोकचेन के दूसरी ओर, किसी अनजान पर्वत के पीछे, सूर्य भगवान के आगमन की तैयारियां शुरू हो गई हैं. पूरा आकाश नए रंगों में सज रहा है. उनकी छटा कैलाशनाथ के शिखर पर पड़ चुकी है, डेमचोग देव के मस्तक का शिखर सुनहरे रंग से स्पर्श हो रहा है. सारा विश्व अब चुपचाप उस ओर देख रहा है, जैसे ही कलाकार की अंतिम तूलिका का स्पर्श होगा, तत्काल विश्व उत्सव जाग उठेगा, शिव सूर्य के साथ मिल जाएंगे. यह अजीब माहौल है, अजीब खुशी है, दिल बार-बार खामोशी की लय पर नाच रहा है। हर जीव और आसमान, हवा और पानी सभी एक खुशी के पल का इंतज़ार कर रहे हैं।

फिर वो सबसे खास पल आया। दुनिया के पिता, सूर्य देव उगे, अप्सराओं ने आस-पास के बर्फ़ जैसे सफ़ेद पहाड़ों पर अपना अनोखा डांस शुरू किया - मैं हैरान खड़ा वो डांस देख रहा था। खूबसूरती की खुशी मेरे शरीर के हर रोमछिद्र से अंदर आने लगी। क्या खूबसूरती थी! खामोशी की क्या लय थी। कैलाश की क्या रोशनी थी! फिर रंगों का खेल शुरू हुआ - उसके रंगों में रंगी दुनिया होली का त्योहार मनाती हुई लग रही थी। यह त्योहार इस स्वर्ग में हर दिन मनाया जाता है। भगवान ने यहाँ रूप लिया है और अपने भक्तों के दिलों पर कब्ज़ा कर लिया है। स्वर्ग से धरती पर खुशी का झरना बह रहा है।

मेरा सिर परमपिता के सामने श्रद्धा से झुक गया। अब मुझे समझ आया कि बाबा ने मुझे कल रात क्यों उठाया और यहाँ भेजा। मैं बाबा का शुक्रगुजार हूँ। वह सुंदर नज़ारा देखकर मेरा जीवन धन्य हो गया। बहुत ठंड थी, इसलिए मुझे फिर से चलना पड़ा। मैंने देखा कि सड़क धीरे- धीरे ऊपर चढ़ने लगी है। अब कैलाश की चोटी पर चढ़ाई शुरू हो गई है।

मानस सरोवर और राक्षस सरोवर के उत्तर में एक पहाड़ों की रेंज है, इस पहाड़ों की रेंज में दो पहाड़ हैं। एक का नाम 'ला' है और दूसरे का नाम

'झोंग', जिनमें से सबसे ऊंची चोटी कैलाश शिखर है। मुझे वहीं जाना है। लैंगबोना गुफा से डिराफुक गुफा की दूरी सोलह से बीस मील के बीच है। मुझे लगता है कि मैं पहले ही छह या सात मील चल चुका हूँ। सूरज धीरे- धीरे तेज़ हो रहा है, और इस समय चलना अच्छा लग रहा है। रास्ते की थकान पहले जितनी नहीं है। कैलाश शिखर असल में एक पहाड़ पर मंदिर की तरह खड़ा है। कैलाश शिखर पर चढ़ने का सवाल ही नहीं उठता, यह अचानक सीधा खड़ा हो जाता है और उस पर हमेशा बर्फ़ का गुंबद बना रहता है। अगर आपको कैलाश की परिक्रमा करनी है, तो आपको 'ला' या 'झोंग' पहाड़ों पर जाना होगा।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

आपको ऊपर चढ़ना होगा, इन दोनों पहाड़ों के संगम पर ही एक प्राकृतिक मंदिर बना है। इसकी बनावट भी बहुत सुंदर है। यह एक ठोस मंदिर जैसा है और इसके नीचे दो पवित्र झीलें हैं। मानस सरोवर में रजोगुण है और राक्षस सरोवर में तमोगुण है, ये दोनों गुण कैलाशनाथ के सत्वगुण के साथ मिलकर अमृतबाड़ी बनाते हैं, अमृत की वह धारा अलग-अलग नदियों के ज़रिए इंसानों तक पहुँचती है।

जैसे-जैसे मैं पहाड़ पर ऊपर चढ़ा, मुझे एक गाँव मिला। इस गाँव की तुलना थोकचेन से की जा सकती है। सड़क के दोनों तरफ ग्यारह एक-मंज़िला घर हैं। घर लगभग खाली हैं। यह वह सड़क है जो ल्हासा से गंगटोक, लद्दाख और कश्मीर जाती है। थोकचेन के बाद, मैंने मानसरोवर जाने के लिए यह सड़क छोड़ दी। यहाँ की ऊँचाई लगभग 15,000 (पंद्रह हज़ार) फ़ीट है। एक घर के पीछे कुछ गधे, याक और कुत्ते शांति से साथ रह रहे थे - मुझे देखकर कुत्ते भागे, लेकिन मेरी तरफ़ से कोई जवाब न मिलने पर, वे बेबस होकर वहीं खड़े रहे। उनका मानना था कि इस थके हुए लड़के को बिज़ी रखने का क्या मतलब है? मुझे चौराहे पर एक चाय की

दुकान मिली। कहने की ज़रूरत नहीं है, यह पहली बार था जब मैंने कैलाशखंड में चाय की दुकान देखी थी। यह किसी तरह मिट्टी, पत्थर, लकड़ियों और लकड़ी से बनी थी। दुकान के अंदर, दो लोग मुझे देख रहे थे, सबने चादर ओढ़ रखी थी। मैंने ही उनसे पूछा, "क्या तारचेन इस तरफ़ है?"

उन्होंने बिना कोई आवाज़ किए उंगलियों से आगे का रास्ता बताया। मैं भी उनसे बिना बात किए फिर से चलने लगा। पारखा गाँव के आखिर में, अचानक मेरी नज़र एक बाज़ार पर पड़ी। सारे गाँव वाले वहाँ जमा हो गए थे। ऐसा लग रहा था कि यह कैलाशखंड का इकलौता गाँव है। मैं उनके पास से गुज़रा, यानी बिना कहीं देखे, और सीधे उत्तर की ओर चल पड़ा। पारखा से लगभग एक घंटा चलने के बाद, मुझे तारचेन नाम की एक जगह मिली। लकड़ी के एक पुराने टुकड़े पर, हिंदी में साफ़ अक्षरों में 'कैलाश नाथ' लिखा था। यह पहली बार था जब मैंने तिब्बत में रास्ता देखा था। ऐसा लगा कि मुझ जैसे किसी भारतीय तीर्थयात्री ने यह सड़क का निशान लिखा है। थोड़ी दूर पर, मैंने देखा कि एक पत्थर पर तिब्बती में 'कांग-रेपोचे' लिखा है। कैलाश प्रदक्षिणा या परिक्रमा इसी तारचेन से शुरू होती है।

आखिरकार, मैं देवी-देवताओं के भगवान के चरणों में पहुंचा; मैंने अपने दिल की भक्ति को उंडेल दिया और कहा, "भगवान, आपकी कृपा से आप मुझे यहां तक लाए हैं। कृपया मुझे रास्ता दिखाएं। मैं खुद को आपके कमल के चरणों में अर्पित करता हूं।" यह कहकर, मैंने भगवान को प्रणाम किया और फिर अपने आप कहने लगा,

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय

345

महातीर्थ का अंतिम यात्री

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय...

৩১৯

तारचेन कैलाश शिखर परिक्रमा का शुरुआती पॉइंट है, मतलब हर कोई यहीं से परिक्रमा शुरू करता है और यहीं वापस आता है। परिक्रमा बत्तीस मील की होती है, और आम परिक्रमा एक दिन में पूरी हो जाती है। परिक्रमा पूरी करने में लगभग सोलह से बीस दिन लगते हैं। परिक्रमा के दौरान आराम, ध्यान और पूजा के लिए इसके चारों ओर पाँच गुफाएँ हैं। दिराफुक गुफा उनमें सबसे बड़ी है। तारचेन में सिर्फ़ एक घर है और उसमें कोई दरवाज़ा नहीं है - यह पहले वहाँ रहा होगा। यहाँ का जीवन खानाबदोशों के कुछ तंबुओं के आस-पास ही रहता है। मैंने बच्चों और बूढ़ों को गिना तो पाया कि वे सिर्फ़ नौ थे। वहीं से आप कुछ ज़रूरी चीज़ें जैसे दही, मक्खन और चलने की छड़ियाँ खरीद सकते हैं। वे या तो परिक्रमा किराए पर लेते हैं या थोड़े से पैसे के बदले गाइड के तौर पर मदद करते हैं।

मेरे पास खरीदने के लिए कुछ नहीं है और गाइड हायर करने का तो सवाल ही नहीं उठता। कुछ खानाबदोश लड़के मेरे पास आए और दूर खड़े होकर झुकने लगे। कैलाशनाथ की इस पवित्र भूमि में रहने वाले लोग ज़रूर नेक होते हैं, इसलिए मैंने बिना उन्हें बदले में झुककर प्रणाम किया, न तो उन्हें आशीर्वाद दिया और न ही उन्हें प्रणाम किया।

[illegible] [illegible] [illegible] [

मुझे कुछ देर के लिए ठंड से राहत दी। अब मैं कैलाशनाथ के नीचे पहुँच गया था। पहाड़ की खासियत यह है कि पास जाते ही उसकी पहचान गायब हो जाती है। दूर से उसका सुंदर रूप दिखता है, और पास जाने पर उस विशालता का बस एक छोटा सा हिस्सा ही कैद होता है। वह विशालता हज़ारों गुना बड़ी हो जाती है, हम जैसे छोटे लोगों को और भी छोटा बना देती है, हम खो जाते हैं। कैलाशनाथ के नीचे पहुँचकर, मैं कैलाश पर्वत के हज़ारों पत्थरों के बीच खो गया हूँ।

इस तरह से गांव वाले नदी पार करते हैं, जहां ब्रह्मपुत्र नदी बनी है
- पेड़ के तने फेंककर।

मैं यहाँ से कैलाशनाथ की चोटी नहीं देख सकता। जैसे मंदिर के गेट से मंदिर की चोटी नहीं दिखती। मेरी बाईं ओर, मैंने कई पहाड़ों की चोटियाँ भी देखीं - वे अभी भी पूरी तरह बर्फ़ से ढकी हुई हैं। वह बर्फ़ अभी पिघलनी शुरू हुई है। कई छोटी, कलकल करती धाराएँ कभी-कभी आपस में मिलकर छोटी नहर जैसी पानी की धाराएँ बना लेती हैं। झरनों के रूप में, वे बार-बार इधर-उधर से झाँक रही हैं, तीर्थयात्रियों का हौसला बढ़ा रही हैं। नज़ारा बहुत सुंदर है। इस इलाके में पेड़ नहीं हैं, लेकिन चट्टानों और बर्फ़ ने एक पूरी नई जादुई दुनिया बना दी है। चलना मुश्किल है, लेकिन

347-348-

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩২১

৩২২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

वह दर्द एक स्वर्गीय एहसास में खुशी में बदल रहा था। मैं नदी के किनारे चलता रहा।

काफी देर बाद, एक और पेड़ के तने वाला पुल पार करने के बाद, एक घर दिखा। मैंने मन ही मन सोचा - यह परिक्रमा की दूसरी गुफा होगी, यानी डिराफुक गुफा। मेरा अंदाज़ा गलत नहीं था। और जैसे-जैसे मैं पास पहुँचा, मुझे एक चोर्टेन और एक प्रार्थना झंडा दिखा। ऊँचाई अब लगभग सोलह हज़ार दो सौ फ़ीट (समुद्र तल से 16200 फ़ीट ऊपर) थी। यहाँ से, ठीक मेरे सिर के ऊपर, मैंने महान तीर्थ कैलाश चोटी का चाँदी के रंग का गुंबद देखा, जिसे मैंने फिर से प्रणाम किया। उसके ठीक नीचे खड़े होकर, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं खुद महादेव की गोद में आ गया हूँ और शरण ले ली है। मैंने ब्रह्मांड के भगवान की शरण ले ली है, अब डरने की क्या बात है? यह एक अजीब एहसास है! यही असली राहत है।

दिराफुक गुफा का मुख्य मंदिर ढूंढने में कोई मुश्किल नहीं हुई। अंदर जाते ही मैंने भगवान बुद्ध की मूर्ति के सामने प्रार्थना की, जिसके बगल में भगवान डेमचोग (डोमचेक) और देवी दोरजे फागमो की मूर्तियां हैं। कैलाश के स्वामी त्रिभुवनेश्वर हमारी हरपार्वती हैं। नर और मादा लिंगों की रचना का मूल कारण। इस बनाने वाले की कृपा के बिना सृष्टि का रहस्य जानना नामुमकिन है। इसलिए, वे तांत्रिकों के सबसे पूजनीय देवता हैं। भगवान के स्वामी कांग रिनपोछे का मुख्य मंत्र यावजंग है। जोड़ों के मिलन के इस रहस्य में कुलकुंडलिनी की मुख्य धारा छिपी है। शिव पार्वती और हर गौरी के रूप में इस मूर्ति

को इष्ट मंत्र के रूप में जपना होता है। और मूर्ति की छवि को मन में बसाना होता है, नर और मादा लिंगों के अंतिम कारण का ध्यान करना होता है, और फिर सिद्धि मिलती है। यह सिद्धि हज़ार चक्रों का मूलाधार चक्र से मिलन है। चारों पंखुड़ियों का मुख्य आधार, संग-बंग-शंग-शंग, लंग मंत्र में मिलते हैं। फिर, अपनी चमक से, वह प्रकृति शक्ति एक के बाद एक चक्र से गुज़रते हुए शिव शक्ति की ओर बढ़ती है, और सातवें चक्र में, वह पृथ्वी की दुनिया बन जाती है। वह अमृत के सागर में मिल जाती है। मैं उस दयालु, ज्ञान और बुद्धि देने वाले, जो शक्ति का अवतार है, उसे अपनी दिल से भक्ति अर्पित करने लगा।

हे देवी माँ, आप मन हैं, आप आकाश, अग्नि, जल और पृथ्वी हैं, आपके अलावा इस दुनिया में कुछ भी नहीं है। सब कुछ आपकी रचना है, इसीलिए आप शिव के आसन पर विराजमान हैं। आप मन की मूर्ति हैं, मन के आनंद की मूर्ति हैं, इस दुनिया में ज्ञान और शक्ति की मूर्ति हैं।

प्रार्थना के बाद, मैं ध्यान करने बैठ गया। दीपक की हल्की रोशनी में, मंजुश्री की छवि धीरे-धीरे मेरे दिल पर छा गई। अपना ध्यान तोड़ने के बाद, मैं मंदिर के बाहर खड़ा हो गया। दोपहर हो चुकी थी। मुझे कोई नहीं दिखा और मैं गुफा के चारों ओर घूमने लगा। गुफा को एक बड़ा दो मंज़िला घर कहा जा सकता है। जैसे ही मैं घर के पीछे गया, मुझे बातचीत सुनाई दी। आवाज़ का पीछा करते हुए, मैं एक कमरे के सामने खड़ा हो गया। फिर मैंने दरवाज़े से झाँका।

00000

कैलाशपति डोमचेक और उनकी पत्नी दोर्जे फागमो (शिव और शक्ति)

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩২৩

मैंने कुछ लामाओं को एक साथ बैठकर बातें करते देखा। ऐसा लग रहा था कि वे किसी तरह की बहस के लिए तैयार हो रहे थे।

मुझे कुछ कहने की ज़रूरत नहीं पड़ी, एक अजनबी को देखकर वे एक-एक करके मेरे पास आए। मैंने उन्हें प्रणाम किया और झूले से बुद्धिमान गुरु का लिखा खत निकाला। खत एक हाथ से दूसरे हाथ जाता रहा और आखिर में एक बुज़ुर्ग लामा के हाथ में आ गया। उनके सिर पर टोपी देखकर मैं समझ गया कि वे शायद दिराफुक गुफा के मठाधीश थे। वे बहुत घी से भरे हुए लग रहे थे, चर्बी के दबाव से उनका शरीर सीट पर दबा हुआ लग रहा था। उन्होंने मेरा खत बार-बार पढ़ा और फिर उसे पलटा। मुझे नहीं पता कि खत में क्या लिखा था, लेकिन मठाधीश के हाव-भाव देखकर ऐसा लगा कि उन्हें खत के सार पर यकीन नहीं हो रहा है। मैं चुपचाप वहीं खड़ा रहा। मुझे लगा कि शायद वे मुझसे कहेंगे कि मैं बैठकर दूर से आए इस बेचारे तीर्थयात्री को खाना खिला दूं और फिर रुक जाऊं। उन्होंने खत पढ़ा और मुझे पूरी तरह नज़रअंदाज़ करने का नाटक किया। उनके हाव-भाव देखकर मैं थोड़ा हैरान हुआ, यहाँ तक कि निराश भी हो गया। भगवान कैलाशनाथ के दर्शन से मेरे मन में जो अपार आनंद उमड़ रहा था, वह अचानक हिल गया।

मेरे आस-पास इक्कीस लामा थे, सभी जवान और जवान। उनसे कोई जवाब न मिलने पर, मैंने उनसे इशारे से पूछा, "मुझे बहुत भूख लगी है, क्या मुझे कुछ भीख मिल सकती है?" और मुझे थोड़ा आराम भी चाहिए। मेरी बातें न समझने का कोई कारण नहीं था, लेकिन वे किसी अनजान वजह से रुक गए थे। उनका रवैया समझना मुश्किल था। मुझे लगा जैसे मैंने इस गलत

समय पर उनके बीच आकर कोई बहुत बड़ा गुनाह कर दिया हो। कोई और रास्ता न देखकर, मैं आराम करने के लिए मंदिर वापस चला गया। कम से कम मैं मंदिर की चटाई पर बैठकर आराम तो कर सकता था। मैंने मन ही मन सोचा, शायद कैलाश परिक्रमा के दौरान सभी लोग व्रत रखते हैं, तो शायद वे मेरी कसम नहीं तोड़ना चाहते।

मैं दिराफुक गुफाओं के इस मंदिर को मंदिर के बजाय एक लाइब्रेरी और प्रिंटिंग हाउस कहूंगा। एक तरफ ठाकुर की वेदी, सैकड़ों घी के दीये, मूर्तियां और पूजा का फर्नीचर है, उसके सामने पुजारियों और भक्तों के बिस्तर हैं, और दूसरी तरफ दीवारें किताबों और प्रिंटिंग के सामान की लाइनों से भरी हैं। जब प्रिंटिंग की बात आती है, तो सब कुछ हाथ से छपाई के लिए है, जो लकड़ी, स्याही और भारी कागज से भरा है। दीवारें सभी भारी लकड़ी की अलमारियों से भरी हैं। वे सभी भारी किताबों से भरी हैं। हर किताब के सामने, एक नाम लिखा कपड़ा लटका हुआ है। अवलोकितेश्वर, मंजुश्री और यवजंग की मूर्तियों के चेहरे उनके कंधों पर अनगिनत कंठों के दबाव से लगभग ढके हुए हैं। दीये को देखकर ही ऐसा लगता है जैसे यह एक हजार साल पुराना है। जब धर्मराज युधिष्ठिर स्वर्ग गए थे, तो ऐसा लगता है कि उन्होंने इसी दीये की रोशनी में ध्यान किया था। मैं केदारनाथ के दीये को इसकी तुलना में नया कहूंगा। मंदिर के हर खंभे से बहुत बारीकी से बने टांके लटके हुए हैं। उनमें से ज्यादातर

৩২৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

कैलाशनाथ मानसरोवर के अलग-अलग काल्पनिक रूप, मंडल और डेमचोग की शान एक साथ बुनी हुई है। माहौल बहुत रहस्यमयी है। जब मैं इधर-उधर देख

रहा था, तो कुछ लामा एक-एक करके दरवाज़े से अंदर आए और मेरे आस-पास इकट्ठा होने लगे। उनके बिना बोले और चुपचाप आने से मुझे थोड़ा अजीब लगने लगा। बाद में मुझे एहसास हुआ कि उनका इरादा नेक था, वे सब मुझे जानना चाहते थे। हम चुपचाप नज़रें मिलाकर बातें करने लगे।

बाद में, उनके कहने पर मैं बाहर आया। फिर, उनके पीछे-पीछे मैं किचन में गया। वहाँ, उनोन के सामने दो और लामा बैठे थे। उन्होंने मुझे बहुत प्यार भरी मुस्कान के साथ उनोन के बगल में बिठाया और खाने दिया। मुझे लगा जैसे वे मेरे अपने लोग हों, मैं उनके कपड़ों से बता सकता था कि वे आम लामा थे। डिराफुक गुफा में सिर्फ़ यही दो लामा मुस्कुरा रहे थे। बाकी सबके चेहरे तपस्या की आग में सूख गए लग रहे थे। यहाँ, बहुत देर बाद, मुझे चावल और सूखे मीट का शोरबा मिला। मैंने पेट भरकर खाया। शाम होने से बहुत पहले, लामाओं ने अपनी प्रार्थनाएँ खत्म कीं और खाने बैठ गए। मुझे किचन के एक कोने में काफ़ी गर्मी लगी और मैंने अपना कंबल बिछाकर बैठ गया। मंदिर को छोड़कर, रात में कोई लाइट नहीं जलाता, जिससे लाइट का खर्च बचता है और शरीर के लिए भी अच्छा होता है। चूँकि मैंने सबसे आखिर में खाया था, इसलिए मैंने दूसरी बार नहीं खाया।

शाम के बाद, जब दिन का उजाला था, सब लोग अपने-अपने घर चले गए। मुझे हेड लामा फिर से नहीं दिखे। बेशक, मैंने उन्हें देखने की कोई कोशिश भी नहीं की। मैं उस दिन बहुत दूर से आया था, इसलिए मैं बहुत थका हुआ भी था। आग और पनाह पाकर, मैं कंबल में आधा लिपटा हुआ लेट गया।

सही माहौल मिलते ही मैं सो गया। अगले दिन मैं जल्दी उठा। लामाओं को सुबह ही खांसी आने लगी थी। मैं जल्दी उठा और तैयार हो गया। मैं मंदिर में गया, प्रार्थना की और फिर परिक्रमा के लिए निकल पड़ा। बाबा ने मुझे रास्ता बता दिया था, इसलिए कोई दिक्कत नहीं हुई,

दिराफुक गुफा से एक रास्ता सीधे उत्तर में ला नदी के किनारे-किनारे सिंध नदी के सोर्स की ओर जाता था। दूसरा रास्ता नदी पार करके कैलाशनाथ के चारों ओर घूमकर तारचेन वापस आता था। दिराफुक गुफा से सिर्फ़ दो रास्ते हैं, इसलिए खो जाने का कोई चांस नहीं था। मैंने नदी पार की और पूरब की ओर बढ़ने लगा। पहाड़ी रास्ता अभी पूरी तरह पिघला नहीं था, इसलिए मैं किसी तरह चट्टानों और बर्फ़ के बीच से आगे बढ़ा। जो लोग इस रास्ते से नहीं आए हैं, उन्हें शब्दों में या लिखकर समझाना मुश्किल है कि सर्दी कितनी कठोर हो सकती है।

अब सड़क चढ़ाई पर थी। अब लगभग हर जगह बर्फ थी।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩২৫

बर्फ़। मैंने ऐसी बर्फ़ पर चलना शुरू किया जो सफ़ेद पर सफ़ेद रुई और नमक के पहाड़ जैसी थी। किस्मत से तिब्बतियों ने मुझे अपने जूते दे दिए वरना मुझे सर्दियों में यहीं रहना पड़ता। सड़क का नाम ही नहीं है, अब यह चारों ओर बर्फ़ से ढकी हुई है। सफ़ेद पर सफ़ेद, एक भी पेड़ या घास नहीं। सुबह की रोशनी अब काफ़ी साफ़ है, लेकिन मुझे कोई धूप या सूरज का उगना नहीं दिख रहा है। मेरे सामने एक और छोटी पहाड़ी है, जिसके ऊपर से सड़क गुज़री है। यह पहाड़ी सूरज को छिपा रही है। यहाँ से कैलाश पीक भी दिखाई नहीं देता क्योंकि इस सड़क और कैलाश पीक के बीच कई ऊँची पहाड़ियाँ खड़ी हैं।

यह पहली बार है जब मैं तिब्बत जाते हुए बर्फ़ पर चल रहा हूँ। यह बर्फ़ रूई जैसी नहीं है, बल्कि आसमान से गिरी रूई जैसी है जो ठंड में जम गई है। ज़ीरो डिग्री पर हवा कंडेंस होकर बर्फ़ के रूप में ज़मीन

पर गिरती है, लेकिन इससे भी ज़्यादा ठंडे तापमान में यह जम जाती है और सख़्त पत्थर बन जाती है। मुझे बहुत ध्यान से चलना पड़ता है। पत्थरों पर काई इतनी फिसलन भरी हो गई है कि अगर मैं उन पर थोड़ा भी पैर रख दूँ, तो मुझे गिरने और अपनी जान जाने का डर है।

क्योंकि रास्ता धीरे-धीरे ऊपर की ओर जा रहा था, इसलिए मैं बहुत सावधानी से चल रहा था, लेकिन फिर भी हांफ रहा था। करीब एक घंटे बाद मैं पहाड़ के सबसे ऊंचे हिस्से पर पहुँच गया। ऊपर उठते ही मेरी सांस फूल गई, यहाँ से मुझे आस-पास का एक और खूबसूरत नज़ारा दिखा। मेरे दाईं ओर कैलाश पीक था, जिसके सामने मानस और राक्षस सरोवर थे। कैलाश पीक और सरोवर के बीच की दूरी पहाड़ ने तय की थी। इस छोटे से पहाड़ को शिव भक्त शिव का बैल कहते हैं, और कुछ के अनुसार नंदी। तिब्बती लोग इसे येलक जंग कहते हैं। सूर्य देव के दर्शन करके मैंने राहत की सांस ली। सूर्य देव की स्थिति देखकर मुझे एहसास हुआ कि वे बहुत पहले ही उग चुके हैं। यह कैलाश परिक्रमा का सबसे ऊंचा हिस्सा है। इस जगह को डोलमा-ला कहते हैं जो 18,600 (अठारह हज़ार छह सौ) फीट ऊंचा है। इस बार ज़्यादा परेशानी की कोई वजह नहीं थी। डोलमा-ला से, मुझे दाईं ओर गौरीकुंड दिखा। एक छोटी सी झील। हालांकि यह डोलमा-ला के बहुत पास लगता है, लेकिन इसकी दूरी करीब एक मील है। गौरीकुंडा में कोई नदी नहीं बहती है और न ही यहां से कोई नदी निकलती है। बर्फ पहाड़ों के बीच गिरती है और उनमें जमा हो जाती है।

मैं सड़क छोड़कर बहुत घबराते हुए गौरीकुंड के पास पहुँचा। जब मैंने पानी को छूने की कोशिश की, तो मेरा हाथ बर्फ़ से टकराया। पानी जमा हुआ था और शीशे जैसा साफ़ था। यह मेरे लिए बिल्कुल नया अनुभव था। मैंने सुना था कि ठंड में पानी जम जाता है, लेकिन इसके बारे में किसी किताब में सुनना या पढ़ना और अपनी आँखों से देखना और छूना बिल्कुल अलग है। यह मेरे लिए एक नया खेल था। पहले मैंने उसे छुआ और देखा कि

पानी शांत और सख़्त था। मैंने कुछ पत्थर उठाए और उन्हें पानी में फेंका और देखा कि वे टूटे नहीं, बल्कि झील पर लुढ़क गए।

৩২৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

फिर, बहुत डर के साथ, मैंने उस पर पैर रखा यह देखने के लिए कि यह मेरा वज़न सह सकता है या नहीं। कई टेस्ट के बाद, मैं आखिरकार झील पर खड़ा हो गया। इस नए अनुभव से मेरा दिल खुशी से उछल पड़ा। अब मैंने उस पर चलना शुरू किया। मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि मैं एक भरी हुई झील पर चल रहा हूँ। कुदरत का खेल कितना अजीब है! एक चमत्कारी शक्ति का संकेत।

मेरे मन में एक अजीब सी खुशी है, और साथ में थोड़ी घबराहट भी। अगर पानी अचानक उसी जादू से अपना लिक्विड रूप ले ले जिससे वह इतना सॉलिड बना है, तो मुझे अपनी यह हालत फिर कभी नहीं देखनी पड़ेगी। मेरा आखिरी चैप्टर इसी गौरीकुंड के बीच में होगा। अगर ऐसा है, तो क्या नुकसान है? इस महान तीर्थयात्रा में मौत का मतलब पक्का अमर होना है। मैंने लॉजिक से अपनी घबराहट दूर की। मैं झील के बीच से अंदर का नज़ारा देख सकता था। पानी के नीचे कुछ एल्गी जैसे पौधे और पत्थरों की परतें। कभी-कभी, फंसे हुए बुलबुले, हीरे की तरह कुछ नहीं पर तैरते हुए। झील पर चलते हुए, मैं कई बार गिर पड़ा। यह अच्छी बात है कि कंबल और चादर की वजह से मेरा शरीर सीधे सख्त बर्फ पर नहीं गिरा, वरना मेरे हाथ या पैर टूट जाते और मैं यहीं पड़ा होता। मैं बर्फ पर इस चलने की तुलना तालाब में एल्गी से ढकी सीढ़ी से कर सकता हूँ। मुझे बहुत सावधानी से चलना पड़ता है, डर रहता है कि थोड़ी सी लापरवाही हुई तो फिसल जाऊँगा। खुशकिस्मती से, यह झील मानसरोवर जितनी बड़ी नहीं है -

करीब आधे घंटे में मैं दूसरी तरफ़ पहुँच गया। मैं किनारे पर खड़ा होकर इस गौरीकुंड को बार-बार देखता रहा। मैं पूरी भरी हुई झील पर चला और पानी की एक भी बूँद मुझे छूती नहीं थी; यह सोचना भी कमाल का है, एक अविश्वसनीय सच। इस अनुभव को और पक्का करने के लिए, मैं फिर से उस पर चला और उत्तर की ओर वापस आ गया, यानी उस जगह पर जहाँ से मैंने शुरू किया था। मैं कहूँगा कि यह कैलाश परिक्रमा का मेरा सबसे बड़ा अनुभव है। अगर कोई नया अनुभव खुशी देने वाला हो, तो वह प्रेरणा देता है, और उसी प्रेरणा से, मैंने फिर से परिक्रमा का रास्ता अपनाया।

गौरीकुंडा के बाद छोटे-छोटे झरनों का राज शुरू हुआ, मैं अब पहाड़ों से बहुत नीचे उतर आया था, यहाँ की बर्फ़ अभी गर्मी में पिघलनी शुरू हुई थी। आवाज़ की लहरों का राज अब मेरे कानों के पास शुरू हो गया था। बहुत बाद में मुझे एक पहाड़ी नदी मिली - यह 'झोंग' नदी है। यह झोंग नदी कालीघाट की आदिगंगा से छोटी है, इसलिए इसे पार करने का खतरा कम है। वहाँ मैंने खानाबदोशों का एक टेंट देखा, यह कहना गलत होगा कि मैंने उन्हें देखा, उन्होंने मुझे देखा। तीन बच्चों ने मुझे देखा और दौड़कर आए और जीभ निकालकर सड़क पर खड़े हो गए, मैंने उनके सिर को छुआ और थोड़ा प्यार से जवाब दिया। उन्होंने मुझे लगभग ज़बरदस्ती अपने टेंट में खींच लिया। दोनों लड़के लगभग दस या बारह साल के थे, और

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩২৭

लड़की और भी छोटी थी। जैसे ही मैं टेंट के पास पहुँचा, उनका गार्डियन दौड़कर मेरे पास आया और झुककर प्रणाम किया। मुझे थोड़ी हैरानी हुई क्योंकि तिब्बती लोग आमतौर पर जीभ निकालकर झुकते हैं।

ऐसा लगता है कि उन्होंने यहाँ हिंदू तीर्थयात्रियों के लिए यह आदत अपना ली है। मैं टेंट में घुसा - टेंट भारी तिरपाल से ढका हुआ था। वहाँ बीच के कुछ गद्दे और बहुत सारा ऊन था। ऊन ऐसा लग रहा था जैसे अभी-अभी भेड़ से काटा गया हो।

उन्होंने मुझे कुछ चीज़ें लगभग मुफ़्त में बेचने की कोशिश की, लेकिन मैंने इशारों से उन्हें समझा दिया कि मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है। अपने ऊनी कपड़े नहीं बेच पाने पर, उन्होंने कुछ डिब्बे खोले और मुझे उस इलाके के कुछ कीमती पत्थर दिखाए। बदकिस्मती से, मेरे पास पत्थर खरीदने के पैसे नहीं थे, चाहे वे कितने भी सस्ते क्यों न हों। लेकिन वे यहीं नहीं रुके। उन्होंने एक पुराना लकड़ी का डिब्बा निकाला और मुझे उस इलाके की धन्वंतरि दवा के कुछ सैंपल दिखाने लगे।

मैंने उन्हें रुकने का इशारा किया, और आखिर में समझाया कि अगर वे मुझे एक कटोरी गर्म दूध, चाय, या कुछ खाने को दे सकें तो मुझे खुशी होगी। यह कहकर मैंने उन्हें दो आने पैसे दिए। जैसे ही उस औरत को पैसे मिले, उसने तुरंत टेंट के कोने में रखे एक कटोरे से फटे हुए दूध के कुछ टुकड़े मुझे दिए, और फिर समझाया कि उनके पास मुझे देने के लिए और कुछ नहीं है। मेरी भूख मिटाने के लिए इतना ही काफी था। यहाँ से मानस सरोवर और राक्षसताल बहुत पास लगते हैं। मैं झोंग चू के किनारे- किनारे चलता रहा। जब सूरज ठीक सिर के ऊपर था, मैं जुथुलफुक गुफा पहुँच गया।

जैसे ही मैं बाहर के आंगन में घूमकर दरवाज़ा खटखटाने ही वाला था कि पास के कमरे में एक लामा ने मुस्कुराते हुए मेरा स्वागत किया। उन्हें बूढ़ा और समझदार देखकर मैं भक्ति से भर गया। मुझे डिराफुक गुफा का लामा बिल्कुल पसंद नहीं था, लेकिन यहाँ लामा को देखकर मुझे भगवान जैसा महसूस हुआ। कम उम्र के बावजूद, वह पचास से ज़्यादा के

थे। वह मुस्कुराते हुए मुझे सीधे अपने प्रार्थना कक्ष में ले गए। वहाँ प्रार्थना करने के बाद, हम किचन में पहुँचे। वहाँ दो और तिब्बती बैठे थे, आग जला रहे थे - मुझे देखते ही वे खड़े हो गए। मेरे हाव-भाव देखकर, वे समझ गए कि मैं एक साधु हूँ, और बिना किसी झिझक के उन्होंने साम्पा का एक कटोरा गर्म करके मुझे खाने के लिए दिया - मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और कटोरे से एक घूँट लिया। हम लोगों को देखे बिना उनके अंदर के भगवान को जान सकते हैं। जुथुलफुक गुफा के बड़े लामा को देखकर ही मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने कोई भगवान देख लिया हो। हिमालय की शान उनके प्यारे चेहरे और पर्सनैलिटी में झलकती है। जैसे ही मैं इस गुफा में दाखिल हुआ, इस महान व्यक्ति ने चुपचाप मुझे आशीर्वाद दिया और अपने घर में बिठाया, फिर मुझे खाना खिलाया और वापस भेज दिया।

৩২৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और मेरे सफ़र में मेरी हिम्मत बढ़ाई। बिना मांगे उन्होंने मुझे सब कुछ दिया, मुझे सब कुछ मिला, लेकिन क्या मैं उन्हें वह भक्ति दे पाया जिसके लिए मैं अपनी जान कुर्बान कर दूं?

जुथुलफुक से, तीर्थयात्री तारचेन में धर्मशाला जाते हैं। वहाँ वे कैलाश परिक्रमा पूरी करने के लिए प्रार्थना और पूजा करते हैं। बाबा ने मुझे सीधे परखा जाने और वहाँ उनसे मिलने के लिए कहा। इसलिए मैंने परखा या तसम का रास्ता लिया और दोपहर से पहले परखा चौराहे पर पहुँच गया। वहाँ से, मैंने कैलाश चोटी की ओर देखा, श्रद्धा से सिर झुकाया,

नदी का पानी अपने सिर पर छिड़का और कैलाश परिक्रमा खत्म होने का ऐलान किया।

355

कैलाश बाबा

चौराहे पर चाय की दुकान पार करते ही दो-तीन लोग मेरी तरफ दौड़े - मैंने हैरानी से उन्हें देखा। लगभग हांफते हुए उन्होंने बताया कि गुरुजी मेरा इंतज़ार कर रहे हैं। गुरु! मैंने मन ही मन दोहराया - कौन से गुरु? तिब्बत में तो सिर्फ़ लामा मत्रेई ही मेरे गुरु हैं। और जिनके दर्शन को मैं इस कैलाश खंड में ईश्वर का दर्शन मानता हूं, वे कैलाश बाबा हैं - तो क्या वे वही हैं जिन्होंने मेरे लिए लांगबोना गुफा छोड़ी थी? मन में सवाल लिए मैं उनके पीछे चल पड़ा। चौराहे से थोड़ा आगे चाय की दुकान के बगल वाले एक घर में घुसते ही मुझे कैलाश बाबा के दर्शन हुए। मुझे देखते ही उन्होंने कहा - आइए, मुझे पता है कि आप दिराफुक गुफा में एक रात से ज़्यादा नहीं रुकेंगे। मैंने उन्हें प्रणाम किया और खड़ा हो गया, फिर मन ही मन कहा - आप अंतर्यामी नहीं हैं, आपके दर्शन मुझे इतनी जल्दी यहां कैसे हो गए? दोनों तिब्बतियों ने बाबा को प्रणाम किया और लौट गए। बाबा ने शायद इस इलाके में लगभग सभी को बता दिया था कि मैं इस तरफ जा रहा हूं। जब मैं परखा आया, तो वह इसी घर में रुके थे। घर के मालिक और उनकी पत्नी बाबा के भक्त लग रहे थे। बाबा ने कहा कि परखा गाँव इस इलाके में बहुत खास जगह है। यहाँ का तसम थोकचेन से ज़्यादा मशहूर है। कैलाश मानस जाने वाले सभी यात्री यहाँ अपना बाज़ार और हाट लगाने आते हैं। यहाँ का राजा भी धार्मिक व्यक्ति है। राक्षसताल या लंगक त्सो परखा गाँव के पास है। मैंने बाबा से राक्षसताल की महानता के बारे में सुना।

राक्षसताल और मानस सरोवर जुड़वाँ झीलें हैं, एक को दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। कहा जाता है कि रावण ने इसी झील के किनारे श्रीदेवी के लिए तपस्या की थी। राक्षसताल से मानस की दूरी सिर्फ़ एक मील है। मशहूर सतलुज नदी इसी राक्षसताल से शुरू होती है। धार्मिक तिब्बती सर्दियों में एक साथ राक्षसताल और मानस सरोवर की परिक्रमा करते हैं। कई लोगों के अनुसार, इसी राक्षसताल में कुबेर का खजाना छिपा है, इसलिए इन दोनों झीलों के बीच के इलाके में आज भी धूल में सोने की धूल है। यहां की रेत में सोना मिलता है। तिब्बतियों के लिए यह जगह कुबेर की जगह है। यहां से यह सोने की धूल ले जाना बहुत बड़ा पाप है। तिब्बतियों ने इसे कभी छुआ तक नहीं है। परम पावन दलाई लामा को एक बार यहां के लोगों ने एक बहुत बड़ा सोने का पत्थर तोहफ़े में दिया था, लेकिन परम पावन दलाई लामा ने यह कहते हुए उसे लेने से मना कर दिया कि यह स्वर्ग का खज़ाना इंसानों के लिए नहीं है।

৩৩০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

कोई हक नहीं है। फिर उस सोने के पत्थर को राक्षस के तालाब में वापस डाल दिया जाता है और ज़मीन के नीचे रख दिया जाता है। हमारे मन की दो अवस्थाएँ होती हैं, एक दैवीय और एक राक्षसी। एक हाँ कहती है और एक ना कहती है - इन दो शक्तियों के बीच खींचतान के कारण इंसान के मन को कंट्रोल करना नामुमकिन हो जाता है। उस समय कैलाश के भगवान को तपस्या करनी पड़ती है। उनकी कृपा और आशीर्वाद से राक्षसी शक्ति कम हो जाती है और दैवीय शक्ति पैदा होती है। इसी दैवीय शक्ति से इंसान अमरता पाते हैं।

अगले दिन, हम सुबह जल्दी उठे और राक्षसताल के पास खड़े हो गए। सुबह-सुबह शांत झील पर कुछ हंस चर रहे थे। दूर गुरला मांधाता पर अभी-अभी भोर का रंग दिखा था। नदी के किनारे कुछ लड़के लहरों में तैर रहे थे और असमिया मछलियाँ इकट्ठा कर रहे थे। राक्षसताल और मानस में देखने में कोई फ़र्क नहीं था। लहरें, हंस और पानी सब एक ही रंग के थे।

कैलाश का लगभग चक्कर लगाने वाली दो नदियाँ, लाचू और झोंग चू, मिलकर इस राक्षसी तालाब में गिरती हैं। संगम के किनारे एक छोटा सा लकड़ी का घर है। उस घर के बगल में आस-पास के इलाके से पत्थर इकट्ठा करके एक झोपड़ी बनाई गई है। हम लकड़ी के घर में आए और अंदर गए। घर का दरवाज़ा खुला था, और जैसे ही हम अंदर गए, हमने देखा कि पाँच और लोग पहले से ही वहाँ बैठे थे। उनके बीच में एक कढ़ाई में लकड़ी की आग जल रही थी। हम भी उनके साथ आग के चारों ओर जाकर बैठ गए। पिताजी ने उन्हें देखा और कहा, "चांग के दो कटोरे बनाओ।" जैसे ही उनमें से एक ने उनकी बात सुनी, वह उठा और झील से पानी लाया और उसे एक जग में डाल दिया। पिताजी ने मुझे बताया कि इस झील के किनारे एक तरह की काई जैसी घास पाई जाती है। वे हर दिन सुबह जल्दी उस घास को इकट्ठा करने आते हैं और उसे बेचने के लिए बाज़ार ले जाते हैं। इससे बहुत अच्छी रोटी बनती है जो खाने में बहुत अच्छी होती है। थोड़ी ही देर में हमें चांग मिल गया। चांग खाने के बाद, हमने वार्मअप किया और आराम से बैठ गए। मेरा कंबल और बैग मेरे ठीक बगल में थे, इसलिए जैसे ही मुझे वे मिले, हम उन पर एक-दूसरे के सामने बैठ गए। कुछ देर चुप रहने के बाद, मेरे पापा ने अचानक पूछा, "तुमने कहा था कि तुम्हारे मम्मी-पापा नहीं रहे। क्या तुम्हें उनके नाम याद हैं?"

- बिल्कुल!

-क्या आपको अपने दादाजी का नाम याद है?

"जी सर," मैंने जवाब दिया।

ठीक है, बस इतना ही। यह कहकर बाबा पद्मासन में बैठ गए और फिर मुझसे कहा कि मैं अपनी आँखें बंद कर लूं और कैलाश की चोटी की कल्पना करूं।
मैंने वैसा ही किया जैसा उन्होंने कहा।

काफी देर बाद उन्होंने कहा, "इस बार, तुम वही बोलो जो मैं कहता हूँ।" मैंने उनके कहते ही बोलना शुरू किया।

और सुप्रीम सुषुम्नापथेन, मूलश्रृंगतमुल्लासोल्लास, जल रहा है।

২৩

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उज्ज्वल, उज्ज्वल हंस: सोहंग स्वाहा।

और आत्मज्ञान, और आत्मज्ञान, और आत्मज्ञान, और आत्मज्ञान, और देवताओं के चरणों में भक्ति, और ऋषियों के चरणों में भक्ति, और पितरों के चरणों में भक्ति।

और इंसानी जुड़ाव, और गुरुंग स्टेज जुड़ाव...

৩৩১

उन मंत्रों का कोई मतलब या मतलब समझे बिना, मैं बाबा के कहे अनुसार तोते की तरह उन्हें दोहराता रहा। कमरे में लकड़ी की गर्मी और बाबा

की हल्की आवाज़ ने एक पवित्र माहौल और माहौल बना दिया। करीब एक घंटे बाद, हम बाहर निकले, और सूरज उग चुका था। राक्षसताल के किनारे छोटे पत्थरों पर चलते हुए, बाबा ने कहा, "लामा धर्म बुद्ध तंत्र है; लामा धर्म बुद्ध के शब्दों और तंत्र की प्रैक्टिस का मेल है। बुद्ध के शब्दों का मुख्य मतलब खालीपन है, वे शून्यवादी हैं और हम शुद्धतावादी हैं। परमब्रह्म खाली नहीं है, वह भरा हुआ है, इसीलिए हम इसे बार-बार कहते हैं-

"ॐ पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदाचते पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेव अवसिस्यते।"

आइए हम कैलाश के भगवान धर्मपाल और पाबू को देखें, लामा उन्हें चाहे किसी भी नाम से पुकारें, वे हमारे निस्वार्थ शिव हैं। वे बाघ की खाल पहनते हैं, उनके एक हाथ में डफ और दूसरे हाथ में त्रिशूल होता है। डफ ज्ञान की निशानी है और त्रिशूल विनाश की निशानी है।

कैलाश के आस-पास दूसरे पहाड़ों की चोटियों पर अनगिनत देवी-देवता रहते हैं। भगवान बुद्ध भी अपने पांच सौ भक्तों के साथ इसी पहाड़ पर रहते थे। कैलाश पर हरपार्वती एक लिंग के रूप में हैं - यह लिंग ही दुनिया के बनने का मुख्य राज़ है। हरपार्वती, यावजंग या शिव और शक्ति, उन्हें जिस भी नाम से पुकारा जाए, असल में वह एक ही हैं।

कैलाश की इस पवित्र धरती पर हिंदुओं का मुख्य मंत्र है ओम नमः शिवाय
- इस मंत्र के जाप से ही मोक्ष मिलता है। कैलाश पर्वत का दूसरा नाम मेरु-पर्वत है। कैलाश पर्वत दुनिया की रीढ़ है। यहां की पवित्र हवा पूरी धरती का चक्कर लगाती है। यहां की आध्यात्मिक शक्ति दुनिया के सभी पापों को नष्ट कर रही है और धरती को बाढ़ से बचा रही है। यहां के पुण्यों की शक्ति से दुनिया के सभी पापों का बोझ धुलकर पवित्र हो

रहा है और पवित्रता में बदल रहा है। यह मेरु पर्वत ही दुनिया का बैलेंस बनाए रखता है। कैलाशनाथ की पवित्रता, राक्षसताल की शक्ति और मानसतीर्थ की शांति के मेल से यहां का मौसम और जलवायु बनी है। यहां आने वाले सभी तीर्थयात्री इस जगह का दिव्य आशीर्वाद लेकर जाते हैं।

इस इलाके की नदियाँ इंसानों के लिए श्री कैलाशनाथ के चरणों का अमृत ले जाती हैं। चारों दिशाओं में चार मुख्य नदियाँ, जैसे ब्रह्मपुत्र, जो कैलाशनाथ के पूरब में अश्वमुख या तचोग खंबार से शुरू होती है; सतलुज, जो पश्चिम में हस्तिमुख या लांगचेन खंबार से शुरू होती है; उत्तर में सिंहमुख या सेंगे खंबार।

৩৩২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

दक्षिण में, सिंधु नदी मयूरमुख या माचा खंबर से शुरू होती है। ये चार नदियाँ दुनिया की सबसे पवित्र नदियों में से हैं। इनके पानी में नहाने से बिना तर्पण किए मुक्ति मिलती है। ये ध्यान-बुद्ध के चार वाहन हैं।

चलते-चलते हम गंगाचू नाम की एक नदी के संगम पर रुके। इस गंगा का भारत की गंगा नदी से कोई लेना-देना नहीं है। गंगाचू राक्षस सरोवर और मानस सरोवर को जोड़ता है। जब मानस सरोवर में पानी ज़्यादा हो जाता है, तो वह इसी गंगाचू से होकर राक्षस सरोवर में बह जाता है।

हम गंगा के किनारे खड़े थे। बाबा ने मुझे देखा और कहा, "अपने सारे कपड़े उतारो और पानी में उतर जाओ।" मैं हैरान रह गया और मन ही मन सोचा, "अगर मैं इस ठंडे पानी में कूद गया, तो मुझे फिर कभी उठना नहीं

पड़ेगा।" जैसे ही मुझे यह याद आया, मैंने खुद को सावधान किया, "जब मैं शिव जैसे बाबा के सामने हूँ तो डरने की क्या बात है?" इतना ही नहीं, वह मुझे पानी में उतरने के लिए कह रहे थे, उनकी बातों पर शक करना पाप होगा। उनके कहते ही मैंने एक-एक करके अपने कपड़े उतारने शुरू कर दिए। मुझे हैरानी हुई कि बाबा खुद पानी में कूद गए। ठंडे होने की बात तो दूर, ऐसा लग रहा था जैसे वह गर्म पानी में आनंद से नहा रहे हों। उन्हें देखकर मुझे भरोसा हो गया और मैं भी एक-एक करके पानी में उतर गया। यह कमाल का था। यह ठंडा नहीं, बल्कि गर्म था। पानी काफी गर्म था। मेरे चारों ओर सफेद बर्फ का साम्राज्य था, और गंगा के इस स्थान पर, इसमें गर्म पानी बह रहा था। यह थके-हारे तीर्थयात्रियों के लिए एक ईश्वरीय व्यवस्था है। मैं बहुत खुशी में बार-बार गोते लगाने लगा। मेरी खुशी और कौन देख सकता है? मैंने बाबा से सुना है कि कैलाश खंड में इस पवित्र स्नान से नास्तिक का मन भी ईश्वर की अनुभूति से भर जाता है।

यह जगह असल में एक तालाब है, यह तालाब भगवान ने पुराने समय से तीर्थयात्रियों के लिए बनाया था। गंगा नदी ने धीरे-धीरे अपनी चौड़ाई बढ़ा ली है और तालाब को लगभग निगल लिया है, तालाब का पानी बहुत गर्म गंगा नदी के पानी में मिलकर उसे वापस सहने लायक बना दिया है। हम काफी देर तक नहाते रहे और गंगा नदी के दूसरी तरफ, यानी और दक्षिण में आ गए। बाबा अपनी गीली कौपीन के साथ ही रहे। उन्होंने मेरे बैग में कागज में लपेटी हुई कुछ राख डाल दी थी, जिसे उन्होंने लेकर अपने पूरे शरीर पर मल लिया।

अब हम दक्षिण की ओर, मानस और राक्षस सरोवर के ठीक बीच में उतरने लगे। चलते-चलते मैंने अचानक उनसे पूछा, "जैसा आपने कहा था, मैंने मंत्र पढ़ा, लेकिन मुझे उसका एक भी शब्द समझ नहीं आया।" उन्होंने अपनी ज़बान थोड़ी रोकी और कहा, "मैंने तुम्हें एक नया जीवन दिया है। पहले

तपस्या करो, फिर मंत्र, और आखिर में तर्पण करो। तुम्हारा कैलाश पहुँचना सफल रहा।"

बाबा की बात सुनकर मैंने आभार में सिर झुका लिया। गुरु कृपा से यही कहा, मैंने कुछ नहीं मांगा - मुझे अपने कर्तव्य और जिम्मेदारियों के बारे में कुछ नहीं पता, मैं बिना किसी तैयारी के आया हूं।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৩৩

मैंने इसे पढ़ा है। मुझे नहीं पता था कि मानसरोवर और कैलाश आने पर क्या करना चाहिए। शिव खुद कैलाश बाबा के रूप में नीचे आए हैं, और अपनी असीम करुणा और दया से, वह मेरा हाथ पकड़कर मुझे अधर्म से दूर और धर्म के रास्ते पर खींच रहे हैं।

मैं कैलाश बाबा को जितना देखता हूँ, मेरा दिल उनके चरणों में श्रद्धा से उतना ही गिरने लगता है। मैं एक गरीब भिखारी हूँ, मेरे हाथ में पैसे नहीं हैं, मैं एक आवारा हूँ, मुझे मंत्र नहीं पता, मेरे दिल में कोई प्रार्थना नहीं है। मेरे पास इस महान व्यक्ति को देने के लिए कुछ भी नहीं है - वह भक्ति कहाँ है जो मैं अपना दिल खाली करके दे सकूँ? इसलिए बार-बार मुझे लगता है कि वह परम ब्रह्म हैं, ब्रह्मांड के पिता हैं, उन्हें अपने बच्चों की ज़रूरतें नहीं पता, जैसे ही वे माँगते हैं वह दे देते हैं, मैं उन्हें हमेशा याद करते हुए जिऊँगा, यही मेरे आगे के जीवन का रास्ता होगा।

चलते हुए उसने कहा, "दूर जो बर्फ़ से ढके पहाड़ दिख रहे हैं, उनमें से सबसे ऊंचे पहाड़ का नाम मेमोनानी है। उसके दाईं ओर दो और ऊंचे पहाड़

हैं, और ठीक उसके सामने एक और छोटा पहाड़ है।" मैंने उसकी बात मानी और उन्हें ध्यान से देखने लगा।

फिर उन्होंने फिर शुरू किया - रास्ता सीधा इंडिया की तरफ जाता है, उस पहाड़ के पीछे से। उसका एक नाम गुरला मांधाता है, अब जो पहाड़ आप हमारे सामने देख रहे हैं, वह गुरला पहाड़ है, आपको मेमोनानी के इस पहाड़ के ऊपर से गुज़रना होगा, वही इंडियन तीर्थयात्रियों का मेन रास्ता है। जिस रास्ते से आप आए हैं, उस पर कोई इंडियन नहीं आता। और चिंता मत करो, यहाँ से वापस आने का रास्ता बहुत सीधा है। फिर कैलाश बाबा अचानक खड़े हो गए। उन्होंने मुझसे कहा - अब मैं तुम्हें कुछ नाम बताने जा रहा हूँ, उन्हें याद कर लो। उनकी बात सुनकर मैंने जल्दी से अपनी पेंसिल और कागज़ निकाला। उन्होंने मुझे रोका - कागज़ पर नहीं, मेरे दिमाग में, कागज़ पर जो लिखते हो वह ज़्यादा देर तक नहीं रहता, जो दिमाग़ में लिखा होता है वही असली होता है। मैं निराश हो गया। जो मैं कह रहा हूँ उसे बार-बार मेरे दिमाग़ में बोलो, तो तुम्हें वह याद हो जाएगा - तकलाकोट लिपुलेक धारचूला अलोरा - मैंने उनके कहे अनुसार इसे बार-बार दोहराना शुरू कर दिया - तकलाकोट लिपुलेक धारचूला अलघारा, तकलाकोट लिपुलेक धारचूला अलोरा.......

हम एक पहाड़ी के ठीक नीचे रुके। यह पहाड़ी दो झीलों के बीच एक गुंबद की तरह खड़ी है, इसे दाईं ओर रखते हुए, अब हम मानस सरोवर के किनारे पर आ गए। जैसे ही सूरज सिर के ऊपर आया, हम मानस तीर्थ की गोसुल गुफा में पहुँच गए।

जैसे ही हम गुफा में घुसे, मेरे पिता ने कहा, "तुम आज यहीं रुकोगे और फिर कल गुरला ला के रास्ते वापस आओगे।" हिंदुस्तान लौटने की बात सुनकर मेरा दिल बैठ गया - ऐसा लगा जैसे उन्होंने अचानक कोई दुखद खबर सुना दी हो।

৩৩৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

वापसी: जैसे ही मैं गोसुल गुफा में घुसा, बाबा को लेकर हंगामा मच गया, एक आदमी ने उन्हें एक बड़ा कंबल ओढ़ाया, और दूसरे ने उन्हें बैठने के लिए एक भारी आसन दिया। ऐसा लगा जैसे कोई महान ज्ञानी गुरु वहाँ आ गए हों। कहने की ज़रूरत नहीं कि बाबा के साथ होने से मुझे मेहमाननवाज़ी भी मिली। आसन पर बैठते ही बाबा ने मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया-

हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत्। ॐ सर्व समोहिन्य विद्महे विश्वजनयै धीमहि। तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।

तब, भोजन की पूर्णता जागृत होती है।

ॐ भगवत्यै च विद्महे महेश्वरै च धीमहि । ॐ वेदात्मने विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि । तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् । तन्नो विष्णु प्रचोदयात् ।

ॐ नारायण, विद्महे वासुदेवा, धीमहि।

ओम्, हजारों रूपों का महान ईश्वर, हजारों रूपों का महान ईश्वर, हजारों रूपों का महान ईश्वर।

तन्नो रुद्र: प्रचोदयात्।*

फिर सब लोग आस-पास बैठकर ध्यान करने लगे। काफी देर बाद, घंटी की आवाज़ से सन्नाटा टूटा। बाबा ने खुद घंटी की आवाज़ शुरू की। उस पल ऐसा लगा कि कैलाश की चोटी से धीरे-धीरे एक आवाज़ आकार ले रही है। वह आकार रोशनी से भरा हुआ लग रहा था और उस रोशनी के चारों ओर, आग की हज़ारों छोटी-छोटी लपटें पल-पल पैदा हो रही थीं। उस एहसास के साथ, हम सब आनंद की दुनिया में घूमने लगे।

मेडिटेशन ब्रेक के बाद हम सब बाबा के साथ चले गए। वहां कोई बातचीत नहीं हुई, हम सब चुपचाप चलते रहे। काफी देर बाद हम गुफा में आए और खाना खाने बैठ गए। उबले हुए आलू, उबली हुई पहाड़ी कॉफी और उसके साथ नमक जैसा आटा फैला हुआ था। बाबा और इस गुफा में कोई भी नमक नहीं खाता। खाने के बाद फिर से शांति हो गई।

गोसुल पहुँचने के बाद मैंने बाबा में बहुत बड़ा बदलाव देखा। मेरा खुले विचारों वाला दोस्त अचानक दूर चला गया। जो मुझे मानसरोवर और कैलाश की कहानियाँ सुनाता था, जो मुझे अपने आप तपस्या और तर्पण करवाता था, वह अचानक गायब हो गया। जब बाबा आँखें बंद करते हैं, तो वे ध्यान में डूबे रहते हैं और जब खोलते हैं, तो मंत्र या नाम जपते हैं। रात में, मुझे दूसरे लामाओं के साथ ठहराया गया। दूसरे लामा

बाद में मैंने इन मंत्रों को आदरणीय और सबसे पूजनीय श्री गोपीनाथ कविराज महाशय से बेहतर रूप में लिख लिया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৩৫

इसके साथ ही, मैंने इस गुफा के लामाओं में एक बड़ा फ़र्क देखा। वे लामा होते हुए भी मणि मंत्र के साथ वैदिक मंत्र भी पढ़ते हैं। ऐसा लगता है कि इसके पीछे कैलाश बाबा का असर है। यहाँ भी सब लोग एक ही समय पर खाते हैं। शाम होने के बाद, हम अपने-अपने बिस्तर पर चले गए। हम बिस्तर पर बैठकर नाम जपते रहे। जब से मैं बाबा से मिला हूँ, मैंने मणि मंत्र की जगह शिव मंत्र अपना लिया है। मैंने मणि मंत्र को अपने दिमाग से जोड़ा था, लेकिन शिव मंत्र मेरे दिल से जुड़ा हुआ लगता है। एक महीने से मैं लगातार तिब्बती थांगखा, मंडल और महान लोगों से अलग-अलग मंत्र, उनके उच्चारण और आवाज़ें सुन रहा हूँ, मैंने उन्हें समझने के लिए अपने सभी सेंस को अलर्ट रखा है, लेकिन उसके बावजूद, मैं उन्हें पूरी तरह से समझ नहीं पा रहा हूँ। तैयारी की कमी के कारण, मैंने आगे बढ़ने की कोशिश की और रुकने पर मजबूर हो गया। हालाँकि, बाबा के मामले में, यह अलग था - उन्होंने मुझे बस कुछ ही बार समझाया - कि मूल शक्ति शिव शक्ति के साथ कैसे मिलती है। जैसे ही उन्होंने वह सलाह सुनी, वे दिमाग को दरकिनार कर सीधे दिल पर चले गए। बाबा की बातें सच में अमृत थीं। उन्होंने कहा कि हम दिमाग से समझते हैं और दिल से महसूस करते हैं। पानी को देखना और जानना और उसे पीना बिल्कुल अलग-अलग बातें हैं।

बिस्तर पर आराम से बैठकर, मैंने बाबा को याद किया और उनके बताए अनुसार मंत्रों का जाप करना शुरू किया - मूलाधार का लोंग्; स्वाधिष्ठान का बैंग; मणिपुर का रँग; अनाहत का यांग; विशुद्ध का होंग; आज्ञा का ओम; सहस्र बिंदु; और आखिर में मैंने अपना मन भगवान शिव के चरणों में लगाने की कोशिश की....

गुफा के लामाओं में रिदयांग लामा सबसे ज़्यादा पूजनीय हैं, और गुफा के सभी लामा उनकी देखरेख में काम करते हैं। गोसुल गुफा के लामा हमेशा यहाँ नहीं रहते। सर्दियों में वे दक्षिण दिशा में बड़ी गुफा

में चले जाते हैं। सभी लामा एक महीने के लिए आए हैं। तपस्या और पुण्य के लिए। भारत के संत आमतौर पर इसी गुफा में रहते हैं। यहीं से वे कैलाश परिक्रमा की शुरुआत करते हैं। और जो लोग सैकड़ों रुकावटों के बावजूद मानस सरोवर की परिक्रमा करते हैं, वे भी यहीं से शुरुआत करते हैं। मानस और राक्षस सरोवर के बीच की दूरी गोसुल गुफा के पास सबसे ज़्यादा है। रिदयांग लामा तीर्थयात्रियों को अलग-अलग मामलों में सलाह और हिम्मत देते हैं। गुफा से ज़्यादा दूर नहीं, खानाबदोशों का एक टेंट है, वह टेंट यहाँ किराने की दुकान है। हालाँकि राक्षस सरोवर बहुत पास है, लेकिन मानस सरोवर तीर्थयात्रियों के लिए मुख्य सेंटर है। धार्मिक लामाओं और योगियों के लिए, दोनों झीलें और कैलाश समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

मैं रात को अच्छी तरह सोया, लेकिन सुबह जल्दी उठ गया। सबके खांसने और छींकने की आवाज़ सुने बिना सोना नामुमकिन था—सबको सर्दी लग रही थी। बीच में रखी लोहे की बड़ी कढ़ाई में आग लगभग बुझ रही थी। मैं जल्दी से उठा और किचन से कुछ कोयला लाया, उसे जलाया, फिर अपने जूते, स्वेटर और कंबल लेकर बाहर चला गया। सुबह के तारे अभी भी चमक रहे थे— बस पूरब के आसमान में रोशनी की एक हल्की सी झलक दिखी थी। मैं चला गया।

৩৩৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं झील के दक्षिण की ओर चला। मैंने पानी पर दो हंस देखे - फिर अचानक मैंने नदी के किनारे आग जलती देखी। जैसे ही मैं पास पहुँचा, मैंने देखा कि तीन लोग चुपचाप बैठे हैं, आग जला रहे हैं। मैं उनके पास गया। उन्होंने मुझे प्रणाम किया और अपना मकसद बताने लगे। सूरज उगने से

पहले झील की लहरों में बहकर किनारे पर आई मरी हुई मछलियों को इकट्ठा करना बेहतर है, नहीं तो यहाँ के मछली खाने वाले पक्षी उठते ही मछलियों को खा जाएँगे। और यहाँ का काई सुबह सबसे अच्छी मिलती है। वे रात की ठंड में जम जाते हैं, और सुबह उन्हें इकट्ठा करना बहुत आसान होता है। वे सुबह किसी तीर्थयात्री को देखकर बहुत खुश होते हैं, उन्हें आज ज़रूर कोई बड़ी मछली मिलेगी। उनकी उम्मीदें पूरी हों; मैंने मन ही मन उनके लिए प्रार्थना की और फिर से निकल पड़ा।

मेरे सामने मानसरोवर का शांत, ठंडा पानी है, अपार पूर्णता का एहसास ही क्या है। दूसरी तरफ, अब सूर्योदय का समय हो रहा है। यहाँ से ऐसा लगता है जैसे झील के दूसरी तरफ से सूरज उग रहा हो। भुवन मोहिनी का वह मनमोहक रूप फिर से। गुरला हिल्स की चांदी जैसी चोटियाँ धीरे-धीरे जागने लगीं - कैलाश पीक उत्तर में मंडप की तरह खड़ा हो गया। और फिर चुपचाप बदलाव का उत्सव शुरू हो गया, मैं एक बहुत छोटा भिखारी हूँ और मुझमें उस उत्सव का वर्णन करने की क्षमता नहीं है, अगर कोशिश करूँगा, तो उस महान सुंदरता पर स्याही को ही छू पाऊँगा। तो मैं चुपचाप देखता रहा - कैलाश खंड का सूर्योदय। अगर कोई एक दिन के लिए भी इस महान सुंदरता के रूप को देख ले, तो यह जीवन धन्य है। मैंने उन्हें प्रणाम किया और कहा - मेरा यह जीवन सफल और पूर्ण हो गया। इस असीम सुंदरता ने मेरे अस्तित्व को छू लिया और मुझे मन की दुनिया से भावनाओं की दुनिया में उठा दिया। जब मैं गुफा में लौटा, तो मैंने देखा कि सभी लोग बाबा के चारों ओर बैठकर जाप कर रहे हैं। मैं भी उनके साथ शामिल हो गया। जाप खत्म होने पर बाबा मुझे काफी देर तक घूरते रहे, मैं उनका प्रकाश बर्दाश्त नहीं कर सका और अपना सिर झुका लिया।

उन्होंने घर में मौजूद एक लामा की ओर इशारा करते हुए मुझसे कहा, "दुखांग लामा आज तकलाकोट जा रहे हैं। तुम उनके साथ चले जाओ। रास्ते में तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी।"

बाबा के शब्द मेरे लिए आशीर्वाद हैं, फिर भी जब मैंने सुना कि मुझे यह स्वर्ग जैसी दुनिया छोड़नी पड़ रही है तो मुझे दुख हुआ। मैंने सोचा था कि कुछ दिन बाबा के चरणों में लेटूंगा, उनके दर्शन में मुझे रोशनी मिली, उनके शब्दों में मुझे डर और आशीर्वाद मिला, उन्होंने मुझे अमृत की खोज दी - मुझे जीवन में और क्या चाहिए। मैं बार-बार सोचने लगा, बाबा की असीम कृपा के बारे में। मुझे वापस लौटना है, यह विचार मेरे मन में घूमने लगा - क्या मुझे इतनी जल्दी लौटना है?

363

महातीर्थ का अंतिम यात्री..

৩৩৭

दुखांग लामा ने मुझे बाहर बुलाया। वे करीब चालीस साल के थे, उनके चेहरे पर जंगल में रहने वाले का साफ़ निशान था। बाहर आते ही उन्होंने टूटी-फूटी हिंदी में मुझसे कहा, "मैं समझता हूँ कि गुरु को छोड़ना बहुत मुश्किल है, लेकिन परेशान मत हो। वे सब बातों पर सोच-विचार करके बोलते हैं, उनकी बातों को गुरु की बात समझो।" मैंने बहुत धीरे से सिर हिलाकर उनसे सहमति जताई, फिर पूछा, "आप कब जाएँगे?"

खैर, अगर हम अभी निकलेंगे तो कल शिम्बिलिंग गुफा पहुँच सकते हैं - हमारे लिए कुछ खाना बन रहा है। सांगपा खाकर हम निकलेंगे। पवित्र साधुओं के शब्द हैं कि वे हमेशा अलग यात्रा के लिए तैयार रहते हैं। उनके आगे या पीछे कोई रुकावट नहीं है। उस दिन, गुफा में सिर्फ़

हमारे लिए नाश्ता तैयार किया गया था। मैं समझ गया था कि शायद हमें पूरे दिन और खाना नहीं मिलेगा।

कैलाशखंड से निकलने की बात सुनने के एक घंटे के अंदर ही हमने खाना खा लिया और तैयार हो गए। जैसे ही मैंने बाबा को प्रणाम किया, उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखा और मन ही मन मुझे आशीर्वाद दिया। उन्होंने कुछ नहीं कहा। मैं जाने से पहले उनसे कुछ कहना चाहता था; लेकिन वे चुप रहे, इसलिए मेरी कुछ कहने की हिम्मत नहीं हुई। मैंने मन ही मन उनसे प्रार्थना की - आपने मुझे रोशनी दी है। - मुझे आशीर्वाद दें ताकि मैं आपके दिखाए रास्ते पर चल सकूं।

फिर बाबा फिर से ध्यान में बैठ गए। मैंने उनके ध्यान वाले रूप को अपने दिल में अपना लिया। उनके आशीर्वाद को अपने सिर पर और उनके रूप को अपने सामने रखकर हम निकल पड़े।

मानस सरोवर के किनारे करीब एक घंटे चलने के बाद हमें पत्थरों से बना एक चोर्टेन मिला। हम इस चोर्टेन के पास खड़े होकर थोड़ी देर आराम किया, फिर मानस सरोवर के जल को छूकर अपने सिर पर छिड़का। थोड़ा पानी पीकर हमने जाप किया - अपबित्र पवित्रोबा सर्वस्वस्वगतो पिव या स्मरेत् पुंडरीकाक्षं सम बाह्य अवथारं सुहि। चोर्टेन की सात बार परिक्रमा करने के बाद हम फिर चल पड़े। थोड़ी देर बाद हमें मानस सरोवर के लगभग पास ही एक और छोटा सा सरोवर मिला। यह काफी हद तक गौरीकुंड जैसा दिखता था, और आकार में भी लगभग उतना ही था, लेकिन इसका पानी मानस सरोवर से ठंडा था। सरोवर का नाम शुसुप्ता है। ऐसा लगता है कि यह शब्द शुशुत्सो शब्द से आया है।

दुखांग लामा ने मुझे बताया - इस छोटी सी झील का एक महत्व है। जब हमारा मन अज्ञान के अंधेरे में डूबा रहता है, तो खुशी मुमकिन नहीं

है। उस सोए हुए मन को भगवान देचोक के आशीर्वाद से जगाना होगा और मन की झील में बदलना होगा। मन के जागने की स्थिति ही मन की झील है। मन का विस्तार ही मन है। मन को गहरा और उदार बनाना होगा, यही असली मुक्ति है।

अब पहाड़ पर चढ़ने का रास्ता शुरू होता है। यहाँ से हमें करीब एक घंटे तक चढ़ना है।

৩৩৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

बारह सौ फ़ीट। जैसे ही हमने यांगतू के पास पाया था, हम बहुत धीरे- धीरे चढ़ने लगे। कैलाशनाथ अब हमारे ठीक पीछे थे, हमें बार-बार रुकना पड़ रहा था क्योंकि रास्ता लगभग खड़ी चढ़ाई वाला था। कोई मंत्र नहीं थे, कोई जाप नहीं था, हमें बस कैलाशनाथ के रूप की कल्पना करते हुए चलना था। रास्ता बहुत मुश्किल था, इस सर्दी में भी मेरा शरीर पसीने से भीगा हुआ था। दुखांग लामा अलग थे, वे इसी इलाके के आदमी थे, यहीं पैदा हुए थे, और पहाड़ों में चलना शायद उनके लिए हमारे मैदानों में चलने जैसा था। मैं बीच-बीच में रुककर कैलाशनाथ को देखता, अपने पिता को याद करता, और फिर से चलने लगता। रास्ते में मेरी सांस ही मेरा एकमात्र साथी लग रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे प्रकृति का सुंदर रूप धीरे-धीरे मेरे मन से गायब होता जा रहा हो।

जैसा कि कहा जाता है, भगवान ही उन लोगों के लिए एकमात्र उम्मीद है जिनका कोई नहीं है, इसलिए वह एकमात्र उम्मीद है। रास्ता कितना भी लंबा क्यों न हो, उसका अंत होता है। और भगवान की कृपा से, हम आखिरकार उस पहाड़ की चोटी पर पहुँच गए। उस जगह का नाम गुरला-ला है, ऊँचाई

लगभग सोलह हज़ार दो सौ (16,200) फ़ीट है। जैसे ही हम ऊपर उठे, हमें एक झोपड़ी मिली, कुछ सफ़ेद झंडे लहरा रहे थे, और तीर्थयात्रियों का मन हल्का करने के लिए उसके बगल में एक प्रार्थना चक्र था। वहाँ, मैं लगभग बर्फ़ से ढकी एक चट्टान पर लेट गया। दुखांग लामा, एक पहाड़ी चूहे की तरह, इतनी ऊँचाई पर चढ़ने में कोई मुश्किल नहीं लग रहे थे। थोड़ा आराम करने के बाद, मैंने वहाँ से मानस सरोवर, राक्षसताल और कैलाश चोटी का सुंदर नज़ारा देखा। और दक्षिण की ओर, सड़क नीचे निचले मैदान में चली गई। इस मैदान के बाद, पहाड़ फिर से शुरू हो गए।

दक्षिण की ओर, हमने बर्फ़ से ढकी तीन चोटियाँ देखीं, जो गुरला मांधाता या मेमोनानी हैं। ये तीनों गुरला हिल्स की सबसे ऊँची चोटियाँ हैं, सबसे ऊँची चोटी पच्चीस हज़ार तीन सौ पचपन फ़ीट है। और इसके बाएँ और दाएँ दो काफ़ी छोटी चोटियाँ हैं। वहाँ से बर्फ़ पिघलने से जो नदी बनती है, उसे गारू कहते हैं। इस इलाके की सभी छोटी-बड़ी पहाड़ी नदियाँ मिलकर मशहूर करनाली नदी बनाती हैं। अल्मोड़ा से आने वाले तीर्थयात्री कैलाश जाते समय सबसे पहले यहीं कैलाशनाथ और मानसरोवर के दर्शन करते हैं। इसीलिए यहाँ की जगह भी बहुत ज़रूरी है।

हम अब एक पहाड़ के सबसे ऊँचे हिस्से पर खड़े हैं, यहाँ से हम दो जगहें देख सकते हैं। एक है कैलाशखंड या महातीर्थ भूमि और दूसरी है मृत्युलोक या महाभारत भूमि। यहाँ से हमें कैलाशखंड को अलविदा कहना है। सूरज अब डूब चुका है लेकिन शाम अभी भी बहुत देर है। मैंने श्रद्धा से कैलाशनाथ-मानस-सरोवर-राक्षसस्थल को प्रणाम किया और बाबा को याद किया और अपना सच्चा आभार व्यक्त किया। मैंने अपनी मेहनत से कमाई हुई स्वर्ग की दुनिया को अलविदा कहा। मैंने स्वर्ग के देवताओं से प्रार्थना की। अब रास्ता

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৩৯

एकदम सीधा, बस नीचे की तरफ। गुरला में यह पहाड़ी गुफा अभी भी लगभग बर्फ से ढकी हुई है। बर्फ पिघलने में एक और महीना लगेगा। जब हम नीचे उतर रहे थे, दुखांग लामा ने कहा, "तुम्हारे कर्म सच में बहुत अच्छे हैं। लामा या संत, अपनी बहुत कोशिशों के बाद भी, बाबा से बात नहीं कर पाते, और तुम उनके साथ थे।"

उसके सवाल का जवाब दिए बिना मैंने पूछा, "वह कहाँ रहता है?"

-उसके रुकने की कोई वजह नहीं है, जब वो आता है तो घूमता है, सब उसकी पूजा करते हैं, सब उसे चाहते हैं। वो सूरज की तपस्या करता है, लोग कहते हैं कि उसमें चमत्कारी शक्तियां हैं।

-क्या वह हर साल गर्मियों में यहां आता है?

-वो योगी हैं, सर्दी-गर्मी का सवाल ही नहीं है। जब मन करता है आ जाते हैं। देखो, आजकल, कुछ सालों से, भारत का रास्ता पूरी तरह से बंद हो गया है, लेकिन बाबा का रास्ता कोई नहीं रोक पाया।

"यह बंद क्यों है?" मैंने अचानक पूछा।

उन्होंने जवाब दिया, "आजकल ल्हासा में बहुत अफ़रा-तफ़री मची हुई है। चीनियों के भारत से अच्छे रिश्ते नहीं हैं, इसलिए उन्होंने सारे रास्ते बंद कर दिए हैं। तुम्हें सारे रास्ते नहीं पता, और वैसे भी, अगर तुम चीनी सैनिकों के हाथ लग गए, तो वे बहुत परेशानी खड़ी कर

देंगे, इसीलिए मेरे पिता ने तुम्हें मेरे साथ भेजा है। मैं तुम्हें सारे रास्ते दिखाऊंगा।"

मैंने दुखांग लामा से इस इलाके के बारे में और भी बहुत कुछ सीखा। इस मैदान को पुरंग कहते हैं। शिम्बिलिंग गुफा इस मैदान के आखिर में है। यह इस इलाके की सबसे बड़ी गुफा है। ऐसा लगता है कि शिम्बिलिंग शब्द शिवलिंग से आया है। लामा धर्म से पहले, शायद यहाँ एक शिवलिंग मंदिर रहा होगा। शिम्बिलिंग गुफा के पास के शहर को तालाकोट कहते हैं। तालाकोट इस इलाके का सबसे अच्छा गाँव है। वहाँ हर महीने तीन दिन बाज़ार लगता है और बहुत सारी दुकानें हैं। पहले, हिंदू तीर्थयात्री इस गाँव में रुकते थे और यहाँ से वे कैलाश की ओर जाने के लिए गधे, घोड़े और याक किराए पर लेते थे। इस गाँव में गाइड, पुजारी, कुली, कुली और यहाँ तक कि फेरीवाला भी मिल जाता था, लेकिन आजकल वह धंधा खत्म हो गया है। वे दिन बहुत अच्छे थे। इस इलाके में बहुत सारे चोर और लुटेरे भी थे, और अगर उन्हें कोई तीर्थयात्री अकेला मिल जाता, तो वे उस पर टूट पड़ते थे। इसलिए सभी तीर्थयात्री ग्रुप में तकलाकोट से कैलाश के रास्ते पर निकल पड़ते थे। कहने की ज़रूरत नहीं कि हम दुखांग लामा की बातें सुनते हुए आगे बढ़ते रहे, जो भारत के प्रति बहुत दयालु थे। शाम को हम करदुंग नाम के एक गाँव में पहुँचे। इसे गाँव के बजाय बस्ती कहना बेहतर होगा। पत्थर और मिट्टी की दीवारों पर किसी तरह छत बना दी गई थी। हम एक चाय की दुकान पर पहुँचे। हमें रात में सिर रखने के लिए जगह चाहिए थी। दुकान के मालिक की इजाज़त से हमने रात के लिए वहाँ पनाह ली।

৩৪০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

अगले दिन हम फिर निकले, दुकान वाले ने सुबह हमारे लिए चाय बनाई थी। चार कप चाय की कीमत सिर्फ़ दो पैसे थी। और मालिक सोने के लिए चार पैसे पाकर खुश था। अब रास्ता नीचे की ओर उतरता है - नदी बगल में एक खड्ड में है। रास्ता बहुत खतरनाक है। यह रास्ता लोकल कुचले हुए पत्थरों से बना है। हमेशा ऐसा लगता है जैसे हमारे पैरों के नीचे पत्थर खिसक रहे हैं। अगर हम थोड़ी भी लापरवाही करें, तो खड्ड में गिरने का खतरा रहता है। नदी ने पहाड़ों को काट दिया है। कभी यह एक सुरंग जैसी लगती है, तो कभी यह दोनों तरफ से खाकर चौड़ी हो गई है। रास्ते में काफी वैरायटी है। हालांकि, इस रास्ते से कैलाश की ओर जाने वालों को अपनी जान हथेली पर लेकर जाना पड़ता है। यह अल्मोड़ा से कैलाश का सबसे मुश्किल रास्ता है। हमने सुबह से ही लगातार चलना शुरू कर दिया था। हम मानसरोवर से एक दिन में जिस रास्ते से नीचे आए हैं, उस पर चढ़ने में आम श्रद्धालुओं को लगभग तीन दिन लगते हैं। सड़क की हालत सच में बहुत खराब है।

उस शाम हम शिम्बिलिंग गुफा पहुँचे। गुफा बहुत सुंदर है। दूर से देखने पर यह एक छोटे से गाँव जैसी लगती है। जब हम पास पहुँचे, तो देखा कि यह असल में एक बहुत बड़ा घर था। इसे पहाड़ काटकर बनाया गया था। बिल्कुल उड़ीसा में उदयगिरी की गुफाओं की तरह। एक बहुत बड़ी सड़क अचानक पहाड़ में घुस गई। इसके घर पहाड़ की ढलान पर पहाड़ काटकर बनाए गए थे। इसके नीचे करनाली नदी बहती है। एक सपने जैसा। दुखांग लामा इस गुफा के आदमी हैं, वे अभी-अभी तीर्थ यात्रा के लिए कैलाशखंड गए थे। हम सीधे आए और दुखांग लामा के घर में घुस गए। हिमालय की गोद में खोई इस गुफा को मैं कभी नहीं भूलूँगा। मैं बाहर जाकर आस-पास देखना चाहता था। लेकिन मेरे पैरों की हालत देखकर, अगर कंबल के नीचे कोई पनाह मिल जाती तो वह खुश हो जाता। दूसरे घरों की तरह, दुखांग लामा का घर भी बहुत छोटा और अंधेरा है, मतलब खिड़कियाँ नहीं हैं। ऐसा लगता है कि यह पहाड़ के अंदर का घर है। मैंने लामा से कहा कि मैं

आज कुछ नहीं खाऊँगा। अगर आप किसी तरह मेरे सोने का इंतज़ाम कर दें तो मुझे खुशी होगी।

उन्होंने मेरी तरफ देखा और हल्के से मुस्कुराते हुए कहा, "ठीक है, यहीं लेट जाओ। मैं दो और कंबल का इंतज़ाम कर रहा हूँ - आग की कमी है।" बस एक बात; बिना किसी और देरी के, मैं बिस्तर के बीच में एक गद्दे पर लेट गया और कंबल से खुद को ढक लिया। सुबह-सुबह लामाओं की प्रार्थना से मेरी नींद खुली। मैं सीधे प्रार्थना कक्ष में नहीं गया, बल्कि बिस्तर पर बैठकर प्रार्थना करने लगा।

काफी देर बाद दुखांग लामा आए और उनसे पूछा, "तुमने कल कुछ नहीं खाया, तुम्हें भूख लगी होगी।" मैंने उनकी तरफ देखा और रूखी मुस्कान दी। वह मुझे एक हॉल से होते हुए एक छोटे से कमरे में ले गए। उन्होंने मुझे उस कमरे की खिड़की से बाहर का नज़ारा देखने को कहा। जब मैंने खिड़की से झाँका तो मैं बहुत हैरान हुआ। गाँव यहाँ से ज़्यादा दूर नहीं था।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৪১

गांव के घर बहुत सुंदर दिखते हैं। यह गांव तकलाकोट है, एक नज़र में आप समझ सकते हैं कि यह एक बढ़ता हुआ गांव है। मैं दो मंज़िला छत पार करके एक लकड़ी के घर में घुसा। यह किचन है। जैसे ही मैं किचन में घुसा, वहां के लामा और तीन दबा (त्रपा) ने मुस्कुराते हुए मेरा स्वागत किया। उन्होंने मुझे बटर टी और छतूरा लड्डू का एक बड़ा कटोरा दिया और नाश्ता करने को कहा। हम छत पर पहुंचे और धूप में खड़े हो गए, शिम्बिलिंग गुफा बहुत अद्भुत है। इसका स्ट्रक्चर भी बहुत दिलचस्प है। इसे पहाड़ के किनारे को काटकर बड़ी कुशलता से बनाया गया होगा।

यह गुफा ड्रेपुंग गुफा की एक मुख्य ब्रांच है। इसलिए इसका स्ट्रक्चर भी बहुत मिलता-जुलता है। इसकी कई छतें हैं। मुझे लगता है कि बहुत पहले यहां कई गुफाएं थीं, और ऋषि उन गुफाओं में तपस्या करने आते थे। यहां का मौसम और आसपास की शांति ध्यान और तपस्या के लिए सही है। उन गुफाओं में से एक का इस्तेमाल शिवलिंग मंदिर के तौर पर किया जाता होगा। बाद के समय में, इसके आसपास यहां का छोटा सा माहौल बन गया। बौद्ध तांत्रिकों ने उस पवित्र जगह पर यह बहुत बड़ी संस्था बनाई। यह पूरी तरह से मेरी अपनी कल्पना है, यानी मैंने अपने निजी अनुभव के बारे में लिखा है।

असल में ल्हासा का ड्रेपुंग मठ इस गुफा का मालिक है। हालांकि, इस संस्था को ठीक से चलाने के लिए एक लोकल एसोसिएशन है। गुफा में चार सीनियर लामा और 33 जूनियर लामा रहते हैं, जिन्हें डाबा या त्रापा कहा जाता है। गुफा के लिए कंबल, घी और खाने का पूरा खर्च ड्रेपुंग मठ से आता है। किचन को ठीक से चलाने के लिए एक मार्केट गवर्नमेंट है।

गुफा के मुखिया को खेंगपो कहते हैं, महान खेंगपो और मार्केट एसोसिएशन के मुखिया, इन दोनों के पास गुफा की पूरी ज़िम्मेदारी है। महान खेंगपो सीधे ड्रेपुंग गुफा से आए थे। वे ड्रेपुंग के प्रतिनिधि हैं। इस गुफा के नीचे छह और छोटी-बड़ी गुफाएँ हैं।

खाना खाने के बाद, मैंने झुककर उन्हें धन्यवाद दिया। फिर दुखांग लामा मुझे खेंगपो लामा से मिलवाने ले गए। गुफा के नियमों के अनुसार, सिर्फ़ नए लोगों को ही मठाधीश से मिलना होता है। वही यहाँ रहने की इजाज़त देते हैं। अब हम पहली मंज़िल पर मुख्य दरवाज़े से नीचे गए। वहाँ से, कुछ सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद, हम एक अच्छी तरह से सजे हुए लकड़ी के कमरे में पहुँचे। उस कमरे में घुसकर और मुझे इंतज़ार करने के लिए कहकर, दुखांग लामा ने एक दरवाज़ा खोला और अंदर के आँगन में

चले गए। थोड़ी देर बाद, वह मेरे पास आए और बोले, "आइए, उन्होंने कहा था कि वह तुम्हें दर्शन देंगे।"

हम एक बड़े कमरे में खड़े थे, कमरे के अंदर एक कमरा, जो शानदार लकड़ी के काम से भरा हुआ था। दो छोटी खिड़कियों से दिन की रोशनी अंदर आती थी, जिससे कमरा रोशन हो जाता था। कमरे की दीवारें बिल्कुल पोताला की दीवारों जैसी थीं।

৩৪২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

बेहतरीन कारीगरी से भरा हुआ। सिर के ऊपर दीवार पर भी भगवान बुद्ध की एक बड़ी सुनहरी मूर्ति है।

हर खंभे से एक बड़ा टंका लटका हुआ है। इसमें मंडलों और जीवन चक्र की अलग-अलग तस्वीरें हैं। गुफा के आदरणीय मठाधीश खिड़की के पास एक बिस्तर पर बैठे हैं। उन्होंने एक तिकोने आकार की टोपी, ढीली आस्तीन की कमीज़ पहनी हुई है, और एक बड़ी, बारीक कढ़ाई वाली चादर उनके घुटनों को ढक रही है। उनके सामने एक खूबसूरती से नक्काशी किया हुआ हैंड बॉक्स है। उन्हें देखकर, मैंने सिर झुकाया। उन्होंने अपना हाथ उठाया और मुझे आशीर्वाद दिया। फिर वे दुखांग लामा से बात करने लगे। पहले तो यह बहुत लयबद्ध लगा, लेकिन फिर मैंने उनकी बातचीत के लहजे में थोड़ी लयबद्ध गिरावट देखी। फिर उन्होंने मुझे पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया और सलाह देने लगे। वे जो कह रहे थे, उसमें से कुछ तो मुझे समझ आया, लेकिन ज़्यादातर मेरी समझ से बाहर था। हालाँकि, मैं साफ़-साफ़ समझ गया था कि उनकी मुख्य समस्या मुझसे थी।

काफी सोचने के बाद, हमने मुखिया को प्रणाम किया और बाहर आ गए। मैंने देखा कि दुखांग लामा थोड़े परेशान लग रहे थे। वहां से, हम कई बड़े हॉल से गुज़रे और गुफा के मुख्य मंदिर में पहुँचे। जैसे ही हम मंदिर में घुसे, हमने अपने सामने भगवान बुद्ध की मूर्ति देखी। मूर्ति चमकीले सुनहरे रंग की थी। उसके दोनों ओर तथागत की दो और मूर्तियाँ थीं। उसके ठीक सामने एक छोटी मूर्ति थी, जो ध्यान करते हुए बुद्ध का रूप थी। बड़ी मूर्ति ज़्यादा से ज़्यादा छह फ़ीट ऊँची होगी। मूर्ति के दोनों ओर दो खंभे थे। खंभे के चारों ओर दो ड्रैगन लिपटे हुए थे, उनके चेहरे भगवान बुद्ध की ओर झुके हुए थे, शायद शैतान का प्रतीक। वेदी के सामने ज्ञान के घी का एक दीपक जल रहा था। हमने प्रणाम किया और सामने गद्दे पर बैठ गए।

तिब्बत में हर बौद्ध मंदिर एक छोटा म्यूज़ियम है। यह कई पुराने और महंगे फ़र्नीचर से भरा हुआ है। टैंक का बाहरी हिस्सा खास तौर पर आकर्षक है।

झोपड़ियों में दीवारों पर बहुत सारी किताबें हैं। हर किताब का कवर कपड़े के पर्दे से खूबसूरती से ढका हुआ है। मुझे हैरानी से किताबें देखते हुए देखकर दुखांग लामा ने कहा, "और क्या देख रहे हो? जब तुम हमारी लाइब्रेरी में किताबें देखोगे तो हैरान हो जाओगे। हमारी गुफा इस इलाके में अकेली है जिसमें ताजुर और कंदूर का पूरा कलेक्शन है।" यह कहकर वह थोड़ा हिले और फिर मेरी तरफ देखकर बोले, "अब अपनी बात पर आते हैं - एक छोटी सी प्रॉब्लम आ गई है। मैं तुम्हें यह गाँव घुमाना चाहता था और इस गाँव के कई ऐसे लोगों से मिलवाना चाहता था जो अच्छी हिंदी जानते हैं। लेकिन मुखिया मशाई मुझसे सहमत नहीं हैं। सबसे पहले, हिंदुओं (इस जगह के भारतीय) को यहाँ आने की इजाज़त नहीं है। तो सवाल यह उठेगा कि मैं कैसे आया, मुझे इजाज़त किसने दी, हमसे कैसे कॉन्टैक्ट हुआ, वगैरह। दूसरी प्रॉब्लम यह है कि अगर हमें किसी

भारतीय से कॉन्टैक्ट करना है, तो हमें लोकल ल्हासा अधिकारियों की इजाज़त चाहिए होगी।

369
महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৪৩

৩৪৪

मैं चाहता हूँ। तिब्बत के दूसरे हिस्सों की तरह, नेशनल लिबरेशन आर्मी यहाँ भी कड़ी नज़र रख रही है। पुरंग ज़िले के अधिकारी अब सिर्फ़ नाम के शासक हैं। मुखिया के अनुसार, मुझे यहाँ से बाहर न भेजना ही बेहतर होगा। अगर "वे" मुझे देख लेंगे, तो बेवजह परेशानी होगी। यह घटना मेरे लिए नई नहीं है। दुखांग लामा को और कुछ समझाने की ज़रूरत नहीं पड़ी, मैं अपनी स्थिति समझ गया था। यानी, मुझे जल्द से जल्द वहाँ से निकल जाना था, इससे पहले कि "वे" मुझे पकड़ लें।

मैं नहीं चाहता कि दुखांग लामा या यहां के अधिकारी मुझसे कोई परेशानी मोल लें। मैंने उन्हें समझाया कि इसमें दुखी होने की कोई बात नहीं है। तकलाकोट का मेन अट्रैक्शन यह गुफा है, और मैं इसे पहले भी देख चुका हूं। और मैंने तिब्बत में कई गांव देखे हैं, इसलिए अगर मुझे कुछ नया नहीं भी दिखता है, तो भी अफसोस करने की कोई बात नहीं है।

दुखांग लामा ने मुझे भरोसा दिलाया कि यह भारत का मेन रास्ता है, लेकिन पहाड़ों को पार करना भी मुमकिन है, और आर्मी ने अभी तक उस

रास्ते पर डेरा नहीं डाला है जहाँ से इस इलाके के रिफ्यूजी उत्तर की ओर भाग रहे थे। मैंने मन ही मन सोचा कि शायद इसीलिए मेरे पिता ने मुझे इस दुखांग लामा के साथ भेजा था। वह दूर की सोचने वाले कृपासिंधु हैं। मेरा सिर फिर से उनके शुक्रगुजार होकर झुक गया। मुझे पूरा दिन गुफा में भटकते हुए बिताना पड़ा। दुखांग लामा ने मुझे तरह-तरह के भरोसे देकर दिलासा दिया। शाम को, वह मुझे बाहर ले गए, हमने नदी पार की, तालाकोट गाँव को बाईं ओर छोड़ा और और नीचे चले गए। फिर उन्होंने दूर पहाड़ को देखा और कहा, "भारत, लिपु-लेक, तिब्बत, नेपाल और भारत के बॉर्डर वाले शहर का मेन रास्ता, उस पहाड़ की चोटी के बाईं ओर जाता है।" वहाँ बहुत सारे चीनी सैनिक तैनात हैं, इसलिए वहाँ मत जाना। लिपु झील की ऊंचाई करीब 16,750 फीट है, हमने गुरला ला को 16,200 फीट पर पार किया, तो आप समझ सकते हैं कि आपको बहुत स्ट्रगल करना पड़ेगा। आप लकी हैं कि आसमान में चांद है, इसलिए रात में चलना मुश्किल नहीं होगा। आपको उस पहाड़ के ठीक नीचे एक पतली सड़क मिलेगी। एक बार जब आप सबसे ऊंची जगह पर पहुंचेंगे, तो आप देखेंगे कि दूसरी तरफ ढलान है - पहाड़ मैदान में मिल जाता है। जैसे ही आप पहाड़ से मैदान देखेंगे, आप समझ जाएंगे कि आप इंडिया में आ गए हैं और डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर आप अभी से चलना शुरू करेंगे, तो सुबह होने से पहले ही पहाड़ पार कर लेंगे। लेकिन बहुत सावधान रहना, आपको रास्ते में बर्फ मिलेगी - अपने पापा को याद रखना, वे आपका ख्याल रखेंगे।

दुखांग लामा ने न सिर्फ़ मुझे बॉर्डर क्रॉसिंग के बारे में बताया, बल्कि कंधे पर एक छोटा सा बैग भी रखा और कहा, "इसमें दो दिन का खाना है, इसलिए आपको कोई दिक्कत नहीं होगी, लेकिन बहुत ध्यान रखना, गला सूखने पर भी बर्फ़ मत खाना।" दुखांग लामा सच में भारत के प्रति दयालु और रहमदिल हैं, उन्हें मेरा सलाम और शुक्रिया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उसका कर्ज किसी भी चीज़ से चुकाना मुमकिन नहीं है। मैंने मन ही मन सोचा कि मैं इस आदमी का ज़िंदगी भर शुक्रगुजार रहूँगा। वह तिब्बत में मेरा आखिरी इंसान है और शिम्बिलिंग गुफा मेरी आखिरी पनाहगाह है।

फिर सफ़र शुरू हुआ, करनाली नदी को अपनी बाईं ओर छोड़कर मैं सीधे लिपु झील की ओर चल पड़ा। आधे घंटे में ही पहाड़ फिर से शुरू हो गए। मैंने पहाड़ की चोटी पर नज़रें गड़ाकर चलना शुरू किया, फिर रात हो गई। मुझे पता था कि मुझे आगे बढ़ना है, क्योंकि दिन के उजाले में वे मुझे पकड़ लेंगे। न सिर्फ़ मुझे परेशान करेंगे - बल्कि सभी दुखांग लामा और गुम्फार भी मुझे परेशान करेंगे, इसलिए मुझे अब आगे बढ़ना था। गुरला-ला पार करते समय मुझे ऐसा रास्ता मिला था, इसलिए मुझे पता था कि आगे कैसे बढ़ना है वरना मुझे यहीं रुकना होगा। जैसे ही दुखांग लामा बात कर रहे थे, चाँद ऊपर निकल आया, और चाँदनी में मैं एक बार फिर लिपु झील की बर्फ़ जैसी सफ़ेद चोटी देख सका।

मुझे अपने पापा याद आए, उन्होंने ही मुझे रास्ता ढूंढने को कहा था, मैं उनके रास्ते पर चल रहा हूँ, इसलिए वो मेरे पीछे हैं। मैं जिस रास्ते पर चल रहा हूँ, वो कोई रास्ता नहीं है, चांदनी रात में सूखे चावल के खेतों से पैदल चलने वाला रास्ता इससे कहीं बेहतर लगता है। मुझे कभी बर्फ़ में चलना पड़ता है तो कभी चट्टानों पर ठोकरें खानी पड़ती हैं। रात में ऐसे रास्ते से नीचे उतरना नामुमकिन है - पहाड़ से ठोकर खाकर लुढ़कने और जान जाने का बहुत ज़्यादा चांस रहता है।

जैसे ही मैं चला, मुझे बाईं ओर कुछ लाइटें दिखीं - मैंने जल्दी से खुद को संभाला - वे चीनी सैनिकों के टेंट होंगे। मैं जल्दी से उस तरफ

से निकला और फिर से दाईं ओर का रास्ता ले लिया। मैं बहुत दूर से बच गया। चारों ओर शांति थी, वह शांति मुझे प्रेरित कर रही थी। उसमें सिर्फ़ मेरी बार-बार चलने वाली सांसों की आवाज़ थी। इस बार मैंने अपनी सांसों की लय में चलने की वह टेक्निक इस्तेमाल की जो मैंने साधु बाबा से सीखी थी। मुझे तुरंत याद आया - ओम-मणि-पा-द-मे-हम, ओम-मणि-पा-द-मे-हम, ओम-मणि-पा-द-मे-हम...

मैं पूरी रात ऐसे ही चलता रहा, जैसे कोई जादू में डूबा हुआ आदमी हो, मुझे नहीं पता कि मैं कब तक ऐसे ही चलता रहा। अचानक, आगे देखा तो पाया कि चोटी अब नहीं रही। कुछ दूर दाईं ओर, एक और चोटी मेरी नज़र में आई। मुझे एहसास हुआ कि मैं लगभग चोटी पर पहुँच गया हूँ। चलते समय मैंने जो बहुत कोशिश की थी, उसकी वजह से मुझे बार-बार रुकना पड़ रहा था - अब ऐसा लग रहा था कि मैं रुककर भी नहीं रुक सकता। मुझे एहसास हुआ कि मैं सबसे ऊँची जगह पर पहुँच गया हूँ। पीछे मुड़कर देखा तो देखा कि दूर चाँदनी में कैलाश चोटी सीना ताने खड़ी थी। मैं उस मंदिर जैसी चोटी को मुश्किल से पहचान पाया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৪৫

कोई कठिनाई नहीं हुई. मैंने उन्हें प्रणाम किया. ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय.

सुबह के तारे धुंधले होने लगे थे, और मुझे एहसास हुआ कि मैं बॉर्डर पर पहुँच गया हूँ। और मेरे पास सिर्फ़ एक घंटा बचा था। इस बीच, मुझे पहाड़ की ढलान पर चढ़ना था। अब तक, मुझे सड़क पर घास का नामोनिशान तक नहीं दिखा था, सिर्फ़ पत्थर और पथरीली रेत की धूल थी। अचानक, मुझे

लगा जैसे मैं घास पर चल रहा हूँ। नामुमकिन, मुझे नीचे घास नहीं मिल रही थी, इसलिए मुझे इतनी ऊँचाई पर घास नहीं मिली। इसलिए मैंने उन्हें अपने हाथों से ध्यान से देखने की कोशिश की। मैं उन्हें छूकर हैरान रह गया। वह घास नहीं थी, बल्कि घास जैसी मोटी काई थी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई कालीन बिछा हो। सुबह की रोशनी में, मुझे ढलान मिल गई। मेरी खुशी किसने देखी? मैं खुशी से उछल पड़ा। कैलाश से लौटकर, मैंने फिर से भारत की मिट्टी को छुआ। बॉर्डर पर "उनकी" नज़रों से बचकर मैं अपने देश में दाखिल हुआ। क्या खुशी थी! इस खुशी का कोई अंत नहीं लग रहा था। मैं अब लगभग नीचे कूदने ही वाला था। मुझे लगा जैसे मैं इतनी जल्दी और बिना किसी कोशिश के अपने वतन लौट आया हूँ - गुरु कृपाहि केबलम्। गुरु कृपाहि केबलम्। गुरु कृपा के बिना यह संभव नहीं होता।

सुबह का आसमान अपना नया रूप लेने लगा था। अब कोई मुश्किल नहीं थी। जब आसमान साफ हुआ, तो मैंने नीचे चीड़ के पेड़ों की एक लाइन देखी। यह एक नया अनुभव था, शायद इसका नाम आज़ादी की खुशी थी! मैं धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। लगभग दोपहर के आस-पास, जब मैं चीड़ के पेड़ों की पहली लाइन के पास से गुज़रा, तो मैंने आवाज़ सुनी 'रुको! रुको!' मुझे एक पल बाद रुकना पड़ा। एक पल में, सैनिकों के एक ग्रुप ने मुझे घेर लिया। जैसे ही मेरी हैरानी दूर हुई, मैंने उन्हें ध्यान से देखा और ज़ोर से हांफने लगा – वे सभी भारतीय सैनिक थे।

कहने की ज़रूरत नहीं, वे मुझे पूछताछ के लिए पास के एक कैंप में ले गए। वहाँ, उनके अजीब सवालों ने मुझे घेर लिया। मैंने कहा कि मैं कैलाश गया था - गुरुजी वहीं थे और बाद में सही समय पर आएँगे - और मैंने रातों-रात बॉर्डर पार कर लिया था। किस्मत क्या होती है? उस कैंप में एक बंगाली मिला। यह सुनकर कि मैं कोलकाता का लड़का हूँ, उसने तुरंत बंगाली बोलना शुरू कर दिया। मेरी सच्चाई साबित हो गई।

बाद में, मेरी कामयाबी की तारीफ़ करते हुए, उन्होंने मुझे भारी बन और चाय खिलाई। लिपू झील पर चीनी सैनिकों के बारे में उनके कई सवाल थे, लेकिन मैं उनसे बचने के लिए उन्हें कोई जानकारी नहीं दे सका। मैंने उनसे सुना कि मैं अब पूरी तरह से सुरक्षित पहुँच गया हूँ। इस लगभग समतल ज़मीन को 'फूलों की घाटी' कहा जाता है, कई लोग नंदन कानन कहते हैं।

यह एक नई दुनिया है, जिसकी पुरानी घाटी से कोई तुलना नहीं है। लिपु झील के पार पत्थर और बर्फ का एक क्षेत्र है। ठंड के कारण एक भी पेड़ नहीं उग सकता,

২৪

৩৪৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

और यहाँ, जहाँ तक नज़र जाती है, सिर्फ़ हरे-भरे जंगल और ज़मीन पर बड़ी-बड़ी घासों के साथ हज़ारों रंग-बिरंगे फूल हैं, फूलों की संख्या पत्तियों से ज़्यादा है।

आह! यह है मनुष्य का स्वर्ग! मैंने अनंत सुंदरता की दुनिया देखी है, यह देवताओं का स्वर्ग है, अत्यधिक ठंड और कठोर मौसम में, ऐसा लगता है कि मनुष्य का प्रवेश वर्जित है। लोग वहां तीर्थयात्रा के लिए, दर्शन के लिए जाते हैं। जीवन की नदी के स्रोत की तलाश में - हर कोई वहां तीर्थयात्री है - हर कोई आता-जाता है और यहीं है मनुष्य का स्वर्ग, मनुष्य का राज्य, मनुष्य यहां पूर्णता प्राप्त करता है और निवास करता है। इसीलिए इसे महाभारत कहा जाता है, यहां बैठकर साधना करनी

पड़ती है, जीवन की नदी यहां पूर्णता प्राप्त करती है। माँ, जन्मभूमि स्वर्ग का स्वर्ग है। चारों ओर असंख्य फूल अब मुझे छू रहे हैं और मुझे बधाई दे रहे हैं - इस समय ऐसा लग रहा है जैसे वे मेरे लिए खिल रहे हैं।

इस रास्ते में मैं कुछ गांवों से बचता हुआ आया हूं। मेरे सामने धबली-गंगा है, फिर धारचूला, फिर बेरीनाग से अल्मोड़ा। अल्मोड़ा से मुझे नैनीताल होकर जाना है और वहां से मुझे काठगुडम के लिए ट्रेन पकड़नी है। अब कोई रुकावट नहीं है। बड़े-बड़े पहाड़, नदियां, बर्फ, ये सब रुकावटें यहां रुकावटें नहीं हैं। मुक्ति देने वाले कैलाश के दर्शन करने के बाद अब मैं घर की ओर जा रहा हूं। वहां मुझे क्या मिलेगा - मुक्ति! या बंधन!

373

तिब्बत की आत्मा पुरुष है

मिलारेपा

मिलारेपा

महातीर्थ का आखिरी तीर्थयात्री किताब लिखते समय और बाद में, मैं मिलारेपा के अवतार के बारे में लिखना चाहता था। लेकिन अपनी तीर्थयात्रा के दौरान मिलारेपा की कई तस्वीरें और टंका देखने के बावजूद, मुझे उनके बारे में कुछ खास नहीं पता था - शायद यह स्वाभाविक था कि मेरे उस समय के पापी मन में उस पवित्र परमात्मा का कोई निशान

नहीं था। इसके अलावा, जिस समय मेरी यात्रा शुरू हुई, मुझे तिब्बत का कोई बैकग्राउंड नहीं पता था। यह इस बात का सबूत है कि मैं एक संत के भेष में भागे हुए लड़के से ज़्यादा कुछ नहीं था। महातीर्थ का आखिरी तीर्थयात्री किताब में, मैंने उस समय के अपने अनुभव को प्राथमिकता दी।

किताब पब्लिश होने के बाद, मुझे शुभचिंतकों और प्यारे पाठकों से मिलारेपा के बारे में कुछ और शब्द लिखने की रिक्वेस्ट मिली। इसलिए मुझे इस सेक्शन को अपेंडिक्स में शामिल करना पड़ा।

जैसे हिमालय की ऊंची-ऊंची चोटियां हमें खुद शिव की याद दिलाती हैं, वैसे ही तिब्बतियों के लिए मिलारेपा का नाम सबसे यादगार है, जिसका मतलब है बुद्ध का अवतार। तिब्बत को दुनिया में पुराने समय से ही एक रहस्यमयी देश के तौर पर जाना जाता है। वहां ध्यान का तरीका भी रहस्य में डूबा हुआ है। मिलारेपा तिब्बत में तंत्र साधकों के शिखर हैं। 11 वीं सदी के यह तंत्र साधक आज भी तिब्बत में तंत्र साधकों के मुख्य गुरु और लामाओं के पसंदीदा हैं।

महान संत मिलारेपा का जन्म तिब्बत के गन थांग प्रांत की कियांग सा घाटी में 1052 AD में हुआ था। उनके पिता का नाम सेराब ग्यालत्सेन, उनकी मां का नाम कर्मो क्येन, उनकी छोटी बहन का नाम पेटा था। और उनकी मंगेतर का नाम जेसे था। उनके जन्म से पहले, उनके पिता ने मिलारेपा की शादी अपने दोस्त की बेटी से करने का वादा किया था। यानी, अगर उनका बेटा हुआ और अगर बेटी हुई, तो वे शादी के बंधन में बंध जाएंगे। बेशक, बाद में मिलारेपा ने अपने पिता के दोस्त की बेटी जेसे को मन ही मन अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया, लेकिन उन्होंने कभी शारीरिक संबंध नहीं बनाए। और वे साथ नहीं रहे।

मिलारेपा की जीवनी एक अविश्वसनीय कहानी है, आम लोगों के लिए यह बहुत ही हैरान करने वाली कहानी है। जो लोग मिलारेपा के जीवन पर रिसर्च और स्टडी करते हैं, उनका कहना है कि यह कहानी दुनिया के इतिहास में सबसे अलग है। इसलिए, मिलारेपा के रहस्यमयी जीवन के बारे में सब कुछ पता नहीं है। मैंने इसके बारे में बहुत संक्षेप में थोड़ा ही लिखा है।

৩৫০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

जब मिलारेपा सिर्फ़ सात साल के थे, तो उनके पिता एक जानलेवा बीमारी से बीमार पड़ गए - तिब्बत के सबसे अच्छे डॉक्टर भी कुछ नहीं कर पाए। अचानक, उनकी खुशहाल दुनिया में अंधेरा छा गया। सेराब ग्यालत्सेन ने अपनी पत्नी करमोक्यान के साथ अपने सभी दोस्तों और रिश्तेदारों को अपनी मौत के बिस्तर पर बुलाया। फिर उन्होंने उनसे कहा, "तुम मेरे सबसे करीबी दोस्त हो। और तुम मेरे भाई हो, भगवान के लिए, तुम सबसे मेरी आखिरी रिक्वेस्ट ज़रूर पूरी होगी। मैं अपनी सारी दौलत, ज़मीन, डिपॉज़िट, सोना और गहने अपनी पत्नी और बेटे-बेटियों के गुज़ारे के लिए छोड़ रहा हूँ। मेरी पत्नी को प्रॉपर्टी के बारे में कुछ नहीं पता, इसलिए मैं भगवान के नाम पर आपसे बार-बार रिक्वेस्ट करता हूँ कि उनका ध्यान रखें। मेरे नाबालिग बेटे की देखभाल करें, और जब वह बड़ा हो जाए तो उसे सब कुछ समझा दें।" फिर उन्होंने मरने के बाद की ज़िंदगी के बारे में बताया। 23

सेराब ग्यालत्सेन की मौत के कुछ दिनों बाद, उसके भाई ने सेराब ग्यालत्सेन की विधवा से सब कुछ छीन लिया, और इतना ही नहीं, उसने उसे उस आलीशान घर से भी निकाल दिया। विधवा कर्मोकियन अपने प्यारे पति को

खोने और अपने देवर के साथ हुए इस बुरे बर्ताव का दुख मना रही थी; लेकिन मासूम बहू क्या कर सकती थी! वह अपनी बेटी को गोद में लिए और अपने छोटे बेटे का हाथ पकड़े सड़क पर खड़ी होकर आंसू बहा रही थी। रिश्तेदार, दोस्त और जान-पहचान वाले जो कभी उसके पति की छत्र-छाया में रहते थे, उन्होंने यह नज़ारा देखा भी नहीं। सेराब ग्यालत्सेन के बुरे भाई के खिलाफ बोलने की हिम्मत कौन कर सकता था!

कारमोकियन गांव के कोने पर अपनी पुरानी ज़मीन के एक टुकड़े पर बस गईं और किसी तरह सिर छिपाने के लिए जगह ढूंढ़ ली। उनके पति के ईमानदार दोस्त कभी-कभी चुपके से उनके लिए खाना ले आते थे।

यह एक विधुर की दुर्दशा है, और सब कुछ होने के बावजूद, वे सभी बेसहारा हैं। जो दो दिन पहले अमीर था, वह अब सड़क पर भिखारी है। अपनी छोटी बेटी और बेटे के चेहरे देखकर, वह बस फूट-फूट कर रोने लगी और बोली, "हे भगवान, आपने हमारे साथ क्या कर दिया?"

धीरे-धीरे, जीजा का टॉर्चर और भी ज़्यादा होता गया। करमोकियन से रहा नहीं गया और एक दिन वह अपने बेटे मिलारेपा का हाथ पकड़े बाहर खड़ा हो गया - फिर उसने रोते हुए मिला से कहा - "भले ही तुम छोटे हो, तुम्हें सुनना होगा क्योंकि तुम ही मेरी एकमात्र उम्मीद हो, मेरी उम्मीद की रोशनी हो। मैं यह टॉर्चर अब और नहीं सह सकता। हमारी इस बुरी हालत के लिए तुम्हारे चाचा ज़िम्मेदार हैं। चाहे कुछ भी हो, हमें बदला लेना ही होगा। मुझे छूओ और वादा करो कि तुम सबसे बड़ा बदला लोगे। अगर तुमने आज मुझसे वादा नहीं किया, तो मैं उस पहाड़ से कूदकर मर जाऊँगा। मेरे पास अभी भी थोड़ी सी ज़मीन है, उसे बेचकर जो भी मिले, उससे तुम्हें तिब्बत के सबसे अच्छे तंत्र गुरु के पास भेज दूँगा। तुम बोलो - जिन्होंने तुम्हारे पिता की बातों का अपमान किया,

जिन्होंने तुम्हारी माँ को घर से निकाल दिया, जिन्होंने बच्चों के मुँह से दूध छीन लिया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৫১

कटोरा छीन लिया गया है, तुम्हारी साधना उनके खिलाफ होगी। तुम्हें अपनी माँ की आज्ञा माननी होगी। हालाँकि बालक मिलारेपा उम्र में बच्चा था, लेकिन अपनी पिछली ट्रेनिंग की वजह से वह समझदार था। उसने अपनी माँ की हर बात चुपचाप सुनी। फिर उसने चुपचाप अपनी माँ की आज्ञा मानी। कुछ दिनों बाद, बालक मिलारेपा ने अपनी प्यारी बहन पेटा और अपनी दुखी माँ को अलविदा कहा और एक सही तंत्र गुरु की तलाश में निकल पड़ा।

ग्यारहवीं सदी का तिब्बत। उस समय तिब्बत की सड़कों पर तांत्रिक थे, और उनमें से किसी को भी पिछले जन्म के कर्मों के बिना सही गुरु मिलना नामुमकिन था। मिलारेपा के कर्म बहुत अच्छे थे, उनकी माँ के आँसू उनके दिल को चुभने लगे। अपने मन की ताकत और जिज्ञासु मन से, उन्होंने मारने और ज़िंदा करने का गुप्त ज्ञान सीखना शुरू कर दिया। मिलारेपा बहुत कम समय में तांत्रिकों के साथ तांत्रिक बन गए। बच्चे का शुद्ध और सरल मन गुप्त ज्ञान के लिए एकदम सही जगह थी। कुछ ही सालों में, लड़का मिलारेपा तंत्र में सिद्धिराजन के बराबर एक तांत्रिक गुरु बन गया।

इस बीच, मिलारेपा के गाँव में, उसके चाचा, अपने पिता की दौलत से अमीर होकर, असली पैसे के लालची बन गए हैं। उनके अंदर का प्यार और दया पूरी

तरह से गायब हो गई है। इस समय, गाँव में सभी को उनके परिवार में एक शादी में बुलाया गया है, खासकर उसके चाचा के रिश्तेदारों और दोस्तों को, जो सभी जश्न के नशे में हैं। कहने की ज़रूरत नहीं है, मिलारेपा की माँ और बहन गाँव के एक कोने में चुपचाप दिन गिन रही हैं। जब शादी का जश्न पूरे ज़ोरों पर होता है, तो एक अजीब घटना होती है! अचानक, घर पर ज़ोरदार आवाज़ के साथ बिजली गिरती है, और नतीजतन, घर गिर जाता है। दूल्हा, दुल्हन और मेहमानों का ग्रुप कुचल जाता है, और उनके आस-पास के सभी लोग अपनी जान के डर से चीखने लगते हैं। दुखी माँ करमोकियन ने आवाज़ सुनकर अपनी छोटी बेटी को गोद में लिया, फिर गाँव वालों की चीखें सुनकर, वह यह देखने के लिए घर से बाहर भागती है कि क्या हो रहा है। जब उसे पता चला कि उसका महल जैसा घर बैंक्वेट हॉल में सब पर गिर गया है, तो उसे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ, फिर थोड़ी देर बाद वह हैरान रह गया, वह खुशी से नाचने लगा - वह अचानक पागलों की तरह ज़ोर से हँसने लगा, फिर वह चिल्लाया और सबको सुनाने के लिए नाचने लगा - "हो गया, बहुत मज़ा आया - मेरा बेटा अपने चाचा से बदला ले रहा है, यह बिजली मिलारेपा ने भेजी थी, उसी ने जादू-टोना सीखा है और यह खतरनाक हथियार भेजा है - उसने तीरों से घर तबाह कर दिया है। तुम सब सुनो, यह मेरे मिलारेपा का काम है, वह आज सारे ज़ुल्मों का बदला ले रहा है।" दुखी माँ स्वर्ग का मज़ा ले रही थी। अब तक, उसकी उम्मीदें पूरी हो रही थीं। हालाँकि घर में सब कुचले गए थे, उसके चाचा और चाची किसी तरह घर के कोने से भागने में कामयाब रहे - उनके किए का सारा जुर्माना अभी तक नहीं भरा गया था। सब

৩৫২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उन्होंने कर्मोकियन की हर बात सुनी। पहले तो उन्हें यकीन नहीं हुआ, लेकिन आखिरकार उन्हें यकीन होने लगा। सबको लगा कि यह नामुमकिन है, लेकिन यह हो सकता है, ज़्यादातर लोग डर के मारे यकीन कर लेते थे। माँ भिखारी की खुशी से लगभग हैरान रह गई थी। क्योंकि यह घटना इतनी जल्दी हुई थी, इसलिए गाँव वालों को कुछ समझने में कुछ दिन लग गए, और फिर जब उन्हें कर्मोकियन की बातों पर यकीन हुआ, तो वे कर्मोकियन को नफ़रत से देखने लगे। गाँव वालों का उस पर ज़ुल्म और भी भयानक हो गया। भीख माँगना लगभग बंद हो गया।

टॉर्चर बर्दाश्त न कर पाने की वजह से, करमोकियन ने एक मैसेंजर के ज़रिए अपने बेटे को एक चिट्ठी लिखी। उसमें उसने लिखा कि टॉर्चर अब अपने चरम पर पहुँच गया है, इसलिए और बदला लेना होगा, अगर ज़रूरी हो, तो सभी घरों और दरवाज़ों को जला देना चाहिए - यह उसकी माँ का भी आदेश था। इस तरह, मिलारेपा को अपने पिता का कर्ज़ चुकाना होगा। चिट्ठी भेजने के बाद, वह इंतज़ार करने लगा - एक और मुसीबत का।

फिर एक दिन कुदरत का जंगली नाच फिर शुरू हुआ, जब गांव और आस-पास के खेतों में सब्ज़ियां खूब थीं, जब सब लोग नई फसल घर लाने के लिए तैयार थे, उसी समय ओले गिरने लगे। आसमान साफ़ नीला था, बादलों का नामोनिशान नहीं था, लेकिन किसी को समझ नहीं आ रहा था कि यह ओले कहाँ से शुरू हुए हैं। कमाल है! कुछ ही देर में खेत और घाट ओलों से सफ़ेद हो गए। सारी फसलें बर्बाद देखकर गांव वाले विलाप करने लगे।

और दूसरी तरफ, मिलारेपा की माँ एक बार फिर खुशी से नाचने लगी। यह उन लोगों के लिए एक बड़ा झटका था जिन्होंने उनका सारा सामान छीन लिया था और उन्हें उनके घरों से निकाल दिया था। उस साल, फसल की कमी के कारण, गाँव में अकाल पड़ गया। कई लोग मर गए, और जो बच गए उन्होंने इस अफ़रा-तफ़री के लिए करमोकियन को दोषी ठहराया। सब उसे कोसने लगे।

करमोकियन को कोई फ़र्क नहीं पड़ा। क्योंकि जिस दुख में वह था, उससे बड़ा दुनिया में कोई दुख नहीं था। उसका बेटा मिलारेपा एक शक्तिशाली तांत्रिक बन गया था, और यह उसका सबसे बड़ा गर्व बन गया।

इस घटना के बाद मिलारेपा की माँ कितनी भी खुश क्यों न हुई हो, मिलारेपा के मन में एक बड़ा परिवर्तन आया। मिलारेपा को अपने गुप्त ज्ञान से गाँव को हुई बड़ी हानि का पश्चाताप हुआ। वह हिंसा के द्वारा अपनी घृणा पर विजय पाना चाहता था। क्या यही सत्य मार्ग है, आदि। उसका मन अनेक प्रश्नों से बोझिल हो गया। वह एकांत में बैठकर बार-बार अपने आप से पूछता - विनाश नहीं, मृत्यु नहीं, मुझे आनंद चाहिए, मुझे मुक्ति चाहिए। मारना, उखाड़ फेंकना, पराधीन करना, विनाश, बिजली गिरना, ये सब इस संसार की चीजें हैं। संसार से बाहर आनंद की दुनिया में जाने का वास्तविक मार्ग क्या है? मुझे उसे अभी खोजना होगा। मिलारेपा ने अचानक अपने आप को पुनः खोज लिया। गुप्त ज्ञान में सिद्धि प्राप्त करके वह स्वयं विनाश के जाल में फँस गया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৫৩

वह उलझ गया है, मुक्ति के बजाय वह पूर्णता का कैदी बन गया है। उसका मन अब रो रहा है। उसे मुक्ति चाहिए, उसे आनंद चाहिए, उसे अब इसकी तलाश करनी होगी - इसके लिए उसे एक शुद्ध गुरु चाहिए। वह गुरु कहाँ मिलेगा? उसे कौन ढूंढेगा? मिलारेपा के जीवन में एक बड़ा बदलाव आया। उसने जीवन में मुक्ति के लिए एक सही गुरु की तलाश शुरू कर दी।

मिलारेपा दिन-ब-दिन तिब्बत के हर पहाड़, घाटी और वादी में घूमने लगे और अपने सच्चे गुरु को खोजने लगे। उनकी कोशिशें बेकार नहीं गईं।

रोशनी कभी पेड़ों के पत्तों से नहीं ढकती, न ही सूरज हमेशा बादलों से ढका रह सकता है। मिलारेपा को अपने गुरु मिल गए। उस समय तिब्बत में ज्ञानगुरु विक्रमशिला के मुखिया आतिश दीपांकर के असर में जिन योगियों ने उनके फ़लसफ़े को फैलाया, उनमें गुरु नरोपा खास तौर पर जाने-माने थे। गुरु नरोपा के शिष्य मारपा भारत से अपना ज्ञान और शास्त्र तिब्बत लाए। किस्मत के देवता मिलारेपा को उस गुरु के चरणों में ले आए।

मिलारेपा का मुक्ति स्नान शुरू हो गया है। वह स्नान आसान नहीं है, वह पानी में डूबे रहने जैसा है।

गुरु मारपा ने सबसे पहले आदेश दिया - "यहाँ मैं दस मंज़िला घर बनाना चाहता हूँ, दूर बहुत सारे पत्थर हैं, उन्हें एक-एक करके लाना और जमाना है। मैं चाहता हूँ कि घर सुंदर हो और गोल हो। तुम्हें सब कुछ अकेले ही करना होगा। तुम जादूगर हो, मैं तुम्हें अपना जादू दिखाता हूँ। जब घर बन जाएगा, तो मैं तुम्हें दीक्षा दूँगा।" दीक्षा की बातें सुनकर मिलारेपा की आत्मा में खुशी की लहर दौड़ गई। काम शुरू हुआ। काम बहुत मुश्किल था। पहले नींव काटनी थी, फिर पत्थर काटने थे, फिर एक-एक करके दीवारें लाकर बनानी थीं। यह काम आम लोगों के लिए बहुत मुश्किल था। मिलारेपा के लिए भी यह बहुत मुश्किल था क्योंकि यह काम उनके जादू के करतबों का इस्तेमाल किए बिना पूरा करना था। कुछ ही दिनों में उनके हाथों और पैरों की स्किन फटने लगी, और फिर उनकी पीठ पर स्किन पर पत्थर गिरने से निशान पड़ गए। फिर भी, उन्होंने मुस्कुराते हुए अपना काम जारी रखा। उसके मन में बस यही उम्मीद थी कि उसे जीवन मुक्ति के लिए दीक्षा मिलेगी। जैसे ही घर का निचला फ़्लोर बन रहा था, गुरु मारपा आ गए - फिर, बिना किसी दिखावे के, वे चिल्लाए - "तुम्हें ऐसा करने के लिए किसने कहा - ऐसा नहीं होगा, इसे सब तोड़ दो।" गुरु की बातों का विरोध किए बिना, उसने अपने बनाए हुए घर गिरा

दिए। फिर, गुरु के आदेश पर, उसने फिर से एक नया घर बनाना शुरू कर दिया। इस सर्दी में, तिब्बत के खुरदुरे पत्थर उस पर गिरे। बिना कोई जादू किए, उसने धीरे-धीरे गुरु के बताए घर को फिर से बनाना शुरू कर दिया।

इस बार, बहुत कोशिश करके, उसने उसे लगभग दूसरी मंज़िल तक पहुँचा दिया। गुरु फिर आए, उसे डांटा और कहा, "मैं नहीं चाहता कि ऐसा घर अलग हो।" इतना ही नहीं,

৩৫৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

जगह भी बदलनी होगी। गुरु की बातों पर इतना विरोध किए बिना, उसे अपने हाथों से और इतनी मुश्किल से बनाया हुआ घर गिराने के लिए मजबूर होना पड़ा। पिछली बार की तरह, इस बार भी उसने गुरु से कुछ नहीं कहा। फिर से, नई हिदायतों के साथ, घर बनाना शुरू हुआ। पत्थरों से उसके हाथ जख्मी हो गए थे, उसे हाथों में चिथड़े बांधकर काम करना पड़ रहा था, उसकी पीठ पर घाव बहुत बड़ा था, जो पूरी पीठ पर फैल गया था। उसका शरीर जख्मी और खून से लथपथ था, फिर भी उसने इतना विरोध नहीं किया।

तोड़ने और बनाने का यह खेल कई बार और चला। लेकिन आखिर में, मिलारेपा का शरीर सच में टूट गया। गुरु की पत्नी, दमेमा, कभी-कभी खाना लातीं, और उनके चोटिल शरीर को सहलाकर उन्हें दिलासा देतीं, और मिलारेपा की हालत देखकर चुपचाप आँसू बहातीं। दमेमा ने अब मिलारेपा की माँ की जगह ले ली थी, और उनका प्यार ही मिलारेपा के दुख में दिलासा था। इतने दुख के बावजूद, मिलारेपा ने अपने गुरु के खिलाफ ज़रा भी विरोध नहीं किया। फिर एक दिन ऐसा आया जब मिलारेपा के चोटिल शरीर के साथ काम

करना नामुमकिन हो गया। दयालु दमेमा ने अपने पति को मिलारेपा की मौत के बारे में बताया और साथ ही उनसे मिलारेपा पर दया करने की प्रार्थना की। मारपा का स्वभाव दमेमा के बिल्कुल उलटा था। इतने समझदार होने के बावजूद, उन्हें मिलारेपा पर ज़रा भी दया नहीं आई, और तो और, उन्होंने दमेमा को डांटा और कहा, "वह यह सब बकवास कर रहा है, वह पाखंडी मेरे काम नहीं आएगा। मैंने उसे पहले ही बता दिया है कि दस मंज़िला इमारत बनने के बाद मैं उसे दीक्षा दूँगा।" दमेमा की बातों से मारपारापा का दिल नहीं पिघला। उनके शरीर की हालत और भी खराब हो गई, मिलारेपा कोढ़ी की तरह कमज़ोर हो गए। इस समय तक, वह आखिरकार बोल ही चुके थे। उन्होंने बहुत विनम्रता से कहा, "जब मैं आपके आदेश का पालन करने के काबिल नहीं रहूँगा, तो मैं यहाँ से क्या करूँगा? मुझे जाने का आदेश दीजिए।" गुरु ने पहले की तरह ही डांटने वाले लहजे में कहा, "तुम कहाँ जाओगे? तुमने अपना शरीर, मन और आत्मा मुझे सौंप दी है। तुम्हारा शरीर अब तुम्हारा नहीं रहा, यह सब मेरा है। इसलिए, तुम्हें नहीं जाना चाहिए।"

गुरु की इन बातों के बाद, कोई बात नहीं हुई - मिलारेपा को लगा कि यह सच है। गुरु के चरणों में जो कभी चढ़ाया गया था, उस पर अब उनका कोई अधिकार नहीं था। दमेमा ने घर के अंदर से सब कुछ सुन लिया - फिर अपने पति से कुछ पूछे बिना, वह मिलारेपा की सेवा में चली गईं। एक माँ होने के नाते, वह यह दुर्दशा कैसे देख सकती थीं? गुरु मारपा और गुरु की पत्नी दमेमा के चरित्र बिल्कुल विपरीत थे। एक भयंकर योद्धा थीं, और दूसरी सौम्य कुसुमदा। मिलारेपा ने देखा कि गुरुमा उनके बारे में उतना ही सोच रहे थे जितना वह। गुरुमा का दुख मिलारेपा के लिए था, इसलिए उन्हें ऐसी हालत में वहाँ नहीं होना चाहिए था। थोड़ा ठीक होने के बाद, एक दिन सुबह, वह निरुद्देस के रास्ते पर निकल पड़े।

मुख्य शिष्य और दर्शनशास्त्र के विद्वान नोंगदुन के पास एक चिट्ठी और दीक्षा के लिए कुछ बेमिसाल सामान के साथ भेजा। नोंगदुन ने मिलारेपा के ज़रिए गुरुमा का चिट्ठी और सामान पाकर खुद को धन्य माना और मिलारेपा को खास देखभाल और पवित्रता के साथ उनकी शुरुआती दीक्षा दी। मिलारेपा आनंदलोक के रास्ते पर एक और कदम चढ़ गए। मिलारेपा ने अपनी तपस्या शुरू कर दी। फिर वह दिन आ गया जिसका लंबे समय से इंतज़ार था। जिस दिन के लिए मिलारेपा ने धैर्यपूर्वक इतनी शारीरिक और मानसिक पीड़ा सहन की थी, उत्सुकता से दिनों की गिनती कर रहे थे।

गुरु मारपा ने बड़े धूमधाम से मिलारेपा को पूरी दीक्षा दी, मिलारेपा का इंसानी जीवन सफल हो गया। उस दिन गुरु मारपा ने मिलारेपा को गले लगाया और कहा - "तुमने अपना पवित्र काम पूरा कर लिया है, तुमने अपने कर्मों के फल को शारीरिक और मानसिक कष्टों से जला दिया है। मैंने तुम्हें तुम्हारे रहस्यमयी ज्ञान के फल से बचाने के लिए तुम पर इतना बोझ डाला, मुझे पता था कि तुम यह कर सकते हो। अगर दमेमा ने अपने स्नेह से तुम्हारा रास्ता न रोका होता, तो तुम बहुत पहले ही मुक्त हो गए होते।" गुरु और शिष्य के मिलन का यह दृश्य देखकर प्यार करने वाली दमेमा खुशी के आंसू नहीं रोक पाईं। बेटे की खुशी में मां की खुशी। गुरु मारपा, माता दमेमा और मिलारेपा का वह खुशी का दिन इतिहास के पन्नों में दर्ज है।

৩৫৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

अमर रहो। अब कोई बाधा नहीं है। अब से मिलारेपा केवल तपस्या, तपस्या और तपस्या ही शुरू करेंगे।

ज़िंदगी में यह बड़ा बदलाव था, जो उनके करीब थे, वे अब उनसे दूर हो गए। मिलारेपा अपनी आत्मकथा किसे सुनाते, ये विचार मिलारेपा की मीठी आवाज़ में संगीत के रूप में ज़ाहिर होने लगे। ऐसा लगा कि उनके पिता और माँ मिलारेपा को परलोक से आशीर्वाद देने लगे।

अगले दिन, मिलारेपा ने अपनी माँ की बची हुई हड्डियाँ इकट्ठा कीं, उन्हें गाँव के पास एक जगह पर दफ़नाया और उनके ऊपर एक सुंदर मकबरा बनवाया। मकबरे के पास बैठकर, उन्होंने फिर से जीवन और मृत्यु के अनंत बंधनों से हमेशा के लिए मुक्ति का गीत गाया।

383

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৫৭

फिर मिलारेपा ने गाँव से थोड़ी दूर एक गुफा में तपस्या करना शुरू कर दिया। कुछ दिनों बाद, वह भीख माँगने के लिए गाँव वापस आया। भोलानाथ मिलारेपा ने सोचा कि इतने समय बाद गाँव के लोग उसे भूल गए हैं, लेकिन किस्मत की अजीब बात और रहस्यमयी विद्या के नतीजों में अभी भी कुछ कमी बाकी थी। भीख माँगने के लिए वह जिस पहले घर पर रुका, वह उसकी मौसी का घर था। उसने मिला को देखते ही पहचान लिया, और एक बाघिन की तरह, उसने सबको इकट्ठा किया, एक लकड़ी की छड़ी ली, और बिना किसी हिचकिचाहट के बीमार गुफा में रहने वाले मिलारेपा को पीटना शुरू कर दिया। मौसी इतने पर ही नहीं रुकी, उसने उसे मारने के लिए अपने कुत्ते भेजे। मिलारेपा ने किसी तरह पास के तालाब में कूदकर अपनी जान बचाई। जब माहौल थोड़ा शांत हुआ, तो वह तालाब से बाहर आया - फिर, अपने चाचा को देखकर, उसने फिर से एक गाना उठाया - गाने के असली बोल कुछ इस

तरह थे - "यह सच है कि मैंने तुम्हारा घर बर्बाद किया है, तुम्हारी ज़मीन पर प्लेग लाया है - मैं तुम्हारे बच्चों और रिश्तेदारों की मौत के लिए ज़िम्मेदार हूँ, लेकिन क्या तुम पिछली बातें भूल गए? क्या तुमने एक विधवा से मेरे पिता की सारी ज़मीन और जायदाद नहीं लूटी? क्या वह विधवा अपने दो बच्चों के साथ लाचारी की हालत में, खाने की तलाश में दर-दर नहीं भटकी? क्या तुमने उस विधवा के आँसुओं में, तुम्हारे ज़ुल्म की वजह से, दया से दो बच्चों का भविष्य देखा? वह दुखी माँ अब घर में बेबस होकर मौत की गोद में गिर गई है और उसकी बेटी पेट के कारण कहाँ चली गई? और अब वह कह रही है कि मैं तुम्हारी बदकिस्मती के लिए ज़िम्मेदार हूँ। मैंने अब हमेशा के लिए खुशी के लिए दीक्षा ले ली है, मेरा रास्ता अब हिंसा का नहीं है, मेरा रास्ता मुक्ति का रास्ता है - माफ़ी का रास्ता। मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया है। और मैं तुम्हारी रिहाई के लिए प्रार्थना करूँगी। मुझे दर्द के लिए इतना अफ़सोस नहीं है।" तुमने मुझे बनाया है, भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें। असल में, तुम्हारे लिए ही मैंने यह रास्ता अपनाया है।' मिलारेपा का यह गाना सुनकर वह पत्थर दिल चाची भी अपने आंसू नहीं रोक पाईं। उसके बाद, मिला गांव में जहां भी गई, उसे खून से सनी आंखें और डांट मिली!

फिर मिलारेपा अपनी मंगेतर जेस से मिले। जेस उस समय जवानी के पूरे जोश में थे - मिलारेपा ही थे जो उनके पास बैठ गए। मिलारेपा ने उन्हें समझाया कि उनका रास्ता बहुत मुश्किल है, और वह नहीं चाहते कि कोई इसमें फंसे। असल में, यह त्याग का रास्ता था - त्याग का रास्ता। जब तक आप सब कुछ त्याग नहीं देते, परफेक्शन नहीं आता। इसीलिए उन्होंने यह रास्ता चुना। मिलारेपा ने जेस को ज़िंदगी के रास्ते पर चलने के लिए सही सलाह दी, और जेस ने उसे मान लिया। हालांकि, जेस चाहें तो कभी- कभी मिलारेपा से मिल सकते थे, इसमें कोई रुकावट नहीं थी।

जेस के ज़रिए मिलारेपा को अपनी बहन पेटा भी मिली। पेटा अब

৩৫৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

सड़क पर एक भिखारी। उसे मिलारेपा की तपस्या समझ नहीं आई। मिलारेपा के पास कितनी भी चमत्कारी शक्ति क्यों न हो, भिखारी पेटा एक भिखारी से ज़्यादा कुछ नहीं था। अगर वह अपनी चमत्कारी शक्ति से अमीर नहीं बन सकता था, तो उसका क्या मतलब था! मिलारेपा ने पेटा को अपनी ध्यान गुफा में आने का अधिकार भी दिया।

मिलारेपा का दुनियावी जीवन और काम खत्म हो गए, और उनकी तपस्या फिर से शुरू हो गई। पहाड़ की एकांत गुफा ही उनकी एकमात्र जगह थी। मिलारेपा की आध्यात्मिक साधना उन दुर्लभ मैन्युस्क्रिप्ट्स के ज़रिए जारी रही जो गुरु मारपा ने अपने गुरु नरोपा, यानी भारत से इकट्ठा की थीं। महागुरु नरोपा एक सिद्ध पुरुष थे, और अपनी मृत्यु के बाद भी, वे अलग-अलग प्राणियों के बीच रहते थे। उन्होंने ही मारपा को सपने में बताया था कि मिलारेपा उनके योग्य शिष्य हैं; इन्हीं मिलारेपा के ज़रिए तिब्बत में सिद्ध साधना का असली रूप सामने आएगा। गुरु मारपा महागुरु के दर्शन और मिलारेपा की साधना पर चर्चा करने के लिए फिर से भारत आए। महागुरु ने उन्हें दर्शन दिए और उनकी झोली फिर से दर्शन और शास्त्रों से भर दी। इस तरह, मिलारेपा ने अप्रत्यक्ष रूप से अपनी भारतीय दार्शनिक साधना पूरी की।

मिलारेपा मेडिटेशन की कसम खाकर पैदा हुए थे। उन्होंने तब तक मेडिटेशन नहीं छोड़ा जब तक वे अपने रास्ते की सबसे ऊँची चोटी पर नहीं पहुँच गए। अपना मेडिटेशन पूरा करने के बाद, उन्होंने बंद

मेडिटेशन शुरू किया, यानी गुफा के अंदर एक के बाद एक पत्थर जमाते हुए, खुद को बाहरी दुनिया से पूरी तरह अलग कर लिया। मिलारेपा के बंद मेडिटेशन के दौरान, गुरुमा दमेमा गुफा में एक छेद के ज़रिए मिलारेपा को दिन में एक बार खाना देती थीं। मिलारेपा कभी खाते, कभी नहीं। एक बार मेडिटेशन में बैठने के बाद, उनका मेडिटेशन कभी नहीं टूटता था, उन्हें मेडिटेशन में ही आनंद की दुनिया मिल जाती थी। उन्होंने बचपन से ही भूख और प्यास पर काबू पा लिया था। वे कई दिनों तक बिना खाए रह सकते थे।

गुरु मारपा मिलारेपा की एकाग्रता और तपस्या से खुश हुए और उन्हें ब्रह्म का ज्ञान दिया। सद्गुरु मारपा ने मिलारेपा को यह सर्वोच्च ज्ञान दिया और कहा, "तुम मेरे जीवन से भी बढ़कर हो, मैंने तुम्हें अपना सब कुछ दे दिया है, और अब मुझे मुक्ति मिल गई है। मैंने अपने गुरु का जो कर्ज लिया था, वह चुक गया है। तुम मेरे वारिस होगे।"

बाद में, मिलारेपा गुरु मारपा के आश्रम के मुख्य गुरु बन गए। सभी तपस्याओं में सिद्धि प्राप्त करने के बाद, मिलारेपा अपने गीतों के माध्यम से सभी को सलाह देने लगे। दुनिया की सभी इच्छाओं का अंत दुख में होता है, दुख को दुख से नहीं जीता जा सकता, न ही हिंसा से। जो लोग दुनिया में खुशी चाहते हैं, वे दुनिया में ही पहुँच जाते हैं, दुनिया का आनंद, असली खुशी ब्रह्मांड में है - वह हमेशा रहने वाला आनंद है - उसका कोई अंत नहीं है।

मेडिटेशन से मन शांत होता है; उस शांत मन में, खुद के बारे में जानने से सही रास्ता मिलता है। सभी जीवों में बराबरी इंसान की ज़िंदगी का मकसद होना चाहिए। बिना सोचे-समझे सोचने का एक बहुत बड़ा सागर है, उस सागर में गोता लगाने से इंसान अमरता की ज़मीन पा सकता है।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৫৯

৩৬০

खोजो। यह खालीपन खालीपन नहीं है - बिना शरीर की चेतना के होने की स्थिति ही बुद्धत्व है। यही वज्रयान का अंतिम लक्ष्य है।

मिलारेपा कभी भी तपस्या के लिए गुफा में नहीं बैठे। जब भी उन्हें कोई छोटी सी रुकावट या परेशानी होती, तो वे गुफाएँ बदल लेते, और इस तरह उन्होंने हिमालय में एक गुफा से दूसरी गुफा में भटकते हुए सालों बिताए। उन्हें एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर जाने में भी कोई दिक्कत नहीं हुई। शरीर उनका मालिक नहीं था, वह सिर्फ़ मन का गुलाम था; मन जहाँ भी जाता, शरीर उसके पीछे-पीछे चलने को मजबूर हो जाता। आखिर में, महान योगी मिलारेपा ने चलने-फिरने की सिद्धि पा ली। वे बिना किसी कोशिश के जगह बदल सकते थे। फिर महान योगी की बातें छिपी नहीं रहीं, इस सिद्ध पुरुष की बातें तिब्बत के गाँवों में फैल गईं। उनकी गुफा के पास लोगों की भीड़ जमा होने लगी।

मिलारेपा की बहन पेटा ने उनकी मदद के लिए फिर से मिलारेपा से कॉन्टैक्ट किया, खासकर उनकी गुफा में खाना और सामान पहुंचाने की ज़िम्मेदारी लेने के लिए। हालांकि, उनकी कड़ी तपस्या का कारण उन्हें हमेशा के लिए पता नहीं चला। पेटा ने भी यही कहा - अगर एक महान गुरु होने के नाते भी नंगा रहना पड़ता है, तो इतनी मेहनत करने की क्या ज़रूरत है? जेस भी कभी-कभी मिलारेपा से मिलता था, लेकिन उसे पूरी ज़िंदगी अकेले ही रहना पड़ा। क्योंकि मिलारेपा के लिए शरीर की

कोई कीमत नहीं है - मन की कीमत है। अगर वह कीमती मन बुद्ध के चरणों में नहीं सौंपा जा सकता, तो उसकी कीमत कहाँ है? इसलिए वह बार-बार गाता था - "सब कुछ छोड़ दो, सब कुछ छोड़ दो, अगर तुम सब कुछ नहीं छोड़ोगे, तो तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा।"

मिलारेपा की शिक्षाएं और गीत धीरे-धीरे पूरे तिब्बत में फैल गए। मिलारेपा तिब्बत के महान शिक्षक और सबसे बुद्धिमान बन गए। सम्मान और शोहरत मिलारेपा को उनके सिद्धासन से नीचे नहीं ला सके। गुफा में रहने वालों से भी मिलारेपा ने अपने आनंद के अमर संदेश का प्रचार करना शुरू कर दिया - हमें इस छोटी सी ज़िंदगी के लिए छोटी-मोटी खुशियों के पीछे नहीं भागना चाहिए, बल्कि हमेशा की ज़िंदगी के लिए बड़ी खुशियों की तलाश करनी चाहिए। घर-ज़मीन-सोना-शिष्य - यह सब इस आम ज़िंदगी के लिए है, कोई भी अनजान इंसान इसे पा सकता है। लेकिन जो बुद्धिमान हैं वे हमेशा रहने वाले सच को जीतना चाहते हैं। हमें साधना में तब आगे बढ़ना चाहिए जब हमारे शरीर में ताकत हो, बाद में नहीं। मिलारेपा जब पहली बार अपने गांव लौटे, तो उन्होंने इसे एक गीत के ज़रिए खूबसूरती से बताया - 'जब ज़मीन उपजाऊ थी, तो ज़मीन का मालिक ज़मीन छोड़कर चला गया। जब मालिक वापस आया, तो ज़मीन घास-फूस से ढकी हुई थी।' यानी, हमें साधना के रास्ते पर तभी कूदना चाहिए जब मन और शरीर में शांति और ताकत हो। जो लोग यह कहकर साधना का रास्ता छोड़ देते हैं कि यह बाद में होगा, उनकी स्थिति की तुलना उस मालिक से की जा सकती है जो उपजाऊ ज़मीन छोड़कर कहीं और चला जाता है।

यह शरीर नश्वर है, इसलिए इसके पीछे भागने का कोई मतलब नहीं है। शरीर कितना भी बड़ा क्यों न हो, शरीर की कोई कीमत नहीं है, आत्मा की कीमत है। इसलिए

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मिलारेपा ने अपने शिष्यों से कहा, "किसी को भी मेरी मौत पर दुख नहीं मनाना चाहिए - किसी को भी मेरे शरीर पर कोई रस्म नहीं करनी चाहिए - भले ही यह शरीर किसी अनजान गुफा में पड़ा हो और जानवरों और कीड़ों का खाना बन जाए, तुम्हें इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। तुम्हें इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि मैं मरने के बाद कहाँ जाऊँगा या कहाँ रहूँगा, क्योंकि आज़ाद आत्मा की कोई खास मंज़िल नहीं होती, वही परम मुक्ति है।"

तिब्बत के महान ऋषि, बाउल ऋषि, मिलारेपा ने अपनी सारी शिक्षाएँ गाने के ज़रिए दीं। जिसने भी उनकी सुंदर आवाज़ में उनकी शिक्षाएँ सुनीं, वह धन्य हो गया। प्रकृति की देवी लय के रूप में मिलारेपा के शरीर में आईं - और तारा देवी ने उन्हें भाषा दी। मिलारेपा का कठोर जीवन बाद में पूरी खुशी और लय से भर गया।

महान योगी और चमत्कारी शक्तियों वाले मिलारेपा की मौत भी बहुत अजीब और दर्दनाक थी। मिलारेपा सबसे पवित्रता की निशानी थे। वे गरीबों के लिए पिता जैसे थे। धर्म पर उनकी शिक्षाएँ बहुत आसान थीं। वे इतनी मुश्किलों और तपस्या से आध्यात्मिक दुनिया की सबसे ऊँची चोटी तक पहुँचे थे, फिर भी उन्होंने हमेशा दूसरों को आसान और सरल रास्ता दिखाया। उन्होंने उन्हें शास्त्र पढ़ने और दिखावटी रस्मों और रीति- रिवाजों में समय बर्बाद करने के बजाय सीधे ध्यान से समाधि पाने की सलाह दी।

इस आसान और सीधे रास्ते पर मिलारेपा की सलाह को उस समय के लामा समुदाय में ज़्यादा इज़्ज़त नहीं मिली। क्योंकि उस समय के ज़्यादातर लामाओं ने आम लोगों के भरोसे और सादगी का फ़ायदा उठाकर

गुरु का धंधा खड़ा कर लिया था। लामाओं का यह वर्ग बहुत अमीर और समाज में असरदार था।

लामा सफुआ उनमें से एक थे। मिलारेपा की शोहरत और अद्भुत चमत्कारी शक्तियों और तपस्या की चर्चा तिब्बत में घर-घर फैल गई। यह देखकर कि लामा सफुआ के कई भक्त भी मिलारेपा के आदर्शों की ओर झुके हुए थे, सफुआ को जलन होने लगी। उसने मन ही मन सोचा कि अगर मिलारेपा कुछ और सालों तक अपना उदार संदेश फैलाते रहे, तो न केवल लामा सफुआ बल्कि तिब्बत के सभी लामा दिवालिया हो जाएंगे। लामा सफुआ लामा के भेष में एक असली पाखंडी थे।

उन्होंने मिलारेपा को बहस के लिए लामा के महल में बुलाया। मिलारेपा ने उनका इरादा समझकर लामा सफुआ के हथियार छीन लिए। फिर लामा सफुआ ने कई वजहों से और बिना किसी वजह के मिलारेपा को भड़काने की कोशिश की। महान योगी मिलारेपा मुस्कुराए और लामा सफुआ की सारी कोशिशों को नाकाम कर दिया। अब लामा सफुआ हताश हो गए - मिलारेपा को किसी भी तरह दुनिया से हटाना था, नहीं तो लामा वंश खत्म हो जाएगा।

387

महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৬১

बहुत सोचने के बाद, पाखंडी लामा सफुआ ने एक भयानक साज़िश रची। लामा सफुआ का कैरेक्टर कुछ खास नहीं था - उसकी कई रखैलें थीं। उसने उनमें से एक को बुलाया और उसे अपनी साज़िश के बारे में बताया। औरत पहले तो राज़ी नहीं हुई। लेकिन लामा सफुआ ने उसे समझाया कि मिलारेपा असल में

तुरंत मर गया, तो तुम्हें वह गहना नहीं मिलेगा जिसका तुमने वादा किया था; बेहतर होगा कि तुम पहले उसे इकट्ठा कर लो और फिर अपना काम करो।" मिलारेपा की बातें सुनकर औरत का दिल डर से काँप उठा, लेकिन वह गहने के लालच को झेलने के मूड में नहीं थी। इसलिए इस बार वह वापस चली गई। लामा सफुआ अब उसके काम के लिए कोई भी इनाम देने को तैयार थे। उन्होंने उस महिला को एक महंगा तोहफ़ा दिया।

২৫

৩৬২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

उन्होंने गहना देते हुए कहा, "जाओ, इस बार कोई बात नहीं, तुम्हें अपना काम करना है।"

जैसे ही वह रत्न लेकर मिलारेपा की गुफा में पहुँचा, मिलारेपा ने कहा, "जो लोग धरती पर जीवन लेते हैं, उन्हें एक दिन फिर से वह जीवन छोड़ना होगा। मेरे जाने का समय हो गया है; तुम और लामा सफुआ तो बस एक मौका हो। मेरे जीवन का मुख्य सिद्धांत माफ़ करना है। मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया है। मैंने बहुत पहले ही गुस्सा और वह सब छोड़ दिया है। मैंने यह बात छिपाई है कि मैं तुम्हारा ज़हरीला खाना तुम्हारी भलाई के लिए खा रहा हूँ। मैं किसी को नहीं बताऊँगा।" यह कहकर, महान ऋषि मिलारेपा ने ज़हरीला दही खा लिया। वह महिला अब और बर्दाश्त नहीं कर सकी - वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी और मिलारेपा के पैरों पर गिर पड़ी, वह अब यह नहीं जान सकती थी कि मिलारेपा ही असली बुद्ध थे, और लामा सफुआ असली पाखंडी और पापी थे।

इस तरह के ज़हर में आम लोग तुरंत मर जाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे ज़हरीले साँप के काटने से मर जाते हैं। लेकिन मिलारेपा के लिए यह अपनी मर्ज़ी से मौत है, और मौत भी उनके पूरे कंट्रोल में है। उन्हें अपने भक्तों के मन को तैयार करने के लिए कुछ और दिन चाहिए। इसलिए भले ही ज़हर उनके शरीर में काम कर रहा था, उनका मन पूरी तरह से उनके कंट्रोल में रहा। उन्होंने मन को शरीर की तकलीफ़ से पूरी तरह अलग कर दिया।

कुछ ही दिनों में भक्तों को पता चला कि गुरु बीमार पड़ गए हैं, लेकिन इसका कारण किसी को पता नहीं चला। लामा सफुआ इस खबर से सबसे ज़्यादा परेशान थे कि मिलारेपा बहुत ज़हरीला दही खाने के बावजूद कुछ दिनों तक ज़िंदा रहे। बुरी आत्मा सफुआ कन्फ्यूज़न में थी। अब और शांत नहीं रह सका, इसलिए वह खुद मिलारेपा के पास गया ताकि पता लगा सके कि क्या मिलारेपा को उसकी साज़िश का पता चल गया है। फिर, हमदर्दी दिखाने का नाटक करते हुए, उसने सबके सामने मिलारेपा से पूछा, "अरे! तुम्हारी यह हालत किसने की है? तुम जैसे समझदार लोगों की संगति में रहना बहुत ज़रूरी है। तुम चमत्कारी ज्ञान के मालिक हो, इसलिए मुझ पर यह बीमारी डाल दो, मैं तुम्हारे लिए मर जाऊँगा।" लामा सफुआ का यह बहुत बड़ा दोगलापन देखने के बाद भी वे शांत रहे और प्यार से बोले, "किसी के मन में भूत आ गया है, इसीलिए उसने ऐसा किया है। इस बीमारी की जलन बर्दाश्त से बाहर है; कोई भी इंसान इसे सह नहीं सकता। इसलिए, आप पर यह बीमारी लादना नामुमकिन है, आपका शरीर इसे सह नहीं सकता।"

दुष्ट और शैतान लामा सफुआ बेचैन था। वह यह जानने के लिए पागल था कि क्या मिलारेपा को उसकी साज़िश के बारे में पता चल गया है, और यह मिलारेपा की ताकत को परखने का सबसे अच्छा मौका था। इसलिए उसने बार-बार सबके सामने मिलारेपा की बीमारी सहने की ज़िद की। आखिर में, दयालु मिलारेपा ने कहा, "तुम मेरी यह बीमारी कभी नहीं सह पाओगे -

लेकिन अगर तुम चाहो, तो मैं तुम्हें दिखा दूँगा - गुफा के बाहर का दरवाज़ा।"

389
महातीर्थ का अंतिम यात्री

৩৬৩

"तुम लकड़ी को देखो, मैं इस पर अपना दर्द दे रहा हूँ, ध्यान से देखो।" उनके यह कहते ही सब लोग लकड़ी को देखने लगे - थोड़ी ही देर में, ठोस लकड़ी जलकर खराब हो गई लग रही थी। अपनी आँखों के सामने यह नज़ारा देखकर सब सिहर गए। कोई समझ नहीं पा रहा था कि मिलारेपा को कौन सी भयानक बीमारी है। यह नज़ारा देखने के बाद भी लामा सफुआ ने मिलारेपा से कहा - "यह लकड़ी है, इसलिए इससे इतना चमत्कारी ज्ञान दिखाना मुमकिन है, लेकिन मैं तो ठोस लामा सफुआ हूँ, जो मांस और खून से बना है। प्लीज़ मुझ पर इस बीमारी को कंट्रोल करें, मैं आपसे विनती करता हूँ।"

अब मिलारेपा ने कहा, "ठीक है, बस, मैं अपने दर्द का बस थोड़ा सा हिस्सा तुम्हारे शरीर को दे रहा हूँ, लेकिन अगर तुम्हें यह बर्दाश्त न हो, तो मुझे बताने में हिचकिचाना मत।" यह कहकर, मिलारेपा ने अपने दर्द का थोड़ा सा हिस्सा लामा सफुआ को दे दिया। पलक झपकते ही दर्द से घायल लामा सफुआ चीखते हुए ज़मीन पर गिर पड़े। जब वह दर्द से तड़प रहे थे, तो उन्हें एहसास हुआ कि मिलारेपा सच में एक महान योगी और एक सर्वोच्च अवतार थे। ज़रा सा दर्द होने पर, उन्हें लगता था कि वह अब मौत की बड़ी पीड़ा नहीं झेल पाएंगे, कि अगर मिलारेपा ने उनकी बीमारी दूर नहीं की, तो वह तुरंत मर जाएंगे। वार के असर से उनका शरीर चोटिल हो गया, और उनके मुँह से लार टपकने लगी - उन्होंने खुद ही यह खतरनाक

खेल अपने ऊपर लाया था - और शांत न रह पाने के कारण, वह किसी तरह मिलारेपा के पैरों पर कूद पड़े और दयनीय आवाज़ में कहा - "मुझे बचाओ, मुझे बचाओ, मुझे मेरी सज़ा मिल गई है।" तुरंत ही, उनकी बीमारी फिर से दूर हो गई। लामा सफुआ, बच गए, उन्होंने दयालु मिलारेपा के चरणों में सब कुछ समर्पित कर दिया और मुक्ति के लिए दीक्षा ली। उन्होंने मिलारेपा की मौत के लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति को भी माफ़ कर दिया, जिससे जीवों के प्रति दया का एक सुंदर उदाहरण पेश हुआ। उन्होंने उन सभी को गले लगाया जिन्होंने मिलारेपा को दुख पहुँचाया था, और मिलारेपा की चाची ने भी मिलारेपा से दीक्षा ली और मुक्ति में स्नान किया।

इस ज़हर के बावजूद, मिलारेपा कई दिनों तक ज़िंदा रहे, इस दौरान उन्होंने अपने समर्पित शिष्यों को आखिरी निर्देश दिए। फिर, एक शुभ मुहूर्त में, वे ब्राह्मण बन गए।

गुफा में रहने वाले, नंगे गुरु, और जो बिना किसी की जानकारी के, लताएं खाकर साधना करते थे, वे बाद के युगों में तिब्बत के महान गुरु, आदरणीय लामा, सबसे महान ऋषि और कवि, मिलारेपा बने।

सहस्राब्दि में ल्हासा

समय अपनी रफ़्तार से आगे बढ़ता है। 1956 का वह भागा हुआ टीनएजर आज साल 2004 में पहुँच गया है। कैलाशेश्वर से मिले बीज मंत्र का नाम जपते हुए, वह क्षितिज की इस अलग-अलग दुनिया में घूमता रहा। न सिर्फ़ अपनी आँखें भरी हुई थीं, बल्कि अपने शरीर के हर सेल को अलर्ट करके, उसने आवाज़, टच, रूप, स्वाद और गंध से भरी दुनिया की अलग-अलग लहरों को महसूस किया। कोलकाता से कैलाश तक उसके हाथ में चॉक था। अगले जन्म में, वह चुप रहने वाला पिता एक भटकता हुआ टूरिस्ट है। आशीर्वाद

इंसान को बड़ा करते हैं और आत्मा को स्पिरिचुअल रास्ते पर ले जाते हैं।

किस्मत, कर्म और गुरु की कृपा, ये सब हमारी अपनी इच्छा शक्ति पर निर्भर करते हैं। सत्व, रजस और तमस के तीन गुण, इच्छा शक्ति, ज्ञान और कर्म, सदियों से लोगों को रोशनी की ओर ले जाते रहे हैं। हमारी ज़िंदगी में यही शक्ति आशीर्वाद की लहर है, रोज़मर्रा की ज़िंदगी की चमत्कारी दौलत है। इन पाँच तत्वों और महाभूत से बने इंसानी शरीर में, साँस लेने के ज़रिए, हर पल जीवन ऊर्जा आती है। यही जीवन ऊर्जा हमें ज़िंदा रखती है, यही बनाने वाले से हमारा सीधा कनेक्शन है, जैसे माँ और गर्भ में बच्चे की नब्ज़ का कनेक्शन होता है। हम भगवान को मानें या न मानें, भगवान को कोई फ़र्क नहीं पड़ता, फ़ायदा या नुकसान हमारा है। हवा, रोशनी, आग, पानी, मिट्टी, आसमान, सब उन्हीं की देन हैं, उनका आशीर्वाद बारिश की तरह बरस रहा है, ज़रूरत पड़ने पर उसे थामे रहो। और अगर तुम उसे न भी थामे रहो, तो भी खुशी की वो धारा हमेशा बहती रहती है।

मैं उनके दिए हुए तन और मन से घूम रहा हूँ, अपनी पूरी आँखों से उन्हें देख रहा हूँ। सूर्योदय, सूर्यास्त, समुद्र, नदी, झील, झरना, पहाड़, जंगल, सुरंगें, पाताल, शहर का समाज, जानवर, जानवर, इंसान, कीड़े-मकोड़े, वगैरह, सब कुछ उनका ही रूप है, कभी परमानेंट, कभी टेम्पररी, खुशी भरा, भयानक सुख-दुख, उम्मीद-निराशा, सब कुछ उस अनदेखे का ही रूप है। बस देखो और देखो - उस देखने में, 'दर्शन' में, खुद को महसूस करना अपने आप हो जाता है। ल्हासा, कैलाशनाथ, मानसरोवर घूमने के बाद, मैंने खुद से बार-बार पूछा, "यह कैसे हुआ?" मुझे कोई जवाब नहीं मिला। "मुझे क्या मिला?" जवाब; "मुझे ज़रूरत से कहीं ज़्यादा मिला।" जो मेरे माथे पर ज़रूरत से ज़्यादा जमा था, वही मेरे भविष्य

की पूंजी थी। धरती का चक्कर लगाते हुए, और आज भी, मैं उस पूंजी को तोड़ रहा हूँ। वह पूंजी आशीर्वाद और अनुभवों का एक थैला है।

391
सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৬৫

मैंने 1956 से भारत घूमना शुरू किया, भारत में अलग-अलग जगहों पर गया। जब 1959 में परम पावन दलाई लामा एक रिफ्यूजी के तौर पर भारत आए, तो मैंने तिब्बत के पॉलिटिकल हालात की परवाह नहीं की। मैंने सोचा कि भले ही राजा रिफ्यूजी हो, वह फिर भी राजा ही है, इसलिए तिब्बत और दलाई लामा की प्रॉब्लम मेरी प्रॉब्लम नहीं है। इसके बावजूद, मुझे नहीं पता क्यों। एक बार 1963 में, मैं दिल्ली के रास्ते धर्मशाला गया, लेकिन बदकिस्मती से दलाई लामा धर्मशाला में नहीं थे, और हम नहीं मिले। 1967 में, मैं देश के दौरे पर निकला। सफर के दौरान, दलाई लामा का कई बार ज़िक्र हुआ। लेकिन उस समय, मेन टॉपिक यह था कि तिब्बत के हेड दलाई लामा और उनके लाखों रिफ्यूजी चेलों को ल्हासा वापस कैसे लाया जाए। हेग में इंटरनेशनल लॉ के बहाने और वर्ल्ड ह्यूमन राइट्स के बहाने चीनी सरकार के साथ शांतिपूर्ण बातचीत के ज़रिए दलाई लामा को उनके पोटाला पैलेस में वापस कैसे लाया जा सकता है? दलाई लामा दुनिया के नंबर वन नेताओं से मिले और घर-घर जाकर उनसे मदद मांगी, लेकिन बदकिस्मती से कोई नतीजा नहीं निकला। तीसरे विश्व युद्ध का आने वाला भूत अभी भी धरती पर घूम रहा था। चीन-रूस-अमेरिका-फ्रांस सभी वियतनाम में बिज़ी थे। इस बीच, दो सुपरपावर रूस और अमेरिका कोल्ड वॉर की तैयारी कर रहे थे। इसलिए, देश निकाला पाए दलाई लामा को धार्मिक रास्ता अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ा। वैराग्य, त्याग और अहिंसा की कसम खाकर, वे मुस्कुराते हुए चेहरे वाले एक विदेशी बने

रहे। भारत में दलाई लामा एक वर्ल्ड सिटिज़न बन गए। भगवान बुद्ध का देश भारत उस समय उनका देश था।

1972 में मेरा साइकिल टूर खत्म हो गया। साइकिल को तैरना नहीं आता, वे उड़ भी नहीं सकतीं। इसलिए मैं सभी देशों में नहीं गया, इसलिए मैंने फिर से साइकिल चलाना शुरू कर दिया। मैंने काम करके पैसे कमाए
- फिर से साइकिल चलाई -। हालांकि, मेरी फाइनेंशियल हालत पहले से बेहतर है, इसलिए मैं ट्रैवलर से ज़्यादा एक टूरिस्ट हूँ। मैंने कई आइलैंड, हमेशा बर्फ से ढके पहाड़, साउथ पोल, नॉर्थ पोल घूमना शुरू किया। रिक्वेस्ट आने लगीं, "बताओ क्या देखा" - मैंने ट्रैवल स्टोरीज़ लिखना शुरू कर दिया। मैंने सिर्फ़ बताने के लिए लिखा, क्योंकि मैं राइटर नहीं हूँ। इसी समय मुझे इंस्पिरेशन मिली - मुझे चारों ओर से हिंट मिले - कि मेरे बचपन की अनकही कहानी कहनी चाहिए, कहनी चाहिए, कहनी चाहिए, जैसे कोई मुझे पेन देकर कह रहा हो - "लिखो", मैंने कहा, मतलब कि मेरी कहानी मैंने लिखी है, उस महान तीर्थ यात्रा के आखिरी यात्री ने। क्योंकि इंडिया से ल्हासा तक का हमारा ग्रुप आखिरी यात्री था। लिखते-लिखते मैं फिर से यादों में खो गया। तब से, सोई हुई याद कभी-कभी जाग जाती है और बगावत कर देती है, कहती है, "चलो फिर से तिब्बत चलते हैं।" यादों के वाहन को शांत करने के लिए, मैं कहता हूँ, "रुको, सही मौके का इंतज़ार करो।"

महातीर्थ का आखिरी तीर्थयात्री लिखते समय मेरा दिमाग कई बार भटक गया। मैंने बार-बार सोचा कि तिब्बत, विश्व तीर्थ, जोखांग मानसरोवर और कैलाशनाथ के दरवाज़े एक दिन खुलेंगे।

৩৬৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

खुलकेई. किसी भी देश का इतिहास हमेशा रहने वाला नहीं होता. हमें सब्र रखना होगा. महातीर्थ के आखिरी तीर्थयात्री की मैन्युस्क्रिप्ट में कई बार आँसुओं ने लिखावट को धुंधला कर दिया था
- शायद यही दयालु भगवान से मेरी अर्जी थी. फिर अचानक मौका आ गया.

मैं परम पावन दलाई लामा से सैन फ्रांसिस्को, जिनेवा, स्विट्जरलैंड और लौसाने में लगातार तीन बार मिला। मैंने उनसे पूछा कि तिब्बत लौटने के बाद क्या हुआ।

उन्होंने जवाब दिया, "मुझे चीनी सरकार से कोई सपोर्ट नहीं मिल रहा है, कोई सिक्योरिटी नहीं है, हालात सुधरे नहीं हैं," उनके जवाब से मुझे बहुत दुख हुआ। जो तथागत की सुरक्षा में हो, जिसका बीज मंत्र समय का चक्र हो, जिसकी नगरी महाकाल की सुरक्षा में हो, उसकी ज़िंदगी चीनी सरकार पर निर्भर है। मैं कोई विद्वान नहीं हूँ, इसलिए उस दिन उन्होंने जो कहा, मैं समझ नहीं पाया। बाद में मुझे समझ आया कि मीडिया के सामने भले ही दलाई लामा और दलाई लामा एक ही व्यक्ति हों, लेकिन समय और लोगों के हिसाब से जवाब देना पड़ता है। जैसे कुरुक्षेत्र युद्ध में श्री कृष्ण का सिद्धांत "अश्वत्थामा मरा, तो गज मरा" जगह और समय को अलग-अलग तरह से आंकने और इस्तेमाल करने के लिए इस्तेमाल किया गया था।

मेरे एक पत्रकार दोस्त, क्लॉड लेवेन्सन ने 14 वें दलाई लामा, तेनजिंग ग्यात्सो से सीधे पूछा: "आप पहले ल्हासा के दुनिया भर में मशहूर पोटाला पैलेस में रहते थे, और अब आप देश-विदेश घूम रहे हैं। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आपको यह कैसा लगता है?"

जवाब: हाँ, मुझे कहना होगा, दो बिल्कुल अलग दुनियाएँ। पोटाला पैलेस में, मैं एक पर्दे से ढका हुआ था, मुझे बाहर की दुनिया के बारे में कुछ नहीं पता था। मैं तब जवान भी था। दलाई लामा का हर कदम और व्यवहार सीमित और अनुशासित था। रिफ्यूजी बनने के बाद, मेरी आँखों के सामने से वे पर्दे एक-एक करके हटते गए। मैं अपनी आँखों से दुनिया देखता हूँ, कितने सैकड़ों लोगों से मिल रहा हूँ, दोस्त बन रहा हूँ। मैंने अपना राज खो दिया है लेकिन मुझे हमेशा नए दोस्त मिलते रहते हैं। मेरे दोस्त मुझे सुरक्षित रख रहे हैं, वे मेरी रक्षा कर रहे हैं। यह एक अलग ही बड़ी दुनिया है। मैं कई देशों में घूमा हूँ, यूरोप, अमेरिका, रूस, जब भी मैं पहले व्यक्ति को देखता था, तो मुझे लगता था - कौन जाने वे क्या पूछेंगे, मैं क्या जवाब दूँगा - अब वह डर चला गया है।

ऐसे कई सवालों और जवाबों के ज़रिए, मुझे पोताला के शाक्यमुनि एक आम आदमी जैसे लगे। दलाई लामा मुझसे पाँच साल बड़े हैं, लेकिन ज्ञान में उनसे कहीं ज़्यादा हैं, और लगातार तीन इंटरव्यू के बाद, मैंने उन्हें अपने पास पाया। मुझे कई मुश्किल सवालों के जवाब खुद ही मिल गए। अपनी कहानी बताने से पहले, आइए तिब्बत के कुछ खास दिनों और घटनाओं पर एक नज़र डालते हैं:

1959 में, परम पावन दलाई लामा, लाखों भक्तों और अनुयायियों के साथ, असम के रास्ते सिलीगुड़ी भागने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी। नेहरूजी खुद और सरकार

393

सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৬৭

उनका स्वागत किया गया - धर्मशाला में उनके लिए एक उपनगर बनाया गया। इस घटना पर चीनी सरकार और भारत के बीच सभी संबंध खत्म हो गए। फिर चीनी सरकार ने "हिंदी चीनी भाई भाई" के नाम पर भारतीय सीमा पर हमला किया - नेपाल, सिक्किम, भूटान और असम में सेनाओं के दो समूह सामने आए। हजारों तिब्बती शहीदों ने अपने प्राणों की आहुति दी। 1965 में, चीनी सरकार के अधीन स्वतंत्र तिब्बत घोषित किया गया। और एक साल बाद, 1966 से 1976 तक, सांस्कृतिक क्रांति के नाम पर तिब्बतियों पर जघन्य अत्याचार किए गए। अमानवीय अत्याचार और निर्दोष आम तिब्बतियों का नरसंहार। तिब्बत के इतिहास में खून से एक शर्मनाक अध्याय लिखा गया। दुनिया की बड़ी ताकतों ने भी चीनी अधिकारियों द्वारा की गई इस भयानक घटना पर आंखें मूंद लीं। ल्हासा और तिब्बत का हर शहर असहाय महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों और आजादी चाहने वाले तिब्बतियों के खून से रंग गया। सांस्कृतिक क्रांति के नाम पर, हर मठ, मंदिर और आश्रम के निर्दोष भिक्षुओं को मार दिया गया। कल्चरल रेवोल्यूशन के नाम पर लगभग दस साल तक पूरे तिब्बत राज्य में लूटपाट, तबाही और हत्याएं की गईं। चीनी सेना की तोपों से लगभग पांच हज़ार मठ और मंदिर तबाह कर दिए गए। मरने वालों की संख्या पंद्रह लाख से ज़्यादा थी। उस समय तिब्बत की आबादी लगभग छह लाख थी। इस बेरहमी से की गई हत्या की खबर इंटरनेशनल कम्युनिटी में फैल गई।

1978 में, चीनी सरकार ने इंटरनेशनल कम्युनिटी और डेवलप्ड देशों से हमदर्दी पाने के लिए तिब्बत में धर्म और धार्मिक आज़ादी को फिर से लागू करने का ऐलान किया। इस समय, और पहली बार, तिब्बती युवाओं ने चीनी अधिकारियों के ज़ुल्म के खिलाफ़ प्रोटेस्ट किया।

1979 में, तिब्बती आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा के ल्हासा से भागने के बीस साल बाद, चीनी सरकार ने आज़ाद तिब्बत के मुद्दे पर पहली बार दलाई लामा के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की। उन्होंने लगातार तीन दौर की बातचीत की, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। बात यह है कि तिब्बत चीन का हिस्सा है।

1987 में, तिब्बती नौजवानों ने बहादुरी से चीनी सैनिकों की बाड़ को पार किया और ल्हासा जाकर यूरोपियन और अमेरिकन टूरिस्ट को अपने देश की बुरी हालत के बारे में बताया। उन्हें ह्यूमन राइट्स से दूर रखा गया था और उनके पास बेसिक सिविल राइट्स भी नहीं थे। तिब्बती नौजवानों का यह गुंडागर्दी देखकर, चीनी सेना ने तुरंत उन पर गोलियां चला दीं, और जो बच गए उन्हें कैद कर लिया गया। चीनी सरकार की बड़ी कोशिशों के बावजूद, इस घटना को दबाया नहीं जा सका, क्योंकि चीनी सेना के ज़ुल्म की कहानियाँ टूरिस्ट के कैमरों में कैद हो गईं। यह पहली बार था जब चीनी सैनिकों की बर्बर कहानियाँ यूरोप और अमेरिका की खबरों में खूब छपीं। भेष बदलने वाले चीनी भाइयों का पर्दाफाश हुआ।

1988-1989 के तिब्बती नए साल के जश्न के दौरान, चीनी विद्रोह आंदोलन फिर से शुरू हो गया। चीनी सरकार ने तुरंत प्रदर्शनकारियों को मार डाला और जेल में डाल दिया। इस दौरान

৩৬৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

पंचेन लामा गुज़र गए। पंचेन लामा के शहर शिगात्से में तिब्बतियों ने पंचेन लामा की मौत के आस-पास चीनी विद्रोह आंदोलन शुरू किया। बड़ी संख्या में लोगों ने इस आवाज़ को माना। इस बार, चीनी सरकार ने

यह देखकर कि आंदोलन अपने दायरे से बाहर जा रहा है, लोगों के इकट्ठा होने पर रोक लगा दी और तिब्बत में कर्फ्यू लगा दिया। इस बीच, चीन की राजधानी बीजिंग में, इसी समय, चीनी सेना ने विरोध कर रहे छात्रों पर टैंक चढ़ा दिए और बेगुनाह छात्रों को कुचल दिया। हालांकि, इस बार, उन्होंने यह तिब्बतियों के खिलाफ नहीं, बल्कि अपने ही नागरिकों के खिलाफ किया। उनकी मांग नागरिक अधिकार थे। तियानमेन की क्रूरता चीनी अधिकारियों के इतिहास का एक शर्मनाक अध्याय है। दुनिया के इतिहास की एक खूनी कहानी। चीनी अत्याचार की कहावत एक बार फिर साबित हुई।

इसके विरोध में, यूरोप ने चीनी अधिकारियों के विरोधी दलाई लामा को (नोबेल) शांति पुरस्कार देने के लिए चुना। चीनी अधिकारियों ने नोबेल पुरस्कार समिति के सामने इसका कड़ा विरोध किया। लेकिन फैसला पहले ही हो चुका था, इसलिए चीनी सांस्कृतिक रूप से आगे बढ़ने वालों के पास हिंसा में जलकर मरने के अलावा कोई चारा नहीं था।

महातीर्थ की मेरी पिछली यात्रा की कहानी के बाद, ये घटनाएँ बार-बार मेरे मन में आईं। पहले तो मैंने भी सबकी तरह बायकॉट किया, यह सोचकर कि जब तक यह क्रूर चीनी सरकार है, मैं तिब्बत नहीं जाऊँगा। फिर, दलाई लामा के लिए अपनी हमदर्दी की वजह से, मैंने सोचा कि जिस चीनी सरकार ने धर्मी दलाई लामा और पंचेन लामा के तिब्बत पर ज़बरदस्ती कब्ज़ा किया है, जिस सरकार ने कल्चरल मूवमेंट के बहाने तिब्बत के पारंपरिक मठों, मठों, आश्रमों और मंदिरों को तोपों से तबाह किया है, जिन लोगों ने तिब्बत के आम लोगों के खून से पवित्र ब्रह्मपुत्र नदी को गंदा किया है, उन्हें दिखाना पाप है। ऐसे कई कारणों ने मुझे बार-बार रोका है। मैंने सोचा कि जब तक यह सरकार है, मैं दोबारा तिब्बत नहीं जाऊँगा।

मेरी कई लॉजिकल रुकावटों के बावजूद, मेरा अंदर का मन मुझसे कहता रहता है - "अपने मन को लॉजिक से बेवकूफ मत बनाओ, अपने मन को जहाँ ले जाना है, वहाँ ले जाओ। मुक्ति के रास्ते पर कोई लॉजिक नहीं होता। एक यात्री की कसम है कि रास्ते पर चलो, बहस और फैसले के छोटे दायरे में मत खो जाओ।" मैंने सुना, समझा कि मुझे खींचा जा रहा है और मुझे फिर से जाना है। मैं समझ गया कि तिब्बत को भगवान ने बनाया है, पॉपुलर चीनी सरकार ने नहीं। हम सोशल प्राणी हैं, समाज में रहने के लिए, हमें सोशल और पॉलिटिकल हालात से गुज़रना पड़ता है। एक यात्री की कसम है कि रास्ते पर चलो, हर चीज़ से अलग होकर चलो, यही अनुभव है। उसके लिए चलते हुए, उसे टालना ठीक नहीं है क्योंकि जंगल में कांटे हैं - मैंने समुद्र पार करने में कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई क्योंकि समुद्र में भयानक लहरें हैं।

तिब्बत में चीनी सरकार चाहे कितना भी अन्याय करे, हम पूरे तिब्बती लोगों को नज़रअंदाज़ क्यों करें? अगर हम तिब्बत का बॉयकॉट करेंगे, तो हम एक बड़े और सीधे-सादे लोगों के ग्रुप का, महान हिमालय के बच्चों का बॉयकॉट करेंगे। इसलिए मैंने मन ही मन तय किया,

395

सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৬৯

मैंने सुना है कि चाहे मुझे कितनी भी मुश्किलें आएं, मैं फिर से तिब्बत जाऊंगा। मैं तिब्बत की खूबसूरती, उसकी आध्यात्मिकता, उसके लोगों और उसके मौसम में डूब जाऊंगा, ठीक वैसे ही जैसे मैंने किया था
- कैलाश और मानसरोवर की परिक्रमा करके।

एक तरफ तिब्बती कल्चर को खत्म करने का प्लान है और दूसरी तरफ इंटरनेशनल सर्कल का दबाव। मना शब्द के पीछे एक रहस्य है। अगर किसी घर का दरवाज़ा बंद हो जाए, तो उस घर में जाने की इच्छा और मज़बूत हो जाती है। विदेशी लोग बार-बार चीनी सरकार का दरवाज़ा खटखटाने लगे, वीज़ा मांगने लगे, जाने की इजाज़त मांगने लगे। पॉपुलर चीनी सरकार समझ गई कि अगर दरवाज़ा नहीं खोला गया, तो दरवाज़ा टूटने का चांस है, और चीनी सरकार बाहरी दुनिया के साथ ट्रेड भी करना चाहती है। यूरोप और यूनाइटेड स्टेट्स के बड़े इंटरनेशनल ट्रेड रिज़र्व को नज़रअंदाज़ करने से देश को नुकसान होगा। इसलिए, उसने बहुत सोच-समझकर और बहुत सावधानी से वीज़ा देना शुरू किया। पॉपुलर चीनी सरकार ने यह भी देखा कि आज भारत तीसरी दुनिया में एक बड़े ट्रेड रिज़र्व के साथ उभरा है। सिर्फ़ ट्रेड ही नहीं, बल्कि भारत आज दुनिया की सबसे अच्छी न्यूक्लियर पावर में से एक है। 1959 में उसने भारतीय सेना को नज़रअंदाज़ किया, लेकिन आज उसका पॉलिटिकल रोल बदल गया है, भारत अंग्रेजों का छोड़ा हुआ कमज़ोर देश नहीं है, नया भारत अपनी बड़ी डिफेंस फोर्स के साथ तैयार है। हिमालय पर उनकी पैनी नज़र है, वे आज तिब्बत जैसा अन्याय बर्दाश्त नहीं करेंगे। इस तरह पॉपुलर चीनी सरकार की शांति बनाने की पॉलिसी शुरू हुई। हिमालय का एक दरवाज़ा खुल गया। तीर्थयात्रियों को एक बार फिर पवित्र कैलाशनाथ और मानसरोवर में जाने की इजाज़त मिल गई।

उस तीर्थयात्रा पर आखिरी तीर्थयात्री होने के बारे में मौनी बाबा के शब्दों को आज फिर से लिखा जाना चाहिए - असली कहानी यह है कि दलाई लामा के ल्हासा छोड़ने से पहले और उस समय की पॉपुलर चीनी सरकार की कल्चरल रेवोल्यूशन से पहले, हम तीर्थयात्रा पर आखिरी तीर्थयात्री थे।

लेकिन यात्री को इतनी देर तक शांत नहीं बैठना पड़ता था। कैलाशनाथ के बुलावे पर, उन्होंने 1990 से पहले दो बार एक नए रास्ते से कैलाश परिक्रमा की। मकसद था कैलाश की परिक्रमा करना और मानसरोवर जाना। रास्ता नेपालगंज से सिमिकोट तक छोटे प्लेन से था। वहां से नारा तक पैदल जाना था। पांच दिनों में, मैंने सबसे ऊंचा दर्रा, नारा-ला, जिसकी ऊंचाई 4620 m है, पार किया। उसके बाद, पहला तिब्बती गांव शेर (ऊंचाई 3560 m) है। सड़क कर्णाली नदी के किनारे है। यह नेपाल से तिब्बत तक ट्रेकिंग के लिए ऑफिशियल सड़क है। नेपाल के हुमल्ला जिले का खतरनाक पहाड़ी इलाका किसी भी तरह से बदलता नहीं दिखता। आजकल, जीप, मिनीबस और ट्रक शेर से दारचेन जाते हैं। शेर, पुरंग, गुरला-ला पार करने के बाद, बाईं ओर राक्षसताल और दाईं ओर मानसरोवर छोड़कर, जीप यात्रियों को सीधे दारचेन शहर ले जाती है। वहां छोटी-बड़ी धर्मशालाओं की कोई कमी नहीं है। वहीं से कैलाश परिक्रमा शुरू होती है।

यह मानना होगा कि सड़कों और ट्रांसपोर्ट ने दुनिया के इस दूर-दराज के इलाके को बहुत आसान बना दिया है। यह लोकल खानाबदोशों का पक्का घर बन गया है, और यह कहने की ज़रूरत नहीं है कि

৩৭০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

सबसे खास बात मिलिट्री जीप और ट्रक का कैंप और यात्रा है। तीर्थयात्रियों का मकसद कैलाशनाथ के दर्शन करना और परिक्रमा करना है। तीर्थयात्री दूर कैलाश चोटी को हैरानी से देखते हैं। मैं इस चैप्टर को पिछली दो कैलाश यात्राओं पर मैंने जो किया, उससे नहीं भरूंगा, मैंने अपनी पिछली महान तीर्थ यात्रा में सब कुछ कह दिया है।

बनारस-हरिद्वार या कैलाश में, हजारों सालों से हिंदुओं का वही तरीका अपनाया गया है - वेदांत का वही रास्ता, वही पुरानी और नई पूजा, परिक्रमा, प्रार्थना, ध्यान और मौन - सभी धर्मों के वही सिद्धांत।

लगातार दो बार कैलाश खंड जाने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि तिब्बत के जो दरवाज़े तीर्थयात्रियों के लिए खोले गए हैं, वे असल में ट्रेकर्स और एडवेंचर पसंद करने वाले नौजवानों और लड़कियों के लिए हैं। वे हिमालय की इस मना की गई ज़मीन पर पहाड़ी रास्तों पर अपनी हिम्मत, बहादुरी और दिमागी और शारीरिक सहनशक्ति को परखने आते हैं। उन्होंने इतने कम समय में कितनी दूर का सफ़र किया है, कितनी ऊँचाई पर चढ़े हैं, कहाँ-कहाँ डेरा डाला है, और मैंने हर पल समय, गर्मी और ऊँचाई के बारे में अपनी डायरी के पन्ने शब्दों से भर दिए हैं। सत्यम-शिवम-सुंदरम उनकी पहुँच से बाहर रहा। भारत से तीर्थयात्री अमोरा बनकर जाते हैं, श्रद्धा और भक्ति के साथ, पुण्य कमाने और आध्यात्मिक रास्ते की उम्मीद में रास्ते की मेहनत का स्वागत करते हैं। बेशक, हर ग्रुप में खास तरह के लोग होते हैं, सभी लोग एक जैसे नहीं होते।

कैलाशनाथ और मानसरोवर तीर्थ यात्रा पर जाने के लिए आपको भारत सरकार के ज़रिए दिल्ली से ग्रुप में जाना होगा। और टूरिज़्म करने के लिए आपको चीन की मुख्य ज़मीन से होकर आना होगा। तिब्बत में सिर्फ़ एक एयरपोर्ट है, ल्हासा। एयरपोर्ट का नाम गंगानगर है, एयरपोर्ट से ल्हासा तक जीप या मिनीबस से जाने में लगभग दो घंटे लगते हैं। दूसरे देशों से कनेक्शन चेंगदू और काठमांडू से है।

1990 से, मैं तिब्बत में अकेले घूमने की बार-बार कोशिश कर रहा था। मैंने अपने वीज़ा एप्लीकेशन में यह लिखा था। अगर आप एक बार नहीं कहते हैं, तो आप दो साल तक दोबारा अप्लाई नहीं कर सकते, यही नियम है।
मुझमें सब्र है, इसलिए मैं निराश नहीं हुआ और दोबारा वीज़ा के लिए

अप्लाई किया। उनका जवाब था कि ग्रुप के साथ अकेले तिब्बत और ल्हासा घूमने में कोई दिक्कत नहीं है। बेशक, मैं उनके बहाने को मना नहीं कर सकता। मुझे भाषा नहीं आती, इसलिए दिक्कतें होंगी।

फिर मैं नॉर्थ और साउथ पोल की तैयारी में बिज़ी हो गया। मेरी टू-पोल ट्रिप कोई ट्रिप नहीं बल्कि एक एक्सपीडिशन थी क्योंकि मेरे साथ गए सभी लोग एक्सप्लोरर थे और आइटिनररी का नाम अंटार्कटिक एक्सपीडिशन था। हमारी ट्रिप बहुत सफल और मज़ेदार रही। थोड़ा आराम करने के बाद, मैंने फिर से वीज़ा के लिए अप्लाई किया, मैं तिब्बत में अकेले घूमना चाहता था। इस बार, मैंने जियो-टूरिस्ट और उसके क्रेडेंशियल्स के साथ अपना वीज़ा फ़ॉर्म तैयार किया। अजीब बात है, अगले दिन मुझे एक फ़ोन आया, एम्बेसडर मिस्टर लिंग ने मुझे फ़ोन किया।

397

सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৭১

उन्होंने मुस्कुराते हुए हमारा स्वागत किया और समझाया, "आपको ऑफिशियल चीनी भाषा नहीं आती और आपको तिब्बती भाषा भी नहीं आती, इसलिए अपनी सुविधा के लिए, एक तिब्बती इंटरप्रेटर रख लें और फिर जहाँ चाहें वहाँ जाएँ, सिवाय उन जगहों के जहाँ जाना हो। हमें कोई दिक्कत नहीं है।"

- "बहुत-बहुत धन्यवाद।" मैं खुश था। कुछ सपनों के बाद, साल 2000, मिलेनियम का सबसे अच्छा तोहफ़ा, आ गया।

मैं तय दिन पर निकल गया। जिनेवा-दिल्ली-काठमांडू-ल्हासा। चार दशक बाद, मैं ल्हासा वापस आ गया था। ल्हासा एयरपोर्ट का नाम गंगा है। ज़मीन पर उतरते ही मैंने कैलाशनाथ को प्रणाम किया। मेरे मन में एक अजीब सी खुशी जाग उठी, खुशी और इमोशन ने एक साथ मेरे मन और शरीर को हल्का कर दिया। मुझे याद आया कि कई साल पहले क्या हुआ था। गंगटोक का एक लड़का, जो घर से भाग गया था, साधुओं के एक ग्रुप के साथ पैदल यहाँ आया था...

कस्टम्स पर एक 'वेलकम' व्यक्ति ने पूछा, "क्या आप मिस्टर डे हैं?"

- "हाँ" -"मैं एक अच्छा इंटरप्रेटर हूँ। ल्हासा में आपका स्वागत है।"

ल्हासा में घुसते ही मैंने चारों ओर देखा - यह क्या है? मैं कहाँ से आया हूँ? मेरे सपनों का ल्हासा कहाँ चला गया? मेरा बचपन का सपना अचानक गया के उस संत के मिट्टी के बर्तन की तरह टूट गया, और मैं चौंककर चारों ओर देखने लगा। जैसे ही कार होटल के दरवाज़े पर पहुँची, श्रोंग्शी ने मेरे लिए दरवाज़ा खोला और मेरा स्वागत किया। मैंने रिसेप्शन पेपर्स पर साइन किए और अपना पासपोर्ट दे दिया। रिसेप्शन वाली लड़की ने इंग्लिश में कहा - "ल्हासा में आपका स्वागत है, आपका कमरा नंबर दूसरी मंज़िल पर एक सौ आठ है। आप आराम कर सकते हैं और मैं आपके लिए चाय लाती हूँ।"

मेरा रूम नंबर एक सौ आठ है, बहुत अच्छा नंबर है, थैंक यू। मेरे पास सूटकेस नहीं है, सब कुछ मेरे बैकपैक में है। जैसे ही मैं रूम में घुसा, मैं हैरान रह गया - यह बहुत साफ़-सुथरा था, फ्रेंच डिज़ाइन में सजा हुआ था। मैंने अपना बैग नीचे रखा और खिड़की से बाहर झाँका, बाहर का नज़ारा बिल्कुल अलग था, बिल्कुल मॉडर्न। कल्चरल रेवोल्यूशन के नाम पर ल्हासा में बहुत बड़ा बदलाव आया था। मैंने इसके बारे में

पहले सुना था लेकिन महसूस नहीं कर पाया था - अब मैं अपनी आँखों से देख सकता था कि मेरे बचपन का ल्हासा गायब हो गया था। मैं निराशा में डूब गया। क्या मैं इसीलिए ल्हासा आया था? मैं हैरान था, सच में एक कल्चर शॉक!

चाय आ गई, रिसेप्शनिस्ट चाय और बिस्किट ले आई। काफी ठंड थी। मैं तैयार था। मैंने जल्दी से चाय पी और निकल गया। मैं अपनी खुशी को और रोक नहीं पाया। जैसे ही मैं होटल से निकला, स्रोंग्शी हाथ मलते हुए आई।

- "सर, हमारे बॉस आपके साथ बैठना चाहते हैं। वह आपको सलाह देंगे कि कहाँ जाना है, कब जाना है, कहाँ रहना है, और आने-जाने का खर्च कितना होगा।"

मैं समझ गया कि इसे टाला नहीं जा सकता, और ऐसा होना भी नहीं चाहिए - "ठीक है, चलो"

৩৭২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

वहाँ से ज़्यादा दूर नहीं। एक नई बिल्डिंग के पहले फ़्लोर पर एक ऑफ़िस था जो पुलिस स्टेशन जैसा दिखता था। जैसे ही ऑफ़िसर कमरे में आया, उसने कहा, "बैठ जाओ।" फिर उसने अपने पैर से इलेक्ट्रिक हीटर मेरी तरफ़ किया और कहा - इंग्लिश में - "देखो, बिजली आ गई है, टेलीफ़ोन भी काम कर रहा है और हमारा कंप्यूटर भी है। तुम यहीं बीजिंग, शंघाई, चेंगदू, गुइलिन, कुनमिंग, नानजिंग, शियान के लिए होटल रिज़र्वेशन कर सकते हो। अच्छे फ़ाइव-स्टार होटल। हर होटल में एक

रेस्टोरेंट, कॉफ़ी शॉप, पियानो बार, डांसिंग, स्विमिंग पूल, टेनिस कोर्ट, जिम, चेंज, गाइड, प्राइवेट कार है। आओ, आओ, सूज़ौ फ़ाइव-स्टार देखो, किंग वर्ल्ड, साउथ पैसिफ़िक, एक और ज़रूरी चीज़ देखो - मैंने यहाँ टाइप किया - बीजिंग अभी आठ डिग्री है, शंघाई दस डिग्री है...." वह आदमी अपना नया गैजेट दिखाने में बहुत जोश में था, मुझे मजबूर होकर उसे रोकना पड़ा -

- "सॉरी, मैं आज बहुत थक गया हूँ, मैं कल सुबह आऊँगा"

- "ठीक है, ठीक है, आपको सारी खबरें यहीं मिल जाएंगी। आप आज के लिए
श्रोंग्शी को पांच डॉलर देंगे।"

-मैंने कहा ठीक है और आह भरते हुए उनके ऑफिस से निकल गया।

मैंने श्रोंघी से कहा, "मैं आज अकेले इस शहर में घूमना चाहता हूँ। ये पाँच डॉलर लो, कल सुबह होटल में मुझसे मिलना।" मैंने कहा, लेकिन मैं खुद को रोक नहीं सका।

- "मैंने पांच या चार डॉलर के लिए कोई काम नहीं किया, ठीक है, मैं आपके
साथ रहूंगा, नहीं तो बॉस सोचेगा कि मैं चीटिंग कर रहा हूं।"

- "ठीक है, लेकिन जब तक आप न पूछें, बात मत करना।" श्रोंघी मान गया।
ल्हासा शहर, होटल का नाम भी ल्हासा है। सपनों के साथ पुरानी यादें मिलकर मेरे मन में एक रहस्यमयी दुनिया बना रही थीं। दो सड़कों के बीच के गैप से दूर पोटाला पैलेस दिखाई दिया, मैंने बाहर झाँका और कहा - देखो, मैं अभी भी खड़ा हूँ, नए ल्हासा में मुझे अचानक पुरानी खुशबू मिली। मेरा दिल खुशी से नाच उठा, मैंने श्रोंघी से कहा - "चलो

पोटाला चलते हैं।" उसने अपनी घड़ी देखी और कहा - "सर, वहाँ कोई रेस्टोरेंट नहीं है, यहीं खा लो और फिर चले जाओ"

- "ठीक है, चलो एक अच्छे तिब्बती रेस्टोरेंट में चलते हैं"

- "तिब्बती रेस्टोरेंट, चलो आज किसी अच्छे चाइनीज़ रेस्टोरेंट में चलते हैं, तिब्बती रेस्टोरेंट में कोई वैरायटी नहीं मिलेगी, सर।" जब आप तिब्बत आते हैं, तो आपको चाइनीज़ रेस्टोरेंट में खाना ही पड़ता है। ठीक है, मैं मान गया। तिब्बत अब चीन है, तो इसे नज़रअंदाज़ क्यों करें? कोलकाता, दिल्ली से लेकर जिनेवा-पेरिस-लगुना-न्यूयॉर्क तक, हर जगह चाइनीज़ रेस्टोरेंट भरे पड़े हैं। मेरा मन वहाँ नहीं भड़का, तो मैं यहाँ क्यों करूँ? मैं मान गया।

399
सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৭৩

मैं खाने के लिए नहीं बैठा था, बल्कि माहौल से परिचित होने के लिए बैठा था, इसलिए मैंने स्प्रिंग रोल, बीयर की एक बोतल और रोस्टेड डक ऑर्डर किया।

अजीब बात है, तिब्बत की इस राजधानी में मैंने जो लोग देखे थे, वे गायब हो गए थे। सड़कों पर रेड इंडियंस (अमेरिंडियन) जैसी टोपी पहने लोग थे, लेदर, भारी प्लास्टिक या विंडप्रूफ जैकेट पहने हुए थे, और रेस्टोरेंट के थोड़ा बाहर फुटपाथ पर बिलियर्ड्स खेलती भीड़ थी। चाय चाइनीज़ ब्लैक टी थी; मैंने पूछा - "क्या चांग नहीं है?" - हमारे पास जवाब नहीं है, लेकिन अगर आप हमें बता दें, तो हम इस चाय में मखम मिला

देंगे।" मैं समझ गया कि रेस्टोरेंट का मालिक चाइनीज़ था। रेस्टोरेंट में बैठना मज़ेदार था। श्रोंग्शी के साथ एक करीबी रिश्ता बन गया।

- "क्या आप बिलियर्ड्स खेलना जानते हैं?"

- "मुझे यकीन है कि मैं अच्छा खेलूंगा, क्या तुम खेलोगे?"

- "नहीं, बिलियर्ड सेट बहुत महंगा है, है ना?" मैंने फिर पूछा।

- "नहीं, यह बहुत सस्ता है। और आप किसी भी क्लब या चाय की दुकान पर
मुफ़्त में खेल सकते हैं। आजकल यह क्लब, स्कूल या इंस्टीट्यूशन में बहुत पॉपुलर है। गाँव के लोग, बूढ़े और जवान, चरखा घुमाते हैं और जवान बिलियर्ड्स खेलते हैं। टाइम पास करने के लिए आपको कुछ तो करना ही होगा," श्रोंग्शी ने ज़ोर से हँसते हुए कहा।

- 'आप सही कह रहे हैं, माला जपना भी तो समय बिताने के लिए ही है, है न?'

- "ठीक है, आप सही कह रहे हैं, ये सब पुरानी आदतें हैं, हमें अच्छी तरह
जीने के लिए मॉडर्न होना होगा।"

मुझे एहसास हुआ कि उसकी बातें बहुत ज्ञान भरी बातें थीं। खाना आ गया।

- "अच्छा, यह सड़क बरखर है, है ना?"

- "हाँ, तुमने सही समझा, तुम पहले आए थे?"

- "मैंने इसे मैगज़ीन और डॉक्यूमेंट्री फ़िल्मों में देखा है," मैंने जवाब दिया।

- "ओह, तो मुझे बताओ, हम इस सड़क से जाएंगे, फिर पोटाला की ओर जाएंगे,

यही सीधा रास्ता है।”

मैं श्रोंघी से बहुत ध्यान से बात करने लगा, खाने के बाद बिल आया, मैंने श्रोंघी को खाना खिलाया। वह डॉलर में पेमेंट करके बहुत खुश हुआ, एक अमेरिकन डॉलर दस युआन के बराबर होता है। पाँच डॉलर में अच्छा खाना मिलता है, श्रोंघी को डबल बीयर मिली। रेस्टोरेंट से निकलने के बाद, थोड़ी देर बाद मैं अचानक उछल पड़ा - "मुझे मिल गया, मुझे मेरा खोया हुआ जोखांग मंदिर मिल गया।" मैं खुशी से लगभग दौड़ पड़ा, तीर्थयात्रियों के बीच गया, अपने जूते उतारे और जोखांग मंदिर के दरवाज़े पर माथा टेका। कोई प्रार्थना नहीं, कुछ पाने के लिए नहीं, बस सिर झुकाया। मैंने अपना तन, मन और आत्मा जोखांग के देवता ज़ोर रिनपोछे के चरणों में समर्पित कर दिया। सिर झुकाने के बाद, मैं खड़ा हुआ, फिर, तिब्बती परंपरा के अनुसार, मैं खड़ा हुआ और चारों ओर देखा।

৩৭৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

जोखांग मंदिर वैसा ही है जैसा पहले था - ज़्यादा कुछ नहीं बदला है। यह चारों ओर नई इमारतों में छिपा हुआ था। मुझे अपनी ताकत और खुशी वापस मिल गई। जोखांग के एंट्रेंस के खंभों और दीवारों की सजावट, प्रार्थना करने और देखने आए अनगिनत तीर्थयात्री, धूप और घी के दीयों

की खुशबू, यह सब मुझे पिछले चार दशकों में ले गया। थोड़े ही समय में, मैंने अपने दिल में फिर से शांत पिता को पाया।

जोखांग के आस-पास के रास्ते को लोकल भाषा में बरखर कहते हैं। बाज़ार की ज़्यादातर दुकानें पुरानी चीज़ों या एंटीक दुकानों, चक्र-माला, घंटियों, पुराने पैसों और कई दूसरी जानी-अनजानी पुरानी चीज़ों से भरी हैं। बरखर के कुछ हिस्से पूरी तरह से मॉडर्न हैं और पुराना जोखांग मंदिर के आस-पास पहले जैसा ही खड़ा है। मैं बहुत खुश था, इसलिए मैंने स्रोंग्शी से कहा-

- "मैं आज की तरह यहाँ काम खत्म कर रहा हूँ। मैं कल सुबह नाश्ते से
पहले जोखांग आ जाऊँगा। तुम्हें आने की ज़रूरत नहीं है, मैं बस आ सकता हूँ। तुम नौ बजे के आसपास आना, फिर मैं पोताला जाऊँगा, मैं अभी जोखांग मंदिर वापस जाऊँगा। मुझे वहाँ का मौसम बहुत पसंद है।"

- "ठीक है, आप अगरबत्ती खरीद सकते हैं, मेरी एक दुकान है जो मुझे पता
है।"

- "ठीक है, क्या हम इसे सस्ते में ले सकते हैं?" मैंने एक अमेरिकी की
तरह पूछा।

सृंघी ने मुझे अगरबत्ती की दुकान दिखाई और अलविदा कहा। मैं अगरबत्ती लेकर मंदिर वापस आ गया। मुझे दीवारों पर अगरबत्ती और घी की मोमबत्तियों का पुराना सीन दिखा, जो जलने से काली पड़ गई थीं। बिल्डिंग में लेदर सीट लगाने के लिए, उस पर एक पक्का पोल काटा जा रहा है, मतलब हर बार जब आप खड़े होते हैं, बैठते हैं, और माथा टेकते हैं, तो आपको फिर से खड़ा होना पड़ता है। कभी-कभी आप पोल के चारों ओर बरखर को घेरा हुआ देखते हैं। किसी ने सामने एक मोटी लेदर की चादर टांग दी

है ताकि आपके घुटनों में दर्द न हो या सीमेंट की ठंड आपको परेशान न करे। मैंने ध्यान से देखा - बेशक, वे सभी तिब्बती हैं। उनकी आस्था की कमी, प्रार्थना और हर चीज़ के बारे में उनकी शिकायतें सच्ची भावनाओं और भक्ति से जुड़ी हुई हैं।

अगले दिन, मैं सुबह 5:30 बजे जल्दी उठा, हाथ धोए और सुबह की पूजा देखने के लिए बाहर चला गया। सड़क बहुत ठंडी थी और कोहरे से ढकी हुई थी। लेकिन बुरी किस्मत क्या होती है? जब मैं थिएटर में घुसा, तो मैंने देखा कि सब लोग छींक रहे थे। मुझे लगा कि सुबह की आरती के बाद सब फिर से सो गए होंगे। दो-तीन लोगों को खांसी आ रही थी, और वे बैठे- बैठे खांस रहे थे। भाषा की कमी के कारण, मैं सुबह की आरती और पूजा देखने वाला अकेला भक्त था, इसलिए मैंने लगभग 7 बजे तक इंतज़ार किया और होटल लौट आया।

रिसेप्शनिस्ट आठ बजे जैम, मक्खन और ब्रेड लेकर कमरे में आई।

- "गुड मॉर्निंग सर, मैंने सुना कि आप सुबह-सुबह जॉगिंग के लिए निकले थे।"

401
सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৭৫

"तुम जाग गए हो, बहुत ध्यान रखना कि तुम्हें सर्दी न लग जाए।" जॉगिंग शब्द सुनकर मैं हैरान रह गया। अमेरिकन स्टाइल हिमालय के इस कोने में भी आ गया है। मैंने जवाब दिया-

- "हाँ, मैं बाहर गया था, तो जोखांग में कोई प्रोग्राम नहीं है?"

- "जोखांग सुबह आठ बजे खुलता है, प्रार्थना और पाठ होता है।"

- "मैंने बहुत से लोगों को लेटे हुए देखा"

- "वे बहुत दूर से आए हैं, उनकी कसम है कि सब कुछ पूरा करके ही
लौटेंगे। ल्हासा से आए लोगों को रात में रुकने की इजाज़त नहीं है।" मैं समझ गया कि पूजा के रीति-रिवाज बदल गए थे, हर किसी को सरकारी नियम मानने पड़ते थे।

श्रोंघी ठीक समय पर आ गए। मैं जोखांग में उन्हें श्रद्धांजलि देने आया था। घंटा बजने और स्वस्थाना झुकने का काम शुरू हो चुका था। पुजारियों और साधुओं ने धीमी आवाज़ में पाठ करना शुरू कर दिया था। जोखांग के देवता तुरही, गरज और संगीत की आवाज़ से जाग गए थे। शरीरों का हिलना, पीली पगड़ियों के सिर, हिमालय की लय वहाँ थी। मैं वहाँ एक घंटे तक बैठा रहा और पूजा देखता रहा।

जैसे ही वह उठे, श्रोंघी ने कहा, "आप उन सभी को पीली टोपी पहने हुए देखते हैं, जबकि अन्य मठों में आप लाल टोपी देखते हैं। ये दो समुदाय तिब्बत में मुख्य हैं।"

मैं श्रोंशी से सहमत हुआ और कहा, "भले ही उनकी टोपियों का रंग अलग-अलग हो, लेकिन वे सभी एक ही बुद्ध की पूजा करते हैं। वे चाहे कोई भी गाड़ी लें, वे अपनी मंज़िल पर पहुँच ही जाएँगे, है ना?"

- "हाँ, तुम सही कह रहे हो, मेरे पिता भी यही बात कहते हैं," श्रोंग्शी
ने पहली बार घर के बारे में कहा।

जैसे ही मैं बरखर के मार्केट एरिया से निकला, मुझे ल्हासा की सबसे ऊँची जगह, शानदार पोताला पैलेस साफ़-साफ़ दिख रहा था। यह बिल्कुल वैसा ही था जैसा मैंने देखा था। मेरी छाती जोश से ज़ोर-ज़ोर से धड़क रही थी। अचानक, मैंने देखा कि दो औरतें एक लंबे लकड़ी के बर्तन में खड़ी थीं, चाय में चम्मच की तरह मक्खन मिला रही थीं, उनके बाल अच्छे से कंघी किए हुए थे, रंग-बिरंगे कपड़े थे, और गले में एक बड़ा सा पत्थर का हार था। जैसे ही उन्होंने एक-दूसरे को देखा, उन्होंने अपनी जीभ निकाली और मेरा स्वागत किया। एक जवान थी और दूसरी के चेहरे पर झुर्रियाँ थीं। हम खड़े हो गए, और हमें खड़ा देखकर उनकी हिम्मत बढ़ी। हम पास की एक दुकान पर गए और बैठ गए - मैंने एक चांग माँगा। कैलाशनाथ के रास्ते में, पिछली तस्वीरें अभी भी ज़िंदा हैं, लेकिन ल्हासा में, आपको पुरानी तस्वीरें ढूंढनी होंगी। ल्हासा में पुराने स्टाइल की नोंटा मखम चाय अभी भी मिलती है, लेकिन पुराने माहौल की कमी है।

हमारे सामने मार्पोरी पहाड़ी पर दलाई लामा का तेरह मंज़िला महल है। मेरा दिल रो पड़ा, 1959 से महल बिना राजा के है। 1959 से, चीनी सैनिकों ने गेलुग्पा समुदाय के दिल पर कब्ज़ा कर रखा है।

৩৭৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

पोटाला पैलेस एक म्यूज़ियम की तरह आम लोगों के लिए खुला है, लेकिन टूरिस्ट को कहीं जाने की इजाज़त नहीं है। टूरिस्ट को बाहर चौड़ी सीढ़ियों से, अंधेरे बरामदों से होते हुए सीधे ऊपर छत पर उतारा जाता था। अंधेरा होने के बाद, डरावने कमरों के बाद रोशनी और खुला आसमान

देखकर हम हैरान रह गए। पहले तो मुझे लगा कि मैं और स्रोंग्शी ही दो टूरिस्ट हैं, लेकिन जब मैं छत पर पहुँचा, तो मैंने आठ और लोगों का एक ग्रुप देखा। एक म्यूज़ियम की तरह, यहाँ आने के लिए आपको टिकट खरीदना पड़ता है, और होटल या ट्रैवल एजेंसी उसका ध्यान रखती है। पोटाला की इस छत से, मैं जोखांग मंदिर और सामने का आंगन साफ़-साफ़ देख सकता हूँ, और पूरे ल्हासा शहर का एक शानदार नज़ारा देख सकता हूँ।

पोटाला पैलेस के दो हिस्से हैं, एक व्हाइट पैलेस और एक रेड पैलेस। दलाई लामा एक के बाद एक व्हाइट पैलेस में रहे हैं, और यहीं से उन्होंने पूरे तिब्बत पर राज किया। पास के रेड पैलेस में कई शाही मंदिर हैं, और दलाई लामाओं की यादगारें और कब्रें, जो उनकी मौत के बाद सोने के गहनों से सजी हैं, सोने का एक बहुत बड़ा खजाना हैं। गाइड की एक बात मेरे कानों में गूंजी - यह सुनने में कठोर लगी - "...14 वें दलाई लामा तेनजिंग ग्यात्सो ने अपना बचपन इसी महल में बिताया था। 1959 में, उनके करीबी मंत्री और सलाहकार उनके साथ भारत भाग गए।" मैंने सुना, एक कान से सुना और दूसरे कान से निकाल दिया।

सफेद महल की छत से, लाल महल के ऊपर शेर और ड्रैगन के पगोडा का सुनहरा रंग आँखों के लिए एक पहेली है। यहाँ, हम न केवल हैरानी से देखते रहते हैं, बल्कि चुपचाप, टूरिस्ट के कैमरों की क्लिक, भिनभिनाहट और फ्लैशिंग हमारे मन को सपनों की दुनिया में भटकने नहीं देती। मैं छत से नीचे आया और पास के लाल महल में घुस गया। दीवारों पर सुंदर और बारीक काम रोशनी की कमी के कारण ठीक से नहीं दिख रहे हैं। और अंदर हर मंदिर काले तेल की परत से ढका हुआ है। गाइड ने बहुत गर्व से कहा - "उन्होंने कोयले के धुएं और तेल और घी के दीये जलाकर इतनी सुंदर कलाकृतियों को बर्बाद कर दिया है। कल्चरल रेवोल्यूशन के बाद, हमने उन बुज़रुकी को बंद कर दिया और चीन के इन अनमोल खजानों को बचा लिया। हम अब दीवार की पेंटिंग और टांकों को साफ करने और उन्हें प्लास्टिक-

प्रूफ बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्हें कई सालों तक रखा जा सकता है।"

मैंने पोताला के रहस्यमयी कमरों में घूमते हुए करीब डेढ़ घंटा बिताया और बाहर आ गया। पता नहीं क्यों, महल इतनी खूबसूरती से सजाया गया है, लेकिन जैसे ही मैं अंदर जाता हूँ, ऐसा लगता है जैसे कोई हॉन्टेड हाउस हो, गुज़री हुई आत्माएँ हर तरफ से आ रही हैं और मेरे चारों ओर चक्कर लगा रही हैं, ऐसा लगता है जैसे वे कह रही हों, "मुझे छोड़ दो... मुझे छोड़ दो... मुझे छोड़ दो..." मुझे लगता है कि मैं बहुत ज़्यादा सेंसुअल या इमोशनल हो गया हूँ - चाहे कुछ भी हो, कुछ तो होगा ही। इस रास्ते पर, मैं फिर से सीढ़ियों और सड़क के साथ जोखांग की ओर चला गया। अचानक, मुझे याद आया कि जोखांग मंदिर में घुसते ही दाईं ओर एक अष्टधातु थी।

403

सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৭৭

महाकाल की मूर्ति उसके बगल में थी और एक और महिला मूर्ति थी, शायद महाकाली। तिब्बत या नेपाल में, कोई भी भक्त मंदिर में घुसकर उसके पैर छू सकता है। भारत के उलट, पूजा करने वालों के लिए कोई ट्रेड बैरियर नहीं है। यह बहुत ज़्यादा सर्दी वाला देश है, इसलिए आपको इसकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, आप बिना जूते उतारे चल सकते हैं। मैं आसानी से अंदर गया और धूप और चावल के बगल में महाकाल की पुरानी, लगभग नज़रअंदाज़ की हुई मूर्ति देखी। सवाल उठा, महाकाली

कहाँ छिपी हैं? मैं पूरे दिन जोखांग के बरामदे में बैठा रहा और उसे बार-बार देखने लगा। जॉय शाक्यमुनि लखांग, जॉयो शाक्यमुनि, जॉयो रिम्पोछे, एक ही मूर्ति के कई नाम हैं। धूप की खुशबू, धीमी, भारी आवाज़ में प्रार्थना, और भावना की एक अनदेखी और हल्की लहर मुझे आनंद की दुनिया में ले गई।

कहने की ज़रूरत नहीं कि श्रोंघी थोड़ी मुश्किल में पड़ गया। तिब्बत या ल्हासा में मेरी कोई दिलचस्पी न देखकर, उसे लगा कि वह कस्टमर खो देगा। उसने गिड़गिड़ाते हुए पूछा, "क्या हम आज किसी तिब्बती रेस्टोरेंट में खाना खाने चलें?"

- "हाँ, बिल्कुल।" मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, फिर बहुत सच्चे
लहजे में कहा- "स्रोंगशी, मैं तुमसे कुछ पर्सनल सवाल पूछूंगा। तुम चाहो तो उनके जवाब दे सकते हो, और अगर नहीं भी, तो कोई बात नहीं, मुझे कोई दिक्कत नहीं है।" लड़के ने थोड़ी हिचकिचाहट के साथ जवाब दिया।

- "ठीक है कहो"

- "क्या आप तिब्बती हैं, मतलब ल्हासा से?"

- "हाँ, हम सब तिब्बती हैं। हम की चू नदी के किनारे बसे एक ऊँचे गाँव
से हैं, यहाँ से जीप से लगभग एक घंटे की दूरी पर है।"

- "तो मैं आपको सीधे-सीधे बताता हूँ। मैं तिब्बत देखने आया था, यहाँ
के लोगों से घुलने-मिलने आया था। मैं शंघाई, बीजिंग, हांगकांग, जियांग्सू, चेंगदू गया हूँ, मैंने चीन का चक्कर लगाया है - लेकिन मैं यहाँ तिब्बत देखने आया हूँ। मैं आपसे रिक्वेस्ट करता हूँ कि आप मुझे

तिब्बत की जितनी हो सके उतनी ओरिजिनैलिटी दिखाएँ। बेशक, अगर हो सके तो।"

मेरी बातें सुनकर, स्रोंग्शी ने कुछ देर सोचा, फिर कहा:

- "मुझे थोड़ा टाइम दो, मैं आधे घंटे में वापस आ जाऊँगा। तुम वहाँ वो दुकान देख रहे हो जहाँ वे बाहर गैस पर खाना बना रहे हैं। वहाँ जाकर खा लो। मैंने उनसे कहा। तुम्हें खाने से पहले और बाद में चावल, तली हुई मछली, सब्ज़ियाँ और चाय मिलेगी।"

- "ठीक है।" मैं मान गया, होटल मालिक तिब्बती गारंटी वाला है।

आधे घंटे नहीं, बल्कि करीब एक घंटे बाद, श्रोंगशी एक बूढ़े आदमी के साथ आया। श्रोंगशी ने अपना परिचय दिया और अपनी बात शुरू की, "मेरे पिता, मेरे पिता मुझे बहुत प्यारे हैं। हम गाइड हैं। हमें अपने बॉस की सलाह माननी होती है। मैं, सरकारी गाइड, सभी सवालों के जवाब नहीं दे सकता, लेकिन मेरे पिता दे सकते हैं। हम

২৬

৩৭৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

हम टूरिस्ट को ल्हासा में जहाँ चाहें ले जा सकते हैं, और उन्हें अपने घर चाय पर भी बुला सकते हैं। लेकिन, अगर दलाई लामा कोई आदमी या पत्रकार है, तो हमारे साथ एक स्पेशल ऑफिसर होता है। आप समझते हैं कि हम इंसान हैं, हमें खाना है, हमें जीना है, हमारे बच्चों का भविष्य

है। अगर हम सरकार के साथ सहयोग नहीं करेंगे, तो यह हमारा नुकसान होगा। जब से दलाई लामा गए हैं, हम बस बाहर निकलने का रास्ता देख रहे हैं, एक आज़ाद तिब्बत का सपना देख रहे हैं। पैंतालीस साल हो गए हैं - हम सुनते हैं कि दलाई लामा पेरिस, लंदन, न्यूयॉर्क जा रहे हैं, हर कोई उनका समर्थन कर रहा है, वे एक आज़ाद तिब्बत के लिए चीनी सरकार पर दबाव डाल रहे हैं। दलाई लामा फिर से ल्हासा लौटेंगे, पोटाला एक आज़ाद तिब्बत के झंडे से ढक जाएगा। क्या आपको पता है कि मैं अब तीस साल का हो गया हूँ, मैं कब तक यहाँ बैठा रहूँगा। मेरे माता-पिता उस समय के लोग हैं, उनमें सब्र है, लेकिन हममें नहीं है। हममें से जो लोग दलाई लामा के बारे में बात करते हैं, उन्हें चेतावनी दी जा रही है कि जो लोग देश के नेता बनना चाहते हैं, उनका रातों-रात ट्रांसफर किया जा रहा है, और अगर वे थोड़ा भी बढ़ा-चढ़ाकर बोलेंगे, तो वे पूरी तरह से गायब हो जाएंगे।

क्या आपको पता है कि ल्हासा में हम आधे से भी कम लोग हैं। उनमें से ज़्यादातर पॉपुलर हैं। बिज़नेस और ट्रेड के नए मौके पाने के लिए, चीनी लोग झुंड में ल्हासा आ रहे हैं और चीन के साथ बिज़नेस करने के बहाने अपना बेस बना रहे हैं। चीनियों को लाया जा रहा है। लेकिन हमें उतने मौके नहीं दिए जाते, हमें अलग-अलग बहानों से टाला जाता है।

"सर, मेरा यकीन मानिए, हम भी इंसान हैं, हम भी जीना चाहते हैं। हम ज़मीन पर पड़े हैं - हम तिब्बती हैं, यह हमारा देश है, अगर हमें मरना है तो यहीं मरेंगे। हम रिफ्यूजी बनकर नहीं रहना चाहते। ज़िंदा रहने का एक ही तरीका है सीखना और बड़ा होना। कम से कम वे हमें वह मौका तो दे रहे हैं - देखते हैं आगे क्या होता है।"

सृंगी रुका - खाना आया, हल्की खिचड़ी - जैसे तले हुए आलू, दाल, आलू, टमाटर की करी। उन तीनों के लिए खाना उनकी आँखों के सामने बना, और

पोर्क टेंडरलॉइन अलग कटोरे में आया। पिता को इंग्लिश नहीं आती, बेटा इंटरप्रेटर का काम कर रहा है। मैंने सृंगी से कहा - मैं तुम्हें खिला रहा हूँ, शर्माओ मत, जो चाहो खाओ। जैसे ही मुझे भरोसा हुआ, सृंगी ने "एक बीयर" ऑर्डर की। मुझे पिता का नाम नहीं पता, लेकिन खाते समय उन्होंने मुँह खोला -

"आप जानते हैं, मैं आपको बता नहीं सकता कि जब उन्होंने कल रात आपके बारे में बात की तो मैं कितना खुश हुआ। तिब्बती धर्म इसलिए बचा हुआ है क्योंकि भारत है। हमारा धर्म और भाषा दिन-ब-दिन खत्म हो रहे हैं। और भारत में, तिब्बती भाषा और धर्म बहुत ज़्यादा जागा हुआ और डेवलप हुआ है। सिर्फ़ दलाई लामा ही नहीं, बल्कि तिब्बत के सभी समझदार लोग अब भारत में हैं। मैं आपको वह सब कुछ बताऊंगा जो आप जानना चाहते हैं। आप जानते हैं, मेरे चार बड़े भाई भारत में हैं, और मेरा छोटा भाई काठमांडू में रहता है। मैं तीन बार काठमांडू गया हूँ।

405
सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৭৯

৩৮০

"मैं चला गया।" अपने पिता की बातों के बीच में, श्रोंघी ने कुछ ज़रूरी बात कही, "हाँ, मैं तुम्हें एक और बात बताता हूँ। अगर मेरा बॉस या कोई पूछे, तो उन्हें बताना कि तुम तिब्बती भाषा और हेल्थ पर बात करने आए हो। बहुत सावधान रहना, सरकार को धर्म, समाज और दलाई लामा के बारे में बात करना पसंद नहीं है।"

श्रोंशी का निकनेम शि है, लेकिन वह नहीं चाहती कि मैं उसे 'शि' कहूँ, मेरा उसके साथ ऑफिशियल रिश्ता है।

ल्हासा से एक और कहानी शुरू होती है - मैंने इसे कई बार सुना है, लेकिन अब मैं इसे खुद देखता हूं, टूरिस्ट को रेस्टोरेंट में खाने में कोई दिक्कत नहीं होती, खासकर जब वे किसी तिब्बती होटल में घुसते हैं और खाना मांगते हैं, तो वे मुस्कुराते हुए सर्व करते हैं। आजकल मीट बहुत मिलता है। चीनियों को पोर्क बहुत पसंद है, और इस समय सब्जियां चीन से आती हैं। हमने खाना खत्म किया और उठ गए।

पिता ने खाने के लिए बहुत धन्यवाद दिया और दूर की दुकानों को देखते हुए शी से कहा, "मैं इस अच्छे आदमी को लोबशांग ताशी से मिलवाऊंगा।" पिता ने अलविदा कहा।

महान तीर्थयात्रा के आखिरी यात्री का चुप रहने वाला लड़का अब कई सालों बाद हैरानी से अपने सपनों के ल्हासा को देख रहा है। आज मैं और नहीं घूमूंगा। अब दोपहर में सुबह से जो देखा है, उसे ध्यान में रखना है, धीरे-धीरे देखना बेहतर है, मैं उस दिन की तरह होटल लौट आया। कमरे में हीटिंग का अच्छा इंतज़ाम है, बेड-गद्दा-कुर्सी-टेबल और बाथरूम में भी अच्छा गर्म पानी, गीज़र और कॉलिंग बेल टैप के साथ-साथ वेटर भी हैं - इसकी तुलना भारत के किसी भी स्टैंडर्ड होटल से की जा सकती है।

मैं खिड़की के पास सोफे पर बैठा और बाहर देखने लगा - मन ही मन सोच रहा था कि मैं यहाँ किस हालत में आया था और अब किस हालत में हूँ। जब मैं पहले आया था, तो शरीर मामूली था, मन और आत्मा एक रहस्यमयी रूहानी दुनिया में भटक रहे थे। और आज, शरीर इस होटल के बाहर की भयानक ठंड से बच गया है, यह शरीर हर तरह के आराम से घिरा हुआ है, लेकिन मन जिसे ढूंढ रहा था, वह रहस्यमयी ल्हासा - मुझे अभी तक नहीं मिला है।

अगले दिन, जैसे ही श्रोंग्शी आया, मैं निकल पड़ा - मैं बरखर से होते हुए फिर से जोखांग मंदिर पहुँचा। पूजा और पाठ शुरू हो चुका था, जैसे ही मैं मंदिर पहुँचा, जो आज मेरी खुशकिस्मती थी, एक पुजारी ने मुझे बैठने के लिए बुलाया और बैठने को कहा - "यहाँ गर्मी है, मेरे बगल वाले तवे में कोयले की आग जल रही है, यहाँ बैठकर ध्यान करो", उनके कहते ही मैं बैठ गया, श्रोंग्शी भी मेरे बगल में बैठ गया। मैं धीमी, गंभीर आवाज़ में धर्मग्रंथों की धुन और कभी-कभी घंटियों और ढोल की आवाज़ में खो गया।

एक घंटे बाद, मैं पुजारी की इजाज़त से उठा, बाहर गया, अगरबत्ती और मखमली मोमबत्तियां खरीदीं और उन्हें भगवान को चढ़ाया।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

इस बीच, जोखांग के आस-पास की दुकानें खुल गईं और मेले जैसा माहौल बन गया। मोतियों, पत्थरों, घंटियों, बिजली के खंभों, कपड़ों और नए-पुराने सामानों का एक बड़ा बाज़ार। सबसे आम पुराने सिक्के और लामाओं के इस्तेमाल किए जाने वाले कई फ़र्नीचर हैं। हम जोखांग मंदिर के सामने उत्तरी फ़ुटपाथ पर एक सुंदर बुटीक (दुकान) में गए। मैं लोबसांग ताशी से मिला। उसने हमें दुकान की सभी चीज़ें बड़े चाव से दिखाईं, टंका, मोती, बैग, कपड़े, खासकर लामाओं के खास तरह के कपड़े, टोपियाँ और जूते।

मैंने पूछा, "मैं लामा नहीं हूं, तो क्या यह ड्रेस मुझ पर सूट करेगी?" ताशीजी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया,

- "ये सभी तिब्बती कपड़े हैं, जिन्हें लामा और आम तिब्बती पहनते हैं। टूरिस्ट आजकल इन्हें खूब खरीद रहे हैं। वे विदेश भी जाते हैं।"

- "क्या वह विदेश भी जाता है?" मैंने आश्चर्य से पूछा,

- "हाँ, बिल्कुल, कई यूरोपियन बिज़नेसमैन चीनी सरकार के साथ ट्रेड
करते हैं और वे सारे इंतज़ाम करते हैं। क्यों नहीं? हमारा सारा सामान तिब्बत में हाथ से बनता है। क्या आप हमारी दुकान का इतिहास सुनना चाहेंगे?"

- "ज़रूर, बताओ," मैंने अपनी दिलचस्पी दिखाई। उस आदमी ने बगल वाली चाय
की दुकान से तीन अच्छी चाय ऑर्डर की, हमें स्टूल पर बैठाया, और दुकान का इतिहास बताने लगे।

- "हमारी पाँच प्योर दुकानें हैं। दुकान में सारा सामान 100 परसेंट
हमारे मठ में ही बनता है। लामा सब कुछ बनाते हैं। पहले, वे अपना दिन ध्यान और प्रार्थना में बिताते थे, लेकिन समय बदल गया है। पहले, दलाई लामा, पंचेन लामा थे, वे तिब्बत के शासक और सरकार थे। वे सरकारी रेवेन्यू से मठ चलाते थे। पॉपुलर सरकार कुछ मठों की मरम्मत का खर्च उठाती है, लेकिन खाना भक्तों से आता है। मैं किसी तरह गुज़ारा कर रहा हूँ, कौन जानता है कि मैं कब तक ऐसे ही चलता रहूँगा। दलाई लामा अब भारत में हैं, वे बच गए, और पंचेन लामा बारह साल चीनी जेल में रहने के बाद गुज़र गए।"

लोबशांग ताशीजी की बातें सुनकर मैं हैरान रह गया - वह इस चीनी शासन वाले प्रतिबंधित ल्हासा में बैठकर इतनी ज़ोर से ये बातें कैसे कह सकते हैं? मैं अपनी चिंता दबा नहीं सका और पूछा।

- "मैं एक टूरिस्ट हूँ, मुझे ये सब बातें बताने के लिए तुम्हें मुसीबत में पड़ने की ज़रूरत नहीं है, है ना?" स्रोनघी ने मेरी बातों का सही मतलब निकाला।

-वह हँसे और बोले, "मुझे लगता है कि आपने मेरा ज़िक्र नहीं किया। मैं पंचेन लामा का शिष्य हूँ। मेरा नाम लोबसांग ताशी है। मैं एक लामा हूँ। मैं बीस साल तक जेल में रहा। मैं 1979 में रिहा हुआ। परम पावन पंचेन लामा के गुज़र जाने के बाद,

407

सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৮১

"मुआवज़े के तौर पर, चीनी सरकार पंचेन लामा की मुख्य ननरी, ताशी लम्पो के लामाओं की मदद के लिए एकमुश्त पैसा देती है। मैं कमेटी में हूँ और उस पैसे से हमने पाँच बुटीक खोले हैं, और बरखर में इन दुकानों से होने वाली इनकम से हम ननरी के सारे खर्चे उठाते हैं।"

- "आपने कमेटी का ज़िक्र किया, क्या आप कमेटी के बारे में बता सकते हैं?"

चाय स्वाद के लिए नहीं, बल्कि शुद्ध तिब्बती चांग नोंटा मखम के स्वाद के लिए आई थी। असल में, जैसे ही मैंने चाय पी, मुझे लगा जैसे तिब्बती खुशबू मेरे शरीर में घुस गई। एक पुराने बांस के कप में, हर कप में तीन या चार कप। जैसे ही मैं चाय पी रहा था, ताशीजी ने फिर शुरू किया-

- "कमेटी का मतलब हम लोग हैं जो पहले अलग-अलग मठों और आश्रमों के बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स में थे, जिनमें से कई को सरकार ने अच्छे बर्ताव और कैरेक्टर की वजह से निकाल दिया था। सरकार ने उनके साथ मठों का नया बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स बनाया है। हमारे बीच सरकारी नुमाइंदे हैं, असल में, वही सब कुछ हैं, हम तो बस बहाना हैं। लेकिन, हमारे पास नॉलेज है, एजुकेशन है, एक्सपीरियंस है, सरकार हमारी बातों को पूरी तरह से गलत नहीं कह सकती। हम, लामा साधु, सब फ्री में काम करते हैं, हमारा खाना, कपड़ा और आने-जाने के लिए कार का किराया उसी सरकारी अलाउंस से आता है। मैं इन बुटीक (दुकानों) को देखता हूँ, कई दूसरे लोग भाषाएँ सिखाते हैं, कई लोगों ने पूजा त्योहारों की ज़िम्मेदारी ली है, हम जैसे बुज़ुर्गों को भी मठ की एजुकेशन और परंपराओं को बनाए रखने के लिए बुलाया जाता है।"

- "इसका मतलब है कि सब कुछ पहले की तरह ही चल रहा है, है ना?"

- "तिब्बत के दो महान गुरु हुए हैं, एक पंचेन लामा और एक दलाई लामा, एक का निधन हो गया है और दूसरे भारत में शरणार्थी हैं। तिब्बत आज बिना गुरु के है, इसलिए यह पहले की तरह ही चल रहा है। मैं इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह सकता, बाकी आप अपनी आँखों से देख लीजिए।"

मैं कुछ मालाएं, टंका और यादगार चीज़ें खरीदने के बाद बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुए दुकान से निकला। ताशीजी ने मुझे मेरे नाम का एक स्टैम्प वाला तोहफ़ा दिया।

मैंने लोबसांग ताशी की बात मान ली और अपनी आँखों से देखना शुरू कर दिया। कोई जज नहीं कर रहा था, कोई इल्ज़ाम नहीं लगा रहा था, बस देख रहा था। होटल से थोड़ी ही दूर पर एक नया क्लिनिक बना है। श्रोंघी

वहाँ जाना चाहता था, उसके चाचा उस हॉस्पिटल में काम करते हैं। और अगर टूरिस्ट हेल्थ और एजुकेशन में दिलचस्पी रखते हैं, तो उन्हें इस नए हॉस्पिटल में जाने की इजाज़त है। अगले दिन, पहले की तरह, हम पूजा करने के लिए जोखांग आए। पुजारी ने हमें हमेशा की तरह वाली सीट पर बैठने को कहा। बदकिस्मती से, मुझे तिब्बती नहीं आती, अगर आती, तो मैं उनके साथ प्रार्थना में शामिल हो सकता था। प्रार्थना के बाद, हमने एक और कप चाय पी और फिर ल्हासा के नए इलाके, नए ल्हासा में आ गए। यह सच में नया था। वहाँ घर और दुकानें थीं और सड़कें माइक्रोफोन और रेडियो की आवाज़ से गूंज रही थीं। नया

৩৮২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

ल्हासा और पुराने ल्हासा में बहुत फ़र्क है। ल्हासा में घूमते हुए ऐसा लगता है जैसे हम तिब्बत के बाहर किसी चाइनाटाउन में आ गए हैं। कपड़े मॉडर्न हैं और सड़कों पर चीनी लोगों की संख्या तिब्बतियों से कहीं ज़्यादा लगती है। शहर बेतरतीब ढंग से बसा हुआ है। हम हॉस्पिटल पहुँचे, बाहर भीड़ से होते हुए अंदर एक ऑफ़िस में घुसे।

-मेडिकल ऑफिसर ने मेरा स्वागत किया, वह आदमी इंग्लिश जानता था और सीधे बात करता था। उसने अफ़सोस जताया और कहा

- "आज का दिन बहुत स्ट्रेस वाला है, मैं आपके साथ नहीं हो सकता, मैंने सुना है कि आप इंडिया से बाहर रहते हैं, आपने हमारे बारे में बहुत कुछ सुना है, ज़्यादातर जर्नलिस्ट ने नेगेटिव बातें लिखी हैं। हमने बहुत अच्छा काम किया है और हम और भी कर रहे हैं, आपको यह जानना होगा। टूरिस्ट, यानी विदेशी जर्नलिस्ट हमारी भाषा नहीं जानते, इसलिए वे

प्राइवेट लोगों से बुरी खबरें बनाकर छाप देते हैं। अगर आज मेरे पास ज़्यादा टाइम नहीं होता, तो मैं आपको सब कुछ दिखाता, शॉर्ट में, मैं आपको कुछ ज़रूरी बातें बताता हूँ - हमारी सरकार इस देश में एजुकेशन और हेल्थ को बेहतर बनाने के लिए बहुत कमिटेड है। हर सबडिवीजन और डिस्ट्रिक्ट में नए स्कूल और हॉस्पिटल बनाए गए हैं - लेकिन कोई भी स्कूल नहीं आना चाहता। चीन एक बड़ा देश है, हमें नेशनल यूनिटी और कम्युनिकेशन के लिए नेटिव भाषा की ज़रूरत है। वे बिल्कुल भी चाइनीज़ नहीं सीखना चाहते। अगर वे पढ़े-लिखे नहीं होंगे, तो उन्हें सरकारी नौकरी कैसे मिलेगी? हमने नेशनल गवर्नमेंट के प्लान के मुताबिक गांववालों को एक्यूपंक्चर सिखाने के लिए 'बेयरफुट डॉक्टर' प्रोग्राम शुरू किया, लेकिन कोई नहीं आता। हमें बताएं कि हम क्या करेंगे। हम रीऑर्गेनाइज़ करना चाहते हैं। ल्हासा। चीन के दूसरे प्रांतों की तरह ऑटोनॉमस तिब्बत। "सरकार चाहती है कि लोग बिज़नेस करें और तरक्की करें। हम चाहते हैं कि देश के लोग पढ़ें-लिखें और सरकारी पदों पर आसीन हों। क्या आप एक और बात जानते हैं? क्या आपने लोबसांग ताशी में दुकानें देखी हैं? वह लामा सज्जन चोत्सोक कमेटी में हैं। चोत्सोक सरकार का धार्मिक संगठन है। यह कमेटी तिब्बत के सभी मठों, मंदिरों, आश्रमों और स्टडी सेंटरों को मैनेज करती है। किसी भी संगठन के लिए कितना पैसा खर्च किया जाएगा या दिया जाएगा, इसके लिए यह कमेटी पूरी तरह से ज़िम्मेदार है। विदेशी कहते हैं कि हम कम्युनिस्ट पार्टी हैं, इसलिए हम धर्म का अपमान कर रहे हैं। असल में, ऐसा नहीं है, इस कमेटी के ज़रिए हम तिब्बत की परंपराओं को बनाए रख रहे हैं। मैं आपको तिब्बत के विकास के वर्तमान और भविष्य के बारे में विस्तार से बता सकता हूँ, लेकिन दुर्भाग्य से, मैं आज बहुत व्यस्त हूँ, इसलिए मैं आपको और समय नहीं दे सकता। आपको हमारे तीसरे ऑफिसर से बात करनी चाहिए, वह आपको हॉस्पिटल घुमा देगा।"

ऑफिसर ने हमें अलविदा कहा। मैंने सिर्फ़ इतना सुना कि तीसरे ऑफिसर स्रोंग्शी के चाचा थे, और उन्हें देखकर मुझे पता चल गया कि वे तिब्बती हैं। यहाँ, हम उन्हें मिस्टर फ़लाँ या नाम से बुलाते हैं।

409

सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৮৩

कोई पैटर्न नहीं है, सब कुछ ऑफिस की पोजीशन के हिसाब से है। जब मैं हॉस्पिटल में घुसा तो मुझे तिब्बत पर किसी ऑफिसर की ब्रीफिंग की उम्मीद नहीं थी। श्रोंग्शी ने कहा - यह सरकार की पॉलिसी है। यह कहना मुश्किल है कि कौन कहां बैठा है और क्या कर रहा है।

तीसरे ऑफिसर, या अंकल, काफी खुश हुए और उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "आप सवाल पूछिए, मैं उनका जवाब दूंगा।"

प्रश्न: मैंने सुना है कि तिब्बत में सभी मठ और विहार लोबसांग ताशी जैसे वरिष्ठ लामाओं द्वारा चलाए जाते हैं।

उत्तर: हां, आपने सही सुना, लेकिन इन लामाओं के पास कोई पावर नहीं है, इन दिनों मठों की मरम्मत हो रही है - वे तिब्बत का मुख्य आकर्षण हैं।

प्रश्न: उन्होंने कहा कि कई प्राइमरी और सेकेंडरी स्कूल खुलने के बावजूद, कोई छात्र उपलब्ध नहीं है - क्या यह सच है?

[illegible]: [illegible] [illegible] a [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] on [illegible] [illegible]

[illegible]: [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible]?

[illegible]: [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible], on on [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] on, [illegible] [illegible] on, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on, [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] on on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] on on [illegible] [illegible] [illegible] on on on [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] on [illegible] on on [illegible] on [illegible] [illegible]

[illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible]?

[illegible]: on [illegible] [illegible] - [illegible] on on [illegible] 1959 [illegible] [illegible] on [illegible] on [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], on [illegible], [illegible] [illegible] on 1987 on 1988 on [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible]

on [illegible] on on [illegible] [illegible] on [illegible] - on [illegible] [illegible] on [illegible] on, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on - [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] -

-"[illegible] on, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

[illegible]?"

मेरी बात सुनकर वह सज्जन थोड़ा मुस्कुराए और फिर बोले - खतरे का खतरा कदम दर कदम बढ़ रहा है, लेकिन उसके बावजूद, हम कहते हैं - बेशक टूरिस्ट समझता है। 1959 से, चीनी सांस्कृतिक क्रांति के नाम पर तिब्बती धर्म और परंपरा को खत्म करना शुरू हो गया है। उस समय, उन्होंने पुराने धार्मिक नेताओं पर बहुत ज़्यादा अत्याचार करके चीनी नीतियों को ज़बरदस्ती थोपा। हज़ारों तिब्बती नेपाल और भारत चले गए हैं।

৩৮৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

आजकल तिब्बत में आपको समझदार लोग नहीं मिलेंगे। वे सब तिब्बत के बाहर हैं। अक्टूबर 1987 में, नई पीढ़ी के विरोध प्रदर्शन शुरू हुए, और आज़ाद तिब्बत और चीन में आज़ाद ल्हासा के आंदोलन में आज़ादी चाहने वाले नौजवान मारे गए। और जो लोग इस जुलूस में शामिल हुए उन्हें जेल की सज़ा दी गई। यह ज़ुल्म मार्च 1988 तक चलता रहा। आज, पूरे तिब्बत और ल्हासा में कोई नया नेता नहीं है। जो बचे थे उन्हें नौकरी और बेहतर ज़िंदगी के लिए तिब्बत के बाहर भेज दिया गया। राजधानी ल्हासा और तिब्बत के आर्थिक विकास के बहाने बाहर से चीनी लोगों को लाया गया है और लाया जा रहा है। आज, ल्हासा का लगभग सत्तर प्रतिशत हिस्सा चीनी है। आपको जोखांग के आंगन में और पोताला पैलेस के आस-पास के रास्ते पर तिब्बती मिल जाएंगे, लेकिन वे सभी ल्हासा के बाहर से हैं, वे अलग-अलग पहाड़ी इलाकों से आए हैं। नया ल्हासा अब सिचुआन, किंगहाई, युन्नान वगैरह से आए चीनियों से भर गया है। और जो लोग इसे चला रहे हैं, मिलिट्री से लेकर इस हॉस्पिटल के डायरेक्टर तक, लगभग सभी राजधानी बीजिंग से आए हैं। वे अच्छी तरह जानते हैं कि

आज हमारी रीढ़ की हड्डी टूट चुकी है। हम टूरिस्ट से चाहे कुछ भी कहें, सरकार को उतना नुकसान नहीं होगा। बल्कि, वे बाहरी दुनिया से कह रहे हैं - देखो, यह आज़ाद, चीन के कब्ज़े वाला तिब्बत है। टूरिस्ट जहाँ चाहें जा सकते हैं, फ़ोटो खींच सकते हैं, और तिब्बती ठीक हैं। नई पीढ़ी ने चीनी सरकार को मान लिया है। लेकिन हाँ, हम चाहे कुछ भी कहें, सरकार सब सुनती है। जब तक हम दलाई लामा के संगठन, पब्लिक मीटिंग, उकसावे में हिस्सा नहीं लेते, या बीजिंग सरकार का खुलकर विरोध नहीं करते, तब तक सरकार तिब्बतियों का कुछ नहीं करेगी।

"हाँ, मैंने तुम्हें अपने दिल की बात बताई है, क्योंकि तुम एक भारतीय हो, गांधी के देश के इंसान हो। और पहले भी, भगवान बुद्ध से लेकर नरूपा, मारपा, मिलारेपा, पद्मसंभव तक, सभी को महान भारत की फिलॉसफी और ज्ञान से ज्ञान मिला था। तुम्हें दिखाना पुण्य की बात है। हाँ, इस बार, चलो हम तुम्हें अपना हॉस्पिटल डिटेल में दिखाते हैं।"

यह कहते हुए उन्होंने हॉस्पिटल के अलग-अलग कमरे दिखाने शुरू किए - "देखो कितनी लंबी लाइन लगी है, सब आउटडोर पेशेंट हैं, सुबह की लाइन के लिए टिकट दिए गए हैं, ज़्यादातर को पेट की बीमारी, सिरदर्द, कमर दर्द है। लड़कियों का डिपार्टमेंट अलग है। देखो, हमारे एक्सीडेंट सर्जरी के इक्विपमेंट सब नए हैं। बच्चों का डिपार्टमेंट देखो, न्यूट्रिशन और वैक्सीनेशन पर कड़ी नज़र रखी जा रही है। वो छूत की बीमारियों वाली बिल्डिंग, हम वहाँ नहीं जाएँगे, सावधान रहने में कोई बुराई नहीं है। बर्थ कंट्रोल और फैमिली प्लानिंग हमारे बहुत सफल प्रोजेक्ट हैं। यह ल्हासा का पहला ऐसा हॉस्पिटल है, जो मॉडर्न और अनुभवी डॉक्टरों से भरा है। हॉस्पिटल में ये सब अल्ट्रा-मॉडर्न इक्विपमेंट देखकर पेशेंट डर के मारे भाग जाते हैं। हमारे स्कैनर बहुत जल्द आ जाएँगे।"

सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৮৫

৩৮৬

मुझे इसकी तारीफ़ करनी होगी, यह सच में मॉडर्न है, साफ़ है और मैं देख सकता हूँ कि उनका काम अच्छा चल रहा है। आखिर में, मेरा आखिरी सवाल:

- "इनमें से कितने मरीज़ तिब्बती हैं?"

मेरा सवाल सुनकर उस सज्जन ने चेहरे पर मुस्कान लाते हुए कहा:

"बहुत कम, बहुत कम। लेकिन जब कोई एक्सीडेंट होता है, तो तिब्बतियों को यहां आने के लिए मजबूर होना पड़ता है और बहुत सारे डिलीवरी केस होते हैं। लेकिन आप जो भी कहें, यह हमारे लिए बहुत बड़ा फायदा है।"

हमने बहुत-बहुत धन्यवाद के साथ अलविदा कहा।

मैं सड़क पर निकला और श्रोंग्शी से कहा - अजीब है ना? मुझे दोनों तरफ से कमेंट मिला - एक चीनी कमेंट और एक स्वदेशी कमेंट। श्रोंग्शी ने आह भरते हुए कहा - मैं एक इंटरप्रेटर हूँ, मुझे दोनों भाषाएँ आती हैं। उस दिन की तरह, मैंने श्रोंग्शी को जाने दिया।

अगले दिन मैं पोटाला के आसपास टहलने गया।

पोताला परिक्रमा के रास्ते को लिंकहोर कहते हैं। पवित्र पोताला परिक्रमा। आज पूर्णिमा है, पद्मसंभव का अवतरण दिवस। जोखांग की बड़ी पूजा होगी और दूर-दूर से आए यात्री जोखांग मंदिर में धरना देंगे और लिंकहोर के साथ पोताला महल की परिक्रमा करेंगे। जोखांग के उलट, यहाँ कोई भी लकड़ी काटकर परिक्रमा नहीं करता, बल्कि दीवारों को छूता है, अपना सिर पीटता है, चक्र घुमाता है, बीज मंत्र पढ़ता है या रत्न मंत्र पकड़कर आगे बढ़ता है। जब हम होटल से निकले तो सुबह के नौ बज रहे थे। जोखांग में पूजा करने के बाद, हम पोताला के नीचे पहुँचे और देखा कि बहुत से लोग पहले ही परिक्रमा शुरू कर चुके थे। हर रंग के यात्री, बहुत सुंदर नज़ारा। यह पहली बार था जब मैंने सिर्फ़ तिब्बतियों को देखा, मेरा मन हल्का हो गया। श्रोंघी ने कहा, "ये सब बहुत दूर से आए हैं। असल में ये अनपढ़ हैं। शायद इन्हें पता नहीं कि पोताला पैलेस में कोई राजा नहीं है। ये परिक्रमा किसके लिए है?" मैंने श्रोंघी की पीठ पर हाथ रखा और उससे बहुत अपनापन महसूस करते हुए कहा, "इन्हें अनपढ़ मत कहो, लेकिन ये सीधे-सादे और सहज गांव वाले हैं। अभी के 14 वें दलाई लामा महल में नहीं हैं, लेकिन उनसे पहले के सभी दलाई लामाओं की यादगारें हैं और महल के अंदर एक मंदिर है। यह उनके लिए है। क्या अपने दादाजी को सिर्फ इसलिए श्रद्धांजलि देना पाप है क्योंकि वो वहां नहीं हैं?"

श्रोंघी ने मेरी तरफ देखा और मुस्कुराते हुए कहा, "आप सच में बुद्धिमान हैं, मुझे आपकी बातें माननी पड़ रही हैं। क्या यही भारतीय दर्शन है?"

मैंने छोटा सा जवाब दिया - "हाँ।"

हमने, मेरा मतलब है, सिर झुकाया और परिक्रमा शुरू की। जैसे ही हम चले, श्रोंग्शी ने अपना लेक्चर शुरू किया:

- "हमारे आस-पास जो लोग दिख रहे हैं, वे ल्हासा के नहीं हैं। अगर मैं उन्हें देख लेता तो उन्हें पकड़ लेता। ल्हासा में ज़्यादातर चीनी हान हैं, वे तीर्थयात्रा करने आते हैं।"

महातीर्थ का अंतिम यात्री

नहीं। और कई आंदोलनों, ज़ुल्म और सज़ाओं के बाद, ल्हासा के लोग खुले तौर पर धर्म मानने से डरते हैं। हालाँकि, आजकल मठ और आश्रम खुल रहे हैं, और सरकार पुराने ज़माने को फिर से ज़िंदा करने की कोशिश कर रही है।

हमारे सामने, लंबे बालों और लाल रिबन वाले लड़के और लड़कियां हैं, जो एक जैसे लंबे हैं, वे उत्तरी चांग तांग इलाके से हैं, जहां ल्हासा से ज़्यादा ठंड होती है। वे हमेशा भेड़ की खाल के कपड़े पहनते हैं। उनके बगल में दो औरतें हैं, भले ही उनके पास लेदर बेल्ट हो, वे त्सांग इलाके से हैं, और वे खेती करके अपना गुज़ारा करती हैं। उधर देखो, उन्होंने काले कोट, काली पैंट और टोपी पहनी हुई है, बिल्कुल अमेरिकन वेस्टर्न फिल्मों के काउबॉय की तरह। वे याक और भेड़ का व्यापार करते हैं, और काफी प्रॉफिट कमाते हैं। वे लिथांग से हैं। लिथांग इलाका खाम के पूरब में है। चलो थोड़ा मज़ा करते हैं, चलो थोड़ा तेज़ चलते हैं और उनसे आगे निकल जाते हैं।

जैसा कि श्रोंशी ने कहा, जब हम कुछ लोगों को ओवरटेक कर रहे थे, तो मैंने कुछ शब्द सुने, "कुची कुची।" श्रोंशी ने मेरी तरफ देखा और

मुस्कुराया। क्या आप जानते हैं 'कुची कुची' का क्या मतलब है? - "नहीं।"

-कुची का मतलब है 'देना' 'कुछ दो, कुछ दो' का मतलब है भीख माँगना, परिक्रमा के दौरान कोई किसी से आगे नहीं निकलता, लेकिन जो लोग ऐसा करते हैं वे निस्संदेह पर्यटक हैं। पर्यटकों से भीख माँगना मना नहीं है। आपने देखा होगा कि ल्हासा में इन दिनों भिखारियों की संख्या कम हो गई है, लेकिन इसका श्रेय चीनी सरकार को जाता है। हमारे दाहिनी ओर लोगों के इस समूह को देखें, वे सुंदर, बहुत सरल दिखते हैं, क्या आप जानते हैं कि वे कौन हैं? ये खाम्पा हैं, तिब्बत के वीर पुत्र। वे भी खाम क्षेत्र में रहते हैं। खाम्पा बहादुर योद्धा हैं और यहां तक कि चीनी सरकार भी उनसे डरती है। जब चौदहवें लामा 1959 में भारत भाग गए, तो वे ही थे जिन्होंने उनके पीछे चीनी सैनिकों को रोका था। वे वास्तव में खाम प्रांत के खानाबदोश हैं। हम सभी मानते हैं कि इन खाम्पाओं ने आज भी तिब्बत की विशेषताओं को बनाए रखा है।

मैंने स्रोनघी को दूसरे यात्रियों से आगे जाने से मना किया। परंपरा का सम्मान किया जाना चाहिए।

पोटाला पैलेस का चक्कर लगाने में हमें ढाई घंटे लगे, फिर हम बरखर के हलचल भरे सेंटर में वापस आ गए। बरखर मेले में दो तिब्बती नोंटा चाय पीने के बाद, हम होटल की ओर चल पड़े। जैसे ही हम होटल के पास पहुँचे, स्रोंग्शी ने बहुत प्यार से कहा, "आजकल, न्यू ल्हासा में खूबसूरत चीनी लड़कियाँ मिल जाती हैं। ल्हासा में एक आर्मी हेडक्वार्टर और बहुत सारे बिज़नेसमैन हैं, इसलिए उनके लिए एक नया इलाका बन गया है। हम, गाइड, सारी जानकारी देते हैं," मैंने मुस्कुराते हुए कहा और जवाब दिया, "थैंक यू, कल मिलते हैं।"

सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৮৭

कुछ दिन बीत गए। मैंने बार-बार देखा और रुका - असली बदलाव - बहुत बड़ा बदलाव। इससे यह साफ़ हो गया कि ल्हासा का पॉलिटिकल, कमर्शियल और धार्मिक कल्चरल सिस्टम पूरी तरह से चीन की पीपल्स गवर्नमेंट चलाती है। असल में, सिर्फ़ राजधानी को देखकर भी आप पूरे देश की हलचल को समझ सकते हैं।

मैंने कुछ दिन पुराने ल्हासा और नए ल्हासा को एक्सप्लोर करने में बिताए। फिर मैं ल्हासा के बाहर गया।

ल्हासा से ज़्यादा दूर नहीं, दो बौद्ध मठ हैं, सेरा और ड्रेपुंग। और लगभग पचास किलोमीटर दूर तीसरा, गंडेन है। दलाई लामाओं के ज़माने में, ये तीन मठ पूरे तिब्बत के लिए फिलॉसफी और धर्म के मुख्य सेंटर थे। पंचेन लामा का धार्मिक संस्थान शिगात्से में था।

कई लोगों के अनुसार, सबसे अच्छा बौद्ध मठ लामाओं का मुख्य शिक्षा केंद्र है। यहां तर्क, तर्क विज्ञान और बहुत उन्नत ज्ञान योग कभी सबसे ऊपर थे। विशाल क्षेत्र गेलुक्का संप्रदाय की सीट है। आम बोलचाल में, डोप डोप केंद्र पांच बड़े कॉलेज हैं। जब चौथे दलाई लामा 1959 में भारत भाग गए, तो इस सर्वश्रेष्ठ मठ में लगभग नौ हजार भिक्षु थे। भिक्षुओं के अलावा, इस मठ में तिब्बती रक्षक भी थे। यह मठ तिब्बती सेना का मुख्य शिक्षा केंद्र था, खासकर दलाई लामा के अंगरक्षक यहीं से बने थे। इसीलिए 14 वें दलाई लामा के पोताला छोड़ने

के बाद चीनी PLA ने सर्वश्रेष्ठ मठ पर हमला किया। चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी को लगा कि इस मठ में तिब्बतियों के सुरक्षा बल हैं, इसलिए उन्होंने सेना के साथ विशेष तोपखाने से हमला किया। उस हमले में, मठ के कई छात्रों, भिक्षुओं और देशभक्तों ने अपनी जान गंवा दी और बाकी घायलों के साथ भागने पर मजबूर हो गए। आज भी वहां गोला-बारूद के अवशेष और निशान मौजूद हैं। चीनी हमले के परिणामस्वरूप, सर्वश्रेष्ठ मठ और बौद्ध मठ की सभी गतिविधियाँ निलंबित कर दी गईं। अर्थात्, उन्हें कानून द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया। चीनी सांस्कृतिक आंदोलन के नाम पर यह विनाशकारी गतिविधि न केवल अमानवीय थी - यह एक प्राचीन, उन्नत और आध्यात्मिक प्रणाली को नष्ट करने का प्रयास था। लेकिन हरि को कौन मार सकता है? तिब्बत में इस सर्वश्रेष्ठ मठ की गतिविधियों को कानून द्वारा पूरी तरह से रोक दिए जाने के बाद, भारतीय लामाओं, तिब्बती महल, दयालु महल और माननीय दलाई लामा के भक्तों ने भारतीय धरती पर 'नए सर्वश्रेष्ठ बौद्ध मठ' को फिर से स्थापित किया। परम पावन चौदहवें दलाई लामा ने 1997 में उस सर्वश्रेष्ठ मठ का उद्घाटन किया। मैं दिसंबर में उस भव्य और भावनात्मक कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए भाग्यशाली था। विशेष धन्यवाद और कृतज्ञता व्यक्त करते हुए, परम पावन दलाई लामा ने कर्नाटक के बीलाकुप शरणार्थी शिविर के तिब्बतियों और स्थानीय लोगों के प्रति अपनी उत्तेजना को बार-बार व्यक्त किया।

৩৮৮

महातीर्थ का अंतिम यात्री

साल 2000 में, जिनेवा में एक रिसेप्शन में, परम पावन दलाई लामा ने मुझसे कहा, "भारत के कर्नाटक के बायलाकुप्पे में सबसे अच्छे बौद्ध मठ की धार्मिक शिक्षा, खासकर लॉजिक की पढ़ाई, ने उस तिब्बती परंपरा

को बनाए रखा है, क्योंकि सबसे अच्छे मठ के लगभग सभी गुरु और प्रोफेसर भारत आ गए हैं। बदकिस्मती से, उनमें से ज़्यादातर बुद्धिमान लामा आज अपने शरीर में नहीं हैं। शायद वे ही लोग हैं जो दोबारा जन्म ले रहे हैं और भारत की धरती पर तिब्बती बौद्ध धर्म की रक्षा कर रहे हैं।"

लेकिन सब कुछ बुरा नहीं है। इन दिनों, चीनी सरकार सबसे अच्छे बौद्ध मठ को रेनोवेट कर रही है। तिब्बती कलाकारों ने दीवारों पर बनी पेंटिंग, टंका और छोड़ी हुई मूर्तियों की मरम्मत की है। सैकड़ों की संख्या में गांव वाले टूटी हुई दीवारों और छतों की मरम्मत के लिए आ रहे हैं। टूरिस्ट भी आ रहे हैं, और सरकार पर इसे पहले जैसा बनाने का दबाव डाल रहे हैं।

सबसे ज़्यादा खुशी तब हुई जब मैंने देखा कि असली मंदिर अभी भी सही- सलामत है। 'हयग्रीव' अभी भी सही-सलामत है। यहां के असली कमरों को रेनोवेट किया गया है। दीवारों को खुरचने पर अभी भी पुराने कमरे की खुशबू आती है।

श्रोंघी ने मुझे मुख्य पुजारी से मिलवाया। जब उन्होंने सुना कि मैं बंगाल से हूँ, तो उन्होंने कहा, "मिलारेपा, अर्पा और नरपा सभी को महान ऋषि आतिश गुरु से ज्ञान मिला था। ज़रूर कोलकाता में उनका कोई बड़ा मंदिर होगा, है ना?"

मैंने अफ़सोस से कहा, "नहीं, कोलकाता में या उसके आस-पास उनका कोई मंदिर नहीं है, आपने उन्हें ज़िंदा रखा है। हाल ही में, मैंने तिब्बती गुरु मिलारेपा पर एक नाटक लिखा है, जो कोलकाता में अलग-अलग स्टेज पर दिखाया जा रहा है। इसके ज़रिए हम मिलारेपा की सोच को फैलाने की कोशिश कर रहे हैं।"

मेरी बात सुनकर वह बहुत खुश हुए और उन्होंने मुझसे इज़्ज़त से कहा, "आज रात आइए, हम साथ में खाना खाएंगे और सुनेंगे कि आपको क्या कहना है।"

बदकिस्मती से, मैं मान गया, लेकिन स्रोंग्शी ने कहा, "हमने दो मठों में जाने के लिए कार का इंतज़ाम किया है। फिर हम ड्रेपुंग मठ जाएंगे और रात में होटल लौटना होगा। अगर हम वापस नहीं आए, तो मुश्किल होगी; लेकिन अगर आप आना चाहते हैं, तो हम बाद में शेड्यूल कर सकते हैं।" ऐसा लगा कि साधु कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसने कहा नहीं।

एक बहुत बड़ा इलाका, जो मंदिरों, मठों और चोर्टेन से भरा हुआ है। लेकिन, आज आबादी नौ हज़ार के बजाय सिर्फ़ दो सौ है। और कभी-कभी जब अलग-अलग कोर्स के लिए स्टूडेंट आते हैं, तो लगभग चार सौ होते हैं। स्टूडेंट तीन महीने, छह महीने या एक साल की हायर एजुकेशन के लिए आते हैं, जबकि पहले स्टूडेंट दस से बीस साल तक रुकते थे। मुझे समझ आया कि समय बदल गया है, शायद इसे ही युगधर्म कहते हैं। हमने सबसे अच्छे मठ में लगभग दो घंटे बिताए और फिर वापस सड़क पर निकल पड़े।

415

सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৮৯

हमारा जीप ड्राइवर चीनी है, बहुत खुशमिजाज, हाजिरजवाब और सब कुछ जानने वाला। अच्छी बात ये है कि उसे इंग्लिश नहीं आती। उसने यूं ही कहा, "मैंने सुना है कि चीनियों के आने से पहले, हज़ारों स्टूडेंट

यहां पढ़ने आते थे। यह एक बड़ी यूनिवर्सिटी थी। लेकिन आजकल, उनके पास करने के लिए कुछ नहीं है। वे अपना दिन कैसे बिताते हैं?"

-जैसे ही श्रोंग्शी ने इसका अनुवाद किया, मैंने जवाब दे दिया।

- "मैं आपकी राजधानी बीजिंग गया हूँ। पहले वहाँ सम्राट था, अब कोई सम्राट नहीं है, वहाँ महल है। ऐतिहासिक नज़रिए से, इसकी बहुत अहमियत और कीमत है। महल और अंदर के हर फ़र्नीचर को साफ़-सुथरा रखने के लिए हज़ारों सरकारी कर्मचारी हैं। उनका काम बीजिंग के म्यूज़ियम को साफ़ करना और उन्हें टूरिस्ट के लिए अरेंज करना है। यहाँ, ये सबसे अच्छे मठ और पोटाला पैलेस म्यूज़ियम की तरह पुरानी यादें समेटे हुए हैं। लामाओं का काम इससे थोड़ा ज़्यादा है। वे इन मंदिरों और मठों में पुरानी शिक्षा और ज्ञान को फिर से स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। चीनी सरकार भी यही चाहती है।"

ड्राइवर मेरी बात से सहमत हो गया।

रास्ते में, मैं अपनी कार के लिए रुका, मुझे तेल भरवाना था, और पंप के बगल में एक रेस्टोरेंट था, उसका मालिक नेपाली था, वह सस्ते दाम पर बहुत अच्छा नेपाली खाना बनाता था। मैं समझ गया। कार के लिए तेल भरवाना थोड़ा बहाना था। जैसे ही कार रुकी, एक आदमी और एक औरत बाहर निकले - मुझे पहली नज़र में ही पता चल गया कि वे नेपाली हैं। वे बहुत खुशी से खड़े हुए और बोले - "नमस्ते।" स्रोंग्शा ने मुझे तुरंत ऑर्डर दिया - चावल, दाल, चिकन, फ्राइड आलू।

उस आदमी ने मुझे देखा और कहा, "मुझे कभी-कभी नेपाली कस्टमर मिल जाते हैं, लेकिन इंडियन कस्टमर बिल्कुल नहीं मिलते - मैं आपको बहुत अच्छा खिलाऊंगा, आप इसे कभी नहीं भूलेंगे।"

मेरे पास एक घंटा खाली था, इसलिए मैं स्रोंग्शी के साथ पड़ोस के गांव में गया। वह पचास या साठ घरों वाला गांव था। उन सभी में नई मिट्टी की दीवारें और पुराने पत्थर की नींव पर टाइल वाली छतें थीं। बच्चे बाहर खेल रहे थे। वह पुराना नज़ारा काफी अच्छा था। जब मैंने हमें देखा, तो दो गांववालों ने जीभ निकालकर हमारा स्वागत किया।

- "यह असल में एक नेपाली गांव है। आपने देखा होगा कि ल्हासा में दो पुराने समुदाय काफी अच्छा बिज़नेस कर रहे हैं, वे बीजिंग और काठमांडू जा रहे हैं, और वे मौके का फ़ायदा उठाकर स्मगलिंग भी कर रहे हैं, लेकिन आपको यह मानना होगा कि वे मुश्किलों को बहुत सहन कर लेते हैं।"

- "ये दो समुदाय कौन हैं?"

- नेपाली और तिब्बती मुसलमान। उन्हें देश के उत्थान और पतन की परवाह नहीं है क्योंकि उनका लक्ष्य व्यापार है। यह दलाई लामा के शासनकाल के दौरान था, और यह अभी भी है।

जब मैं गांव में घूम रहा था, तो मैंने देखा कि भले ही वे नेपाली थे, लेकिन उन्होंने तिब्बती माहौल को अपना लिया था।

৩৯০

महातीर्थ का अंतिम यात्री

डिनर का टाइम हो गया था, तो मैं रेस्टोरेंट वापस आ गया। जब मैं पहुँचा, तो मैंने देखा कि बहादुर को खाना बनाने में बहुत मज़ा आ रहा था, उसने मेरी तरफ देखा और कहा,

- "मेरे पास कुछ अच्छा पुराना आटा था और मैंने आपके लिए दो चपाती बना
दीं।"

- "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।"

खाने-पीने के बाद हम जीप में वापस आ गए। थोड़ी देर में दूर से ड्रेपुंग बौद्ध मठ दिखाई दिया। पहाड़ में बना एक बहुत ही सुंदर किला। धूल झाड़कर जैसे ही हम कार के गेट पर पहुँचे, हमने देखा कि चारों तरफ से लामा दौड़ रहे हैं। हमें देखकर वे दोनों तरफ हाथ जोड़कर खड़े हो गए, जैसे कोई VIP अंदर आ रहा हो। स्रोंग्शी, ड्राइवर और सरकार

जीप उनके लिए जानी-पहचानी है। एक बुज़ुर्ग लामा आए और उनका स्वागत किया और कहा

- "क्या मैं आपके लिए खाना बनाऊं?"

- "नहीं, हमने अभी खाया, ठीक है।" "तो जाने से पहले चाय पी लो। मैंने
सुना है कि तुम बंगाल से आए हो। बहुत अच्छे से - तुम पाली जानते हो - मैंने इसे एक साल तक सीखा, आजकल टीचर नहीं हैं।" वह आदमी बहुत खुश हुआ, उसे ल्हासा से एक टेलीफोन कॉल आया था, जिसमें मुझे ड्रेपुंग में नए एजुकेशन सिस्टम के बारे में बताने के लिए कहा गया था, इसलिए उसका भाषण शुरू हुआ।

मैंने उसे रोका और कहा:

- "आपकी पहचान अज्ञात है"

- "मैं यहाँ असिस्टेंट प्रिंसिपल हूँ, हमारे प्रिंसिपल ल्हासा में रहते हैं। इस बड़ी जगह और मशहूर ड्रेपुंग बौद्ध मठ को देखिए। यह तिब्बत का सबसे बड़ा और सबसे पवित्र मठ है। यह पोटाला पैलेस से भी ज़्यादा मशहूर है। दूसरे, तीसरे और चौथे दलाई लामा यहाँ रहते थे, उन्होंने पोटाला पैलेस बनने से बहुत पहले, यहीं से तिब्बत के इस बड़े देश पर राज किया था। पोटाला पैलेस का काम माननीय पाँचवें लामा के राज में शुरू हुआ था। पाँचवें लामा ने यहीं से पोटाला के बनने की प्लानिंग की और उसकी देखरेख की। उनकी समाधि की जगह पोटाला पैलेस में है और यहाँ दूसरे, तीसरे और चौथे दलाई लामा की समाधि की जगहें और मंदिर हैं। असल में, चौथे दलाई लामा तक ड्रेपुंग को तिब्बत की राजधानी कहा जाता था। इस मुख्य मंदिर महल और बौद्ध मठ को देखिए, जो 1416 AD में बना था। इस बौद्ध मठ में राज्य के एडमिनिस्ट्रेशन के लिए चार कॉलेज और एक बड़ा असेंबली हॉल था। यहाँ के दलाई लामा के रिप्रेजेंटेटिव खाम, अमदो और दूर भारत में लद्दाख भी जाते थे। आपको लद्दाख में बौद्ध मठ वैसे ही दिखेंगे, जैसे यह

वह बोलता रहा और मैं अपनी आँखों में तिब्बत की अजीब पहाड़ी बनावट देखने लगा। अंदर, खूबसूरती से सजी हुई दीवारों पर पेंटिंग, टंका, मूर्तियाँ और हज़ारों बुकशेल्फ़ थीं। वहाँ कई मंदिर, स्तूप और हवा में लहराते झंडों की मालाएँ थीं। दूर दो टूटे-फूटे मंदिर देखकर मैं हैरान रह गया, मेरी नज़र दूसरी तरफ़ चली गई।

417
सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৯১

করে সহকারী অধ্যক্ষ বলে যেতে লাগলেন তাঁর শেখানো বুলি-"আগে এখানেই ছিল সরকারী ভবন, চারপাশে ছিল জমিদার ও শাসনকর্তাদের বাড়ীঘর। প্রায় আট হাজার লোক স্থায়ীভাবেই এখানে থাকতো। কিন্তু সে সময়ে এখানে চিকিৎসার কোন সুব্যবস্থা ছিল না, শুধু বড়লোক বা বিশিষ্ট লামাদের জন্য একটা চিকিৎসা কেন্দ্র ছিল, গরীবদের কথা তারা ভাবতো না। এখন এখানে আকুপাংচারের জন্য বেয়ার ফুট সেন্টার খোলা হয়েছে। আকুপাংচার ট্রেনিং দেওয়া হচ্ছে। শিক্ষার দিকে সরকারের কড়া নজর দেশের সকলকে শিক্ষিত হতে হবে, দেশে কোনো ভিখিরি থাকবে না। ধর্মকে কেন্দ্র করে বিরাট ফিউডাল সরকার গরীবদের অবজ্ঞা করে নিজেদের স্বার্থ বজায় রাখতো। আজকাল সব পাল্টে গেছে। ১৯৫৯ সালের পর একটা বিরাট সাংস্কৃতিক ও অর্থনৈতিক আন্দোলনের মাধ্যমে গরীবদের বিনামূল্যে চাষযোগ্য জমি দেওয়া হয়েছে। আজ তিব্বত আর মরুভূমির দেশ নয়, মাঠে পাহাড়ে গম আর সব্জির বাগানে ভর্তি..."

- "आपने उस बड़े टूटे-फूटे घर के बारे में कुछ नहीं कहा, है ना?"

उसने मुश्किल से निगला और मेरे सवाल का जवाब दिया:

- "जब चीनी सेना तिब्बत के विकास के लिए गरीबों को बचाने के लिए आगे बढ़ रही थी, तो मौकापरस्तों और अमीरों ने उसे रोक दिया। यह बात कि उन्हें चीनी लिबरेशन आर्मी की तोपों से कुचल दिया गया, इसका संकेत है। आप समझते हैं कि युद्ध एक तरफ से नहीं लड़ा जाता।"

जैसे ही वह सज्जन रुके, मैंने फिर पूछा:

- "पहले यहां बिना हथियार के शांतिप्रिय लामा और बौद्ध भिक्षु रहते थे। उन्हें उन पर तोपें क्यों चलानी पड़ीं?"

- "लामा शांतिप्रिय थे, लेकिन सामंती सरकार उनके पीछे थी।" और एक और सवाल - "इस मठ को चलाने के लिए आपको ट्रेनिंग और शिक्षा कहाँ से मिली?"

- "मैं तीन साल बीजिंग में था, फिर मेरी पहली पोस्टिंग चेंगदू में हुई, और वहाँ एक साल रहने के बाद मुझे यहाँ प्रमोशन मिला। मेरी मातृभाषा तिब्बती है, ऑफिशियल भाषा चीनी है।" हमारे भविष्य में, दो भाषाओं की जगह सिर्फ़ एक भाषा होगी। पुरानी किताबों और धार्मिक ग्रंथों का चीनी में ट्रांसलेट करने का काम चल रहा है, जिससे आम लोगों को फ़ायदा होगा.... घूमने के बाद, हम साथ बैठे और चाय पी और अलविदा कहा। कहने की ज़रूरत नहीं कि सेरा और ड्रेपुंग देखने के बाद, मेरा कुछ और देखने का मन नहीं हुआ। बौद्ध मठ पर तोप के गोलों के निशान मेरे दिल को बहुत दुखा रहे थे। बौद्ध मठ के घर, मंदिर और खूबसूरत छोटी गलियाँ मेरी आँखों से ओझल हो गईं, और एक भयानक युद्ध के मैदान की तस्वीर सामने आ गई, जहाँ मासूम ब्रह्मचारी भिक्षुओं और धार्मिक नेताओं के खून की नदियाँ बह रही थीं। मैं अब ड्रेपुंग की पहाड़ी सुंदरता का मज़ा नहीं ले पा रहा था। मैंने ल्हासा की सड़क पकड़ी। रास्ते में, मैं पंद्रह मिनट के लिए रामचे मंदिर में रुका।

৩৯২

महातीर्थ का अंतिम यात्री

मैं खड़ा हुआ और झुककर बगल वाली तिब्बती चाय की दुकान में गया, और कहा, "बहुत अच्छी, असली तिब्बती चाय लीजिए।"

ल्हासा वापस आते ही मैंने ड्राइवर और स्रोंग्शी को उतार दिया। दोपहर के सिर्फ़ चार बजे थे। मैं होटल में घुसा और तुरंत बिस्तर पर सो गया। दो बड़े बौद्ध मठों में देखने के लिए बहुत कुछ था, मैंने बहुत कुछ देखा, लेकिन बार-बार तोप के गोलों से तबाह हुए खंडहरों की तस्वीर मेरी आँखों के सामने बनी रही। अपना मन शांत नहीं कर पाया, मैं सड़क पर निकल गया। अजीब बात है, ऐसा लगा जैसे तिब्बती अचानक सड़क से गायब हो गए हों। मुझे सिर्फ़ चीनी और चीनी सेना ही दिख रही थी। सड़कों के नाम और दुकानों के साइनबोर्ड सब चीनी भाषा में लिखे थे। एक ट्रांजिस्टर रेडियो पर औरतों की आवाज़ में चीनी धुनें बज रही थीं, और फुटपाथ पर कुछ जिज्ञासु लोग बिलियर्ड्स खेल रहे थे। मैं सोच रहा था कि क्या मैं सच में तिब्बत की राजधानी ल्हासा में हूँ, या चेंगदू में?

আরও দুদিন লাসায় থাকলাম। লাসার জোখাং মন্দির আর বারখারের বাজার, বাইরের ট্যুরিস্টদের কাছে এই দুটো স্থানই আকর্ষণীয়, বাকী সবটাই বলতে গেলে 'মেড্ ইন চায়না'। পোতালা প্রাসাদ এখন সম্পূর্ণ জাদুঘরে পরিণত হয়েছে। এথেন্স, রোম, প্যারিস, প্রাগ ইত্যাদি ইউরোপের শহর ও ভারতের দিল্লী, জয়পুর, হায়দ্রাবাদের প্রাসাদ ভ্রমণের মত অবস্থা। পোতালার গোল্ডেন-রুফ গলি আর খাঁটি তিব্বতি ধরনের অলি গলি ঘুরিয়ে গাইডেরা শিল্প ও ঐতিহাসিক তথ্য পরিবেশন করে কিন্তু ধৰ্ম্ম ও দর্শনের কোন উল্লেখই করে না। দালাই লামার প্রসঙ্গ উঠলেই সরাসরি বলে দালাই সেভেন্থ, দালাই এই ইত্যাদি।

इस बार मैंने ल्हासा छोड़ने का फ़ैसला किया। मैं मानसरोवर और कैलाशनाथ कई बार जा चुका हूँ, लेकिन मैं 1956 के बाद से यहाँ नहीं आया हूँ। सभी सड़कों के नाम चीनी भाषा में और टूरिस्ट के लिए खास जगहों पर इंग्लिश में लिखे हैं। जब पूछा गया कि ये तिब्बती भाषा में

क्यों नहीं लिखे हैं, तो मुझे बहुत स्मार्ट जवाब मिला - "तिब्बतियों ने सड़कें याद कर ली हैं, उन्हें डायरेक्शन की ज़रूरत नहीं है।" श्रोंघी ने कहा - साइनबोर्ड चीनी सैनिकों, चीनी बिज़नेसमैन और चीनी सरकारी कर्मचारियों के लिए लिखे हैं।

मैं ल्हासा से बाहर अपनी ट्रिप प्लान करने के लिए टूरिस्ट ऑफिस आया था। बॉस ने प्यार से मुझे बैठाया, फिर मैं सीधे अपनी ट्रिप के लिए कार और रुकने की अलग-अलग जगहों की जानकारी पर आ गया। मुझे चिंता करने की ज़रूरत नहीं थी, उन्होंने सब कुछ प्लान कर रखा था। मैंने इस बीच एक आइटिनररी चुन ली। चार लोगों का एक जर्मन ग्रुप उस ऑफिस में आया और उनके साथ बैठकर ल्हासा के उत्तर में जाने का फैसला किया, वे पहाड़ों में कुछ ट्रेकिंग करना चाहते थे। मैंने प्रपोज़ किया - नाम सरोवर जाने का। सब मान गए और खुश थे, टूरिस्ट ऑफिसर और भी खुश था, गाइड, कार, ड्राइवर, रेस्टोरेंट सब फायदे थे। और तो और, इस तरह के टूरिस्ट

419
सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৯৩

दलाई लामा धर्म या पॉलिटिक्स के बारे में कोई सवाल नहीं पूछते। कुल खर्च पाँच हिस्सों में बँटेगा, तीन रातें और चार दिन - पहली रात गेस्ट हाउस में, दूसरी और तीसरी रात कैंपिंग, हर व्यक्ति के लिए हर दिन बीस डॉलर। टूरिस्ट ऑफिसर ने कहा कि हमने प्रॉफ़िट कमाया है, सब कुछ आधे खर्च में हो गया। बाहर से ऐसे प्रपोज़ल के लिए, हर व्यक्ति के लिए और दस डॉलर देने पड़ते हैं, और सरकारी हेरिटेज प्रिज़र्वेशन फंड में और दस डॉलर डोनेट करने पड़ते हैं। आपने वह खर्च बचा लिया है

क्योंकि आपने ल्हासा से इंतज़ाम किया था। हर व्यक्ति के बीस डॉलर बच गए हैं।

- "धन्यवाद- धन्यवाद, बहुत-बहुत धन्यवाद।"

जैसे ही वे टूरिस्ट ऑफिस से बाहर निकले, श्रोंघी ने कहा:

- "आप सच में लकी हैं, गंडेन बौद्ध मठ आपको अकेले जाने की परमिशन नहीं देना चाहता था। जर्मन और अमेरिकन टूरिस्ट अच्छे होते हैं, वे सवाल नहीं पूछते।"

अगली सुबह हम निकल पड़े। हमने अपना सामान होटल में ही छोड़ दिया क्योंकि हम चार दिन बाद फिर से यहाँ आ रहे थे। हम सात लोग थे, ड्राइवर समेत, फोर-व्हील ड्राइव, काफी बड़ी जीप में, तीन आगे और चार पीछे, हम आठ लोग आराम से आ सकते थे। ड्राइवर ने कहा कि दस या ग्यारह लोग हैं, लेकिन वह चला गया। जर्मनी से दो कपल, दो गर्लफ्रेंड और बॉयफ्रेंड, असल में एक एडवेंचर पर निकले थे। वे बहुत खुशमिजाज थे, और हमारा परिचय मार्क-जूडिथ, हैंस-एल्सा के तौर पर कराया गया। वे दूसरे होटल में रुके थे, इसलिए कार उनके साथ आई। टेंट और उनके बैकपैक कार की छत पर थे। हमने एक-दूसरे को गुड मॉर्निंग कहा और बैठ गए। कार चली गई।

हमारा प्रोग्राम ल्हासा के नोरबुलिंगका पैलेस में कार से उतरा, फिर हमने ल्हासा के नए मॉडर्न शहर को देखा और सीधे गान्डेन चले गए। हम दोपहर में गान्डेन में लंच करेंगे।

"नोरबुलिंगका बिल्कुल वैसा ही है जैसा मेरे मन में था," श्रोंघी ने अपनी बात शुरू की। जीप के इंजन के शोर में उनकी आवाज़ सुनाई नहीं दे

रही थी, इसलिए टूरिस्ट बार-बार पूछने लगे, जिससे गाइड को माइक्रोफ़ोन लेकर अपनी बात दोहरानी पड़ी।

ल्हासा में इस अल्ट्रा-मॉडर्न इंटरनेट साइट बिल्डिंग को देखिए, यह तिब्बत में ऐसी पहली बिल्डिंग है। एवेन्यू को देखिए, यह चौड़ा, साफ़-सुथरा है, आपको इस एवेन्यू पर बीजिंग के कई ऑफिस मिलेंगे। यह पुराने ल्हासा से रात और दिन का फ़र्क है। सभी चीनी नेशनल फेस्टिवल यहीं होते हैं और सालाना मिलिट्री परेड भी देखने लायक होती है। तिब्बती न्यू ईयर फेस्टिवल, शाक्यमुनि फेस्टिवल और दूसरे ट्रेडिशनल इवेंट जोखांग मंदिर और पुराने ल्हासा में होते हैं, जिनमें से कोई भी बाहर नहीं है। गाइड की बार-बार कही बातों से साफ़ है कि अगर चीनी सरकार यहाँ नहीं आई होती, तो ल्हासा अभी भी चार सौ साल पीछे होता। चाय पीने और नए ल्हासा की तस्वीरें लेने के लिए कार एक चीनी रेस्टोरेंट में रुकी.... ज़्यादातर अजीब साइनबोर्ड चीनी में हैं। फिर हम नोरबुलिंगका जाने वाली सड़क पर आ गए।

২৭

৩৯৪

महातीर्थ का अंतिम यात्री

- "देखो, दलाई लामा का गर्मियों का महल, नोरबुलिंगका। पोटाला के मुकाबले कुछ भी नहीं, लेकिन बनावट और दरवाजों का काम देखने लायक है।" ऐसा लगता है जैसे इसे अभी-अभी पेंट किया गया है।

जैसे ही मैंने नोरबुलिंगका को देखा, मेरा मन अतीत में चला गया, मैं उसे अतीत की उस तस्वीर से कम्पेयर करना चाहता था। लेकिन, जिस

दरवाज़े से मौनी बाबा अंदर आए थे और उस समय की मेंटल हालत और आज के समय में बहुत बड़ा फ़र्क था, समय का फ़र्क, मैंने बगीचे में बहुत सी चीज़ें और नयापन देखा। कम्पेरेटिव सवाल मन में लाए बिना, मैंने सीधे स्रोन्शी की बात पर फोकस किया।

- "ल्हासा के पश्चिमी इलाकों में यह जगह असल में घास और जंगली पेड़ों से ढका एक छोटा सा तालाब था, लेकिन असल में यह एक गर्म पानी का झरना था। पानी का टेम्परेचर नहाने के लिए सही था। सातवें दलाई लामा को पैर में दर्द था, और यहाँ कुछ बार नहाने के बाद, उनके पैर का दर्द बहुत कम हो गया। तब से, वे हर गर्मियों में ध्यान करने आते हैं। यह खबर सुनकर, उस समय के चीनी प्रतिनिधि (किंग राजवंश के रेजिडेंट कमिश्नर) ने यहाँ एक छोटा सा घर बनवाया, और उस घर का नाम वुनाओपोझांग रखा, जिसे वहाँ के लोग नटमंदिर कहते थे। इसका मुख्य मकसद यह पक्का करना था कि जब दलाई लामा यहाँ नहाने आएँ तो उन्हें कोई दर्द न हो।

फिर सातवें दलाई लामा ने खुद एक दूसरा बड़ा घर बनवाया, जिसका नाम उन्होंने गेसांगपोझांग रखा। फिर अंदर का मंदिर, भक्तों के रहने की जगह और सुंदर गार्डन हाउस बनने लगे। पुराने पानी के तालाब को खूबसूरती से बांधकर एक पवित्र नहाने की जगह बना दिया गया। गर्मियों में यहाँ का मौसम सुहावना रहता है। तब से, दलाई लामा बचपन से लेकर अठारह साल की उम्र तक गर्मियों में पढ़ाई करने के लिए यहाँ रहते हैं।

उनकी बातें सुनकर, अचानक मेरी आँखों के सामने एक चलचित्र घूम गया... यहीं मैंने चौथे दलाई लामा, श्रीमत तेनज़िन ग्यात्सो को देखा था। एक मज़बूत, चमकदार युवा साधु। वह पहला नज़ारा। मेरी याद में एक पक्की तस्वीर यह है कि उनके रूप में एक आकर्षक शक्ति थी। एक सोलह साल के भारतीय भिखारी तीर्थयात्री के सामने एक शांत और रहस्यमयी व्यक्ति

प्रकट हुआ - पूजनीय और दुनिया भर में पूजनीय दलाई लामा। पूरे तिब्बत का प्रतीक। मैं अपने मन को वर्तमान में वापस ले आया। वह पिछले साल स्विट्जरलैंड के लॉज़ेन में देखे गए इस दलाई लामा से कैसे मिलता- जुलता है? एक समानता है, बेशक, वही मन, वही आत्मा, जिसे मैंने नोरबुलिंगका में देखा था, जैसे किसी राजकुमार को देखने के लिए बगीचे में चुपके से जाना। तिब्बत के शासक दलाई लामा के गुणों और शक्ति को जानने के लिए कोई ज्ञान या कहानी नहीं थी। एक बिल्कुल अनजान मन ने नोरबुलिंगका के राजा और पोताला पैलेस को देखा, और अब तिब्बत जानता है।

421
सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৯৫

৩৯৬

मैंने दलाई लामा को एक अलग नज़रिए से देखा है। मेरे मन में, पुराने, रहस्यमयी नोरबुलिंगका के नए दलाई लामा एक परमानेंट सीट पर बैठे हैं।

अचानक, मैंने दूर से एक छोटा सा ग्रुप इस तरफ आते देखा। दो लोग आगे चल रहे थे - शहर के लोग कह रहे थे, "परम पावन दलाई लामा आ रहे हैं।" जुलूस आगे बढ़ रहा था। जुलूस के बीच में, एक युवा साधु मेरे कान में फुसफुसा रहा था - "यह वही हैं, आप खुशकिस्मत हैं कि आपको उनके दर्शन हुए।" मैंने उन्हें देखा, लेकिन क्या उन्होंने मुझे देखा? मुझे नहीं पता, मैंने उन्हें देखा, यह मेरे अपने भले के लिए था।

- "चलो फिर से कार में बैठते हैं" - ड्राइवर की आवाज़ ने मेरा सपना तोड़ दिया, उसके बगल में स्रोंग्शी खड़ा था। कार फिर चली गई। मैंने खिड़की से आखिरी बार नोरबुलिंगका को देखा। उस युवा साधु को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसे लाखों ज़ंजीरों में बंद कर दिया हो। उस युवा साधु को धर्म और तपस्या की चारदीवारी के अंदर दुनिया देखने की आज़ादी नहीं थी। आज, मैं उस युवा साधु को धर्मशाला, गया, फ्रांस, अमेरिका में देखता हूँ - एक बिल्कुल अलग इंसान। पोताला और नोरबुलिंगका महलों की दीवारों के बाहर एक आज़ाद इंसान। तिब्बत के तांत्रिक बौद्ध धर्म की शिक्षाओं को फैलाने वाला एक कर्म योगी और कालचक्र का आरंभकर्ता।

कार अब घाटी वाली सड़क पर चली गई।

मेरे मन में एक सवाल था जिसे मैं दबा नहीं सका। मैंने स्रोंग्शी से पूछा।

मैंने किया

- "आपने उन्हें दलाई दलाई क्यों कहा? वे दलाई लामा हैं। आपको कुछ सम्मान दिखाना चाहिए। आप आखिरकार तिब्बती हैं।"

- "हाँ, मैं तिब्बती हूँ, लेकिन मैं चीनी सरकार के लिए एक गाइड और इंटरप्रेटर हूँ। हमारी ट्रेनिंग बीजिंग में हुई थी। हमारा प्रोफेशन चीनी नेशनल सरकार की ट्रेनिंग और एजुकेशन के हिसाब से है। बीजिंग के लैंग्वेज, गाइड और आर्किटेक्चर स्कूल ने हमें जो सिखाया है, हम उसे बोलने के लिए मजबूर हैं। आपने हमारे चीफ सेक्रेटरी - मिस्टर झांग हुईझेन का नाम सुना होगा, जो चीनी और तिब्बती इतिहास के

प्रोफेसर हैं, और कई बार अमेरिका जा चुके हैं।" - "ठीक है, धन्यवाद, आपकी क्वालिफिकेशन सच में तारीफ के काबिल हैं।"

ल्हासा से निकलकर मुझे आज़ादी महसूस हुई। जीप आगे बढ़ रही थी, एक बहुत ही खूबसूरत घाटी से एक जैसा शोर करते हुए। छोटे-छोटे गाँव। दूर अनजान पहाड़ों की चोटियों पर सफ़ेद बर्फ़।

दूर पहाड़ की दीवारों पर बने कई घर दिखाई दिए। स्रोंग्शी ने सबका ध्यान खींचा और कहा:

- "उस दूर की ओर देखो, मेरे प्यारे। यह बहुत सुंदर है।"

महातीर्थ का अंतिम यात्री

गंडेन को कई नामों से जाना जाता है, जैसे "हिल गर्ल", "अभिनंदन", "प्रशॉननिय"। यह पहली बार है जब मैंने एक यादगार मूर्ति देखी! एक अजीब कुदरती खूबसूरती! तीन पहाड़ी दीवारों पर इंसानों की बनाई कितनी अविश्वसनीय इमारतें बनी हैं। जैसे-जैसे कार पास आई, मैं और भी हैरान हो गया। ऐसा लगता है कि किसी जादूगर ने इन इमारतों को अलग-अलग जगहों पर बनाया है और उन्हें उड़ते हुए दिग्गजों के साथ पहाड़ी दीवारों पर लटका दिया है। यहां की आर्किटेक्चरल बहादुरी पोटाला से कहीं ज़्यादा है। 1409 में गेलुक्का संप्रदाय के संस्थापक धर्मवीर त्सोंगखापा का एक ऐतिहासिक योगदान। चार हज़ार तीन सौ मीटर की ऊंचाई पर गोल पहाड़ी दीवार पर बने इस मठ की आकर्षक सुंदरता ने हमें हैरान कर दिया।

श्रोंघी को कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी, यह गंडेन बौद्ध मठ, सूरज उगने की तरह, अपनी ही खूबसूरती में साफ़ दिखता है। वे फ़ोटो लेने

में बिज़ी हो गए, और मैंने उन्हें अपने मन की आँखों में देखा, अपने शरीर के हर सेल को अलर्ट किया और उसकी खूबसूरती को महसूस किया। मेरी जर्मन साथी जूडिथ ने पूछा, "क्या तुम अपना कैमरा नहीं लाईं? सॉरी मत, मैं जर्मनी वापस जाकर तुम्हें एक कॉपी भेज दूँगी।"

- "थैंक यू। आप इसे कैमरे में पकड़े हुए हैं, आपकी मौत के बाद यह फोटो
यहीं रहेगी, यह आपके साथ नहीं जाएगी, मैं इसे अपने मन की गहराइयों में संभाले हुए हूं, मैं इस खूबसूरती को हर सेल की याद में बंद कर रहा हूं, मैं इसे अगले जन्म में फिर से देखूंगा, इसकी धड़कन मेरे शरीर और मन में मेरे पुनर्जन्म में भी गूंजती रहेगी।"

- "अच्छा, आप पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं।"

- "हाँ"

- "आप सचमुच भाग्यशाली हैं, क्योंकि आप भारतीय हैं, हिंदू हैं"

कार एक बड़े आर्च से अंदर आई, जिसके बगल में पार्किंग की जगह थी। पीले कंबल में लिपटे पाँच-छह जवान साधु खड़े थे। उन्होंने मुस्कुराकर हमारा स्वागत किया। हम एक बड़े हॉल में दाखिल हुए, जहाँ दूर से भगवान बुद्ध बड़ी अभय मुद्रा में हमें आशीर्वाद दे रहे थे। दीवारों पर बहुत सारे टंका थे, और उसके बगल वाले कमरे में एक लाइब्रेरी थी। सजे हुए आलों में सैकड़ों धार्मिक किताबें रखी थीं। दीवारों पर सुनहरे, पीले, नीले, लाल वगैरह चमकीले रंगों की पेंटिंग में बुद्ध के जीवन, मारा और मंडलों की आकर्षक तस्वीरें थीं। हॉल के हर खंभे को बहुत ध्यान से पेंट किया गया है। पूजा की हर चीज़ चमक रही है, जैसे वह एकदम नई हो। यह सोचना कमाल का है कि उन्हें इतनी खूबसूरती और ध्यान से सजाया गया है। इसके पीछे बहुत मेहनत और

कलात्मक नज़रिया है। यहाँ दिन की रोशनी काफी अच्छी तरह आती है, इसलिए बारीक काम आसानी से दिखाई देता है।

एक बुज़ुर्ग बौद्ध भिक्षु आगे आए, उन्होंने खुद को इस मठ के हेड लामा के तौर पर इंट्रोड्यूस किया। मैंने झुककर प्रणाम किया, बाकी लोगों ने हाथ मिलाया।

423
सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৯৭

৩৯৮

उस आदमी ने मुस्कुराते हुए और बहुत विनम्रता से पूछा, "क्या आप इंडियन हैं?"

- "हाँ बिल्कुल।"

- "हमारी सुबह की प्रार्थना और पाठ खत्म हो गए हैं, अब सभी लड़के
डाइनिंग रूम में चले गए हैं, लेकिन अगर आप चाहें तो मैं उन्हें बुला सकता हूं, वे कांग्यो पाठ सुना सकते हैं।"

- "नहीं, अब आपको उन्हें कॉल करने की ज़रूरत नहीं है।"

- "तो चलो, साथ में खाना खाते हैं"

- "मुझे कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन यह ताकत पर निर्भर करता है।"

- "मुझे कोई आपत्ति नहीं है," श्रोंघी ने उत्तर दिया।

खाने के बाद अगर आप चाहें तो यहां के रिकंस्ट्रक्शन फंड में कुछ पैसे दान कर सकते हैं, जो इस मठ के काम आएंगे।

हम मान गए। मुझे लगता है कि यह हमारे प्रोग्राम का हिस्सा था। हम कॉलेज हॉल गए। अजीब बात है, वहाँ लगभग दो सौ (200) स्टूडेंट्स थे, लेकिन वे शांत थे। सच में, डिसिप्लिन्ड थे। हम स्टूडेंट्स के साथ बैठे, जौ का दलिया, उबले आलू और पत्तागोभी का सूप खाया।

खाने के बाद, मठाधीश ने मठ के बारे में अलग-अलग जानकारी शेयर करना शुरू किया। गंडेन मठ तिब्बत का सबसे बड़ा एजुकेशनल इंस्टिट्यूशन है। 1959 में, यहाँ भिक्षुओं (भिक्षुओं) की संख्या लगभग साढ़े पाँच हज़ार (5500) थी। सेरा और ड्रेपुंग बौद्ध मठ भी ऐसे ही थे, लेकिन एजुकेशन सिस्टम के मामले में यह सबसे एडवांस्ड था। परम पावन दलाई लामा के टीचर और दीक्षा लेने वाले इसी मठ से चुने जाते थे। इस मठ की एक और खासियत यह है कि यहाँ मठाधीश या मुख्य लामा को पुनर्जन्म सिस्टम के हिसाब से नहीं चुना जाता था। तिब्बत के सभी मठों में से सबसे अच्छे को गंडेन का मठाधीश बनाया जाता था। यानी, सच में काबिल इंसान।

मुझे मठाधीश का भाषण काफी पसंद आया, लेकिन मेरे साथी टूरिस्ट खुद देखना चाहते थे, फोटो लेना चाहते थे, और यहां की ज़िंदगी को वीडियो में रिकॉर्ड करना चाहते थे। देश में कहानियां सुनाने से ज़्यादा ज़रूरी है फोटो दिखाना। उनके मुताबिक, "आजकल मार्केट में तिब्बत पर किताबें भरी पड़ी हैं, सब कुछ डिटेल में मिल जाता है, बस आपको उन्हें चुनकर पढ़ना है। हम देखने आए हैं - हमें अपनी आंखों से जितना हो सके

उतना देखना है - उन्हें इग्नोर करना ठीक नहीं है।" इसलिए साधु को उठकर मठ का चक्कर लगाना पड़ा, इतिहास नहीं। बदकिस्मती से, मठाधीश को इंग्लिश या नेपाली नहीं आती। मैंने पूछा -

- "एक सवाल यह है कि मेरे जैसे आम तीर्थयात्री या तिब्बती तीर्थयात्री बिना शिक्षा और दीक्षा के यहां क्या करते हैं?"

২৮

- "वे सभी इस मंदिर के मुख्य देवता, डर और खुशी के देवता की पूजा करने आते हैं।"

महातीर्थ का अंतिम यात्री

बुद्ध के दर्शन करने के लिए, जो आपने किया है। और दर्शन के बाद, वे लिंकहोर पथ की परिक्रमा करते हैं, जैसे हर कोई परिक्रमा करने के लिए कैलाशनाथ जाता है।”

श्रोंघी ने अनुवाद किया और कहा:

- "हम लिंकोर ट्रेकिंग के लिए आए हैं, चलो पंद्रह से बीस लोकल लोगों को अपने साथ ले चलते हैं, हम ट्रेक करेंगे और उन्हें आशीर्वाद मिलेगा।"

गंडेन सच में एक बहुत बड़ा इलाका है, कोई मठ नहीं, बल्कि एक मठ-गांव है। एक के बाद एक मंदिर मेहराबों और चोर्टेन या स्तूपों से भरे हुए हैं। हर जगह साधु और ब्रह्मचारी भरे हुए हैं। यह बहुत अच्छा लग रहा था, लेकिन अचानक मुझे झटका लगा।

मैं हैरानी से रुक गया जब मैंने देखा कि मलबे का एक बड़ा ढेर भूकंप में ढह गया था, ठीक कई नए घरों के पीछे।

-श्रोंग्शी ने बिना किसी झिझक के कहा- "1959 में, यहाँ कोई चीनी सेना नहीं थी। लेकिन 1966 में, पीपुल्स लिबरेशन आर्मी ने अचानक यहाँ हमला किया, और अचानक बमबारी की, जिसके नतीजे में, इस मठ के मुख्य मंदिर से सटे सभी घर गिर गए। मठ का लगभग आधा हिस्सा धूल में मिल गया। लेकिन अच्छी खबर यह है कि ल्हासा के भिक्षुओं, गाँव वालों और तिब्बती समुदाय ने मिलकर पैसे जमा किए और आपस में मेहनत करके इस पारंपरिक गंडेन मठ को फिर से बनाया। बहुत कोशिशों के बाद भी, उस पुरानी कला को बचाया नहीं जा सका। आजकल, चीनी कल्चरल कमेटी कई लामा कलाकारों को यहाँ की दीवार की पेंटिंग, टंका और मंडला को ठीक करने के लिए बढ़ावा दे रही है। इस बर्बादी को देखे बिना यकीन करना नामुमकिन है। मैंने मन ही मन सोचा, अगर तिब्बत सच में चीनी ज़मीन है, तो इसके खत्म होने का मतलब चीनी परंपरा का खत्म होना है। मुझे समझ नहीं आया कि इस बर्बादी की जड़ में किस तरह की कल्चरल क्रांति थी।

ल्हासा छोड़ने के बाद मेरा मन थोड़ा हल्का हुआ, लेकिन अब फिर से भारी हो गया था। अगर मैं लिंकोर करके हल्का हो सकता हूं, तो मैंने श्रोंघी से कहा:

- "चलो जल्दी चलें, चलो टूर पर चलें"

लिंकोर का मतलब है गंडेन मठ के चारों ओर की पहाड़ी सड़क। एक तरफ मंदिर के खंडहर हैं और दूसरी तरफ, यानी उसी जगह पर खड़े होकर बस सिर घुमाने पर, आप बेमिसाल खूबसूरत घाटी का नज़ारा देख सकते हैं। चीनी सैनिक कल्चरल मूवमेंट के नाम पर लोगों और मंदिरों को कितना भी तबाह

कर लें, वे यहां के आसमान, हवा, घाटी और पहाड़ी नज़ारों को खरोंच भी नहीं पाए।

मठाधीश और श्रोंघी ने आपस में सलाह की और हमें बताया कि जर्मन ग्रुप और ट्रेकिंग करना चाहता है, और श्रोंघी सीधे उनके साथ जाएंगे। वे दूर के प्लेटफॉर्म से वीडियो लेंगे, फिर वहां से उतरकर शा इलाके में जाएंगे, जहां वे कैंप लगाकर रात बिताएंगे। सुबह ड्राइवर वहां से कार लेकर आएगा। वह मुझे वापस ऊपर ले जाएगा और ग्रुप में शामिल कर देगा।

425
सहस्राब्दि में ल्हासा

৩৯৯

एक और समस्या यह है कि मैं स्लीपिंग बैग नहीं लाया था, श्रोंघी एक एक्स्ट्रा स्लीपिंग बैग लाया था, लेकिन ड्राइवर का कहना है कि उसे इसकी ज़रूरत पड़ेगी, क्योंकि कंकन के 'शा' इलाके में हमेशा ठंड रहती है।

यह अच्छा है कि मैं भी रात गाना गाते हुए बिताना चाहता हूँ। आनंदेश्वर ने मेरा मन पकड़ लिया है। मठाधीश जानते हैं कि मैं भारतीय हूँ और वह भी चाहते हैं कि मैं उनके साथ रात बिताऊँ। मैंने श्रोंग्शी को भरोसा दिलाया, "जाओ, मुझे कोई दिक्कत नहीं होगी।" श्रोंग्शी उनके साथ चला गया, और मुझे आठ युवा साधु दिए गए - मैं उन्हें ब्रह्मचारी कहूँगा - उनकी भाषा में 'त्रावा'।

गंडेन का मठ और घाटी, लद्दाख के लामायुरु मठ और घाटी से काफी मिलती- जुलती हैं। हम खूबसूरत नज़ारे देखने के लिए परिक्रमा के रास्ते पर

चलने लगे। ट्रेकर्स का ग्रुप मेरे आगे-आगे उछलता हुआ चल रहा था। ग्रुप में थोड़ा आगे चल रहे एक लड़के ने धीरे-धीरे मेरे साथ चलना शुरू किया - जान-पहचान से मैं उसे जान गया था, उसके पिता ल्हासा में बिज़नेस करते हैं, अक्सर व्यापार के लिए काठमांडू जाते हैं, वह भी अपने पिता के साथ कई बार काठमांडू जा चुका है। उसे कुछ नेपाली शब्द आते हैं, और किसी तरह हमारी बातचीत होने लगी। यह तीर्थयात्रियों का रास्ता है, इसलिए वे अक्सर चोरी करते हैं और हर जगह प्रार्थना के झंडे लहरा रहे होते हैं। करीब एक घंटे चलने के बाद, हमें काफी ऊंचाई पर एक समतल ज़मीन मिली और हम रुक गए। लड़के वहाँ एक स्तूप के पास रुके। आस-पास बिखरे हुए कई कंकाल और हड्डियाँ देखकर मुझे एहसास हुआ कि यह एक श्मशान घाट है। यहाँ का सबसे ऊँचा इलाका। यहाँ कोई दाह संस्कार नहीं होता। मुर्दों को जलाने के लिए लकड़ी की ज़रूरत होती है। इस सूखे, ठंडे रेगिस्तान में एक भी घास नहीं उगती। इंसानों में पथरीली ज़मीन में गड्ढे खोदने की ताकत नहीं होती। इस ज़मीन पर दफ़नाने के लिए बुलडोज़र जैसी पावरफ़ुल मशीन चाहिए होती है। इसलिए, समय और जगह के हिसाब से क्रिमेशन का एक अजीब सिस्टम बनाया गया है। लाश को टुकड़ों में काटकर गिद्धों और चीलों को फेंक दिया जाता है। इस जगह को हेवन स्टेज कहा जाता है। यहाँ से नज़ारा बहुत सुंदर है, लेकिन बदकिस्मती से यहाँ बैठने का कोई रास्ता नहीं है, हवा बहुत तेज़ चल रही है। इसलिए हमें मजबूरन वापस जाना पड़ा। वही सड़क, पहाड़ की दीवार के साथ आगे बढ़ती हुई।

करीब तीन घंटे चलने के बाद, हम मठ में वापस आ गए। मठाधीश बाहर हमारा इंतज़ार कर रहे थे, साथ में एक और बुज़ुर्ग तिब्बती सज्जन भी थे जो काम पूरा करने के लिए नेपाली, हिंदी और थोड़ी अंग्रेज़ी बोलते थे। यहाँ, कोई भी अपना नाम आसानी से नहीं बोलता जब तक कि वे किसी ऑफ़िशियल पोस्ट पर न हों, और मैंने उस सज्जन का नाम नहीं पूछा।

[illegible], [illegible] [illegible] a [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible]

de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] de [illegible] de de [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible]

[illegible]

[illegible] de [illegible] [illegible]

de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de - [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] de [illegible] [illegible]

-"de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] de [illegible] [illegible]?"

-"[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

- "de [illegible] [illegible] [illegible] de de de [illegible] de de de [illegible] de de de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de de [illegible] de [illegible] de de [illegible] [illegible]," [illegible] [illegible] [illegible]

-"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible] de?"

-"de de, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] de [illegible] [illegible]"

मेरी बातें सुनकर वे दोनों बहुत एक्साइटेड हो गए और बार-बार मेरे हाथ छूने लगे और अपनी छाती छूने लगे, जैसे मैं उन्हें कोई परम प्रसाद दे रहा हूँ। फिर एक के बाद एक कई सवाल पूछे गए। जैसे कि परम पावन दलाई लामा का शरीर कैसा है, क्या वे अगले जन्म में भारत में रहेंगे या तिब्बत लौट जाएँगे - वगैरह-वगैरह, जिनका जवाब मैं नहीं दे पाया। हालाँकि, भले ही उन्हें कई सवालों के जवाब नहीं मिले, लेकिन मुझसे पूछकर उन्हें शांति मिली।

दोपहर में, सूरज डूबने से पहले, डिनर के लिए तुरही बजी, और हम उठ गए।

रात के खाने में गेहूं और चावल के मिक्सचर से बनी खिचड़ी थी, और उसमें आलू और पत्तागोभी मिलाई हुई थी - बहुत बढ़िया स्वाद। खाने के बाद, लड़के तुरंत अपने-अपने घर चले गए। बिजली अभी नहीं आई थी, इसलिए पुरानी परंपरा अभी भी निभाई जा रही थी। खाने के बाद, उन्होंने प्रार्थना की, फिर सो गए।

मठाधीश ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा। वह खुद मेरे कमरे में आए ताकि यह पक्का कर सकें कि मेहमान को कोई परेशानी न हो। फिर, बिस्तर के पास एक मोमबत्ती और माचिस रखते हुए उन्होंने कहा:

"मैं इसे आपके लिए अपने ऑफिस से लाया हूँ। ताकि रात में कोई दिक्कत न हो। और टॉयलेट के लिए मैदान में जाना बेहतर है क्योंकि लड़कों के टॉयलेट साफ़ हैं, लेकिन सर्दियों में और अंधेरे में आपके लिए जाना मुश्किल होगा। लेकिन हम दलाई लामा से और कहानियाँ सुनना चाहते हैं।"

मैंने कहा, "मैंने आपको बहुत सी कहानियाँ सुनाई हैं, अब मुझे आपसे कुछ पूछना है। प्लीज़ जवाब दें। मुझे बहुत खुशी होगी। लेकिन मैं आपको फ़ोर्स नहीं करूँगा। अगर आपको कोई दिक्कत हो, तो आप चुप रहें तो मैं समझ जाऊँगा। मेरा सवाल क्लियर नहीं था।" मेरी बातें सुनकर मुझे लगा कि वे दोनों राज़ी हैं, इसलिए मैंने तुरंत पूछ लिया।

- "क्या गंडेन का यह मठ अब भी पहले जैसा ही है?"

- "नहीं, इसकी तुलना उस युग से नहीं की जा सकती। दलाई लामा और पंचेन
लामा के युग से।"

427
सहस्राब्दि में ल्हासा

৪০১

৪০২

"यह दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक शिक्षा और दीक्षा केंद्रों में से एक था। पहले, यहां पांच से छह हज़ार परमानेंट निवासी थे, और आज केवल चार सौ बचे हैं।"

- "क्या चार सौ मठवासियों को पहले जैसी ही शिक्षा मिल रही है?"

- "नहीं, एजुकेशन सिस्टम बदल गया है, आजकल टांका और मंडला आर्ट पर
ज़्यादा ज़ोर दिया जा रहा है। पुरानी किताबों के चीनी ट्रांसलेशन शुरू हो गए हैं। डिबेट साइंस फेयर जैसी है, लेकिन सही टीचर्स की कमी है, सारे असली लोग इंडिया या नेपाल चले गए हैं।"

- "यह बहुत अच्छा होगा अगर इन सभी धार्मिक किताबों का चीनी भाषा में अनुवाद किया जाए, ताकि तिब्बती दर्शन को बड़ी संख्या में चीनी नागरिकों के साथ शेयर किया जा सके, है ना?"

मुझे अपना सवाल बहुत देर तक समझाना पड़ा, लेकिन आखिरकार बात बन गई। मठाधीश ने एक समझदार आदमी की तरह सिर हिलाया और ऊपर देखकर कहा,

- "यह मुमकिन नहीं है, हमारी सीक्रेट थ्योरी का ट्रांसलेशन नहीं किया जा सकता। मैंने चीनी सीखी है। यहाँ कुछ उदाहरण हैं, जैसे-"

(1) लो-चेन-ऐज़-स्पाई विजय धर्मवीर

(2) इरता-ग्रिन: पाली में हयग्रीव का मतलब घोड़े की गर्दन होता है। विजया धर्मकाय (3) अर्दो-अर्जे अस, महा वज्र धर्म, महासरस्वती का पुरुष अवतार

अगर इन सभी रहस्यमयी तांत्रिक देवी-देवताओं और मंत्रों का चीनी भाषा में अनुवाद किया जाए, तो उनके मंत्रों की आवाज़ें खो जाएंगी, और इतना ही नहीं - अगर तिब्बती, पाली और सबसे पुरानी दैवीय भाषा में संस्कृत मंत्रों का चीनी भाषा में अनुवाद किया जाए, तो उनकी खासियतें खो जाएंगी।

"देखिए, इस मठ पर बमबारी के बाद, मंदिर और मठ के कई कीमती टंका और पवित्र दीवार पेंटिंग पूरी तरह से खंडहर बन गए हैं। बीजिंग सरकार ने नई दीवार पेंटिंग और टंका बनाने के लिए मशहूर कलाकारों को बुलाया है, लेकिन वे इसमें कोई जान नहीं डाल पा रहे हैं। ट्रांसलेशन के समय भी यही समस्या आती है..."

हमारी बातचीत अच्छी चल रही थी, लेकिन इंटरप्रेटर इस मठ में नहीं रहता, उसका घर पास के गांव में है। उसका एक सुअर और मुर्गी फार्म है, जो सरकारी पैसे की मदद से अच्छा चल रहा है, लेकिन उस पर बहुत सारी ज़िम्मेदारियां हैं और उसे वापस जाना है। इसलिए मुझे मजबूरन अपनी बातचीत रोकनी पड़ी - मैंने उसे दिल से धन्यवाद दिया और गुड नाइट कहा।

मोमबत्ती बुझ गई। एक रहस्यमयी, खामोश रात मुझे वापस तिब्बत ले आई, जहाँ मैं कई साल पहले रिम्पोछे से मिला था।

अगली सुबह, त्रबरई ने मुझे नाश्ते में चाय और बन देकर जगाया। मुझे मठ में इतने अच्छे नाश्ते की उम्मीद नहीं थी - मैंने इसे प्रथम प्रसाद समझकर स्वीकार कर लिया। फिर मैंने सच्चे दिल से शुक्रिया अदा करते हुए अलविदा कहा। जैसा वादा किया था, जीप समय पर आ गई।

महातीर्थ का अंतिम यात्री

बहुत ही खूबसूरत पहाड़ी सड़क। यहाँ से की-चू घाटी का पूरा नज़ारा देखकर मेरा दिल खुशी से भर गया। हमें ज़्यादा देर गाड़ी नहीं चलानी पड़ी, उन्होंने पहाड़ पर एक गुफा चुनकर कैंप लगा लिया था। मुझे देखते ही वे पुराने दोस्तों की तरह उछल पड़े। वे तैयार थे, जीप में बैठ गए। फिर से सड़क, और 45 मिनट गाड़ी चलाने के बाद, हम एक पुराने मठ में पहुँचे। बड़ा सरप्राइज़! सरप्राइज़! जैसे-जैसे हम पास पहुँचे, मेरा शक दूर होता गया, हाँ, वे सभी नन थीं। मुझे महिलाओं के लिए कोई मठ देखने की उम्मीद नहीं थी। मुझे तो यह भी नहीं पता था कि इस इलाके में कोई बूढ़ी औरतों का घर भी है। मैंने चीनी सैनिकों के एक साथ किए गए विनाश के कारण सभी परंपराओं के खत्म होने के बारे में सुना था -

लेकिन अब मुझे एक एक्सेप्शन दिख रहा है, मठ का नाम सुनकर मुझे और भी हैरानी हुई - नागा महिला आश्रम।

हमें मठ के शाक्यमुनि मंदिर में जाने की इजाज़त मिल गई। जो लोग ऑफिशियल गाइड और गाड़ियों के साथ आते हैं, उन्हें आसानी से जाने दिया जाता है, और जो लोग इस इलाके में ट्रेकिंग करने आते हैं, उन्हें इजाज़त होती है। अगर आप खुद आते हैं, तो मठ और मंदिर में जाना मुश्किल होता है।

यहां 81 शुद्ध नन हैं। यह सुनकर और भी हैरानी हुई कि उनमें करीब 20 चीनी महिलाएं भी हैं। उनमें से दो टीचर हैं और 18 तिब्बती फिलॉसफी और बौद्ध धर्म की पढ़ाई करने आई हैं। दो टीचरों ने काठमांडू में तीन साल तक धर्म और परंपरा की पढ़ाई की है। एक मंदिर में, तांत्रिक ऋषि, लोटस कर्मा (लोटस कर्मा) सिद्धपुरुष की मूर्ति के बगल में, कॉमरेड माओ का दीवार पर लगा एक बहुत बड़ा टंका रखा है। मैंने ल्हासा में सुना है कि बुद्ध पूर्णिमा के बाद माओ फेस्टिवल मनाया जाता है।

यह मठ नागा संन्यासिनी (कुंभ मेले में न्यूड साधु, साधु नहीं) चलाती हैं और यह सिर्फ़ महिलाओं के लिए है। वे हमारे मंदिर आईं, हमें चाय पिलाई और फिर अलविदा कहा। माहौल बहुत गंभीर था, सिर्फ़ महिलाओं को देखकर ही मेरा हंसने का मन कर रहा था।

वहाँ से ज़्यादा दूर नहीं एक और महिला मठ है जिसे "शा" (शा ननरी) महिला मठ कहते हैं। यहाँ और भी हैं, एक सौ तीस लोग। इनमें से ज़्यादातर तिब्बती हैं लेकिन डायरेक्टर चीनी हैं। उनका काम तिब्बत के अलग-अलग दूर-दराज़ पहाड़ी इलाकों में जाकर गाँव वालों तक सरकार की शिक्षा और हेल्थ अवेयरनेस योजनाओं का प्रचार करना है। हालाँकि आजकल चीनी सरकार, चीनी भाषा और चीनी मुखिया का ज़माना है, लेकिन

तिब्बती लोग अपने दिल और दिमाग से तिब्बती धर्म और सुधार के पक्ष में हैं, वे गाँव वालों के दिमाग से मठ-मंदिर-बुद्ध दलाई लामा चोर्टेन-प्रणाम-परिक्रमा, सज़ा, दंड, मंत्र वगैरह के कॉन्सेप्ट नहीं निकाल पा रहे हैं। ज़बरदस्ती, ज़ुल्म, सज़ा, लालच, कैद वगैरह के साथ-साथ ल्हासा में हज़ारों सरकारी योजनाएँ जैसे नई शिक्षा, सभ्यता, खाना, हेल्थ वगैरह काम कर रही हैं, लेकिन गाँव के इलाकों में सरकार

429

सहस्राब्दि में ल्हासा

৪০৩

कोई भी चीज़ उन्हें प्रो-चाइनीज़ नहीं बना सकती। इसलिए इन दिनों चीनी सरकार ने अपना ज़रूरी मुश्किल रास्ता छोड़कर मिशनरी रास्ता अपना लिया है। वह धीरे-धीरे मठों, विहारों, आश्रमों, मंदिरों वगैरह जैसे धार्मिक संगठनों के ज़रिए तिब्बतियों के बीच चीनी सोच को और आसानी से फैला रही है। शहर से दूर, सभी राजनीतिक हवाओं से दूर, हम इस महिला शेल्टर की अलग-अलग एक्टिविटीज़ नहीं देख पाए, लेकिन जहाँ तक हमने बातचीत से समझा, ये लामा ननें नन के भेष में गाँव की नर्सें हैं। हमें मानना होगा कि सबसे अच्छा तरीका ज़िंदगी की सेवा करना है। जो ज़िंदगी से प्यार करता है, वह भगवान की सेवा करता है।

हमारे साथ जो दो जर्मन लड़कियां थीं, अगर वे चाहतीं तो अंदर का काम देख सकती थीं, लेकिन मठ में पुरुष इंटरप्रेटर को आने की इजाज़त नहीं है। और बदकिस्मती से, मठ की कोई भी महिला इंग्लिश नहीं बोलती। इसलिए विदेशी महिलाओं ने ग्रुप छोड़ने से मना कर दिया।

नागा और शा के दो आश्रम घूमने के बाद, हमने फिर से उत्तरी रास्ता लिया। खूबसूरत शारापा-चू घाटी से, हम धीरे-धीरे पहाड़ी रास्ते पर चले। कार गुनगुनाने लगी, ऐसा लगा कि उसे हमें ले जाने में दिक्कत हो रही है। फिर एक जगह कार रुकी, सड़क बहुत खराब थी, हमें ट्रेक करना पड़ा। सड़क खराब थी, लेकिन नज़ारा बहुत बढ़िया था। जिस जगह हम उतरे उसे चेक-ला कहते थे। चेक पास पाँच हज़ार मीटर ऊँचा है। ट्रेकिंग शुरू हुई। रास्ते में, हम सिर्फ़ एक-दूसरे को देख पाए, ज़्यादा बात नहीं हुई। ड्राइवर कार में ही रहा, श्रोंग्शी हमारे साथ जा रहा था। कभी-कभी, वह आस-पास के नज़ारे और पहाड़ों के बारे में बताने लगा। हमने पथरीली पहाड़ी सड़क को और आधे घंटे तक पार किया और जब हम एक पहाड़ी दीवार के चारों ओर मुड़े, तो हमें और भी खूबसूरत नज़ारा दिखा, इस घाटी को मिग्गी कहते थे। दूर पहाड़ से चिपका एक घर देखकर मैं हैरान रह गया। कितना अजीब है, उस ऊँची और सुनसान जगह पर वह घर किसने और कैसे बनाया? श्रोंग्शी ने हमारे सवालों के जवाब दिए:

वह रेटिंग गांव है, और बड़ी बिल्डिंग समद्रुप ननरी है। सब इसे समद्रुप लिंग कहते हैं। यह इस इलाके की तीसरी ननरी है। इस मठ के चारों ओर चार पहाड़ हैं, वे पहाड़ इस मठ के रक्षक हैं, मतलब चार पहाड़ी देवताओं ने आज तक इस समद्रुप लिंग मठ को बाहरी हमलों से सुरक्षित रखा है। इस इलाके में लगातार तीन ननरियों ने कई सालों तक अपनी प्रार्थना, ध्यान और थांगखा की कला को ज़िंदा रखा है।

पहाड़ों में यह देखना अजीब है, दूरी समझ नहीं आती। डेढ़ घंटे और चलने के बाद हम थककर समद्रुप लिंग महिला आश्रम पहुँचे। उनकी मुस्कान, प्रार्थना और 'नमस्ते' ने हमारी थकान दूर कर दी। आश्रम के मुख्य मंदिर के सामने, हम

महातीर्थ का अंतिम यात्री

इस काम के लिए एक भारी सतरांची बिछाई गई थी। यहाँ का माहौल और मुख्य मंदिर की बनावट ने हमें बहुत पसंद किया। चोर्टेन की परिक्रमा करने और कई प्रार्थना चक्र घुमाने के बाद, मैं मंदिर में अंदर गया। मेरे सामने महान शाक्यमुनि की 'वज्रपाणि मूर्ति' थी। सभी जर्मन खोजकर्ता सतरांची पर बैठकर आराम कर रहे थे और मैं तिब्बत के इस रहस्यमयी महिला मठ के अलग-अलग मंदिरों और उनकी रंगीन दीवार पेंटिंग्स को देखने लगा। ऐसा लग रहा था कि चीनी सांस्कृतिक ताकतों ने यहाँ बमबारी नहीं की थी। हमें बैठाने के बाद, ब्रह्ममचारिणी ने 'नमस्ते' कहा और चली गईं।

गाँव मठ के बगल में है। हम आधे घंटे मठ में बैठे और फिर मठ का चक्कर लगाकर गाँव में एक चाय की दुकान पर बैठ गए। हमें चाय और तले हुए आलू ऑर्डर किए गए। होटल का मालिक पक्का तिब्बती है, और उसके दिखने, कपड़ों और व्यवहार से यह साफ़ था कि भले ही यह ल्हासा से ज़्यादा दूर नहीं था, लेकिन उनके बीच अभी तक चीनी टोपी नहीं आई थी। हमें इस होटल के किचन में ठहराया गया है, लेकिन एक्सपीडिशन के दोस्त बाहर कैंप करेंगे।

यह पहली बार है जब मैंने कोई मठ और गांव देखा है जहां कोई चीनी लोग नहीं हैं, और मुझे उन्हें देखकर खुशी हुई। पहाड़ी पर मठ होने के कारण, अनजान और अनडेवलप्ड होने के कारण, वे चीनी लाइफस्टाइल से पूरी तरह दूर हैं।

अगले दिन हम फिर पैदल चले। हम चेक-ला पास पहुँचे और कार में वापस बैठ गए। अब हम न्येचेन तांगला पहाड़ों के ऊपर से गुज़र रहे थे, ये सभी चोटियाँ 7000 m से ज़्यादा ऊँची हैं, लेकिन सड़कें न होने की वजह से

हमें इतनी ऊँचाई पर चढ़ने की ज़रूरत नहीं पड़ी। हमने 5150 m की ऊँचाई पर ल्हाचेन ला पास पार किया। सड़क सच में बहुत खराब थी लेकिन नज़ारा बहुत सुंदर था। जैसे ही हमने लाचेन पास पार किया, हमें साफ़ नीले पानी वाली एक बहुत बड़ी झील, नामत्सो झील दिखाई दी। यह शांत, पवित्र और सुंदर थी। हमारे सारे शब्द रुक गए, कोई गाइड या इंटरप्रेटर इस सुंदरता को शब्दों में बयां नहीं कर सका - मैंने इसे बहुत देर तक देखा, हमारे शरीर का हर सेल खुशी से भर गया। फिर हमारे मुँह से एक शब्द निकला, यह तिब्बत है, हम इसी के लिए आए हैं!

चीनी हमला, पॉलिसी में बदलाव, राजनीतिक तूफ़ान, खून-खराबा - ये सब दुनियावी हैं, नमत्सो का यह नज़ारा, यह पवित्र रूप सबसे ऊपर है। तिब्बत में सामाजिक बदलाव, मठों का टूटना - इन सबसे परे, प्रकृति की देवी एक ऊँची दुनिया की महिमा के ध्यान में लीन बैठी हैं, कोई भी इंसान उनकी पवित्रता को कभी नहीं छीन सकता।

"यही तो आप देख रहे हैं, ज़मीन का एक छोटा सा टुकड़ा झील में घुस गया है, एक आइलैंड की तरह।"

431
सहस्राब्दि में ल्हासा

৪০৫

इस जगह का नाम ताशी दोरजे आइलैंड है और इसके आस-पास के पहाड़ न्येचेन टोंगला पहाड़ों की चेन हैं।

- "क्या झील के किनारे कोई मठ या मठ है?" मैंने पूछा।

- "नहीं, मुझे नहीं पता, लेकिन उस आइलैंड के रास्ते में, दाईं ओर पहाड़ पर कई गुफाएँ हैं, और उसके पास एक छोटा सा मठ है। मैंने सुना है कि ऋषि यहाँ ध्यान करने आते थे। अब सब कुछ सुनसान है, लेकिन यहाँ की झील रंग-बिरंगे पक्षियों से भरी है, खासकर साइबेरियन बत्तखें। आप उन्हें इतनी दूर से नहीं देख सकते, लेकिन पास जाने पर देख सकते हैं। चलो उस तासी दोरजे आइलैंड पर ट्रेकिंग करते हैं। सफ़र में लगभग चार घंटे लगेंगे।"

साथी उछल पड़े, इसीलिए हम आए, घूमे, मिले और फ़ोटो खींचे। सबने अपना सामान पैक किया और ट्रेक के लिए तैयार हो गए। मैं यह सुंदर नज़ारा मिस नहीं करना चाहता। कौन जानता है कि मैं दोबारा कब आऊंगा, या आऊंगा भी या नहीं। इसलिए, जब तक हो सकेगा, मैं इस नज़ारे को अपने दिल में हर भावना के साथ रखूंगा।

मैंने कहा, "मैं अब नीचे नहीं जा रहा हूँ।"

- "ट्रेकिंग इतनी खूबसूरत क्यों है?"

- "ठीक है, लेकिन अगर मैं नीचे गया तो ऊपर से यह नज़ारा नहीं देख पाऊँगा। मैं यहाँ घूम लूँगा, फिर कार के पास जाऊँगा, चिंता मत करो।"

सब मान गए, वे झील की तरफ़ चल दिए। मैंने एक सुंदर जगह चुनी और उस बेइंतहा खूबसूरती को निहारा। इसकी खूबसूरती कैलाश के मानस सरोवर, समदिंग के सरोवर से कई गुना ज़्यादा है।

यहां कोई तीर्थयात्री नहीं दिख रहे, चीनी सेना के ट्रकों की कोई आवाज़ नहीं, आस-पास कोई इंसानी बस्तियां नहीं दिख रही, पूरी तरह सन्नाटा है। कभी-कभी, हवा के पत्थरों से टकराने की आवाज़ से

बैकग्राउंड में तानपुरा जैसी धुन बजती है। एक अजीब सा एहसास। मुझे एहसास हुआ कि तिब्बत की रहस्यमयी सोच आज भी मौजूद है, बस जगह बदल गई है।

खुशी के पल बहुत जल्दी बीत गए - मैं इस माहौल में खो गया। जैसे ही सूरज मेरे सिर के थोड़ा ऊपर झुका, मैंने लोगों को बात करते हुए सुना और महसूस किया कि वे वापस आ गए हैं।

वे हांफते हुए मेरे पास आए और बैठ गए - फिर मेरी तरफ देखा और बोले -

- "आप कुछ बहुत अच्छा मिस कर रहे हैं। यह ट्रेक एडवेंचर, नेचर एजुकेशन और अनगिनत जंगली बत्तखों की चहचहाहट से भरा है। हम कुछ दिनों के लिए वापस आएंगे। अगर सही खाना होता, तो हम आज यहीं रुक जाते..."

फिर से कार - इस बार यहाँ से ल्हासा की सड़क, पश्चिमी पहाड़ों के साथ,

৪০৬

महातीर्थ का अंतिम यात्री

रास्ते में खाने के लिए एक रेस्टोरेंट था। वहां का शांत और सुंदर माहौल कोई छोड़ना नहीं चाहता था, लेकिन कोई चारा नहीं था।

गाड़ी चल दी। पहाड़ों का नज़ारा - यहाँ सबसे आकर्षक चीज़ दूर बर्फ़ से ढके पहाड़ों का नज़ारा है। अब गाड़ी मुड़ी - हमें पहाड़ की दीवार के साथ धीरे-धीरे चलना है, कभी-कभी पिछला पहिया घूम जाता है और सड़क की दीवार के पत्थर टूटकर नीचे गिर जाते हैं - कुछ सौ मीटर नीचे, हम अपनी जान हथेली पर रखकर चल रहे हैं। शाम होने से पहले हम एक झोपड़ी

के पास पहुँचे और रुक गए। पास में ही एक छोटा सा गाँव है। गाड़ी की आवाज़ सुनकर गाँव के लोग दौड़कर आए। वे हमारे चारों ओर भीड़ लगाकर खड़े हो गए।

"तुम्हें क्या चाहिए?" - "कुछ नहीं, मैं तुम्हें देख रहा हूँ।"

ड्राइवर और मैं बिल्कुल भी थके नहीं हैं, लेकिन सभी साथी थक चुके हैं। डिनर तैयार है - छाटू दलिया, उबले आलू और मीट सूप, पोर्क।

जिन लोगों को मैंने कई साल पहले तिब्बत में देखा था, वे यहां मेरा इंतज़ार कर रहे थे, जैसे उनका नया जन्म हुआ हो, न कि सिर्फ़ बैठे- खड़े, हमें देख रहे हों और हमारी बातें सुन रहे हों।

हमारे लिए दो घर, उन्हें कैंप करना था लेकिन आज इतनी ऊंचाई पर बहुत ठंड थी इसलिए हम घर पर ही रहे। लेकिन बदकिस्मती से गांव के कुत्ते पूरी रात कार के आसपास भौंकते रहे, किसी को ठीक से नींद नहीं आई। हम चांग खाकर सुबह जल्दी निकल गए। अगले दिन हम फिर से ल्हासा के रास्ते पर थे। पहाड़ी रास्ते पर फिर से अपनी जान जोखिम में डाल रहे थे।

हम दोपहर में ल्हासा लौटे। ऐसा लगा जैसे हम बहुत समय बाद शहर में आए हों। होटल में घुसने के बाद, मैं खिड़की के पास आरामकुर्सी पर बैठा और खुद को तसल्ली देने के लिए बाहर देखा - मैंने शा रीटिंग, सद्रूप लिंग, नासो झील और नीचेन पहाड़ देखे। तिब्बत में आई राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल के बावजूद, प्राकृतिक नज़ारों और रहस्यमयी पहाड़ी घाटियों ने तिब्बती परंपरा और तिब्बत की खासियतों को बनाए रखा है। जो लोग आना चाहते हैं, मैं उनसे कहना चाहूंगा -

"चीनी सरकार के प्रति घमंड दिखाकर तिब्बतियों को अलग-थलग न करें। तिब्बती धार्मिक संस्कृति का बचाव और मठों और बौद्ध मठों का फिर से बनना विदेशियों की यात्रा पर निर्भर करता है।"

हालांकि आज टूरिस्ट के लिए कई मंदिरों और मठों को रेनोवेट किया जा रहा है, लेकिन कल टूरिस्ट उन मंदिरों और मठों में असली धर्म और परंपरा देखना चाहेंगे। अभी, तिब्बतियों और बाहरी दुनिया के बीच बातचीत का एकमात्र ज़रिया टूरिस्ट हैं - तिब्बती बाहर से मदद और प्रेरणा चाहते हैं, और उन्हें बहुत सारे तिब्बती तीर्थयात्रियों की ज़रूरत है। एक बार यात्रा शुरू हो गई, तो शायद आज़ादी का संदेश उसी रास्ते से आएगा।

433
सहस्राब्दि में ल्हासा

৪০৭

मैं ल्हासा में दो दिन और रुका और फिर ज़मीन के रास्ते काठमांडू लौट आया। रास्ता था: ल्हासा, समदिंग, ग्याल्त्से, शिगात्से, फिंसलिंग, शेगर, रोंगबुक, टिंगरी, कासा, काठमांडू। ल्हासा से काठमांडू तक जीप और कई बार ट्रेकिंग करके जाने में हमें दस दिन लगे।

हालांकि आज के तिब्बत पर अलग-अलग मैगज़ीन में लिखी मेरी कई बातें पढ़ने वालों को पता हैं, लेकिन पढ़ने वालों की खास रिक्वेस्ट पर, इस सेक्शन को ओरिजिनल किताब - द लास्ट पिलग्रिमेज टू द महातीर्थ - के आखिरी चैप्टर में जोड़ा गया।

435

अनुक्रमिक

एचेगुम्फा

जिग-टेन-बैंग-फ्यूग-गोसाग-ग्रुबे 72

अवलोकितेश्वर

समुद्र के सामने नदी जीवन है

थंडरक्लैप सिक्का

स्रॉन्ग-स्रान-गम्पो

रात्रि भिक्षु

पद्मसंभव

अडिग बुद्ध

ट्रेडियम का गेशे रेप्टेन है।

मानसिक गठन प्रक्रिया:

पहली अंजलि

दर्ज

□□□□-□□□□-□□□□□□□□□

□□□□

□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□

□□□□□ □□ □□□□□

□□□ □□□ □□ □□□□□

□□□□□

□□□□□ □□ □□□ □□□

□□□□-□□□□□-□□□-□□□

□□□□□□

□□□□□

□□□□ □□□□□

□□□□-□□□□

□□□□□□-□□□□□

□□□□□

दूसरी खोज

हाँ-सेस-विज्ञापन

तसम मार्केट और शतरंज क्लब

दीक्षा

खाम्पो

तिब्बती समुदाय

रास्ते में परेशानी

तिब्बती पोशाक

सूर्य नमस्कार

नमस्ते

प्रथम मानस दर्शन

नाथू ला

कुम-बूम

शाक्य-मुनि

□□□□-□□□□ □□□□

□□□□ □□□□□□□ □□□□

□□□□□□ □□□□

□□□ □□ □□□ □□□

□□□□□□□□□□

□□□□ □□□

□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□

□□□□□□□□ □□□□□

□□□ □□□□□□ □□

□□□□□□□ □□□

□□□ □□□□ □□ □□□□

□□□□□□□□□□□□□□□

□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□

□□□□ □□□□□□□ □□□

□□□□□□□□□□

□□□-□□□ □□□□□

□□□□□□□□

□□□□□ □□□□□□□□

□□□□ □□□

□□□□ □□□□□□ □□ □□□□

□□□□□□ □□

□□□□

□□□ □□ □□□□

□□□ □□ □□□□

□□□□□□□□□ □□□ □□□□□

□□□-□□□

□□□□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□

जुथुलफुक गुफा

तिब्बत में जाति

नोजिन-कांग-सांग

ग्रामीणों के साथ

परखा में कैलाश बाबा

चोमलहारी

कारो-ला

यात्री की धारणा

गंगा चुटे

चोर्टेन-चैत

फिर से अलविदा

यमंतक

गोसुल गुम्फा

कांग्यूर के

□□□□□□□□□□

□□□□□

□□□□□□ □□□□□□□□□

□□□□□□□ □□

□□□□□□-□□□□

□□□□□

□□ □□□

□□□□□□□ □□□□□

□□□□□□□ □□□

□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□

□□□□□-□□

□□□□□□□□ □□ □□□□□

□□□□-□□

□□□, □□□, □□□□

पुरंग, शिम्बिलिंग गुफा, तकलाकोट 339

तांग-ला

दूसरा स्नान

तिब्बती तंत्र में चुड़ैलों और उनके स्थान 276

लिपुलेक

समदा

सांगपो फेरी

तिब्बती विवाह समारोह में अतिथि

दूसरी अंजलि

युवा

तिब्बती कॉलेज

अलग-अलग जगहों की ऊंचाई एक नज़र में

कैलाशनाथ 2028 फीट

डोल्मा-ला (दर्रा) ১৮৬০০ "

लिपु-झील ১৭৮৯০ "

गुरला-ला (दर्रा) ১৬২০০"

कारो-ला (दर्रा) ১৬০০০ "

थोक ১৫৭০০ "

राम और काल सरोवर ১৫৩০০ "

टार्चेन ১৫১০০ "

करिजोंग ১৫০০০"

मानस सरोवर ১৪৯৫০ "

शिम्बिलिंग गुफाएं और तकलाकोट ১৩৯০০ "

ल्हासा ১২৩০০ "

नैनीताल ৫০০০"

यातुंग ৯৭০০"

शाम सांग ১২২০০ "

नाथू -ला (दर्रा) १४०००"

रोष १४१०० "

राक्षस सरोवर १४९०० "

यमद्रोक झील १५००० "

तांग -ला (दर्रा) १५६०० "

खंबा -ला (दर्रा) १५८०० "

दिराफुक गुफा १६२०० "

चोमल हरी २३९९७ "

नोजिन -कांग -सांग २४००० "

गुरला मांधाता २५३५५ "

438

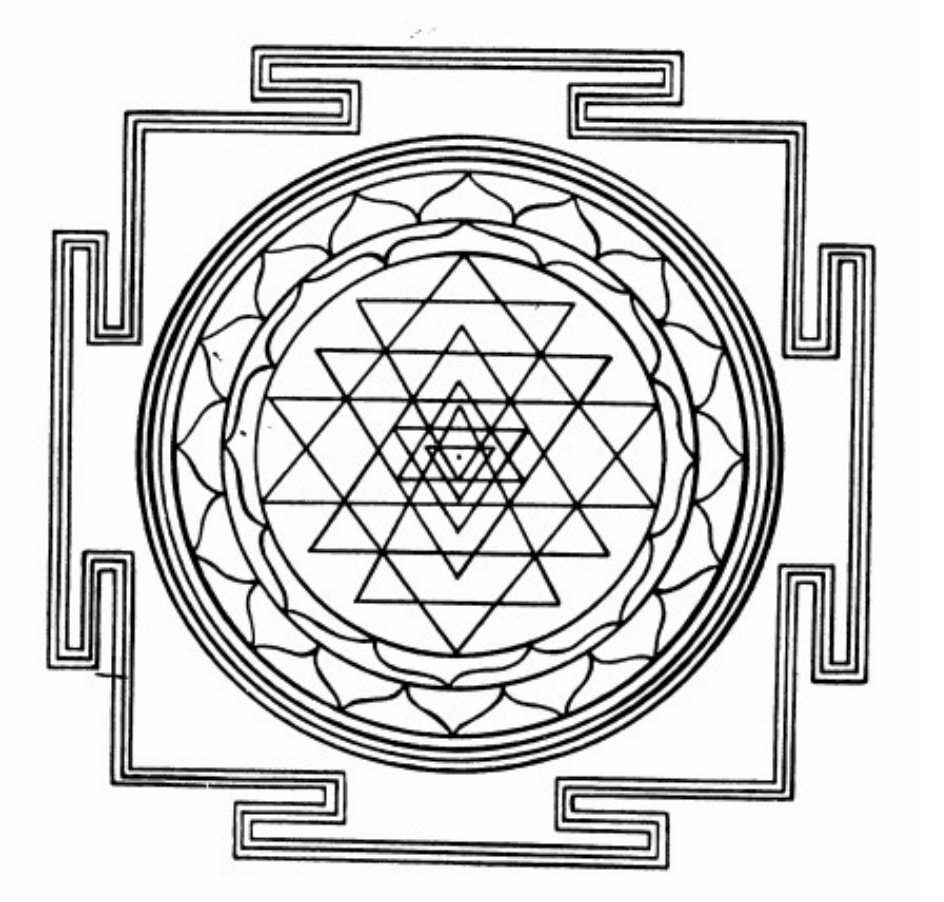

श्री यंत्र

मेडिटेशन के ज़रिए, इंसान को खुद को पवित्र भावना के रास्ते के लिए तैयार करना चाहिए। जीवों की रचना का राज़ जाने बिना उस रास्ते पर आगे बढ़ना नामुमकिन है। इसलिए, तिब्बती तंत्र में मन को काबू में करने और तैयार करने के लिए कई तरह के यंत्र बनाए गए हैं। यंत्र, अल्पना जैसी कई तरह की पेंटिंग हैं। ज़मीन, दीवारों, चादरों या

कपड़ों पर उनकी तस्वीरें बनाकर बिखरे हुए मन को एकाग्र किया जाता है। फिर, उस हालत से तपस्या शुरू होती है। यंत्रों का इस्तेमाल मंदिर बनाने और शांति स्थापित करने के लिए भी किया जाता है।

यह पॉइंट दुनिया के बनने की जड़ में है, इसी पॉइंट से योनि बनी और इसी योनि से दुनिया बनी। यह पॉइंट सारी एनर्जी का मूल कारण है। फिर से, इसी पॉइंट से मोशन बना।

श्री यंत्र लामाओं के लिए सबसे ज़रूरी यंत्र है। श्री यंत्र के बीच में एक बिंदु होता है, जो योनि नाम के एक तिकोने आकार से घिरा होता है। बिंदु सफ़ेद रंग का होता है और योनि लाल रंग की होती है।

439

थू -ला से चोमल्हारी के दो दृश्य

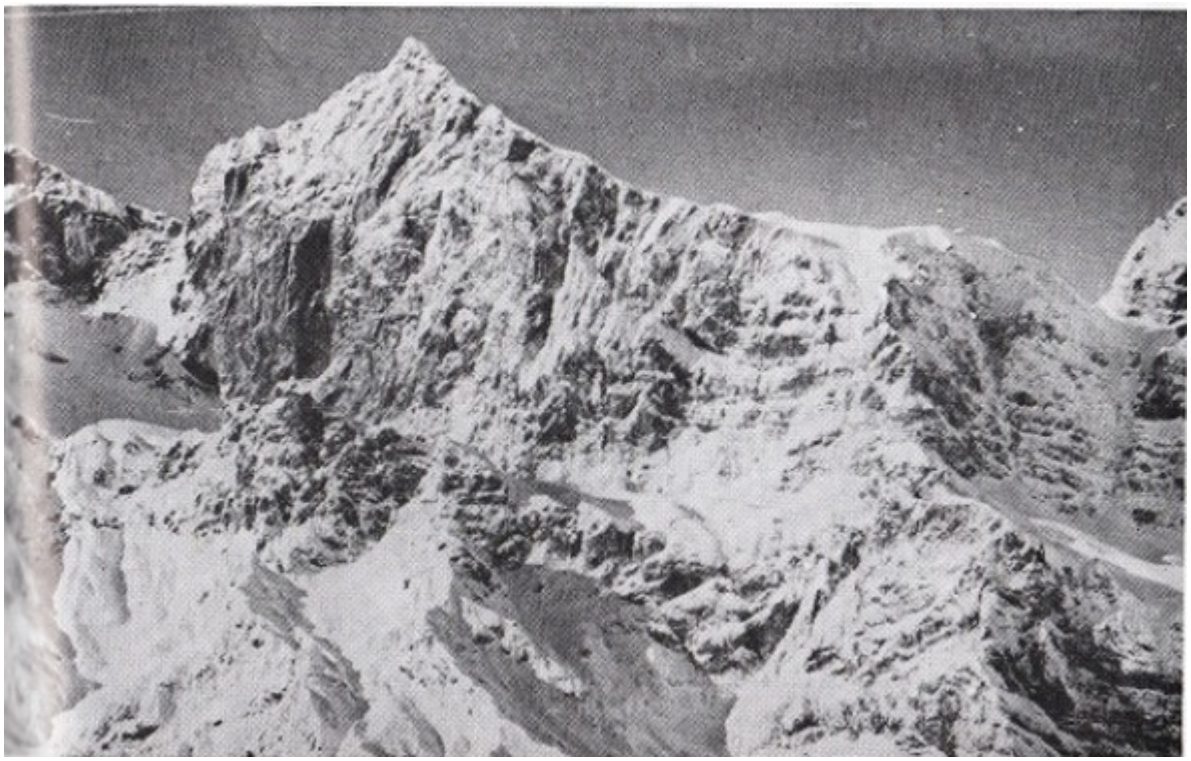

एक प्रार्थना चक्र

441

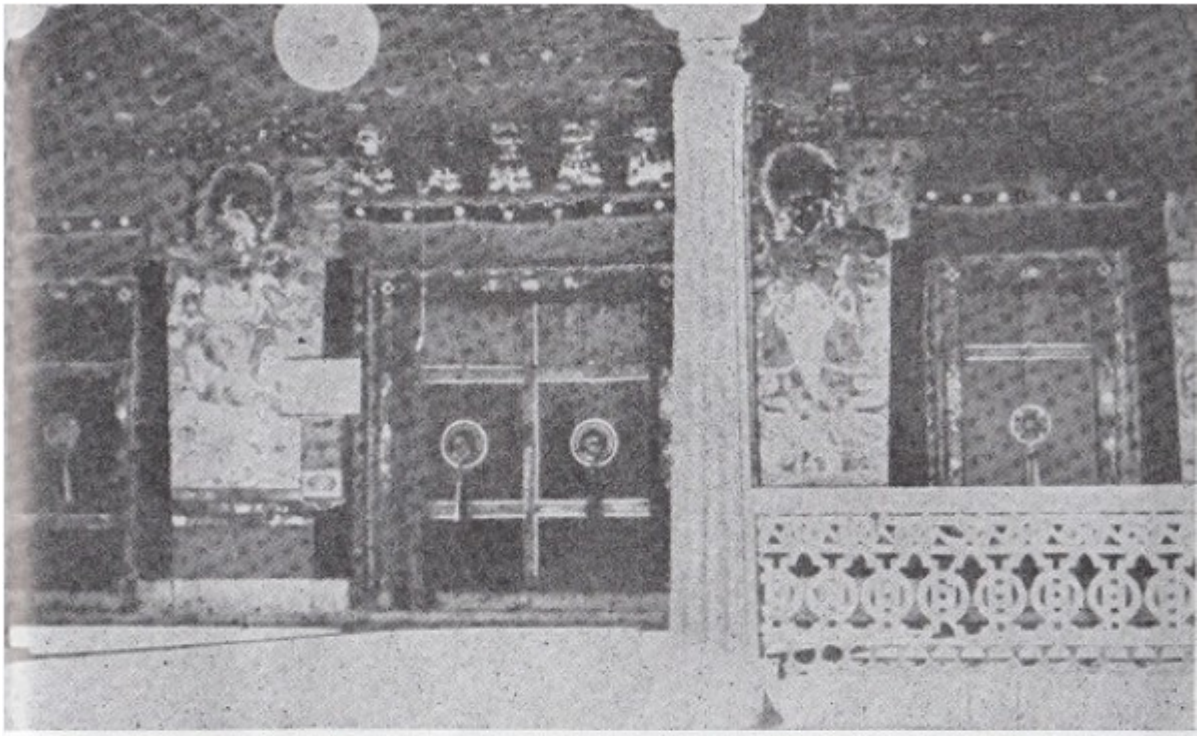

गोताला पैलेस का अंदर का नज़ारा

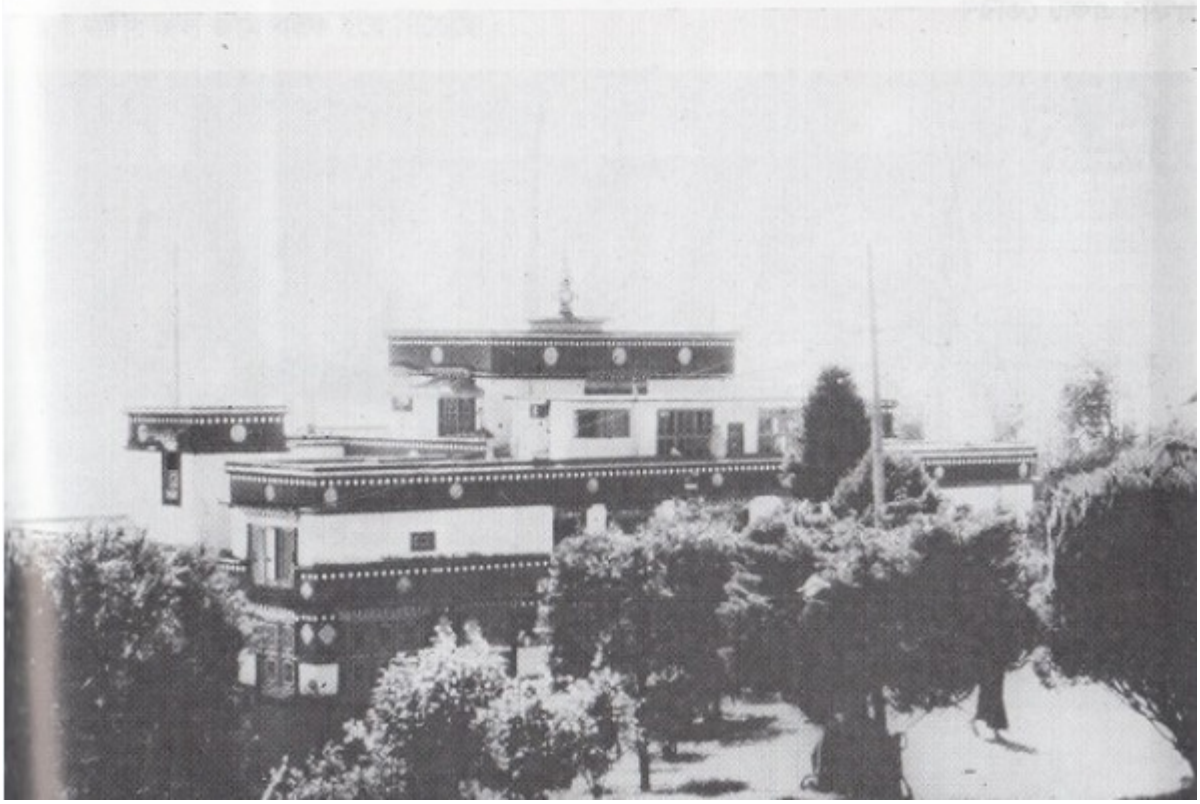

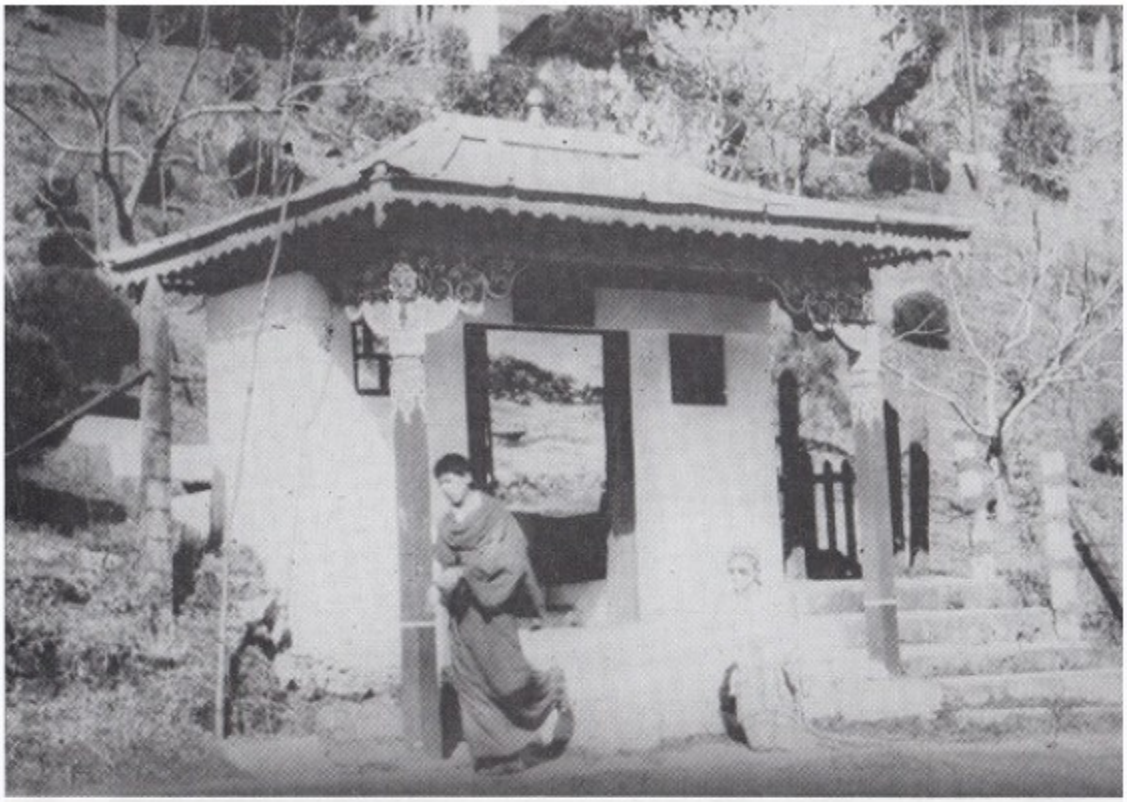

गुम्फा एक आर्केड है

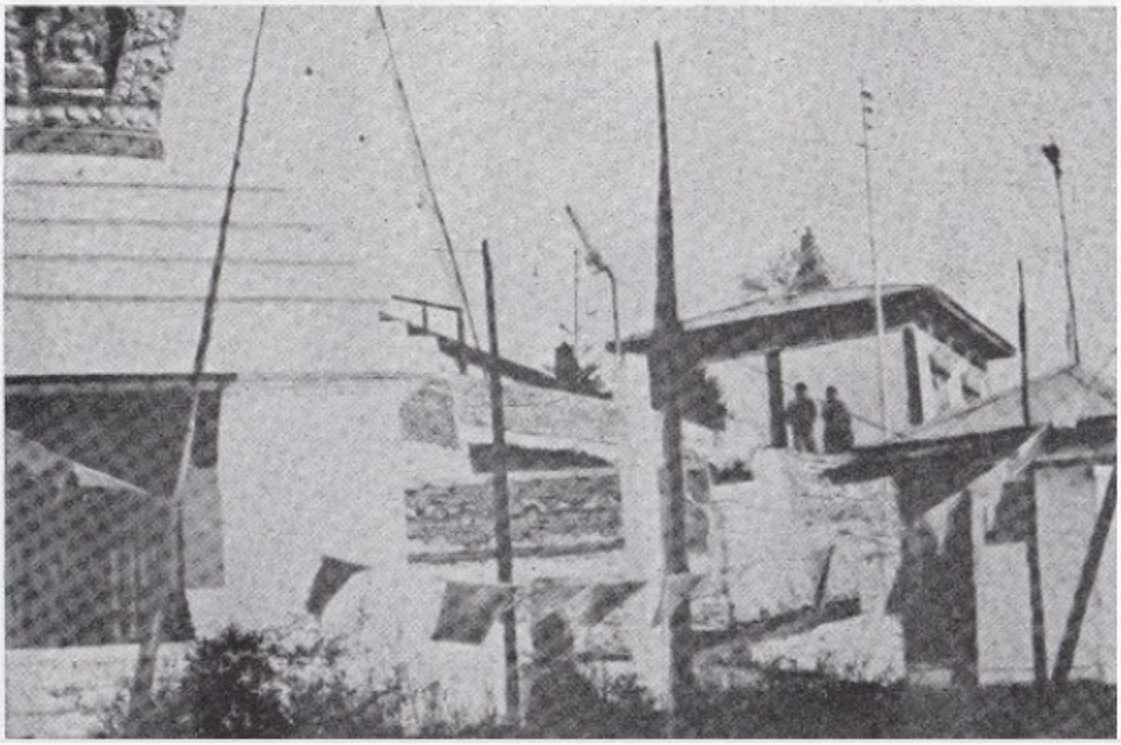

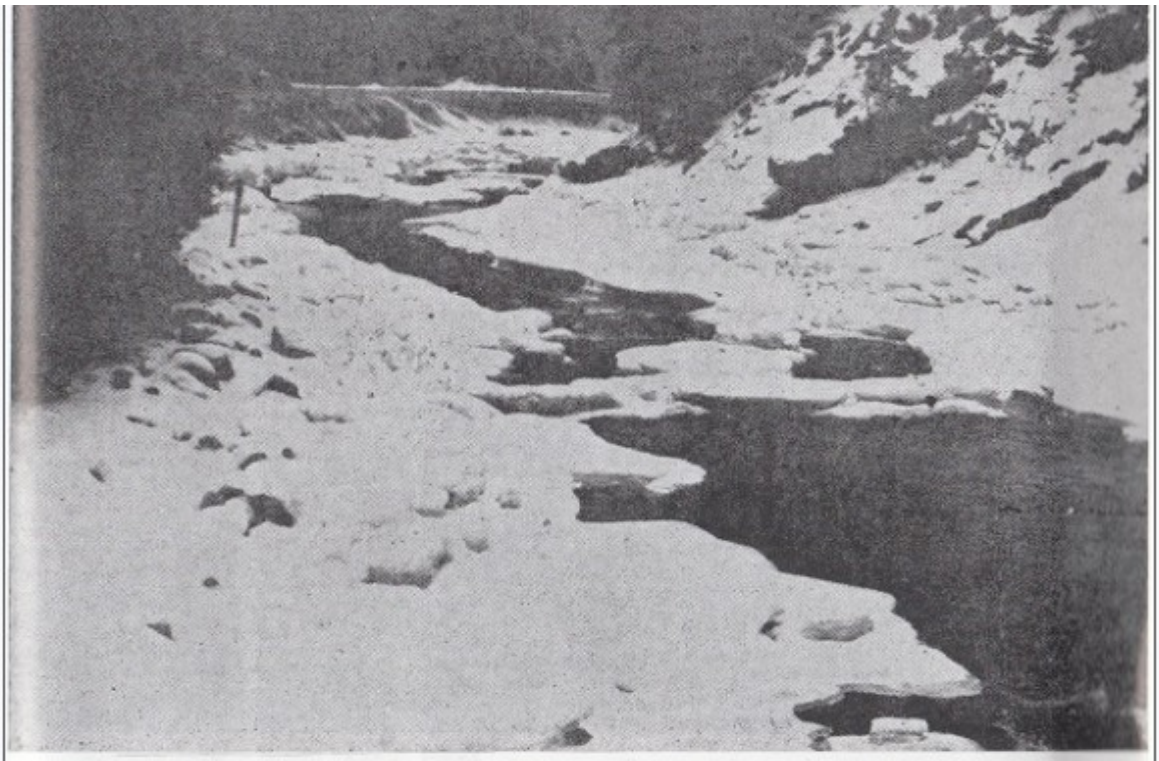

ठंड में नदी का पानी जम गया है।

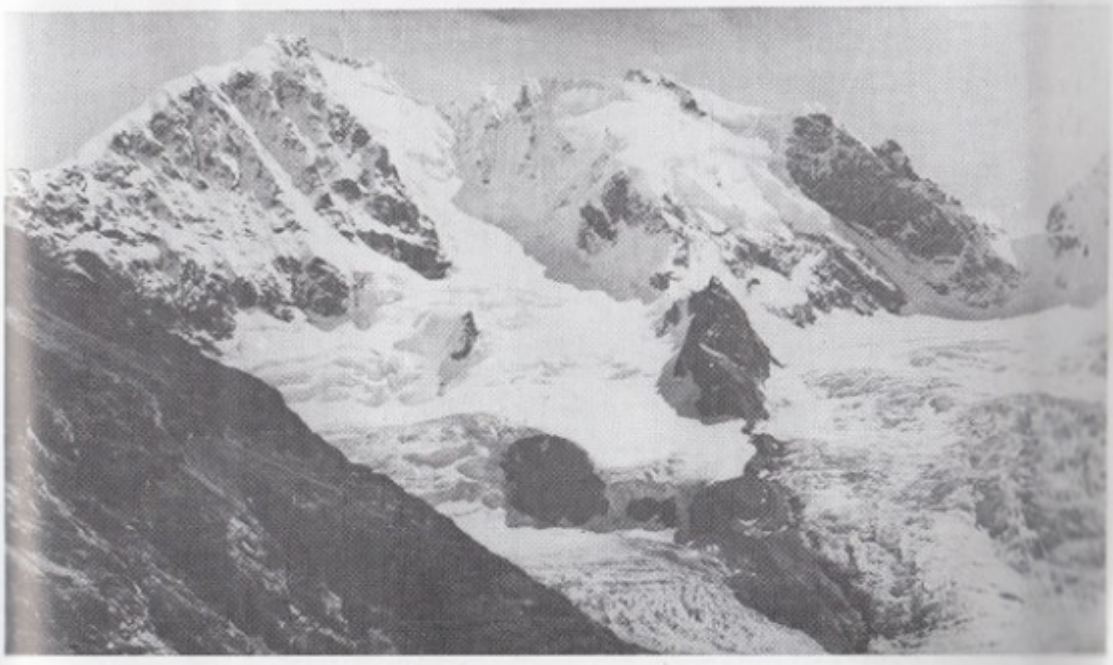

"सत्यम-शिवम-सुंदरम" - बर्फ से ढके हिमालय का एक दृश्य

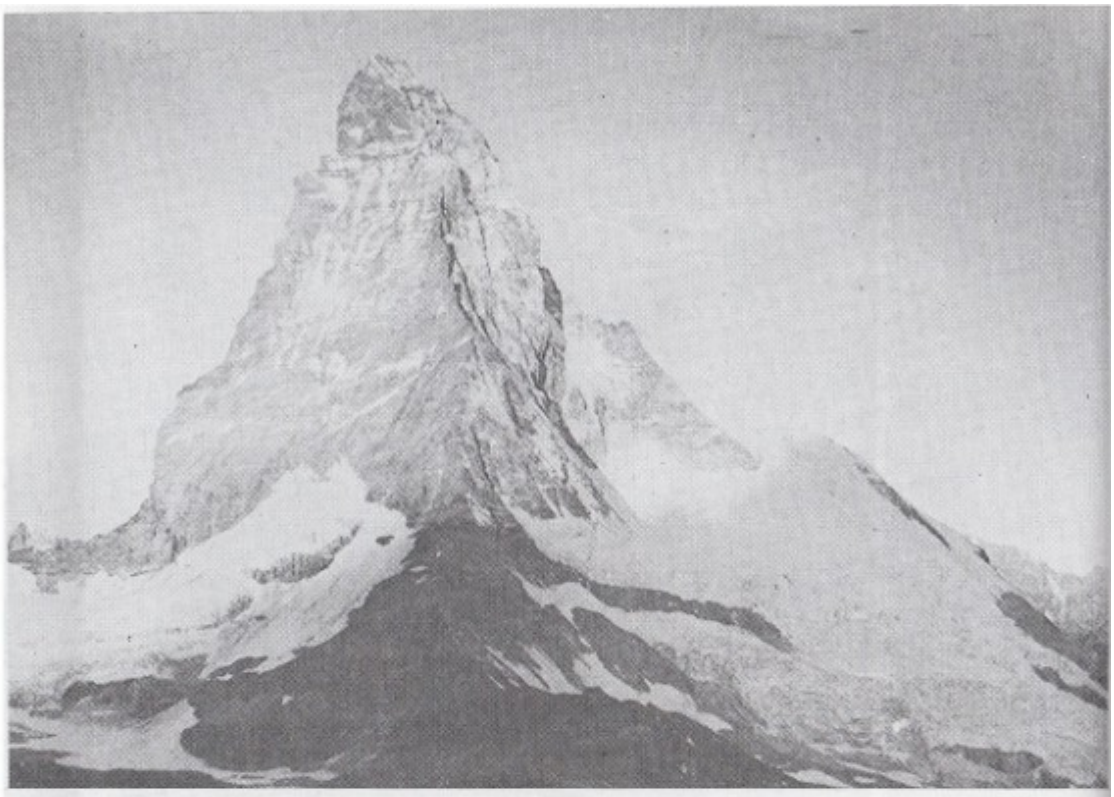

"जहां अनकहा व्यक्त होता है" - बर्फ से ढके हिमालय का एक दृश्य जानी मराज़ फायर पर बी

पच्चीस साल के लंबे समय के बाद, लेखक-कामाख्या शिवानंद आश्रम ब्रह्मपुत्र के किनारे खड़ा है।

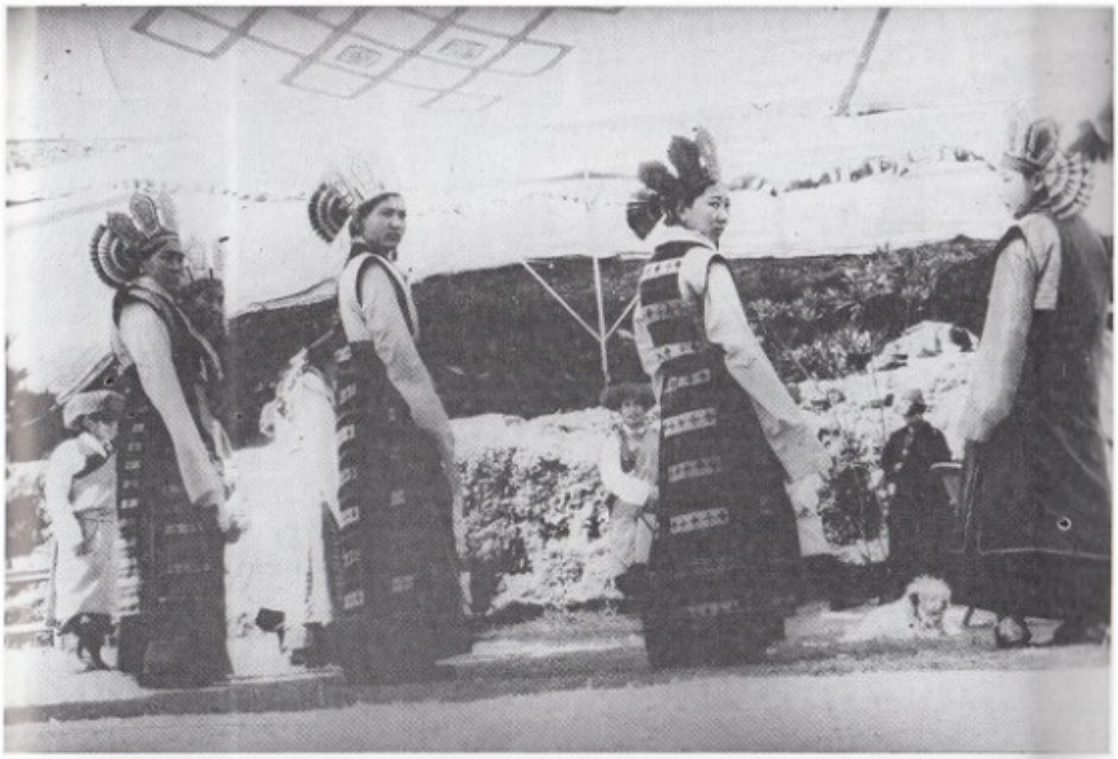

लोक नृत्य वेशभूषा में कई युवा तिब्बती महिलाएं

गांव के लोग धूप का आनंद ले रहे हैं।

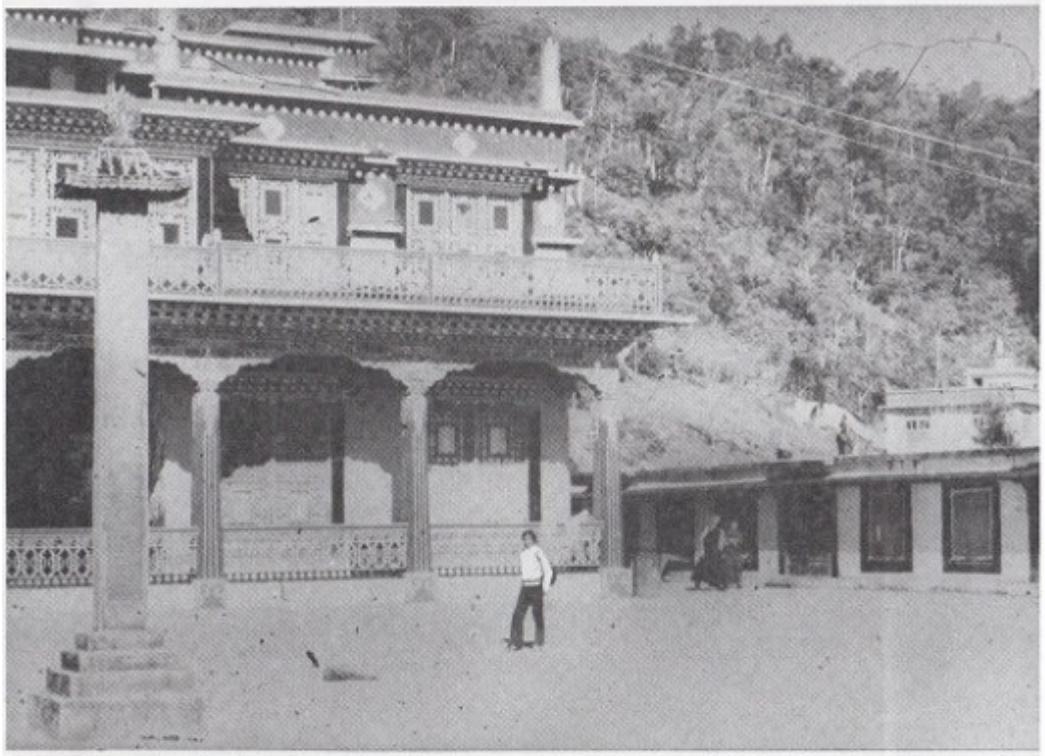

एक तिब्बती गुफा

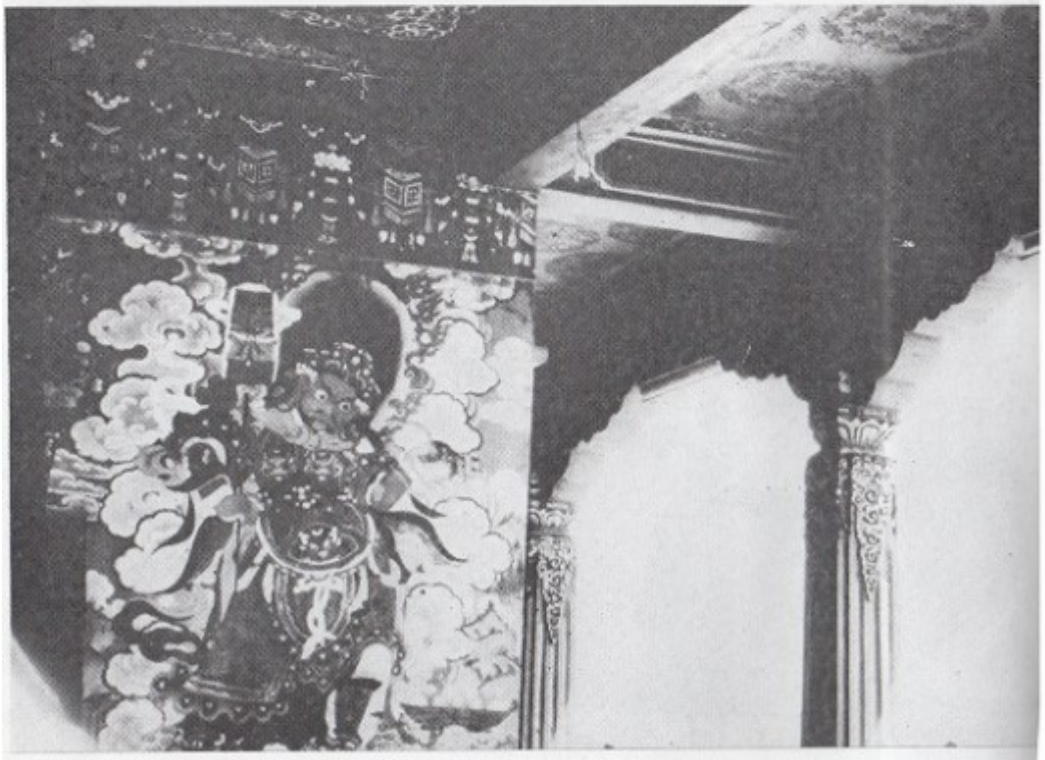

दीवारों पर बेहतरीन काम के नमूने

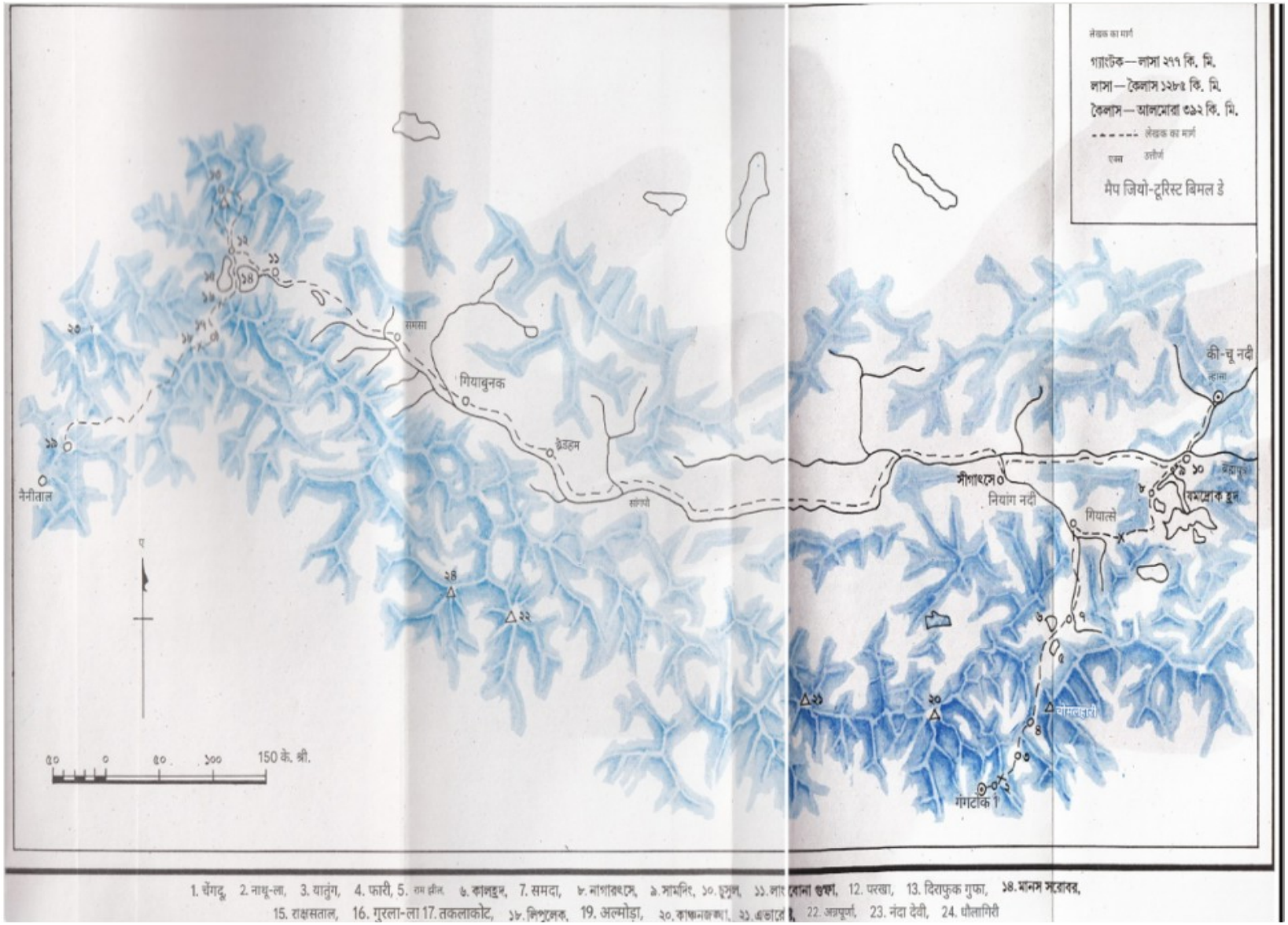

1. चेंगदू, 2. नाथू-ला, 3. यातुंग, 4. फारी, 5. राम क्रीक, ६. कालहृद, 7. समदा, ८. नागारथसे, ९. सामदिर, १०. ल्हासा, ११. लाद बोला गुफा, 12. परखा, 13. दिराफुक गुफा, १४. मानस सरोवर, 15. राक्षसताल, 16. गुरला-ला 17. तकलाकोट, १८. लिपुलेक, 19. अल्मोड़ा, २०. कांचनजंघा, २१. एवरेस्ट, 22. अन्नपूर्ना, 23. नंदा देवी, 24. धौलागिरी

1956 में, जब तिब्बत विदेशियों के लिए लगभग बंद था, और राजनीतिक कारणों से भारत के साथ तिब्बत के रिश्ते लगभग टूट चुके थे, बिमल डे बिना किसी तैयारी के, नेपाली तीर्थयात्रियों के एक ग्रुप के साथ घर से दूर ल्हासा भाग गए। उस समय उनकी उम्र सिर्फ़ पंद्रह साल थी। वे यात्रियों में से एक थे, नवीन मौनी-बाबा, और फिर ल्हासा से कैलाशखंड के लिए ग्रुप छोड़ दिया; यह 'महान तीर्थयात्रा का आखिरी यात्री' उनके बारे में पूरी जानकारी से भरा है। बिमल डे खुद कहते हैं कि यह एक भिखारी की डायरी है। लेकिन इस किताब में, आपको तिब्बत में रोज़मर्रा की ज़िंदगी और महान तीर्थयात्रा का पूरा ब्यौरा मिलेगा।